॥ वन्दे वीरम् ॥

NO - 1261

श्री मोतीलालजी शानोलालजी गांधी
पीपाड वालो की ओर से सादर भेट

भगवान् नेमनाथ
और
पुरुषोत्तम श्री कृष्णचन्द्र

लेखक—
अनेक गद्य-पद्यात्मक ग्रन्थों के रचयिता; जैन दिवाकर प्रसिद्ध वक्ता पण्डित मुनि, [illegible] प्रसिद्ध
श्री चौथमलजी महाराज

प्रकाशक—
श्रीमान् सेठ सिरेमलजी नन्दलालजी पीतलिया, सीहोर कैन्ट (मालवा)
वालों की ओर से अमूल्य भेंट।

प्रथमावृत्ति
२५० कुल १०००

अमूल्य भेंट

वीराब्द २४६९
विक्रमाब्द १९९८

प्रकाशक:—
श्रीमान् सेठ सिरेमलजी नन्दलालजी पीपलिया, सीहोर कैन्ट (मालवा)

卐

मुद्रक:—
गुलाबचन्द जैन द्वारा
श्री जैनोदय प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम

श्री जैनोदय पुस्तक प्रकाशक समिति, रतलाम

के

जन्म दाता

❀ श्रीमान् जैन दिवाकर प्रसिद्ध वक्ता पंडित रत्न मुनि श्री चौथमलजी महाराज ❀

स्तम्भ

श्रीमान् दानवीर रायबहादुर सेठ कुदनमलजी लालचन्दजी सा० ब्यावर

श्रीमान् सेठ नेमीचन्दजी सरदारमलजी सा०	नागपुर	श्रीमान् सेठ बहादुरमलजी सूरजमलजी सा०	यादगिरी
,, ,, सरूपचन्दजी भागचन्दजी सा०	कलमसरा	,, ,, तखतमलजी सौभागमलजी सा०	जावरा
,, ,, पूनमचन्दजी चुन्नीलालजी सा०	न्यायडोंगरी	,, ,, सागरमलजी चम्पालालजी सा०	बेंगलोर
,, ,, कालूरामजी सा० कोठारी	ब्यावर	,, ,, कुंदनमलजी सरूपचन्दजी सा०	ब्यावर

श्रीमान् सेठ देवराजजी सा० सुराना, ब्यावर

संरक्षक

श्रीमान् सेठ प्रेमलजी लालचन्दजी सा०	गुलेदगढ़	श्रीमती पिस्ताबाई, लोहामन्डी	आगरा
,, ,, लाला रतनलालजी सा० मित्तल	आगरा	,, राजीबाई	बरोरा
,, ,, उदेचन्दजी छोटमलजी सा०	उज्जैन	,, अनारबाई, लोहामन्डी	आगरा

* श्री वीतरागायनमः *

भगवान नेमिनाथ

भगवान नेमिनाथ के पूर्व भव

दोहा:—प्रथम मनाऊ सरस्वती भलबुद्धि दातार । दास आस पूरण करो अर्ज मात स्वीकार ॥ १ ॥
नेमिनाथ का चरित्र यह रचूं हृदय कर वास । ललित शब्द आवे सही हो नवरस प्रकाश ॥ २ ॥

हो ॥ १६ ॥ तरु अशोक तल चित्रकार, एक वैठा चित्र बनाई। चित्र देख कुवारी हृदय में अद्भूत विस्मय पाई, हो ॥ १७ ॥ धन्नकुवर का है यह फोटू, पूछे पै बतलाया। परणू तो मैं इसी कुवर को कन्या प्रण यह ठाया ॥ १८ ॥ राजकुवारी लौट वहा से निज महलो मे आई। इस चिंता मे खानपान और स्मरण शक्ति विसराई, हो ॥ १६ ॥ योगी समरे इष्ट देव जू, निर्धनिया धन ताई। व्याकुल अवस्था देख सख्योने, बहुत उसे समझाई, हो ॥ २० ॥ नमस्कार करने को कुवरी, पितापास उठ आई। व्याह योग लख निज पुत्रीको भूपत सलाह उपाई हो ॥ २१ ॥ उसी समय मे राजदूत एक, चल भूपत पै आया। अचल नगर के राजकुवर का अद्भुत रुप सुनाया हो ॥ २२ ॥ सुनकर राजा कहे दूत सग, मत्री अचलपुर जाओ। राजकुवर से निज पुत्री का, सगपन शीघ्र मनाओ, हो ॥ २३ ॥ लघु बहिन जो चन्द्रावती थी सुन बाते वह आई। बडी बहिन से दूत भूप की, सारी बात सुनाई, हो ॥ २४ ॥ सुनकर सखी कमलिनी बोली, बने वही मनचाता। सुनकर राज सुता का हृदय, फूला नहीं समाया हो ॥ २५ ॥ मंत्री दूत अचलपुर आया, सिंहसेन के पास। वधा भूप को ब्याह सम्बन्धी कीनी बात प्रकाश, हो ॥२६॥ जोडी सदृश जान भूपने, कीना ब्याह स्वीकार। हर्ष हुवा दोनों नृप घर, गावे मगलाचार हो ॥ २७ ॥ अति हर्ष के साथ कुवर का, पाणी ग्रहण कराया। दिये दहेज में गजरथ घोड़े, जरजेवर मनचाहा, हो ॥ २८ ॥ कनक मणि ज्यू दीपे दपति, हर इक जन यश गावे। ब्याह करी दुल्हा दुल्हन को, अपने घर पर लावे, हो ॥ २६ ॥ कालान्तर मे राजकुवर, हो घोडे पर असवार। सैर करन के काज बाग में, आया है उस बार, हो ॥ ३० ॥ मुनिराज उपदेश सुनाते, वहा पर दिये दिखाई। नमस्कार कर राजकुवर भी, बैठा सम्मुख जाई, हो ॥ ३१ ॥ आगम मुनिवर का सुन राजा, चित्त चरणों मे दीन्हा। हाथ जोड उपदेश श्रवण कर, प्रश्न आपने कीन्हा. हो ॥ ३२ ॥ हे स्वामिन् ! यह धन्नकुवर, जिस समय कुक्षी में आया। आम्रवृक्ष एक पुरुष हाथ ले, स्वपना महिं जिताया, हो ॥ ३३ ॥ नववार नव स्थानक रोपे, उत्तरोत्तर फलजान। कृपा करके फल स्वपने

ॐ ह्रीं श्री श्री नेमिनाथ प्रभु

ढाल—(तर्ज—मुक्ति जाने की विधि दीजिये) यह चरित्र रसीला कल्याण अघहारी नेमिनाथ का ॥ टेक ॥

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में नगर अचलपुर भारी। न्यायपूर्ण प्रतापी राजा, विक्रम धन सुखकारी हो ॥ १ ॥ रानी धारणी है प्रियकारी, इन्द्राणी अनुहार। आम्र वृक्ष का स्वपना देखा, एक दिन रम सुखकर हा ॥ २ ॥ एक पुरुष बोला स्वपने में, आम्र वृक्ष ले हाथ। शुभ आंगन रोपा जाता है, यह तरु शुभ विख्यात हो ॥ ३ ॥ इसा वृक्ष को कोई नर, उत्तरोत्तर नव वार। फल उत्कृष्ट जगत में संशय नहीं लगार हो ॥ ४ ॥ खुली नींद इतने रानी की, प्रातःकाल हो आया। नम्र निवेदन किया भूप पे, स्वपना शुभ दर्शाया हा ॥ ५ ॥ स्वपन पाठकों का बुलवाय राजा ने सत्वरा। पूछा फल स्वपने का पंडित बोले अर्थ विशद हा ॥ ६ ॥ हे राजन्! नव मास बाद हा, पुत्र रत्न सुखकारी। पर नव बार रोपन का फल, जाने ज्ञान के धारी हो ॥ ७ ॥ स्वपन पाठकों की सुन वाणी, राजा मन हुलसाया। दे मान सम्मान भूपति, वापस उन्हें पठाया हा ॥ ८ ॥ समाचार ये सुन रानी का हृदय कमल विकसाया। नव महिने पूरण होने पर, पुत्र अनूपम जाया हा ॥ ९ ॥ पुत्र जन्म से भजा हृदय, आनन्द अलौकिक छाया। समारोह के साथ भूपति महोत्सव खूब मनाया हो ॥ १० ॥ इष्ट मित्र आये अवसर पर, मन इच्छित फल पाया। धनकुंवर दिया नाम प्रेम से सुन सज्जन हर्षाया हो ॥ ११ ॥ लालनपालन करत सुत अब, अष्ट वर्ष में आया। अध्यापक के पास पढ़ा विद्या में कुशल बनाया हा ॥ १२ ॥ बीता बालपन मोद से, तरुण अवस्था आई। दिव्य मनोहर रूप निराली, जनता करे बड़ाई हो ॥ १३ ॥ उसी समय में कुसुम नगर का, सिंहसन भलधारी। नृप रानी विमला थी, सुन्दर इन्द्राणी अनुहारी, हो ॥ १४ ॥ धनवती विद्युत के सदृश नृप के राजकुमारी। गजगमनी, मृगनयनी, कोकिल बैनी गुण भंडारी हा ॥ १५ ॥ बसन्त की छवि निहारन सखियां सर्व पुकारी। प्रमोद सहित कन्या को सारी लाई बाग मुझारी

सपरिवार नरेश। मर्मस्पर्शी मुनिराज ने, दीना है उपदेश, हो ॥ ५२ ॥ सुन उपदेश हुवा वेरागी, धन्नकुवर महाराया। मत्री को समझाय, कुवर को राज पाट भलाया हो ॥ ५३ ॥ राजा राणी दीक्षा लीनी, पुन. नृप का भ्रात। धनदत्त धनदेव सयमले, हुए भ्रात के साथ, हो ॥ ५४ ॥ ज्ञान ध्यान तप सयम पाली, खूब धर्म दीपाया। चारो ही चव पहले कल्प मे सामानिक पद पाया, हो ॥ ५५ ॥ दोहा —पहिले दूजे जन्म का, हुवा हुवा पूर्ण अधिकार। तीजे चौथे का कहू सुनो सभी नरनार हो, ॥ ५६ ॥ ढाल —जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्रमे गिरि वैताढ्य हे भारी। उत्तर श्रेणी से उम्र मनोहर, सुरपुर है सुखकारी, हो ॥ ५७ ॥ सुरचक्री विद्याधर राजा, राज करे हे वहाँई। महाराणी विद्युत्मती, पतिव्रता सुखदाई, हो ॥ ५८ ॥ धन्नकवर सुधर्म स्वर्ग की, आयु पूर्ण विताई। इस रानी की कुक्षी अदर, पुत्र रत्न हुवा आई, हो ॥ ५६ ॥ चित्रगति दिया नाम पुत्र, फिर वडी उमर मे आया विद्यानीति मे पारगत हो सव जनके मनभाया, हो ॥ ६० ॥ इस गिरि के दक्षिण श्रेणिमे, शिवनगरी है सुन्दर। शशि-प्रभा राणी अरु भूपति अनगसिंह पुरन्दर, हो ॥ ६१ ॥ कुवर भूप के हुए परन्तु, पुत्री एक न जाई। ऐसी चाहा मे लिया जन्म धनवती स्वर्ग से आई हो ॥ ६२ ॥ रत्नवती दिया नाम सुताका है वल्लभ सव ताई। स्त्रियोचित्त सर्व कलामे इसे प्रवीन वनाई हो ॥ ६३ ॥ वरयोगी पुत्री को लख, भूप के चिता छाई। पूछा ज्योतिषी से वर इसका, कौन वनेगा आई हो ॥ ६४ ॥ हे राजन् जो नर आपका तेग छीनेगा आई वही कन्या का पति वने, ये साच वात दर्पाई, हो ॥ ६५ ॥ सुनके वचन भूप अपने दिल बीच बहुत हुलसाया। ऐसा वीर वर हो कन्या का, समझो पुन्य सवाया, हो ॥ ६६ ॥ उसी समय सुग्रीव भूपति, चक्र-नगर के मांई। जिसके यशवंती और भद्रा, है राण्या सुखदाई, हो ॥ ६७ ॥ यशवती के सुत सुमित्र है वलवुद्धि गुणवान। पद्मकुवर है 'भद्रा के सुत, पापी और अज्ञान हो ॥ ६८ ॥ कर्मयोग से भद्रा को, सुझी कुवुद्धि आई। जीवितरहे सुमित्र वहा तक, भूप बने सुत नाई हो ॥ ६६ ॥ सोच करे दुष्टा यो मनमे, कीजे कौन विचारा। विप शस्त्र से मारे इसको, तो होवे

घ, फरमायो भगवान हो ॥ ३४ ॥ सम्यग् ज्ञान लामार्थ मुनि ने आहारक लब्धि द्वारा। दूरवर्ती केवल ज्ञानी स कर निर्णय
भाव उपारा हो ॥ ३५ ॥ धनकुंवर यह हो भव में भव बावीस मो जिनराय। मुनी भवंतरी अति प्रसन्न हो, परख शीश
नमाया हो ॥ ३६ ॥ कुंवर भूपति पीछा लौट के निज महलों में आया। मुनिराज भी गमन करीने अन्य स्थान सिधाया हो
॥ ३७ ॥ रहे कुंवरजी सदा प्रसन्न चित्त, सुख में समय बितावे। नाटक के झनकार पड़ नित पूर्व पुन्य प्रभावे हो ॥ ३८ ॥
जलक्रीडा के काज दम्पति सरोवर आप पधारे। महात्यागी वैरागी मुनिवर यहां पर भिक्षा दिखाई हो ॥ ३९ ॥ धूप प्यास
से होकर व्याकुल, गिर पड़े तरु की छाया। धनवती मुनि गिरते देखी, पति को शीघ्र जताया हो ॥ ४० ॥ धनकुंवर फौरन उठ
धाये मुनि को आन उठाये। धनवती भी आइ स्तन मुनि द्वारा में आये हो ॥ ४१ ॥ नतमस्तक हो मुनि से पूछे, क्या पीड़ा
तन मांही। एकाकी विचरण का कारण यह भी दे फरमाई हो ॥ ४२ ॥ परमार्थ स्व्नी स राजा दुख रूप संसार। प्यासा
और उष्णता कारण, मूर्छा आई इस बार हो ॥ ४३ ॥ मणिचन्द्र गुरु देव संग में मैं करता था विहार। छूटा साथ पथ भूला
विपिन में, आया इस प्रकार हो ॥ ४४ ॥ हे नृपेन्द्र सुख संग आपने कीनी बहुत भलाई। तन का क्या विश्वास जान, नित
कीजे धर्म कमाई हो ॥ ४५ ॥ द्वादश व्रत श्रावक के मुनिवर भिन्न २ कर समझाया। सप्रेम से धनकुंवर को श्रावक धर्म
धराया हो ॥ ४६ ॥ अपने निवास स्थान में तब वे मुनिवर को ले आये। विनय युक्त दिया भोजन आदि मुनि का वहीं
ठेराया हो ॥ ४७ ॥ धनकुंवर को दृढ़ धर्मी कर, मुनिवर गये सिधाई। समवसरण में मिले आय नहिं पथ में बार लगाई हो
॥ ४८ ॥ चौथे पन में विक्रमधन के, मन वैराग समाया। धनकुंवर को राज सौंप तप करने आप सिधाया हो ॥ ४९ ॥
नीति पूर्ण करे राज धन आया यश सधारा। धनवती रानी के जन्मा, जैवंता सुकुमार हो ॥ ५० ॥ आसपास से मिली खबर
फिर नगर को एकबार। महाभाग्य मुनिराज वसुंधर, आये बाग मझार हो ॥ ५१ ॥ प्रसन्न होय वन्दन हित आये

न उसका पाया हो ॥ ८८ ॥ रत्नवती के भ्रात कमल को, हुई कुबुद्धि आई। खास बहिन सुमित्र भूप की, ले गया आप चुराई हो ॥ ८९ ॥ बहिन हरण सुन सुमित्र भूप को, बहुत उदासी छाई। शौध किये पै पता न पाया, है यह कौन अन्याई हो ॥ ९० ॥ समाचार सुन चित्रगति ने, अपने हृदय विचारा। विपत्ति समय मे देना सहायता, है कर्तव्य हमारा हो ॥ ९१ ॥ सदेशा कह–लाया नृप को, चिंता कीजे नाहीं। जहा कहीं हो बहिन आपकी, मैं सौपूगा लाई हो ॥ ९२ ॥ सुन सदेशा चित्रगति का, धैर्य सुमित्र मन लाया। पता लगा कर बहिन सौंपदी, प्रण अपना निभाया हो ॥ ९३ ॥ गुप्तचरो से पता लगा कि, कमल कर्म किये क्रूर। चतुरगी सेना ले शिवपुर, करी चढाई शूर हो ॥ ९४ ॥ कमलसिंह की सेना को, दी मार काट उसवार। बची खुची मैदान जग तज, भगी मान कर हार हो ॥ ९५ ॥ पुत्र पराजय सुन अनगसिंह, जोड सेना चढ़ आया। हुवा घोर घमसान युद्ध पर, दोनो सबल रहाया हो ॥ ९६। होवे हार कौन विध अरि की, सोचे अनग मन माई। देवदत्त उस दिव्य तेग की, याद उसी क्षण आई हो ॥ ९७ ॥ लिया तेग वह तुरत हाथ, अग्नि-सा तेज करारा। करे नाश शत्रु का छिन मे, ज्यो दामिनी झलकारा हो ॥ ९८ ॥ चित्रगति मूछो ताव दे, बोला यू ललकार। ओ दुश्मन तुझे प्राण प्रिय हो, तो भगजा इसवार हो ॥ ९९ ॥ चित्रगति बोला कि तेरे, सब अरमान मिटादू। यदि हो हिम्मत आजा रण मे, दो दो हाथ बतादू हो ॥ १०० ॥ तुरत अनग झूझलाय झपट, मारन को हाथ बढ़ाया। चित्रगति ने विद्या के बल, अन्धकार फैलाया हो ॥ १०१ ॥ अन्धकार के योग भूप का, कुछ नहीं देत दिखाई। दीनी तेग अनग भूपति, जो देवयोग से पाई हो ॥ १०२ ॥ फिर वहीं जा पहुचा जहा, सुमित्र की बहिन छिपाई। बैठा अश्व पै उस कन्या को, ले दल आया सिधाई हो ॥ १०३ ॥ चित्रगति के जाने पर वह, अन्धकार विरलाया। राजा देख खड्ग को गायब, भौंचक्का रह पाया हो ॥ १०४ ॥ बहिन नही सुमित्र की सुन कर, राजा मन शरमाया। दुख मे दुख भूपत को भारी, दिव्य खड्ग गमाया हो ॥ १०५ ॥ इतने बात स्मरण हो आई, जो ज्योतिर्विद बतलाई। छीने तेग वही

राज्य हमारा हो ॥ ७० ॥ विष मिश्रित भोजन सुमित्र को, करवाया उसवार। लेते ग्रास गिर गया कुंवर, भूमि पै व्याय पछार हो ॥ ७१ ॥ खबर हुई भूप मंत्री को, शोक साथ म आया। विष का शमन करन हित राजा नाना योग मिलाया हो ॥ ७२ ॥ प्रगटे पाप हुए यह शोहरत मद्रा अहर खिलाया। तब सो भय स भगी विपिन में पता न किंचित पाया हो ॥ ७३ ॥ आराम कुंवर के भूप रहा पछताई। मचा शोर सारे शहर में और गमगीनी छाई हो ॥ ७४ ॥ पुण्य उदय क्रीड़ा करने, चित्र गति यहां आया। सुन पैगाम तज वायुयान को, शीघ्र महल में धाया हो ॥ ७५ ॥ मंत्रित जल के छींटे वदन पे दिये होश में आया। फौरन ही उठ बैठा बाला, किसने आन जगाया हो ॥ ७६ ॥ कौन कारण सब हुए एकत्रित राजकुंवर फरमाया। कहा विमाता जहर दिया इण सज्जन ने आन बचाया हो ॥ ७७ ॥ मुझ पर किनी दया अकारण, गुण जावे नहीं गाया। दे जहर मरा किया मात सच, इसी आपका पाया हो ॥ ७८ ॥ इतन सुवरा नाम केवली, बाग बीच में आया। मुनि वन्दन का सुनीज भूप भी सपरिवार सिधाया हो ॥ ७९ ॥ सुन उपदेश करी नृप पृच्छा कुंवर सुमित्र विमाता। गई कहां वो भाग महल से, कहा मान के माता हो ॥ ८० ॥ भाख मुनि वह गई विपिन में भीलों के कब्जे आई। वस्त्राभूषण छीन उसे, निज नृप को सौंपी आई हो ॥ ८१ ॥ नृपने भी वनिये को वेची निकली भाग पुराई। विपिन आग से मृत्यु पाकर, पहली नर्क सिधाई हो ॥ ८२ ॥ निकल नर्क स चरालन हो, मरे छुरी के योग। तीजी नर्क के भोगे दुख यूं आवागमन संयोग हो ॥ ८३ ॥ राजा सुन के जन्म मरण की हृदय बहुत कपाया। कहे सुमित्र से मुझ कारण, माता न कष्ट उठाया हो ॥ ८४ ॥ प्रभो ! कृपा कर दीक्षा दीजे मुझ कृतार्थ काज। भूप कहे मैं लूंगा संयम राज्य भार तुम लीज हो ॥ ८५ ॥ ज्यों त्यों समझा क सुमित्र को राज्य भार समझाया। आप मुनि बन गुरु साथ में योगाभ्यास बढ़ाया हो ॥ ८६ ॥ रोका बहुत ही चित्रगति को, पर वह जाना चाया। सब सुमित्र ने चित्रगति का, प्रेमभरी पहुंचाया हो ॥ ८७ ॥ निज साथेके भाव परम को भाव देई समझाया। अप्रसन्न हो गया कहीं पे, पता

भेजा मत्री वीरसेन के पास। चित्रगति से रत्नवती का, कीजे व्याह हुलास हो ॥ १२४ ॥ हे राजन् ! तुम राजकुंवर और, मुझ नृप राज दुलारी। जोडी सदृश कनक मणिवत्, लीजे सम्बध स्वीकारी हो ॥ १२५ ॥ दीनी जब स्वीकृति भूप ने, घर घर हर्ष मनाया। अति धूम से व्याह किया, लख सज्जन जन हर्षाया हो ॥ १२६ ॥ मन इच्छित पति पाय रत्नवती अपना भाग्य सराहा। सुख से रहे दम्पति देखो, किस्मत मेल मिलाया, हो ॥ १२७ ॥ धनदेव और धनदत्त जो, रहे स्वर्ग के माई वे भी दोनो चित्रगति के लघु भ्रात हुए आई हो ॥ १२८ ॥ मनोगति और चपलगति ये, नाम पुत्रो का दीना। लिखे पढ हुशियार हुए पै, व्याह उन्हो का कीना हो ॥ १२९ ॥ पिता प्रेम के साथ भ्रात दोऊ, रहे मोद के माई। पूर्व पुण्य से भूपत घर मे, कभी रही कुछ नाई ॥ १३० ॥ सोचे राजा जग असार, और सार धर्म दर्शाया। राज तख्त दे चित्रगति को, सयम ले वन धाया हो ॥ १३१ ॥ चित्रगति अब करे राज, कई भूपति आण मनाई। प्रजा, प्रेम, और न्याय, निपुणता, सबके हृदय समाई हो ॥ १३२ ॥ मणिचूढ नामा था भूपति, इनका जागीरदार। उसके थे दो पुत्र मनोहर, शशी और सूर, हुशियार हो ॥ १३३ ॥ मणिचूढ के मरने पर, ये लडन लगे दोऊ भाई। दीनी भूप ने बाट जागीरा, दोनो को समझाई हो ॥ १३४ ॥ मनमोती टूटे न मीले यो, वापस युद्ध मचाया। एक एक पे शस्त्र चला, उन दोनो ने प्राण गवाया, हो ॥ १३५ ॥ इस घटना के योग भूप को, जग झूठा दर्शाया। बडे पुत्र पुरन्दर को नृप, सारा राज भोलाया हो ॥ १३६ ॥ मुनिवर दमधर के समीप, ले सयम मोह तज दीना। रत्नवती नृप लघु भ्रात, दोनो ने भी तप कीना हो ॥ १३७ ॥ चित्रगति मुनिवर ने सयम, दीर्घकाल तक पाग। अत समय सथारा करके, चौथे स्वर्ग सिधारा हो ॥ १३८ ॥ वे दोनो लघु भ्रात मुनि, और सती रत्नवती लारी। हुए देवता महेन्द्र स्वर्ग मे करणी के अनुसारी हो ॥ १३९ ॥ दोहा —पूर्ण ब्रह्म परमात्मा, के पद शीश झुकाय। पचम षष्ठम भव कहूँ, सुणजो चित्त लगाय ॥ १४० ॥ ढाल —पश्चिम के महा विदेह क्षेत्र मे, पद्म वीजे एक भारी। नगर सुशोभित सिंहपुर सुन्दर,

करे सुना को हृदय हुलासी प्राह हो ॥ १०६ ॥ चित्रगति ने जा सुमित्र को पहिन मौषधी लाई । हुवा अति आनन्द मित्र चित्त,
धन्यवाद दर्शाइ हो ॥ १०७ ॥ विद्यागिरी से चित्रगति निज नगर लौट के आया । दुःख हरण सुख करण जगत में सच्चा मित्र
कहाया हो ॥ १०८ ॥ मिथ्या जग अवलोक भूप सुमित्र वैराग रमाया । इधर पुत्र ने न्याय नीति से, अपना काम चलाया हो
॥ १०९ ॥ गुरु आज्ञा से एकाकी मुनि, कीना उग्र विहार । मगधदेश में विचरत आये करते परउपकार हो ॥ ११० ॥ राजपुर
के बाहिर आपने उत्तम ध्यान लगाया । भ्रात सौतेला पद्म कहीं से सैर करन को आया हो ॥ १११ ॥ सुमित्र मुनि को
देखते ही यह हुवा क्रोध में भारी । मारा तीक्ष्ण तीर मुनिवर के जरा दया न विचारी हो ॥ ११२ ॥ सोचा मुनि ये आय नर्क
घोर मुझे स्वर्ग पहुंचाय । इससे बढ़कर कौन हितैषी मेरा जग में पाय हो ॥ ११३ ॥ कीना काल मुनिवर ने उस दम धर
परमेष्टी ध्यान । हुए देव सामान्य पांचवें ब्रह्मलोक वरस्थान हो ॥ ११४ ॥ भागा पद्म मार मुनिवर को उसे भय न खाया ।
उग्र पाप फल ये प्रत्यक्ष मर सातवीं नर्क सिधाया हो ॥ ११५ ॥ मृत्यु सुन करके सुमित्र की, चित्रगति दुःख पाया । अपने चित्त
को शान्त करन हित, मुनि दर्शन को आया हो ॥ ११६ ॥ उसी समय विद्याधर कोई मुनि सभा में बैठ । अनंगसिंह नृप रत्न-
वती युत, आ मुनिवर को भेटे हो ॥ ११७ ॥ चित्रगति ने हाथ जोड़ मुनि चरण शीश नवाया । अवधिज्ञान स देख सुमित्र
देव वहां पर आया हो ॥ ११८ ॥ रूप बना करके सुमित्र का अब उसको दिखलाया । प्रेम हृदय से चित्रगति न, मित्र को गले
लगाया हो ॥ ११९ ॥ हे प्रियवर ! तुमने तो मुझ पर कीना बहुत उपकार । जो जीवन्य दान नहीं देते तो नरतन जाता हार
हो ॥ १२० ॥ नरपति खगपति जो भी कोई विद्याधर थे भारी । मुक्तकण्ठ से की प्रशंसा उन दोनों की उस वारी हो ॥ १२१ ॥
चित्रगति गुण देख रत्नवती मुदित हुई मन मांई । कीना तेरा यह पती पुरुष खास, राजा रहा सुमाई हो ॥ १२२ ॥ सब तो
मुनि वन्दन कर वहां, अनंग भूप घर आया । चित्रगति सुमित्र देव सब निज निज स्थान सिधाया हो ॥ १२३ ॥ अनंगसिंह ने

भी दग रहाया। कौशल मत्री ने इत इनको, उसी समय लखपाया हो ॥ १५९ ॥ कहे सुकौशल नृप से, ये हरिनन्दी राजकुमार मैं जानू पहिचानू इनको, गलत नहीं सरकार हो ॥ १६० ॥ अच्छा ! कहके युद्ध स्थगित कर, पास कुवर के आया। अहो आप मुज मित्र सुत हैं, यह भेद अब पाया हो ॥ १६१ ॥ इतना कह गद गद स्वर होके, लीना कठ लगाई। तस्कर को दे अभयदान ले, मत्री सुत सग माई हो ॥ १६२ ॥ आये महलो माही जिमाकर, कीनी प्रीत सवाई। राज दुलारी कनक लता फिर, राजकुवर सग व्याई हो ॥ १६३ ॥ भोगे सुख अपराजित वहा पै, रहे मोद के माई। मागे विदा जाने नहीं देवे, रखते है विलमाई हो ॥ १६४ ॥ तब तो कुवर और मत्री सुत, चलने की सलाह उपाई। चुपके से रजनी में निकले, आये विपिन सिधाई हो ॥ १६५ ॥ मार्ग मे देवी मन्दिर से वाज रुदन की आई। शीघ्रगति से कदम बढा, पहुँच मन्दिर माई हो ॥ १६६ ॥ देखा अग्नि कुड प्रज्वलता बधी नार एक बाई। विद्याधर शमशीर हाथ ले, बैठा ध्यान लगाई हो ॥ १६७ ॥ करुण हृदय से बाला बोली, राजकुमर के ताई। हनन करे यह दुष्ट आप, अब लीजे मुझे बचाई हो ॥ १६८ ॥ राजकुमर यू कह हे दुष्ट क्यो, अबला को तेग दिखाता। आजा सन्मुख जो दम होवे, इसका मजा चखाता, हो ॥ १६९ ॥ सुनके विद्याधर भी बोला, क्या मौत तुम्हे यहा लाई। हुई परस्पर मुठभेड नहीं, किसी ने पीछी खाई हो ॥ १७० ॥ भुजा युद्ध मे राजकुवर से, उसने मुँह की खाई। नागफास फिर डाली कुवर पै, उसको भी तोड गिराई हो ॥ १७१ ॥ और कई विद्या कर स्मरण, दीने शस्त्र चलाई। रैन गुजर गई युद्ध बीच पर, जोर चला कछु नाई हो ॥ १७२ ॥ आखिर तेग को झपट कुवर ने, विद्याधर के मारा। जिससे मूर्छित होय गिरा, और छुटी खून की धारा हो ॥ १७३ ॥ इधर सूर्य रश्मि फैलाई, कन्या हृदय हर्षाई। अद्भुत रुप देख कुवर का, दिया आपा विसराई हो ॥ १७४ ॥ किया फेर उपचार कुवर ने, विद्याधर होश मे आया। देख दयालु अपराजित को, ऐसा वाक्य सुनाया हो ॥ १७५ ॥ सच्चे वीर हो राजकुवर तुम, नही जावे गुण गाया। स्त्री वध के घोर पाप

दीनों का सुखकारी हो ॥ १४१ ॥ हरिन्दी है भूप यहां का तेजस्वी यशकारी । महारानी प्रिय दर्शना सुन्दर कमल भार मनोहारी हा ॥ १४२ ॥ चित्रगति का जीव स्वर्ग से स्थिति पूर्ण कर आया । जाया सुत प्रियदर्शना रानी, राजा हर्ष मनाया हो ॥ १४३ ॥ नाम मनोहर इस बालक का अपराजित ठहराया । पढ़ गुरु पै विविध कला में प्रवीण इन बनाया ॥ १४४ ॥ मंत्री सुत एक विमल बोध, से हुई मित्रता भारी । खाते पीते रहे साथ में अन्तर नहीं लगारी हो ॥ १४५ ॥ गये मित्र दोनों क्रीड़ार्थ, हो घोड़े असवार । पर तुरंग अशिक्षित थे, वे भागे विपिन मुजार, हो ॥ १४६ ॥ थ रुक भरम तब मंत्री राजकुमार । पठ तरुतल देख भाग से उस जंगल की बहार हो ॥ १४७ ॥ उसी समय एक पुरुष भयाक्रान्त दौड़ कुमर पा आया । मैं शरणागत आया, रक्षा कीजे वाक्य सुनाया हो ॥ १४८ ॥ मंत्री सुत कहे इसमें य नर भवर एक विचार स्वामी की रक्षा हम करते अन्यायी धुतकार हो ॥ १४९ ॥ राजकुमर कहे चाहे जो हो शरणागत आया । रक्षा करना परम धर्म यह क्षत्रियों का बतलाया हो ॥ १५० ॥ आगे २ कहते सुन उसने राजकर्मचारी । आये दौड़ संग साथ स वाले इस प्रकारा हो ॥ १५१ ॥ दूर होजिये आप भरा यह है डाकू मक्कार । ग्राम लूट किये परेशान सब या कारण ये मार हो ॥ १५२ ॥ सुनके राजकुमर बोला मम शरणागत ये भाई । अब नहीं मार सके सुरपति तो, अन्य की क्या सुनाई हो ॥ १५३ ॥ इतना सुन कुंभलाय चारपे टूट पड़े सब सुभान । राजकुमर का हुशियारी से नहीं पहुंचा नुकसान हो ॥१५४॥ राजकुमर का कोप देख सब तरुन पांव सिधाया । निज स्वामी "कौशल" राजा से, बीतक हाल सुनाया हो ॥ १५५ ॥ उन्हें पराजित करने का नृप, विकट सैन्य भिजवाई । इतने प नहीं हारा कुमर तब, भूपस भौंह चढ़ाई हो । १५६ ॥ मित्र दृष्टास कर तस्कर को आप मही तलवार । नृप सेना पै टूटा जस भूग्यासिंह विचार हो ॥ १५७ ॥ देख चपलता पीलवान गज पै राजकुमार । झपट शीघ्र पाछे आ बैठा, उसको दीना मार हो ॥ १५८ ॥ किया पार समाम सूर मग पर

मत्री सुत, लेके शीघ्र ही आया । राजकुमार नहीं मिला वहा पै सोचे कहा छुपाया हो ॥ १९४ ॥ मन की व्याकुलता के कारण सुधबुध को विसराई । शीतल वायु के प्रयोग से, पुन चेतना पाई हो ॥ १९५ ॥ चित्त भ्रमितवत् डोले वनमे, रोवे करे पुकार । नन्दीपुर नगर मे पहुचा, बैठा बाग मुझार हो ॥ १९६ ॥ वहा पर दो विद्याधर आके, बोले इस प्रकार । भुवनभानू विद्याधर राजा, रहे वनमे इस बार हो ॥ १९७ ॥ उनके कमला और कुमोदनी, दोनो राज दुलारी । अपराजित होगा पति उनका, ज्ञानी से यू उच्चारी हो ॥ १९८ ॥ राजकुवर की तलाश करने, हमको यहा भिजवाया । उठा कुमर को यहा मे जल्दी नृप समीप पहुचाया हो ॥ १९९ ॥ निज स्वामी ने राजकुमरका, किया अति सत्कार । करी प्रार्थना शादी की जब, बोले नहीं लगार हो ॥ २०० ॥ करें याद हरवक्त तुम्हे, लेने को हम यहा आया । हुवा साथ मत्री चल आया, देख कुमर हर्षाया हो ॥ २०१ ॥ करविवाह यहा रहे मोद से, लेकर विदा सिधाया । पथ मे श्रीमन्दिर नगर एक, अति मनोहर आया हो ॥ २०२ ॥ इधर उधर को भाग रहे नर होय रहा हकार । पूछा कारण इसका नर एक, बोला इस प्रकार हो ॥ २०३ ॥ महाराज सुप्रभा यहा के, न्यायवत हितकारी । उनके मारा चाकू किसने, हैं अचेत इसवारी हो ॥ २०४ ॥ कामलता नामक गणिका, सराहण औषधलाई । हुई सभी बेकार भूप की, हालत बुरी बताई, हो ॥ २०५ ॥ जान चिकित्सक राजकुमर को, पास भूप के लाया । तुरंत कुमरने मणि ओषध घिस, नृप के लेप कराया हो ॥ २०६ ॥ हुवा शीघ्र आराम भूप, उठ बैठे लगी न वार । मत्री सुत के कहने से परिचय हुआ इस वार हो ॥ २०७ ॥ मित्र मेरा हरिनन्दी नृप तू उसका राजकुमार । तुरत उठके गले लगाया, किया बहुत सत्कार हो ॥ २०८ ॥ राजकुमारी रभा नृप की, इनको दी परनाई । कुछ दिन रहे विदा ले यहा से दोनो गये सिधाई हो ॥ २०९ ॥ वहा से चलके कुडलपुर मे, केवली प्रभु पा आया । मैं हू भवी या अभवी, कर कृपा फरमावे हो ॥ २१० ॥ प्रभू कहे है भवी, और तू, पचम भव मुझार । होगातीर्थ बाईसवां ये मित्र तेरा गणधार हो ॥ २११ ॥ सेवा करके कुछ दिन

स गुमन मुझे बचाया हो ॥ १७६ ॥ मणिरत्न और जड़ी बूटी मुझ पास सो ले लीज । मणिप्रकाश बूटी घिस जल में भरा जखम भर दीजे हो ॥ १७७ ॥ जब कुवर न जड़ी लगा के दीना स्वच्छ बनाई । फिर पूछा इस कन्या का, अब दीजे भेद बताइ हो ॥ १७८ ॥ श्रीसत्य नृप का मैं सुत हूँ सूर्य कान्त ममनाम । अमृतसनरथनुपुर नृप की कन्या यह अभिराम हो ॥ १७९ ॥ नाम रत्नमाला है इसका मानी यों फरमाया । हरिनन्दी नृप के सुत संग म, सका ब्याह ठवाया हो ॥ १८० ॥ सयोग वश इकबार कुमारी मेरी निगाह में आई । इसको ब्याहूँ इस नीयत से लाया इस ठौर्ड ॥ १८१ ॥ मैने इससे करी प्रार्थना दी इसने ठुकराइ । कहा पति अपराजित मेरा दूजा का पत्तु नाई हो ॥ १८२ ॥ तब तो छाया क्रोध मुझ तुरू इसको मार अलाइ । इतन आये आप भाग्यवश दीन हमें बचाई हो ॥ १८३ ॥ अब उपकारी अब कर कृपा अपना भेद बताय । तब मंत्री सुत राजकुमर का सारा हाल सुनावे हो ॥ १८४ ॥ सुनकर परिचय रत्नमाला अपने मन हर्षाइ । मानो अनायास सुरत सपत मन इच्छित यहां पाई हो ॥ १८५ ॥ तलाश करत रत्नमाला के मात पिता यहां आय । मन्त्री सुत से सुनी हकीकत फूले नहीं समाये हो ॥ १८६ ॥ कीर्तमती राना ओर राजा आपस में सलाह मिलाई । ब्याह सामग्री जुटा कुमर को राज सुता परनाई हो ॥ १८७ ॥ उस विद्याधर पे राजा को क्रोध जोर का आया । राजकुंवर ने कर अनुग्रह अपराध क्षमा करवाया हो ॥ १८८ ॥ सास सुसरा कह दामाद तुम चलो हमारी लार । कहे कुमर मौका होने पे आऊंगा कोई वार, हो ॥ १८९ ॥ माफ कीजिये अभी आप मैं अपने नगर को जाऊँ । अब दीजिये राज सुता को जब मर्जी पठाऊ हो ॥ १९० ॥ राजा रानी सुता सहित ले निज नगर को आया । विद्याधर सुरकान्त आज्ञा ले, वो भी जाना चाया हो ॥ १९१ ॥ जड़ी बूटी और मणिरत्न दे विधि विधान बताई । रूप बदलने का गुटका भी, दे गया मन्त्री सुख दाई हो ॥ १९२ ॥ अब ये दोनों चल यहां से विकट विपिन में आया । प्यास लगी तब राजकुमर का पैठा आम्र का छाया, हो ॥ १९३ ॥ पानी लेने गया

ठहर गये अब बाई हो ॥२२९॥ नृप मंत्री की बाला भी तो ब्याह योग हो आई। विमल बोध के साथ शीघ्र ही परणाई [illegible]
हो ॥ २३० ॥ राजकुमर अपराजित का ये, हाल पिता सुन पाया। लेने राज कुमर के ताईं, अपना दूत पठाया हो ॥ २३१ ॥ दूत
आय कर नमस्कार कहे, पितु दुख मिटाओ। जीवित रहे फक्त तुम खातिर, अब ना देर लगाओ हो ॥ २३२ ॥ इतना सुनते
राजकुवर के, छुटी आंशू धार। मिलन हित चल विदा ले, सुसरे से उस बार हो ॥ २३३ ॥ दोनों [illegible] उन सब पुर में [illegible]
जहां ब्याही नार। सब राजा ले सुता हो लिये, मग में करी न बार हो ॥ २३४ ॥ [illegible]
वारी। खेचर भूचर राजाओं की, सिंहपुर आई सवारी हो ॥ २३५ ॥ स्वागत कीना नगर निवासी, फिर मात पिता पे आया।
अति नम्र हो झुका चरण में, प्रेम का आंसू बहाया हो ॥ २३६ ॥ मात पिता ने राजकुंवर को, दीना आशीर्वाद। [illegible] ने
छुए सास पग, कहा रहो आबाद हो ॥ २३७ ॥ खेचर भूचर जो नृप आये, ले ले विदा सिधाये। रहे मोद से राजकुंवर, अप-
राजित पुण्य कमाये हो ॥ २३८ ॥ मनोगति और चपलगति, अब महेन्द्र लोक में चल कर। सूर और सोम हुए बन्धु अपरा-
जित के आकर हो ॥ २३९ ॥ हरिनन्दी ने अपराजित को दिया राज का भार। कर्म काट केवल पद पाकर, पहुंचे मोक्ष मुझार
हो ॥ २४० ॥ मंडलिक राजा अपराजित, अब राज करे सुखदाई। राजा राज और प्रजा चैन है [illegible] हो
॥ २४१ ॥ सैर करन को गये भूपति, अपराजित उद्यान। बैठा देखा धनी पुरुष एक मित्रों के दरम्यान हो ॥ २४२ ॥ [illegible] कर
और खाये खिलाये, दे दीनों को दान। याचकजन बिरदावली बोले सोचे मन सुलतान हो ॥ २४३ ॥ पूछे पर सेवक बोला, है
अनंगदेव कुमार। समुद्रपाल सार्थवाह का सुत, रहे इण शहर मुझार हो ॥ २४४ ॥ सुन भूपत बोला कि, मेरा भाग्य [illegible] उस
वारी मेरे राज्य में ऐसे ऐसे, रहते हैं व्यापारी हो ॥ २४५ ॥ सैर करी नृप निज महलों आ, सुख से रैन बिताई। प्रात:काल
भूपत ने देखा, एक मुरदे को पथ माईं हो ॥ २४६ ॥ यही अनंगदेव है यह, सेवक ने जितलाया। [illegible] योग [illegible],

प्रभू की यहां से भागे सिधाया। मार्ग में मुनि दर्शन करते अनानन्द पुर आया हो ॥ २१२ ॥ करे राज जितशत्रु यहां पर राणी धारणी प्यारी। रत्नवती का जीव इसीके अम्मा राजकुमारी हो ॥ २१३ ॥ प्रीतीमती दिया नाम सुताका सज्जनजन हर्षाइ। सबकला में निपुण बनी वह, सोलह वर्ष के माई हो ॥ २१४ ॥ योवन वय में देख सुधा, नृप मनमें करे विचार। योग्य जमाई मिल जगत में शोभा होवे अपार, हो ॥ २१५ ॥ किससे ब्याह अब करना प्रथम पुत्री की राह मंगाई। धायमाता क साथ कंवरी ने ऐसा दिया जवाई हो ॥ २१६ ॥ कुशल कला में अगर कोई नर जीते मुझ ताई। बनू उसीकी चरण सेविका अन्य नर बन्धु गाई हो ॥ २१७ ॥ धायमाता मुख सुनी प्रतिज्ञा, हर्षे हृदय मुझार। प्रीतीमती की कठिन प्रतिज्ञा, हुई शहर मंझार हा ॥ २१८ ॥ सुन्दरता सुनके कन्या की राजा राजकुमार। सीखे कला कोई किसमकी ब्याह करन हितकार हो ॥ २१९ ॥ करी स्वयंवर की तैयारी मंडप एक बनवाया। दिया संदेशा जिन २ राजा को व सब सजधज आया हो ॥ २२० ॥ स्वयंवर में हरिनन्दी नृप, नहीं सरीखे पाया हो। बिन कह पुत्र गया किधर को यही रज समाया हो ॥ २२१ ॥ मंत्री सुत और राजकुमर कर परिवर्तन वेश। बैठे यहीं स्वयंवर में जहां जुड़ रहे सभी नरेश हो ॥ २२२ ॥ सन्मुख राजाओ की, मती गई सबमारी। जितशत्रु कुम्हलाय कह क्या कन्या रहेगी कंवारी हो ॥ २२३ ॥ कन्या कला दिखाइ, सब शरमाइ वासा। अपराजित सुत कटा दूर सुरा हो, पहनाई वरमाला हो ॥ २२४ ॥ वरमाला पीछी लने को अन्य भूप कुम्हलाये। राजकुंवरने समर किया डट सबके मद छुडाये हो ॥ २२५ ॥ समर बीच सोमप्रभ नृप, जब इनको सत्य पाया। तुरत भुजा फैला के कुमर का, अपन गलसगाया हो ॥ २२६ ॥ राजकुंवर का परिचय पाकर किया समर का अंत सब राजों ने मिली ब्याह का साथ दिया सानन्द हो ॥ २२७ ॥ रुप प्रकट जब किया सभी को दीने सुख बनाई। जितशत्रु राजा निज कन्या, हपधरी परनाई हा ॥ २२८ ॥ दे सन्मान सभी राजों को विदा किये सुखसाई। अपराजित और मन्त्री दोनों
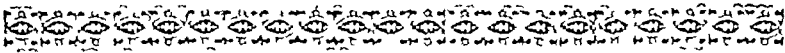
नृप मंत्री की बाला भी तो व्याह योग हो आई । विमल बोध के साथ शीघ्र ही परणादी हर्षाई
ठहर गये अब बाई हो ॥२२९॥ नृप मंत्री की बाला भी तो व्याह योग हो आई । विमल बोध के साथ शीघ्र ही परणादी हर्षाई
हो ॥ २३० ॥ राजकुमर अपराजित का ये, हाल पिता सुन पाया । लेने काज कुमरके ताई, अपना दूत पठाया हो ॥ २३१ ॥ दूत
आय कर नमस्कार कहे, पितु दुख मिटाओ । जीवित रहे फक्त तुम खातिर, अब ना देर लगाओ हो ॥ २३२ ॥ इतना सुनते
राजकुवर के, छुटी आंशू धार । मिलन हित चले विदा ले, सुसरे से उस बार हो ॥ २३३ ॥ दीनी सूचना उन सब पुर मे, जहा
जहा व्याही नार । सब राजा ले सुता हो लिये, संग मे करी न वार हो ॥ २३४ ॥ विद्याधर सूर्यकान्त घूमता, आन मिला उस
वारी । खेचर भूचर राजाओ की, सिंहपुर आई सवारी हो ॥ २३५ ॥ स्वागत कीना नगर निवासी, फिर मात पिता पै आया ।
अति नम्र हो झूका चरण मे, प्रेम का आसू बहाया हो ॥ २३६ ॥ मात पिता ने राजकुवर को, दीना आशीर्वाद । पुत्रवधू ने
छुए सास पग, कहा रहो आबाद हो ॥ २३७ ॥ खेचर भूचर जो नृप आये, ले ले विदा सिधाये । रहे मोद से राजकुवर, अप-
राजित पुण्य कमाये हो ॥ २३८ ॥ मनोगति और चपलगति, अब महेन्द्र लोक से चल कर । सुर और सोम हुए बन्धु अपरा-
जित के आकर हो ॥ २३९ ॥ हरिनन्दी ने अपराजित को दिया राज का भार । कर्म काट केवल पद पाकर, पहुचे मोक्ष मुझार
हो ॥ २४० ॥ मडलिक राजा अपराजित, अब राज करे सुखदाई । राजा राज और प्रजा चैन है, घर घर हर्ष बधाई हो
॥ २४१ ॥ सैर करन को गये भूपति, अपराजित उद्यान । बेठा देखा धनी पुरुष एक मित्रो के दरम्यान हो ॥ २४२ ॥ क्रीडा करे
और खाये खिलाये, दे दीनों को दान । याचकजन बरदावली बोले सोचे मन सुलतान हो ॥ २४३ ॥ पूछे पे सेवक बोला, है
अनगदेव कुमार । समुद्रपाल सार्थवाह का सुत, रहे इण शहर मुझार हो ॥ २४४ ॥ सुन भूपत बोला कि, मेरा भाग्य श्रेष्ठ इस
वारी मेरे राज्य में ऐसे ऐसे, रहते हैं व्यापारी हो ॥ २४५ ॥ सैर करी नृप निज महलो आ, सुख मे रैन बिताई । प्रात.काल
भूपत ने देखा, एक मुरदे को पथ माई हो ॥ २४६ ॥ वही अनगदेव है यह, सेवक ने जितलाया । विशुचिका के योग सेठ ने,

दिन में मृत्यु पाया हो ॥ २४७ ॥ इसी बात पर राजा सोचे, धन का क्या विश्वास। संयम साथ प्रगट हृदय में हुआ ज्ञान प्रकाश हो ॥ २४८ ॥ कुसुमपुर में मिले केवली, राजा को जिस वार। वही प्रभू उद्यान पधारे भाग्योदय इस वार हो ॥ २४९ ॥ जनता सुन वन्दन को आई भूपत भी दर्शन पाया। सुन उपदेश अनित्य जान भव मय से मोह हटाया हो ॥२५०॥ रानी के जन्मा था जो पद्मकुमार। राज्य भार दे उसी कुंवर को, लीना संजम भार हो ॥ २५१ ॥ सूर सोम राज भाना नृप के प्रीतीमती पट नार। विमलबोध मन्त्री संयम से रहते हरदम सार हो ॥ ५२ ॥ ज्ञान ध्यान आतम चिन्तन कर आगत स्वर्ग सिधाया। भोग सुख इन्द्र के सदृश करणी का फल पाया हो ॥ २५३ ॥ दोहा — सप्तम आठम भव का कहता हूं अधिकार। सुणिय श्रोता प्रेम धर आलस दूर निवार ॥२५४॥ इसी भरत क्षेत्र के अन्दर कुरु नामक एक देश। नगर सुशोभित हस्तिना पुर का श्रीषेण नरेश हो ॥ २५५ ॥ महारानी श्रीमती उसके एक दिन रैन मुझार। स्वप्ना देखा प्रथम हुआ सुख पूरणचन्द्र उदार हो ॥ २५६ ॥ रानी मुख स्वप्ना सुन भूपत पाठक को बुलवाया। सफल प्रताप पुत्र होगा मंगलिक अर्थ बताया हो ॥ २५७ ॥ इत अपराजित चय स्वर्ग से रानी के सुत आया। रूप मनोहर देख नाम नृप शंखकुंवर ठहराया हो ॥ ५८ ॥ शिक्षा का प्रबन्ध करा अध्यापक पास पठाया। सब कला सम्पूर्ण सीख गये यौवनवय में आया हो ॥ २५९ ॥ विमलबोध का जीव साथ मन्त्री के घर सुत आया। मतीप्रेम दिया नाम सकल विद्या में निपुण बनाया हो ॥ ६० ॥ पूर्व सम्बन्ध से शंखकुंवर का बना मित्र यह प्यारा। रहे साथ में सदा प्रेम से क्षीर नीर अनुसारा हो ॥ २६१ ॥ एक रोज मिल प्रजा भूप से ऐसी अरज गुजारी। शृंगगिरी के निकट वहे निज शिशिरा नदी सुखकारी हो ॥ ६२ ॥ समरकेतु पल्लीपति दुष्ट नाम जन हत्यारा। रंजा कीने लोग हमारी दुःखे सब अब गुजारी हो ॥ ६३ ॥ इतना सुन के सेना सज, नृप रणभेरा बजवाई। शंखकुंवर आन ज्यारिर का कहे पिता के ताई हो ॥ २६४ ॥ साधारण पल्लीपति ऊपर स्वामी का क्यों जाना। इस खातिर हम लाख हैं दासा, हुक्म

आप फरमाता हो ॥ २६५ ॥ इसी वचन से राजा जाना, शूरवीर यह पूत । अवश्य विजय करके आवेगा, संग भेजे रजपूत हो ॥ २६६ ॥ पल्लीपति सुन निज सुभटों संग, छिपा गुफा में जाके । राजकुमर ने घेर मंगाया, बुरी तरह से आके हो ॥ २६७ ॥
उस डाकू ने जब बचने का, एक उपाय न पाया । राजकुंवर के चरण पकड़ कहे, शरण आपके आया हो ॥ २६८ ॥ पल्लीपति से राजकुंवर ने, सारा धन मंगवाया । जो जो मालिक थे उस धन के, बुला उन्हें संभलाया हो ॥ २६९ ॥ पल्लीपति को संग ले चले, विजय डंका बजाई । सन्ध्या समय विपिन में ठेरे, पेरा दिया लगाई हो ॥ २७० ॥ मध्य निशा में एक अबला का, करुण रुदन सुन पाया । शंखकुमर ले खड्ग हाथ में, उसकी ओर सिधाया हो ॥ २७१ ॥ नवयुवती को देख कुमर ने, पूछा उसके ताईं । हे भद्रे क्या दुख है तुझको, क्यों रही रुदन मचाई हो ॥ २७२ ॥ बोली बाला अंग देश में, चंपा नगरी भारी । भूप जितारी रानी उसके, प्रीतीमती सुखकारी हो ॥ २७३ ॥ कई पुत्रों के बाद यशोमती, सुता अनोपम जाई । ब्याह योग होने पे योग्य वर, दिया नहीं दिखाई हो ॥ २७४ ॥ शंखकुमर की महिमा कवरी किसी प्रकार सुन पाई । ली प्रतिज्ञा जो परणूं तो, इसी कुंवर के ताईं हो ॥ २७५ ॥ सुन प्रतिज्ञा भूप सुता की, अत्यानन्द मनाया । ब्याह काज श्रीषेण भूप पै, संदेशा भिजवाया हो ॥ २७६ ॥ दूजा मणि शिखर विद्याधर, ब्याह की मन में धार । उस कन्या को मांगी तब तो, बोला नृप विचार हो ॥ २७७ ॥ शंखकुमर के सिवा सुता मम, नहीं और को चावे । तब तो विद्याधर कन्या को, हरण करी ले जावे हो ॥ २७८ ॥ मैं हूं कन्या की धायमाता, वीतक बात सुनाई । गया न जाने कहां उसे ले, मुझे यहां छिटकाई हो ॥ २७९ ॥ हे माता तुम धैर्य धरो मैं उस विद्याधर ताईं । पराजित कर कन्या लाऊं, देर लगे कुछ नाईं हो ॥ २८० ॥ शंखकुमर अब घूम विपिन में, पूरण खोज लगाई । मिले गुफा में शृंगगिरी की, सूरज निकले ताईं हो ॥ २८१ ॥ यशोमती को वह विद्याधर, मना रहा उस वार । मेरे संग में ब्याह करो पर वह कर रही इन्कार हो ॥ २८२ ॥ मैंने तो तनमन अर्पण, कर दीना शंखकुमर को । स्वप्ने में भी मैं नहीं चहुं, अन्य किसी भी नर

पा हा ॥ २८३ ॥ शंखकुमर तो मेरा अधीन है मैं उसका सरदार। मान अन्यथा अबरन तेरा होऊंगा भरतार हो ॥ २८४ ॥ राजकुंवर बोला रे दुष्ट, तू हो जा अब तैयार। किया समर उस शंखकुंवर ने तब कर विचार हो ॥ २८५ ॥ विद्या योग आग के बम गोले, शत्रु चलावे। पुण्य प्रभावे राजकुंवर के जरा आंच नहीं आवे हा ॥ २८६ ॥ राजकुंवर ने फैंका तीर विद्याधर मूर्छा खाई। कर उपाय सचेत किया, फिर युद्ध की उसे सिखाई हा ॥ २८७ ॥ तब तो वह विद्याधर बोला सच्ची बात सुनाऊं। तुम से लड़के भूल करी क्षमा अपराध की चाऊं हो ॥ २८८ ॥ कुंवर कहे बल पौरुष तेरा देख हृदय हुलसाया। मांग तुझ मैं दूंगा मन का चाया हो ॥ २८९ ॥ विद्याधर बोला वैताढ्य पे चल कृतार्थ कीजे। मिल आपसे प्रेमीजन सब इतना सुयश लीजे हा ॥ २९० ॥ राजकुंवर ने बात स्वीकारी, मणि शिखर हुलसाया। इसने अनुचर विद्याधर का, साथ लगा वहां आया हो ॥ २९१ ॥ तब अनुचर को भेज फौज सब हस्तिनापुर पहुंचाई। और कहा फिर धामाता को ले आना संग माई हो ॥ २९२ ॥ शंखकुमर और यशोमती को विद्याधर ले सार। कनकपुरी निज नगरी आते किया बहुत सत्कार हा ॥ २९३ ॥ कई विद्याधर कन्या लाकर, करे ब्याह की त्यारी। यशोमती के परणे पहले कुंवर नहीं स्वीकारी हो ॥ २९४ ॥ कुछ दिन ठहर चला कुंवर जब विद्याधर मिल सारा। निज निज कन्या साथ ले आवे, चम्पापुर उस बारा हो ॥ २९५ ॥ सुन नृपेन्द्र जितारी हाल यह, फूला नहीं समावे। स्वप्न में भी आस नहीं सो अनायास मिल जावे हो ॥ २९६ कर स्वागत अब शंखकुंवर का, लाय महल वधाई। शुभ मुहूर्त में सुता ब्याह कर दिया दहेज हुलसाई हा ॥ २९७ ॥ आगत विद्याधर भी लौटे, निज निज कन्या ब्याही। शंखकुंवर हस्तिनापुर आये सब त्रिया संग माई हो ॥ २९८ ॥ मात पिता के चरण नमन कर, सारी बात सुनाई। स्वजन पुरजन कर प्रशंसा रह मोद के माई हो ॥ २९९ ॥ आरण्य स्वर्ग ग्यारहवें से चव सुर सोम था भाई। शंखकुंवर के लघु भ्रात थे, बने पुण्य से भाई हो ॥ ३०० ॥ यशोधर गुणधर ये दोनों, बालक के शुभ नाम। कालान्तर में सोच भूपत हो गया

कार्य तमाम हो ॥ ३०१ ॥ वैराग्य भाव मन लाकर दीना, शखकुवर को राज। गुणधर नामा गणधर पै जा, आप बने मुनि-राज हो ॥ ३०२ ॥ करे राज अब शख भूप, हैं दिल के वडे उदार। न्यायी, गुणग्राही, सत्यवादी, पूर्ण गुण भडार हो ॥ ३०३ ॥ बैठे गवाक्ष में राजा राणी, निरखे नगर के ताई। हुए प्यास व्याकुल मुनि को, लाये महलो माडे हो ॥ ३०४ ॥ राजा राणी मिल के धोवण, दाखो का वहरावे। रानी ने दिया शीघ्र डाल, माया युत लाभ कमावे हो ॥ ३०५ ॥ रानी सोचे मर्द वनू पर, बाधा स्त्री बन्ध। राजा शुद्ध भाव से देखो, बांधे, पुण्य के वृन्द हो ॥ ३०६ ॥ श्रीषेण मुनि करी तपस्या, पाये केवल ज्ञान। करते पर-उपकार पधारे, हस्तिनापुर उद्यान हो ॥ ३०७ ॥ बनपालक से शख भूपति, प्रभू आये सुन पावे। शीघ्र आय भट चरणो को, बानी सुन हर्षाये हो ॥ ३०८ ॥ अहो प्रभू आप वचन से, जाना जगत असार। यशोमती पर अधिक प्रेम क्यो, भाखो जगदो-द्धार हो ॥ ३०९ ॥ धन्नकुवर तुम पहले भव में, यह धनवन्ती नार। वहा दोनो सौधर्म स्वर्ग मे हुए देव अवतार हो ॥ ३१० ॥ चित्रगति तुम जन्मे वहां यह रत्नवती हुई नारी। गये वहा महेन्द्र लोक मे, हुए देव अगवानो हो ॥ ३११ ॥ फिर अपराजित हुए भूप तुम, यह प्रीतिमती पटरानी। कर करणी गये आरणत स्वर्ग में, भोगी वहां पुनवानी हो ॥ ३१२ ॥ यशोमती हुई भव सातवें, तुम हुए शखकुमार। अनुत्तर विमान अपराजित मे, अब होगे देव उदार हो ॥ ३१३ ॥ वहा से चव तुम भरतक्षेत्र मे नेमीनाथ भगवान्। यशोमती बन राजमती फिर पावोगे निर्वाण हो ॥ ३१४ ॥ सुन निर्णय सर्वज्ञ प्रभु से, वैराग्य हृदय समाया। राज सौंप पुण्डरीक कुवर को, भूपत मोह मिटाया हो ॥ ३१५ ॥ दोनो लघु भ्रात, मत्री और यशोमती पटरानी। सब ही साथ में सजम लेकर, सफल करी जिन्दगानी हो ॥ ३१६ ॥ शखमुनि गीतार्थ बनके, तप जप कर शुद्ध ध्यान। बाधा तीर्थंकर गोत्र आपने, जो जग बीच महान हो ॥ ३१७ ॥ अत समय मे अनसन कर गये, अपराजित विमान। यशोमती साधवी आदि बने देव वहीं आन हों ॥ ३१८ ॥ अब यादव वश में जन्म लहेगा, आगे नेम जीनद। गुरु प्रसादे चौथमल कहे सुणता हर्षानद हो ॥ ३१९ ॥

हरिवंश (यादववंश) कुरुवंश उत्पत्ति और उनका वर्णन ।

दोहा—नमन करू प्रभु नमी को ज्ञा नव निधि दातार । इष्ट सब हो कार्य सब, अब मेरे हरबार ॥ ३२० ॥ नेमी नाथ प्रभु का कहु जीवों के हितकार । हरिवंश की उत्पत्ति, प्रथम सुना सुविचार ॥ ३२१ ॥ चाल —सुणी हरिवंश की महिमा अनूपम भावा सांमलो ॥ टेक ॥ इसी भरत क्षत्र में नगरी कौशाम्बी गुलजार । वनवाड़ी आराम मनोहर स्वर्गपुरी अनुसार हा ॥ ३२२ ॥ राजा राज सुमुख जहां करता, विद्यावन्त सनूर । हय गय रथ पैदल सना और भरा कोष भरपूर हा ॥३२३॥ ऋतु बसंत में सैर करन हित राजा चला आराम । एक सवारी चढ़ के भटाकी की पुरुष तमाम हा ॥ ३२४ ॥ पर पुनकर सुविन्द की पत्नि वनमाला सुखमाल । रूप हुवा आसक्त भूप, अति दुष्कर काम कराल हो ॥ ३२५ ॥ मनाश याद गुलशन में कर भूप महल में आया । रच उपाय वनमाला का फिर मंत्री न मल मिलाया हा ॥ ३२६ ॥ सती विधुपा गर पुरुप का, कभी न स्पर्शो अंग । ध्वजा विमुख नहीं रह अनिल स उल्टी बहे न गंग हो ॥ ३२७ ॥ रघुवर न भी शूर्पणखा को, कभी नहीं लगार । जिसे अधम से अधम कर ता हाता तुरंत बिगार हा ॥ ३२८ ॥ राजा पटकुलकर पत्नी से भाग

सुख हुलास। मृत्यु पाये विद्युत्पात से, जन्मे वे हरिवास हो ॥ ३२९ ॥ तीन वर्ष त्रिमास दिवस, या तीन पहर के मांई। उग्र पुण्य या उग्र पाप फल, मिले विश्व के मांई हो ॥ ३३० ॥ चित्त भ्रान्त हुवा वीर कुविन्द का, नार वियोग दुख पाया। हुवा देव किलमीषी स्वर्ग मे, अज्ञान तप कमाया हो ॥ ३३१ ॥ कर्म किये हरगिज ना छुटे क्या राजा क्या रंक। मल ज्यों खटके वैरभाव, वो बदला लहे निशंक हो ॥ ३३२ ॥ वीर कुविन्द ने लखा पूर्व भव, अवधि ज्ञान मुझार। कहां जन्मा दुश्मन राजा, कहां जन्मी वह नार हो ॥ ३३३ ॥ हुवा युगलिया हरिवास मे, सुख अनोपम पाया। घुमे मोद मे दोनो हिल मिल, कल्पवृक्ष की छायां हो ॥ ३३४ ॥ द्वेपानल मे जला भुना, सुर आकर करे विचार। यहा हणू तो सुरपद पावे, क्षेत्र स्वभाव उदार हो ॥ ३३५ ॥ ऋषभदेव के नन्द शिरोमणि, बाहुबलि बलवान्। राजा भरत को जिसने जीता, जिसका बहुत बखान हो ॥ ३३६ ॥ तीन लाख सुत बाहूबलि के, हुए अधिक गुणवान। सोम ज्येष्ठ सुत से हुवा प्रगट सोमवश पहिचान हो ॥ ३३७ ॥ सोमयश के पुत्र हुए हैं, श्री श्रेयास कुमार। आदिनाथ को जिन्हे कराया, इक्षुरस का आहार हो ॥ ३३८ ॥ श्रेयांस के नन्दन जाया, सर्व भौम सुख कन्द। असख्य पीडियो के अनन्तर, हुवा है कीर्तिचद हो ॥ ३३९ ॥ कर्मयोग से निससतानिया, भूपत मृत्यु पाया। गादी लायक ऐसा दूजा, और नजर नहीं आया हो ॥ ३४० ॥ मत्री आदि आये बाग मे, देखा युगल कुमार। अबर से सुर वाणी प्रगटी, सुनो सकल नरनार हो ॥ ३४१ ॥ राजा राणी चपापुर के इनको शीघ्र बनाओ। मदिरा मास का आहार करावो, जो थे कुशलता चावो हो ॥ ३४२ ॥ **सुर शक्ति से देखो उसने, रखे भरत में लाई।** । वैरी वैर कभी ना छोडे, वैर करो मती भाई हो ॥ ३४३ ॥ हरि नामक ये हुवा भूपति, सब जनता ने माना। दशवे शीतल प्रभू के बारे, हरिवश प्रगटाना हो ॥ ३४४ ॥ हरि हरिणी के हुवा पुत्र फिर, पृथ्वी पति गुणवान। अनेक पीडिया धर्म अराधा, पाये पद निर्वाण हो ॥ ३४५ ॥ मुनि सुव्रत हुए राजगृह मे, हरिवंश के मांड। उनका सुत सुव्रत नृप होकरे, दीना वश दिपाई

हो ॥ २४६ ॥ यमुना तट सौवीर देश में मथुरा है सुखकारी। हरिवंश में वसु भूप सुत हुआ सुदत्त ध्वज भारी हो ॥ २४७ ॥
भूप सुदत्त ध्वज के कुल मांही यदु राजा प्रगटाया। हुआ पुत्र उसके सुर नामक, यादव वंशी कहाया हो ॥ २४८ ॥ सुर भूप के
हुए पुत्र दो, दोनों ही सूर्य समान। प्रथम पुत्र सौरी शुभ लक्षण दूजा सुवीर सुजान हो ॥ २४९ ॥ शौरी को दे राज भूप
सुवीर बना युवराज। शूर भूप संयम धारण कर सारे आतम काज हो ॥ २५० ॥ शौरी आय कुशार्थ देश में शौरी पुर
बसाया। और लघु भ्रात को मथुरा की, गद्दी पर बिठाया हो ॥ २५१ ॥ शौरी के सुत हुआ निरोपम अंधकविष्णु राय। हुआ
शिरोमणि सुत सुवीर के भोज विष्णु सुखदाय हो ॥ २५२ ॥ शौरी नृप अंधक विष्णु का कर उत्तर अधिकारी। सुप्रतिष्ठ मुनि
पे संयम ले, पहुंचे मोक्ष सुखकारी हो ॥ २५३ ॥ भूप सुवीर ने भोज विष्णु को मथुरा धीश बनाईया। सौ वीर पुर सुखदाई
सिंधु देश में नगर बसाया हो ॥ २५४ ॥ भोज विष्णु अब भूपति हो कर प्रजा पुत्रवत् पाले। उग्रसेन आदि सपूत सब,
नीति धर्म पर चाले हो ॥ २५५ ॥ अंधक विष्णु के पटराणी है मानो इन्द्राणी। नाम सुभद्रा सब सतियों में प्रथम आप
पन्यानी हो ॥ २५६ ॥ दसों दसार कुमर इन जाया, समुद्र विजय प्रधान। अक्षोभ, स्तमित सागर चौथा हिम अचल
॥ २५८ ॥ धरण, पूरण अभिचन्द्र अरु, वसुदेव लघु जान। मात पिता को पुत्र दसों ही प्यारा प्राण समान हो
पसधाम् हो ॥ २५७ ॥ दो बहिनें सुशीला इनके रूपवान गुण धाम। कुन्ती और मद्री दोनों मानु है धनधाम हो ॥ २५९ ॥ बात कहूं
अब कुरुवंश की, सुणजो ध्यान लगाय। ऋषभदेव के कुरु कुंवर से अत्र कुरु वंश कहाय हो ॥ २६० ॥ कुरु भूप सुत हस्ति
भूप ने हस्तनापुर बसाया। इसी वंश में आगे भूपत अनंत वीर्य प्रगटाया हो ॥ २६१ ॥ विश्ववीर्य महिपाल हुआ फिर इसी
वंश के मांई। चक्री सनतकुमार की कीनी देव परीक्षा आई हो ॥ २६२ ॥ शान्ति कुंथु अर जिनेश्वर छः खंड पदवी पाया।
इन्द्र केतु, कीर्ति केतु, शुभ वीर्य सुवीर्य महाराया हो ॥ २६३ ॥ अनंत वीर्य कृतवीर्य भूप सेभूम चक्री प्रगटाया। जिमन

परशुराम हनन कर, क्षत्र्यो का तेज बढाया हो ॥ ३६४ ॥ इसी वश मे और भी कई हुए नरेश तपधारी । राजा शान्तनु हुवा आन फिर, राजा में बलकारी हो ॥ ३६५ ॥ लगा व्यसन उसके एक खोटा, खेले सदा शिकार । कर्मोदय नहीं असर धर्म का, करे जीव सहार हो ॥ ३६६ ॥ चन्द्रश्याम, सागर जल खारा, काटा गुल के माड । सोना अगध, रवि मे तेजी, धनवान् कृपणता छाई हो ॥ ३६७ ॥ उत्तम से नहिं हेत मोहब्बत, नीचो के सग प्यार । भूप चढा एहडे है मगमे लुच्चे और लबार हो ॥ ३६८ ॥ मृग के पीछे भूप एकाएक, आया विपिन मुझार । देखी गगा तटपे कुमरी, आश्चर्य हुवा अपार हो ॥ ३६९ ॥ राजा चिंते यह इन्द्राणी, भूल भटक यहा आई । इतने एक विद्याधर आके, एसी बात सुनाई हो ॥ ३७० ॥ एक समय चारण मुनि आके, ऐसा दिया जताय । गंगा का वर बने सान्तनु, गगा के तट आय हो ॥ ३७१ ॥ वही योग यह आन मिला, सुन मनमे भूप लुभाया । विद्याधर गगा के लाल को, लाकर व्याह रचाया हो ॥ ३७२ ॥ गगा बोली जब मैं परणू जो भूपत मुझ माने । ठोक बजा के हडिया लेवे, प्रगट जगत मे जाने हो ॥ ३७३ ॥ नमक दूध मे कनक कुधातु मिलते ही होत बिगार । यो पति पत्नि मे न बने तो, सारा जन्म निसार हो ॥ ३७४ ॥ कर मजूर बना पटराणी, नरेन्द्र महलो मे आया । सुन्दर रूप लखी नव बधु का, सबका मन हुलसाया हो ॥ ३७५ ॥ गगा महारानी सुत जाया श्री गगेवकुमार । जन्म महोत्सव किया भूपने, वरते जय जय कार हो ॥ ३७६ ॥ वर मागा गगाने पति से, करे न आप शिकार । नहीं माने पे गगा सुत ले पहुची पियर मुझार हो ॥ ३७७ ॥ हैं दुर्व्यसन दुर्गति का दाता मूढ़मती क्या जाने । ईश्वर धर्म और प्रीत सज्जन की शिक्षा नेक न माने हो ॥ ३७८ ॥ प्राढ भये पे बने गांगवजी, सकल कला के जान । चौबीस वर्ष की वय मे हो गये, शूरवीर बलवान हो ॥ ३७९ ॥ गगा तट गगव सिधाया, इधर शांतनु आया । वाक्य निभाने कारण इन दोनो ने युद्ध मचाया हो ॥ ३८० ॥ गगा सुनकर सोचे, प्रभू कैसे सुधरे काम । पुत्र मरे पे बने निपुती, पति मरे बदनाम हो ॥ ३८१ ॥ गगा शीघ्रगति चल आई, दोनो को दिये समझाई । सुत

को ले पीयर में आई शोभा जग में पाई हो ॥ ३८२ ॥ व्यसन भूप तजे नहीं जहाँ गया ससुर घर आय । नीतिवान् और मनी विदुषी अपना वाक्य निभाय हो ॥ ३८३ ॥ आदर का गज भर पट अच्छा बिन आदर का चीर । आदर सूखा भोजन अच्छा बिन आदर की खीर हो ॥ ३८४ ॥ धर्म लाज मर्यादा वर्जित हाय कलेमण नार । पीयर सासर होय निरादर ओला करो विचार हो ॥ ३८५ ॥ सहे न तेजी कभी ताजना अत्री सहे न मार । है इज्जत का प्यार जगत में छिपे सराज गोल हो ॥ ३८६ ॥ पति पत्नि के सन गई परस्पर भी कथा बात में बात । परमारथ का नृप ठुकराकर करी सत्य की घात हो ॥ ३८७ ॥ एक दिन यमुना के तट नर वर, कन्या एक लख पाया । रूप वस्य मोहित हुआ ऐसा सुध बुध को बिसराया हो ॥ ३८८ ॥ नृप कामणी नैन मूपति, हटता नहीं हटाया । लाखों मोही करे चोर, नहि छुपसे नैन छिपाया हो ॥ ३८९ ॥ कामी के नहिं लाज शर्म नहिं शौच काम जगवाई । ज्वर पीड़ित को रुच न भोजन यों भूप काम विषमाय हो ॥ ३९० ॥ तीनों लोक नर पशु देव सब, तिरिया के वश आया । दानव गोब्रज इन्द्र आदि का, इमन दास बनाया हो ॥ ३९१ ॥ आसे आतुर हो नम नृपति पूछ नाविक ताई । है कन्या यह कौन कहां कि वे मुझ को जिवलाई हो ॥ ३९२ ॥ है भूपत यह कन्या मेरी, सत्यवती है नाम । बने नारी पुण्यवान पुरुषकी जैसे सीताराम हो ॥ ३९३ ॥ राजा मत्री से कहलाया यह मुझको परणाओ । जैसे हो वैसे समझाकर फौरन ब्याह रचाओ हो ॥ ३९४ ॥ नाविक का हर तरह मंत्री ने समझाया नहीं माने । कन्या सुत को राज मिले नहीं बात यही वह ठाने, हो ॥ ३९५ ॥ सुन भूपत लिसीयाला मन म भेद कुमर सुन आया । पिता श्री को चिंतित अग्न, गांगेय हृदय दुख पाया हो ॥ ३९६ ॥ मात तात की नहिं हो भक्ति, वह तो पूत कपूत । मात उदर का कीड़ा है वह क्या रक्खे घर सूत हो ॥ ३९७ ॥ आय तुरत गांगेय कुमर कहे, नाविक को समझाई । तुम पुत्री का सुत नृप होगा ब्याह करो हुलसाई हो ॥ ३९८ ॥ आप बड़े बलवान, आपके सुत होगा बलवान । वह अगर ले

राज्य छिन फिर इसका कौन विधान, हो ॥ ३६६ ॥ आजीवन ब्रह्मचारी रहू मैं अटल प्रतिज्ञा धारी । बिना मूल के शाखा नहीं हो, समझो हृदय सुझारी हो ॥ ४०० ॥ शील सहाई देवों ने मिल, पुष्प वहा बरसाया । भीष्म पितामह नाम दिया हर जग मे सुयश छाया हो ॥ ४०१ ॥ राज प्रलोभन कारण बेटा, करे तात का नाश । गंगेव किया मो करे न कोई हे गुण रूप खजाना खाश हो ॥ ४०२ सत्यवती का व्याह भूप सग, किया शीघ्र मन चाया । भोगे सुख पाचो इन्द्री के, बाना पुरुग बनाया हो ॥ ४०३ ॥ सत्यवती ने दो सुत जाये, पति से भी बलवान् । चित्रागद और चित्रवीर्य ये, कुरुवश मे भान हो ॥ ४०४ ॥ भूप सान्तनु तज शिकार, अब राणी को समझाई । धर्म ध्यान कर गये स्वर्ग मे, शुद्ध भावना भाई हो ॥ ४०५ ॥ चित्रांगद को भूप बनाया, बचन गगेव निभाया । वचन बदल मानव इस जग मे, कभी न आदर पाया हो ॥ ४०६ ॥ नीलागद भूपत से नृप, चित्रागद युद्ध ठाया । मना किया नहीं माना रण मे, आखिर प्राण गमाया हो ॥ ४०७ ॥ वेर भ्रात का लेने खातिर, श्रीगगेव कुमार । नीलागंद को मारा रण मे, रक्खा कुल आचार हो ॥ ४०८ ॥ दूनिया मे सगपण अनेक, नहीं भ्रात समा ससार । लखन भ्रात के कारण रघुवर, रोये आसू डार हो । ४०९ ॥ कष्ट पड़े पर भ्रात भ्रात की करे सहायता आज । भरत भूप अध रात बीच में, भगे लखन के काज हो ॥ ४१० ॥ पुरुषों खातिर नार बहुत, नारी से सुत प्रगटावे ।मा जाया बन्धु जो होवे, तो वह प्रीत निभावे हो ॥ ४११ ॥ लघु भ्रात को गादी बिठला आण अखड बरताई । प्रबल प्रतापी महाबली, भुज दड से कीर्ति फेलाई हो ॥ ४१२ ॥ काशी नृप की कन्याओं ने, स्वयंवर रचवाया । अबा, अंबीका, और अबालीका, तीनो का रुप सवाया हो ॥ ४१३ ॥ राजा राजकुमर आदिको, दे सदेश बुलाया । हस्तिनापुर संदेश न भेजा, जाती हीण बताया हो ॥ ४१४ ॥ चित्रवीर्य गमगनि हुआ, गंगासुत पूंछे आई । प्रत्युत्तर नहीं दिया कहा, चुप बेठो आप अब जाई हो ॥ ४१५ ॥ उठे हृदय मे लहर करे क्या, सोचे मन भूपाल । वसुन्धरा जो दे विकाश तो, बैठे जा पाताल हो ॥ ४१६ ॥

भेष सई गगेव कुमर मनम भति कुंमलाया । मुक बैठ ओ लघुता भाष जननी दुप लजाया हो ॥ ४१७ ॥ गमा माष पयान करी काशी भूपत पे भाया । हरण करी तीना कन्या को, नृप से युद्ध मचाया हो ॥ ४१८ ॥ साच निवम हृदय बीच में ममला सपर वाट । सबला करे वही जग लाजे नीच नर ऊपर खाट हो ॥ ४१९ ॥ मव राजा को छिन में जीती स कन्या का मार । लौट शीघ्र हस्तिनापुर भाये देख रहे सिरदार हो ॥ ४२० ॥ तीनों बाला को परणाइ, नृप सनियम हषाई । पम प्रताप काय सिद्ध हो कमी रहे कछु नाई हो ॥ ४२१ ॥ महारानी भम्बीका आयो श्री धृतराष्ट्र कुमार । भम्बालीका पांडु का आया भंत्रा विदुर कुमार हो ॥ ४२२ ॥ चित्रवीर्य नृप रोग ग्रसित हो, त भरण माथ गंवाया । कलाधार पुण्यवन्त पांडु था, गजपुर धीश बनाया हो ॥ ४२३ ॥ मधूरसव के काज भूप, स भाडम्बर वन भाया । गखा तरुतल एक पुरुष ला चित्रपट दिखलाया हो ॥ ४२४ ॥ चित्रपट भवलोक कह नृप, नारी रुप भपार । नख शिख तक सुन्दरता उनकी दरस वारवार हो ॥ ४२५ ॥ रगन स तृपति नहीं होवे शोभा कही न जाय । पशु पक्षी नर देव जगत सब मोहनी के वस मांय हा ॥ ४२६ ॥ राजा पूछ कहो पुरुष ये, रुप नजर कहीं भाया । कुन्ती का है रुप मनोग्य चित्रकार बतलाया हा ॥ ४२७ ॥ भूला गस समाशा भूपत भूला राजकाज । भूला खान पान भी सारा चाहे मिलूं मैं भाज हो ॥ ४२८ ॥ लगा ध्यान है एक उसी ज्या वारी बिन मीन । चैन पड़े नहीं जरा भूप को वर्ष बराबर दिन हो ॥ ४२९ ॥ दिया दान उस नर को मनहर, यह शौरी पुर जाय । करी बड़ाइ नृप के सम्मुख, गुणी हथनापुर राय हो ॥ ४३० ॥ तात गोदी में बैठी कुन्ती नृप का सुना बखाण । कुमरी के मन गया हृदय में ऐसा किया निदान हो ॥ ४३१ ॥ परणूं तो एक गजपुर स्वामी, या मरूं कुंवारी न्याय । अन्य पुरुष सब भ्रात बराबर दिया निश्चय मन मांय हो ॥ ४३२ ॥ भादा पांडुराय महल में चिंता छाई भपार । चंचल चित्त रहे भूप का नहीं अनाज लगार हा ॥ ४३३ ॥ वायु सेवन गया विपिन में था एक भपर चोइ । ल्पीला खींच से उस तोड़ दृश्य दगा दिल चाइ हो ॥ ४३४ ॥ पर

दुख दुखिया विरला जग मे, विरला पर उपकारी । विरला पर का कारज सारे, विरला करुणा धारी हो ॥ ४३५ ॥ कीले निकाल जखम को पूरा, औषध को चरचाई। कष्ट मिटे पर पूछे नृप, क्यो कष्ट पड़ा तुज मांईहो ॥ ४३६ ॥ मुझ नारी को लेगया एक नर, मैंने पकड़ा लार । इस कारण यह कष्ट हुवा है सुनिये करुणा धार, हो ॥ ४३७ ॥ बलिहारी मै जाऊ आप विन स्वार्थ किया उपकार। वपु चर्म जूती पहिनाऊ, होऊ न उऋण किस वार हो ॥ ४३८॥ दोय जडी औषध की, और एक मुद्रिका दे जावे। घाव रुझावे रूप पलटावे, इच्छित स्थान पहुचावे ॥ ४३९ ॥ तीनो मे तीन गुण श्रवण कर भूप महल मे आया । फले आस मेरी मुद्री मे, मन ही मन हर्षाया हो ॥ ४४० ॥ अब कुन्ती कुमरी मन चिंत, हो पूर्ण कब आस । किस्मत जो नहीं मेल मिलावे, तो करना तन नाश, हो ॥ ४४१ ॥ ऐसा सोच सघन बन आई बोली करी पुकारी । प्राण नाथ पाडु नृप आओ, मर तुम्हारी प्यारी हो ॥ ४४२ ॥ फिर बोली कुल देवी ताइ, माता दे जितलाई। यो कही गल फन्दा डाला' स्नेह बडा दुखदाई हो ॥ ४४३ ॥ उस मुद्री प्रभाव भूप पाइ, फौरन वहां आया। प्यारी से मिलने के कारण, वो भी अति उमाया हो ॥ ४४४ ॥ चित्रपट अनुसार लखी, फौरन फन्दा खुलवाया । तब कुमरी ने मनो भाव सब, उनके ताइ सुनाया हो ॥ ४४५ ॥ दासी से मगवा सामग्री, परणी वो वनमाई। फली आस दोनो की वहा पर, बात बनी मन चाई हो ॥ ४४६ ॥ अगर गर्भ रहजाय कदाचित, तो निशानी काज नामाकित मुद्री को देके, घरे सिधाया राज हो ॥ ४४७ ॥ कुमरी आय मात के ताइ बीतक बात सुनावे । गर्भ स्थिति पूर्ण होने पर, पुत्र सनूरा जावे हो ॥ ४४८ ॥ पेटी बीच बन्द कर उसको, सरीता बीच बहाया । ख्याती देस निकाल वही, कर्ण भूप कहलाया हो ॥ ४४९ ॥ मात पिताने व्याह सुता का, प्रगट किया हर्षाई। पाडु नृप की हो पटराणी, जग मे ख्याती पाई हो ॥ ४५० ॥ शुभ स्वपना और शुभ मुहूर्त मे, युधिष्टिर सुत जाया । इसी तरह से भीम अरु अर्जुन, एक से एक सवाया हो ॥ ४५१ ॥ दूजी पत्नि मन्द्री नामक, भूप शल्य की बहिन। जिसके जन्मे नकुल

और सहदेव पुत्र प्रवीन हो ॥ ४५० ॥ ये पांचों ही वीर सिरताज, विद्या कला भण्डार । किये पराक्रम विद्या पर कई सुज यश सब अपार हो ४५१ ॥ धृतराष्ट्र के गान्धारी नारि हुई आठ पट नारी । भूप सबल गन्धार देश का ये जिसकी राज कुमारी हो ॥ ४५ ॥ इस रानी ने दुर्योधनादिक वीर पुत्र शत जाया । कुरुवंशी होन से जग में कौरव नाम धराया हो ॥ ४५५ ॥ गन्धारी पति नभधाव मांह मन्त्री आप रखाई । उसके जन्मा शिशुपाल थे, सम्बन्ध रहा अब यांई हो ॥ ४५६ ॥ भूपत मगध विष्णु, मुनिवर-सुप्रतिष्ठ पे आया । पूछा प्रश्न क्यों वसुदेव का इतना भाग्य सवाया हो ॥ ४५७ ॥ अवधिज्ञान में देख कह इस मगध देश के मांई । नन्दी ग्राम में विप्र अभागा, नार सोमला मांइ हो ॥ ४५८ ॥ नन्दीषेण है नन्दन उनके भाग्य हीण कुरूप । मातपिता परलोक सिधारे, भर पेट सहे भूप हो ॥ ४५६ ॥ दुखी व्यवस्था देख उसे, मामा अपने घर लाया । निज कन्या का शुभ संग ब्याहूं यों उसको समझाया हो ॥ ४६० ॥ प्रसन्न हो गए वहां यह, सेव सुता भय पाई । सातों कन्या में से किसीने, नहीं चाहा उस ताईं हो ॥ ४६१ ॥ नन्दीषेण उदास हुआ तब कहे मामा समझाई । अन्य पुरुष की कन्या तुझको दुगा मैं परणाई हो ॥ ४६२ ॥ मामा की कन्या नहीं चाहे व्यर्थ आर की आशा । पूर्वजन्म नहीं पुण्य किया यों नन्दी अरग विमासा हो ॥ ४६३ ॥ वहां से चला रत्नपुर आया, बैठा गुलशन मांइ । दंपनेमी किड़ा अवलाकी कोमा भाग्य के मांई हो ॥ ४६४ ॥ इस जीवन से मरना अच्छा, ऐसा मन में ठाया । इतने मुनि निगाह में आये उनको शीश नवाया हो ॥ ४६५ ॥ मुनि ज्ञान से जान हृदय की उसको यूं फरमाया । नहीं मिले सुख आत्म घात से क्या धोके में आया हो ॥ ४६६ ॥ उतना सुन संयम को धारा ज्ञानाभ्यास बढ़ाया । सब मुनियों की सेवा करना, कठिन अभिग्रह ठाया हो ॥ ४६७ ॥ कथक्य निम्र गुरु एक दिन, इन्द्र सभा के मांई । नन्दी श्रमण की करी प्रशंसा सभा अद्य चलाइ हो ॥ ६८ ॥ एक देव के अची न मानी करन परीक्षा आया । ग्लानी साधु रागी रूप धर, विपिन बीच बैठाया हो ॥ ४६६ ॥ एक रूप साधु का धरके नन्दीषेण पे आया ।

तेरेको खाने की सुझी कष्ट सहे, गुरु राया हो ॥ ४७० ॥ भूख प्यास पीडित व्याधि से पड़े विपिन के माई। नाम धराया सेवा भावी, झूठी पदवी पाई हो ॥ ४७१ ॥ नन्दीक्षेणजी तजे भोजन, वैयावच्च काज सिधाया। फ्रासुक जल मिलने नहीं पावे, ऐसी रची सुर माया हो ॥ ४७२ ॥ रच जोर नहीं चला देव का, मुनि के प्रभावे । निर्दोषी जल मिला ले आये, मुनि सेवा मन भावे हो ॥ ४७३ ॥ आग बबूला होय कहे यू, है तुझको धिक्कार। व्यावृत करने के ये लक्षण, देख लिये इस वार हो ॥ ४७४ ॥ हाथ जोड़ कर करी नम्रता, निज अपराध क्षमाया। धोवन का पानी जो लाये भक्ति युक्त पिलाया हो ॥ ४७५ ॥ रोगी वृद्ध मुनि को कधे, बिठा चले मगमांई। टट्टी फिर दी मुनि पीठ पर, मखिया रही भिनकाई हो ॥ ४७६ ॥ विचलित नही हुए कृत्य से, सोचे इस प्रकार। शीघ्र रोग से मुक्त होय, करना वही उपचार हो ॥ ४७७॥ दृढ़ता देख हुवा सुर प्रसन्न, पुष्प वृष्टि वर्पाई। इन्द्र सभा में करी प्रशसा, सारी बात सुनाई हो ॥ ४७८ ॥ देव क्षमा अपराध कहे तुम, सफल किया अवतार। वार वार स्तुति करके, गया स्वर्ग मुझार हो ॥ ४७९ ॥ द्वादश वर्ष लग मुनिवर ने कठिन तप कमाया। अत समय में अनशन कर, यू ध्यान हृदय में लाया हो ॥ ४८० ॥ इस भव मे कोई नार न वछे, आते जन्म के माय। स्त्री वल्लभ बनू निहाणा करके मृत्यु पाय हो ॥ ४८१ ॥ आयुष कर महा शुक्र स्वर्ग में, देव हुए सुख पाया। वहा से चवकर यह तेरे घर, वसुदेव सुत जाया हो ॥ ४८२ ॥ रुप गुण सौभाग्य संपति, मिली इन्हे मन चाई। स्त्री वल्लभ बने यहा, प्रत्यक्ष रहे दिखलाई हो ॥ ४८३ ॥ सुनकर वाणी अधग विष्णु, मन मे करे विचार। ससार असार मे अब नहीं रहना, लेना सयम भार हो ॥ ४८४ ॥ अधक विष्णु समुद्र विजय को, दीना राज का काज। मोह माया को छोड भूपति, आप बने महाराज हो ॥ ४८५ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र आराधी, कर कर्मों का नाश। जन्म मरण का फेरा टाली, किया मोक्ष में वास हो ॥ ४८६ ॥ समुद्र विजयजी करे राज अब, मान वेरयो का गाले। पुन तुल्य प्रजा को पाले, सभी हुक्म में चाले हो ॥ ४८७ ॥ महाराणी सेवादेवीजी, सोवे ज्यू इन्द्राणी। चन्द्रा नैनी

मधुर भाषिणी, नैनामृत वर्षाणी हो ॥ ४८८ ॥ शीलवान् गुणवान गुणग्राम सु स्वभाव सौभागी। नेमधर्म को निर्मल पाला देव गुरु की रागी हो ॥ ४८९ ॥ पति पत्नि के प्रेम परस्पर क्षीर नीर वत् जानी। आनंद रंग विनोद विच करा वर्णन में, रहते राजा राणी हो ॥ ४९० ॥ दोहा—असी रानी वंश की, वैसी हो सन्तान। जन्म सुनाऊं कंस का श्रोता सुनो धर ध्यान ॥४९१॥ ढाल—भोज विष्णु संयम लेके सारे आतम काज। राज करे मथुरा के मांई उग्रसेन महाराज हो ॥४९२॥ राणी धारणी है भूपत के, पतिव्रता सुखमाल। धैर्यवान् उदार शिरोमणि, चाले चाल मराल हो ॥४९३॥ सैल करन के काज भूपति, आवे बाग क मांई। मासोपवासी तापस वहां बैठा ध्यान लगाई हो ॥४९४॥ मास मास की कर तपस्या, भोजन ल एक द्वार। नहि और घर जावा दसविन, एसा है आचार हो ॥४९५॥ आमंत्रण दो वक्त दिया भूप, भोजन नहीं कराया। हाथी विकल और आग प्रमाद, जरा ध्यान नहीं आया हो ॥४९६॥ तुई बात की याद शीघ्र आके अपराध क्षमाया। फिर आमंत्रण के देने पर, ऋषिवर कोप भराया॥४९७॥ मेरी तपस्या का फल हो तो, जनमू इस घर आय। मेर निमित्त से दुःख यह भोगे, संकल्प ऐसा ठाय हो ॥४९८॥ आसुरी भाव स अनशन करके तापस प्राण गंवाया। उग्रसेन की रानी धारनी के गर्भाशय आया हो ॥४९९॥ गर्भ प्रभावे पति मांस खाने की मन में आई। शरम लाय दोहद नहीं दाखा, तब काया कुमलाई हो ॥५००॥ दुर्बल लख रानी को राजा पूछा प्रेम जनाई। बात सहृदय की सारी मंत्री का जितलाई हो ॥ ५०१ ॥ अन्य पशु का मांस मंगा कर राजा का बतलाया। किया पूर्ण दोहद मंत्री न, रानीजी होश में आया हो ॥ ५०२ ॥ होश संभाला जब रानीजी अपन मन पछताई। बोली पति के दर्श कराओ, नहीं तो जाऊं तांई हो ॥ ५०३ ॥ स्वस्थ बनाकर सात दिवस में, देंगे भूप दिखाई। मिष्ट वचन से महारानी को मंत्री धार बन्धाई हा ॥ ५०४ ॥ राजा रानी की सात दिवस में, मंत्री भेंट कराई। तब तो रानी आनंदित हो, महोत्सव किया मनाई हो ॥ ५०५ ॥ पौष कृष्णा चतुर्दशी को, योग मूल शारी आया। गर्भ—काल पूरे पे रानी, रजनी में सुत जाया हो ॥ ५०६ ॥ रुद्र

होय सिंदूक मगाई, काश त्रण बिछाई। पुत्र, पत्र, नामाकृत मुद्रो रख दिये उसके मांइ हो ॥ ५०७ ॥ वह सिंदूक दासी के जरिये जमना मे फिकवाई। जन्म लेय सुत मृत्यु पाया, राजा से कहलाई हो ॥ ५०८ ॥ वही पेटी पानी पर बहती, शौरीपुर तट चाली। गया शोच हित सेठ सुभद्र, देख तुरत निकाली हो ॥ ५०९ ॥ पेटी अदर पत्र मुद्रिका, और एक बालक पाया। होय प्रसन्न मन लेकर तीनो, शीघ्र चाल घर आया हो ॥ ५१० ॥ मृत वन्ध्या पत्नी थी उसकी, लख बालक हुलसाई। कांस योग दिया बालक का, कश नाम ठेराई हो ॥ ५११ ॥ बडा हुआ कश दिन पै दिन, निकला ये उत्पाती। उपालभ पे उपालभ ये, लाने लगा दिन राती हो ॥ ५१२ ॥ हुए तग आखिर मे उस से, युक्ति एक उपाई। जाय सेठ ने वसुदेव पे, नौकर दिया रखाई हो ॥५१३ ॥ हुई मित्रता वसुदेव सग, पुण्य सूर्य चमकाया। सर्व कला मे कुशल कुवर यू यौवन वय को पाया हो ॥ ५१४ ॥ फिरे घूमते बाग शहर में, दोनो सग में रहते। जैसे मगल सोम एक, राशी पे शोभा देते हो ॥ ५१५ ॥ जयद्रथ सुत जरासध नवराज गृह का नामी। प्रति वासुदेव हुआ यह, तनि खड का स्वामी हो ॥५१६॥ अपराजित आदि बधव और, काली कुवर फरजद। जरासध की तेज तेग से, कापे कइ नरेन्द्र हो ॥ ५१७ ॥ समुद्र विजय राजा पे एक दिन, दूत भज जित लाव। सिंहपुर का सिंहरथ राजा को, बान्ध भूप कोई लावे हो। जीवयशा पुत्री परणादू नगर दहेज क माइ ॥५१८॥ मची खलबली राज सभामे, जब आ दूत सुनाई हो ॥ ५१९ ॥ वसुदेव ने झेला बीडा, लेकर सेन सिधाया। पकड लाया सिंहरथ को, सब जन अचरज पाया हो ॥ ५२० ॥ लघु भ्रात की देख वीरता, समुद्र विजय हुलसाया। वसुदेव का गुप्त रहस्य फिर, ले एकान्त समझाया हो ॥ ५२१ ॥ त्रकोष्टक ज्ञानी ने भाषा था, जीवयशा सुकुमारी। नष्ट करेगी पति वश को मत करना स्वीकारी हो ॥ ५२२ ॥ तब तो सोचे वसुदेव यो, अपने हृदय मांइ। बता कस को युद्ध विजेता इसको दू परणाई हो ॥ ५२३ ॥ पालक पितु का बुला के कीनी, कंस वश की छान। उग्रसेन राजा का नन्दन, लीना इसको जान हो ॥ ५२४ ॥ समुद्र विजय ने सिंहरथ को, सोपा

नृप प साह । सायदी कंम कुमार का सारा कहा वृतांत सुना के हो ॥ ५२५ ॥ कंस कुमर स जीवयशा का किया ब्याह हुलसाइ । राज गांव मांगी मथुरा को रा हथवका मांइ हो ॥ ५२६ ॥ कंस भूप स सेन ससुर की पहुंचा मथुरा मांय । उग्रसेन का पर पिंजर में बठा गारी भाय हो ॥ ५२७ ॥ पर्वंता कुमार कंस का था मे झान्त माई । देख पिता की गति भाप साधु बन गया सिधाइ हा ॥ ५२८ ॥ कंस भूप ने शौरीपुर स, पालक पितु बुलाया । साना बहु दी जागीरी, और सम्मान बढ़ाया हो ॥ ५२९ ॥ रानी धारनी कर नरमाई कहा कंस क तांइ । मुझ पति को दे भाइ परन्तु काज सफल हुआ नांइ हा ॥५३०॥ करे राज मथुरा म कंस भूप भारा प्रसन्न परताप घन राज यावन छक तीनों, साथ रहा भकाई हा ॥ ५३१ ॥

वसुदेव अधिकार

दाहा—रूप कला लक्षण सर सब विधि सुखकार । श्री वसुदेव कुमार का कहूं चरित्र हितकार ॥५३२॥ ढाल—वसु देव कुमर का चरित्र मनोहर भाता सांभला ॥ टेक ॥ भरत भूप में, इन्द्र देव में गज ऐरापति जान । यों कुमरों में वसुदेवजी समभ्य पुरुष महान ॥ ५३३ ॥ सौभाग्य सुकुमार अनोपम, रति पति अनुसार । देख इन्हें नारी मोहित हो फिरती इनके लार हा ॥ ५३४ ॥ रूप दर्गंधिक स कुमार और शौरीपुर स्वर्ग समान । फिर स्वतन्त्र आनंद करत पुण्य फल परमान ॥ ५३५ ॥ पड़ी कुतूहल मम महिला भाड़ा पर का काम । तजी लाज मर्यादा फिरती क्या शुभ क्या श्याम ॥ ५३६ ॥ कान नाक में विप्रीत जेवर पहिने जरा न ध्यान । कुंकुम आंज लिया नैनों में कज्जल टीकी स्थान हो ॥ ५३७ ॥ पति बिमाना छोड़ मथुरा आय रुदन मचा । हा नुकसान पुरों में भारी जिसकी उर्द न शाज हा ॥ ५३८ ॥ नगर साक व्यापारी मिल

के, 'आये नृपके पास । मुजरा करके खड़े सभा मे, करी न जा अरदास हो ॥ ५३६ ॥ दे सम्मान भूपति उनको, अपने
पास बिठाये। कुसल क्षेम पूछा बस्ती का, कैसे सब मिल आये हो ॥ ५४० ॥ हे राजन्। है कृपा आप की, सर्व सुखो है
लोक। लाभ बहुत व्यापार बीच मे, धन धान का थोक हो ॥ ५४१ ॥ चितातुर तुम दिखत सारे, क्यो मन बात छुपाओ
बिगड़े काज लाज से सारा, सत्य सत्य बतलाओ हो ॥ ५४२ ॥ मुख से बात कही नहीं जावे, कहे बिन रहा न जाय। कर
हिम्मत बोले तब वे, एक सलाह मिलाय हो ॥ ५४३ ॥ खोटा रुपैया है अपना तो, क्या सर्राफ से रोव। नार निरकुश हुई शहर
की, नहीं कुमर का दोष हो ॥ ५४४ ॥ तरुनी वृद्ध बालिका सीखे, देखा देखी चाल । सुने "वासुदेवजी आये" भाग जाय
तत्काल हो फिरे घूमती साथ कुमर के, लखे न घर की बात । बाल गिलान अपाहिज सारे, भोजन बिन अकुलात हो ॥ ५४६ ॥
क्रीड़ा करते कुमर रुके नहीं, त्रिया रहे नहीं वारी । रहे जाय कोई अन्य शहर में, मन की अर्ज गुजारी हो ॥ ५४७ ॥ है मुझ
वल्लभ लघु भ्रात अरु, रैयत बिन क्या राज। अर्थ मित्र दोनो रह जावे, सोचे मन महाराज हो ॥ ५४८ ॥ देय सात्वना आगत
जन को, वापस आप पठाया। शीघ्र करुं मैं उपाय इसका, यू कह कर समझाया हो ॥ ५४६ ॥ जब नृपति आया महल मे, तब
सेवा दे राणी। किस बिचार में आज नाथ यू बोली मधूरी बानी हो ॥ ५५० ॥ कहू बात क्या मन की प्यारी, कही न मुख से
जावे। इधर भ्रात इधर प्रजा जन, कैसी राह बिठावे हो ॥ ५५१ ॥ इतने कुमर घूमता आया, बैठा नृप की गोद। राजा रानी
चतुराई से, करे बात धर मोद हो ॥ ५५२ ॥ आज काल किस कारण दिखता, दुर्बल वसुकुमार। मालूम होता तुम
इनकी करती न सार संभार हो ॥ ५५३ ॥ नाथ मेरी ये बात न मानें घूमे बाग बाजार। गरमी के कारण कुम्हलाये,
इनसे मैं लाचार हो ॥ ५५४ ॥ हे वल्लभ! तुम आज से अब, फिरो न मित्र के सग । निश दिन खेलो बाग महल में, रहो
सदा खुश रग ॥ ५५५ ॥ भाई तू आखो का तारा, अरु प्राणो से प्यारा। तेरे सुख मे सभी सुखी है, परम निदान हमारा

हा ॥ ५५६ ॥ दपर की नित-प्रति आमाद, देखे सार सभार । कभी महल और कभी बाग की देखे आप बहार हा ॥ ५५७ ॥ चन्दन पात्र लिय कर दासी, भूप पास रही जाय । पूछ वसुदेव क्या ले जाय और कहां पर जाय हा ॥५५८॥ दासी कहे चन्दन घिस रानी भूप के हेत पठावे । कीन कटोरा वसुदेव कहे, कुछ तो हमीं लगावें हा ॥ ५५९ ॥ करके क्रोध दासी ने तब विन सोच वचन सुनाया । पद जेल में इस लच्छन स लोक पुकारु आया हो ॥ ५६० ॥ मोचक्का रह गया कुमर फिर पूछे कर चतुराई । पहले था जो भी चौकी पर, सी सब बात सुनाइ हा ॥ ५६१ ॥ सत्त झूठ का निर्णय करने, द्वार पे दस्ता भान । किया मना संतरी तब तो सच्चा सोना मान हो ॥ ५६२ ॥ झूठ अंधेरा कहां तक ठहरे नहि हा सत्य सवेर देखी प्रीत भ्रात की मैंनि, कैसे आती बैर हो ॥ ५६२ ॥ जो गुण-रूप है कौन काम का जो पर का दुख दाय । आवे कलंक सरपे जिसस, धिक, जो समझ कहाय हो ॥ ५६३ ॥ कस्तुरी मृग, मणि सांप दंत गज चमरी गाय दुख इनक ही दाय सुगुण, ज्यू कीर पिंजरे मांय हा ॥ ५६४ ॥ बिना गुनाँ मे खाक पुकारे, राजा मानी बात । बिना नीर क बने रसाई, मे दुख सहा न जात हा ॥ ५६५ ॥ बिना मान सम्मान ठहरना उत्तम तो नहीं कहाय । शास्त्र दृन्त समझ क रहमे ज्यक पड़ फड़ खाय हा ॥ ५६६ ॥ पानी बिन मछली नहीं जीवे, बिन पानी इन्सान । अगुणी विलास पठा सूत्र, यूं उत्तम पहिचान हो ॥ ५६७ ॥ मान वास अगुला नहीं त्यागे माला तजे न काग । बिन मुक्ता क हंस सरोवर तत्क्षिण आवे त्याग हा ॥ ५६८ ॥ अर्द्धनिशा में अश्व पे चढ़के, ले संग एक सवार । आये पुर बाहर इमश में कीना एक विचार हो ॥ ५६९ ॥ समझ से कह अन्य गृही न इसी स्थान तुम रहेना । मैं विद्या साधन को आऊ, भेद किस मत दना हा ॥ ५७० ॥ काष्ट साथ कर चिता बनाई मुर्दा इक फिर लाया । वस्त्राभरण पहनाय जलाया, ऐसे स्वांग मिलाया हो ॥ ५७१ ॥ ऐसा चीरी खून निकाला, लिखा पत्र इस भांत । राजा प्रजा सुख में रहना, वसुदेव की बात हो ॥ ५७२ ॥ पत्र सोंप दरवाजे ऊपर कर ब्राह्मण का भेष । मुनिराज सम वसुदेवजी,

घुमें देश विदेश हो ॥ ५७३ ॥ जागा भूपत प्रात होत ही, कुमर कही नहीं पाया । करी सोध इत उत भी जाके, इतने सेवक आया हो ॥ ५७४ ॥ बीतक बात सुनाई सारी, आभूषण निशान । चिट्ठी पढ़ के, मूर्च्छा खाई, हुआ भूप वे भान हो ॥ ५७५ ॥ और भ्रात भी सुन मूर्च्छा ये, मूर्च्छा नी नृप नार । बान्द गुलाभ प्रजा जन रोवे, मच गया हाहाकार हो ॥ ५७६ ॥ शुद्र लेई राजा प्रजादिक, रोवे गुण प्रकाश । बड़भागी क्या करा ये तेने, हो रहे सभी उदास हो ॥ ५७७ ॥ समुद्र विजय भ्रातादि रोवे, अन्न पानी ठुकराया । सेवा दे कहे, वल्लभ देवर, की स्वप्ने की माया हो ॥ ५७८ ॥ हा सौभाग्य निधान निरुपम, यादव कुल के भान । हा मतिवंत महान् गुणागर, प्रशसा का स्थान हो ॥ ५७९ ॥ हा चद्रानन पकज लोचन, सब विध गुण भण्डार । सागर वर गभीर नरोतम, कहां देखे दीदार हो ॥ ५८० ॥ सुत, धन धाम, सरुपा नारी ग्राम नगर मिलजावे । माता जाया भ्रात सहोदर, ढूढ कहां से लावें हो ॥ ५८१ ॥ दिल दरिया देवर तुम देखी, हृदय उछल कर आवे । बिना तुमारे बाग महल सब, सूने हमे लखावे हो ॥ ५८२ ॥ इन लोगो के सग क्या करे झूठा शोर मचाया । करा काम तुम ने तोता ज्यों, पॉजर छोड सिधाया हो ॥ ५८३ ॥ हे देवर ! कैसी थें कीनी, दे ओलभा तुझ तांइ । सज्जन मिली विछोहा करना, यही भूल तुझ माई हो ॥ ५८४ ॥ राजा राणी रूदन मचावे, कहे निमत्या आनी । आग नीर से शात बने त्यों, बोला अमृत बानी हो ॥ ५८५ ॥ कुमर नहिं मरा है वह जीवित, आर्त भूप नीवार । आन मिलेगा लाभ कमा के, होगा मगलाचार हो ॥ ५८६ ॥ कुछ निमत्ये के कहने से, कुछ मन किया बिचार । राजा राणी सब सुसताये, आशा के आधार हो ॥ ५८७ ॥ सानन्द से अब वसु कुमरजी, फिरते मुल्क मुझार । खेचर भूचर केइ नृप की, परणी सुंदर नार हो ॥ ५८८ ॥ राजा रुद्र अति बलकारी, अरिष्ट पुर के माई । सुकुमारी रोहिणी बाला, पदमावती की जाई हो ॥ ५८९ ॥ रचा स्वयवर मडप इसका, राजो को बुलवाया । जरासध पांडव कौरव और यादव भी आया हो ॥ ५९० ॥ राजा राणा राजकुमर सब, वस्त्राभरण सजाई । बैठे मडप बीच आन, मूछोंपर

हो ॥ ५५६ ॥ वेपर की निप-प्रीति मोजाइ सेवे सार संसार । कभी मरख और कभी पाग की इसें आप बहार हो ॥ ५५७ ॥ चन्दन पात्र लिये कर दासी, भूप पास रही आय । पूछे वसुदेव क्या ले जावे और कहां पर जाय हो ॥ ५५८ ॥ दासी कहे चन्दन घिस रानी नृप के हित पठावे । धीम कटारा वसुदेव कहे कुछ तो हमीं लगावें हो ॥ ५५९ ॥ करक कोप दासी ने तब फिर साथ वचन सुनाया । पड़े जेल में इस लच्छन स लोक पुकारु आया हो ॥ ५६० ॥ मौनवश रह गया कुमार फिर पूछे कर चतुराई । पहले था वो भी चौंकी पर, वो सब बात सुनाई हो ॥ ५६१ ॥ सत्य झूठ का निर्णय करने, द्वार पे ढंका बाज । किया मला सघरी तब तो सच्चा चीना माल हो ॥ ५६२ ॥ झूठ अधरा कहांतक ठहरे नहिं हो सत्य सबेर देखी प्रीत भाव की मैनि, जैसे आंधी बैर हो ॥ ५६२ ॥ या गुण-रूप है कौन काम का, जो पर का दुख दाय । आप कलंक सरपे जिससे, धिक वा समझ कहाय हो ॥ ५६३ ॥ कस्तुरी मृग, मणि सांप पत गज चमरी गाम गुण इनके ही हाथ दुर्गुण, ज्यू कीर पिंजरे मांय हो ॥ ५६४ ॥ बिना गुमें ये लोक पुकारे, राजा मानी बाद । बिना नीर क बने रसोइ ये दुख सहा न जात हो ॥ ५६५ ॥ बिना मान सम्मान ठहरना उत्तम ना नहीं चहाय । शास्त्र टूट समझ क रहत [illegible] हो ॥ ५६६ ॥ पानी बिन मछली नहीं जीवे, बिन पानी इन्सान । चतुरो विलास पठा सूखे यू उत्तम पहिचान हो ॥ ५६७ ॥ माम धाम वगुला नहीं त्यागा मासा तजे न काग । बिन मुक्ता क हंस सरावर ततक्षिण आवे त्याग हो ॥ ५६८ ॥ अर्धनिशा में अश्व पे चढ़के, सं सग एक सवार । आये पुर बाहर इमस में, कीना एक विचार हो ॥ ५६९ ॥ सबक से कहे अश्व गृही न इसी स्थान तुम रहेना । मैं विद्या साधन को जाऊ, भेद किसे मत दना हो ॥ ५७० ॥ काष्ठ लाय कर चिता बनाइ मुर्दो एक फिर लाया । वस्त्राभरण पहनाय जलाया, एसे लोक मिटाया हो ॥ ५७१ ॥ संधा चीरी खून निकाला, लिखा पत्र इस भांत । राजा प्रजा सुख में रहना, वसुदेव की बात हो ॥ ५७२ ॥ पत्र बांध शरवाज ऊपर कर ब्राह्मण का भेप । मुनिराज सम वसुदवजी,

चढ दल बादल विकट सैन सज, रणभूमि मे आये। रथ सवार हो वसुदेवजी, पहुचे धनुष चढाये हो ॥ ६१० ॥ हुआ परस्पर युद्ध जोर का, रज से रवि छिपाया। गिन गिन मारे एक एक नृप, कुमर वीर रस छाया हो ॥ ६११ ॥ शत्रुजय नृप को पछार फिर, वक्रदन्त को मारा। कौशल नृप के मरते ही, मैदान साफ हुआ सारा हो ॥६१२॥ हिम्मत देख कुमर की बोले, जरासन्ध भूपाला। शूरवीर है क्षत्री यह, नहिं बीन बजाने वाला हो ॥६१३॥ समुद्र बिजैजी के सिवाय, कोई वीर नहीं आवे। अरि जीत कर रोहिणी व्याहे, इतना सुयश कमावे हो ॥ ६१४ ॥ समुद्र विजय कहे पर नारी, स्वपने मे नहीं चाऊ । लेकिन स्वामी के कहने से मैं दो दो हाथ दिखाऊ हो ॥ ६१५ ॥ हुआ युद्ध दोनो मे पर नहि, किसकी हार दिखाई। राजा देख चकित हो अगुली, दांतों तले दबाई हो ॥ ६१६ ॥ समर बीच मे समुद्र विजय का नैत्र भुजा फुरकाया । विजय लक्ष्मी सन्मुख दिखती, यह विचार मन लाया हो ॥ ६१७ ॥ कुमर कहे लडना नहिं अच्छा, नृप मुझ तात समान । नामांकित ले तीर चलाया, गिरा भूप पां आन हो ॥ ६१८ ॥ उठा तीर को पढ़ा भूपने, लिखा हुआ अभिराम । वसुदेव मैं अनुज तुम्हारा, करता हू प्रणाम हो ॥ ६१९ ॥ शस्त्र डाल जमीं पै फौरन, दौड गले लिपटाया। वसुदेव भी कर वद्ध होके, चरणे शीष नमाया हो । ६२० । मिलन हुआ दोनों भाई का, अति सुख कर दर्शाया । मानों निशाकर और दिवाकर, मिली प्रेम वर्षाया हो ॥ ६२१ ॥ लोहू मांस चर्म और अस्थि मीजी अन्तर माय। हुए पुष्ट ये पांचो ही पुट, फूले नहीं समाय हो ॥ ६२२ ॥ जरासन्ध भूपत आदि, सब राजा हर्ष मनाया। धन्य धन्य है रोहिणी तुझको, पति अनुपम पाया हो ॥ ६२३ ॥ सौ वर्षो के अन्तर आया, ऋद्धि सम्पदा लाया। नाना विद्या कला सीख के, लब्धी लखी कहाया ॥ ६२४ ॥ रनाधिर नृप सबही के सम्मुख शुभ मुहूर्त के माई। रोहिणी बाला को परनाई, वसुदेव के तांई हो ॥ ६२५ ॥ समुद्र विजय कस आदि सग, शौरीपुर मे आया। अन्य भूप भी गमन करीने, निज निज स्थान सिधाया हो ॥ ६२६ ॥ सहस्रो ही अंतेवर साथ में, वसुदेवजी आये। शौरीपुर मे

ताप लगाई हो ॥ ५६१ ॥ कुली रुप कर वसुदेवजी आय मंडप माहीं । बाजे बाजा के शरीक हैं सबे आप छिपाई हो ॥ ५८२ ॥
रमा सदृश शीले रोहिणी प्रत्यक्ष म मृगाक्षी । चरन धरा मंडप में आ तबियत सबकी लोभानी हो ॥ ५९३ ॥ दासी गृहण
कर आइने का नृप परिचय कर पावे । जरासंध त्रिखंड पति इनका प्रभुत्व दिखाव हो ॥ ५९४ ॥ अपराजित काली आदि,
सब बैठ राजकुमार । दिल उदार शाखा मुक्ता में हैं प्रसिद्ध इस बार हो ॥ ५९५ ॥ पांचों पांडव हैं बलधारी कारव हैं सौ भ्रात ।
अन्य वह सा कर्ण-दिपता सो प्रत्यक्ष दिखात हो ॥ ५९६ ॥ समुद्र विजय आदि नव भाइ इनकी महिमा छाइ । उग्रसेन यदु
राज बैठे मुदित हाय मन माहीं हो ॥ ५९७ ॥ जेते राजा बैठे सबको तज चली पांच पदाइ । मुख फिराय प्रतिहारी का से वसु
पध वे आइ हो ॥ ५९८ ॥ सुन्दर बाजा आय बजाय करके अति अनुराग । दरशी कुमरी रूप कुमरका मन में गई लुभाइ हा
॥ ५९९ ॥ कुमर गल में पहनाई, माला से वर माल । काल यवन आदि कुमार सब कोप उठ तत्काल हो ॥ ६०० ॥ मूल हुइ
कन्या की यह ता, परमाला सेयो कौन । कनकमाल कोप के गले में, कैसे हा समुचित हा ॥ ६०१ ॥ भूप कहे वास्तव म तो
स्वयम्बर न्याय यही है । कर पसन्द माला पहिनावे, कन्या पति वहा है ॥ ६०२ ॥ विदुर भूपवज्र म बाल सत्य तुम्हारी
बात । वर से कुल आदिक पूछना, येही जरुरी दिखाव हा ॥ ६०३ ॥ नहीं जरुरत कुछ कहने का बोले आप कुमार । जब इसने
किया पसन्द तो व्यथा सब तकरार हो ॥ ६०४ ॥ ये मुक पानि बनी आम स इस जा सना पाय । तू परिचय निज कुल का
अपने, मुख मख को दिखाय हा ॥ ६०५ ॥ वचन धृष्टता के सुन भूपत जरासन्ध का पाया । मुझा स्वम्बर में राजा का य
अपमान कराया हो ॥ ६०६ ॥ दण्ड दिया जा इस को भारी, तुम य बाज बाला । राज सुता का पाकर कैसा बना है य
मतवाला हा ॥ ६०७ ॥ भला बुरा कहता है सबको जरा नहीं शर्मावे । मारो इन दोनों का भूपन, वाक्य सुना क्रमजात हा
॥ ६०८ ॥ जरासन्ध क सुने वचन से समुद्र विजय प्रमुख राजा । हुए सभी तैयार समर को बजे जार का बाजा हा ॥ ६०९ ।

से देके सान्त्वना, एकन्त उसे ठहराया हो ॥ ६४१ ॥ कालांतर में ज्ञानी मुनि पे, सेठजी चलकर आया। पाठ निरखुता का पढ़ के, चरणे शीश नवाया हो ॥ ६४२ ॥ हे भगवन ! कर कृपा दास का, संशय आप मिटावें। माता पुत्र मे वैर रहंस कयो, इसका भेद बतावे हो ॥ ६४३ ॥ पंच महाव्रत धारी मुनिवर, कहे सुनो चितलाई। ललित और गंगदत्त थे दोनों, पूर्व भव मे भाई हो ॥ ६४४ ॥ एक रोज लकड़ी गाड़ी भर, लाते थे पथ माई। नागिन बैठी देख कहे, यह भाई देखो बचाओ हो ॥ ६४५ ॥ नागिन सुन के ललित कुमर पे, अति प्रसन्नता लाई। दया करे दूजो पर जह, हो वल्लभ सब ताई हो ॥ ६४६ ॥ वो कुटिल स्वभावी लघु भ्रात था, बात जरा नहीं मानी। दी चलाय गाडी नागिन पे, ततक्षण वह कुचलानी हो ॥ ६४७ ॥ वो नागिन मर सेठ तुमारी, बनी यही सेठानी। वे दोनों सुत हुए यही, कर्मों की विकट कहानी हो ॥ ६४८ ॥ दया करी थी ललित लाल ने, जो ये लगता प्यारा। गंगदत पूर्व वैर से, हर दम लगता खारा हो ॥ ६४९ ॥ पूर्व जन्म के कर्मों से, होना सनेह और वेर। ऐसा जान कर्म न बांधो, सुन सद्गुरु की टेर हो ॥ ६५० ॥ सुन कर वानी सेठ कुमर के, ज्ञान हृदय मे आया। ये विचित्रता है इस जग की, तन वैराग्य समाया हो ॥ ६५१ ॥ सेठ ललित ने दीक्षा लीनी, लख संसार असार। गंगदत्त अप्रिय माता को, सो हुआ पिता के लार हो ॥ ६५२ ॥ ज्ञान ध्यान तप संयम साधे, तीनों ही अणगार। मास मास खमण तप करता, गंगदत्त सुविचार हो ॥ ६५३ ॥ गंगदत्त मुनि याद करे वह, माता का व्यवहार। करा नियाणा जग वल्लभ का, अपने हृदय मुझार हो ॥ ६५४ ॥ तीनों मुनिवर कर संथारा, आतम को उजवार। तीनों ही महाशुक्र स्वर्ग में, भोगे सुख श्री कार हो ॥ ६५५ ॥ जीव ललित का देव लोक में, स्थिति पूरण कर पाया। वसुदेव घर राणी रोहिणी के उदर मे आया हो ॥ ६५६ ॥ गज, समुद्र अरु सिंह, चन्द्र, ये चार स्वपन दिखाया। शुभ मुहूर्त मे महारानी, बलभद्र लाल शुभ जाया हो ॥ ६५७ ॥ षट् भ्रातों का कहुँ पूर्व भव, सुनो लगा के ध्यान। मथुरा नगरी थी अति सुन्दर, नृप सुरसेन बलवान

हुआ बधावा, सज्जन जन सुख पावे हो ॥ ६२७ ॥ पुरवासी वरघे आ आगे आप दिया सम्मान । चौथमल कहे रघुवर जैसे, सीधा गुण निधान हो ॥ ६२८ ॥

॥ कृष्ण बलभद्र के पूर्व भव ॥

दोहा—सिद्ध प्रभु पहले नमूं कर गुरु को प्रणाम । श्री कृष्ण बलभद्र का, कहूँ चरित अभिराम ॥ ६२९ ॥ पद भाइ श्री कृष्ण के, चर्म शरीरी सोय । सुनो सभी वर्णन करूं, आनन्द मंगल होय ॥ ६३० ॥ ढाल—सेठ रहे महामति नाम का, हथनापुर के मांई । ललित नाम का पुत्र उसी के माता को सुखदाई हो ॥ ६३१ ॥ एक बार सेठानी के उर, दुरा गर्भ अति आया । कष्ट प्रदायक जान उसी का, पतन कराना चाया हो ॥ ६३२ ॥ जा पूरण आयु ले आया, मरे न किस का मारा । गर्भ काल पूरण हुआ जन्मा ये कर्मों का चारा हो ॥ ६३३ ॥ सुत को दासी हाथ दिया रख आ जंगल मांई । सेठ मिला रस्ते में पूछा उस दासी के तांई हो ॥ ६३४ ॥ पिता हृदय में दुखित होय, दासी से ले संतान । पाल पूस के बड़ा किया है रख कर अन्य स्थान हो ॥ ६३५ ॥ ललित कुमर को लघु भ्रात का हाल मालूम था सारा । प्रेम रंग से मिल कर दोनों रमते रहे हरबारा हो ॥ ६३६ ॥ एक रोज निज पिता श्री से ललित कुमर बिलखावे । गंगदत्त भ्राता का भी तुम संग जीमाव हो ॥ ६३७ ॥ हे बेटा ! सच बात तुम्हारी किंतु तुम महतारी । गंगदत्त का देख करेगी, क्लेश कदाग्रह भारी हो ॥ ६३८ ॥ अत्याग्रह स सुता बसे, परदे की ओट बिठावे । पिता पुत्र जीमें भाई को पर्दे बीच जीमावे हो ॥ ६३९ ॥ परदा उड़ा हवा से माता देख क्रोध में आई । गंगदत्त को मार पीट मोरी में दिया फसाई हो ॥ ६४० ॥ देख पिता ने अशुचिपन से, काढ उसे नहलाया । हर प्रकार

आई हो ॥ ६७६ ॥ मागी को तज मुनि
पड़ी मिली मांगी मर्घट में, लाया तुर्त उठाई। उतरा जहर मुनि तन वायु, स्फेर्शें होस मे आई हो ॥ ६७६ ॥ मागी को तज मुनि
चरन में, आप शहर मे आया । पीछे की अब सुनना हालत, क्यो जग मे भरमाया हो ॥ ६७७ ॥ सुरसेन वो जो था वहा,
मागी के नजरे आया। देख रुप उसका मन मोहन, इसका मन ललचाया हो ॥ ६७८॥ करी प्रार्थना पति वनो मुझ,चलू तुम्हारे
लार । मेरे पति सग झगडा होवे, हू जिस से लाचार हो ॥ ६७६ ॥ पति मार के आऊ बोली जो तुम देओ वानी । कौतुक
देखन काज त्रिया की, बात, यह उसने मानी हो ॥ ६८० ॥ पति शहर से आया जब, मागी को खड्ग मिलाया। मुनिराज को
वदन करने, उसने शीष नवाया हो ॥ ६८१ ॥ पति मारण को खड्ग निकाला, करुणा ला मुनि पाली। पति मारके क्या पावेगी,
सुरत बनेगी काली हो ॥ ६८२ ॥ प्रीतम ने हंस कर यू पूछा, क्यों खींची तलवार । शीत थजे से हाथ सुकड़ गये ये निकल
पडी इस बार हो ॥ ६८३ ॥ चरिताली ने चरित्र रच, निज प्रीतम को भरमाया । इतने चुरा भ्रात धन लाये, हिस्सा मान
कराया हो ॥ ६८४ ॥ लघु भ्रात कहै द्रव्यन वंछु, लूगा संयम भार। हाल पूछने पर मागी का, कहा सभी विस्तार हो ॥ ६८५ ॥
सुन सातों को ज्ञान हुआ, चट आये घर पे चाल । सातो नारी भेद पाय कर, साथ हुई तत्काल हो ॥ ६८६ ॥ वज्र मुष्टी और
मांगी, इन सब के सयम आया॥ अनशन कर सौधर्म स्वर्ग मे, दो सागर स्थिती पाया हो ॥ ६८७ ॥ धात्रि खड के भर्त क्षेत्र मे.
वैताड्य की दांइ ओर। नित्यालोक नगर के भूपत, चित्रचूड सिरमौर हो ॥ ६८८ ॥ मनोरमा महारानी के उर, सातो सुर चव
आया। अनुक्रमें रानी ने सातों, सुन्दर बालक जाया हो ॥ ६८६ ॥ सातो सयम धारन करके, सनत स्वर्ग सिधाया । देव हुए
पुण्य योगे उमर, सात सागर की पाया हो ॥ ६६० ॥ कुरु देश हथनापुर का नृप, गगदत्त पुण्यवान । नदयशा रानी के जन्मे,
छहों सुत सुर आन हो ॥ ६६१ ॥ गंग, गंगदत्त, गंगसुमत्री, नन्दक्षेपा, सुनन्द । नन्दकुमर ये वह बधु, माता के सुख कंद हो
॥ ६६२ ॥ राजा रानी सयम ले नर भव को सफल वनाया। अनशन मे मुख देखी सुत का, मोह माता के छाया हो ॥ ६६३ ॥

हो ॥६५८॥ सठ वहां भानु नामा पर आदरा काह दीनार। सठानी यमुना के बालक जन्मे सात उदार हा ॥ ६५६ ॥ सुभानु भद्र भानु कीर्ति भानुसेण सुजान। सुरदेव सुरज सुदत्त है सूरसेन गुणवान हो ॥ ६६० ॥ कालिन्दी तिलका, कन्ता श्रीकांता सुखकारी। सुंदरी द्युति चन्द्रमुखीता सातों की ये नारी हो ॥ ६६१ ॥ सठ सठानी संयम लीना पाला शुभ मन भान। भव समय संथारा करके पाये अमर विमान हो ॥ २ ॥ कुसंगत पा सातों भ्राता फस व्यसन में जाय। निघनी मन भटकत डोल बसे उज्जैनी जाय हो ॥ ६६३ ॥ एक दिन सातों भ्रात रैन में, पुर बाहर चल जाय। लघु भ्रात को बिठा श्मशान चोरी करन सिधाये हो। ६६४ ॥ था नृप वृषभध्वज वहां का कमला तस पटनार। दृढ़ मुष्टि एक सेठ जिसकी, वप्र श्री नारी विचार हो ॥ ६६५ ॥ तास पुत्र वज्र मुष्टि को विमलचन्द्र नृप बाला। विमला तनुजा मांगी नामा, परणाई सुख माला हा ॥ ६६६ ॥ मांगी ने युक्ति स घर म, अपना काम जमाया। नहीं कान सासु पति के ताइ भरमाया हो ॥ ६६७ ॥ जहां संप वहां सम्पति नाना कूप जहां दुख पाय। कर वचन परमान भोग कोई दिन माह हो ॥ ६६८ ॥ जो नारी क वस में होकर दे माता को ठुकराई। इस कुबुद्धि का भी फल वह जाकर चाहीं, उसे हर्ष मनावे हो ॥ ६७० ॥ वसंत खेलन को दिन मित्र सब उपवन बोध सिधाय। वज्र मुष्टि भी रहे नहीं, द्वेष हृदय में छाया हो ॥ ६७१ ॥ सासु न कुबुद्ध उपाई, घट में सांप मगाया। द्विताहित का भान लगाया, पहुंचे विषधर काला हो ॥ ६७२ ॥ अब सास ने कहा बहुला, मटके में फूल माला। हाथ डालते डक मन में हर्पाई हो ॥ ६७३ ॥ मूर्छित होन पर सासु ने, मर्घट बीच रखाई। रैन हुई आया सुत घर में बात सुनी पछताया। पाप कटा घर कुशल मिला, सासु पाया हो ॥ ६७४ ॥ नारी काज मसाण में आया, वहां मुनि दर्शन नमस्कार कर कहे मुनि स नैना जल वर्षाई। मुझ नारी मांगी मिलने पे, सेवा हा हुलसाइ हा ॥ ६७५ ॥

पडी मिली मांगी मघट मे, लाया तुर्त उठाई। उतरा जहर मुनि तन वायु, स्फेर्शे होस मे आई हो ॥ ६७६ ॥ मागी को तज मुनि चरन में, आप शहर मे आया । पीछे की अब सुनना हालत, क्यो जग मे भरमाया हो ॥ ६७७ ॥ सुरसेन वो जो था वहा, मांगी के नजरे आया। देख रुप उसका मन मोहन, इसका मन ललचाया हो ॥ ६७८॥ करी प्रार्थना पति बनो मुझ, चलू तुम्हारे लार । मेरे पति सग झगड़ा होवे, हू जिस से लाचार हो ॥ ६७९ ॥ पति मार के आऊ बोली जो तुम देखो बानी । कौतुक देखन काज त्रिया की, बात, यह उसने मानी हो ॥ ६८० ॥ पति शहर से आया जब, मागी को खड्ग झिलाया। मुनिराज को वंदन करने, उसने शीप नवाया हो ॥ ६८१ ॥ पति मारण को खड्ग निकाला, करुणा ला मुनि पाली। पति मारके क्या पावेगी, सुरत बनेगी काली हो ॥ ६८२ ॥ प्रीतम ने हंस कर यू पूछा, क्यो खींची तलवार । शीत वजे से हाथ सुकड गये ये निकल पड़ी इस बार हो ॥ ६८३ ॥ चरिताली ने चरित्र रच, निज प्रीतम को भरमाया । इतने चुरा भ्रात धन लाये, हिस्सा मान कराया हो ॥ ६८४ ॥ लघु भ्रात कहै द्रव्यन वछु, लूगा संयम भार। हाल पूछने पर मांगी का, कहा सभी विस्तार हो ॥ ६८५ ॥ सुन सातो को ज्ञान हुआ, चट आये घर पे चाल । सातो नारी भेद पाय कर, साथ हुई तत्काल हो ॥ ६८६ ॥ वज्र मुष्टी और मांगी, इन सब के सयम आया। अनशन कर सौधर्म स्वर्ग मे, दो सागर स्थिती पाया हो ॥ ६८७ ॥ धात्रि खड के भर्त क्षेत्र मे, वैताड्य की दांइ ओर। नित्यालोक नगर के भूपत, चित्रचूड सिरमौर हो ॥ ६८८ ॥ मनोरमा महारानी के उर, सातो सुर चव आया। अनुक्रमें रानी ने सातों, सुन्दर बालक जाया हो ॥ ६८९ ॥ सातो सयम धारन करके, सनत स्वर्ग सिधाया । देव हुए पुण्य योगे उमर, सात सागर की पाया हो ॥ ६९० ॥ कुरु देश हथनापुर का नृप, गगदत्त पुण्यवान । नदयशा रानी के जन्मे, छहो सुत सुर आन हो ॥ ६९१ ॥ गंग, गगदत्त, गगसुमत्री, नन्दक्षेपा, सुनन्द । नन्दकुमर ये वह बधु, माता के सुख कद हो ॥ ६९२ ॥ राजा रानी सयम ले नर भव को सफल वनाया। अनशन मे मुख देखी सुत का, मोह माता के छाया हो ॥ ६९३ ॥

वेही (यहाँ) सुख मेरे फिर होना, किया निदान मन माइ। यहाँ से मातवें स्वर्ग में उमर मोन मागर पाई हो ॥ ६९४ ॥ दश मुगोंग पोलास पुर का राय देव नृप स्वाई। पन देवी के नन्दयशा था, कुवरी उपनी आइ हो ॥ ६९५ ॥ दिया राखकी नाम वसीमे, रूप कला गुण खान। धम ध्यान ये सब उत्तम जे सोना सुगंध समान हो ॥६९६॥ कंस प्रशंसा करता आगा वसुदेव जी पास सुम आकर देवक की कन्या, सुगढ रूप प्रकाश हो ॥ ६९७ ॥ शादी आप इसी मग लाज, यात भरी जा माना। वसुदेव मजूर करी जब ब्याह वसी विध ठानी हो ॥ ६९८ ॥ देवक नृप कन्या परनाइ, दहेज दिया हुलसाइ। दश गो कुल गुण नर माहिर को, दिया साथ के माइ हो ॥ ६९९ ॥ इसी समय एकता मुनिवर नाम समण तपधारी। आए भोजन काज महल में जीवयशा उस नारी हो ॥ ७०० ॥ देवर जान फिर गई आड़ी, हंसी करता क आज। घर घर मांही फिरो मांगत उरा न आत लाज हो ॥ ७०१ ॥ भ्रात तुम्हारा राज करे, तुम इनको क्यों शरमाया। संयम को तज आओ राज में इज्जत मान उड़ाया हो ॥ ७०२ ॥ हंसी दिल्लगी करके उसने, मुनि को बहुत सताया। तब तो तपसी कुपित होके ज्ञान में ध्यान लगाया हो ॥ ७०३ ॥ पुरुष रहे थोड़े तुम भाभी क्यों इतनी मस्ताई फूल सा कुमलाए निश्चय मरा एकसी नाई हो ॥ ७०४ ॥ गर्भ सातवां देवकी का जब मनमँगा आइ। तर बाप पति का वध कर, देगा रोड बनाइ हो ॥ ७०५ ॥ सुन क जीवयशा घबराई थर थर थर कंपाइ। उतर गई पुमराइ सारी मुनिवर गए सिधाई हो ॥ ७०६ ॥ जीवयशा ने पति पास जा सारा हाल सुनाया। चिंतित होय कस बोला क्यों तूने ऋषि सताया हो ॥ ७०७ ॥ मुनि वचन को निष्फल करन वसुदेव पै आया। गर्भ सहित क मांग सातों मम न कोइ पाया हो ॥ ७०८ ॥ वसुदेवजी वस ग्रम घर मथुरामें जब आये। सुना हाल पलटा मुनि का वसुदेव पछताया हो ॥ ७०९ ॥ पश्चिम उदय रवि नहीं होय, सागर उज न कार। वसुदेव के वचन सपस हो मिथ्या नहीं लगार हो ॥ ७१० ॥ होन हार मिटना न मिटाय पल न किसका जोर। सुन

दुख भोगे जीव जक्त मे, कर्मों का झकझोर हो ॥ ७११ ॥ उपजे गर्भ देवकी के उर, चर्म शरीरी आन । कम आयु मे मरे न हरगीज, जिनवर बचन परमान हो ॥ ७१२ ॥ उसी समय भद्दिलपुर मे रहे, नाग सेठ धनवान । सुलसा नामा पत्नि उसके रुपवान गुणवान हो ॥ ७१३ ॥ बाली वय में एक निमातिये, ऐसा दिया जताई । मृत्यु वन्ध्या है यह कन्या, सुलसा ने सुन पाई हो ॥ ७१४ ॥ जब से हरण गवेशी सुर की, सेव करी चित लाई । देव हुआ प्रसन्न, माग पुत्रोंकी हर्षाई हो ॥७१५॥ ज्ञान लगा के देव कहै, मुरदे जिन्दे नहीं होय । अन्य जगह से दिव्य पुत्र छै, ला सौंपूगा तोय हो ॥ ७१६ ॥ कहा 'तथास्तु' तब तो देव वह, हो गया अन्तर्ध्यान । इधर देवकी सुलसा के सम, रहते गर्भाधान हो ॥ ७१७ ॥ जाया देवकी ने सुन्दर सुत, ले गया देव उठाय । सुलसा ने मृतक सुत जाये, सो दिये यहा पहूचाय हो ॥७१८॥ मृतक बालक कंस पछारे, क्रोध हृदय मे लाय । इसका फल इसे आन मिलेगा, इसी जनम के माय हो ॥ ७१९ ॥ भ्रात छेइ सुलसा के घर में, देव योग मे आया । हर्ष हुआ हृदय में भारी, पुण्य ने खेल रचाया हो ॥ ७२० ॥ अनिक, अनन्त, अजित, अनिहत, देवसेन, शत्रुसेन । ये छहू भ्रात शुभ-कारी, मीठे इनके बैन हो ॥ ७२१ ॥ जोड़ी लख पुत्रो की माने, मात पिता आनन्द । बत्तीस बत्तीस कन्या परणे, छहू भ्रात सानन्द हो ॥ ७२२ ॥ बत्तीस बत्तीस क्रोड़ सुनैया, आये दहेज के मांय । नेम वचन सुन सयम लेगे, देगे ऋद्धि छिटकाय हो ॥ ७२३ ॥ करनी कर केवल पायेगे, करें मोक्ष में वास । चौथमल ऐसे मुनियो के, चरणो का है दास हो ॥ ७२४ ॥

यहीं (कहाँ) सुत मेरे फिर होना, किया निदान मन मांई। वहां से सातवें स्वर्ग में उमर सोल सागर पाई हो ॥ ६४ ॥ दश दशांग पोलास पुर का देव सेण नृप ध्याई। धन देवी के नन्दयशा था, कुंवरी अपनी मांई हो ॥ ६६५ ॥ दश दसीमे, रुप कला गुण ज्ञान। धर्म ध्यान व सब उत्तम यूं सोना सुगंध समान हो॥६६६॥ कंस प्रशंसा करता आया वसुदेवजी पास सुभ काका देवक की कन्या, सुगढ रुप भकारा हो ॥ ६६७ ॥ शादी आप उसी संग कीजे, बात मेरी लो मानी। वसुदेव मंजूर करी जब ब्याह तणी विध ठानी हो ॥ ६६८ ॥ देवक नृप कन्या परनाई दहेज दिया हुलसाई। दश गोकुल धन नन्द मंदिर को, दिया साथ के मांई हो ॥ ६६६ ॥ इसी समय एवंता मुनिवर मास खमण तपधारी। आप भोजन काज महल में जीवयशा उस वारी हो ॥ ७ ० ॥ देवर जान फिर गई भाभी, हंसी करन के काज। घर घर मांही फिरो मांगत जरा न आवे लाज हो ॥ ७०१ ॥ भ्रात तुम्हारा राज करे, तुम उनको क्यों शरमाओ। संयम को तज आओ राज में इच्छित मौज उड़ाओ हो ॥ ७०२ ॥ इसी दिल्लगी करके उसने, मुनि को बहुत सताया। तब तो तपसी कुपित होके ज्ञान में ध्यान लगाया हो ॥ ७०३ ॥ पुत्र रहे थोड़ तुम बाकी क्यों इतनी मस्ताई फूले सो कुमलावे निश्चय सदा एकसी नांहि हो ॥ ७०४ ॥ गर्भ सातवां देवकी का जब जनमेगा भाई। तेरे बाप पति का वध कर, देगा राज वनाई हो ॥ ७०५ ॥ सुन के जीवयशा घबराई थर थर थर कंपाई। उत्तर गई घुमराई सारी मुनिवर गए सिधाई हो ॥ ७०६ ॥ जीवयशा ने पति पास आ सारा हाल सुनाया। चिंतित होय कंस बोला क्या तूने ऋषि सताया हो ॥ ७०७ ॥ मुनि वचन को निष्फल करन वसुदेव पां आया। गर्भ बहिन के मांग सातों मर्म न कोई पाया हा ॥ ७ ८ ॥ वसुदेवजी कंस संग घर मथुरामें जब आये। सुना हाल एवंता मुनि का वसुदेव पछताया हो ॥ ७०६ ॥ पश्चिम उदय रवि नहीं होवे, सागर तजे न कार। वसुदेव के वचन अचल हो मिथ्या नहीं लगार हो ॥ ७१० ॥ होन हार मिटता न मिटाये चले न किसका जोर। सुन

दुख भोगे जीव जक्त में, कर्मों का झकझोर हो ॥ ७११ ॥ उपजे गर्भ देवकी के उर, चर्म शरीरी आन । कम आयु मे मरे न हरगीज, जिनवर बचन परमान हो ॥ ७१२ ॥ उसी समय भद्दिलपुर में रहे, नाग सेठ धनवान । सुलसा नामा पत्नि उसके रुपवान गुणवान हो ॥ ७१३ ॥ बाली वय मे एक निमातिये, ऐसा दिया जताई । मृत्यु वन्धा है यह कन्या, सुलसा ने सुन पाई हो ॥ ७१४ ॥ जब से हरण गवेशी सुर की, सेव करी चित लाई । देव हुआ प्रसन्न, माग पुत्रोंकी हर्षाई हो ॥७१५॥ ज्ञान लगा के देव कहै, मुरदे जिन्दे नहीं होय । अन्य जगह से दिव्य पुत्र छै, ला सौंपूगा तोय हो ॥ ७१६ ॥ कहा 'तथास्तु' तत्र तो देव वह, हो गया अन्तर्ध्यान । इधर देवकी सुलसा के सम, रहते गर्भाधान हो ॥ ७१७ ॥ जाया देवकी ने सुन्दर सुत, ले गया देव उठाय । सुलसा ने मृतक सुत जाये, सो दिये यहां पहूचाय हो ॥७१८॥ मृतक बालक कंस पछारे, क्रोध हृदय मे लाय । इसका फल इसे आन मिलेगा, इसी जनम के माय हो ॥ ७१९ ॥ भ्रात छेइ सुलसा के घर में, देव योग मे आया । हर्ष हुआ हृदय में भारी, पुण्य ने खेल रचाया हो ॥ ७२० ॥ अनिक, अनन्त, अजित, अनिहत, देवसेन, शत्रुसेन । ये छहू भ्रात शुभ-कारी, मीठे इनके बैन हो ॥ ७२१ ॥ जोडी लख पुत्रो की माने, मात पिता आनन्द । बत्तीस बत्तीस कन्या परणे, छहू भ्रात सानन्द हो ॥ ७२२ ॥ बत्तीस बत्तीस क्रोड सुनैया, आये दहेज के माय । नेम वचन सुन सयम लेगे, देगे ऋद्धि छिटकाय हो ॥ ७२३ ॥ करनी कर केवल पायेगे, करें मोक्ष मे वास । चौथमल ऐसे मुनियो के, चरणो का है दास हो ॥ ७२४ ॥

येही (यहाँ) सुत मेरे फिर होना, किया निदान मन माई। वहां से सातवें स्वर्ग में उमर सोले सागर पाई हो ॥ ६९४ ॥ दश
मृगांग पाखास पुर का देव सेख नृप न्याई। घन देवी के नन्दयशा था, कुंवरी उपनी आई हो ॥ ६९५ ॥ दिया इनकी नाम
धसीमे, रुप कला गुण ज्ञान। धर्म ध्यान ये सब उत्तम यूं सोना सुगंध समान हो॥६९६॥ कंस प्रशंसा करता आया वसुदेवजी
पास मुक्त भाका देवक की कन्या, सुगढ रूप प्रकाश हो ॥ ६९७॥ शादी आप इसी सग कीजे, बात मेरी सा मानी। वसुदेव
मंजूर करी जब ब्याह तणी विध ठानी हो ॥ ६९८ ॥ देवक नृप कन्या परनाई, दहेज दिया हुलसाई। दश गोकुल युग नर
मंदिर को, दिया साथ के माई हो ॥ ६९९ ॥ इसी समय एवता मुनिवर मास समण तपधारी। आए भोजन काज महल में
जीवयशा वस भारी हो ॥ ७०० ॥ देवर आन फिर गई भाभी, हंसी करन के काज। घर घर मांही फिरो मांगत जरा न आवे
लाज हो ॥ ७०१ ॥ भात तुम्हारा राज करे, तुम उनको क्यों शरमाओ। संयम को तज आओ राज में इच्छित मोज उड़ाओ
हो ॥ ७०२ ॥ इसी दिल्लगी करके उसने, मुनि को बहुत सताया। तब तो तपसी कुपित होके ज्ञान में ध्यान लगाया हो
॥ ७०३ ॥ पुरुष रहे मौन तुम काकी क्यों इतनी मस्ताई पूछे सो कुमलावे निश्चय, सदा एकसी नांह हो ॥ ७०४ ॥ गर्भ
सातवां देवकी का जब जनमेगा भाई। वर बाप पति का वध कर, देगा राज बनाई हो ॥ ७०५ ॥ मुन के जीवयशा
घबराई घर घर मर कपाइ। उतर गई घुमराई सारी मुनिवर गए सिधाई हो ॥ ७०६ ॥ जीवयशा ने पति पास आ
सारा हाल सुनाया। चिंतित होय कंस भाखा क्यों तूने ऋषि सताया हो ॥ ७०७ ॥ मुनि वचन को निष्फल करने
वसुदेव पां आया। गर्भ बहिन के मांग सातों मर्म न कोई पाया हो ॥ ७०८ ॥ वसुदेवजी कस प्रम घर मथुरामें जब
आये। सुना हाल एवता मुनि का, वसुदेव पछताया हो ॥ ७०९ ॥ पश्चिम उदय रवि नहीं होवे, सागर तज न कार।
वसुदेव के वचन अचल हो मिथ्या नहीं लगार हो ॥ ७१० ॥ होन हार मिटणा न मिटाये चले न किसका जोर। सुन

दुख भोगे जीव जक्त में, कर्मों का झकझोर हो ॥ ७११ ॥ उपजे गर्भ देवकी के उर, चर्म शरीरी आन । कम आयु मे मरे न हरगीज, जिनवर बचन परमान हो ॥ ७१२ ॥ उसी समय भद्दिलपुर में रहे, नाग सेठ धनवान । सुलसा नामा पत्नि उसके रुपवान गुणवान हो ॥ ७१३ ॥ बाली वय में एक निमितिये, ऐसा दिया जताई । मृत्यु वझा है यह कन्या, सुलसा ने सुन पाई हो ॥ ७१४ ॥ जब से हरण गवेशी सुर की, सेव करी चित लाई । देव हुआ प्रसन्न, माग पुत्रोंकी हर्षाई हो ॥७१५॥ ज्ञान लगा के देव कहै, मुरदे जिन्दे नहीं होय । अन्य जगह से दिव्य पुत्र छै, ला सौपूगा तोय हो ॥ ७१६ ॥ कहा 'तथास्तु' तब तो देव वह, हो गया अन्तर्ध्यान । इधर देवकी सुलसा के सम, रहते गर्भाधान हो ॥ ७१७ ॥ जाया देवकी ने सुन्दर सुत, ले गया देव उठाय । सुलसा ने मृतक सुत जाये, सो दिये यहा पहूचाय हो ॥७१८॥ मृतक बालक कंस पछारे, क्रोध हृदय मे लाय । इसका फल इसे आन मिलेगा, इसी जनम के माय हो ॥ ७१९ ॥ भ्रात छेह सुलसा के घर मे, देव योग से आया । हर्ष हुआ हृदय में भारी, पुण्य ने खेल रचाया हो ॥ ७२० ॥ अनिक, अनन्त, अजित, अनिहत, देवसेन, शत्रुसेन । ये छहू भ्रात शुभ-कारी, मीठे इनके बैन हो ॥ ७२१ ॥ जोड़ी लख पुत्रो की माने, मात पिता आनन्द । बत्तीस बत्तीस कन्या परणे, छहूं भ्रात सानन्द हो ॥ ७२२ ॥ बत्तीस बत्तीस क्रोड़ सुनैया, आये दहेज के माय । नेम वचन सुन सयम लेगे, देंगे ऋद्धि छिटकाय हो ॥ ७२३ ॥ करनी कर केवल पायेंगे, करें मोक्ष में वास । चौथमल ऐसे मुनियों के, चरणों का है दास हो ॥ ७२४ ॥

॥ श्री कृष्ण जन्म ॥

चाल—श्री कृष्ण मुरारी प्रगटे अवतारी आवन धरा में ॥ टेक ॥ गिरी सामने गज का देखो उतर जाय अभिमान । चन्द्र चांदनी वहां तक रहती, जब तक उगे न भान हो ॥ ७२४ ॥ मेंढक फिरे फदकता वहीं तक सर्प नजर नहीं आय । शेर न देखे वहां तक मृगला, खूसे फाल लगावे हो ॥ ७२६ ॥ जो उगे सो अस्त होय, और फूले सो कुम्हलाय । हर्ष शोक का जोड़ा जग में वसत पय पलटाव हो ॥ ७२७ ॥ पतिव्रता बालक और मुनिवर जो कुछ शब्द उचारे । वाक्य इन्हों के निष्फल ना हो जान ह जन सारे हो ॥ ७२८ ॥ सज्जनों का दुख हरण करन को हरि आप प्रकटाय । अधिक रवि की गरमी हो तब, मेघ वारि वर्षावे हो ॥ ७२९ ॥ हरि देवकी के उर आये स्वपना सात दिखावे । सिंह, सूर्य, गज ध्वज विमान सर, अनल शिखा दर्शावे हो ॥ ७३० ॥ चवा स्वर्ग से गंगदत्त का जीव गर्भ में आया । स्वप्नों का हाल रानी ने सारा पति को आन सुनाया हो ॥ ७३१ ॥ कहे देवकी वसुदेव से तुमने सुत मरवाया । जोर चला नहीं जरा इसी में जीव बहुत दुख पाया हो ॥ ७३२ ॥ बिना पुत्र सारा घर सूना जैसे नमक बिन भाव । पशु पक्षी बच्चों को पाकर व सी मन हर्षाव हो ॥७३३॥ इस बालक को आप बचाओ रहेगा नाम तुमारो । स्वप्ने के अनुसार नामजी क्या नहीं हृदय विचारो हो ॥ ७३४ ॥ नंद अहिर की नार यशोदा, एक दिन मिलन आई । निज हकीकत रानी देवकी उसको कह सुनाई हो ॥ ७३५ ॥ आपस में सुख लेन देन कर गई यशोदा स्थान । गर्भ चक्र होता है ज्यों ज्यां, वाहला उपजे ध्यान हो ॥ ७३६ ॥ दुष्ट दमन सज्जन सिंह से ले वेग पिलोके गात । शत्रु के सर को ठुकरा सिंहासन मारूं लात हो ॥ ७३७ ॥ मिली सूचना कंस भूप को गर्भ

सातवां आया । सिंह सुभट का पहरा संगिन उसने द्वार बिठाया हो ॥ ७३८ ॥ कष्ट बीच मे सोचे रानी, कंस होगा काज । जब
परमेष्टी महामत्र को, रहे हमारी लाज हो ॥ ७३९ ॥ बिल्ली के कहने से, छींका कभी टूट नहीं जावे । जब जन्मेगे आप हरि,
वो समय न कोई पावे हो ॥ ७४० ॥ भादो विद आठम जब आई, अर्द्ध निशा मुझार । गाजे बीजे चले हवा जल वर्षे मुसल–
धार हो ॥ ७४१ ॥ सोते पड़े रखवारे सारे, घोर नींद के माई । महिमा अपरम्पार हरि की, ये सब मेल मिलाई हो ॥ ७४२ ॥
शुभ मुहूर्त में जन्में हरिजी, तन से तिमिर नशाया । कंस की भूमी कांपी थर थर, सज्जन जन हर्षाया हो ॥ ७४३ ॥ वसुदेव
को बुला कहे, तुम सुत को शीघ्र ले जाओ । बदले मे जो देय यशोदा, उसे आप ले आओ हो ॥ ७४४ ॥ लेई नद को चले देव
तक, छत्र चमर ढुरावें । सानिध कार प्रछन्न देव हरि की, सेवा बजावे हो ॥ ७४५ ॥ मथुरा के दरवाजे आया, द्वार बंद वहा
पाया । हरि करे सो खरी द्वार के हरि अगुष्ट लगाया हो ॥ ७४६ ॥ खट खट ताला दूर पडे हैं, खड़डड़ खुले दुवारा । उग्रसेन
आवाज सुनी कहे, को आया इस बार हो ॥ ७४७ ॥ पास आय के वसुदेव कहे, यह वही सुंदर लाल । तुम दुख मोचन होगा
आगे, और कस का काल हो ॥ ७४८ ॥ तुरंत ले जाओ देर करो मत, दुश्मन जान न पावे । पूत कपूत हो जावे उसके, कौन
मदद पे आवे हो ॥ ७४९ ॥ दिया मार्ग जमना ने आये, नद द्वार पर चाल । लल्ला दे लल्ली ले आये, वसुदेव तत्काल हो ॥७५०॥
पहुँच गये सकुशल आप घर, रानी मन हर्षाई । कन्या रोने लगी जोर से, लेते गोदी मांई हो ॥ ७५१ ॥ खुली नींद पहरे वाले,
ले लड़की नृप पे आवे । कस देख कन्या को अपने मूछो ताव लगावे हो ॥ ७५२ ॥ देखो मेरी धमक सामने लड़के की हो गई
लड़की । साधु झूठे ये क्या कर सकती, कहे कस यो कडकी हो ॥ ७५३ ॥ छेदना शिका उस कन्या की, काचु कपड़ा माय ।
दीनी सौंप बहिन के तांई, ज्यों त्यो मन समझाय हो ॥ ७५४ ॥ बाजा बाजे हर्ष वधावे, नन्द घरे आनन्द । गोकुल नारी हर्षित
सारी, निरखी मुखारविन्द हो ॥ ७५५ ॥ नाचेगा वे ताल लगावे, लेय वारणा सारी । सदा चिरजी रहो लाल बोले जावें

॥ श्री कृष्ण जन्म ॥

ढाल—श्री कृष्ण मुरारी प्रगट भयकारी यादव वंश में ॥ टेर ॥ गिरी सामने गज का हस्ती उतर जाय अभिमान । चन्द्र चांदनी वहां तक रहती, जब लग उगे न भान हो ॥ ७२५ ॥ मेंडक फिरे फुदकता वहीं तक, सर्प नजर नहीं आय । हार न देखे घड़ी तक मुगला, उससे फन्द लगाये हो ॥ ७२६ ॥ जो उग सो अस्त होय, और फूल सो कुमलाय । हर्ष शोक का जोड़ा जग में दृगत चय पलटाय हो ॥ ७२७ ॥ पतिव्रता बालक और मुनिवर जो मुख शब्द उचारे । वाक्य इन्हों के निष्फल ना हो, जान है जन सारे हो ॥ ७२८ ॥ सज्जनों का दुःख हरण करन को हरि आप प्रकटाय । अधिक रवि की गरमी हो तब मेघ वारि वर्षावे हा ॥ ७२९ ॥ हरि देवकी के उर आये सुपना सात दिखाये । सिंह, सूर्य, गज, ध्वज, विमान सर अनल शिखा दर्शावे हो ॥ ७३० ॥ चवा स्वर्ग से गंगदत्त का जीव गर्भ में आया । स्वप्नों का हाल रानी न सारा पति को आन सुनाया हो ॥ ७३१ ॥ कहे देवकी वसुदेव से तुमने सुत मरवाया । और चला नहीं जरा इसी में जीव बहुत दुःख पाया हो ॥ ७३२ ॥ बिना पुत्र सारा घर सूना जैसे नमक बिन भात । पशु पक्षी बच्चों को पाकर वे भी मन हर्षात हो ॥७३३॥ इस बालक को आप बचाओ रहेगा नाम तुमारो । स्वप्न के अनुसार नाथजी क्यों नहीं हृदय विचारो हो ॥ ७३४ ॥ नन्द आहिर की नार यशोदा, एक दिन मिलन आई । निज हकीकत राणी देवकी उसको कह सुनाई हो ॥ ७३५ ॥ आपस में सुख लेन देन कर गई यशोदा स्थान । गर्भ बढ़ा होता है ज्यों ज्यों, दोहला उपजे आन हो ॥ ७३६ ॥ दुष्ट दमन देख सिंह से स सेग विसाके गाव । शत्रु के सर को ठुकरा सिंहासन आरूढ़ साथ हो ॥ ७३७ ॥ मिली सूचना कंस भूप को गर्भ

ये सुन विस्मय पाई यशोदा, नंद दौड के आया। देख हरि को कुशल हृदय मे, आनन्द हर्ष मनाया हो ॥ ७७३ ॥ बान्धे थे रस्सी से हरि को, उस दिन से मिल सारे। श्री कृष्ण को ग्वाल बाल, दामोदर कही पुकारे हो ॥ ७७४ ॥ गोप गोपिकाओ के प्यारे, नद के राज दुलारे। उठा गोदी मे फिरते सारे, तनिक न रखते न्यारे हो ॥ ७७५ ॥ माता दूध गरम जब करती, हरि जी आग बुझावें। और महि विलोवे तब हरि, माखन काड़ खा जावे हो ॥ ७७६ ॥ सर्प देख बालक डर भागे, हरि पकड़ ले आवे। कभी महिष पै बैठ, मोर पीछी का छत्र धरावे हो ॥ ७७७ ॥ अलि कमल से दूर रहे नहिं, ज्यो गोपी हरि पास। क्रीडा करे हरि सग सारी, और रचावे रास हो ॥ ७७८ ॥ कर सम्बोधन गोप इन्द्र से, पुष्प माल पहिनावे। मोर मुकुट हरि धरे शीप तब, शोभा अधिक बढावे हो ॥ ७७९ ॥ कभी गिरि शिखा पर बैठी, बन्सी राग सुनावे। इस प्रकार करते क्रीड़ा हरि, वर्ष ग्यारमें आवे हो ॥ ७८० ॥

॥ नेमिनाथजी का जन्म ॥

दोहा—नेमिनाथ भगवान का, चरित लिखू हितकार। आलस तज श्रोता सुनो, वरते मंगलाचार ॥ ७८१ ॥

ढाल—श्री नेमि जिनन्द का, चरित्र मनोहर श्रोता साभलो ॥ टेर ॥ उसी समय शौरीपुर माही, समुद्र विजय दरबार। महरानी सेवा देवीजी, सोती सेज मुझार हो ॥ ७८२ ॥ स्वपना देखा गज, वृषभ, सिंह, लक्ष्मी और फूलमाला। चन्द्र, सूर्य, ध्वज, कुभ, मनोहर, पदम सरोवर आला हो ॥ ७८३ ॥ क्षीर समुद्र, विमान देवका, रत्न-पुंज सुखकारी। निर्धूम अग्नि स्वप्न चतुर्दश, देखी नींद बिसारी हो ॥ ७८४ ॥ कार्तिक मास कृष्णा द्वादशी, चित्रा नक्षत्र पाया। अपराजित से चव शख का, जीव

अधिकारी हो ॥ ७२६ ॥ श्याम वर्ण से दिया नाम, श्री कृष्ण चन्द्र अति प्यारा। राज कंस जो बदला दें हरि, दुलरावे जिन सारा हो ॥ ७२७ ॥ मात देवकी मन में सोचे एक मास हो आया। अब तक लाल का मुँह नहीं देखा तड़पे उसकी काया हो ॥ ७२८ ॥ बच्छ बारस का नाम धर, गोकुल बीच सिधावे। इधर उधर गोवत्स की नाईं, देख नंद घर आवे हो ॥ ७२९ ॥ बड़ी यशोदा तू बड़ भागिन, बालक सुन्दर पाया। सब विध मनुहर चरित अनुपम देखत जी ललचाया हो ॥ ७३० ॥ हृदय बीच में सोहे स्वस्तिक, मकँद मणि से राजन। हाथ पांव चक्रादिक लक्षण पकज सम हैं लोचन ॥ ७३१ ॥ रतन जड़ित टोपी सिर सोहे, अँगला पहने लाल। नैनों में काजल सारा और तिलक विराजे भाल हो ॥ ७३२ ॥ लिये गोद में उठा हरि को अपने कंठ लगाया। मुख मस्तक चुम्बन कर उसका रोम रोम हर्षाया हो ॥ ७३३ ॥ निरखत नैना हुए न तृप्ति, हरख किया मन भरा। क्या तक महिमा करु यशोदा बालक सुन्दर तेरा ॥ ७३४ ॥ सज्जन जन का हार हृदय का, दुर्जन के यह साल। तुम इस वंश उजालन वाला, ऐसा तेरा लाल हो ॥ ७३५ ॥ दूध दही नव नीत यशोदे, इसको रोज खिलाना। हाथों हाथ रमाना, करना प्यार कभी न रुलाना हो ॥ ७३५ ॥ सदा चिरंजी रहो साँवरा श्री नंद के लाला। दुर्जन भंजन सज्जन रंजन यदुवंशी मतिवाला हो ॥ ७३६ ॥ मन जस वहाँ लेना वहां पावे ऐसा वाक्य प्रकाश। रानी देवकी निज घर आई, रख के मन सुख पास हो ॥ ७३७ ॥ दिन में एक बेर यहां आना खेले कृष्ण खिलाना। जाने न भेद इसी लिये सब गो पूजा का बहाना हो ॥ ७३८ ॥ मेवा और मिष्ठान खिलाय, सुन्दर वसन पहिनाये। लावे खिलौने भांत भांत के खुशी नहीं समाय हो ॥ ७३९ ॥ शकुन और पोतना आई स्तन के जहर लगाई। लगी पिलाने दूध कृष्ण ने, उनको मार गिराई हो ॥ ७७० ॥ रखे यशोदा पास हमीश भी, दूर घड़ी नहीं जावे। तदपि नजर चुराय मात की, हरि खेलन को जावे हो ॥ ७७१ ॥ अरजन के दिया बोध हरि यम लार्जुन वृक्ष गिराया। शकर तोड़ भोजन को पटकी, शकटासुर मार गिराया हो ॥ ७७२ ॥

विनोद में, बाईसवे जिनराया हो ॥ ८०३ ॥ जिसका जो रागी होता है वह, उसका गुणगाय । बिना राग छते गुण भी, देखो नहीं सुहाय हो ॥ ८०४ ॥ बाली वय मे रिष्टनेमजी हैं इतन बलवान । और मुकाबले मे नहि कोई, दुनिया के दरम्यान हो ॥ ८०५ ॥ एक देव के मन नहिं भाई, स्वर्ग छोड के धाया । रम रहे जहा प्रभु मोद से, उसी जगह वह आया हो ॥ ८०६ ॥ खेल करी प्रभु कोई रमावे कठ लगावे, अगुली पकड़ चलावे । आख मिचावे भागी जावे, पकड मात उन्हे लावे हो ॥ ८०७ ॥ अवध ज्ञान से जाना प्रभुने, पौढ़े पलने, समय देव लख पाया । उठा प्रभु को चला गगनमे, हुआ काज मनचाया हो ॥ ८०८ ॥ जैसे सोता शेर जगावे, अहि मुख डाले हाथ । त्यों ये देव कैसे सुख पावे, जब छेडा जगन्नाथ हो ॥ ८१० ॥ इन्द्र आय के देव छुडाया सब अपराध क्षमाया । सुला पालने बीच प्रभु को, सुर इदर स्थान सिधाया हो ॥ ८११ ॥ खेल, खेल-कर सब घर आये, रानी और नरिन्द । घर २ हर्ष वधावा होवे, घर २ परमानन्द हो ॥ ८१२ ॥

ये मुझे छलने आया । चरण अगुष्ट दवाया तब तो, देव बहुत घबराया हो ॥ ८०९ ॥

॥ कंस वध ॥

दोहा—नमन करू गुरुदेव को, काटे भव-भव फंद । कंश वध वर्णन करू, सुनो सकल जन वृन्द ॥ ८१३ ।
ढाल —मैं हूं मथुरा का बॉका राजवी मेरा नाम कस है ॥ टेक ॥ विस्तृत राज्य भूमि है मेरी, दल बल सुभट महान । सारे मृत्यु लोक का स्वामी, ऋद्धि इन्द्र समान हो ॥ ८१४ ॥ मेरा सामना कौन करे, किस जननी ने सुत जाया । पाप पुण्य ईश्वर नहीं मानुं, करू सदा मन चाया हो ॥ ८१५ ॥ एक दिन कस बहिन घर आया, देखी कन्या ताई । गर्भ

रानी उर आया हो ॥ ७८५ ॥ किया निवदन स्वप्ना रानी राजा सुन हर्षाया । पुत्र रत्न जन्मेगा अपने हाय काज मन भाया हो ॥ ७८६ ॥ पूछा मुनि से प्रातःकाल वे कहें लगा क ज्ञान । तीन भवन के पूजनिक हागें, बाइसवें भगवान हा ॥ ७८७ ॥ स्वप्ना पाठक्न भी इसका शुभ फल यही बताया । राजा रानी श्रवण करी ने हर्षानन्द मनाया हो ॥ ७८८ ॥ गर्भ प्रभाव भगोपांग लावण्य सौभाग्य बढ़ाया । अभय दान सुपात्र दान दू दोहला उत्तम आया हो ॥ ७८९ ॥ श्रावण सुद पंचम अर्ध निशा चित्रावें शशि आया । सुन्दर लाल सेवाव आया, जग का तिमिर नसाया हो ॥ ७९० ॥ छप्पन दिक कुमारी आई, अपने कर्तव्य काज । गावें मंगल गान मुदित हो, सफल गिना दिन आज हो ॥ ७९१ ॥ सपरिवार इन्द्र सुधर्मा शीघ्र महल में आए । धन्य हो रतन कूख की धारक, बोल शीश नवाए हो ॥ ७९२ ॥ पांच रुप कर इन्द्र प्रथम प्रभु को हाथ उठाया । दूजे छत्र दो चमर ढोरत पंचम वज्र ले आया हो ॥ ७९३ ॥ सुमेरु गिरि पर ले चले, वहां चौसठ मघवा आया । स्नान कराके महोत्सव घना, सबने हर्ष मनाया हा ॥ ७९४ ॥ सभी देवता मिलकर करते, नाटक मंगल स्तुति । जय २ कार गगन में छाया यशो पुण्य विभूति हा ॥ ७९५ ॥ प्रभु को माता पास सुलाकर सुर पहुंचे निज स्थान । समुद्र विजय ने उत्सव कीना, जग उगा है भान हा ॥ ७९६ ॥ मिली गोरड़ी गावे मंगल, सुन्दर राग सुनावें । बन्दीवान को मुक्त किया और मुक्त बाल सुहाव हा ॥ ७९७ ॥ सूतक दूर निवार इष्ट-मित्रों को नृप बुलवाया । कर सम्मान सबका विधि युत, ऐसा वचन सुनाया हा ॥ ७९८ ॥ अरिष्ट-रत्न की चक्र धार, देखा स्वपन के मांय । अरिष्ट नेमि नाम रखा सुन पावे सब आह्लाद हा ॥ ७९९ ॥ एक सहस्र आठ शुभ लक्षण तन अलसी फूल समान । शोभ रहा यत् दिन २ बढ़त रिष्टनेम भगवान् हा ॥ ८०० ॥ हसना, गाना चलना फिरना, नृत्य अस्समा जान । जन क मन को रंजन करना ये लालन लीला स्थान हो ॥ ८०१ ॥ बसत क्रीड़ा हित भूपत से, मनहर का सार । झूला बांध आम्र की शाखा, झूले नेम कुमार हो ॥ ८०२ ॥ इसी समय सौधर्म इन्द्रन अवधि ज्ञान लगाया । देख अबा रग

विनोद में, बाईसवे जिनराया हो ॥ ८०३ ॥ जिसका जो रागी होता है वह, उसका गुणगाय । बिना राग छते गुण भी, देखो नहीं सुहाय हो ॥ ८०४ ॥ बाली वय मे रिष्टनेमजी हैं इतन बलवान । और मुकाबले मे नहि कोई, दुनिया के दरम्यान हो ॥ ८०५ ॥ एक देव के मन नहिं भाई, स्वर्ग छोड के धाया । रम रहे जहा प्रभु मोद से, उसी जगह वह आया हो ॥ ८०६ ॥ कोई रमावे कठ लगावे, अगुली पकड चलावे । आंख मिचावे भागी जावे, पकड मात उन्हे लावे हो ॥ ८०७ ॥ खेल करी प्रभु पौढ़े पलने, समय देव लख पाया । उठा प्रभु को चला गगनमे, हुआ काज मनचाया हो ॥ ८०८ ॥ अवध ज्ञान से जाना प्रभुने, ये मुझे छलने आया । चरण अगुष्ट दबाया तब तो, देव बहुत घबराया हो ॥ ८०९ ॥ जैसे सोता शेर जगावे अहि मुख डाले हाथ । त्यों ये देव कैसे सुख पावे, जब छेड़ा जगन्नाथ हो ॥ ८१० ॥ इन्द्र आय के देव छुडाया सब अपराध क्षमाया । सुला पालने बीच प्रभु को, सुर इदर स्थान सिधाया हो ॥ ८११ ॥ खेल, खेल-कर सब घर आये, रानी और नरिंन्द । घर २ हर्ष वधावा होवे, घर २ परमानन्द हो ॥ ८१२ ॥

॥ कंस वध ॥

दोहा—नमन करू गुरुदेव को, काटे भव-भव फंद । कंश वध वर्णन करू, सुनो सकल जन वृन्द ॥ ८१३ ।
ढाल —मैं हूं मथुरा का बॉका राजवी मेरा नाम कस है ॥ टेक ॥ विस्तृत राजय भूमि है मेरी, दल बल सुभट महान । सारे मृत्यु लोक का स्वामी, ऋद्धि इन्द्र समान हो ॥ ८१४ ॥ मेरा सामना कौन करे, किस जननी ने सुत जाया । पाप पुण्य ईश्वर नहीं मानु, करूं सदा मन चाया हो ॥ ८१५ ॥ एक दिन कस बहिन घर आया, देखी कन्या ताई । गर्भ

सातवां क्या मारेगा यों कह हंसी उड़ाई हो ॥ ८१६ ॥ मिथ्या कहा ऋषि न देखा या कहं अन्य विचार । कस बात का निर्णय जाकर, दिल में कीनी धार हो ॥८१७॥ एक दिन सभा बिच में आये पण्डित ज्योतिष ज्ञाता । प्रश्न भूपति के करने पर, देख विचार बताता हो ॥ ८१८ ॥ मुनि वचन निष्फल नहीं जावे, भावी कौन मिटावे । राम लखन सीता का आया विपिन बीच से आवे हो ॥ ८१९ ॥ कह भूप ज्योतिषी बोलो उसकी क्या पहिचान । बिन जाने मैं कैसे मारूं बतलाओ कर ध्यान हो ॥ ८२० ॥ हे राजन् कर ध्यान सुनो, हम ज्योतिष देख बतावें । किंचित् नहीं है दोष हमारा, साफ साफ सिखलावे हो ॥ ८२१ ॥ कसी अश्व महिष वृषभ जो इनको मार गिरावे । सारंग धनुष चढ़ावेगा सोही से रे प्राण गमावे हो ॥ ८२२ ॥ काली नाग का दमन करेगा चाणुरमल्ल पछारे । पद्मोत्तर और चंपक हाथी इने वही तुम्ह मार हो ॥ ८२३ ॥ यादव वंश उजवाल वृन्दावन में रास रचावे । गोवर्धन धारे उसके हाथों तूं मारा जावे हो ॥ ८२४ ॥ कारियो का दुख घातक होगा सज्जन का उपकारी । मानी मान निकन्दन होगा, सन्तों का सुखकारी हो ॥ ८ ५ ॥ गदा कौमुदा को धारे, पंचायन संख बजावे । तीन खंड में आण अखंडित, अरि देख घबरावे हो ॥ ८२६ ॥ ज्योतिषियों की बात श्रवण कर कंस हृदय घबराया । हरि की घात करन पापी ने केशी अश्व पठाया हो ॥ ८२७ ॥ अश्व अखाड़ धूम सभी, गोकुल वासी मकुलाये । हो सवार हरि घुमा घुमा कर, मार इसे घर आये हो ॥ ८२८ ॥ इसी तरह से मेष वृषभ को हना शोरो गुल छाया । ग्वाल बाल हरि मिल के एक दिन गिरिराज उठाया हो ॥ ८ ९ ॥ रमें गेंद से आप हरिजी, जमुना के तट आई । काली नाग को नाथा जाकर, कालीद्रह के मांई हो ॥ ८३० ॥ अन्धारिक के वध करने की, घरचा घर घर धाई । सुनकर बातें वसुदेव को, चिन्ता उपनी आइ हो ॥ ८३१ ॥ मैंने पुत्र छिपाल हेतु रखा नन्द के जाय । अब तो अपना बल पौरुष से प्रकटित होते जाय हो ॥ ८३२ ॥ करे अमंगल कभी न चूके यदि कंस सुन पाय । बलदाऊ का हरि रक्षा हित भेजा गोकुल माय हो ॥ ८३३ ॥

राम कृष्ण दाना भ्राता हैं, सुन्दर मोहनगारे। जिधर खेलने जाय उधर ही, ग्वाल गोपिया लारे हो ॥ ८३४ ॥ गौकुल मथुरा बीच बैठते, आप कदम की साया। वसी बजावे धेनु चरावे, करे खेल मन चाया हो ॥ ८३५ ॥ दही दूध नित वेचन जावे, ग्वालिन मथुरा माय। उस पर हरि ने दान लगाया, बोली वे यों खिजाय हो ॥ ८३६ ॥ गौकुलवासी हो तुम दोनो, मत ना ढोग रचावे। जाय शिकायत करे कंस पे, फिर पीछे पछतावे हो ॥ ८३७ ॥ पापी को संहार करू, ना डरू कहू मैं गाज। कस भूप को मारू पल में, धरू अन्य सिर ताज हो ॥ ८३८ ॥ यो क्रीड़ा करते वर्ष सोलह, बीते गोकुल माई। गुप्तचरों ने कस भूप को, हरि की बात सुनाई हो ॥ ८३९ ॥ रचा स्वयवर सत्यभामा का, कस भूप उस बार। शारङ्ग धनुप सामने रख के, बोला इस प्रकार हो ॥ ८४० ॥ शारग धनुप चढावे जो कोई, शूरवीर सरदार। वही वरेगा इस कन्या को, नृप या राज कुमार हो ॥ ८४१ ॥ दूर दूर से भूपत आये, सब ने बल अजमाया। धनुप चढाना दूर रहा, नहीं हिलता वह हिलाया हो ॥ ८४२ ॥ वसुदेव सुत अनाधृष्ट सुन, अभिमान मे छाया। धनुप चढ़ाने शौरीपुर से रथमे बैठ चल आया हो ॥८४३॥ रस्ते में गौकुल गाव बीच मिले आप हरि हलधर। बीती निशा परस्पर छाया, हर्षानन्द वहीं पर हो ॥८४४॥ प्रातः हरि को लेकर सगमें,सघन विपिनमे आये। पथके वृक्ष उखार हरि रथ मथुरामे लायेहो॥८४५॥आय मडप मे बैठे नृप,मूछों ताव लगाई। धनुष निकट लक्ष्मी के सदृश, सत्य भामा दर्शाई हो ॥ ८४६ ॥ देख कृष्ण का तेज, सत्य भामा हृदय लुभाया। धनुधारी बन यही वरे मुझ काज बने मन चाया हो ॥ ८४७ ॥ लगा उठाने अनाधृष्ट धनु फिसल पडा उसवार। कुँवरी देख फिराया मुँह को, हसे सभी सरदार हो ॥८४८॥ तबतो पुष्प माल के भाति,हरि ने धनुप उठाया। फिर उस को रख दिया वहीं पर बाहर निकल कर आया हो ॥ ८४९ ॥ अनाधृष्ट आ पिता श्री पे, ऐसा वाक्य सुनाया। रखने शान राजपूतो की मैंने धनुप चढाया हो ॥ ८५० ॥ अगर बात यह सच्ची हो, तुम शौरीपुर को जाओ। कस मरवा डालेगा, मतना संशय लाओ हो ॥ ८५१ ॥ अना

अति मन मे, कुचले सांप की नाई। उसी समय मे कंस वध की हरि प्रतिज्ञा ठाई ॥ ८७० ॥ नहा धोके यमुना जल मे, ले गोप
बन्धु सग भाई। आ पहुचे मथुरा दरवाजे, देर न जरा लगाई हो ॥ ८७१ ॥ कस हुकम से दरवाजे पर, हाथी को रखवाये।
पेलवान सकेत से हाथी, हरि ओर झपटाये हो ॥ ८७२ ॥ हरि ने पद्मोत्तर गज पकड़ा, चम्पक को बलराम । दन्त उखारे
मुष्टि प्रहार से कीना काम तमाम हो ॥ ८७३ ॥ ये प्राक्रम अवलोक सभी जन, बोले हैं नन्दलाल। अरिष्टादिक संहारा इनने,
कीना काम कमाल हो ॥ ८७४ ॥ गोप मडली युक्त अखाडे, राम कृष्ण चल आया। देखी जगह कहिं नहीं खाली, दर्शक खूब
भरायाहो ॥ ८७५ ॥ एक मच के लोक हटा कर, बैठ गये वहा जाई । जबरदस्त का उलटा पेडा कहते दुनिया माई हो
॥ ८७६ ॥ कर सकेत राम ने हरि से, बैठा कस दिखाया । समुद्र विजय वसुदेव आदि, सबका परिचय करवाया हो
॥ ८७७ ॥ भुजा दण्ड फटकार मलो ने, कुश्ती आन लगाई। किया दर्शको का मन रंजन, कौशलता दिखलाई हो ॥ ८७८ ॥
कस हुक्म से हुआ खड़ा, चाणुर अखाडा माई। करे सामना मेरा बोले ऐसा को जग माई हो ॥ ८७९ ॥ ताल ठोक के
करे गर्जना, दर्शक गण के माई । जिसको हो अभिमान शक्ति का, दिखलाओ यहां आई हो ॥ ८८० ॥ चाणुर के सुन
बचन सभा में, सन्नाटा सा छाया । स्वीकृत करे चुनौती उसकी, ऐसा कोई न पाया हो ॥ ८८१ ॥ बीच अखाडे कूदे
मोहन, खोल पीताम्बर डाले। खभ ठोंक चाणुर सामने, बोले बल अजमाले हो ॥ ८८२ ॥ विस्मित हो दर्शक गण बोले,
अब क्या होगा हाल । कहा मस्त चाणुर मल्ल, कहा दूध मुहा ये बाल हो ॥ ८८३ ॥ इस उन्मादी गोप बाल को, किसने
यहां बुलाया। स्वेच्छा से लडता लड़ने दो, कस यो व्यग सुनाया हो ॥ ८८४ ॥ कृष्ण कहें गभीर वचन मे, कोई चिन्ता लावे।
सिंह सामने क्या गज गति हो, ऐसा खेल दिखावे हो ॥ ८८५ ॥ ये बालक नन्हा सा है पर, अभिमान मे छाया। कर
आदेश कस ने मुष्टिक मल्ल पै हुक्म लगाया हो ॥ ८८६ ॥ कसके लगोटा मुष्टिक आया, बीच अखाड़े माई। हो न सका

परदास राम का, वे भी छूटे भाई हो ॥ ८८७ ॥ चाणुर को हरिजी ने पकड़ा, मुष्टिक का बलराम । करा इशारा कंस ने मारो, शीघ्र करो ये काम हो ॥ ८८८ ॥ दांव पेंच कर बल प्रयोग से हरि को मारन चाया । लेकिन हरि ने चाणुर मल्ल का, छिन में मार गिराया हो ॥ ८८९ ॥ बलराऊ ने मुष्टिक मल्ल को, पकड़ भूमि पर डाला । मुक्का मारा उसके ऐसा, रामशरण कर डाला हो ॥ ८९० ॥ श्री कृष्ण की विजय देख सबकी साविक्त दर्शाई । कंस कोप से किसने भी नहिं, करतलध्वनि लगाई हो ॥ ८९१ ॥ चाणुर मुष्टिक की मृत्यु देख कंस क्रोध में आया । मारो ग्वाला गाय पाल को, ऐसा हुक्म सुनाया हो ॥ ८९२ ॥ इन सर्पों को दूध पिलाया, और बनाया पुष्ट । लूट सम्पत्ति मारा जान से नन्द आहिर है दुष्ट हो ॥ ८९३ ॥ अमर इन्हों का पक्ष ले आवे, जो कोई मति मन्द । उसको भी उसी क्षण मारो मेरा सारा हुक्म हो ॥ ८९४ ॥ कंस वचन सुन श्री कृष्ण के, नेत्र हागय लाल । मरे मल्ल दोनों ही तेरे, अब तूं हौंस समाप्त हो ॥ ८९५ ॥ पहिले तुर की रक्षा कर फिर नन्दादिक मरवाना । अब में जिन्दा तुझे न छोड़ूं जरा सामने आना हो ॥ ८९६ ॥ इतना कहकर हरि उछल मञ्च, कंस मञ्च पर पर आवे । शिखा पकड़ पकरी ज्यों करा उस भूमि पर लावे हो ॥ ८९७ ॥ फटे चक्ष गया मुख्य मस्त मुआ हाल मे हाल । करे सामना सिंह का क्यों कर, मृग की नहीं मजाल हो ॥ ८९९ ॥ नीच नराधम पापी तूने अपनी रक्षा चाई । कीनी बाल हत्या फल उसका मिला यहि पर आई हा ॥ ९०० ॥ तेरे सम्मुख काल खड़ा है मरने में क्या देर । हो हीमायती तेरे छुड़ा ले, करदूं सबका ढेर हो ॥९ १ ॥ हाल देख कंस के सैनिक, अस्त्र शस्त्र ले दौड़े । मञ्च स्तंभ उखाड़ राम ने सब ही सिर तोड़े हो ॥ ९०२ ॥ मधु मक्खियों की भांति, वे सब भागे बेचारे । बलराऊजी के बल आगे, कोई दम नहिं मारे हो ॥ ९९३ ॥ कुपित हो कर कृष्णचन्द्र ने, मरा कंस सिर पैर । यह लौकिक लीला समाप्त की लगी न कुछ भी देर हो ॥ ९०४ ॥ केश पकड़ कर घसीट उसको, मंडप बाहर लाये । कंस गति ये देख जरासन्ध, के सैनिक सब धाये हा ॥ ९०५ ॥ समुद्र विजय ने हाल देख, अपनी सैना बुलवाई । जरासन्ध के

सैनिक भागे, सुध बुध को विसराई हो ॥ ६०६ ॥ राम कृष्ण को समुद्र विजय ने, रथ के बीच उठाई । वसुदेव निवासस्थान मे, उन को दिये पठाई हो ॥ ६०७ ॥ बन्दी गृह से किया मुक्त फिर, उग्रसेन के ताई । उत्तर क्रिया करी कस की, यमुना के तट जाई हो ॥ ६०८ ॥ उसी समय यादव वशी की, सभा विशाल भराई । राम कृष्ण के बल विक्रम की, कीनी प्रशसा बढाई हो ॥ ६०६ ॥ एवता अणगार से लेकर, वसुदेव ने मारा । कृष्ण जन्म का हाल सुनाया, करके अति विस्तारा हो ॥ ६१० ॥ जीव यशा कहे अहीर हत्यारे, मेरे पति को मारा । यादव इसके शरीक हुए नहिं रक्षा करी लगार हो ॥ ६११ ॥ राम कृष्ण आदि जादू का, करवा के सहार । क्रिया करूगी बाद पति की. जल के अगन मजार हो ॥ ६१२ ॥ उग्रसेन राजा ने तब, तो उसके ताई ललकारी । राज गृह में पिता पास वह, पहुंची है कलहकारी हो ॥ ६१३ ॥ दूत राम कृष्ण की इच्छा माफिक. समुद्र विजय महाराया । मिल झूल के सब उग्रसैन को, मथुरा का भूप बनाया हो ॥ ६१४ ॥ उग्रसेन राजा ने पुत्री-सत्यभामा के ताई। साथ कृष्ण के व्याह करदिना. आनद हर्ष मनाई हो ॥ ६१५ ॥ अब जरासन्ध ने निज पुत्री को. देखी बहुत दुखारी । बिखरे बाल क्रोध मे पूरण, गिरती आंशु धारी हो ॥ ६१६ ॥ पूछे वे उस जीवयशा ने, जो एवता मुनि आया । वहा से लगा कश मृत्यु का, सारा हाल सुनाया हो ॥ ६१७ ॥ बेटी कीनी भूल कश ने, देवकी का नहीं मारी । न बास होता न बजती बासुरी, व्यथा टलती सारी हो ॥ ६१८ ॥ रुदन करे मत कस घाती का. मारु सपरिवार । जरासध यह नाम मिटादू, जो पार न पडे विचार हो ॥ ६१६ ॥ धैर्य बधा पुत्री को नृप ने, सौम भूप बुलवाया हो । दूत बनाकर समुद्र विजय के, पास इसे पठाया हो ॥ १२० ॥ कहा सदेशा समुद्र विजय को, जो जरासंध कहलाया । पुत्री जीवयशा प्यारी का, असह्य दुख बताया ॥ ६२१ ॥ मारा कस को राम कृष्ण ने, कहां वे क्षुद्रोक बाल । उन्हे हमारे हाथ सौंप दो, और रहैं खुश हाल हो ॥ ६२२ ॥ समुद्र विजय कहे सुनो दूत तुम, कहो स्वामी से जाय । अनुचित आज्ञा को हम हरगिज, अब मानेग नाय हो ॥ ६२३ ॥ बधु बदले राम

कृष्ण ने कंस भूप का मारा। इस लिये हैं ये निर्दोषी, हरम करो विचार हां ॥ १२४ ॥ राम कृष्ण है प्राण पियारे, दोनों नत्र
समान। इन्हें कामना मोर अनीति और धृष्टता मान हो ॥ १२५ ॥ यह उत्तर सुन सोम " कांप कर ऐसा वाक्य सुनाया।
अनुचित उचित पालना आज्ञा, ये सेवक कृत्य बताया हो ॥ १२६ ॥ मारे गए जा पुत्र तुम्हारे, पहले नृप सुन लीजो। इन दो
कुलांगारों का इकर फर सबर कर लीजे हां ॥ १२७ ॥ रखना हाथ सर्प के मुंह में इष्ट प्रकाश करना। सिंह सामने बकरी जैस
पैर आग में धरना हो ॥ १२८ ॥ यों मगधेश्वर के सम्मुख है तुम्हारी कौन चलाइ। चाहो गर तो देखो दोनों को इसमें रहे
भलाई हो ॥ १२९ कृष्ण कोप कर हाथ उठा के, दोष दूत पर दान। आ तरे स्वामी को सम्मुख भजूं तुम्ह मिसान हां ॥१३०॥
अगर इच्छा हा कंस मिलन की तो द्रू शीघ्र पहुँचाइ। सोम दूत सुन भगा नहीं किंचित भी वार लगाइ हां ॥ १३१ ॥
समुद्र विजयजी तुरत सभी को सारा हाल सुनाया। अब यहां रहना ठीक नहीं, ऐसा समझो जितलाया हां ॥ १३२ ॥
कोष्टुक निमेंविया को बुलवा पूछा आशयराज। हुआ विराह पह के संग कहां आप सुख मगत्याय हो ॥ १३३ ॥ निमंत्रिय ने
कहा होयगी निश्चय विजय तुम्हारी। शत्रु जीतकर तीन खंड के, होंग नाथ मुरारी हो ॥ १३४ ॥ नमनाथ और हरिहलधर
ये, हा जिस वंश के मांहि। मनुष्य तो क्या देवों का भा चार चल कुछ नाहिं हा ॥ १३५ ॥ इस भूमि में सुख न तुमको, चाह
देखो इस पार। वापोती जान सुख भोगे कर्ई साना नहीं गवार हा ॥ १३६ ॥ पश्चिम देश में सिद्ध करो तुम सागर के तट
जाना। सत्यभामा के भानु कुंवर हा, वही निशान गवाला हा ॥ १३७ ॥ वहां वास तुम करो मोद से मिल संपदा मान।
आपूर्वसा जिसे पास चंद्रयशा करते करोड़ कल्याण हा ॥ १३८ ॥ यह सुन राजा समुद्रविजय ने ज्योतिषी की पैरवाइ।
शीघ्र प्रयाण की खबर उन्होंने, चारों ओर कराई हो ॥ १३९ ॥ ग्यारह करोड़ बंधु मथुरा से ले सौरीपुर आया। वहां से सात
कोटि और यादव, विन्ध्याचल ओर सिधाया हो ॥ १४० ॥ राजा उग्रसेन मथुरा में रहना ठीक न जाना। वे भी साथ तैयारी

पीछे के भय कारण अपना, जल्दी
करके, फौरन हुए रवाना हो ॥ ६४१ ॥ अष्टादश कोटि ले संग मे, चल दिये यदुराया। पीछे के भय कारण अपना, जल्दी
पांव बढाया हो ॥ ६४२ ॥ मातृ भूमि की ममता सब को, होती तजी न जाय। भूमि तजते सबही यादव । बढा अचभा आय
हो ॥ ६४३ ॥ उधर सौमने राजग्रही जा, सारा हाल सुनाया । सुनकर राजा जरासध के, क्रोध वदन मे छाया हो ॥ ६४४ ॥
है यहा ऐसा वीर कोई, यादव को पकडी लावे। धरे जैल मे बदी बनाकर, बीडा कौन उठावे हो ॥ ६४५ ॥ जोश खाय काली
कुवार ने, बीडा शीघ्र उठाया। सब यादव की करु खरावी, तो असली का जाया हो ॥ ६४६ ॥ यवन अनुज ले राजा पाच सो,
हय गय पैदल लार। काली कुवर काल बन आया, लगा यादवों लार हो ॥ ६४७ ॥ राम कृष्ण के समीप वह, तेजी से आया
चाल। बाल न वांका होवे जिसका पुन्य करे रखवाल हो ॥ ६४८ ॥ रामकृष्ण के रक्षक सुरने, माया रचो तिवार। छोटी
मोटी चिता जल रही, और अगन की झार हो ॥ ६४९ ॥ चिता पासे एक नारी रोती, देखी काली कुवार। पूछा भद्रे! क्या
दुख तुझको, क्यो रोवे इस बार हो ॥ ६५० ॥ जरासंध के भय से यादव जल के प्राण गवाया। वडी चिता मे रामकृष्ण और,
यादव राज समाया हो ॥ ६५१ ॥ उनके दुख में दुखित होय, चिता प्रवेश हुई आई । इतना सुनके कूदा सोचे, काली कुवर
मनमाई हो ॥ ६५२ ॥ राम कृष्ण की लेन निशानी गया चिता के पास। देव उठा अग्नि मे डाला, उसका हुवा विनाश हो
॥ ६५३ ॥ सैना आकर जरासध को, सारी कथा सुनाई। राजा को दुख हुवा पुत्र का, सब मील धैर्य बधाई हो ॥ ६५४ ॥
समाचार काली कुंवार के, मृत्यु का सुन पाया। सभी यादवो के हृदय मे, धैर्य तभी से आया हो ॥ ६५५ ॥ पथ में एवन्ता
मुनि को लख, समुद्र विजय सरमाया। कब छूटे सकट से हम, पूछे पै उन्हें सुनाया हो ॥ ६५६ ॥ बावीशवे तीर्थंकर है श्री,
अरिष्टनेमि सुख धाम। रामकृष्ण भी परम प्रतापी, चिंता का क्या काम हो ॥ ६५७ ॥ इतना सुनकर सब यादव के, हर्ष हृदय
में छाया। पाठ तिक्खुत्ता से कर वदन, आगे कदम बढ़ाया हो ॥ ६५८ ॥ सोराष्ट्र देश गिरना कोण नैऋत्य मे डेरा दीना। सत

भामा मातु सुत आया अति हर्ष मना लीना हो ॥ ६५६ ॥ किया हरिन वस का तप तब तीजी रजना मास । रत्न लवपुठा हाथ जोड़ हरि सम्मुख उभा आई हो ॥ ६६० ॥ दीना पंचायन शंख हरि का, सुघाप राम क हाथ । वस्त्राभूषण दे पूछा क्यों वाद किया सुख ताई हो ॥ ६६१ ॥ कृष्ण कहै सुना वात हमारी, दा रहनों का स्थान । तब वा सुर सुरपति पै पहुँचा, सारा कहा बखान हो ॥ ६६२ ॥ आज्ञा पा सौधर्मेन्द्र की, कुबेर देव उस वार । आया मृत्यु लोक में फौरन, सुन्दर भूमि विचार हो ॥ ६६३ ॥ बारह योजन की लंबी, और नवयोजन की चौड़ी । कनक कोट मह रत्न कंगुरे, स्वर्ग लोक सा आली हो ॥ ६६४ ॥ एक से लेकर सात मजल तक सुन्दर महल बनाया । समुद्र विजयादिक दश दशार क दश मंजाले रचाया हो ॥ ६६५ ॥ भवन सर्वतोभद्र बनाया बाग बड़ा अघकारी । राम कृष्ण के लिय अवचरा, इकलस मजला भारी हो ॥ ६६६ ॥ सुगड़ सभा मंडप रचाया हय गय रथ की शाला । चोपड़पत् बाजार बसाया, मणाभद्र सुंदर आला हो ॥ ६६७ ॥ कुँआ वापी तालाब सरोवर वन वाड़ी बाग विस्तार । बनी द्वारिका नगरी एसी, पूरण सुन्दराकार हो ॥ ६६८ ॥ दिया कुबर ने भी कृष्ण का पिताम्बर नक्षत्र माला । कौस्तुभ रत्न मुकुट धायपुत, शारङ्ग धनुष निराला हो ॥ ६६९ ॥ चन्द्रहास नामा खड्ग और गदा कौमुदी दीना । गरुड़ ध्वज रथ अति उत्तम हरि प्रम स लीना हो ॥ ६७० ॥ वनमाला हल मूशल भूषण, धन धनुष्य एक भारी । तालध्वज रथ बलदाऊ को, द धामा सुखकारा हो ॥ ६७१ ॥ आग्नि कोण में महल समुद्र के, नैऋत्य में सागर जान । वायव्य कोण में महल भरण क हे बसुदेव ईशाण हा ॥ ६७२ ॥ भ्रूठा भरण और युगल बराया, द्वार सुगड़ मग जडिया । नमिनाथ तीर्थंकर के सुर, भूषण अपण करिया हा ॥ ६७३ ॥ समुद्र विजय आदि अन्य नृपों का, इन्द्र हुकम अनुसार । यथा योग्य वस्त्राभरण दे, कीना अचित सत्कार हा ॥ ६७४ ॥ पश्चिम समुद्र तटपर मिलकर सब यादव परिवार । राज्याभिषक करा श्रीकृष्ण का घर के हर्ष अपार हो ॥ ६७५ ॥ सिद्धाथ सारथी बलदाऊ क [illegible] मान । अपन अपने

रत्थ में बैठे, हरि हलधर दोनो आन हो ॥ ६७६ ॥ हयगय रत्थपर और गजादि, हो करके असवार । किया द्वारका मे प्रवेश सब, करते जय जय कार हो ॥ ६७७ ॥ धन धान्य वस्त्राभूषण से, पूरीत सकल आवास । नीज २ नामांकीत भवनो मे, सबने किया निवास हो ॥ ६७८ ॥ छत्तीश पवन बसाय शहेर मे, सुर गया स्वर्ग मझार । राज्य करे हरि हलधर अब यां, प्रजा सुखी अपार हो ॥ ६७९ ॥ बीज चन्द्रवत् हरि वश यो, दिन २ वढ़ता जावे । गुरु हीरालाल प्रसादे चौथमल, सुदर सम्बध सुनावे हो ॥ ६८० ॥

॥ रुक्मणि-मंगल ॥

॥ दोहा ॥ प्रथम मनाऊ सरस्वती, करदे बुद्धि विशाल । रुक्मणि-मगल लिखूं, फले मनोरथ माल ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ श्रोता सुन लीजो, रुक्मणि-मगल मैं गाऊ प्रेम से ॥ टेक ॥ विंध्याचल की दक्षिण और मे, विदर्भ सुन्दर देश। शहर मनोहर कुन्दनपुर जहां, भीष्म नामा नरेश हो ॥ श्रो० ॥ १ ॥ शिखावती राणी ने प्रसवे, पाच पुत्र सुखकारी । वड़ा पुत्र रुक्म स्वभाव का, क्रूर उद्दण्ड बलकारी हो ॥ श्रो० ॥ २ ॥ शनि, स्वाति के सिद्ध योग मे, जन्मी राज दुलारी । रुक्मणि नाम दिया है उसका, सवको वल्लभकारी हो ॥ श्रो० ॥ ३ ॥ मात पिता ने प्रेम धरी जब, साक्षर उसे वनाई । वदन अनूपम शचिवत् है, लावण्य और चतुराई हो ॥ श्रो० ॥ ४ ॥ विवाह योग्य कन्या को समझ, नृप लेन सम्मति चाई। रानी पुत्र और मत्री को, बुलवा के बात सुझाई हो ॥ श्रो० ॥ ५ ॥ स्वय अनुभवी दूरदर्शी है, जो सोचा मन माई। मत्री कहे हम हैं लालायित, आप ही दीजे वताई हो। श्रो० ॥ ६ ॥ श्री हरि के सिवाय योग्य वर, दिया न मुझे दिखाई । सव विधि लायक हैं यदुपति, सोचो बात चित्तलाई हो ॥ श्रो० ॥ ७ ॥ जाति रूप गुण आयु शरीर वल वैभव है विशिष्ट । जो रुक्मणि स्वीकार करे तो

हाथ सिद्ध यह इष्ट हो ॥ भा० ॥ ८ ॥ बात यह सब का प्रिय लागा नहा रुक्म मन माइ । चन्द्ररी नृप शिशुपाल सग है इसके मित्राइ हो ॥ भा० ॥ ९ ॥ शिशुपाल भी है नवयुवक अभिमान में छाया । न्याय अन्याय कुछ नहीं समझ कर सदा मनचाया हो ॥ भा० ॥ १० ॥ शिशुपाल जन्मा निमत्य भविष्य बात सुनाई । इस बालक की मौत मासु सुत हरि के हाथ बताई हो ॥ भा ॥ ११ ॥ शिशुपाल को लेकर माता वसुदेव पे आइ । हरि की गोद में रख बालक का बात सभी दर्शाइ हो ॥भा ॥१२॥ श्रीकृष्ण कहे सुना भुवा म इतनी क्षमा करूगा । निन्यानव अपराध कर तो भी न मारा डरूगा हो ॥ भा० ॥ १३ ॥ सतुष्ट हाय माता ले सुत, अपने शहर सिधाई । शिशुपाल हरि से शत्रुता रखता यों मन माई हो ॥ भो० ॥ १४ ॥ मगधाधीश जरा सघ का मारा कश जमाइ । तब स यह भी श्रीकृष्ण से रखता बैर सदाई हो ॥ भा० ॥ १५ ॥ स्वरसा काम शिशुपाल करी जरासघ स प्रीत । मित्र का शत्रु जान रुक्म रहे हरि से सदा विपरीत हो ॥ भो० ॥ १६ ॥ मुँह बिगाड कहे कुवर रुक्म अच्छा वर विचारा । वृद्ध होने से बुद्धि बिगडी पैदा हुआ विकारा हो ॥ भा० ॥ १७ ॥ सुन २ निन्दा रुक्म कुवर के भर गये थे कान । इसीलिये कहा तात पिता म क्यों खाते हो शान हो ॥ भा० ॥ १८ ॥ दस्या कृष्ण ग्वाल का आया अहीर का झूठा खाया । चोर, नचैया नहीं योग्य वर क्या हुआ राज्यपद पाया हो ॥ भो० ॥ १९ ॥ मन ही मन साच मुझ से अगर हुई हो भूल । नम्रता स कहना था किन्तु वाय वचन वेशूल हो ॥ भा० ॥ २० ॥ असी मूर्खता करी पुत्र न मुझे न वैसी करना । तब तो पूछ है कौन बुराइ श्रीकृष्ण में उचरना हा ॥ भा० ॥ २१ ॥ जाति रूप और गुणकर हीना, भीरु कपटी चार । बस वैभव नहीं सम कैसे रुक्मणि से मिलावे जोर हो ॥ भा० ॥ २२ ॥ भीम विचारे कृष्ण विरोधी, लोका ने बनाया मूल । अवनीत मूल पुत्र किम समझे तो भी कहूं समझूल हो ॥ भो० ॥ २३ ॥ सद्गुण और दुर्गुण य दानों प्रत्यक प्राणी में पाय । मुख्य गौण के भद से ही नर लघुता गुरुता पे आते हा ॥ भो० ॥ २४ ॥ भ्रम त्याग हिताहित सोचा है गौरव बुद्धि विचार । रुक्म कहे मरे जीते

जी तो, बने न यह व्यवहार हो ॥ श्रो० ॥ २५। भीषण गृह कलह यह होगा, जो न मिटा मतभेद । मन्त्री सोच इम कहे नृप से, रहो शान्त तजो खेद हो ॥ श्रो० ॥ २६ ॥ गुरुता लघुता का वाद छोड़ कर, साधो निज उद्देश्य । रुक्म से ही पूछो कौन वर, रुक्मणि योग्य विशेष्य हो ॥ श्रो० ॥ २७ ॥ भीम कहे हां यह भी ठीक तब, पूछा मंत्री सवाल । रुक्म कहे है वर सर्वोत्तम, चंदेरी शिशुपाल हो ॥ श्रो० ॥ २८ ॥ सब गुण सम्पन्न माने जरासध, श्रौर निन्याणु भूपार । शिखावती मात ने रुक्म की, बात करी स्वीकार हो ॥ श्रो० ॥ २९ ॥ मंत्री सोचे यह तो अनुचित, करी बात महारानी । अब इनको समझाया होगा, लोक हासी गृह हानि हो ॥ श्रो० ॥ ३० ॥ हित लोलुपता वश पक्ष ले, पतिव्रत धर्म ठुकराया । भीम विचार सागर मे डूबा, रुक्म को गर्व भराया हो ॥ श्रो० ॥ ३१ ॥ मंत्री कहे वही होने दो, जो इन दोनो की इच्छा । तान हानि का कारण समय लख, देवे ढील हों पीछा हो ॥ श्रो० ॥ ३२ ॥ परिणाम सोच कहे नृप मंत्री ! इतना अवश्य कहूगा । नहीं विरोधक नहीं सहमत, मैं इसमे तटस्थ रहूंगा हो ॥श्रो०॥३३॥ रुक्मणि-विवाह का बोझा, कुवर रानी पर छोर । राजा भीम उठ गये महल मे, अन्य जन निज-निज ठौर हो ॥ श्रो० ॥ ३४ ॥ उद्दण्ड रुक्म ने कुकृत्य का, किया न पश्चाताप । भीम सत्य और न्याय भरोसे, बैठा तज संताप हो ॥ श्रो० ॥ ३५ ॥ गर्वी रुक्म कहे नवयुग मे, अब युवकों की बारी । पुराने विचार काम नहीं आते, सुनियो मात हमारी हो ॥ श्रो० ॥ ३६ ॥ विवाह-भार अपने ऊपर डाला, इसे जल्दी निपटाना । रक्खे महाराज बाधक बनकर, दे अपने को ताना हो ॥ श्रो० ॥ ३७ ॥ किया समर्थन माता ने तब, पण्डित से लग्न विचारा । माघ कृष्ण अष्टमी श्रेष्ठ है, कन्या कुण्डली अनुसारा हो ॥ श्रो० ॥ ३८ ॥ शिशुपाल से विवाह असंभव, दिखते विघ्न कईक । रुक्म कहे मैं समझ गया, अब जाओ तुम्हे है सीक हो ॥ श्रो० ॥ ३९ ॥ चतुर भाट सरसत को बुलाया, वह भी समझा भेद । आशीर्वाद दे खड़ा सामने, फरमाओ क्या उम्मेद हो ? ॥ श्रो० ॥ ४० ॥ टीका ले चंदेरी जाना, भेद न भीम को देना । ज्योतिषियों की ज्योतिष लगे नहीं, सावधान हो रहेना

हाथ सिद्ध यह हम हो ॥ भा० ॥ ८ ॥ बात यह सब का प्रिय लागा नहीं रुक्म मन भाइ । चंदेरी नृप शिशुपाल सग है इसका मित्राई हो ॥ भो० ॥ ९ ॥ शिशुपाल भी है नवयुवक अभिमान में आया । न्याय अन्याय कुछ नहीं समझ कर सदा मनभाया हो ॥ भो० ॥ १० ॥ शिशुपाल जन्मा निमत्य, भविष्य बात सुनाई । इस बालक की मौत मामु सुत हरि के हाथ बताई हो ॥ भो ॥ ११ ॥ शिशुपाल को लेकर माता वसुदेव पे आई । हरि की गोद म रख पक्ष का बाथ सभी बताइ हो ॥भो ॥१२॥ श्रीकृष्ण कहे सुना बुआ मैं इतनी क्षमा करूगा । नियानव अपराध करे तो भी न प्राण हरूगा हो ॥ भा० ॥ १३ ॥ सतुष्ट हाय माता से सुत अपने शहर सिधाई । शिशुपाल हरि से शत्रुता रखता यों मन माई हो ॥ भा० ॥ १४ ॥ मगधाधीश जरा संध का, मारा कंश जमाई । तब स वह भी श्रीकृष्ण से रखता वैर सवाई हो ॥ भा० ॥ १५ ॥ स्वरक्षा काज शिशुपाल करी जरासंध स मीत । मित्र का शत्रु जान रुक्म रहे, हरि से सदा विभीत हो ॥ भा० ॥ १६ ॥ मुँह बिगाड कहे कुवर रुक्म अच्छा वर विचारा । वृद्ध होने से बुद्धि बिगड़ी वैसा हुआ विकारा हो ॥ भा० ॥ १७ ॥ सुन २ निन्दा रुक्म कुवर के, भर गये थे कान । इसीलिये कहा तात पिता स, क्यों खाते हो शान हो ॥ भा० ॥ १८ ॥ क्या कृष्ण ग्वाल का जाया अहीर का झूठा खाया । चोर, नचैया नहीं याग्य वर क्या हुआ राज्यपद पाया हो ॥ भो० ॥ १९ ॥ मन ही मन सोच नृप से अगर हुई हो भूल । मन्त्री स कहना था किन्तु बोये वचन वे शूल हो ॥ भा० ॥ २० ॥ जैसी मूर्खता करी पुत्र ने मुझे न वैसी करना । सब सो पूछ रे कौन बुराई श्रीकृष्ण में उचरना हो ॥ भा० ॥ २१ ॥ जाति रूप और गुणकर हीना, भीरु कपटी चोर । वह वैभव नहीं सम कैसे रुक्मणि स मिलावे जोर हो ॥ भा० ॥ २२ ॥ भीम विचारे कृष्ण विरोधी लोकों ने बनाया भूत । अविनीत मूर्ख पुत्र विम् समझे सो भी करू समझूत हो ॥ भो ॥ २३ ॥ सद्‌गुण और दुर्गुण य दानों प्रत्यक्ष प्राणी में पाव । मुख्य गौण के भेद से ही नर लघुता गुरुता पे जाते हो ॥ भो० ॥ २४ ॥ भ्रम त्याग हिताहित सोचा है गौरव बुद्धि विचार । रुक्म कहे मेरे जीते

जी तो, बने न यह व्यवहार हो ॥ श्रो० ॥ २५। भीषण गृह कलह यह होगा, जो न मिटा मतभेद। मंत्री सोच इम कहै नृप से, रहो शान्त तजो खेद हो ॥ श्रो० ॥ २६ ॥ गुरुता लघुता का वाद छोड़ कर, साधो निज उद्देश्य। रुक्म से ही पूछो कौन वर, रुक्मणि योग्य विशेष्य हो ॥ श्रो० ॥ २७ ॥ भीम कहै हां यह भी ठीक तब, पूछा मंत्री सवाल। रुक्म कहै है वर सर्वोत्तम, चंदेरी शिशुपाल हो ॥ श्रो० ॥ २८ ॥ सब गुण सम्पन्न माने जरासंध, और निन्याणु भूपार। शिखावती मात ने रुक्म की, बात करी स्वीकार हो ॥ श्रो० ॥ २९ ॥ मंत्री सोचे यह तो अनुचित, करी बात महारानी। अब इनको समझाया होगा, लोक हांसी गृह हानि हो ॥ श्रो० ॥ ३० ॥ हित लोलुपता वश पक्ष ले, पतिव्रत धर्म ठुकराया। भीम विचार सागर में डूबा, रुक्म को गर्व भराया हो ॥ श्रो० ॥ ३१ ॥ मंत्री कहै वही होने दो, जो इन दोनों की इच्छा। तान हानि का कारण समय लख, देवें ढील हों पीछा हो ॥ श्रो० ॥ ३२ ॥ परिणाम सोच कहै नृप मंत्री ! इतना अवश्य कहूंगा। नहीं विरोधक नहीं सहमत, मैं इनसे तटस्थ रहूंगा हो ॥श्रो०॥३३॥ रुक्मणि-विवाह का बोझा, कुंवर रानी पर छोर। राजा भीम उठ गये महल में, अन्य जन निज-निज ठौर हो ॥ श्रो० ॥ ३४ ॥ उद्दण्ड रुक्म ने कुकृत्य का, किया न पश्चाताप। भीम सत्य और न्याय भरोस, बैठा तज संताप हो ॥ श्रो० ॥ ३५ ॥ गर्वी रुक्म कहै नवयुग में, अब युवकों की बारी। पुराने विचार काम नहीं आते, सुनियो मान हमारी हो ॥ श्रो० ॥ ३६ ॥ विवाह-भार अपने ऊपर डाला, इसे जल्दी निपटाना। रक्खे महाराज बाधक बनकर, दे अपने को ताना हो ॥ श्रो० ॥ ३७ ॥ किया समर्थन माता ने तब, पण्डित से लग्न विचारा। माघ कृष्ण अष्टमी श्रेष्ठ है, कन्या कुण्डली अनुसारा हो ॥ श्रो० ॥ ३८ ॥ शिशुपाल से विवाह असंभव, दिखते विघ्न कईक। रुक्म कहै मैं समझ गया, अब जाओ तुम्हें है सीक हो ॥ श्रो० ॥ ३९ ॥ चतुर भाट सरसत को बुलाया, वह भी समझा भेद। आशीर्वाद दे खड़ा सामने, फरमाओ क्या उम्मेद हो ? ॥ श्रो० ॥ ४० ॥ टीका ले चंदेरी जाना, भेद न भीम को देना। ज्योतिषियों की ज्योतिष लगे नहीं, सावधान हो रहेना

॥ भा० ॥ ४१ ॥ पिता-मरण से अथवा गुरु आ कृष्ण करे प्रस्ताव । इस कारण युद्ध सामग्री साथ बारात के साथ हो
॥ भा० ॥ ४२ ॥ किसी भेष में कपटी कृष्ण का यहां आना है ठीक । सम्मिलित शक्ति से नाश कर उसका करे निर्भीक हो ॥ भा० ॥ ४३ ॥ जो भी हो देख्या रहेगा है सावधानी का काम । विवाह-तिथि के पहले आप, सुधरे कम तमाम हो ॥ भो० ॥ ४४ ॥ माघ कृष्ण अष्टमी शुभ यह बात ध्यान में रखना । इसी तिथि को विवाह हो जावे ऐसा उपाय शुभ करना हो ॥ भो० ॥ ४५ ॥ पत्र लिखवा कर टीका सामग्री दिया सरसत के हाथ । बिठा रथ में बिदा कर दीना योद्धाओं के साथ हो ॥ भो० ॥ ४६ ॥ आता नगर द्वार पे नकटी, कन्या मिली है रोती । चौंका सरसत शकुनों की प्रकृति विरोधक होती हो ॥ भा० ॥ ४७ ॥ इतने में एक विधवा आई ले सिर पर औंधा घट । स्पष्ट सूचना मिल रही इससे, होगा कार्य उलट हो
॥ भा० ॥ ४८ ॥ वृद्ध पुरुष के आशीर्वाद बिन, नहीं सफलता मिलती । आगे बढ़ना ठीक नहीं, तदबीर न कोई चलती हो
॥ भा० ॥ ४९ ॥ कुछ ही दूर पर मिल छींक तो भी रथ बढ़ाया । चारों ओर फिर देखी कोयरी, तब तो मन मुरझाया हो ॥ भो० ॥ ५० ॥ इतने में ही नाग काट गये, हरिण भी उस पार । सरसत सोचे सूझ हुई अपशकुनों की भरमार हो
॥ भो० ॥ ५१ ॥ कुन्दनपुर को छोड़ूं तो भी, दिखती नहीं कुशलता । अब तो चंदेरी आना होगा, भावी न टाला टलता हो
॥ भो० ॥ ५२ ॥ किया नगर-प्रवेश चंदेरी वहां भी शकुन अनिष्ट । तब तो दिल में किया निश्चय नहीं यह कार्य अभीष्ट हो ॥ भा० ॥ ५३ ॥ कुन्दनपुर के लिए विपत्ति चंदेरी पर सताप । ये सब दोष रुक्म के शिर, मैं तो हूं निष्पाप हो
॥ भा० ॥ ५४ ॥ भर्जी भवाई द्वारपाल संग शिशुपाल के पास । खबर पाया टीका की नरपति, पाया चित्त हुलास हो
॥ भा० ॥ ५५ ॥ राजा भीम की एक ही कन्या है प्रशंसा के योग । ऐसी पत्नि साथ रुक्म का, होगा अटल सहयोग हो
॥ भो० ॥ ५६ ॥ या विधि साथ स्वागत पूर्वक बुलवाय दिया सम्मान । सरसत भी आशीर्वाद दे बैठा उचित स्थान हो

॥ श्रो० ॥ ५७ ॥ कुशल-वार्त्ता करके पूछा, आने को अभिप्राय । तब तो सरसत ने भूपति को. दीना हाल सुनाय हो ॥श्रो०॥
॥ ५८ ॥ भीष्म भूप, सुता रुक्मणि, रूपे रम्भ समानी । वर-निर्णय के काज मिले सब, मन्त्री और राजा रानी हो ॥श्रो०॥
॥५६॥ भीष्म श्रेष्ठ वर कृष्ण बताया, रुक्म काट कर दीना । पिता-पुत्र के पडी तान, ये पक्ष तुम्हारा लीना हो ॥श्रो०॥६०॥
गुप्त पत्र लिख भेजा गुप चुप, मुझको यहा इस बार । टीका भेट सामग्री लीजे, कीजे विवाह स्वीकार हो ॥ श्रो० ॥ ६१ ॥
शिशुपाल पढ़ पत्र यों बोला, भये भीम बुद्धिहीन । कन्या रत्न ग्वाले को देकर, बनते नीचाधीन हो ॥ श्रो० ॥ ६२ ॥ क्षत्रियो
की प्रतिष्ठा का, है मित्र को ध्यान । मैं भी टीका स्वीकार करूं, रखने राजपूती शान हो ॥ श्रो० ॥ ६३ ॥ सरसत सोचे
रक्खा मान या, होगी हानि नहीं जाने । तो भी बोला महाराज रुक्म का, विश्वास था इसी प्रमाने हो ॥ श्रो० ॥ ६४ ॥
माघ कृष्ण अष्टमी श्रेष्ट पर लग्न में विघ्न बतावे । युद्ध सामग्री युक्त बारात ले, जोर शोर से आवे हो ॥ श्रो० ॥ ६५ ॥
शिशुपाल तब राज्य-ज्योतिषी. बुला लग्न शोधाया । ग्रह गोचर देख ज्योतिषी, अपना शीश हिलाया हो ॥ श्रो० ॥ ६६ ॥
स्वामि-भय से या स्वार्थ-वश. जो न कहू अभी साफ । अनिष्ट फल समय धिक्कारे, कैसे हो वह माफ हो ॥ श्रो० ॥ ६७ ॥
हे राजन् ! यह जो कुण्डली, नहीं मेल आपसे खावे । सांच कहू जो शोभा चाहें, टीका पीछा लौटावे हो । श्रो० ॥ ६८ ॥
नेत्र बदल कर बोला राजा, क्या मैं नर साधारण ठाम। केवल प्रथा-पालन को पूछा, नहीं ज्योतिप से काम हो ॥श्रो०॥६६॥
पाप पुण्य ज्योतिप एक बाजू, एक बाजू तलवार । धर जाओ ज्योतिषी हमारा, राजत्व शक्ति आधार हो ॥ श्रो० ॥ ७० ॥ नहीं
योग्यता सभ्यता तुममें, लिख देता हुक्म आखीरी। राज्य-ज्योतिषी पद और, नहीं रहेगी जागीरी हो ॥ श्रो० ॥७१ ॥ अहकारी
भाव का परिचय दीना, नहीं देखा सत्य तथ्य न्याय । सत्य भक्त ज्योतिषी सोचे, कालान्तर फलदाय हो ॥ श्रो० ॥ ७२ ॥ कहै
नरपती सरसत को क्या, क्या करन अधिक विचार। वही तिथि स्वीकार हमें, जो भेजो रुक्म कुवार हो ॥ श्रो० ॥ ७३ ॥

सारी करी राजन् आपने, दुनिया की निराली चाल। दरबारियों को आज्ञा मिलते हुआ उत्सव उड़ गुलाल हो ॥ मो० ॥ ७४ ॥ सरसत का शिशुपाल की थी औलाद, उन स्त्रियों में एक। पति-परायण, स्पष्ट भाषणी, रखती साहस विवेक हो ॥ मो०॥७५ ॥ कृष्ण साथ निर्वैर रहो यों करके मन चाव, बड़ा भौजाई पास। टीका का समाचार देने आ नृप उत्सुक खास हो ॥ मो०॥७६ ॥ भीम-सुता अब बरण नमेगी होगी प्रसन्न भौजाई। यों विचार कर आया देवर कहते मन नहीं माई हो ॥ मा०॥७८ ॥ किस कारण है इतनी खुश हाली कहिये बात विशेष। शत्रु नमाया पाया देवर जी ! आप विजय सन्देश हो ॥ मो०॥७९ ॥ ये बातें साधारण सबहीं विशेष कौन सी और। कुन्दनपुर स आया टीका सो पढ़ो पत्र कर गौर हो ॥ मो० ॥ ८० ॥ पढ़ के पत्र देवर स बोली हसकर के भौजाई। नहीं भीष्म की सम्मति इसमें, साचो मना मनमाई हो ॥ मा० ॥८१॥ बुड्ढा भीम शिथिल-मति करता था कार्य अनिष्ट। दुनियो आपक रुक्म कुंवर को, मैं ही हूं एक इष्ट हा ॥ मो० ॥ ८२ ॥ नहीं स्वीकृति धीनी होगी, अथवा अनेक अपूर। मान कृष्ण अष्टमी का, कीना विवाह मंजूर हो ॥ मो०॥८३ ॥ पंडित ने क्या कहा आपको, उसने ना किया विरोध। उसके भ्रम को कायर मानें हम इस को रक्खें रोष हो ॥ मो०॥८४ ॥ तब भी तुम यह मानो देवर !, पण्डित कहे सो ठीक। टीका वापिस कर दें नहीं तो, होगें फजीत अधीक हो ॥ मा० ॥ ८५ ॥ भीम कृष्ण को चाहते तब फिर क्या न होगा उत्पात। योखा कटा लौटोगे देवर ! वापिस खाली हाथ हा ॥ मा० ॥ ८६ ॥ इसीलिये यह बात विवाह की अब मत आगे बढ़ाओ। वृद्ध जनों की राय न इसमें यों कहे टीका लौटाओ हो ॥मो०॥८७॥ शिशुपाल तब लीज के बोला, क्या ही अच्छा उपाय। बुद्धिमता है वो भी कहा जाता कायर स्वभाव हा ॥ मो० ॥ ८८ ॥ हम तो आपका मान बढ़ावें, तुम करो ऐसी बात। राजवंश में जन्में हैं हम क्षत्रिय वीर विख्यात हो ॥ मा० ॥ ८९ ॥ स्वीकार किया टीका लौटा दें क्या न कटेगी नाक। नीचा मुखना पड़ मित्र को दुनियां तिकासे

वांक हो ॥ श्रो० ॥ ६० ॥ चढ़ा बढ़ी मे रहा मान, देवर क्यों हर्षित होते । उत्साह बढाने के बदले, मान पान भी खोते हो ॥श्रो०॥६१॥ ध्यान मुझे मानापमान का, उसी की रक्षा काज । कहती हू सब चौपट होगा, उसका नहीं इलाज हो ॥श्रो०॥६२॥ छप्पन कोटि यादव का स्वामी, कृष्ण तुम्हारा भाई । नहीं है मौका भिडन्तरी का, कहू घर मे समझाई हो ॥ श्रो० ॥ ६३ ॥ नहीं बात यह मानू तुम्हारी, मुझे न कृष्ण का भय । शत्रु नाश कर घर आऊगा, ले रुक्मणि सहित विजय हो ॥ श्रो० ॥ ६४ ॥ जय पराजय की खबर है किसको, निष्कारण नर घमसान । चाहे टीका मत लौटावो, एक वात लो मान हो ॥ श्रो० ॥ ६५ ॥ ज्योतिषियो का मत सुन कर, मैं करती अनुरोध । विवाह–तिथि यह टाल दीजिये, इसमे न आवे विरोध हो ॥ श्रो० ॥ ६६ ॥ निष्कारण नहीं तिथि लगी यह, लो कारण देऊँ बतलाय । दूजी कन्या से विवाह करेंगे, इसी तिथि को जाय हो ॥श्रो०॥ ६७॥ झूठ वचन नहीं होगा कहती, देके हाथ पै हाथ । तो उस कन्या का नाम बताओ, जो व्याही जाय मुझ साथ हो ॥ श्रो० ॥ ६८ ॥ वह कन्या है कौन दूसरी, अगर बना नहीं काम । तब तो हम झूठे कहला कर होवेंगे बदनाम हो ॥ श्रो० ॥ ६९ ॥ विधिवत् पिता से लघु बहन का, भिजवा देती टीका । यथा समय मे करवा देती, यह विवाह अति नीका हो ॥ श्रो० ॥ १०० ॥ फिर रुक्मणि को व्याह लाइये, इसमें न कोई आपत्ति । शिशुपाल हँस बोला दे रही, स्वार्थवश सम्मत्ति हो ॥ श्रो० ॥ १०१ ॥ कहते छिपें खान कपट की, यही बात हुई सत्य । थी बात यह इष्ट आपको क्यों न स्पष्ट कहा तथ्य हो ॥ श्रो० ॥ १०२ ॥ कुन्दनपुर से लौटे बाद मे, यह भी विवाह कर लेना । अपने स्वभाव का परिचय दीना, तो भी उदार हो कहना हो ॥ श्रो० ॥ १०३ ॥ धैर्य धरो मत घबराओ, करना सत्य कथन । कुन्दनपुर से लौटते लाऊँ, विवाह आपकी बहन हो ॥ श्रो० ॥ १०४ ॥ हे देवर ! यह भ्रम तुम्हारा, एक और भी कहती । विश्वस्त सूत्र से पता लगा, रुक्मणि भी तुम्हें नहीं चहती हो ॥ श्रो० ॥ १०५ ॥ तो भी वीरता का तुम, क्यों यह बजाते बुगूल । मौका आया भग जाओगे, समझाती मैं अनुकूल हो ॥ श्रो० ॥ १०६ ॥ हजारों

त्रियों का सुहाग ले बनो न पाप के भागी। तिथि टल जावे व्याह वहन की कही सुना सौभागी हो ॥ मो० ॥ १०७ ॥ शिशु-
पाल अति रुष्ट हो बोला, हो कर उत्तम मेरा। नहीं लज्जा आती बार बार, करती शत्रु-प्रशंसा हो ॥ मो० ॥ १०८ ॥ नहीं
विजय करी कृष्ण कहीं पर उसका भय दिखलाती। क्षण में सब यादवों को बांधू, क्यों मावज ! बड़बड़ाती हो ॥ मो० ॥
॥ १०९ ॥ उचित बात रुचि न देवर !, मार भाऊँगी आगे। मैं नहीं सहमत इसमें कह दूं जो नहिं शिक्षा लाग हो ॥ मो० ॥
॥ ११० ॥ नहीं सहमत नहीं सही यों कह के चला शिशुपाल। मावज सोचे देवर की भामी, दीपक पतंग मिसाल हो ॥ मो० ॥
॥ १११ ॥ प्रेम मार्ग बहुत कठिन है, है प्राणों पर बाजी। निस्वार्थ प्रेम से ईश्वर शुद्ध प्रेम से प्रेमी राजी हो ॥ मो० ॥ ११२ ॥
रुक्मणि-हृदय में अनन्य प्रेम था कृष्ण के प्रति सम्बन्ध। पिता मुख प्रशंसा सुन, उपजा पुष्प में गंध हो ॥ मो० ॥ ११३ ॥
पिता-प्रस्ताव की अवहेलना कीनी भाई उद्दण्ड। कल्प वृक्ष को काट के यह तो सींचना चाहे अरंड हो ॥ मो० ॥ ११४ ॥
मेरा मन जाने बिना, भाई कैसे भाग बढ़ेगा। या मन-चाहत पुरुष साथ चुपचाप ही जाना पड़ेगा हो ॥ मो० ॥ ११५ ॥
करना कैसे प्रतिकार जो आवे ऐसा मौका। अथवा साथी बनने वाला, कैसे लाय यह धोका हो ॥ मो० ॥ ११६ ॥
अगर यह भी करे उपेक्षा समझो है पशु-जीवन। इन बातों को सोचती रहती प्रति दिवस रुक्मणि हो ॥ मो० ॥ ११७ ॥
यह खबर भी मिली न इसको, मेरे विवाह का खास। भेज दिया गया है टीका, शिशुपाल के पास हो ॥ मो० ॥ ११८ ॥
बने न काम मालूम होने पर तो सब करेंगे हांसी। साधा रुक्म न काम बने स, देऊँगा फांसी हो ॥ मो० ॥ ११९ ॥
चंदेरी से विदागिरी ले आया सरसत भाट। रुक्मकुमार को दीनी बधाई भेटी चित्त की उचाट हो ॥ मो० ॥ १२० ॥
पुरस्कार देकर सरसत को, भेज दिया है कुमर। फिर मंत्री को दिया हुक्म खूब सजाओ नगर हो ॥ मो० ॥ १२१ ॥
खान पान स्थान आदि का करो शुद्ध प्रबन्ध। युद्ध सामग्री और सब योद्धा यहां पे रखें सम्बन्ध हो ॥ मो० ॥ १२२ ॥

आज्ञा पाकर के मंत्री ने, कीनी सभी तैयारी। शिशुपाल से विवाह रुक्मणि का, मिति करी वह जहारी हो ॥ श्रो० ॥ १२३ ॥
कोई अच्छा कोई बुरा बतावे, दुनिया न किसी के हाथ। शिव-पार्वती भी हार गये फिर औरो की क्या बात हो ॥श्रो०॥१२४॥
सखियां सुन रुक्मणि पै आई, दीनी हर्ष बधाई। और कहा हम से बिछडोगी, याद करोगी नाई हो ॥ श्रो० ॥ १२५ ॥
क्यों निष्कारण बात बनाओ, तुम्हे छोड़ कहा जाऊँ। प्यारी सखियो ! तुम्हे भूल के, और कौन को चहाऊँ हो ॥श्रो०॥१२६॥
सारे शहर में धूम विवाह की, तुम्हें पता कछु नाई। जान बूझ कर इतनी भोली, कैसे बन गई बाई हो ॥ श्रो० ॥ १२७ ॥
मुझको कुछ भी नहीं मालूम है, सत्य कहू तुम ताई। इतनी बात भी मैंने तो यह तुमसे ही सुन पाई हो ॥ श्रो० ॥ १२८ ॥
विवाह आपका होगा यह तो शिशुपाल सग नीका। माघ कृष्ण अष्टमी लग्न, चढ़ा दिया है टीका हो । श्रो० ॥ १२९ ॥
कुछ दिन बाद आप बनोगी, चदेरी पटरानी। सहचारिणी क्यो याद आयेगी, जब कि मिले सहचारी हो ॥ श्रो० ॥ १३० ॥
जग का व्यवहार सुता ससुराल बीच मे जावे। लता-वृक्षवत पत्नि पति सग, रहने से शोभा पावे हो ॥ श्रो० ॥ '३' ॥
ऐ सखियों ! हैरान हुई मैं, जब से सुनी यह बात। जिसकी दिल मे जगह नहीं, क्या बने उसी का साथ हो ॥श्रो०॥ ३२॥
मेरी इच्छा को बिन जाने, यह क्या कीनी भ्रात। कन्या-जीवन क्या है नीचा, जैसे ढोर की जात हो ॥ श्रो० ॥ १३३ ॥ सब
सखियो को दूर हटाकर, रुक्मणि करे विचार। पडी भवर मे नौका मेरी, कौन लगावे पार हो ॥ श्रो० ॥ १३४ ॥ पिता श्री वर
कृष्ण बताया, भ्रात बात नही मानी। माता भी हुई सहमत सुत के, करने को मनमानी हो ॥ श्रो० ॥ १३५ ! मन की बात
जाने बिना ही, करी स्वीकार सगाई। कैसा किया अन्याय मेरे संग, कहूं कौन से जाई हो ॥ श्रो० १३६ ॥ यों विचार-रूप
सागर में, रुक्मणि गोता लगावे। अपने विषय मे कोई बात का, नहीं निश्चय कर पावे हो ॥ श्रो० ॥ १३७ ॥ इतने नारद
ऋषि आय दिया कृष्ण का प्रेम जगाई। योग मिला यह कैसे सो सब, सुनलो कान लगाई हो ॥ श्रो० ॥ १३८ ॥ चन्द्र कला

ज्यों हरिवंश की कीर्ति चहुं दिशि छाई। करे राज्य श्री कृष्ण भाई से, जिनकी अधिक पुण्याई हो ॥ भा० १३९ ॥ नेमिनाथ भगवान खेलते बालकपन के मांई। दिन दिन मोटे होते हैं लाड करे भौजाई हो ॥ भा० ॥ १४० ॥ छोटे मोटे आस पास के, राजा जागीरदार। हीर के सब ही बन उपासक मानों ताबेदार हो ॥ भा० ॥ १४१ ॥ जग में गुण की पूजा होवे, गुण से हो विख्यात। समुद्र विजय आदि सब मानें, गुरु से हरिकी बात हो ॥ भा० ॥ १४२ ॥ रवि से तेज शशि से शीतल, धवलाचल से धीर। इन्द्र समान प्रमुता उनकी, सागर सम गंभीर हो ॥ भो० ॥ १४३ ॥ दाता दिल दरियाव कहाय, दान बात नहीं दय। मार अरि को पीठ, नखरा याचक को नहिं कय हो ॥ भो० ॥ १४४ ॥ गुण के आगर हैं पुरुषोत्तम, महिमा अपरम्पार। सत भामा पटरानी जिनकी दयावान् दातार हो ॥ भा० ॥ १४५ ॥ चन्द्रमुखी चपला सी चंचल, विद्युत् सा तन सोहे। मानों विधि न गढ़ी हाथ से, परियां लज्जित होवे हो ॥ भो० ॥ १४६ ॥ एक दिन सभा-भवन में बैठे, कृष्ण मोद के माहं। समुद्रविजय राजा सब बैठे उसी समय में आई हो ॥ भा० ॥ १४७ ॥ नभ-मंडल से नीचे आता अग्नि-पुंज दिखाया। मालूम हुआ पास आने से नारद ऋषि जी आया हो ॥ भो० ॥ १४८ ॥ पांव लगा नारद ऋषि के, जब सारा भ्रम मिटाया। कुशल-क्षेम पूछा आपस में, पूर्ण प्रेम जनाया हो। भा० ॥ १४९ ॥ सुना रूप अद्भुत भामा का, उसे देखना चाहू। पूछ नारद भी कृष्ण से मैं रणवास सिधाऊँ हो ॥ भो० ॥ १५० ॥ कृष्ण कहे ऋषि-चरण पड़े जहां, धन्य हो वह स्थान। आज्ञा पाकर चले महल में, अति आनन्द मन मान हो ॥ भा० ॥ १५१ ॥ ऋषि ने ताका भामा रानी, चरण पकड़ा आय। पर विधि का मंजूर नहीं वह रचती और उपाय हो ॥ भा० ॥ १५२ ॥ उसी समय भामा रानी ने तन शृंगार सजाया। दर्पण में मुख देख रही है, मुख में पान दबाया हो ॥ भो० ॥ १५३ ॥ ऐसर सुन्दर छवि तन की फूली नहीं समावे। कैसा मेरा रूप हृदय बहुत हुलसाय हो ॥ भो० ॥ १५४ ॥ नारद का प्रतिबिम्ब पड़ा है पृष्ठ भाग में आई। भंग भभूती जटा शीश पर रानी जी घबराई हो ॥ भा

ये राहू–सम आया कहा से हसी किया अपमान हो ॥ श्रो०
॥ १५५ ॥ भयवश हो भामा बोली, मुख मेरा चन्द्र समान । हरि राणी अभिमान भराणी, कीनी मेरी हांस हो ॥ श्रो० ॥१५७॥
१५६ ॥ नारद भामा की सुन बानी, मन में भये उदास । करता वह करतूत हो ॥ श्रो० ॥ १५८ ॥ विन
मदिरापान कराय कपि को, और लग जाये भूत । विच्छू डक मारदे फिर तो, करता वह करतूत हो ॥ श्रो० ॥ १५९ ॥ नारद चिन्ते
छेड़े ही नारद बाबा, नित उत्पात मचावे । अगर उन्हें कटुक कहे, तो कडवे ही फल पावे हो ॥ श्रो० ॥१६०॥ विन छेड़े अनर्थ कर
नाहक आया, भामा महल मझार । उस घर भूल कभी नहीं जाना, जहा नहीं सत्कार हो ॥ श्रो० ॥ १६१ ॥ करूँ अपहरण जो भामा का,
डाले, नारद इन का नाम । करे अकारज छेडे पै ये, सोच करो सब काम हो ॥ श्रो० ॥ १६२ ॥ फिर नहीं माने बात कदापि मेरी कृष्ण
नारायण दुख पावे । लांछन दूं तो सत्वती, धीज करी बच जावे हो ॥ श्रो० ॥ १६३ ॥ दुश्मन मती बनाना कोई शिक्षा मेरी मान ।
मुरारी । नारी को दुख अति सौक का, चिन्ते चित्त मझारी हो ॥श्रो ॥ १६३ ॥ दुश्मन मती बनाना कोई शिक्षा मेरी मान ।
दुश्मन दॉव कभी न चूके निश्चय लो ये जान हो ॥ श्रो० ॥१६४ ॥ सब ही से समभाव रक्खो तुम मत करना तकरार । जल
में नैया देखो होती, किस तरियॉ से पार हो ॥ श्रो० ॥ १६५ ॥ मुझसी नार नहीं जग अन्दर, यो भामा इठलानी । अधिक एक
से एक विश्व में, ऐसी न उसने जानी हो ॥ श्रो० ॥ १६६ ॥ निश्चय करा नारद, नारी को, सौक दुख अतिभारी । खटके दिल
में रात दिवस, ये जाने आलम सारी हो ॥ श्रो० ॥ १६७ ॥ शूली अनल घाव शस्त्र का, अल्प काल दुख होवे । यावज्जीवन
सौक दुख, जरा न दूर होवे हो । श्रो० ॥ १६८ ॥ शोक नाम ही बुरा जगत मे, नहिं भोगन दे सुख । मरे वाद भी होय भूतनी,
निशि दिन देवे दुख हो ॥ श्रो० ॥ १६९ ॥ बझा रहूँ निधन पति पाऊँ, पक्षिणी चाहे बन जाऊँ । विधि से नारी करे प्रार्थना, सौक
कभी न चहाऊँ हो ॥ श्रो० ॥ १७० ॥ सौकन लाना भामा ऊपर, नारद निश्चय ठाया । चले ढूढने सुन्दर कन्या, मन मे मोद
समाया हो ॥ श्रो० ॥ १७१ वैताढय गिरि की दोनों श्रेणी, जा ढूँढी उस बार । कन्या नजर एक नहीं आई, भामा के उणिहार

हा ॥ मो० ॥ १७२ ॥ उत्तर दक्षिण भरत खण्ड के, चक्कर कई लगाया । मामा के अनुरूप तुल्य भी, रूप नजर नहीं आया हो ॥ मो० ॥ १७३ ॥ हे भोलम्मा कर्म-बन्ध का य क्या तूने कीना । रिश्वत लेकर रूप सभी, मामाजी को द दीना हो ॥ मो० ॥ १७४ ॥ सूझे हृदय के हाले कैसे अब मैं कहाँ पर जाऊँ । कार्य सिद्ध हो पुरुषार्थ से, फिर ढूँढत कुछ पाऊँ हा ॥ मो० ॥ १७५ ॥ फिरत फिरते कुन्दनपुर, पनघट पे ध्यान लगाया । देखी सुन्दर नारी सोचत बने काम मन चहाया हो ॥ मो० ॥ १७६ ॥ भीष्म के दरबार बीच में, आये नारद खास । ऊँचे स्थान बिठाय ऋषि को, पाँव लगे भूपाल हो ॥ मो० ॥ १७७ ॥ कुँवर रुक्मिया आया वहाँ पर रूप बड़ा अभिराम । नारद निरख हृदय में सोचे, निश्चय होगा काम हो ॥ मो० ॥ १७८ ॥ कुँवर कौन यह नारद पूछे, बोला भीष्म राय । ऋषि-प्रताप स प्राणप्रिय-सुत मरा ही कहलाय हो ॥ मो० ॥ १७९ ॥ ऋषि रुक्मिया से यूँ पूछ है बहन मात की जाई । ब्याही या कुँवारी है वह, दे मुझको बतलाई हो ॥ मो० ॥ १८० ॥ हे स्वामी एक बहन कुँवर के, अब तक अक्षत कुमारी । शिशुपाल से करी सगाई, ब्याहन की है तय्यारी हो ॥ मो० ॥ १८१ ॥ लगी चट पटा हृदय ऋषि के, अन्त पुर में आया । सुना कहनसे रुक्मणी ने, ऋषि को शीश नमाया हो ॥ मो० ॥ ॥ १८२ ॥ शीश हाथ धर नारद बोले होना हरि पटराणी । भाग्यवान् गुणवान् शिरोमणि, सत्य समझ सुखवाणी हो ॥ मा० ॥ ॥ १८३ ॥ नारद-मुख सुन कृष्ण वार्ता, रुक्मणि मन हर्षाया । ज्यों घन गर्जन श्रवण मोर, करता है नृत्य सवाया हा ॥ मा० ॥ १८४ ॥ चकित रुक्मणि होकर पूछे ऋषि ने क्या फरमाई । कौन कृष्ण है कौन पुरी का, कौन देश के माँई हा ॥ मा० ॥ १८५ ॥ कौन मात पिता अरु बान्धव कौन वंश परिवार । सुना कब हम उन्हें न जाने, कहो सभी विस्तार हो ॥ मा० ॥ १८६ ॥ नारद बोले भारत दरो, द्वारामति स्वर्ग समान । करे राज्य वहाँ कृष्ण नरेश्वर सेवे सुरनर आन हो ॥ मा० ॥ १८७ ॥ रूप अनूपम है अति सुन्दर, काम रूप अनुहार । दश दशा रहें हरिवंश में, यह यादव परिवार हा ॥ मा० ॥ १८८ ॥ गुण-सम्पन्ना मात देवकी, वसुदेव

है तात। महावली वलवन्त कहावे, वलदाऊजी भ्रात हो ॥ श्रो० ॥ १८६ ॥ सुभद्रा सी बहन शोभती, अर्जुन सम भर्त्तार। नेमनाथ वाल पने गिरिराज उठाया, दई पोतना मार हो ॥ श्रो० ॥ १६० ॥ जमुना-तट जा काली द्रह में, नाथा काला नाग। नेमनाथ भगवान् भ्रात हैं, चढता जिनका भाग हो ॥ श्रो० १६१ ॥ एक जीभ से कृष्णचन्द्र के, गुण नहीं वरणे जाय। सहस्र जीभ से करे वडाई, तो भी अत नहीं आय हो ॥ श्रो० ॥ १६२ ॥ कृष्ण-कीर्त्ति नारद-मुखसे, सुनी परम सुख पाई। भुवा कहे ऐसा ही भापा, ऐवन्ता ऋपि राई हो ॥ श्रो० १६३ ॥ साधु-शिरोमणि, गुण के सागर, अतिमुक्त मुनिराज। वाक्य इन्हीं के कभी न लौटे, नारद भी कही आज हो ॥ श्रो० १६३ ॥ नारदजी और मुनिराज हैं, सच्चे हर प्रकार। शिशुपाल हित मुझको मागी, इमका सोच अपार हो ॥ श्रो० ॥ १६५ ॥ भ्राता ने नृप शिशुपाल से, मेरी करी सगाई। पर तात की राय नहीं, इस कारण गिनती नाई हो ॥ श्रो० १६६ ॥ भुवा कहे मत सोच करे तू, रख पूरा विश्वास। श्री कृष्ण की बना कामनी, पूरूगी सब आश हो। श्रो० १६७ ॥ चिंतित चिन्तामणि मिले तो, कौन गृहे पापाण। कल्पतरू से रहें प्राण और, आक से हाण हो ॥श्रो०१६८॥ इतना सुन के मन, वचन, क्रम से हुआ हृदय मे प्रेम। व्याहू तो श्रीकृष्ण मुरारी, अन्य पुरुप का नेम हो ॥ श्रो० १६६ ॥ कौन गृहे गज को तज, रापभ, कामधेनु तज छारी। खारी जल को कौन पिये तजकर अमृत सा वारी हो ॥ श्रो० २०० ॥ सिह केशरी श्री कृष्ण हैं, शिशुपाल सियार। कनक-कुम्भ सी बाला लख ऋपि, आये हैं शिवागार हो ॥ श्रो० २०१ ॥ बना चित्र रुक्मणि का नारद, नख-शिख तक अभिराम। हर्पित हो झोली मे रक्खा, अब हो सारा काम हो ॥ श्रो० २०२ ॥ आये बाबा पुरी द्वारिका, हरि किया सम्मान। करके नेत्र-इशारा हरि को ले गये एकन्त स्थान हो ॥ श्रो० ॥ २०३ ॥ पूछा कुशल-क्षेम आपस में, कुवरी-चित्र निकाला। हरि का आकर्पण करने को, फिर झोली में डाला हो ॥श्रो० २०४॥ बार २ यों देखे, रक्खे, हरि को नहीं वतावे। झपट लिया नारद से हरि ने, देख अचम्भा पावे हो ॥ श्रो० २०५ ॥ हरि पूछे यू नारद से ये किस, नारि

हो ॥ मो० ॥ १७२ ॥ उत्तर दक्षिण भरत खण्ड के, चक्कर कइ लगाया। मामा के अनुरूप पुरुष भी, रूप नजर नहीं आया हो ॥ मो०॥ १७३ ॥ ये भामा-कृष्ण को ये क्या तूल कीना। रिश्वत लेकर रूप सभी, मामाजी को द दीना हो ॥ मो० ॥ ॥ १७४ ॥ मूक हृदय के ताले कैसे, अब मैं कहाँ पर जाऊँ। कार्य सिद्ध हो पुरुषार्थ से, फिर ढूँढत कुछ पाऊँ हो ॥ मा० ॥१७५॥ फिरते फिरते कुण्डनपुर, पनघट पे ध्यान लगाया। इसी सुन्दर नारी सोचत बने काम मन भाया हो ॥ मो० ॥ १७६ ॥ भीष्म के दरबार बीच में, आये नारद आज। ऊँचे स्थान बिठाये ऋषि को पाँव लगे भूपाल हो ॥ मा० ॥ १७७ ॥ कुँवर रुक्मिया आया वहाँ पर रूप बना अभिराम। नारद निरख हृदय में सोचे, निश्चय होगा काम हो ॥ मो० ॥ १७८ ॥ कुँवर कौन यह नारद पूछे, बोला भीष्म राय। ऋषि-प्रताप स प्राणप्रिय-सुत मेरा ही कहलाय हो ॥ मा० ॥ १७९ ॥ ऋषि रुक्मिया से मैं पूछूं, है बहन मात की जाई। ब्याही या कुँवारी है यह, द मुझको बतलाई हो ॥ मा० ॥ १८० ॥ हे स्वामी एक बहन कुँवर के, अब तक अक्षत कुँवारी। शिशुपाल से करी सगाई, ब्याहन की है तय्यारी हो ॥ मो० ॥ १८१ ॥ लगी चट पटा हृदय ऋषि के, अन्तःपुर में आया। सुना कहनसे रुक्मणी ने ऋषि को शीश नमाया हो ॥ मो० ॥ ॥ १८२ ॥ शीश हाथ धर नारद बोले, होना हरि पटरानी। भाग्यवान् गुणवान् शिरोमणि, सत्य समझ मुझवाणी हो ॥ मा० ॥ ॥ १८३ ॥ नारद-मुख सुन कृष्ण वार्ता, रुक्मणि मन हर्षाया। ज्यों मन गर्जन श्रवण मोर, करता है नृत्य सवाया हा ॥ मा० ॥ १८४ ॥ चकित रुक्मणि होकर पूछे ऋषि ने क्या फरमाई। कौन कृष्ण है कौन पुरी का कौन देश के माँई हा ॥ मा० ॥ १८५ ॥ कौन मात पिता अरु बान्धव कौन बेश परिवार। सुना कह हम उन्हें न जाने कहा सभी विस्तार हो ॥ मो० ॥ १८६ ॥ नारद बोले सारट देरो, द्वारामति स्वर्ग समान। करे राज्य जहाँ कृष्ण नरेश्वर सबे सुरनर मान हो ॥मा०॥१८७॥ रूप अनूपम है अति सुन्दर, काम रूप अनुहार। दश दशा रहें हरिवश में, यह यादव परिवार हा ॥ मा ॥ १८८ ॥ गुण-सम्पन्ना मात देवकी वसुदेव

है तात। महाबली बलवन्त कहावे, बलदाऊजी भ्रात हो ॥ श्रो० ॥ १८६ ॥ सुभद्रा सी बहन शोभती, अर्जुन सम भर्त्तार। बाल पने गिरिराज उठाया, दई पोतना मार हो ॥ श्रो० ॥ १६० ॥ जमुना-तट जा काली द्रह मे, नाथा काला नाग। नेमनाथ भगवान् भ्रात हैं, चढ़ता जिनका भाग हो ॥ श्रो० १६१ ॥ एक जीभ से कृष्णचन्द्र के, गुण नहीं वरणे जाय। सहस्र जीभ से करे बड़ाई, तौ भी अत नहीं आय हो ॥ श्रो० ॥ १६२ ॥ कृष्ण-कीर्त्ति नारद-मुखसे, सुनी परम सुख पाई। भुवा कहे ऐसा ही भाषा, ऐवन्ता ऋपि राई हो ॥ श्रो० १६३ ॥ साधु-शिरोमणि, गुण के सागर, अतिमुक्त मुनिराज। वाक्य इन्हीं के कभी न लौटे, नारद भी कही आज हो ॥ श्रो० १६३ ॥ नारदजी और मुनिराज हैं, सच्चे हर प्रकार। शिशुपाल हित मुझको मागी, इसका सोच अपार हो ॥ श्रो० ॥ १६५ ॥ भ्राता ने नृप शिशुपाल से, मेरी करी सगाई। पर तात की राय नहीं, इस कारण गिनती नाई हो ॥ श्रो० १६६ ॥ भुवा कहे मत सोच करे तू, रख पूरा विश्वास। श्री कृष्ण की बना कामनी, पूरूगी सब आश हो। श्रो० १६७ ॥ चिंतित चिन्तामणि मिले तो, कौन गृहे पापाण। कल्पतरू से रहें प्राण और, आक से हाण हो ॥श्रो०१६८॥ इतना सुन के मन, बचन, क्रम से हुआ हृदय मे प्रेम। व्याहू तो श्रीकृष्ण मुरारी, अन्य पुरुप का नेम हो ॥ श्रो० १६६ ॥ कौन गृहे गज को तज, राषभ, कामधेनु तज छारी। खारी जल को कौन पिये तजकर अमृत सा वारी हो ॥ श्रो० २०० ॥ सिह केशरी श्री कृष्ण हैं, शिशुपाल सियार। कनक-कुम्भ सी बाला लख ऋपि, आये हैं शिवागार हो ॥ श्रो० २०१ ॥ बना चित्र रुक्मणि का नारद नख-शिख तक अभिराम। हर्पित हो झोली मे रक्खा, अब हो सारा काम हो ॥ श्रो० २०२ ॥ आये बाबा पुरी द्वारिका, हरि किया सम्मान। करके नेत्र-इशारा हरि को ले गये एकन्त स्थान हो ॥ श्रो० ॥ २०३ ॥ पूछा कुशल-क्षेम आपस में, कुवरी-चित्र निकाला। हरि का आकर्पण करने को, फिर झोली मे डाला हो ॥श्रो० २०४॥ बार २ यों देखे, रक्खे, हरि को नहीं बतावे। झपट लिया नारद से हरि ने, देख अचम्भा पावे हो ॥ श्रो० २०५ ॥ हरि पूछे यू नारद से ये किस, नारि

का चित्र। अन्य नारि का रूप न ऐसा सुन्दर दिव्य विचित्र हो ॥ मो० २०६ ॥ स्वय किया निमाण विधि ने मनहर रूप रसाल। नागिन वेणि है शशि वदनी अर्द्ध चन्द्र सा भाल हो ॥ मो० ॥ २०७ ॥ मृगनैनी भौंहें भ्रमरीवत् नासा कीर समान। पिक-बैनी दाडिम-कन दति, अधर प्रवाल पखान हो ॥ मो० ॥ २ ८ ॥ कंठ कम्बु ग्रीवावत् सोहे, बाहु भाँति मृणाल। उदर मीन वापी सम नाभी, कटि केहरि रसाल हो ॥ मो० ॥ २ ९ ॥ कदली जंघा चरण कुम से वर्ण कनक मा सोहे। कर तल जिसके कमल-पत्र से सम रवि सा हाथ हो ॥मो०॥२१०॥ रति किन्नरी या कोई नारी ऐसा रूप नहीं पाया। काम्पित या प्रत्यक्ष नार ये मेरा मन हर्षाया हो॥मो ॥२११॥कुन्दनपुर का भीषम राजा, श्रीमती पटराणी। रुक्मण नाम राज दुलारी मानों है इन्द्राणी हो॥मो ॥२१२॥ब्याही या अनब्याही नारद बाकी अलबत्त कुँवारी। शिशु-पाल संग हुई सगाई ऐसी सुनी मुरारी हो ॥मो०॥२१३॥ योग्य आपके है यह बाला, कहक ऋषि सिधाया। हरिका प्रेम लगा रुक्मण से ब्याहन को चित्त चाहाया हो॥मो० ॥ २१४॥ हरि प्रेम में मग्न हुवे सब भूल प्यास बिसराई। तनमें मनमें और नयनमें केवल वही समाई हो।मो०२१५॥ भेद पाय हस घर पूँ बाले समझ के शिशुपाल। रुक्मण आयग यह सुन क हर्षित हुव गोपाल हो ॥ मो० ॥ २१६ ॥ भवण नाम सुनकर के हर्षित नेत्र निरखना चाह। रुक्मण के सौभाग्य प्रशंसित देख कृष्ण सुभाव हो ॥ मो० ॥ २१७। इसी समय शिशुपाल भूपन सम दिखाया सोय। मन भाता कारज की मित्रों! ईश करे ना कोय हो ॥ मो० ॥ २१८ ॥ अच्छ की अग करे चाहना बुरा न चाहे काय। अच्छा मिले अच्छे क तॉई मन में लना जोय हो ॥ मो० ॥ २१९ ॥ चित्त में चिन्ता कर रुक्मणी कह भूपा स आय चंदरी पति करे तैयारी पता न पावय राय हा॥ मो० ।२२ ॥करी याचना रुक्मण की हरि दीना दूत पठाई। सुन रुक्मैया बात दूत की बोला हँसी उड़ाई हो ॥ मा० ॥ २२१ ॥ कृष्ण ग्वाला हीण-कुलिया विन साचे मन भाई। मरी सहोदरा को याचत शम जरा नहीं आई हो ॥ मा०॥२२२॥ ब्याहूँ रुक्मण शिशुपाल से भाणि कथन से साँई। सुनकर लोग

दूत चला फिर, पुरी द्वारि का जावे हो ॥ श्रो० ॥ २२३। धात्री सुन रुक्मणि मे बोले, एवन्ता मुनिराया। बालपने तेरा वर होना, श्री कृष्ण बतलाया हो ॥ श्रो० ॥ २२४ ॥ हरि का दूत याचना खातिर, आज यहाँ पर आया। तेरे भ्रातने उसे कटुक कह, बुरी तरह ठुकराया हो ॥ श्रो० ॥ २२५ ॥ बात सुनी हस पडी रुक्मणी, माता सोच विचार। भ्रात. गर्जना मुनि वचन नहीं, भूठे होंय लगार हो ॥ श्रो० ॥ २२६ ॥ निश्चय है मेरे दिल अन्दर वर तो कृष्ण मुरार। रत्न चिंतामणि वही जगत में, और न चहु लगार हो ॥ श्रो० ॥ २२७ ॥ भुवा कहे भतीजी अब तू, मत कर सोच विचार। अपना पन जहा है अदूर वह, है गरुड़ असवार हो ॥ श्रो० ॥ २२८ ॥ पत्र लिखो इच्छित कारज का, भेजी सांड असवार। खबर लेय वह शीघ्र ही आवे, लगे न कोई बार हो ॥ श्रो० ॥ २२९ ॥ जब रुक्मणि ने तुरत मगाई, कागज कलम दवात। ग्रही लेखनी लिखने बैठी, याद न आवे बात हो ॥ श्रो०॥ २३० ॥ सिद्ध श्री प्रथम लिखू में, सिद्ध होवन के काज। सकल उपमा आपने सरे, सुनजो यादवराज हो ॥ श्रो० ॥ २३१ ॥ अल्प लिखू आप सब समझो, अर्जी जोड़ी हाथ। प्राणपति प्रण रहे प्रिय का, सुनो द्वारिका-नाथ हो ॥ श्रो० ॥ २३२ ॥ गिरे पत्र पै बूंद नैन से, चिन्ता का नहीं पार। लिखित पत्र दे दिया भुवा को, हुआ दूत तैय्यार हो ॥ श्रो० ॥ २३३ ॥ लेई पत्र मुख समाचार सुन, हुआ साँड असवार। शुभ शकुन ले कुशल-दूत, आयो सोरठ देश मझार हो ॥ श्रो० ॥ २३४ ॥ आया द्वारिका देखी सुन्दर, पहुँचा है दरबार। श्रीकृष्ण को शीश नमा के, किया आप जुहार हो ॥ श्रो० ॥ २३५ ॥ माधव पूछे उसी दूत से, कौन देश से आया। नैन सैन से दीना उत्तर, हरि को भाव जताया हो ॥ श्रो० ॥ २३६ ॥ हरि हलधर अरु दूत यह तीनों, बैठे एकन्त जाय। पत्र खोल रख दिया सामने, पढ़ा कृष्ण चित लाय हो ॥ श्रो० ॥ २३७ ॥ समाचार सब कहे दूतने, सुनिये कृष्ण मुरार। मैं आया कुन्दनपुर से, जहा भीषम भूप उदार हो ॥ श्रो० ॥ २३८ ॥ शिखावती पटराणी-भूप के, जननी कन्या जान। सर्व गुण सम्पन्न रुक्मणि, कुंवरी रत्न समान

हो ॥ मो० ॥ २३६ ॥ शिशुपाल ने करी याचना, देख भाव को माम । इतने में नारद आ पाले, पर वो भी भगवान हो ॥ मो० । ॥ २४ ॥ माघ महीना कृष्ण अष्टमी, लग्न दिया पहिचान । कै तो रक्षक बनें आप या, तज दूगी यह प्रान हो ॥ मो० ॥२४१॥ हुआ सोच श्री कृष्ण चन्द्र को, हुई अटपटी बात । आये मरे शिशुपाल नहीं, आये रुक्मणि घात हो ॥ मो० ॥ २४२ ॥ अपनी माँग कोई ना आय पर दुनिया का न्याय । नारी भी न तजे प्रतिज्ञा करना कौन उपाय हो ॥ मो० ॥ २४३ ॥ आप ही स्वामी अन्तयामी, पर-दुख काटन हार । प्राण बचे रुक्मणि नार के, कीजे यही विचार हो ॥ मो० ॥ २४४ ॥ अब हरि ने हलधर से पूछा क्या करना इस बार । मान जान हलधर ने हरि के उपर दिया उचार हो ॥ मो० ॥ २४५ ॥ अबला की रक्षा करना है पुरुष-धर्म प्रधान । ऐसा सोच दूत से पूछा कहो मिलने का स्थान हो ॥ मो० ॥ २४६ ॥ "ममता" नाम उद्यान बीच में कामदेव का स्थान । है अशोक का वृक्ष वहां पर ऊपर बड़े निशान हो ॥ मो० ॥ २४७ ॥ चतुर शिरोमणि रुक्मणि नाई पूजा का मिलन । मिले आप को उसी स्थान में शुभ पन्ने से भान हों ॥ मो० ॥ २४८ ॥ जो रखेगी वहां आप को, हों प्रीति के साथ । यदि देख आतुरता-वश हो विपरीत बने बनाव हो ॥ मो० ॥ २४९ ॥ मिलवाना कर्तव्य मेरा, है करना प्रभु के हाथ । विदा किया र शाम दूत को शीघ्र ही यादवनाथ हो ॥ मो० ॥ २५० ॥ कही बात रुक्मणि सुधा से तुरत दूत न भान । हर्ष उसी का यही जानसी या सामे भगवान हो ॥ मो० ॥ २५१ ॥ हर्ष-सहित हरि हलधर दानों रथ जोता असवार । शस्त्र संभाल कर हो गये सजधज के तैयार हो ॥ मो० ॥ २५२ ॥ मामा मन से रैन बीच में रथ को दिया चलाय । शीघ्र आय कुन्दनपुर ठहर उसी बागमें आय हो ॥मो०॥२५३॥ रथ को छोड़ भरत को सौंप देखे रुक्मणि की राह । फूले नहीं समाये हरिको मिलने का उत्साह हो ॥ मो० ॥ २५४ ॥ हाहा-हरि रुक्मणि का मन मिला अब नारद उस बार । शिशुपाल के पास जा करे काम मकार ॥२५५॥ नारद हर इक नहीं बन सकता, नारद रंज न पाय । भी बिगाड़े तुरंत आप बिगड़ी का शीघ्र बनाय हो ॥ मो० ॥ २५६ ।

चन्दरां-पात स जा पूछा, व्याह सुनी मैं आया। घर घर रग वधावा हो रहे, तुमको हर्ष सवाया हो ॥ ओ० ॥ २५७ ॥ हर्षित हो शिशुपाल कहे, यो स्वामी तुम प्रताप। शादी हो मेरी मन चाही, भले पधारे आप हो ॥ ओ० ॥ २५८ ॥ कौन शहर है सुता कौन की, तात मात और भ्रात। लग्न हैं कब के नाम क्या उसका, कहो मुझे सब वात हो ॥ ओ० ॥ २५६ ॥ कुन्दनपुर भीपम राजा की, रुक्मणि राज-दुलारी भ्रात रुक्मैया कुँवर दीपता, शेखावती सुखकारी हो ॥ ओ० ॥ २६० ॥ माघ महीना शुक्ल अष्टमी, दिन का लग्न दिखाया। ऋषि कहे यूँ विघ्न बहुत सा, खोटा साफ बताया हो ॥ ओ० ॥ २६१ ॥ हम साधु निस्पृही हमे क्या, करना चिन्ता शेप। भक्त जान के दिया जिताई, हुशियारी रहे विशेष हो ॥ ओ० ॥ २६२ ॥ लश्कर लेना खूब साथ, मत रहना गफलत मॉई। रग में भग करी नारद जी गये आप सिधाई हो ॥ ओ० ॥ २६३ ॥ महिलाये कहे शिशुपाल से. मती परणवा जाओ। ऋषि-वात पै ध्यान करो, नहीं तो होगा पछताओ हो ॥ ओ० ॥ ३६४ ॥ नहीं मानूँ मैं बात किसी की, निश्चय व्याह के लाऊँ। नाहीं करने वालो के मुँह पर, मैं शकर बँधाऊँ हो ॥ ओ० ॥ २६५ ॥ शिशुपाल के थे निन्यानवे, सबही जागीरदार। सेना लेके उन्हे बुलाये, आये हो हुशियार हो ॥ ओ० ॥ २६६ ॥ ना ना भॉति के शस्त्र लीने, तोपे भी बहु लार। जुजाला फिर सगमे उनके, शूरवीर सिरदार हो ॥ ओ० २६७ ॥ पच अक्षोहिणी प्रमाण इकट्ठा, जुडा है लश्कर आन। हय गय रथ पैदल सनूर, देख मिटे अरमान हो ॥ ओ० ॥ २६८ ॥ सकल सैन्य विकट को सजके, उमराव मुसदी लार । अति आड-म्वर से चली सवारी, बजा के झनकार हो ॥ ओ० ॥ २६६ ॥

दोहा—आटो कूटो घी घडो, चौथी विधवा नार। खर डावा आड़ी फिरे, ये अपशकुन विचार ॥ २७० ॥

शिशुपाल ने अपशकुन पर, नेक ध्यान नहीं दीना। कुन्दनपुर ढिग आई सवारी, रुक्मिये वधाई लीना हो ॥ ओ०॥२७१॥ कुन्दनपुर को बाँट लिया है, तारा ज्यो सुमेर । अहि लिपटे चन्दन तरु को, त्यो शिविर लगा चौंफर हो ॥ ओ० ॥ २७२ ॥

हो ॥ आ० ॥ २३९ ॥ शिशुपाल ने करी याचना, देह भ्रात का मान । इतने में नारद आ बोले, वर तो भी भगवान हो ॥ भो । ॥ २४ ॥ माघ महीना कृष्ण अष्टमी लग्न दिया पहिचान । के तो रक्षक बनें आप या, तज दूंगी यह प्रान हो ॥ भो० ॥२४१॥ बुआ सोच भी कृष्ण चन्द्र को, हुइ झटपटी बात । आये मरे शिशुपाल नहीं, आये रुक्मणि साथ हो ॥ भो० ॥ २४२ ॥ अपनी माँग कोइ ना त्याग यह दुनिया का न्याय । नारी भी न तजे मतिम्रा करना कौन उपाय हो ॥ भो० ॥ २४३ ॥ आप ही स्वामी अन्तर्यामी पर-दुःख काटण हार । आया बचें रुक्मणि बाइ के, कीजे यही विचार हो ॥ भो० ॥ २४४ ॥ जब हरि ने हलधर स पूछा, क्या करना इस बार । माव जान हलधर ने हरि क उत्तर दिया उदार हो ॥ भो ॥ २४५ ॥ अबला की रक्षा करना है पुरुष-धर्म प्रधान । ऐसा सोच दूत स पूछा, कहो मिलने का स्थान हो ॥ भो० ॥ २४६ ॥ "प्रमदा" नाम उद्यान बीच में कामदेव का स्थान । है अशोक का वृक्ष वहां पर ऊपर उड़े निशान हो ॥ आ० ॥ २४७ ॥ चतुर शिरोमणि रुक्मणि बाई पूजा का मिष्ठान । मिल आप को उसी स्थान में गुप्त पने से आन हो ॥ भो० ॥ २४८ ॥ जो रखेगी वहां आप को, हो प्रीति क साथ । नहिं देंगे आतुरता-वश हो विपरीत बने बनाव हो ॥ भो० ॥ २४९ ॥ जितलाना कर्तव्य मेरा, है करना प्रभु के हाथ । विदा किया द दान दूत को शीघ्र ही यादवनाथ हो ॥ आ० ॥ २५० ॥ कही बात रुक्मणि बुआ से, दुरत दूत न आन । हर्ष उसी का यहाँ आमली या जाने भगवान हो ॥ भो० ॥ २५१ ॥ हर्ष-सहित हरि हलधर दानों रथ जोता उसवार । शस्त्र-सन्नद्ध कर हो गय सजधज क तैयार हो ॥ भो० ॥ २५२ ॥ मामा भय से रैन बीच में, रथ को दिया चलाय । शीघ्र चाल कुन्दनपुर ठहर उसी बागमें आय हो ॥आ०॥२५३॥ रथ को छोड़ अश्व को बांध देखे रुक्मणी की राह । फूले नहीं समाय हरिका मिलन का उत्साह हो ॥ भा० ॥ २५४ ॥ दोहा-हरि रुक्मणि का मन मिला अब नारद उस वार । शिशुपाल क पास आ करे अजब प्रकार ।२५५। नारद हर इक नहीं वन सकता नारद रंज न पाय । बनी बिगाड़े तुरंत आप बिगड़ा का शीघ्र बनाय हो ॥ भा० ॥ ५६॥

मॉग चार बर चतुराई से, रख विश्वास हो ॥ श्रो० ॥ २६० ॥ पहला वर सुहाग अटल रहे, दूजा पति का मान। तीजा सौकण दुखन होवे, चौथा सुत-प्रधान हो ॥ श्रो० ॥ २८१ ॥ स्त्री-वल्लभ ये चारो वर, मॉग देव के पास। एकाकी सकोच न होवे, करे नम्र अरदास हो ॥श्रो० २८२॥ शीघ्र जाव उपवन मे बेटी, पूरो मन की आस। करो सेव कर जोड स्वामी की, वन चरणे की दास हो ॥ श्रो० ॥ २८३ ॥ किये सेव स्वामी से फल पावे, बिन सेवे नहीं पाय। करो सेव स्वामी की चित्त से, हृदय बीच बसाय हो ॥ श्रो० ॥ २८४ ॥ ऐसा सुन के गई बाग में, भययुत् हो मॉय। युथ-भृष्ट हरिणी ज्यों देखे, इत उत निगाह लगाय हो ॥ श्रो० ॥ २८५ ॥ सकेत-स्थान पर आके देखा, तरु-आड के माईं। प्रभु को निरखो हृदय बीच में, रुक्मणि महासुख पाई हो ॥ श्रो० ॥ २८६ । वचन उच्चारा रुक्मणि ने, हो अन्तर्यामी आप। शीघ्र आय कर इस अवला की, हर लीजे मन ताप हो ॥ श्रो० ॥ २८७ ॥ आप हरि हलधर जब प्रकटे, रुक्मणि लज्जा पाई । ऊचा कद और श्याम वर्ण लख, हृदय बीच हर्पाई हो ॥ श्रो० ॥ २८८ ॥ श्याम आयकर बाह ग्रहणकर बैठा ली रथ माय। रथ-सवार हुवे दोनो वन्धु, नारद बोला आय हो ॥ श्रो० ॥ २८९ ॥ केसरी सिंह को क्या परवाह,चहे गाडर होय हजार। बिना जिताये नहीं लेजाना, वीरो का आचार हो ॥ श्रो० ॥ ३०० ॥ आयो जणावा काज हरी ने, करी शख-ललकार। चला रथ-झनकार सुनी सब, वोले हो हुशियार हो ॥ ३०१ ॥ आये फाटक बाहर हुवे सब ही, चकित नर नार। भुवा निरख रुक्मणि दूल्हा को, हर्षित हुई अपार हो ॥ श्रो० ॥ ३०२ ॥ इधर सवारों ने देखत ही, बुगल करी उस वार । दौडो दौडो जल्दी दौड़ो, धोखा है इस वार हो ॥ श्रो० ॥ ३०३ ॥ तब आपा जितलाने को हरि, करी शंख ललकार। द्वारकाधीश हम राम कृष्ण, ले जावें रुक्मणि नार हो ॥ श्रो० ॥ ३०४ ॥ शिशुपाल भीषम रुक्मिया, सबको साफ जतावें। माग तुम्हारी है यह रुक्मणि साथ हमारे आवे हो ॥ श्रो० ॥ ३०५ ॥ सुनकर कोपा शिशुपाल नृप, ज्यों अग्नि घृत पान। सैन्य सबल सज योद्धाओं की, ले लेकर कृपान हो ॥श्रो०॥३ ६॥

माता कहे महलों के आगे खडी । आप पाराव । चन्देरीपति पनको आमा मानों इन्द्र साक्षात हो ॥ मो० ॥ २७३ ॥ मतुघर में कुछ नहीं बोधी नहीं देखने आई । तब तो माता रुक्मणि तांइ भाँति भाँति समझाई हो ॥ मो० ॥ २७४ ॥ आत आय रुक्मणि से बोले बना सभी सुकाज । पर एक भय बहन यह तुम से, रखजो मेरी लाज हो ॥ मो० ॥ २७५ ॥ कब पूछा भा भात मुझ जब तूने करी सगाई । इतना सुन के रुक्मिणी वहां से सखियन कुच मचाई हो ॥ मो० ॥ २७६ ॥ पाच पोच सौ पहर वाल,हर द्वारे बैठावे । अससजस में पड़ी रुक्मणि मूआ पास में आये हो ॥मो०॥२७७॥ वस्त्राभूषण मांगे माता के शिशुपाल मिजवाया । तथिपत राजी नहीं बाई की ऐसा कह ठुकराया हो ॥ मो०॥२७८॥ पीठी मगन छाक अधूरा महल छत पै जाय । आये था नहीं आवे स्वामी स्पवन सिगाइ लगावे हो ॥मो ॥२७९॥ पुरुष भाग्य त्रिया-चरित्र का पार कहा कौन पाय । अर्चन-सामग्री मंगवाकर सुआ माल सजवावे हो ।मो०।२८०। मंगल-गीत सखी मिल गावें बाजा झनकार । रुक्मणि सहित सुआजी आई रोकी पहरेदार हो ।मो०।२८१। अनुचर आय कही पूछ के कुँवरी उपवन जाय मसवालेरो वसी बाहर जाना हुकम लगाया हो ।मो०।२८२। सुआ कहे तुम कहो बीर से, नेम लिया मह वाई । जो देव पंचेरी पविवर, पूजू सम-दिन आई हो ॥ मो० ॥ २८३ ॥ तुम तन मन सुख कारण आई देव पूजने जाय । बिन पूजे शादी नहीं होय, दीना साफ सुनाय हो ॥ मो० ॥ २८४ ॥ दिया हुकम तब शिशुपाल ने, वचन सुनी ये कान । पुरुषार्थ कहो क्या कर सकता, होनी है बलवान हो ॥ मो० ॥ २८५ ॥ माया का नहि पार नहीं है, ठगनी सब जग माँहे । सिया-पास बैठे रघुवर का माया लिये भुलाई हो ॥ मो० ॥ २८६ ॥ दिये पंचशत पहरे बाल कहा रहो हुशियार । भरा बाल हो बाग चोतरफ, पहुँचे हैं सब द्वार हो ॥ मो० ॥ २८७ ॥ तब सुआ ने रोक सभी को, बोला इस प्रकार । आज रुक्मणि ही एकाकी, और न कोई जाय हो ॥ मो० ॥ २८८ ॥ आपन सब ही रह यहीं पर, कहा रुक्मणि से जाओ । सेवा सुख बजाओ उनकी मन वांछित फल पाओ हो ॥ मो० ॥ २८९ ॥ निर्भय होकर जाओ बेटा इस देव के पास ।

॥ श्रो० ॥ ३२३ ॥ मारा राम के तीर रुक्मिये पर थी वज्र की काया। नाग फास मे बाध रुक्मिया, को हरिजी ले आया हो ॥ श्रो० ॥ ३२४ ॥ डाल दिया रथ मे ला उसको, वधू को दिया जताई। मक्खी उडाओ निज भ्राता की काम करो हर्षाई हो ॥ श्रो० ॥ ३२५ ॥ आखिर लडते शिशुपाल ने, रण में मुह की खाई। विजय हुई श्री हरि हलधर की. बने सभी अनुयाई हो ॥ श्रो० ॥ ३२६ ॥ दोनों वीर विजय कर आये फौरन रुक्मणि पास। बैठ रथ मे चले वहां से, हृदय धरी उल्लास हो ॥ श्रो० ॥ ३२७ ॥ पथ में एक नदी के तट आ, रथ को वहीं ठहराया। हाथ पाव धो पिया नीर, विश्राम लिया तरु साया हो ॥ श्रो० ॥ ३२८ ॥ जेठ पति का काम देखने, रुक्मणि विस्मय पाई। ऐसे पराक्रम के धारी नहि, अन्य पुरुष जग माई हो ॥ श्रो० ॥ ३२९ ॥ हाथ जोड क करी विनती, अहो वल्लभ भर्त्तार। बन्ध छोड़ दे मुझ भ्राता के, कृपा कर इस वार हो ॥ श्रो० ॥ ३३० ॥ बन्धन छोड कहा यू हरि ने. उससे प्रेम जनाई। रखना सज्जनता तुम हमसे, सीख करी उस ताई हो ॥श्रो०॥३३१॥ बाह डाल गले भ्राता के, रुक्मणि रुदन मचाया। फिर मिलना लेने को आना, हे मैया के जाया हो ॥ श्रो० ॥ ३३२ ॥ मात पिता चरणो मे लगना, भूआ को शीश नमाना। सबको कुशल विशेष कहू क्या, जल्दी लेने आना हो ॥ श्रो० ॥ ३३३ ॥ लाज्जित होकर कुवर रुक्मिया, कुन्दनपुर नहीं आया। " भोजकर " एक नगर बसाकर, वहीं प राज्य जमाया हो ॥ श्रो० ॥ ३३४ ॥ शिशुपाल लाज्जित हो निशिमें, गया शहर के माइ। खबर हुई महिलाओ को मिल, पास उन्होंके आई हो ॥ श्रो० ॥ ३३५ ॥ बोली हम दूल्हे की दुल्हिन को देखन को आई। कहो दूल्हा दुल्हिन को किस महलो जाय छुपाई हो ॥श्रो०॥३३६॥ कृष्ण मुरारी विजय करीने, आये हैं गिरनार। सब सामग्री जूटा ब्याह की, परणी रुक्मणि नार हो ॥ श्रो० ॥ ३३७ ॥ उसी स्थान का दिया नाम, रुक्मणि बन कृष्ण मुरारी। उत्तम की सगत से उत्तम. बने होय जग जहारी हो ॥ श्रो० ॥ ३३८ ॥ पुरी द्वारिका परण पधारे, खबर सभी सुन पाई। स्वजन जन सब मिले प्रेम से, बट रही हर्ष बधाई हो ॥ श्रो० ॥ ३३९ । स्वय

मीपम बरजा कुवर रुक्मिया काया जैसे काल। उठा ओरा का भू थर्राई चला आप तत्काल हो ॥ मा० ॥ २०७ ॥ गुलगुलाट हाथी करते हैं हनहनाट हुसार। सनसनाट पैदल चलते हैं रथ करते झनकार हो ॥ मो० ॥ २०८ ॥ नेजा ढाल कटार तीर भाला, परछियां मखमलें। तंग आदि आयुध छत्तीसों भट्ठ चमाचम चमकें हो ॥ मा० ॥ २०९ ॥ बजे ओर से बाजे रण के, शुभ किया निशान। नूर बरसता वीरों के मुख कायर कांपे प्रान हो ॥ मो० ॥ २१० ॥ रज से रवि का तेज छिपाया हा न सके पहिचान। हवी एव चौसठ मागिनी मुख माने असमान हो ॥ मो० ॥ २११ ॥ नारद फिरे नाचता वहां पर फूला नहीं समाय। शिशुपाल इत हरि हलधर, हो वापु कहीं मुकाम हो ॥ मो० ॥ २१२ ॥ समुद्र-सी सेना फैली, हरे गोपाल कहां आय। पास रुक्मिया खड़े, पक्को पक्को शब्द सुनाय हो ॥ मा० ॥ २१३ ॥ नदी वेग उदधि रोके क्यों हरि सेना भरकाई। चारों ओर से घेर लिया शेरा के परवा नांहीं हो ॥ मा० ॥ २१४ ॥ रुक्मणि सेना देख हृदय म, चिन्ता हुई अपार। ये तो केवल दो ही भ्राता ये दल अपरम्पार हो ॥ मा० ॥ २१५ ॥ कठिन खाइ को भाग गला ह, यों मन धीपी बाल। उतर गया सब नूर उसी का, होगा कौन हवाल हो ॥ मा० ॥ २१६ ॥ कृष्ण कहे मुझ सा न जगत् में, चिन्ता दूर निवार। सूर्य उदय पर नहीं ठहरता, मग आता अन्धकार हा ॥ मो० ॥ २१७ ॥ वा मी संशय मिटा न उसका, तब वा यादवराय। वज्र मूँदरी चूरा कर कर दिया स्वस्ति कर मांय हा ॥ मा ॥ २१८ ॥ एक बाण से ताड़ ताड़ हरि बींध दिये उस बार। यों चिन्ता मिट साथे मारे वात भ्रात इस पार हा ॥ मा० ॥ २१९ ॥ तेरा भ्रात तात नहीं मारूँ, तुझ बुरा न मनाऊँ। अगर करे दुर्गुण भी सह लूँ मन की बात बताऊँ हा ॥ मो० ॥ २२० ॥ हलधर सुन कह शिशुपाल, हरगिज नहीं मारा जाय। अगर सामने दूजा आय तो दू मस चलाय हो ॥ मा० ॥ २२१ ॥ सुन फटकारी कह हरि, क्या शिशुपाल शृगाल। कच्चा पय गर पिया मात का दमूं इसे तत्काल हा ॥ मा० ॥ २२२ ॥ चढ़ा जाय हलधर को रथ का कर भूप भगाया। कहीं गिरे मुख रहाव शार की भूग तो माया गमाया हो

अभिमाननी, जिससे मिले न मान । वह सोना प्रिय कौन का, जासे टूटे कान हो ॥ श्रो० ३५६ ॥ मधुर वचन हंस रुक्मणि बोली, यद्यपि टूटे कान । तो क्या सोना फेंका जावे, आप स्वय बुद्धिमान हो ॥ श्रो० ३५७ ॥ प्रसन्नता से ग्रहण किया वह, तजा जाय किम् कन्त । गुणागुणी के लिये आप हैं, भक्तवत्सल भगवन्त हो ॥ श्रो० ३५८ ॥ नूतन हीरा लाल नगीना, नूतन नारी निरखी । जो कर देवे त्याग पुरातन, रीति नहीं घर सरखी हो ॥ श्रो० ३५९ ॥ अग्नि से भी अधिक उष्ण है, अबलाओं का निश्वास । चाहे निपट निस्नेह त्रिया हो, तजना नहीं निरास हो ॥ श्रो० ३६० । देरी न करना वहा जाने मे, पोषण करना प्रेम । जो न गये तुम से बोलन का, लिया आज से नेम हो ॥ श्रो० ३६१ ॥ प्रिया वचन पे हरि विचारे, है सब कहन उदार । नीर नरेश्वर न्याय कहानी, चाहे फेरण हार हो ॥ श्रो० ३६२ ॥ रुक्मणि मुख का पान सुगन्ध का, बोदर लेय नरन्द । भामा भामिनी के घर आये, भामा मन आनन्द हो ॥ श्रो० ३६३ ॥ वक्र वाक्य से भामा बोली, यह घर नहीं तुम्हारा । भूल पधारे इधर रहा उत, तुम प्यारी का द्वारा हो ॥ श्रो० ३६४ ॥ कृष्ण कहे हां वह घर यह नहिं, खैर आया सो आया । मधुर वचन ऐसा बोला, भामा का मन हर्षाया हो ॥ श्रो० ३६५ ॥ कृष्ण कहे मुझे निद्रा आवे, यह तो पहले जानी । सोने काज राज यहां आये, यहां तो नार पुरानी हो । श्रो० ३६६ ॥ हरि कहे ऐसे मत बोलो, नई बहुत सी नारी । तुम मेरी प्रथम पटरानी, आदि से हितकारी हो ॥ श्रो० ३६७ ॥ सोये कपट नींद से माधव, ओढ़ पीता-म्बर सार । गाठ देख पल्ले की खोली, भामा करे विचार हो ॥ श्रो ३६८ ॥ किया रुक्मणि वशीकरण वह, ऐसा जान के खाया । मेरे वश मे होंय मुरारी, भामा मन भ्रमाया हो ॥ श्रो० ३६९ ॥ पान का चूरा रुक्मणि मुह का, यूं कह हरि हंसी उड़ाई । भामा थूक खीज के तत्क्षण, बोली जोश भराई हो ॥ श्रो० ३७० ॥ मिटे स्वभाव न तेरा ग्वाला, अगर राज्य भी पाया । मेरी हंसी उड़ाने खातिर, जान बूझ कर लाया हो ॥ श्रो० ३७१ ॥ सच्चा कहना हरि कहे, फिर भामा की नरमाई । रुक्मणि

शृंगारित शहर बणाये और उस श्रृंगारा। घर घर द्वार हा बधावणा हुणा सब परिवारा हा ॥ भा० ॥ ३४० ॥ हरि हलधर हा गजारूढ सिर छत्र चँवर दुरवाय। सुन्दर रथ म बैठी रुक्मणि मंगलियाँ मंगल गावें हो ॥ भा० ॥ ३४१ ॥ चला सवारी शहर बीच म बजा क झनकार। दूल्हा और दुल्हिन देखन का हर्षित हुप अपार हा ॥ भा ॥ ३४२ ॥ वस्त्रभूषण विमीव पहने जिसकी सी सुध नाय। काजल नत्र कुंकुम ललाट, गइ पर क पुत्र उठाया हा ॥ भा० ॥ ३४३ ॥ पुरुष डाल कन्ध पै घूरर नारी दुपट्टा धार। सुमन सहित घर हर्ष पधाव मर मोतियों का थार हा ॥ भो० ॥ ३४४ ॥ दाइ कह सुहाग अन्तल हा, शुभ आशिष सुनाय । सुन्दर ओका ऊपर कोइ वार वार वालि जाव हा ॥ भो ॥ ३४५ ॥ पर कामण गाइ यों वाल धन्य रुक्मणि अवतार। सब विधि लायक श्याम सलोना पाई य भत्तार हा ॥ भा० ॥ ३४६ ॥ कइ सुहागिन प्रम धरान बोल वारम्बार। मधु समय है आज कृष्ण का मिली नार उदार हा ॥ भा० ॥ ३४७ ॥ आय महलों पाप हय घर, लग मात के पाँव। द आशिष दवकी राना, फूला अग न मांय हो ॥ भा ॥ ३४८ ॥ दिया महल सुन्दर रुक्मणि को अभ धन भरे भरडार गज घाडा और रथ पालकी वस्त्राभरण उदार हो ॥ भा० ॥ ३४९ ॥ दास दासी परिवार बहुत मा दाना कृष्ण मुरार। जिस पर कृपा हा आतम की कमी न रहे लगार हो ॥ भा० ॥ ३५० ॥ हास्य विलास मृदु वाल लाव रस चातुरता भारी। हरि रुक्मणि में प्रम अलौकिक वार नीर अनुहारा हा ॥ भा ॥ ३५१ ॥ एक दिन नारद सत्यभामा का आकर वाक्य सुनाया। सुख बिगाड़ राहु बतलाया उसका मजा चखाया हा ॥ भा० ॥ ३५२ ॥ चम शराटा माय-गामिनी उत्तम रुक्मणि नारी। गुरु प्रसाद चौथमल म, लिखा ब्याह सुखकारी हा ॥ भा० ॥ ३५३ ॥ हुआ ब्याह पूजा हरि का सब स भामा अकुलानी। हुआ सौक का शोक हृदय म की रुक्मणि को जानी हो ॥भो०॥३५४॥ एक दिन रुक्मणि भी कृष्ण से, ऐसी की अरदास। राज पधारे भामा महल में मन को पिऊ की आस हो ॥ भा० ॥ ३५५ ॥ हरि कह यह

अभिमाननी, जिससे मिले न मान । वह सोना प्रिय कौन का, जासे टूटे कान हो ॥ श्रो० ३५६ ॥ मधुर वचन हंस रुक्मणि बोली, यद्यपि टूटें कान । तो क्या सोना फेका जावे, आप स्वय बुद्धिमान हो ॥ श्रो० ३५७ ॥ प्रसन्नता से गृहण किया वह, तजा जाय किम् कन्त । गुणागुणी के लिये आप हैं, भक्तवत्सल भगवन्त हो ॥ श्रो० ३५८ ॥ नूतन हीरा लाल नगीना, नूतन नारी निरखी । जो कर देवे त्याग पुरातन, रीति नहीं घर सरखी हो ॥ श्रो० ३५९ ॥ अग्नि से भी अधिक उष्ण है, अबलाओं का निश्वास । चाहे निपट निस्नेह त्रिया हो, तजना नहीं निरास हो ॥ श्रो० ३६० । देरी न करना वहां जाने में, पोषण करना प्रेम । जो न गये तुम से बोलन का, लिया आज से नेम हो ॥ श्रो० ३६१ ॥ प्रिया वचन पे हरि विचारे, है सब कहन उदार । नीर नरेश्वर न्याय कहानी, चाहे फेरण हार हो ॥ श्रो० ३६२ ॥ रुक्मणि मुख का पान सुगन्ध का, बोदर लेय नरन्द । भामा भामिनी के घर आये, भामा मन आनन्द हो ॥ श्रो० ३६३ ॥ वक्र वाक्य से भामा बोली, यह घर नहीं तुम्हारा । भूल पधारे इधर रहा उत, तुम प्यारी का द्वारा हो ॥ श्रो० ३६४ ॥ कृष्ण कहे हां वह घर यह नहि, खैर आया सो आया । मधुर वचन ऐसा बोला, भामा का मन हर्षाया हो ॥ श्रो० ३६५ ॥ कृष्ण कहे मुझे निद्रा आवे, यह तो पहले जानी । सोने काज राज यहां आये, यहां तो नार पुरानी हो । श्रो० ३६६ ॥ हरि कहे ऐसे मत बोलो, नई बहुत सी नारी । तुम मेरी प्रथम पटरानी, आदि से हितकारी हो ॥ श्रो० ३६७ ॥ सोये कपट नींद से माधव, ओढ़ पीताम्बर सार । गाठ देख पल्ले की खोली, भामा करे विचार हो ॥ श्रो ३६८ ॥ किया रुक्मणि वशीकरण वह, ऐसा जान के खाया । मेरे वश में होंय मुरारी, भामा मन भ्रमाया हो ॥ श्रो० ३६९ ॥ पान का चूरा रुक्मणि मुह का, यूं कह हरि हंसी उड़ाई । भामा थूक खीज के तत्क्षण, बोली जोश भराई हो ॥ श्रो० ३७० ॥ मिटे स्वभाव न तेरा ग्वाला, अगर राज्य भी पाया । मेरी हसी उड़ाने खातिर, जान बूझ कर लाया हो ॥ श्रो० ३७१ ॥ सच्चा कहना हरि कहे, फिर भामा की नरमाई । रुक्मणि

शृंगारित शहर तथापि, और उस शृंगारा। घर घर द्वारे हो बधावणा हुपा सब परिवारा हो ॥ मो० ॥ ३४० ॥ हरि हलधर दो गजारूढ़ सिर छत्र चँवर दुरवाय। सुन्दर रथ म बैठी रुक्मणि सखियां मंगल गावें हो ॥ मो० ॥ ३४१ ॥ चला मथारी शहर बीच में बजा क झनकार। दूल्हा और दुल्हिन देखन को हर्षित हुव अपार हो ॥ मो ॥ ३४२ ॥ वस्त्राभूषण विभिन्न पहने जिसकी भी शुभ नाय। काजल नेत्र कुंकुम ललाट गड़ पर क पुत्र उठाया हो ॥ मो० ॥ ३४३ ॥ पुरुष बाल कन्ध पे धूंसर, नारी दुपट्टा धार। सुमन सहित घर हर्ष बधाय भर मोतियों का थार हो ॥ मो ॥ ३४४ ॥ कोइ कह सुहाग अटल हो, शुभ आशिष सुनाय। सुन्दर जोड़ी ऊपर कोई वार वार वाले जाय हो ॥ मो० ॥ ३४५ ॥ घर कामस कोई यों बोल धन्य रुक्मणि भरतार। सब विधि लायक श्याम सलौना पाई ये भर्तार हो ॥ मो० ॥ ३४६ ॥ कइ सुहागिन प्रेम धरीन, बोल बारम्बार। अब समय है आज कृष्ण का मिली नार उदार हो ॥ मो० ॥ ३४७ ॥ आय महला बीच हुप घर लग मास के पांय। दे आशिष सबकी रानी फूला अंग न मोय हो ॥ मो ॥ ३४८ ॥ दिया महल सुन्दर रुक्मणि को अन्न धन भरे भण्डार गज घोड़ा और रथ पालकी वस्त्राभरण उदार हो ॥ मो० ॥ ३४९ ॥ दास दासी परिवार बहुत सा दाता कृष्ण मुरार। जिस पर कृपा हो प्रीतम की कमी न रहे लगार हो ॥ मो० ॥ ३५० ॥ हास्य विलोकन मृदु बोल, साथ यथ चातुरता भारी। हरि रुक्मणि में प्रेम अलौकिक क्षीर नीर अनुहारा हो ॥ मो० ॥ ३५१ ॥ एक दिन नारद सत्यभामा का आकर वाक्य सुनाया। मुख बिगाड़ रोष बतलाया उसका मजा चखाया हो ॥ मो० ॥ ३५२ ॥ धर्म शरारा मोक्ष-गामिनी उत्तम रुक्मणि नारी। गुरु प्रसाद चौथमल म लिखा ब्याह सुखकारी हो ॥ मो० ॥ ३५३ ॥ हुआ ब्याह दूजा हरि का सब स मामा अकुलानी। हुआ सौत का शोक हृदय म की रुक्मणि को मानी हो ॥ मो० ॥ ३५४ ॥ एक दिन रुक्मणि भी कृष्ण स, ऐसी की अरदास। राज पधारे मामा महल में सब को पिऊ की आस हो ॥ मो ॥ ३५५ ॥ हरि कह घर

अभिमाननी, जिससे मिले न मान। वह सोना प्रिय कौन का, जासे टूटे कान हो ॥ श्रो० ३५६ ॥ मधुर वचन हंस रुक्मणि बोली, यद्यपि टूटे कान। तो क्या सोना फेंका जावे, आप स्वय बुद्धिमान हो ॥ श्रो० ३५७ ॥ प्रसन्नता से ग्रहण किया वह, तजा जाय किम् कन्त। गुणागुणी के लिये आप हैं, भक्तवत्सल भगवन्त हो ॥ श्रो० ३५८ ॥ नूतन हीरा लाल नगीना, नूतन नारी निरखी। जो कर देवे त्याग पुरातन, रीति नहीं घर सरखी हो ॥ श्रो० ३५६ ॥ अग्नि से भी अधिक उष्ण है, अबलाओं का निश्वास। चाहे निपट निस्नेह त्रिया हो, तजना नहीं निरास हो ॥ श्रो० ३६० ॥ देरी न करना वहां जाने में, पोषण करना प्रेम। जो न गये तुम से बोलन का, लिया आज से नेम हो ॥ श्रो० ३६१ ॥ प्रिया वचन पे हरि विचारे, है सब कहन उदार। नीर नरेश्वर न्याय कहानी, चाहे फेरण हार हो ॥ श्रो० ३६२ ॥ रुक्माणि मुख का पान सुगन्ध का, बोदर लेय नरन्द। भामा भामिनी के घर आये, भामा मन आनन्द हो ॥ श्रो० ३६३ ॥ वक्र वाक्य से भामा बोली, यह घर नहीं तुम्हारा। भूल पधारे इधर रहा उत, तुम प्यारी का द्वारा हो ॥ श्रो० ३६४ ॥ कृष्ण कहे हां यह घर यह नहिं, खैर आया सो आया। मधुर वचन ऐसा बोला, भामा का मन हर्षाया हो ॥ श्रो० ३६५ ॥ कृष्ण कहे मुझे निद्रा आवे, यह तो पहले जानी। सोने काज राज यहां आये, यहां तो नार पुरानी हो ॥ श्रो० ३६६ ॥ हरि कहे ऐसे मत बोलो, नई बहुत सी नारी। तुम मेरी प्रथम पटरानी, आदि से हितकारी हो ॥ श्रो० ३६७ ॥ सोये कपट नींद मे माधव, ओढ़ पीताम्बर सार। गाठ देख पल्ले की खोली, भामा करे विचार हो ॥ श्रो० ३६८ ॥ किया रुक्मणि वशीकरण वह, ऐसा जान के खाया। मेरे वश में होंय मुरारी, भामा मन भ्रमाया हो ॥ श्रो० ३६६ ॥ पान का चूरा रुक्माणि मुह का, यूं कह हरि हंसी उड़ाई। भामा थूक खीज के तत्क्षण, बोली जोश भराई हो ॥ श्रो० ३७० ॥ मिटे स्वभाव न तेरा ग्वाला, अगर राज्य भी पाया। मेरी हंसी उड़ाने खातिर, जान बूझ कर लाया हो ॥ श्रो० ३७१ ॥ सच्चा कहना हरि कहे, फिर भामा की नरमाई। रुक्माणि

मिलने की उत्कण्ठा दीखे विवस बधाई हो ॥ मो० २७२ ॥ सच्ची या झूठी कहती विश्वास मुझे नहीं आय। झूठ कहे झूठी की जाई मामा साफ सुनावे हो ॥ मो० २७३ ॥ शपथ खाय गर मेरे सम्मुख कपट न रंच करूंगी। क्षीर नीर सम दोनों बहिनें हिल मिल सदा रहूंगी हो ॥ मो० २७४ ॥ वो रुक्मणि से तुम्हें मिलाऊं, भामा किया कबूल। फिर भी हंसी करो मेरी बात गई यह भूल हो ॥ मो० २७५ ॥ हरि पास रुक्मणि पर आये उसे बाग में लाया। भामा रुक्मणि पांव लगाना कौतुक आप रचाया हो ॥ मो० २७६ ॥ श्वेत साटिका एक कंचुकी भूषण विविध पहनाई। तरु अशोक के तल सुन्दर ही, पद्मासन बैठाई हो ॥ मो० २७७ ॥ तुरंत बुलाई भामा को हरि मिलन बाग के माई। आप छिप गुल्म के माहीं में कौतुक देखन धाई हो ॥ मो० २७८ ॥ वर्णी पद्म शिला पर बैठी, अद्भुत रूप रसाल। सत्यभामा मानी वनदेवी, अचम्भा यह तत्काल हो ॥ मो० २७९ ॥ के अमरी किन्नरी शारदा, कमलावर नाग कुमारी। करे सेव फल मन चाहाया, हर्षी हृदय मझारी हो ॥ मो० २८० ॥ आ समीप वर मांग भामा हरि वश में हो जावे। माथ मरे पर करो दया नहिं रुक्मिणी नाम सुहाय हो ॥ मो० २८१ ॥ मन्त्र-मुग्ध स होकर हरिश्री, मुझ महलों में आय। तो तुमको मैं सच्ची जानूं उसके घर नहिं जाय हो ॥ मो० २८२ ॥ ऐसा कह भामा पग लागी स्वारथ के वश आय। दोष कभी नहीं लखे स्वार्थी, मुग्ध की जिसके चाह हो ॥ मो० २८३॥ भोली भामा पड़ी भ्रम में, बोले बारम्बार। दे "वर" देवी मुझ शीघ्र, आय रुक्मणि इस बार हो ॥ मो० २८४ ॥ आतुर हो आसू भर लाई, पधी नहिं वह जवान। इतने हरि प्रकट हो बोले मांग-मांग वरदान हो ॥ मो० २८५ ॥ ऐसी दशा और न दूखी मन इच्छित दे पूर। एमी आन सेव कर इसकी, तुझे या दुःख दूर हो ॥ मो० २८६ ॥ क्रोध न कीजे कभी भामिना हास्य क्रोध से नाश। क्रोध तजी या इसको ध्यावे पूरे मन की आश हो ॥ मो० २८७ ॥ भामा भड़क उठी इस बिरियां, बोली इस प्रकार। रे रे धूर्त शिरामणि ऐसा हंसने में क्या सार हो ॥ मो० २८८ ॥ मदशिम चढ़ है पाहुणी थाट न रिझनेवार। मैं भी मन

लूँ खींच इसी से, तो मरजा इस वार हो ॥ श्रो० ३८६ ॥ लगो प्रेम से पांव इसी के, दीना मैं सम्मान। इसीलिये अब नन्द-नन्द
तू, मुझसे लगाई तान हो ॥ श्रो० ३६० ॥ दिखे सावला जो बाहर से, सो मन मैला होय। उस मनुष्य की मनुष्य बीच मे,
गणना गिने न कोय हो ॥ श्रो० ३६१ ॥ आया गर्भ मात के जब ही से, प्रपञ्च रचाया। कहा जाया कहा बड़ा हुआ, और
ग्वाला नाम धराया हो ॥श्रो० ३६२॥ नृत्य किया रमा ग्वालों मे, किया खूब उन्माद। फक्त चराना गौ को जाने, राजनीति नहि
याद हो ॥श्रो० ३६३॥ लाया कन्या भीषम की, कितना सहार कराया। जितना भामा के मन आया, उतना कह सुनाया हो ॥श्रो०
३६४॥ कृष्ण कौतुहल इस प्रकार कर, महलो मे फिर आय। रग विनोद की हैं सब बाते, पति पत्नि के माय हो ॥श्रो० ३६५॥ अव
रुक्माणि उठकर जल्दी से, लगी भामा के पाय। भामा ने भी प्रेम भाव से, लीनी कण्ठ लगाय हो ॥ श्रो० ३६६ ॥ पूछी बातें
क़ुशल क्षेम की, धर भामा अति प्रेम। कहा आप की कृपा कोर से, नित्य ही वरते क्षेम हो ॥ श्रो० ३६७ ॥ हसी रमी दोनो
ही प्रेम से पहुची निज आवास। पक्का आम तो भी कसैला, समझो यह सहवास हो ॥ श्रो० ३६८ ॥ और अन्य बातो का
इसको, ना कुछ मान गुमान। पर भामा को पाव लगाना, साले साल समान हो ॥ श्रो० ३६६ ॥ आग लगे पर उसे बुझाने,
करे नीर की चहाय। जो जल में ही आग लगे तो, कहा बुझाने जाय हो ॥ श्रो० ४०० ॥ जो प्रीतम ही अन्तर डाले, दूजे से
क्या रोप। भामा मन समझावे अपना, है कर्मो का दोप हो ॥ श्रो० ४०१ ॥ कहे कृष्ण से एक दिन नारद, बात अनूठी आनो।
जाम्ववान और वैस.ढ्य गिरि का, नृप शिवचन्द्रा रानी हो ॥ श्रो० ४०२ ॥ जाम्बवती कन्या अति सुन्दर, यो कह ऋषि
सिधाया। हरि व्याह उससे कर लाये, रुक्माणि से प्रेम कराया हो ॥ श्रो० ४०३ ॥ सिंहल द्वीप श्लेक्षण राजा, लक्ष्मणा राज
दुलारी। तस सेनापति कर निपात, फिर परणे आप मुरारी हो ॥ श्रो० ४०४ ॥ राष्ट्र देश का राष्ट्रवर्धन, राजा परम उदार।
सुपमा पुत्री हरि ने परणी, भ्रात उसी का मार हो ॥ श्रो० ४०५ ॥ सिन्धु देश मेरु भूपति गौरी बाला गुणवान। गिरधर ने

मिलन की मकरठा दीजे विमल पताश हो ॥ भो० ३७२ ॥ सच्ची या झूठी कहती विश्वास मुझ नहीं आवे । झूठ कहे झूठी की आई भामा माफ सुनावे हो ॥ भो० ३७३ ॥ शपथ खाय गर मेरे सम्मुख कपट न रंच करूंगी । दोनों बहिने हिल मिल सदा रहूंगी हो ॥ भा० ३७४ ॥ जो रुक्मणि से तुम्हें मिलाऊ, भामा किया कबूल । फिर भी हंसी करेंगे मेरी, बात गई यह भूल हो ॥ भो० ३७५ ॥ हरि चाल रुक्मणि पर आये उसे पाग में लाया । भामा रुक्मणि पांव लगाना, कौतुक आप रचाया हो ॥ भो० ३७६ ॥ धव साटिका रक्त कंचुकी भूषण विविध पहनाई । तरु अशोक के तल सुन्दर ही पद्मासन बैठाई हो ॥ भा० ३७७ ॥ तुरंत बुलाई भामा को हरि मिलन बाग के माई । आप छिप गुल के भाड़ों में कौतुक हा ॥ भो० ३७८ ॥ दखी पद्म शिला पर बैठी, अद्भुत रूप रसाल । सतभामा आनी मनदेवी, प्रकटा यह तत्काल ॥ भो० ३७९ ॥ के अमरी किंनरी शारदा, कमलाधर नाग कुमारी । करे सेव फल मन चाहाया, हर्षी हृदय मझारी हो ॥ भा० ३८० ॥ आ समीप पर मांगे भामा, हरि वश में हो आवे । नाथ मरे पर करो दया नहिं रुक्मिया नाम सुहाव हो ॥ भो० ३८१ ॥ मन्त्र-मुग्ध स होकर हरिजी, मुझ महलों में आव । तो तुमको मैं सच्ची जानूं उसके घर नहिं जाव हो ॥ भा० ३८२ ॥ एसा कह भामा पग लागी, लाखन के परा भाव । होप कभी नहीं छले स्वार्थी, सुख की जिसके चाह हो ॥ भा० ३८३ ॥ भोली भामा पड़ी भ्रम में बाल बारम्बार । दे "वर" देवी मुझ शीघ्र, आय रुक्मणि इस बार हो ॥ भा० ३८४ ॥ आसू मर लाइ दवी महिं दव अजान । इतने हरि प्रकट हो बोले मांग-मांग वरदान हो ॥ भो० ३८५ ॥ एसी दवी और न दूजी मन इच्छित दे पूर । अभी आन सब कर इसकी पुजे आ दुख दूर हो ॥ भा० ३८६ ॥ क्रोध न कीजे कभी मानिनी हाय क्रोध स नाशा । क्रोध तजी जो इसको ध्याव पूरे मन की आशा हो ॥ भो० ३८७ ॥ भामा भड़क उठी उस विरियां बोली इस प्रकार । रे र धूत शिरोमणि प्रेम हंसने में क्या सार हो ॥ भो० ३८८ ॥ मदशिम पद है पाहुणी काह न शिरनेशार । मैं भी मन

से मुनिवर, कर गये आप विहार हो ॥ प्र० ५ ॥ भामा कहे वहिन ! मुनि ने, कहा मुझ ओर निहार । इसी लिये सुत होगा मेरे, एक सुन्दर सुकुमार हो ॥ प्र० ६ ॥ कहा रुक्मणि ने छल करना अच्छा नहीं दिखात । मेरे प्रश्न के उत्तर मे ही, कही मुनि ने वात हो ॥ प्र० ७ ॥ इस विवाद का निर्णय करने, श्री कृष्ण पै आई । हरि कहे दोनों के सुत हो, मैं हू प्रसन्न इस मॉई हो ॥ प्र० ८ ॥ कुरु जगल है देश मनोहर, दुर्योधन है राय । आया दूत वहां से चलकर कृष्ण सभा क माय हो ॥ प्र० ९ ॥ दीना पत्र दूतने हरि को, लिखा उसी के मॉई । मेरे सर पर आप धणी हैं, तुमसे प्रेम सदाई हो ॥ प्र० ॥ १० ॥ फिर भी प्रेम बढ़ाने को, एक बात मेरे मन आई । लडके का सम्बन्ध होय तो प्रीति होय सवाई हो ॥ प्र० ११ ॥ मेरी कन्या कुवर आपका, जो हो सम्बन्ध विचार । या सुन मेरा सुता आपकी, करो शीघ्र स्वीकार हो ॥ प्र० १२ ॥ प्रसन्न होकर श्री कृष्ण ने लीनी बात को मान । दूत सीख हरिजी से ले, आया अपने स्थान हो ॥ प्र० १३ ॥ भामा छल रुक्मणि का ताके, बाल न वाका होय । जिसपै कृपा हरि की उसको, कुछ भी कहे न कोय हो ॥ प्र० १४ ॥ दुर्योधन नृप की बातो का, भेद भामा जी पाई । रुक्मणि को दुख देने कारण, युक्ति एक उपाई हो ॥ प्र० १५ ॥ जिसके सुत का ब्याह प्रथम हो, उस विवाह के मॉई । दूजी दे दे बाल निज शिरके, रक्खें पाव तल लाई हो ॥ प्र० १६ ॥ उससे बड़ी उम्र मे मैं हू, होगी मुझ सन्तान । रुक्मणि के सुत नहीं होने से, उसका है अपमान हो ॥ प्र० १७ ॥ यह विचार दासी के जरिये, रुक्मणि को कहलाया । भामा शर्त यह करना चाहे, ऐसा आन जताया हो ॥ प्र० १८ ॥ देखो भामा कैसी भोली, क्या बाधा अनुमान । जैसे डोहला खर खाने का, होता श्रेष्ठ मत मान हो ॥ प्र० १९ ॥ उत्तम के उत्तम हो इच्छा, नीचा नीची जान । मती विचारे ऊंची नीची, भावी है बलवान हो ॥ प्र० २० ॥ शकुनो माहि जान शिरोमणि, वाणी शकुन कहाय । पाप पुण्य के अनुसार ही, वाणी उपजे आय हो ॥ प्र० ॥ २१ ॥ सुन दासी के वचन रुक्मणि, बोली वचन उदार । भामाजी हैं बडी वही जो, कहदे मुझे

परसी सुलक्षरी नारी ये पुण्यवान् हो ॥ मो० ४०६ ॥ हिरण्यनाभि नृप हलधर का मामा था वलकारी । पद्मावती को स्वमवर में व्याही कृष्ण मुरारी हो ॥ मो० ४ ७ ॥ नाग्नजीत गन्धार देश की पुत्री ओ गन्धारी । शादी करी प्रेम से सब भ्राता का काज सुधारी हो ॥ मो० ४ ८ ॥ श्री कृष्ण क आठों पटराणी शिवगामी गुणधाम । गुरु हीरालाल प्रसाद चौथमल उन्हें करे प्रणाम हो ॥ मो० ४०९ ॥

प्रद्युम्न कुंवार

*** दोहा ***

सर्वज्ञ सर्वदर्शी प्रभु प्रणमुं वारम्वार । विनमु माता शारदा, द बुद्धि भल सुविचार ॥ १ ॥

प्रद्युम्न कुंवर की कहती पुण्याइ प्रत्यक्ष दरसाो ॥ टर ॥ एक दिन रुक्मणि के घर आये देवर्षि अणगार । भामा भी सुनकर वहां पहुंची धर्म वात उस वार हो । म २ ॥ नमस्कार कर रुक्मणि पूछा क्या सुपुत्र मैं पाऊ । कृपा कर फरमावें स्वामी निश्चय करना चाऊं हो ॥ म० ३ ॥ कहा मुनि हरि सदरा सुत होगा, अति सुन्दर वलवान् । इतना सुन रुक्मणि प्रसन्न हो, बोली वचन प्रमाण हो ॥ म ४ ॥ शुद्ध भाव से अणगारि का किया खूब सत्कार । तत्पश्चात् वहां

मे मुनिवर, कर गये आप विहार हो ॥ प्र० ५ ॥ भामा कहे बहिन ! मुनि ने, कहा मुझ ओर निहार । इसी लिये सुत होगा मेरे, एक सुन्दर सुकुमार हो ॥ प्र० ६ ॥ कहा रुक्माणि ने छल करना अच्छा नहीं दिखात । मेरे प्रश्न के उत्तर मे ही, कही मुनि ने बात हो ॥ प्र० ७ ॥ इस विवाद का निर्णय करने, श्री कृष्ण पै आई । हरि कहे दोनो के सुत हो, मैं हू प्रसन्न इस मॉई हो ॥ प्र० ८ ॥ कुरु जंगल है देश मनोहर, दुर्योधन है राय । आया दूत वहां से चलकर, कृष्ण सभा के माय हो ॥ प्र० ९ ॥ दीना पत्र दूतने हरि को, लिखा उसी के मॉई । मेरे सर पर आप धणी हैं, तुमसे प्रेम सदाई हो ॥ प्र० ॥ १० ॥ फिर भी प्रेम वढाने को, एक वात मेरे मन आई । लड़के का सम्बन्ध होय तो प्रीति होय सवाई हो ॥ प्र० ११ ॥ मेरी कन्या कुवर आपका, जो हो सम्बन्ध विचार । या सुन मेरा सुता आपकी, करो शीघ्र स्वीकार हो ॥ प्र० १२ ॥ प्रसन्न होकर श्री कृष्ण न लीनी बात को मान । दूत सीख हरिजी से ले, आया अपने स्थान हो ॥ प्र० १३ ॥ भामा छल रुक्मणि का ताके, वाल न वाका होय । जिसपै कृपा हरि की उसको, कुछ भी कहे न कोय हो ॥ प्र० १४ ॥ दुर्योधन नृप की बातो का, भेद भामा जी पाई । रुक्मणि को दुख देने कारण, युक्ति एक उपाई हो ॥ प्र० १५ ॥ जिसके सुत का ब्याह प्रथम हो, उस विवाह के मॉई । दूजी दे दे वाल निज शिरके, रक्खे पाव तल लाई हो ॥ प्र० १६ ॥ उससे वडी उम्र मे मैं हू, होगी मुझ सन्तान । रुक्मणि के सुत नहीं होने से, उसका है अपमान हो ॥ प्र० १७ ॥ यह विचार दासी के जरिये, रुक्मणि को कहलाया । भामा शर्त यह करना चाहे, ऐसा आन जताया हो ॥ प्र० १८ ॥ देखो भामा कैसी भोली, क्या बांधा अनुमान । जैसे डोहला खर खाने का, होता श्रेष्ठ मत मान हो ॥ प्र० १९ ॥ उत्तम के उत्तम हो इच्छा, नीचा नीची जान । मती विचारे ऊंची नीची, भावी है बलवान हो ॥ प्र० २० ॥ शकुनो माहिं जान शिरोमणि, वाणी शकुन कहाय । पाप पुण्य के अनुसार ही, वाणी उपजे आय हो ॥ प्र० ॥ २१ ॥ सुन दासी के वचन रुक्मणि, बोली वचन उदार । भामाजी हैं बड़ी वही जो, कहदे मुझे

यही देवता बैठ यानमें चालिया क्रीड़ा स्थान। रुक्मण महलके ऊपर आता अटकगया विमान हा।प्र०५७। चिंतातुर हो देव चिंतवे
क्यों विमान अटकगया। के कोइ मित्र पड़ा संकट में या अरिहंत मुनिराया हो॥ प्र० ५८॥ इस कारण का मालूम देव ने तुरन्त
लगाया ज्ञान। मधु भूप का जीव हुआ यह रुक्मण के संतान हा॥ प्र० ५९॥ ऐसा मालूम सुर ज्ञान से जाना मधु भूप का
जीव। रुक्मण के बालक हो जन्मा, बाल्या द्वेष अतीव हा॥ प्र० ६०॥ इस पापी मधुराजा ने पहले मुझ घर दिया बिगार।
उस दुष्ट का फल आज दिखाऊँ पड़ गया आप करार हो॥ प्र० ६१॥ यहाँ पर यह बलवान् भूप था मैं हूँ यहाँ बलवान्।
यह अवसर बदला लेने का ऐसी चित्त में ठान हो॥ प्र० ६२॥ रुक्मण की छाती आगे से, लिया देव ने बाल। किसी सुभट ने
भेद न पाया कितने न रखवाल हा॥ प्र० ६३॥ तारागण के ऊपर राहु चोर चले उस पार। चाहे कितने रखवाल पास हों
मार न चले लगार हा॥ प्र० ६४॥ भविष्य-काल की आशा करना मत हानी हो सा हाय। रुक्मण माती किस विचार म
मलख मना बोल हो। प्र० ६५। कौन मौत से मारूँ इसे सुर साथ न्याय लगाइ। चम शरीरा पूर्ण आयुष्य, यह मरन का नाइ
हो॥ प्र० ६६॥ ऐसा सोच तक्षक पर्वत पर रख दीना अटवी माही। विशाल शिला के नीचे बालक, दाना देव दबाइ हो
॥ प्र० ६७॥ किया कर्म का फल मागवते यूँ कहि देव सिधाया। पुण्य प्रभाव नख-शिखा तक शिशु के आंच न आया हा
॥ प्र० ६८॥ जितने तारे गगन बीच म इतने शत्रु होय पुण्य-सगा जाके होवे तो बाल न बांको होय हा॥ प्र० ६९। भला
बुरा जगत् के माहिं, नहीं कोई कर सकता। पूर्वकृत कर्मानुसार ही दुःख सुख सब को मिलता हो॥ प्र० ७०॥ कंस कृष्ण जन्म
सत ही वक्त में मास नचाया। राम कृष्ण के योग न हा फिर मोटा भूप कहाया हा॥ प्र० ७१॥ उसी समय वैताड़ गिरि पर
मघकूटपुर नाम। यम सम रहे राजा वहाँ पर न्यायवन्त गुणधाम हो॥ प्र० ७२॥ कनकमाला पटरानी भूप के अति सुन्दर
सुकमाल। वायुयान में बैठ दम्पति आवे हैं वहाँ चाल हो॥ प्र० ७३॥ बालक के श्वासाश्वास से चली शिला उस बार। देखी

नीची रोती देख नृप, दिल मे हुआ विचार हो ॥ प्र० ७४ ॥ शिला हटा के देखा आपने, अद्भुत देवकुमार। सब विधि सुन्दर
अति मनोहर, करतो हास अपार हो ॥ प्र० ७५ ॥ उठा प्रेम से तुरत वाल को, हृदय भूप लगाया। और कहा अपनी पत्नि को,
यह मोहन मन भाया हो ॥ प्र० ७६ ॥ हे प्यारी थें पूर्व जन्म मे, दिया मुनि को दान। सर्व सुलक्षण को आगर, देऊ तुझे
सन्तान हो ॥ प्र० ७७ ॥ हे प्राणेश्वर ! वहुत आप के, हैं घर राजकुमार। यह पाया हुआ नन्हा सा वाल, कुण पूछे दरबार हो
॥ प्र० ७८ ॥ मुख तबोल से तिलक करी कहे, इसे युवराज बनाया। तब तो राणी लेई गोद में हर्षानन्द मनाया हो ॥ प्र० ७९॥
शत्रु रुष्ट हो क्या कर सकता, जो सज्जन की महेर। मनवाञ्छित आशा पुर्ण हो, लगे न किञ्चित देर हो ॥ प्र० ८० ॥ दम्पति
शीघ्र महल मे आया, जा सोइ एकन्त रानी। गुप्त-गर्भिणी कनकमाला ने, सुत जाया सुखदानी हो ॥ प्र० ८१ ॥ प्रकट हुई
यह वात शहर मे, हर्षे सब नर नार। मगल गावे महिला मिल के, हो रहे मगलाचार हो ॥ प्र० ८२ ॥ ढोल नगारा वाजा
वाजे, छोड़े वन्दीमान। सारा शहर सिंगारा जन ने, शोभा स्वर्ग-समान हो ॥ प्र० ८३ ॥ अन्न अभय विद्या औषधादि, देते
वाञ्छित दान। राजा महोत्सव खूब मडाया, भेटा गुरु गुणवान हो ॥ प्र० ८४ ॥ द्वादशवें दिन नृप कुटुम्ब मिल, थाप्यो
नाम उदार। पर को यमे इसी कारण से, प्रद्युम्न कुमार हो ॥ प्र० ८५ ॥ बीज कला ज्यो बढ़े सदा सुत, इत बढ़े राज
भण्डार। कमल कमल पर षट्पद झूमे, यो हाथो हाथ कुमार हो ॥ प्र० ८६ ॥ स्वघर आदर मिले किसी को, इसमे कौन
वड़ाई। सत्कार मिले जिसको परघर मे, उसकी पूर्ण पुन्याई हो ॥ प्र० ८७ ॥ कोई परजन कोई कामकुमर कहे, निरख २ हुल-
सावे। जैसे दीपक जहा जावे वहीं, प्रकाश २ होजावे हो ॥ प्र० ८८ ॥ दोहा —श्रुतदेव वन्दन करी, नमी गुरु चरनार।
अब पीछे का कहू जिक्र, श्रोता सुनो इस वार ॥ प्र० ८९ ॥ तत्क्षण जागी राणी रुक्मणी, पास पुत्र नहीं पाया हृदय ज्वाल
प्रगटी अति उसके, धरणी पछाड़ा खाया हो ॥प्र० ९०॥ सचेतन करे पुन. मूर्च्छित हो, फिर छूटी अश्रुधार। शोध किये न

स्वीकार हो ॥ प्र० २२ ॥ रुक्मणि के हरि हुए साक्षी भामा के बलराम। शर्त करी सौका ने मिलकर क्या निकला परिणाम हो
॥ प्र० २३ ॥ रुक्मणि सोइ था शैय्या में रजनी के दरम्यान। सहस्र रश्मियों सहित स्वप्न में, देखा सूर्य प्रधान हो ॥ प्र०
॥ २४ ॥ खुली नींद आनन्दित हो कर, आई पति के पास। शुभ स्वप्ना देखा था वैसा कहा पति उल्लास हो ॥ प्र० २५ ॥
कृष्ण कहे सुन ले भामिनी स्वप्न के परिणाम। कुल में तिलक समान पुत्र हो रूप कला गुण धाम हो ॥ प्र० २६ ॥ मधु सूप
का आप जानना जननी का सुखदाई। स्वर्ग बारहवें से अवतारा मुक्ता सीप का नाई हो ॥ प्र० २७ ॥ भामा ने भी स्वप्ना
देखा हरि का भान सुनाया। कर विचार श्री कृष्ण आप ने अच्छा फल बतलाया हो ॥ प्र० २८ ॥ यह भी स्वर्गलोक से चल
कर आया जीव उदार। भामा के अवतरा उदर में हर्षो सब परिवार हो ॥ प्र० २९ ॥ अब से गर्व रहा भामा के हुआ
रस अभिमान। शर्त जीतने की मन मांही भारी भर अरमान हो ॥ प्र० ३० ॥ दोहला पुण्य प्रभावे उपजे शुभ अच्छे
हर बार। दान शील तप भावना भावे करणी करे सुविचार हो ॥ प्र० ३१ ॥ रुक्मणि के उर बढ़ गर्भ उर मन में हर्ष
अपार। आरीसा का प्रतिबिम्ब ज्यों पीड़ा नहीं लगार हो ॥ प्र० ३२ ॥ त्रिवली देख हृदय में सोच
उदर बढ़ा न रंच। त्रिवली पढ विलोक एक दम आता सोच प्रपंच हो ॥ प्र० ३३ ॥ झूठ
करामत ये दिखता नहीं गर्भ के निशान। मालूम होगी सर मुंह पर निकल आयगी शान हो॥ प्र० ३४ ॥ सच्चे को नहीं
सांच खरा, झूठ को सोच अपार। निष्कपटी सच्चा होता है उस ने चिन्ता लगार हो ॥ प्र० ३५ ॥ दिन पूरे जन्मा सुत
सुन्दर शुभ पक्ष शुभ वार। सुनी पाई रुक्मणि अधिक हर्षो सब परिवार हो ॥ प्र० ३६ ॥ सच बधाई आय पुरुष
मिल हर करी बहु नाय। मोद खबर हरि को देन पौव तक सब आय हो ॥ प्र० ३७ ॥ इसी समय भामा सुत जाया
भारे तम प्रधान। दें न आय सिरहाने सब ही अपठ पक्ष निज मान हो ॥ प्र० ३८ ॥ जैसा जिनके ठाकुर होय वैसे

चाकर होय । गर न हो विश्वास किसे तो, प्रत्यत्त लेना जोय हो ॥ प्र० ३६ ॥ इतने जाग उठे श्री माधव रुक्मणि के प्रधान । चिरजीवि हो सदानथ यो, वोले मिष्ट जबान हो ॥ प्र० ४० ॥ शुभ्र वधाई लावे हैं हम, रुक्मणि जायो नन्द । नन्द दिनन्द समान है सुन्दर, हो देखते परमानन्द हो ॥ प्र० ४१ ॥ राज चिह्न रखकर भूपति ने, अन्याभरण उतार । पुत्र-जन्म की खुशी वीच मे दिये उन्हे उस बार हो ॥ प्र० ४२ ॥ पीछे मुडकर देखा हरिने, चलवल सुनकर कान । भामा के सुत हुआ वधाई, आप सुनो श्रीमान् हो ॥ प्र० ४३ ॥ वस्त्राभूषण उनको भी दे, अनुचर को बुलवाया । शहर सजाओ हुकम लगाया, महोत्सव खूब मनाया हो ॥ प्र० ४४ ॥ याचक जन आशा कर आते, पाते इच्छित दान । श्री कृष्ण ने पुत्र खुशी मे, छोडे वन्दीवान हो ॥ प्र० ४४ ॥ सकल सुहागिन मिली हर्ष से, गावे मगलाचार । रुक्मणि भामा के महलो मे, हो रहा जै जैकार हो ॥ प्र० ४६ । सज्जन जन सबको सन्तोषा, सन्तोषा परिवार । यथा योग्य कर अतर पान, खूब करा सत्कार हो ॥ प्र० ४७ ॥ गुरुदेव की सेवा सारी, पूज्य पुरुष को मान । साधर्मी की करी सुश्रूषा, दे आदर सन्मान हो ॥ प्र० ४८ ॥ या विधि हर्षानन्द मनाता, पाच दिवस हो पाया । अव छठे की कहू वार्ता, जो भावी वर्ताया हो ॥ प्र० ४६ । रुक्मण का सुत-हरण हुआ, दुख दिल मे नहीं समाया । दिनकर अस्त हुआ फिर क्या ? रजनी ने राज्य जमाया हो ॥ प्र० ५० ॥ सज्जन जन परजन के दुख को, देखत कपे काय । बने तो करते सदा सहायता, या टालो ले जाय हो ॥ प्र० ५१ ॥ कर्म सामने वली न कोई, एक भूप एक सार । रुक्मण सुत से सोती मोद से आशा धरी अपार हो ॥ प्र ५२ ॥ महिला गावे रात जगावें, वाजा वजे उस बार । पहरा वाहर विठा गिरधारी सोया भवन मझार हो ॥प्र०५३॥ पूर्व भव इक हिमरथ राजा, इन्दुप्रभा पटनार । अयोध्यापुरी के मधु भूप का, था यह जागीरदार हो । प्र० ५४ । मधुनृप कामान्ध वना, लख हमरथ की राणी । जबरन से कान्ता वनवाली, दुर्नीति दिल ठाणी हो ॥प्र०५५॥ हेमरथ का नहीं चला जोर जब, तापस का ले योग । बाल-तपस्या कर मरके, गया प्रथम सुर लोक हो ॥प्र० ५६ ॥

मही देवता बैठ यानमें चालिया क्रीड़ा स्थान। रुक्मण-महलके ऊपर आता अटकाया विमान हो ।प्र०५७। चिंतातुर हो देव चिंतवे क्यों विमान अटकाया। कै कोइ मित्र पड़ा संकट में या अरिहंत मुनिराया हो ॥ प्र० ५८ ॥ इस कारण का भाव देव ने तुरन्त लगाया ज्ञान। मधु भूप का जीव हुआ यह रुक्मण के सतान हो ॥ प्र० ५९ ॥ एमा साथ सुर ज्ञान से जाना मधु भूप का जीव। रुक्मण के बालक हो जन्मा, आग्यो द्वेष अतीव हो ॥ प्र० ६० ॥ इस पापी मदयाव ने पहले मुझ पर किया विगार। उस कृत्य का फल आज दिखाऊँ, चढ़ गया कोप करार हो ॥ प्र० ६१ ॥ यहां पर यह बलवान् भूप था मैं हूं यहां बलवान्। यह अवसर बदला लेने का एसी दिल में ठान हो ॥ प्र० ६२ ॥ रुक्मण की छाती आगे से, लिया देव ने बाल। किसी सुभट ने भेद न पाया, कितने थे रखवाल हो ॥ प्र० ६३ ॥ तारागण के देखत राहु चांद ग्रसे उस वार। चाहे जितने रक्षक पास हों जोर न चले लगार हो ॥ प्र० ६४ ॥ भविष्य-भाव की धारा करो मत होना हो सो होय। रुक्मण सोवे किस विचार में मतलब लेना जोय हो। प्र० ६५॥ कौन मौत से मारूँ इस सुर सोचे न्याय लगाई। चम शरीरी पूर्ण आयुष्य यह मरने का नाइ हो ॥ प्र० ६६ ॥ ऐसा सोच तक्षक पर्वत पा रख दीना मटकी माई। विशाल शिला के नीचे बालक, शाना देत्य दबाई हो ॥ प्र० ६७ ॥ किया कर्म का फल भागवजे यूं कहि देव सिधायो। पुण्य प्रभावे नख-शिखा तक शिशु के आंच न आयो हो ॥ प्र० ६८ ॥ जितने तारे गगन बीच में इतने शत्रु जोय पुण्य-सत्ता जाके होवे तो बाल न बांको होय हो ॥ प्र० ६९। भला बुरा जगत् के माँहि, नहीं कोई कर सकता। पूर्वकृत कर्मानुसार ही दुःख सुख सब को मिलता हो ॥ प्र० ७० ॥ कंस कृष्ण जन्म तब ही जल में मास नखाया। शुभ कर्म के योग से हा फिर मोटा भूप कहाया हो ॥ प्र० ७१ ॥ उसी समय वैताढ्य गिरि पर मेघकूटपुर थान। यम सम रहे राजा वहाँ पर, न्यायवन्त गुणवान् हो ॥ प्र० ७२ ॥ कनकमाला पटरानी भूप के, अति सुन्दर सुकमाल। यानयान में बैठ दम्पति, आये हैं यहाँ चाल हो ॥ प्र० ७३ ॥ बालक के श्वासोश्वास से, मही शिला उस बार। ऊँची

नीची होती देख नृप, दिल में हुआ विचार हो ॥ प्र० ७४ ॥ शिला हटा के देखा आपने, अद्भुत देवकुमार। सब विधि सुन्दर अति मनोहर, करतो हास अपार हो ॥ प्र० ७५ ॥ उठा प्रेम से तुरत बाल को, हृदय भूप लगाया। और कहा अपनी पत्नि को, यह मोहन मन भाया हो ॥ प्र० ७६ ॥ हे प्यारी थे पूर्व जन्म मे, दिया मुनि को दान। सर्व सुलक्षण को आगर, देऊ तुझे सन्तान हो ॥ प्र० ७७ ॥ हे प्राणेश्वर ! बहुत आप के, हैं घर राजकुमार। यह पाया हुआ नन्हा सा बाल, कुण पूछे दरबार हो ॥ प्र० ७८ ॥ मुख तम्बोल से तिलक करी कहे, इसे युवराज बनाया। तब तो राणी लेई गोद मे, हर्षानन्द मनाया हो ॥ प्र० ७९॥ दम्पति शत्रु रुष्ट हो क्या कर सकता, जो सज्जन की महेर। मनवाञ्छित आशा पूर्ण हो, लगे न किञ्चित देर हो ॥ प्र० ८० ॥ शीघ्र महल में आया, जा सोइ एकन्त रानी। गुप्त-गर्भिणी कनकमाला ने, सुत जाया सुखदानी हो ॥ प्र० ८१ ॥ प्रकट हुई यह बात शहर मे, हर्ष सब नर नार। मगल गावे महिला मिल के, हो रहे मगलाचार हो ॥ प्र० ८२ ॥ ढोल नगारा बाजा बाज, छोडे बन्दीमान। सारा शहर सिंगारा जन ने, शोभा स्वर्ग-समान हो ॥ प्र० ८३ ॥ अन्न अभय विद्या औपधादि, देते वाञ्छित दान। राजा महोत्सव खूब मडाया, भेंटा गुरु गुणवान हो ॥ प्र० ८४ ॥ द्वादशवे दिन नृप कुटुम्ब मिल, थाप्यो नाम उदार। पर को यमे इसी कारण से, प्रद्युम्न कुमार हो ॥ प्र० ८५ ॥ बीज कला ज्यो बढ़े सदा सुत, इत बढ़े राज भण्डार। कमल कमल पर पट्पद झूमे, यों हाथों हाथ कुमार हो ॥ प्र० ८६ ॥ स्वघर आदर मिले किसी को, इसमे कौन बड़ाई। सत्कार मिले जिसको परघर मे, उसकी पूर्ण पुन्याई हो ॥ प्र० ८७ ॥ कोई परजन कोई कामकुमर कहे, निरख २ हुलसावे। जैसे दीपक जहां जावे वहीं, प्रकाश २ होजावे हो ॥ प्र० ८८ ॥ दोहाः—श्रुतदेव बन्दन करी, नमी गुरु चरनार। अब पीछे का कहू जिक्र, श्रोता सुनो इस बार ॥ प्र० ८९ ॥ तत्क्षण जागी राणी रुक्मणी, पास पुत्र नहीं पाया हृदय ज्वाल प्रगटी अति उसके, धरणी पछाड़ा खाया हो ॥प्र० ९०॥ सचेतन करे पुन मूर्च्छित हो, फिर छूटी अश्रुधार। शोध किये न

मिला बालक, सब रोई कर किलकार हो ॥ प्र० ९१ ॥ निज हाथों स हृदय हृदय ने भांति ओर कुरलाय । रान मचन पासता मुख स, क्यों मुझ साथ बचाय हो ॥ प्र० ९२ ॥ बिलख बिलख कर कह हरूमस्तु र मुन्दर मुखमाल ! कहां गया तू छोड़ मात न यह मुख बड़ा कराल हो ॥ प्र० ९३ ॥ छठ कुरकुरी उर्वी उसके मरना सही न आय । हे बाया ! तुममा नहिं कोइ, जो इस्से मुखपाय हो ॥ प्र० ९४ ॥ गुड़ से खांड मीठी है ज्यादा, शक्कर स मिश्री जान । उसस भी अमृत भउ है सब से पुत्र प्रधान हो ॥ प्र ९५ ॥ बिना बन्धु के दिशा शून्य है, घर सूनो बिन पूत । पुत्र बिना ऐसा इस जग में दुख राग्ने घर सुत हो ॥प्र ९६॥ सुत से फूली फली सब कहवें सुत बिन कहवें बांझ । चाह जितने सजन भगर हों पर सुत मे हो सब काम हो ॥ प्र० ९७ ॥ मुझसे भली पखिणी वन में, अंडा पालण हार । चुग्गा चुगी चोंच में लाय यह स मूह पसार हो ॥ प्र० ९८ ॥ क्यों मनुपक्षी मुझे बनाई कहू रेख के तांय । अगर गर्भ में ही गल जाता तो दुख पाती नाय हो ॥ प्र० ॥ ९९ ॥ या तो जन्म छत मरजाती क्यों म्हारी पसी नहीं टूट । रोग निमित्त या बन मे गिरती या मरती सिर फूट हा ॥ प्र० ॥ १०० ॥ बाल बय के खेल काज में पानी लेने जाती । क्यों न सपनी वहां यस गांई पिता के प्राण गमाती हा ॥ प्र०१०१ ॥ क्यों मुझ ब्याह हुआ हरि संग क्यों पाया इतना मान । शोक-शाल स सहज ही में तो जाता छूट भगवान हो ॥ प्र० ॥ १ २ ॥ क्यों स्वप्ना आया शुभ मुझको, क्यों जाया घर लाल । क्यों मैं छोड़ चली भामा से अब आव सब ख्याल हा ॥ प्र० १०३ ॥ ऊंची चढ़ जाती पाताल में छेरी मनोरथ माल । अन्न तोय भोगण निरंस लीनो कम उगाल हो ॥प्र० १०४ ॥ पृथ्वी मेरी सर को फोड़ा सोलाव्या ग्रहवार । मनगस नीर चापरा मैंने, अक्ष से भाग गुमाई हो ॥ प्र० १०५ ॥ रच लगाया वायु बीजणे सखी सरस सवाई । कमि सू लीक को मारा बिच्छू मार हर्गोई हा ॥ प्र० १०६ ॥ पशु पक्षिणी मनुष्यणी में बाल-बिछोवा कीमा । पक्षी-माला तोड़ी मैंने, सो फल प्रत्यक्ष लीना हा ॥ प्र० १०७ ॥ जाल फरी मच्छीने मारी

मृग को फासा पाश। कसाव-कर्म किये बेरहमी से, ईंडा किया विनाश हो ॥ प्र० १०८ ॥ मर्म किसी का मैं प्रकाशा, झूठी भरी गवाई। चोरी करी दिया दुख परने, जिसका यह फल पाई हो ॥ प्र० १०६ ॥ शुद्ध शीलव्रत नहीं पाला, लालच-वश करी लडाई। रात्रि-भोजन किया मोद से, सासु बहू सताई हो ॥ प्र० ११० ॥ मदिरा मास का आहार किया मैं, दया-भाव विसराया। इत्यादिक अपराध किया, रुक्मण पुत्र गमाया हो ॥ प्र० १११ ॥ क्षण उठे क्षण बैठे रुक्मण, क्षण में चढे चौबार। देखा किसीने मेरा नानड़ा, प्यारा प्राण-आधार हो ॥ प्र० ११२ ॥ शोर सुणी ने कृष्ण नरेश्वर, शीघ्र दौड के आया। पुत्र चोर को जल्दी पकडो, ऐसा शब्द सुनाया हो ॥ प्र० ११३ ॥ पति देख दुख से पीडित हो, कहे रुक्मण कुरलाय। देव तुम्हारे राज्य बीच में, मुझ को लूटी आय हो ॥ प्र० ११४ ॥ रुक्मण-दुख से कृष्ण दुखित हो, बोले धैर्य बधाया। मिले नन्द तेरा तुझ ताई, करसू वही उपाय हो ॥ प्र० ११५ ॥ शोधन-काज सुभट दौड़ाया, सो फिर पाछा आया। किया उपाय नाना विधि हरिने, पता रच नहीं पाया हो ॥ प्र० ११६ ॥ दे विश्वास रुक्मण के ताई शात करी यदुराय। पुण्य-प्रभाव नारद चल आया, उसी समय के माय हो ॥ प्र० ११७ ॥ ऋषी कहे बेटी सुण मेरी, चिन्ता दूर निवार। उसको दुख कभी नहीं होवे, जिसका हरि भरतार हो ॥ प्र० ११८ ॥ तेरी कुक्षी से जो सुत जाया, उसका माधव तात। ओछे आयुष्य वह नहीं मरता, साच कहू तुझ बात हो ॥ प्र० ११६ ॥ पूर्व-भव के शत्रु हरा है जल्दी शोध लगाऊ। जो यह कारज नहीं करू, नहीं नारद नाम धराऊ हो ॥ प्र० ॥ १२० ॥ रुक्मण के सुत-हरण की, जो भामा सुन पाई। मन-इच्छित यह काज हुआ, मैं जीती होड़ के मांइ हो ॥ प्र० १२१ ॥ ज्ञान बिना जाना नहीं जावे, यही निश्चय मन ठाई। ऐसा सोच सीमधर प्रभु पै, नारद आये चलाई हो ॥ प्र० १२२ ॥ विधि से करी वदना जिनन्द ने, स्पर्शा चरण चितलाई। भीड रही मनुष्य की भारी, रहे तखत तल आई हो ॥ प्र० १२३ ॥ लघु शरीर अरु नराकार लख हाथ मे उसे बैठाई। विस्मित होय चक्रवर्ती राजा, पूछे प्रभु के ताई हो

॥ प्र १२४ ॥ हे प्रभु यह कौन जन्तु है, कौन काज यहाँ आया। संशय मेरा आप मिटाओ कर कृपा जिनराया हो ॥प्र० १२५॥
सीमंधर प्रभुजी निर्णय कर दीज मेरी बात को ॥ टेक ॥ हे राजन् यह नारद ऋषी है शीलवत गुणधाम्। भरतखंड से पूछन
आया, सो सब कहूं बयान हो ॥ सी १२६ ॥ नगरी द्वारिका है बहु सुन्दर जहाँ माधव है राय। पटरानी है रुक्मणी उनके
पवित्रता सुखदाय हो ॥ सी० १२७ ॥ इसका नन्दन-हरण हुआ है छटी रैन मँझार। वैरी वैर का कबहुँ न भूले यह जग का
व्यवहार हो ॥ सी० १२८ ॥ ग्राम नगर और गिरिकन्दरा शोध कराई राय। पता पुत्र का कहीं न पाया आधि दुःख पद माय
हो ॥ सी० १२९ ॥ निर्णय करन काज आज यह, आया है ऋषिराज। जो जिसका पक्ष करे है उसी को उसकी लाज हो ॥सी०
१३० ॥ पद्मरथ नामक करी विनंती, भाखो दीन दयाल। किस वैरी ने हरण करा है है कहाँ नन्हा बाल हो ॥ सी० १३१ ॥
किसन काल के बाद नाथ यह कुंवर कुल-शृंगार। मात पिता से आय मिलेगा प्रभु कहे इस बार हो ॥ सी० १३२ ॥ साथी मात
स वैरी देव न बालक लिया उठाई। तक्षक पर्वत-उपवन रक्खा मिला खेचर के तांई हो ॥ सी० १३३ ॥ बड़ा होने पर दो
विद्या और सोलह लाभ कमाइ। मात पिता से आय मिलेगा सोलह वर्ष के मांई हो ॥ सी० १३४ ॥ मिलने की निशानी
बताऊं, अब पाना चहुसी मात। हर्षानन्द होगा उस दिन ही, मिल उस भग आत हो ॥ सा० १३५ ॥ सूखे सरवर हरे होवेंगे
शुष्क निवास हो पाखी। बिना ऋतु फल फूल लगेगा, कोकिल बोले वाणी हो ॥ सी १ ६ ॥ सखी-नृत्य हो विविध
बधाया मूका हो वाचाल। बांका सरल भग सहे पङ्गु, कुरूपा रूप-रसाल हो ॥ १३७ ॥ सुन आगम-लक्षण कहा अब
वैरी का करू बखान। वेरा वधि में मगध शिरामणि शालिग्राम प्रधान हो ॥ सो० १३८ ॥ सोमदत्त ब्राह्मण वहां रहता ?अग्नि
मीता है नार। अग्निभूत और वायुभूति दोनों पुत्र उदार हो ॥ सी १३९ ॥ नन्दीवर्धन गुरु पधारे, दश लक्षणी धर्म-धारी।
दोनों बन्धु विचार-काज वह पर से चल कर तैयारी हो ॥ सी १४ ॥ सत्यमूर्ति मुनि पूर्व मार्ग में कहो आओ तुम भात।

विवाद-काज जावें मुनि पै, हैं कैसे वे ज्ञाता हो ॥ सी० १४१ ॥ हारे पै है होड़ कौनसी, हम लेवें संयम भार। खडा किया विवाद जोर का माने नहीं लगार हो ॥ सी० १४२ ॥ मुनि कहे तुम पूछो हम से, क्या संशय मन माईं। तब तो कहें हमें नहिं संशय, तुम पूछो हम ताइ हो ॥ सी० १४३ ॥ मुनि कहे तुम कहा से आये, बोलो विप्र विचार। सो कहे हम घर से चल आये, क्यों पूछा अणगार हो ॥ सी० १४४ ॥ हमने की परभव की पूछा, यहा आने की नाईं। सो कहे परभव जाननहारा, नहीं मनुष्य जग माईं हो ॥ सी० १४५ ॥ तुम कहो परभव कुण जाणे, सुनो विप्र इस वार। इसी ग्राम मे ब्राह्मण रहता, प्रवर नाम उदार हो ॥ सी० १४६ ॥ करता था खेती वह एक दिन, हल खडवाने धायो । घटा बादल की चढ़ी जोर से, देख घरे फिर आयो हो ॥ सी० १४७ ॥ दिवस सात एक साथ पाणी वह, वर्षा अखडित धार । खुला अष्टमे दिन तब पशुओ को, व्यापी क्षुधा अपार हो ॥ सी० १४८ ॥ जम्बुक युगशकट चर्म की, नाड़ी तोड ने खाई । उदर आफरी ढोल हुआ ज्यो, दीना प्राण गमाई हो ॥ सी० १४९ ॥ सो जम्बुक तुम ही आ जन्मे हो, सन्देह नही लगार । इसका कारण प्रकट बताऊ, आगे सुणो अधिकार हो ॥ सी० १५० ॥ खेत धणी आ शकट देखने, खिजा मन के माइ। जम्बुक चर्म की बना भाथडी, ऊची दी लटकाई हो ॥ सी० १५१ । जो नहीं मानो प्रत्यक्ष देखलो, लोग देखने आया। इसी बात से दोनों ब्राह्मण, मन मे बहुत खिजाया हो ॥ सी० १५२ ॥ प्रवर विप्र की सुनो वार्ता, छोडे उसने प्राण। मोह-वश वह निज पुत्र के, हुआ पुत्र अब आन हो ॥ सी० १५३ ॥ निज घर देखी मनन करी जब जाति स्मरण पाया। बेटे को बाप बहु को माता, कहने में सकुचाया हो ॥ सी० १५४ ॥ तब से मौन ग्रही यों सोची, जन दियो मूको नाम। यह प्रत्यक्ष खडा सामने, देखो लोग तमाम हो ॥ सी० १५५ ॥ चक्रवृती कहे उस मूक को कैसे मुनि बोलाया। यह सुनने का प्रेम बहुत है, फरमावो जिनराया हो ॥ सी० १५६ ॥ सीमधर जिनेश्वर संशय, तम भेदन मानो भान हो ॥ टेक ॥ मूका से मुनिराज कहे

है, इसका नाम ससार । पुत्र पिता भी बन जाता है माता सुता की नार हो ॥ सी० १५७ ॥ बहन मरी सौकन बन जाय
बांधव शत्रु समान । ज्ञानी मर अज्ञानी बनजा शठ मर हो विद्वान हो ॥ सी० १५८ ॥ चाकर ठाकर निधन सधन, यों
उलट पलट हो जाय । कर्म शुभाशुभ के कारण आवागमन रचाय हो ॥ सी० १५९ ॥ जग व्यवहार के साथ परतना
राग म एक सगार । तब मूका मोक्ष के सयम साना मिथ्या क्षस ससार हो ॥ सी १६० ॥ द्वार बाग में दानों
ब्राह्मण घर आये उस बार । मात पिता ने दानों सुत का किया बहु तिरस्कार हो ॥ सी० १६१ ॥ साधु का
उपद्रव करन हित अन्धकार रैन में आया । धर्मी यक्ष म उन दोनों को चिपका स्थम्भ बनाया हो ॥ सी० १६२ ॥ मात
पिता ने आत' वहीं आ मुनि को अपराध खमाया । दया क्षाम मुनि उन्हें छुडाया सब से समकित पाया हो ॥ सी० १६३ ॥
मात पिता पुन' बने मिथ्याती पाव नन्द व्रत सुख पाम । पहल स्वग म पांच पल्योपम, आयु पाया रसाल हो ॥ सी० १६४ ॥
उसी समय अयाध्या नगरी, शत्रुञ्जय नृप नाम । प्रजा का पुत्रवत् पाल, पूर्ण नीतिवान् हो ॥ सी० १६५ ॥ सागरदत्त है सेठ
वहां पर, सठों में भगवान् । सठाणी है जिनके धारणी, पास अरिहन्त आण हो ॥ सी० १६६ ॥ दानों बन्धु चवी स्वर्ग से, पुत्र
सठ घर आया । माणभद्र और पूर्णभद्र ये नाम रूपे सजाया हो ॥ सी० १६७ ॥ पढ़-लिख होशियार हुवे जब सेठ उन्हें परणाया ।
पूर्व पुण्य-प्रभाव करीने, मन-इच्छित सुख पाया हो ॥ सी० १६८ ॥ महेन्द्र मुनिश्वर आया बाग में नगरी में सुन पाइ । नृप
सेठादिक वासी सुनमा आय हृदय बसाई हो ॥ सी० १६९ ॥ वाणी सुन क सठ तुरंत ही त्याग दिया संसार । दोनों सुत ने
श्रावक व्रत, श्रावक के कीने धार हो ॥ सी० १७० ॥ कालान्तर फिर मुनि पधारे, वन्दन जाते मग माई । कुत्ती सहित चा-
ण्डाल मिला तब उन प्रेम गया बढ़ाई हो ॥ सी १७१ ॥ आये मुनि का वन्दना कीनी, पूछा फिर हर्षाई । कुत्ती स्वपाक पे
प्रेम मेरा, क्यों हुआ दीजे फरमाई हो ॥ सी १७२ ॥ विप्र जन्म में मात तात तब, वहां से नर्क में जाय । वहां स निकल

चण्डाल, शुनी हो, पूर्व-प्रेम प्रगटाय हो ॥ सी० १७३ ॥ माणभद्र और पूर्णभद्र चल, शुनी स्वपाक पे आये। गुरुदत्त उपदेश दोनों को, भिन्न २ कर समझाये हो ॥ सी० १७४ ॥ चण्डाल की थी उमर मास की, श्रावक-व्रत को धार। सथारा कर के गया समय पर, पहले स्वर्ग मझार हो ॥ सी० १७५ ॥ पच पल्योपम की स्थिति पायो, भोगे सुख उदार। वर्त्तीस विधि नाटक पडते हैं, लाग रहा भणकार हो ॥ सी० १७६ ॥ मुनि ने भी अणसण धारी, सप्तम दिन कर काल। उसी शहर के राजा के आ, पुत्री हुई सुकमाल हो ॥ सी० १७७ ॥ भूप स्वयवर किया सुता का, देव वहीं पुन आय। कन्या को समझावे पर वह, बनी साध्वी जाय हो ॥ १७८ ॥ चरित्र पाल के प्रथम स्वर्ग मे, हुई देव अवतार। प्रसग यह बात सुणाई, सक्षेप कर विस्तार हो ॥ सी० १७६ ॥ दोनो बाधव अणसण धारी, प्रथम कल्प के माई। पच पल्यो की स्थिति पाये, भोगे सुख सदाई हो ॥ सी० ॥ १८० ॥ यहां से चवी अयोध्या के नृप, हेमनाभ के आई। धारावती रानी के युगल सुत, जन्मे वह सुखदाई हो। सी० १८१। मधु और कैटभ नाम है यौवन को वह पाया। ज्येष्ठ को राज्य दे और, लघु को युवराज बनाया हो ॥ सी० १८२ ॥ आप सयम ले तपस्या कीनी, सारथा आत्म काज। सुख से अब अयोध्या मे वहीं, मधुभूप करे राज हो ॥ सी० १८३ ॥ एक दिन सुन कोलाहल नृप, अनुचर से पूछी बात। तब तो कहे भीम भूपाल, डाकू करे उत्पात हो ॥ सी० १८४ ॥ पुर बाहर नर, पशु, धान्य धन, मिले हरण कर जावे। जिससे मच रहा शोर देश भी, उज्जड होता जावे हो ॥ सी० १८५ ॥ सरकारी असवार जाय जब, पहाड़ो मे छिप जावे। ऐसा योद्धा नहीं सुणा जो, इसको कब्जे लावे हो ॥ सी० १८६ ॥ इतना सुन ले फौज विकट सग नकारे डका लगाया। रज छाई सो सूर्य छिपाया, कायर जन थर्राया हो ॥ सी० १८७ ॥ वटपुर शहर एक आय पथ मे, भावी सके कुण टाल। हेमरथ राजा निज हित जानी, लाया महल तत्काल हो ॥ सी० १८८ ॥ जीमण की मनवार करी ने, पांत्या तुरत लगाया। इन्दुप्रभा निज राणी से, नृप वचन सुणाया हो ॥ सी० १८६ ॥ भाग्योदय से प्यारी हाथ मे, समय

ममाखड़ भाया । तुम हाथों से आय खिमाओ प्रसन्न हो महाराया हा । सा १९० ॥ ह कथा ! हो कौन होरा म कीज काम विचार । काला नाग सा भूपति आयी टाखो हो सरदार हो ॥ सी० १९१ ॥ मद्रक भूप कहे सुण तुमको रूप का है अभिमान । रूपवती इसके कइ दासियां तू वा दासी समान हो ॥ सी० १९२ ॥ परोसन काज रानी जब आइ राजा गया लुभाइ । ताइ गइ यह उनके मन की और न कोइ सत्त पाई हा ॥ सी १९३ ॥ राजा उठ एकान्त मंत्री स बोला बात सुन लीज । यह रानी मुझको पसन्द सो प्रम पत्र तू राज हो ॥ सी० १९४ ॥ बुद्धिवान् मंत्री नृप को समझा शीघ्र सिखाया । आकर मिलिये युद्ध मचाया यह भी भय घबराया हो ।सी०१९५। बांध लिया है जीवित उसको,मना कार्य मन चहाया । वटपुर पथ छुड़ा भूप का मिथा भयाच्या लाया होसी०१९६। भूप लीज बाला मंत्रीसे क्यों वटपुर मग छुटाया । दूगा मिला वापिस भावहो सा नहीं वाक्य निभाया हो ।सी० ।१९७ अपन वचन का पार लगाओ उसको शीघ्र मिलाओ । सौ बाता की एक बात है आ जावित मम चहावो हो ।।सी०१९८। मम पाणी नहीं भावे भूप न, नयना नींद नहीं आव । तन से छिन-छिन रूप हाय स्वप्न में वही दिखाव हो ॥ सी० १९९ ॥ ह राजन् ! दुर्ध्यमन जगत में है दुखों का दाता । सदा चन्द्र पारस्त्री रहत जो पर त्रिया चाहता हो ॥ सा० २०० ॥ बिन रस्सी क बन्द यही है बिना राग के रोग । बिन काजल के लगे कालिमा बिन मृत्यु का सोग हा ॥ सी० २०१ ॥ साढ़ा सात बप शनि रह, मन्त्र यह मिट जाव । पर घर स्नेह कर नर काइ, साथ जीव दुख पाव हो ॥ सी० २०२ ॥ वश डोल अपयश का जग म शिवपुर हक द्वार । कुम्भीपाक नर्क में जाव पर त्रिया मागनहार हो ॥ सी० २०३ ॥ हे मन्त्री तुम सात्य कहो पर मैं नहीं मानूं बात । बिना मिले इन्दुप्रभा के वर्ष सम दिन जात हो ॥ सी० २ ४ ॥ इतन बसन्त ऋतु चलि आइ वन-तरु गये विकसाइ । वन वाड़ा आराम मनोहर, सेलण रहा समाइ हो ॥ सी २०५ ॥ जगह-जगह का भूप बुलाया, सज्जन का मिस ठान । इन्दुप्रभायुत् हेमरथ का बुलवाया दीवान हा ॥ सी २०६ ॥ ह प्यारी मोरा राजा का, आया आज्ञ बुलावा । सजधज

के तैयार बनो, अब वहीं वसन्त मनावां हो ॥ सी २०७ ॥ रानी कहे महाराज खेल यह, मुझ पर खास रचाया। मत लेजाओ साथ नाथ, मैं सोच कहूँ पतिराया हो ॥ सी० २०८ ॥ भावविश नहीं माने भूप, अब क्या होवे समझाया। सीता तजी विपत में रघुवर, अन्त वही पछताया हो ॥ सी० २०६ ॥ राजा रानी लेकर आया, मधु नृप बहु हर्षाया। वसन्त खेल सरदार विसर गये रानी राखी धाया हो ॥ सी० २१० ॥ मधु राजा कामान्ध होय ने, थापी उसे पटराणी। नाना भांति सुख भोगवे, मानों इन्द्र इन्द्राणी हो ॥ सी० २११ ॥ जानी बात जब हेमरथ राजा, विकल हुआ तज भान। वली सामने जोर चले नहिं, कर्मों की गति जान हो ॥ सी० २१२। क्षण रोवे दशों दिशि जोवे आगण सेज के मांय। गवाक्ष चौवार देखे फिर-फिर, चैन पड़े उसे नाय हो ॥ सी० २१३ ॥ वस्त्र-रहित विकल रूप से, लोटे धूल के माईं। "हे प्रिय २" मुख से बोले, देखे लोग लुगाई हो ॥सी० २१४ ॥ पुरी अयोध्या फिरतो आयो, छेड़ करे नरनार। शोर सुणी रानी गवाक्ष से, देखा निज भर्तार हो ॥ सी० २१५ ॥ धाय भेज बुला हेमरथ को, पूछा एकान्त के माईं। पहले कहा तूने नहीं माना, मैं तुझ नारी नाईं हो ॥ सी० २१६ ॥ होश आय हेमरथ बोला, मेरे प्राण बचाओ। तू प्यारी मैं प्रीतम प्यारो, साथ हमारे आओ हो ॥ सी० २१७ ॥ वह पाणी मुल्तान गया, निकल यहां से बहार। जो राजा यह बात जानसी, करे फजीत अपार हो ॥ सी० २१८ ॥ होय फजीता रांड तेरा, तू बिगड़े दूध समान। धर्म-विटल यों कहकर वहा से, पहुंचा निज-स्थान हो॥ सी० २१६ ॥ मधु राजा उस रमणी के संग, होय रहा गल्तान। नहीं ईश्वर का ध्यान जरा भी, मोह भुलाया भान हो ॥ सी० २२० ॥ उसी समय परनारी-लंपट को, बान्ध सिपाही लाया। मारो इसे मत सुनो बात यह, राजा हुक्म लगाया हो ॥ सी० २२१ ॥ रानी पूछे कौन कृत्य से, यह मरता है आज। नृप कहे इसने परत्रिया-हरन का, मोटा किया अकाज हो ॥ सी० २२२ ॥ सप्तादश पाप तो एक तरफ, रक्खो कांटे के माय। एक तरफ परनारी-पातक, सब में अधिक गणाय हो ॥ सी० २२३ ॥ परनारी का दोष बताओ,

मुझ कौनसी परणी। अगर बीच में अपयश लीनो, पर-रमणी कर परणा हो ॥ सी० २४ ॥ कहने वाले बहुत मगर, विरले हैं करने वाले। आठ का ये वृद्ध तुरन्त पर माठे को कौन पाले हा ॥ सी० २२५ ॥ ऐसा वचन सुन राजा के दिल ज्ञान-वैराग्य समायो। हा धिक्कार ऐसे कुकृत्य को, कुल में कलंक लगायो हा ॥ सी० २२६ ॥ इस मौके मुनिराज पधारे, बहराया हित आहार। आहार बहराई भूप सूझता, सफल किया अवतार हो ॥ सी० २२७ ॥ राजा सौंपने ज्येष्ठ पुत्र को मधु कैटभ नृप सार संयम लेकर स्वर्ग पाराईवें, हुआ देव उदार हा ॥ सी २२८ ॥ इन्दुप्रभा भी संयम पाली रही नृप संग मांई। कनकमाला मर भाव उपजी स्नेह छिपता है नांई हो ॥ सी २२९। मधु भूप स्वर्ग-सुख भोगी राय रही पुण्याई। प्रद्युम्न कुमार हुआ रुक्मणी के हरि-घरा के मांई हा ॥ सी० २३० ॥ कैटभ सुर-सुख भोग स्वर्ग में, आखिर में यह आई। जाम्बवती के उत्पन्न होगा साम्बकुंवर सुखदाई हो ॥ सी० २३१ ॥ हेमरथ राजा आर्त-ध्यान वश, मरी जन्म कई पाया। धूम केतु नामा हुआ आके, वह असुरों का राया हो ॥ सी० २३२ ॥ जिसने बालक हरण किया है पूर्व वैर-भाव। ऐसा जान वैर मत करजो रखजो मन समभाव हो ॥ सी० २३३ ॥ श्रीमुख-वाणी श्रवण करीने, पाये भव्य प्रति बोध। सभी परस्पर किये क्षमापन छोड़ी वैर विरोध हो ॥ सी० २३४ ॥ धन्य है सीमंधर प्रभु को, सन्देह मिटाया सारा। धन्यवाद है चक्रवर्ती को पूछ किया निस्तारा हा। सी० २३५ ॥ नारद ऋषि निकल हाथ से, शीघ्रातिशीघ्र सिधाया। कब देखूं मैं प्रद्युम्न कुंवर को, हृदय-बीच उम्हाया हो ॥ सी० २३६ ॥ गिरिवैताढ्य जमसंवर गृह पास गगन स आया। कनकमाल ने भक्ति कीधी प्रसन्न हुआ ऋषिराय हो ॥ सी० २३७ ॥ गूढ़ गर्भिया तुमने सुन्दर, पुत्र रत्न को जाया। हा कहे ऋषि-कृपा से आनन्द मम घर वर्ताया हो ॥ सी० २३८ ॥ देखूं बारा नन्द निरोपम परखूं लक्षण सार। ऋषि सामन दिया लिटाई देखू आशिष जिसवार हो ॥ सी० २३९ ॥ चिरंजीवि रहा मन्द भरु, पूरो माव की आशा। ऋषि-आशिषा से लिया उठाई हृदय भरा हुलास हो ॥ सी०

॥२४०। मात सो मुख शुभ लक्षण गुणाकर, सब विधि सुन्दर जान। निरखता के नयन न धापे, काम देव समान हो। सी० २४१॥ नयन वहां से चल द्वारिका आया, हरि रुक्मण के पास। सीमधर प्रभु पै श्रवण किया, सो, दिया प्रकाश हो ॥ सी० २४२ ॥ बात सुनी हरि रुक्मण देख कुवर को आया, है आनन्द के माई। रत्न चढ़े देशावर ज्यों, कर्म से इज्जत पाई हो ॥ सी० २४३ ॥ आदिक पाया परमानन्द। धन्य ऋषि खबर तुम लाया, निर्णय करा जिनन्द हो ॥ सी० २४४ ॥ आशा प्यारी जगत बीच मे, आशा अम्मर जान। आशा से धन करे सम्पादन, आशा मे सन्तान हो ॥ सी० २४५ ॥ समर जीत घर आवे आश धर, आशा से सम्मान। आशा से हरिश्चन्द्र उग्र नृप, फिर वने राजान् हो ॥ सी० २४६ ॥ हरण करी रावण सीता को, राम पड़ी अन्तराय। आशा से जीवित रहकर, पुन मिली है आय हो ॥ सी० २४७॥ किया निरादर सती अंजन का, देखो पवनकुमार। आशा ने पीछा दिलवाया, उन्हीं से सत्कार हो ॥ सी० २४८ ॥ देखो रामचन्द्र, नल, पाण्ड, आशा के प्रताप। सब मनवाञ्छित फली कामना, मत करो कोई कलाप हो ॥ सी० २४९ ॥ सोलह वर्ष पूर्ण होने पर, फलसी मन की आश। रुक्मण की आशा के बल से, होगा लील विलास हो ॥ सी० २५० ॥ अब यम समर राजा वर, मोटा हो प्रद्युम्न कुमार। हाथों हाथ खलावे सब मिल, करें लाड़ और प्यार हो ॥ सी० २५१ ॥ ज्यों ज्यों बढ़े वयकर नंदन, त्यों त्यों नृप घर माई। सुख सम्पदा ऋद्धि, वृद्धि, होती देत दिखाई हो ॥ सी० २५२ ॥ माता को प्राणों से वल्लभ, पिता को सुखकंद। देख देख मनमोहनलाल को, हर्ष सज्जनवृन्द हो ॥ सी० २५३ ॥ मन्मथ मदन काम कामदेव, मनोभव और अनंग। इत्यादिक कई नाम पुकारे, निरखी सुन्दर अंग हो ॥ सी० ॥ २५४ ॥ अध्यापक से पढ़ गुण पंडित, हुआ सर्व विधि जान। शस्त्र शास्त्रादिक कला बहत्तर के होगये निधान हो ॥ सी० ॥ २५५ ॥ तरुण वय प्राप्त होते ही, सेना विकट सजाय। चहु ओर के देश फतह कर, वर वस्तु घर लाय हो ॥ सी० २५६ ॥ देख कुवर का तेज पिता माता मन में हर्ष मनावें। धीर वीर साहसी लाल का, सर्व जन हुक्म उठावे हो ॥ सी० २५७ ॥

पावक बन बोले विरदावली मदन सुयश जग छायो। युवराज पद से सुशोभित, प्रसिद्धि में आया हो॥ सी० २५८॥ अखी मदन कुवर की पदवी युवराई सजनों देख रहा॥ टेक॥ सुमनी रहे सुभाव मदन की पदवी दरज युवराई। एक दिन निज पुत्र सुता के ऐसी भाव सुणाई हो॥ भ० २५६॥ सिंहनी एक सुत प्रसवी मोद स निर्भय विपिन रहावे। दश सुत होने पर भी गर्दभी, निज बजन उठावे हो॥ भ०२६०॥ मदन कुवर की महीमा आगे तुम सा दासो भिखारी। दिन थाड़ा क बीच दूजना बने पाव अधिकारी हो॥ भ० २६१॥ सुनी बात माता की यह सुत क्रोध प्रचंड भराया। मारूं मदन का दूर करूं नहिं, यों कही उनपे आया हो॥ भ० २६२॥ हृदय कपट धर मदन कुवर से खूब ही प्रेम बढ़ाया। खान पान में जहर दिया, उनके अमृत प्रकटाया हा॥ भ० २६३॥ डाकन शाकन भूत प्रेत सब इनसे दूर भागे। दिन दिन बढ़े सुयश इनका, कारी एक न लाग हो॥ भ०२६४॥ मायाधारी गिरिवैताढ्य पे, मदन कुवर को लाया। वज्रमुखे कहे चढ़ो शिखर मिलसी सुख मन चहाया हो॥ २६५॥ मदन जाय देव को जीता, हार सिंहासन दीना। मंत्र कवच छाप मुकुट भरु आभरण दिया सो लीना हा॥ भ० २६६॥ दूजी गुफा स छत्र चवर सुग, खड्ग पक्ष विशाल। कुसुमभास दण प्रसन्न हा करी भेंट तत्काल हो॥ भ० ॥२६७॥ तीजी गुफामें नाग सुरी हो चक्षामरण शुभ दान। सदन-सैन्य-रक्षक दिया दो भेंट करी मन्द्र मान हा॥ भ० २६८॥ चौथी विषम वाटिका मध्य सीधा देव वहां जाय। मगर चिह्न की ध्वजा भेंट दी दप हृदय हपाय हो॥ भ० २६९॥ वार पांचवीं अग्नि-कुण्ड में, किनो आप प्रवेश। कर्णाभूषण युगल देव दिया देखो पुण्य विशेष हो। भ० २७०॥ मींढाकार दोय पर्वत में गये वह छटी वार। मर्कट देव ने रत्न मुकुट दिया दे अमृत माला उदार हो॥ भ० २७१॥ वार सातवीं विपिन तरु चढ़े तब सुर कपि क आकार। गमनगति पावड़ी दीनी, और मुकुट व हार हो॥ भ० २७२॥ आठवीं वार गया कीपवन वहां के देव हुये म्लान। विद्यामयी दिया एक हाथी, और दिया वरदान हो॥ भ २७३॥ नवमी वार वाल्मीकि विपिन गये, वहां

देव उस वार। क्षुद्र घटिका, वख्तर दीन्हा, आभूपण सार हो॥ अ० २७४॥ दशवे आवता गिरि के सुर ने, कटि-सूत्र श्रीकार। कडे केयूर कण्ठ का भूषण, दीनों वस्तु उदार हो॥ अ० २७५॥ एकादश में वराह असुर ने, शख धनुप दिया आन। हुई प्राप्ति अनायास ही, देखो पुण्य प्रधान हो॥ अ० २७६॥ द्वादशवें किया मुक्त विद्याधर, पकज वन के माई। इन्द्रजाल की विद्या समर्पी, और कन्या परणाई हो॥ अ० २७७॥ त्रियोदशवे यम वन के माहिं, जीता दैत्य क्रूर। कुसुम धनुप शरपच सग ले, कीनी भेट हजूर हो॥ अ० २७८॥ मदनोत्तेजक जन मन मोहन, तापन शोषन अग। पचम सर उन्माद प्रवेशन, तुरत करत मति भग हो॥ अ० २७६॥ चौदशवें जा भीम गुफा का, अधिष्ठित पार्थिव देव। पुष्प का छत्र पुष्प की शैय्या, करी भेट तत् खेव हो॥ अ० २८०॥ पचदशवें दुर्जय बन में जब, हरिनन्द चलि आयो। पद्म शिला पर नवयुवती, पद्मासन ध्यान लगायो हो॥ अ० २८१॥ स्फटिक रत्न की लेकर माला, जाप करत वह बाला। श्वेत साटिका छूटा केश शिर, गौर वर्ण सुकुमाला हो॥ अ० २८२॥ चन्द्रमुखी मृगलोचनी सुन्दर, बैठी धर अहकार। मदन देख उस ताईं एक दम, मोहित हुआ अपार हो॥ अ० ॥ २८३॥ दक्ष पुरुप एक आये कुवर से, ऊभा करी जुहार। तब कुवर ने पूछा उस से, कुवरी का सुविचार हो॥ अ० ॥ २८४॥ वायु नामा विद्याधर उसके, सरस्वती नामा राणी। रति नामा पुत्री पुण्यवती, मात करे इन्द्राणी हो॥ अ० २८५॥ मदन कहे यह क्यो तन शोषे लगा विकट वन ध्यान। क्यों कष्ट उठावे इस प्रकार से, सारा करो बयान हो॥ अ० २८६॥ राजा नैमित्तिक से पूछा, बने कौन भर्त्तार। सो कहे मदन कुवार बनेगा, इसी विपिन मँझार हो॥ अ० २८७॥ लक्षण गुणाकर तुम ही दीसो, यों कह दी परणाई। कामदेव के रति कामनी, मिली पुण्य से आई हो॥ अ० २८८॥ वन, रन, शत्रु, जल, अग्नि युद्ध, विषम स्थान के माईं। सोता प्रमाद भय के स्थानक, होते पुण्य सहाई हो॥ अ० २८६॥ काम और रतिनार बैठके, पुष्पक रथ के मांय। चॅवर ढोरे खेचरी कर से, शिर पर छत्र धराय हो॥ अ० २६०॥ दीन मुखादिक भाई साथ, सेवक बन आगे

थाल । सालह नाम करी गुरागिव शत्रु का मद गाळ्यो ॥ अ० २६१ ॥ शोभा करी नगर का भारी, गुग-गुग जय-जयकार । नारी-पुरुष कौतुक देखन को दौड़ मच रस वार हो ॥ अ० २६२ ॥ दूग्ग हार मोतियों का विगरे माता मो मुपि नाथ । वस्त्राभरण विपरीत पहन आतुरता क मांय हो ॥ अ० २६३ ॥ आंगें कुंकुम मांडियो काजल लगायो गाल । अम्ब बाल से ख़ास कोख के आई हमारा पास हो ॥ अ० २६४ ॥ कोड़ मह यह आशी अमर रहो तपा सूरज चन्द चंद । मदन रति का सार्थी मिल गये, ज्यूं रुक्मणि गोविन्द हो ॥ अ० २६५ ॥ इते दान मपारी आइ वत्काल राजद्वार । राजा क चरण धप मूके भूप दियो सत्कार हो ॥ अ० २६६ ॥ माय मान क पांव लाग्यो लाला कण्ठ लगाय । विनय करा सामन बैठे हृदय रहा हुलाय हो ॥ अ० २६७ ॥ वार वार निरखती पुत्र का, रूप अनूपम सार । कृष्ण केश लाल लोचन है अम्बु कठ आकार हो ॥ अ० २६८ ॥ पगतल करतल नख क कान नरम तालुप रम हाट । रक्त वर्ण जिनके हाता धम नर क धम की पोट हो ॥ अ० २६६ ॥ दाम्त कुम्भ ललाट कथा स्थान हृदय में ऊंपाइ । पशु, नाक भुजा, स्तन दाढ़ी, ये पांचों चाहें मोटाई हो ॥ अ० ३०० ॥ हृदय, मस्तक ललाट यह तीनों विस्तीर्ण ही शुभ जान । स्वर, नाभि कान तीन यह गंभीर उत्तम मान हो ॥ अ० ३०१ ॥ जया गरुड पुरुषाकार छोटा मुखराम । जैगली पारबा कुचा, नग्न मरा वपु पतला शोभाव हो ॥अ० ३०२॥ मुक्ता सम दांव की पांति सुग हो शशि समान । सो शुभ लक्षण मदन शोभत पूर्व तप से जान हो ॥अ० ३०३॥ आशी ओप हीरे-सी नाभि, हृदय कपाट आकार । मृगपति सा पराक्रम जिसका गौर वर्ण उदार हो ॥अ० ३०४॥ देखी पुत्र का रूप मनोहर आगा काम विकार । ईसू इसूं संयोग करूं इस संग ऐसा किया विचार हो ॥अ० ३०५॥ मदन भेद नहीं पाया यहां स उठ आया निज आवास । चौथमल कहे मेरा पुण्य से परसे लीला विलास हो ॥अ० ३०६॥ मदन बिना नहिं पड़ चैन, नहीं नींद रैन में आवे । नहीं सुहाय स्यामा पीना सीमरणा

दर्शावे हो ॥ अ० ३०७ ॥ वार वार वह आलस मोड़े, बार बार जभाई। राजा वैद्य बुला राणी की, तत्क्षण नाडि दिखाई हो
॥ अ० ३०८ ॥ असली रोग हाथ नहीं आया, वैद्य भी घरे सिधाया । राणी के बेचैनी देख नृप का, दिल घबराया हो ॥ अ०
३०६ ॥ एक दिन राजा कहे कुवर से, दुखिया मात तुम्हारी। तू तो रमता फिरे मोद से वह याद करे हरबारी हो ॥अ० ३१०
मदन कहे नहीं मालूम मुझको, सुनो तात चितलाई। तीर्थ समान माता है मेरे, मा सम दूजा नाई हो ॥ अ० ३११॥ मदन आय
नेन से देखी, बोला माय पुकार। एक दम से भगवान् मात मम, कैसे हुई बीमार हो ॥अ० ३१२॥ मात तात दोई नेत्र यह मेरे,
मिथ्या और तमाम । वैद्य बुला इलाज कराओ, माता हो आराम हो ॥ अ० ३१३ ॥ नवज देख के सोचा आपने, रोग नहीं
तिल मात। मात दुखसे मदन दुखी, यह बैचनी किस भाति हो ॥ अ० ३१४ ॥ अब राणी वहा खडे सर्व, लोगो को दूर हटाया।
दासी छोकरी इत्यादिक, वहा से सब सरकाया हो ॥ अ० ३१५ ॥ लाज छोड के मदन कुवर से, बोली विषय की बात। बार २
धिक्कार तुझे क्यों नाम धराया मात हो ॥ अ०३१६॥ तात भ्रात सुत सगा सम्बन्धी, त्रिछंड़ मतवाली। आप बिगोवे निर्लज्ज
निर्भय, चरित्र रचे चरिताली हो ॥ अ० ३१७ ॥ वनिता-वेल हर एक के बिलगे, नीर-गतिवत् जान। कार्याकार्य करती नहीं
रुकती, होती भान वेभान हो ॥ ३१८ ॥ अन्य सग रमे अन्य से बोले, मन में अन्य विचार। दूपण चढ़ाय अन्य के शिर पर,
सती बने उस वार हो ॥ अ० ३१६ ॥ रस्सी से चमके अहि पकडे, चौके बाहर गिरजाय। उदर से डरे अहि वश करले, चरित्र
विकट कहलाय हो ॥ अ० ३२० ॥ चुलनी ब्रह्मदत्त की माता, देखो पर भव माय काम वश दुष्कृत्य करने को तत्क्षण हुई
तय्यार हो ॥ अ० ३२१ ॥ तू मुझ पूर्व भव का प्यारा, आज बनो भर्त्तार। तेरे साथ मैं सदा रहूगी, तू हृदय का हार हो ॥ अ०
। ३२२ ॥ मैं तुझ नन्द मात तू मेरी, यह क्या बात सुणावे। यद्यपि मास खाय नर कोई, हाड़ कभी नहि खावे हो ॥ अ०
॥ ३२३ ॥ कहे खेचरी तू नहीं नन्दन, मैं नहीं तेरी माता। पडा विपिन मे लाई उठा के, भावी मेल मिलाता हो ॥ अ० ३२४ ॥

निज तरुवर के सुन्दर फल को क्यों कौन नहीं खावे। निज निवाण का नीर पिये से तृपया नहीं दिखावे हो ॥म० ३२५॥ अन्य विचार छोकरे तुम स मेरा मन लुभाया। प्राणनाथ तू यास मान मुझ, नहीं तो तज दूं काया हो ॥ म० ३२६ ॥ मात बात विरुद्ध अशुभ अपावन हो परमय यह भावे। श्रेष्ठ पुरुष पूण विचार क अपनी इज्जत राखे हो ॥ म० ३२७ ॥ मात बात यह तेरे मुख स नीति पर नहीं छाजे। निन्द्य स निन्द्य काम यही कुलीन गुणी न छाजे हो ॥ म ३२८ ॥ हय लगाम से वश थाव और अंकुश स गजराज। नारी धर्म रहे वहां तक, हो कुल की लाज हा ॥ म ३२९ ॥ वार-वार समझाई मात को विचार नहीं पलटाया। तब मदन उठ आया विपिन म बैठा तरु की छाया हो ॥ म० ३३० ॥ बिन पानी अवरनी हुवे मदन चाहे वस सवारी। सिंह का वास मास न खावे खेला मित्र विचारी हो ॥ म० ३३१ ॥ खाई उदासी, मदन कुंवर यह विग रखे मुनिराय। वन्दन करी पास आ उनके पूछे प्रश्न शिरनाय हो ॥ म० ३३२ ॥ हे ज्ञानी गुरुवर कृपा कर संशय आप निवार। बालता मैं शरमाऊं क्यों यह खला विषय विकार हो ॥ म० ३३३ ॥ माता के क्यों इच्छा उपजी सुत संग काम विकार। कौन कर्म का यह फल होगा कहो करुणा भण्डार हो ॥ म० ३३४ ॥ सुन स पूर्व-चरित्र तुम्हारा कहूं लगा क ध्यान। इन्द्रप्रभा का जीव यहां पर कनकमाला हुई भान हो ॥ म० ३३५ ॥ काम राग से तुम संग यहां पर पायाणी भरपूर। उसी अभ्यास से इसी जन्म में जागा राग क्रूर हो ॥ म० ३३६ ॥ हे भगवन भवसिन्धु तारक पुन पूर्व तुम वाई। कौन कर्म स मेरी माता मुझस पाई जुदाई हा ॥ म० ३३७ ॥ जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में, मगध देश क मांई। लक्ष्मीपुर है शहर मनोहर सुनो मदन चित्त लाइ हा। म० ३३८ ॥ सोमराम विप्र वासा जहां कमला सुन्दर नारी। लक्ष्मीवती है सुता निरूपम, घर म सम्पत्ति सारी हा ॥ म० ३३९ ॥ एक दिन दम्पत्ति गया विपिन में, क्रीड़ा करने ताई। दिया मारनी भला तरु तले सो लिया हाथ उठाई हा ॥म० ३४० ॥ मोहनी वाणी थी हाथ बीच यह, मला क लग पाइ। कुंकुम-वर्षा हुआ शीघ्र फिर रक्त दीना दस ताई हो ॥ म० ३४१॥

नहीं पहिचाना उसे मोरडी करने लागी शोर सोलह घड़ी सेव्या नाहीं, वध गये कर्म कठोर हो ॥ अ० ३४२ ॥ गाज बीज के पानी वर्षा, उसी समय के माय। अण्डा धुलके साफ हुआ, तब पोपा मोरड़ी आय हो ॥ अ० ३४३ ॥ सोलह घडी का सोलह वर्ष यह, बाधा अन्तराय कर्म। हस हस करते पाप अज्ञानी, लखे न धर्म का मर्म हो ॥ अ० ३४४ ॥ वह ब्राह्मणी वहा से मर के, तिर्यंच गति पाई। वहा से धीवर के घर लड़की, जन्मी पुण्य से आई हो ॥ अ० ३४५ ॥ मुनि ज्ञान सुन समकित पाई, श्रावक व्रत लिया धारी। गई बारहवे देवलोक में, कर तप दुष्कर कारी हो ॥ अ० ३४६ ॥ स्वर्ग से चलके हुई रुक्मणि, माधव घर पटराणी। कामदेव वही मात तुम्हारी, गुण मे अधिक वखाणी हो ॥ अ० ३४७ ॥ किये कर्म हरगिज नहीं छूटे, सोलह वर्ष प्रमान। विरह तुम्हारा पाई माता, अण्डा का फल जान हो ॥ अ० ३४८ ॥ प्रज्ञप्ती और रोहिणी ने, दो विद्या वरदाई। कनकमाला से हाथ लगे, तो हो तेरे मनचाई हो ॥ अ० ३४६ ॥ इतना सुन के नमन करी ने, आया मात के पास। कर प्रणाम सामने बैठे, हृदय धरी हुल्लास हो ॥ अ० ३५० ॥ शा चिन्ते यह प्रेम वश हो मेरे पास चल आया। है प्रसन्न मुझ अवश्य मानले, लालच इसे दिखाया हो ॥ अ० ३५१ ॥ प्रज्ञप्ती और रोहिणी विद्या, विद्या मे सरदार। प्रीति रीति से मुझे रिझावे, दूँ तुझको इस वार हो ॥ अ० ॥ ३५२ ॥ धूर्त्त सामने जीते धूर्त्त, यो बोले मीठा बोल। आज तक मैं लोपा नाहीं, थारा प्यारा बोल हो ॥ अ० ॥ ३५३ ॥ मैं हू तावेदार आपका, हुकम उठाने वाला। दे विद्या प्राणेश्वरी, तू मुझ हृदय की माला हो ॥ अ० ॥ ३५४। विपय वश आतुर हो राणी, जाणी उज्ज्वल दुग्ध। विद्या देके विधि बताई, हो गई उस पर मुग्ध हो ॥ अ० ॥ ३५५ ॥ चढ़ी विपय की छाक जोर से, मोह मतवाली होय। कामकुवर तो धर्म न छोडे, इण विद्या दी खोय हो ॥ अ० ३५६ ॥ विद्या साध के सिद्ध कर लीनी मन मे हुआ आह्लाद। खेचरणी को खरी सुनावे, करके वाद विवाद हो ॥ अ० ॥ ३५७ ॥ मैंने मात तात नहिं देखे, तू माता शिरमौर। मेरा दिल नहीं पिघलता है, यह तो

बड़ा कठोर हो ॥ म० ॥ ३५८ ॥ वचन निभाओ अपना प्यारा, वचन जगत् में सार। वचन लोप करस जो आव उसका जन्म धिक्कार हो ॥ म० ३५९ ॥ जल में आग, चांद से अग्नि रवि स हो ठंडाई। गंगा उल्टी बहे माता ने ऐसी कर दिखलाई हो ॥ म ३६० ॥ चाहे माता करो बुराई चाहे करो गुणगान। चाहे लक्ष्मी आवे या जावे सत्य नहीं तजूं निदान हो ॥ म० ३६१ ॥ प्रथम तू मात हुई मम पालन का किया काज। दूजी विद्या-ज्ञान की दाता हो गइ गुरुणी आज हो ॥ म० ३६२ ॥ वज्रपात सम वचन श्रवण कर, अब वाचन क्यों रूठी। कर जुहार मदन सिधायो जोर हाथ स छूटी हो ॥ म० ३६३ ॥ हाथ मले हृदय का फूटा, करती सोच अपार। ठगन ठग्यो ठगा गइ ठग से विद्या सोइ सार हो ॥ म० ३६४ ॥ इस मूर्ख का नाश करूँ, कोइ उपाय रचाऊँ। दुःख की ज्वाला शान्त करूँ, हृदय चैन मनाऊं हां ॥ म० ३६५ ॥ निज हाथों स वदन को नोंचा, फाड़े सुन्दर चीर। रावे जार स रुके नहीं पूछे तब नृप धरधार हो ॥ म० ३६६ ॥ तुम सुत के ये कर्म देखलो चाहे बनना अघोर। राहगीर जो अपना हो सो कौन चाह परिवार हो ॥ म० ३६७ ॥ निज को तो निज ही जानो, पर तो पर ही पहचान। कभी बस नहीं घर मेहमान स अग की सांच प्रधान हां ॥ म० ३६८ ॥ आखिर सुवसाय आपके कुल देखा प्रभाव। नहीं टूटा है शील मूल स भूप सुन धर चाव हो। म ३६९ ॥ नृप चिन्ते इस पापी सुत को जो नहीं दूं मरवाय। तो जीवित यह सती रह नहि, चिता बीच जल जाय हो ॥ म० ३७ ॥ एक तो दूजी मात खास नहीं, दूजी रीस सिखाइ। भाव होय वा पुत्र हो उसको इसके मटकी मारे हां ॥ म० ३७१ ॥ क्रोध वश हो भूप एक दम मर्म रच नहीं पाया। अन्य सुतों से कहे मदन को मारो हुक्म लगायो हो ॥ म० ३७२ ॥ जन अपवाद मिटाने हित प्रच्छन्न करो यह काज। सब सोचें युवराज बना यह राज मिला है आज हो ॥ म ३७३ ॥ सभी भ्रात से मदनकुंवर को, ज्ञान का मिस ठहराया। विधा न उनका भद दिया जब दूजा रूप बनाया हो ॥ म० ३७४ ॥ आय बावड़ी कहे तट पर ठहरो इसके माहे। आप प्रच्छन्न रहे नकल रूप से, पके

ऐसा उन ताई हो ॥ अ० ३७५ ॥ सभी पडे मदनकुवर पे, दिया इन्हे दबाई । उसने विद्यावल से उल्टा, उन्हे दिया डुबकाई हो
॥ अ० ३७६ ॥ उर्ध्व पाव अधोमुख सबका, एक निकला उन माईं । मदन शिला वेक्के करके, ढकी बावड़ी ताईं हो ॥ अ० ३७७ ॥
रचा हुआ शीघ्र आ नृप पें, सारी बात सुनाई । ले सेना तब चढा भूपति, मदनकुवार पे जाई हो ॥ अ० ३७८ ॥ सेनाडम्बर से
मदनकुमार भी, भूप सामने आयो । देखी जोर राणी के पास नृप, विद्या लेन सिधायो हो ॥ अ० ३७९ ॥ विद्या ले गया मदन
राणी से, सुन के वह पछतायो । हे महिला यह व्यभिचारिणी, मिथ्या चरित्र रचायो हो ॥ अ० ३८० ॥ रणभूमि में आया
फिर नृप, मदन सामने धाया । तीर्थ समान तात को समझी चरण शीश नमाया हो ॥ अ० ३८१ ॥ चाहे जितना वृक्ष वडा हो,
नभ का भेद नाय । ललाट से रह नासा नीची, बाप से सुत कहाय हो ॥ अ० ३८२ ॥ नमे आम, अगूर, सतरा, इमली और
अनार । हय, गय, कुलीन नमे जग माईं, मदन तजा अहकार हो ॥अ० ३८३॥ मुक्त करे बधव वचन से, मिला सकल परिवार ।
राजा गये राज महलों में, वरते जय जयकार हो ॥ अ० ३८४ ॥ देख पराक्रम सुत का एक दम, नारद ऋपि जिस वार । आये
नजीक आप चाल के मदन नमा चरनार हो ॥ अ० ३८५ ॥ मदन कहे सुनो ऋपीश्वर, मेरे जग नहीं कोय । मात तात तो शत्रु
हो गये, अब गति केसी होय हो ॥ अ० ३८६ ॥ तुम सम सौभागी नहि जग मे, श्रीकृष्ण-सा तात । रुक्मणि-सी गुणवान्
मात तुम, यादुवश विख्यात हो ॥ अ० ३८७ ॥ मैं आया तुमको लेने हित, चलो हमारे साथ । अवसर का हो आगम अच्छा,
जो वर्षे वरसात हो ॥ अ० ३८८ ॥ समय पाय राम को सेवे देखो वीर हनुमान । समय पाय वशल्या ने तन, स्पर्शा लखन का
प्रान हो ॥ अ० ३८९ ॥ समय पाय सुग्रीव नृप, दिया राम काम सुधार । विभीक्षण सेवा करी राम की, बना लक सरदार
हो ॥ अ० ३९० ॥ जीवित मात पिता को पुत्र, कभी सुख नहीं दीना । क्या होना जो मरे बाद में, खर्च बहुत-सा कीना हो
॥ अ० ३९१ ॥ भामा-सुत के व्याह बीच मे, जा तुम्ह माता शिर केश । जो जावे तो वह नहीं जीवे, तुम मन होय क्लेश हो

॥ म ३९२ ॥ इस कारण से चलो शीघ्र अब मत ना दर लगाओ। कर याद माता पल-पल म उरा ध्यान में लाओ हो ॥ भ० ३९३॥ मदन कह तुम सुणो ऋषीश्वर, सत्य है वचन तुम्हारा। मात पिता को पूछ बिन नहीं, आना हाय हमारा हा। म ३९४॥ मात पिता को नमा आन के निज अपराध खमाया। मेरी भूल को माफ करो यों दीन वचन सुनाया हा ॥ भ० ३९५ ॥ ह माता मैं दास तुम्हारा पूरी तुमने आशा। पक्का पत्थर म आन उठाया उपकार तुम ग्यास हो ॥ भ० ३९६ ॥ परिवास म तुम कृपा स हुइ सभी मन चाई। कष्ट आसमूद पर, मन न किसी की आई हो ॥ भ० ३९७ ॥ मैं था दीन अनाथ मात नहीं नाथ मेरा था कोइ। नभ स पड़ा मझा खमीन तुही सहायक होई हो ॥ भ० ३९८ ॥ मैं बालक हूं थारो जननी मुझ भूलज नाय। बार बार है कहना तुमको रखज हृदय मांय हो ॥ भ० ३९९ ॥ लगी मात की छाती फाटन पिता हुआ व भान। धोंधारा आसू बहे हैं तूं कहां जावे संतान हो ॥ भ० ४०० ॥ कैसे बिसारूं कैसे राखूं अहां लगा वहां पाय। काइ बच रहा जाविन न रन, हुआ शिथि तुम तोय हो ॥ भ० ४०१ ॥ सब भ्राताओ स नमन करी, वह मा हृदय भर आया। बांदि गुलाम न प्रणाम करी और सबको गल लगाया हा ॥ भ० ४०२ ॥ सब के मन को हरण करा है ऐसा काम कुमार। शिर बिन देह नाक बिन मुख तारा बिन रैन निसार हो ॥ भ० ४०३ ॥ पात बिन वक्ष नीर बिन सरवर भाव बिना ज्यों दान। काम कुवर बिन घर सूना ज्यों ज्ञान बिना इन्सान हो ॥ भ० ४०४ ॥ काम कुवर नारद दोउ बैठ वायुयान मंझार। फीर महरा उड़ गगन में, ज्यों मुनि वजे समार हो ॥ भ० ४०५ ॥ मात मिलन की लागी लग्न उहें, चल्न गरू अनिहार। कब जाऊ मैं मिलूं शीघ्र, कब दृश्य मैं दीदार हा ॥ भ ४०६ ॥ नारद कव विमान तोड़ने, नूतन काम बनाया। पुरा यान धीरे चलता था इस क वचन सुनाया हो ॥ भ० ४०७ ॥ सुन्दर यान रविमण्डल सा, चलता धीमी चाल। नारद कहे उसमें और इसमें फक बता तत्काल हो ॥ भ० ॥ ४०८ ॥ दृढ खापर दम्ब ऋषी के ऐसा ज्ञान चलाया। रूपाचल को तुरत उलंघी, गन्दिरा भन्या आया हा ॥ भ ४०९ ॥

तक्षक पर्वत शिला स्थान, नारदजी उन्हें दिखाये। भूमण्डल का ख्याल देखता, मध्य देश मे आये हो ॥ अ० ४१० ॥ प्रबल सैन्य देखी पथ जाती, हय गय रथ सवार। राजा राजकुवर का युथ, बाजा का भणकार हो ॥ अ० ४११ ॥ पूछे मदन ऋषी से कहा यह, जावे दल बल पूर। खेचर में मैं कभी न देखे, ऐसे लोग सनूर हो ॥ अ० ४१२ ॥ ऋषी कहे है गज-पुर स्वामी, दूर्योधन भूपाल। जा रहा है मोद धरी ने, ले सग सैन्य विशाल हो ॥ अ० ४१३ ॥ जिसके कारण होड पडी है, रुक्मणि भामा माई। वहीं उदधि नामा कुमारी, लेजावे व्याहने ताई हो ॥ अ० ४१४ ॥ असुर धूम्रकेतु जन्मत ही, लेके तुझे सिधाया। जीव रुक्मणि अति दुख पाया सत्भामा का हर्पाया हो ॥ अ० ४१५ ॥ तेरे पाने की खबर भूप, दूर्योधन को है नाई। इसी लिये उदधि कुमारी, भानु हेतु ठेराई हो ॥ अ० ४१६ ॥ वड़ा पुत्र तो हैगा तूही, जिस कर माग तुम्हारी। इन्तजाम के लिये भूप ने, सेना लीनी लारी हो ॥ अ० ४१७ ॥ तूं जन्मा रुकमणि के तब ही, सत्भामा सुत जाये। नाम दिया है भानु उसका, उस सग सम्बन्ध रचाये हो ॥ अ० ४१८ ॥ कुवर कहे सुन बात ऋषी मैं, कन्या उडा के लाऊ। पाणी पहले पाल बाध दू, कौतुक इन्हे दिखाऊ हो ॥ अ० ४१९ ॥ धरा रूप तब आप भील का विकृत गात बनाया। मोटा लम्बा दान भयावणा, प्रौढ़ भाल रचाया हो ॥ अ० ४२० ॥ उडा गाल लीलरी लटके, पीला केश दिखाय। लोचन लाल पेट है मोटा, मोटी श्याम है काय हो ॥ अ० ४२१ ॥ स्थूल जाघ शल पड़े बहुत से, लघु हाथ कूप जान। कान सूप से टूटी कमर का, भीलो का राजान् हो ॥ ४२२ ॥ फटा बाध धर झोगा नीम का, ली भृकुटी तान। थोथा बाण कामटा हाथे, चाल्यो धरी गुमान हो ॥ अ० ४२३ ॥ खडा रोकने मार्ग को, कोई जाने नहीं पावे। रुकी फौज सुन कौरव तत्क्षण, सबके आगे आवे हो ॥ अ० ४२४ क्यों रोका मग तब वह बोला, सुनो बात चित्तलाई। दाण लगे मम बिना चुकाये, जाने दूगा नाई हो ॥ अ० ४२५ ॥ कौरव कहे अरे भीलडा, जरा विचारी बोल। क्या वाणिक हमको तू

॥ अ० ४४३ ॥ [illegible] भवि लगे दूर डालने, तब कीनी किलकार । विद्या योग वृक्ष वृन्द से, भील हूवा तैयार हो ॥ अ० ४४४ ॥ मायामयी भीलों की सेना से, नृप की सैन्य भगाई । ले कन्या को नारद के ढिग बैठे आप पुन आई हो ॥ अ० ४४५ ॥ अपना दिव्य रूप कन्या को, एक दम कुवर दिखाया । तबतो वह मोहित हो उसका, रूम रूम हर्षाया हो ॥ अ० ४४६ ॥ नारद ने भी उस कन्या को, कुल वृत्तान्त सुनाया । यही कृष्ण का वडा पुत्र, तेरा भाग्य सवाया हो ॥ अ० ४४७ ॥ आगे जाते देखा दूर मे, सुन्दर शहर सुघाट । बाबा यह शहर कौनसा, दीखे झलझलाट हो ॥ अ० ४४८ ॥ नारद कहे वह नगरी द्वारिका, देव करी निर्माण । सोना रत्नो के कोट कागरे, इन्द्रलोक सम जान हो ॥ अ० ४४९ ॥ भारत मे पढकर यह नगरी, इसका कृष्ण महीप । इतने दिनकर प्रगट हुआ, आये चाल समीप हो ॥ अ० ४५० ॥ ऋषीवर ठहरा आप यहा मैं नगरी देखने जाऊ । मात मिलन की उमग लगी है, तुरत लौट के आऊ हो ॥ अ० ४५१ ॥ यादव का गहा जोर शोर है सहज धूम मच जावे । तो भी रोक विमान गगन मे, प्रच्छन्न मदनजी आवे हो ॥ अ० ४५२ ॥ प्रथम चौक मे बन्धु देखा सनूर तेज सवाया विद्या कहे यह भानु कुवर है सतभामा का जाया हो ॥ अ० ४५३ ॥ घोडे से है प्रेम बहुत, नचावे और कुदावे । इसको आपा जणाने से माता सुण सुख पावे हो ॥ अ० ४५४ ॥ स्थूल काय लम्बोर चचल, सब सभा मे शोभाय । नाना भाति सिंगार कनक पलाण बाग कर साय हो ॥अ०४५५॥ हाथ पाव शिर कपे ऐसी वृद्ध बनाई काया । भानु कुवर के पास शीघ्र, अश्व रत्न को लाया हो ॥अ० ॥ ४५६ ॥ पूछे पै कहे नम्र होय के, हू प्रदेशी स्वामि । अश्व रत्न मैं लायो दीपतो देव तुम्हारे कामी हो ॥ अ० ४५७ ॥ यह घोडा दे मोल हमे तू, ले कचन की कोटी । परीक्षा करी फिर मुझे देना, जो यहीं देखो त्रुटी हो ॥ अ० ४५८ ॥ कूद तुरत घोडे चढ बैठा, चाबुक लीना हाथ । छोडा घोडा अती वेग से, विस्मय पाया साथ हो । अ० ४५९ ॥ मानो सूरज भी रथ रोकी, मन्न में करे विचार । मेरे इसके अश्व बीचमे, हैगा कौन उदार हो ॥ अ० ४६ ॥ वक्र और सम पाव से घोडा, नाचे कूदे सोय ।

भामे भी नहीं भमे कुंवर से, विचार मन म होय हा ॥ म० ४६१ ॥ पड़ा पाग उपरया दोनों पीछे पड़ा कुमार । तुरत उठाया पर इव–वत स लोग हसें उस बार हो ॥ म० ४६२ ॥ सौदागर कहे पांच चले किम् वरे आया पूत । हाय पाटवी पुत्र हरि के, कैसे रह पर सूत हो ॥ म० ४६३ ॥ राख सका नहि तू घोड़ का क्या राखेगा राज । तुमसे पुत्र से कृष्ण यश की, तनिक रह नहीं लाज हो ॥ म० ४६४ ॥ भरे पुत्र पाया सीडी–सा बोलन का क्या काज । यह भन्व दे मैं रखूँ तुम पातुरधा सब भाज हा ॥ म० ४६५ ॥ जो चढ़ा जाय तुम से घोड़े फिर वेचू किम काम । अगर चढ़ा दे मुझको कोइ गति दिखाऊ तमाम हो ॥ म० ४६६ ॥ पांच सात नर लग चढ़ाने पड़ा उन्हीं सिर भाई । शीश दंत टूटे उनके फिर, दूजा मार गति पाई हा ॥ म० ॥ ४६७ ॥ तीजी बार पड़ा भानु कुंवर पे चौथी बार क माई । भानु कुंवर क हृदय पांव धर बैठा भाप ही जाई हो ॥ म० ॥ ४६८ ॥ राजकुमारादिक प्रसन्न हुआ, ऐसा भरव घुमाया । नभ में जा भदृश्य हुआ अब कुंवर प्रपंच बताया हो ॥ म० ४६९ ॥ भागे वन भाने से पूछा क्या पिशाचनी क छाई । मामा का जान घोड़े क जरिये दिया विनाश कराइ हो ॥ म० ४७० ॥ रथवाज प्रवेश करा वहां रथ सुशोभित भावे । बाजा बाज भति जोर से, सखियां मंगल गावें हा ॥ म० ४७१ ॥ मगलोक रत्ना के कलश महिला शीश उठावें । विधा से पूछा भानु विवाह हित कुमाकार के जावें हो ॥ म० ४७२ ॥ मायामय रथ बना ऊंट खर ओती ओर चलावें । करें मशखरी गली गली में, हाका हाक मचावें हा ॥ म० ७३ ॥ टूटा कान शीत लागा क भाया फिर मस्खरी । गीत स्थान विलाप मचा भागी पत पर नारी हो ॥ म ४७४ ॥ काई कहे सुर असुर रचकर यह इन्द्रजाल बताया । कौतुक दिखला कुंवर फिर माता से मिलन उम्हाया हा ॥ म० ४७५ भागे आत देखी बावड़ी सब ही विधि अभिराम । कनक बावड़ी पांच वर्णों की है रत्नों का काम हो ॥ म० ४७६ ॥ रत्नबासी नारी रहे वहां पर नीर [illegible] पाय । मदन आया मामा रागी की कौतुक वहां रचाय हो ॥ म० ४७७ ॥ मायण का अब रूप

घनाया, लीनी जनेऊ धार । त्रिपुंड तिलक और हाथ कमडल, करता वेद उचार हो ॥ ४७८ ॥ दिया आशीर्वाद विप्र ने, दासी लगी पाय । कमण्डल जल याचा है उनसे, दीना पुण्य वताय हो ॥ अ० ४७६ ॥ चचल जाति की दासी निर्लज्ज, बोली करी पुकार । ब्राह्मण हामण आयो इसकी, धोती छिनो इस वार हो ॥ अ० ४८० ॥ वदरीवत वैठी उसके आ, पूछे क्यो तकरार । भामा आण को तूने तोड़ा, वना तू गुनहगार हो ॥ अ० ४८१ ॥ क्या भामा कोई खास भूतनी, या देवी अवतार । आया स्वर्ग से सो नहीं जाने, भामा हरी पटनार हो ॥ अ० ४८२ ॥ यह पुष्करणी उनके कब्जे, हम इसकी रखवाली । वारि लेन नहीं पावे कोई, चाहे चले सौ चाली हो ॥ अ० ४८३ ॥ भामा भानु और गिरधारी, वही इसी में नहाते । अन्य कोई लेने नहीं पावे, तुम कौन गिणत मे आते हो ॥ अ० ४८४ ॥ पागल दासी तू क्या समझे, इसी भेद के माय ? हम पग की रज जहा कहीं लगजा, जग पावन हो जाय हो ॥ अ० ४८५ ॥ धीरे धीरे उतर वावडी, नीर पास चलि आयो । हाथ पकड़ खींचा दासी तब, खास रूप बतलायो हो ॥ अ० ४८६ ॥ अन्यो अन्य रूप निरखी ने, परम महा सुख पाई । चमत्कारी है ब्राह्मण पूरो, कीधी खूब वडाई हो ॥ अ० ४८७ ॥ भरी कमण्डल वाहर आयो, हुई वावड़ी खाली । विस्मित हो गई दासी सारी, यह दुष्टातम जाली हो ॥ अ० ॥ ४८८ ॥ कै डाकी कै कहे सिहारो, विप्र नहीं चाण्डाल । ऐसा काम उस से नहीं हो, जो जीव दया प्रतिपाल हो ॥ अ० ४८६ ॥ सब जल मत लेजा तू ब्राह्मण, पड़ूं तुम्हारे पाय । जगम थावर जीव जगत में, विन जल के मरजाय हो ॥ अ० ४६० ॥ जल ही राजा जल ही देवता, जल सा अन्य न कोय । जल ही जीतव जग को रखता, जल विन तृप्त न होय हो ॥ अ० ४६१ ॥ अन्न बिना महीना भी सरजा, जल विन चले न काज । इसी लिये है जल की महिमा, जल विन काज अकाज हो ॥ अ० ४६२ ॥ जल से सब ही अन्न नीपजे, अन्न से ठहरें प्राण । परमार्थ की इष्ट विचारो, जल का है वधाण हो ॥ अ० ४६३ ॥ सब अमृत मे जल मुख्य, अमृत जल सब आदि सार । कहा तक करें विस्तार नीर से, चलता जग व्यवहार हो ॥ अ० ४६४ ॥ सुन लेना

भागे भी नहीं थमे कुंवर से, विचार मन में होय हो ॥ भ० ४६१ ॥ पकी पाग उपरया दोनों पीछे पड़ा कुमार । तुरत उठाया पर इत-उत से लोग हस उस बार हा ॥ भ० ४६२ ॥ सौदागर कहे पांव चले किम् तरे आया पूत । होय पाटवी पुत्र हरि के, कैस रह पर सूत हो ॥ भ ४६३ ॥ राज सका नहि तू घोड़ का क्या राखेगा राज । तुमसे पुत्र से कृष्ण मरा की, तनिक रह नहीं लाज हो ॥ भ० ४६४ ॥ मरे वृथ पाना सांडी-सा भोजन का क्या काम । यह भाव दे मैं सर्व तुम्हें, भातुरता सब भाग हा ॥ भ० ४६५ ॥ जो चढ़ा आय मुझ से घोड़े फिर बेचू किस काम । अगर चढ़ा दे मुझको कोई गति दिखाऊ तमास हो ॥ भ० ४६६ ॥ पांच सात नर लगे पकान पड़ा उन्हीं सिर भाई । शीश सब टूटे उनके फिर पूजी बार गति पाई हा ॥ भ० ॥ ४६७ ॥ तीजी बार पड़ा भानु कुंवर पे चौथी बार के माई । भानु कुंवर क हृदय पांव घर बैठा आप ही आई हो ॥ भ० ॥ ६८॥ राजकुमारादिक प्रसन्न हुआ, एमा भरव घुमाया । नभ में आ भदरय हुआ अब कुंवर प्रपंच बताया हो ॥भ०४६९॥ भागे वन भाने से पूछा क्या विशाचनी के ताई । मामा का जान घोड़े क जरिये त्रिया विनाश कराइ हो ॥ भ० ४७० ॥ द्वारिका में प्रवेश करा वहां रथ सुशोभित भावे । बाजा बाजे भति जोर से सखियां मगल गाव हा ॥ भ० ४७१॥ मगलाक रत्नों क अक्षरा महिला शीश उठावें । पिता से पूछा भानु विवाह हित कुमाकार के आवें हो ॥ भ० ४७२ ॥ मायामय रथ बना फूट सर चोटी ओर पधारें । करें मशालरी गली गली में हाका हाक मचावें हो । भ० ७३ ॥ टूट कान शांव आगों क भाया फिर मच्छरी । गीत स्थान विलाप मचा, भागी पड़ पर नारी हो ॥ भ० ४७४ ॥ कोई कहे सुर असुर रेचर यह इन्द्रजाल बताया । कौतुक दिखला कुंवर फिर माता से मिलन उम्हाया हा ॥ भ० ४७५ भागे आव पुत्री पावड़ी सब ही विधि अभिराम । कनक पावड़ी पांच वर्ण की, है रत्नों का काम हो ॥ भ० ४७६ ॥ रसवाली नारी रहे यहां पर नीर ६।८०० भी पाय । मदन आय भामा राणी की, कौतुक यहां रचाय हो ॥ भ० ४७७ ॥ मायामय का भय रूप

ग्राहक आवे फिर जावे. व्यापारी भी अरड़ावे हो ॥ अ० ५११ ॥ जैसा लाभ करे व्यय वैसा. व्यापारी आचार । बिना लाभ बैठे धन खाणा, बिगड़े घर का कार हो ॥ अ० ५१२ ॥ साहूकार विचार करें सब, क्या करना अब भाई। चौपट बाजार हुआ क्षण मे, सब वस्तु पलटाई हो ॥ अ० ५१३ ॥ नाना कौतुक कर मार्ग में आया राजद्वार । वसुदेव बाबाजी बैठे, देखे नजर पसार हो। अ० ५१४ ॥ सद्गुणी दाता भुक्ता है, सागर से गभीर । सुभद्रा माता का जाया, सुमेरु सम है धीर हो ॥ अ० ५१५ ॥ स्वदेश अरु स्वजाति मे, पाये सब कोई मान। वह अपरिचित भूमि है, भाग्य बली महान् हो ॥ अ० ५१६॥ है बाबा को शौक घुटने से, आप मेष लडावे। आप विद्या स मेष रूप धर, बाबा सामने लावे हो ॥ ५१७ ॥ नृप के मोडे भेटी मेपने, मारी कर जोर अत्यन्त । प्रथम दौड़े नृप गया पड़, कृष्ण पिता बलवन्त हो ॥ अ० ५१८ ॥ बाबा से भी यों कर्म तो, चूको नहिं तिलमात। सिह के कहो सगा कौन है, जग मे बात विख्यात हो ॥ अ० ५१६ ॥ श्री वसुदेव नरिन्द वीर से, भूचर खेचर राय। पूर्व इनको कोई न जीता, पोतो जीता जाय हो ॥ अ० ५२० ॥ देखा अत्यन्त मनोहर आगे, भामा भवन उदार। तोरण ध्वजा माला करीने, है शोभित अपार हो । अ० ५२१ ॥ विद्या कहे सुन मदन कुवार, तुम्ह है सौतेली माय। जो करना हो वह यहां करले, दूजी वृथा कहलाय हो ॥ अ० ५२२ ॥ बालक ब्राह्मण चौदह वर्ष का, वन दुब्बा नाम धरायो। छूटा केश शिर, तिलक लगा है, सागे रूप बनायो है ॥ अ० ५२३ ॥ भोजन अर्थ भामा समीप आ, स्वस्ती शब्द सुनायो। कहो विप्र तुम क्या चाहते हो भामा राणी फरमायो हो ॥ अ० ५२४ ॥ क्षुधा वेदना व्याप रही है, माता भोजन करायो। लगी आग चमड़े की कुटी मे, इसको वेग बुझावो हो ॥ अ० ५२५ ॥ पहले ब्राह्मण भोजन के अर्थ, बुलवाया इस वार। हुआ एकठ्ठा इतना आके, अगणित कई हजार हो ॥ अ ५२६ ॥ कृष्ण वल्लभा को पाकर के, भोजन का क्या सवाल। हाथी घोड़ा धन कचन ले, हो जावेगा निहाल हो ॥ अ० ५२७ ॥ कहे विप्र विप्र के ताई, सुनो लगा के कान।

ग्राहक आवे फिर जावे. व्यापारी भी अरड़ावे हो ॥ अ० ५११ ॥ जैसा लाभ करे व्यय वैसा. व्यापारी आचार । बिना लाभ बैठे धन खाणा, बिगड़े घर का कार हो ॥ अ० ५१२ ॥ साहूकार विचार करे सब, क्या करना अब भाई । चौपट बाजार हुआ क्षण मे, सब वस्तु पलटाई हो ॥ अ० ५१३ ॥ नाना कौतुक कर मार्ग में आया राजद्वार । वसुदेव बाबाजी बैठे, देखे नजर पसार हो । अ० ५१४ ॥ सद्‌गुणी दाता भुक्ता है, सागर से गभीर । सुभद्रा माता का जाया, सुमेरु सम है धीर हो ॥ अ० ५१५ ॥ स्वदेश अरु स्वजाति मे, पाये सब कोई मान । वह अपरिचित भूमि है, भाग्य बली महान् हो ॥ अ० ५१६॥ है बाबा को शौक घुटने से, आप मेष लडावे । आप विद्या से मेष रूप धर, बाबा सामने लावे हो ॥ ५१७ ॥ नृप के मोंडे भेटी मेषने, मारी कर जोर अत्यन्त । प्रथम दौडे नृप गया पड़, कृष्ण पिता बलवन्त हो ॥ अ० ५१८ ॥ बाबा से भी यों कर्म तो, चूको नहिं तिलमात । सिंह के कहो सगा कौन है, जग मे बात विख्यात हो ॥ अ० ५१६ ॥ श्री वसुदेव नरिन्द बीर से, भूचर खेचर राय । पूर्व इनको कोई न जीता, पोतो जीता जाय हो ॥ अ० ५२० ॥ देखा अत्यन्त मनोहर आगे, भामा भवन उदार । तोरण ध्वजा माला करीने, है शोभित अपार हो । अ० ५२१ ॥ विद्या कहे सुन मदन कुवार, तुम्ह है सौतेली माय । जो करना हो वह यहां करले, दूजी वृथा कहलाय हो ॥ अ० ५२२ ॥ बालक ब्राह्मण चौदह वर्ष का, वन दुब्बा नाम धरायो । छूटा केश शिर, तिलक लगा है, सागे रूप बनायो है ॥ अ० ५२३ ॥ भोजन अर्थ भामा समीप आ, स्वस्ती शब्द सुनायो । कहो विप्र तुम क्या चाहते हो भामा राणी फरमायो हो ॥ अ० ५२४ ॥ क्षुधा वेदना व्याप रही है, माता भोजन करायो । लगी आग चमडे की कुटी मे, इसको वेग बुझावो हो ॥ अ० ५२५ ॥ पहले ब्राह्मण भोजन के अर्थ, बुलवाया इस वार । हुआ एकठ्ठा इतना आके, अगणित कई-हजार हो ॥ अ ५२६ ॥ कृष्ण वल्लभा को पाकर के, भोजन का क्या सवाल । हाथी घोडा धन कचन ले, हो जावेगा निहाल हो ॥ अ० ५२७ ॥ कहे विप्र विप्र के ताई, सुनो लगा के कान ।

चौथा मुक्का फटकारे हो ॥ अ० ५४५ ॥ तियारी भट्ट, मिश्र, द्राविड, पारिक रहे जग मचाई । कर्त्ता से कर लाभ लो कर को, पुण्य पाप कुछ नाई हो ॥ अ० ५४६ ॥ बातों बात हुआ महा भारत, देखे लोग तमाशो । मान, महत्त्वता, लाज गमाई, लोगो मे हुओ हांसो हो ॥ अ० ५४७ ॥ कोई पडे भूमि पै खसके, कोई भग प्राण बचाया । कमर टूट गई कई विप्रो की कोई ने रुदन मचाया हो ॥ अ० ५४८ ॥ भोजन पहले खूब किया, रुच रुच लाडू खाधा । उम्र तक अब याद करोगे जो भामा घर लाधा हो ॥ अ० ५४९ ॥ सत्यभामा यह भारत देखी, तत्क्षण उन्हें छुडायो । लघु विप्र के पास लाय के, सब को शान्त बनायो हो ॥ अ० ॥ ५५० ॥ सत्भामा कहे कारिन्दों को, बालक ब्राह्मण ताई । प्रेम पोष रसवती जिमाओ ऊचे आसन बैठाई हो । अ० ५५१ ॥ चमत्कार को नमस्कार यो, ब्राह्मण मुझ मन भायो । सद्गुण का भाडार उपल मे, रत्न अमूल्य छिपायो हो ॥ अ० ५५२ ॥ विप्र कहे मुझे पूर्ण जिमाना, दूजे घर नहीं जाना । क्यो कि भोजन व्यवहार बीचमे. कहते नहीं सरमाना हो ॥ अ० ५५३ ॥ बोली भामा यह क्यो भाषे, ऐसी ओछी बात । हाथी जैसा जिस घर धापे मानुष कितना खात हो ॥ अ० ५५४ ॥ पिश्ता,द्राक्ष, बादाम, चारोली, मेवा परोसा लाई । खाजा लड्डू घेवर फीणी, लापसी खीर मलाई हो ॥ अ० ५५५ ॥ फीका मीठा भुजिया पूरला, साल दाल मिठाई । घृत, दूध, दही, साग, राइता, जीमो शक विशराई हो ॥ ५५६ ॥ पुरसता तो देर लगे नहीं, देर जीमने माई । ज्यू अग्निमे घास झौंकत ही,क्षण मे दीखे नाई हो ॥अ०५५७॥ लाओ लाओ जल्दी लाओ, क्यो अब देर लगाई । लगी जोर की भूख पुण्यात्मा, झटपट देओ बुझाई हो ॥ अ० ५५८ ॥ सहस्रो अर्थ पकवान बनाया खाया नहीं छोडा बाकी । यही अचम्भा आवे सब कहें, मनुष्य नहीं है डाकी हो ॥ अ० ५५९ ॥ कच्चा पक्का मूग, मोठ, चावल जव चना तिजारा । गौ अश्वादिक का खाना भी, पूर्ण करदिया सारा हो ॥ अ० ५६० ॥ यादव नारी चढ़ी कुतूहल, लावे भर भर थाल । होडा होड़ी सभी परोसे, जैसे समझा ख्याल हो ॥ अ० ५६१ ॥ मच्यो कोलाहल अति जोर से, मिले बहुत नरनार । बाल विप्र तृप्त

नहीं डाले कार देव अवतार हो ॥ अ० २६२ ॥ हे भामा अब सुना विप्र की, कौन सभासो आप । नहीं हो बनेगा तोर्थी मनमें लगसी हिय का भाप हो ॥ अ० २६३ ॥ भानु कुंवर की मात कहलाय नारायण की नार । उग्रसेन की राजदुलारी, और सभी तुम सार हो ॥ अ० २६४ ॥ रुपया पया तुम्हका नहीं सोत् माटा जगत् कहलाय । अल्पाहारी बाल विप्र को, नहीं जिमायो जाय हो ॥ अ० २६५ ॥ नहीं आहार भी पूर्ण हुआ नहीं हुआ उपवास । अधबीच में ही रहा लटकता, व्यर्थ किया विश्वास हो ॥ अ० २६६ ॥ बालक का भी पूरा नहीं पाया नौला विप्र हजार । काटी सोच में पांव पसारा, लाग ठप्प अपार हो ॥ अ २६७ ॥ आडम्बर तो खूब बढ़ाये, नहीं विचार है घर का । यह मानव जगत् बीच में है हंसी पात्र सब नर का हो ॥ अ० २६८ । सागर विप्र अग्नि अरु मेरा, कोई सके नहीं पूर । अब उदक ईंधन कर भरवी, तो भी रहे अधूर हो ॥ अ० ॥ २६९ ॥ कितना खाया तो भी भूखा, चलता नहीं उपाय । भूखा बक म्याय जगत् में इसका दूषण नाय हो ॥ अ० २७० ॥ एक दासी थी कुब्जा उसको करदी सुन्दराकार । विस्मय पा भामा ने पूछा यह कौन अप्सरा नार हो ॥ अ० २७१ ॥ हे देवी मैं दासी आपकी कुब्जा मेरा नाम । प्रभु विप्र सुपसाय करी न, रूप बना अभिराम हो ॥ अ० २७२ ॥ लालच के वश होय भामनी जानी विद्यावन्त । हाथ पकड़ लेगई उस तांई जा बैठी एकन्त हो ॥ अ० २७३ ॥ प्रच्छन्न प्रश्न करूं तुम सती मनवाञ्छित फल पाऊं । अन्तर की चिन्ता मिट जाय तो तेरा गुण गाऊं हो ॥ अ० २७४ ॥ हे माता तू शोक तजे मत, कहदो सकल विचार । मंत्र यंत्र तंत्र सब करदूं वश करदूं भर्तार हो ॥ अ २७५ ॥ चन्द्र सूर्य भी मेरे वश में इन्द्र करू मिजमान । फेरा जाऊं पाताल आप में उड़ जाऊं असमान हो ॥ अ० २७६ ॥ भक्तों की मैं मदद करू दुश्मन का मैं हू काल । इच्छा हो सो पूछ मुझे आशा पूरू तत्काल हो ॥ अ २७७ ॥ तब तो भामा पगे लाग कर कहन लगी निश्वास । प्रभु की पूरे छिटक के खाली हाथ उदास हो ॥ अ० २७८ ॥ तेरा ही आधार आज मुझ और नजर नहीं आय । फिर

पुत्र भाई सुखदाई, तू एक मुझे सुहावे हो ॥ अ० ५७९ ॥ शल्य समान सौक है मेरे निशदिन शिर पर चढ़ती । रक्खे ईर्ष्या मन मे पापण, बोले नहीं हर्षती हो ॥ अ० ५८० । इसी दुख के आगे वीरा, बढे न लोही मस । रात दिवस सो लगा झूरना, शाता का नहिं अस हो ॥ अ० ५८१ ॥ माधव मेरे वश मे हो, रुक्मणि ले नहीं नाम । डोरा डारा ऐसा बना दे, दू मन गमता दाम हो ॥अ० ५८२॥ जैसे दूध बिल्ली को भोलावे, और लम्पट को नार । फल भोलावे ज्यू मर्कट को, चोरो को घर द्वार हो ॥ अ० ५८३ ॥ विप्र कहे भामा तू सुनले, कहू सो करे विधान । रुक्मणि से भी सहस्र गुणा, मिलसी तुझको मान हो ॥ अ० ५८४ ॥ जो विधि दाखे वही करूगी, शोच न करू लगार । मेरी लज्जा तेरे हाथ है, तू गति मति दातार हो ॥ अ० ५८५ ॥ मस्तक मूड के मुह काला रग, जीर्ण वस्त्र तू धार । मन निग्रही एकान्त बैठना,ममता कर स्वीकार हो ॥ अ० ५८६ ॥ ॐ ह्रीं रुड मुड स्वाहा, अष्टोत्तर सौ बार । जपे जाप एकाग्र चित्त से लहे रूप अनूपम सार हो ॥अ०५८७॥ श्री कृष्ण की बात कौनसी, देव वल्लभा होय । रुक्मणि भी जावे पासग मे, कहू बात यह तोय हो । अ० ५८८ ॥ दुख सहे बिन सुख कहा होवे, यह कहावत् जगमाय । कर्ण छेद करते दुख हो फिर, झुम्मरिया झलकाय हो ॥ अ० ५८९ । तरुवर जीर्ण पत्र झडे आवे, नव कुपल लाल । दिन थोडा के बीच वृक्ष वह, बनता झाक जमाल हो । अ० ५९० ॥ इतना सुन भामा महाराणी, आतुर हुई अपार । विप्र वचन स्वीकार करी ने, कर्म किया अविचार हो ॥अ० ५९१ । जो दूजो का बुरा चिंतवे, सो फल पावे आप । भामा के ईर्ष्या करन का, प्रकट हो गया पाप हो ॥ अ० ५९२ ॥ घोड़ा बैठने के हित मागा, जैसे कोइ सवार । घोडा चढा बैठन हारे पै, कीजे न्याय विचार हो ॥ अ० ५९३ ॥ मैं तो घूम के पाछा आऊ, जपो आप मन शुद्ध । फिर तो वहा से आप सिधाया, कर कृत्य विरुद्ध हो ॥ अ० ५९४ ॥ मात मिलन की लगी लगन मन, उमडा प्रेम अपार । कब दर्शन होवे जननी के, करता जाय विचार हो ॥ अ० ५९५ ॥ सुत आगमन का समय जान के, रुक्मणि भी तत्काल । अति

माइ स नाना भाँति की गूथे मनारथ माल हो ॥ भ० ५९६ ॥ सुन सहेलियाँ प्रायाधार आसन पलके आवेगा । यादव कुल भगार मदन सम नयनानन्द लावेगा हो ॥ भ ५९७ ॥ इतन दिन आ भाजन कीना, नहन लागा स्वाद । व्यथ गया जीवन इतना हुइ भाव जीवन भाव हो ॥ भ० ५९८ ॥ पानी बरसे धर्म रूप मेंडक में तब भाप जान । इसी तरह जीव का जीवन, मरे मदन महान हो ॥ भ० ५९९ ॥ गौ का ध्यान वत्स में चकवा चाहत है दिनकार । चन्द्र चकोर पपैया वारी पति चाहे वर नार हो ॥ भ० ६०० ॥ क्षुधावान् अन्न को चाहे तृषातुर को वारी । रोगी औषध एम मुझको सुत है वल्लभकारी हो ॥ भ० ६०१ ॥ सीमधर जिनराज बताया समय मिला है आज । धन की राहवत् सब गुरु प्रसाद सफल हो काम हो ॥ भ० ६ २ ॥ शहर शृंगारो बाजा बजाओ मंगल गौरियाँ गाओ । कंजरा वधावो अक्ष दूध शुभ सामग्री लाओ हो ॥ ६०३ ॥ विधुर मेघ भव भना का माटो छूने धूव । मगधा वस्त्र चिन चित्र, पूरा रत्ना समस्त हो ॥ भ० ६०४ ॥ माता चौक पुरावो सब मिल, सकल सुहाग नार । हाथी घोड़ा रास्ता पथ में मंगलमय सिंगार हो ॥ भ० ॥ ६०५ ॥ इस गती इन्द्र समान नीरापम मातों नभ दिनन्द । भति प्रम स देखु सामने जैम द्वितीया चन्द्र हो ॥ भ० ॥ ६ ६ ॥ गोद मही न मुख मस्तक को चूमूगी सौ वार । हाथों स द कवल पान विधा जिमाऊ काम कुमार हो ॥ भ० ॥ ६०७ ॥ भाद्यापान्त बात सुनूगी सुख की मन लगाइ । अपनी बातक सभी कहूगी जा साचा मन माइ हो ॥ भ० ६ ८ ॥ भव भाग आते मदन कुंवर का भव्य महल दिखाया । विद्या कह यह मात भवन है जिस कारण यहाँ आया हो ॥भ ६ ९॥ रुक्माण है नाम इसी का, लग निग्रन्थ गुरु प्यारा । सच तो मुनि का वप भाप न पहर चोलपट धारा हो । भ ६१० ॥ बांधी मुखपत्तिका पल्ला—चिह्न के काज । रजोहरण भी लियो काँख म पूछन हित मुनिराज हो भ ६११ ॥ लिया हाथ म झोली पात्रा चल महलों में आया । बाल मुनि का देख रुक्माण चरण शीश नमाया हो भ० ६१२ ॥ आर्की लम गय

आप हरी, आसन वैठे जाय देख व्यवस्था हरि–पटराणी, मन मे विस्मय पाय हो ॥ अ० ६१३ ॥ नम्र होय कहे अन्य आसन पर, वैठो आप मुनिराई । कोई कारण से करू अर्ज और, वह भी देऊ सुनाई हो ॥ अ० ६१४ ॥ हरि या हरि सुत वैठे इस पर, देवाधिष्ट है साई। अन्य के हक्क मे हैं नहीं अच्छा, केवल उन्हे सुखदाई हो ॥ अ० ६१५ ॥ यह चिन्ता मत करे श्राविका, ऋषिराज फरमाई। काले सर्प को वहीं खिलावे, मत्र याद जिस ताई हो ॥ अ० ६१६ ॥ लब्धि योगे मुनिराज की, करें देवता सेवा। तन मन से गुरु सेवे सोई, पावे इच्छित मेवा हो ॥ अ० ६१७ ॥ तो तुम साचे हो स्वामी यो कहि अपराध क्षमाया। पर नानी वय के वीच आपने, कैसे सयम पाया हो ॥ अ० ६१८ ॥ भूमण्डल पर जन्म लिया है, पृथ्वीपति मम तात। माता मेरी मही–मडणी, खास सुणाई वात हो ॥ अ० ६१६ ॥ आज तलक तो गुरु के ताई, मैंने भेटे हैं नाई। स्वय प्रति बोधित हुआ हू, अर्हम् लौ लगाई हो ॥ अ० ६२० ॥ वडी दूर से घूमत घूमत, तुम घर आया आज । सोलह वर्ष का मेरे पारणा, सो करने के काज हो ॥ अ० ६२१ ॥ कहे रुक्मणि सुनो महात्मा, अधिकी वात सुनाई। वरसी तप के आगे प्रभु ने, तपसा नहीं वताई हो ॥ अ० ६२२ ॥ आज तलक उपवास किया है, माता स्थान हराम । वातों से नहीं वडी होय तू, वहराने का कर काम हो ॥ अ० ६२३ ॥ दर्श पा माता का तत्क्षण, प्रसन्न हो गया काम। सो तो जाने केवल ज्ञानी, के खुद आतम राम हो ॥ अ० ६२४ ॥ मन वाणी काया हुई सन्मुख, नयनानन्द मिलान। चारों मिलन के वीच एक ही, अटक रही पहिचान हो ॥ अ० ६२५ ॥ तू तो रुक्मणि साची श्राविका, तेरा वडा सौभाग। प्रदेशों मे सुना है तेरा देव गुरु पर राग हो ॥ अ० ६२६ ॥ नहीं क्षुद्र रूप में सुन्दर, सोम महा सुखदाय। तू सत्यवक्ता डरे पाप से, सरल भाव शुचि काय हो ॥ अ० ६२७ ॥ स्नेह घणा अधिक लज्जामें, दया वहुत दिल माय। शुभ इष्टणी है समभावी, गुण रागण है प्राय हो ॥ अ० ६२८ ॥ धर्म–कथक धर्मात्म तू है, विशुद्ध तुम कुलवान। दीर्घ इष्ट लहे अर्थ यथार्थ, विनयवान गुण जान हो ॥ अ० ६२६ ॥ परहितकारी लब्धि लखी,

यह पकधारा गुणधर नार । निरखत है समकित क गुण में दिगता नहीं लगार हो ॥ म० ६३० ॥ पौषध आवश्यक पर्व आराधे सविधि हरबार । शीलवती है सीता जैसी, भाग्यवती संसार हो ॥ म० ६३१ ॥ स्वधर्मी स्वधर्मिनी तू शाता उपजाव । साधु साध्वी की तू माता ज्यों समाज रत्नाव हो ॥ म० ६३२ ॥ चार प्रकार को आहार मदा दे दान हुलसाई । बिन बहराये हाथ म भोजन जीम नाई हो ॥ म० ६३३ ॥ एसा गुण सुन मुझ पर आया, नहीं पूछा मुझ सार । के या है अन्तराय हमारे के तू गई विसार हो ॥ म० ६३४ ॥ कहे रुक्मणि सुना ऋषीश्वर, आ चिन्ता की बात । भोजन कार्य सारा आ करना याद नहीं तिलमात्र हो ॥ म ६३५ ॥ ऐसो भाव तुम कौनसी, आपो मजक्ष विचार । मा कब पुत्र-आगम की मक्षा भी जिन करी उचार हो ॥ म० ६३६ ॥ बांया नयन भुजा भी फरके मिल सकल निशानी । सूना आशा मुझ भी फलिया, ऐसा मुनिया आनी हो ॥ ६३७ ॥ सूक लगे बोलन मुख से कुरूप भी बने सरूप । मरस बन है कुवधी मलस अधा सह नैन अनूप हो ॥ म० ॥ ६३८ ॥ सूख सर पानी भर आया मार करे फुंगार । बिन ऋतु ऋतुराज भी आया भ्रमर करे गुंजार हो ॥ म० ६३९ ॥ मेरा हृदय भी हुलस रहा है पान्हो भी यह आया । पिछ नहीं आयो मुझ नानकियो, चिन्ता इसे बनायो हो ॥ म० ६४० ॥ है कौनसी इतनी जल्दी, आ भाख्या जिनराया । घड़ी पहर क अन्तर यह भी अवश्य रहेगा आया हो ॥ म० ६४१ ॥ रानी कहे ऋषिराज यह मेरी क्षण लाखिणी कहाव । मामा सुत के ब्याह बीच में, शिर मुडाई आय हो ॥ म० ६४२ ॥ बाल गये का सोच कौनसा, पीछा आसी बाल । जो चंगा रह वपु अपना, तो क्या बाल का ख्याल हो ॥ म० ६४३ ॥ मैंने जाना उपग्रह मोग्य निकसी यह तुच्छ मान । जहाँ तक ख्याल प्राप्त है अपने मय नहीं तिलमात्र हो ॥ म ६४४ ॥ तजू प्राण एसा भाई मुनिवर, जो हो यह अपमान । मान रहित जीना जग मांह लाग जहर समान हो ॥ म ६४५ ॥ मच्छी बिन पानी नहीं जीवे तड़फ तड़फ मर जाय । ऐसे सिंह पुरुष भी जग में, बचन पे प्राण गमाय हो ॥ म० ६४६ ॥ गृह सम्बन्धी काम

मुनी को पूछब योग्य तो नाय । पर चिंतावश हो पूछू स्वामी, दीजे मोय बताय हो ॥ अ० ६४७ ॥ खाली हाथ से यह पूछना, फलदायक नहीं होय । जो हाजिर वह लाय वहरावो, प्राशुक हो तो जोय हो ॥ अ० ६४८ ॥ योजित किया केशरी मोदक, हरी आरोगन काज । वही वहरावो मेरे ताई, बोले वह मुनिराज हो ॥ अ० ६४९ ॥ एक उठाया लाडू उसने, तब बोले मुनिराय । वडे घरों की पुण्यात्मा हो, हाथ तग दिखाय हो ॥ अ०६५० ॥ होय हज्म नहीं हर एकने, हरी एकाकी खाय । चौथा हिस्सा काफी आप को, अधिके प्राण नसाय हो ॥ अ० ६५१ ॥ हृदय बीच तू डर मत राखे, तप लब्धि प्रमान । जो भोगें हम वही भस्म हो, रख दे तू सब आन हो ॥ अ० ६५२ ॥ सब ही ला बहराया उसको, खाय गया ऋषिआल । चक्रवर्त खीर के मानिन्द, हज्म हुआ तत्काल हो ॥ अ० ६५३ ॥ मात-हाथ का भोजन करके,परम महा सुख पाया करे गोष्टी धर्म ध्यान की, एक वीतक और विताया हो । अ० ६५४ ॥ इत भामा ने भाव विशुद्ध से, जाप जपा भरपूर । नया रूप तो कुछ नहीं पाई, छतो गमायो नूर हो ॥ अ० ६५५ ॥ जैसे जुआ खेल धन चाहें,बादी से घरवास । अधिक रूप हित शीश मुडाया, हो गई आश निरास हो ॥अ० ६५६॥ जलधि पार वणज हित वणिक, विदेशे तृष्णा वश जाय । कदी वायु योगे समुद्र बीच में, देवे मूल गमाय हो ॥ अ० ६५७ ॥ भामा पूछे दासी ताई, विप्र कहा सिधावे । हाथ घसे, धुणे फिर शिरको, वार वार पछतावे हो ॥ अ० ॥ ६५८ ॥ दर्पण के बिच मुख देखने, मन ही मन शरमावे । कहीं देखले हरी इस विरिया वात विकल हो जावे हो ॥अ०६५९॥ नहाय शीघ्र सिंगार सजावे, अपना ऐब छिपावे । कहीं होय हासी दुनिया में, यो धूर्त ठग जावे हो ॥ अ० ६६० ॥ धरी ईर्ष्या भामा राणी, कर हृदय अभिमान । रुक्माणि भुंडी का शिर मुडी, करसू आप समान हो ॥ अ० ६६१ ॥ ऐसा सोच बहु दासी बुलाई, दाई को दी लार । रुक्माणि शिर का मुण्डन करके लाओ केश इस वार हो ॥ अ० ६६२ ॥ मणी रत्न की थाली हाथ ले, सग में पहरेदार । गाती गीत बाजना बाजा, आई रुक्मणि-द्वार हो ॥ अ० ६६३ ॥ भामा का युथ देख दूरसे, छूटो

मदु भारा । तब मुनि बाल मत रावे था मुझ कहा विस्तार हो ॥ म० ६६४ ॥ आद्योपान्त वृत्तान्त सुनाया, नहीं आया सन्धान । जो आजाय मदन कुंवर तो मिट जाय तूफान हो ॥ म० ६६५ ॥ यह शोक भामा के आकर केश सेन क काज । उबल उबल क वास आरस दूजी बचन का साथ हो ॥ ६६६ ॥ यह दुख तो प्रथम आना था नारद् वचन विचार । हाय मनारथ हार गई मैं भरे शान हरि-नार हो ॥ म० ६६७ ॥ हे माता तू साथ करे मत पुत्र करे जो काम । यही करूंगा मांच मात मत तेरे काम तमाम हो ॥म०६६८॥ रुक्मणि ताई मध्यम बैठाई सा रूप आप बनाया । ह आरीमा हाथ पीव म सब का पास बिठाया हो ॥ म० ६६९ ॥ हे स्वामिनी नहीं दोष हमारा हम हैं दास तुम्हारा । केश लेन भ ज इस कारण आना हुआ हमारा हो ॥ म ६७० ॥ रुक्मणि रूप में काम कहे, रोष नहीं तिलमात्र । स्वामिनी कार्य करो परा लखा क्या तुम्हारे हाथ हो ॥ म ६७१ ॥ कैसी सरल स्वभाव की दखो, या है हरि पटनारी । बाकी खरी सामने ताक हर्षी हृदय मंझारी हो ॥ म० ६७२ ॥ दाई क्या काटन लागी फिर ऐसी विद्या फैलाई । कान, नाक बच्या अंगुली उन सबकी गई छिपाई हो ॥ म ६७३ ॥ नाइन नारी और सभी मन यही अवस्था पाई । अपनी कैसा हुई न जानी घास मन हपाई हो ॥ म० ६७४ ॥ रुक्मणि की सब ही मुख से करती आय प्रशंस । एसी मीठी अन्य न दखी धन इसका कुल वंस हो ॥ म० ६७५ ॥ छल सबक विपरीत रूप का, हँसत लाक बजार । य समझ हम सुन्दरता पे, प्रसन्न हुआ संसार हो ॥ म० ६७६ ॥ गाता बजाती और नाचती आई भामा पास । रुक्मणि की हालत हुई कैसी, करने लगा प्रकास हो ॥ म० ६७७ ॥ भामा सबक सबक क पाली क्या एक नहीं लाई । र र ग्राहया दासी तुम ने धूम मचाकर लाई हो ॥ म ६७८ ॥ और बात तो पीछे हो तन की क्यों आब गमाई । बणी नाक कान अंगुलियां क्यों पर तुम रख आई हो ॥ म० ६७९ ॥ सुनी बात मिल बदन विलोकी गये हासाधिक घबराइ । सरकर जिमि टांक पेन का भाग गय घर माईं हो ॥ म० ६८ ॥ धीरज देकर पूछे स्वामिनी

सेवक दुखी से स्वामी दुख वेदे सुखिये
करा कौन दुष्काम। तो रुक्मणि का दोष नहीं, मत लो उसका नाम हो ॥ अ० ६८१ ॥ पूरा पडा नहीं होड किये का, उल्टे हुवे बद-
सुखिया जान। सारी बात प्रधान बुला के, जितलाई धर ध्यान हो । अ० ६८२ ॥ सभा बीच प्रभु को दिखाओ, स्यानी का कृत आज।
नाम। साहूकार को दण्ड चोर दे, विपरीत काम तमाम हो ॥ अ० ६८३ ॥ हरि के हृदय हास न मावे, ताली हाथ लगाई। स्वामिनीवत
शिर पर छाणा लगी थापने, कैसा करा अकाज हो ॥ अ० ६८४ ॥ कृष्ण कुतूहल करतो जानी, भामा आई आप। केश दिलाओ कपटीकन्ता,
ही साथणिया, नकटी बूची आई हो ॥ अ० ६८५ ॥ तुम पुरुषोत्तम साक्षी इसमें, हलधर भी है नाई। इन्साफ करो मत देर करो, क्यों रही
या होगा सताप हो ॥ अ० ६८६ ॥ हरि से हलधर देय ओलम्भो, क्यो शिर चढाई नार। सत्य हारना कौल बदलना, शोभा
तूफान मचाई हो ॥ अ० ६८७ ॥ कृष्ण कहे आप अकेली, यह पुष्कल परिवार। केश मूँडाई दादा देखो, तुम ही करो विचार
नही लगार हो ॥ अ० ६८८ ॥ श्री बलदेव दिलासा दीना, भामा को भरपूर। रुक्मणि का घर लूटन काजे, भेजे भट्ट केई सूर हो
हो ॥ अ० ६८९ ॥ रुक्मणि रूप मिटा मदन ने, फिर बने अणगार। चित्त मे चौंकी रुक्मणि रानी, यह तो गुण भण्डार हो
॥ अ० ६९० ॥ विद्याधर के बीच बसा सो, विद्या ली वहु धार। नाना भाति रूप वनावे, निश्चय काम कुमार हो ॥ अ०
॥ अ० ६९१ ॥ मात मनोरथ पूरो लाल अब, पाखण्ड दूर हटाय। प्रगट करो सुत अपनेपन को, मेरा जीव सुख पाय हो ॥ अ०
६९२ ॥ कामदेव की उपमा जिसको, रूप अनूपम सार। अभ्रमण्डल से निकसा आके, सहस्र किरण दिवाकर हो ॥ अ०
६९३ ॥ अगोपाग है सर्व शोभनीक, तन आभूपण धार। सकल कला सद्गुण आगर, देखा काम कुमार हो ॥अ० ६९५॥
६९४ ॥ चरण कमल में शीश नमाया, माता लिया उठाय। कण्ठ लगाया तुरत लाल को, हृदय हर्प न माय हो ॥ अ० ६९° ॥
आज श्रेष्ठ दिन उगा मेरे, मुक्ता मेंह वर्पाया। दर्शन देखी तेरा लाल !, रूम-रूम हर्पाया हो ॥ अ० ६९७ ॥ आया हृदय

मरी मार वरा आंसू बरसे मैन। मात-पुत्र मिल पय शक्करवत्, उपजा अधिका चैन हो ॥ भ० ६६८ ॥ सुख मस्तक को महण करी ने चुम्ब बारम्बार। हूँ बलिहारी वारी जाऊँ तू मुझ प्राणाधार हो ॥भ० ६६६॥ आज सपुत्री हुई मात सखी हरो भर बाल। माया इन्द्र वास मुझ भोगस, सब विधि रूप रसाल हो ॥भ ७००॥ घन गाजे पर देखा मोरकी नृत्य करे जिस वार। एस प्रेम विछुड़णी माता करती लाड अपार हो ॥ भ० ७०१ ॥ चन्दन स शीतल हा चन्द्रमा शशि स शीतल मन्द। मिश्री से अमृत मीठा होय वास मन्द सुखकन्द हो ॥ भ० ७०२ ॥ चिंतामणि रत्नों में ज्यूँ मधु सुन्दर सुत सुन्दर। हृदय सरोवर अति सोभता, बला भ्रम जस हमर हो ॥भ० ७०३॥ सुख में दुख है इसी बात का, लाल ! माता मन माई। बालपना वरा नहीं देखा लटक चाही सधाई हो ॥भ० ७०४॥ करी गर्भ की यथा पालना उदर धरथा नव मास। विविध कष्ट सह तुझ को जायो, कीना परघर वास हो ॥ भ० ७०५ ॥ नहीं दोष देना है परका, है कर्मों का पाप। भाग्य लिखा फल मागवना स्वयं ही करना राव हो ॥ भ० ७०६ ॥ मात हौंस पूर्ण करने हित बालक रूप बनाया। हंस रमे गादी में लट नाना चरित्र रचाया हो ॥ भ० ७०७ ॥ ऊँचा सीधा पड़ भूमि पर कर मही मात उठाय। लघु हस की चल चाल वह देख-देख हुलसाय हो ॥ भ० ७०८ ॥ स गादी में दूध पिलावे, काजल नयन लगाय। आप ही उठ चले घुटनों स, पांव भरे गिर जाय हो ॥ भ० ७०६ ॥ उँगली मही मात की लाल, बाल तोतल वाणी। भोजन दे ता दब फेंक कह पहिले दे दे पाणी हो ॥भ० ७१०॥ राव जोर स रीव नहीं लाड समझावें सब भाम। नहीं माने पे कहे रुक्मणि रखना दे यह काम हो ॥ भ ७११ ॥ रूप मूल का धार मात क चरण नमायो शीश। सदा चिरजीवि रहो लाल यों दीनी शुभ आशीष हो ॥ भ ७१२ ॥ निरख-निरख मुग्ध निज नन्दन का मोद मनाती माय। साक्षात् वर्ग का सचित हुआ गया दुख विरलाय हो ॥ भ० ७१३ ॥ इतने बलभद्र नरेन्द्र का, सुभट पड़ा जुम्हार। आक एकदम हुआ इकट्ठा रुक्मणि क द्वार हो ॥ भ० ७१४ ॥ मदन कह य होय एकत्रित क्यों आये

इस वार। मात कहे जो थैं तरु बोया, सो यह फल स्वीकार हो ॥ अ० ७१५ ॥ हरि हलधर हैं साक्षी होड़ मे, भामा करी पुकार। नकटी दासी को थैं कीनी, आये सुभट ललकार हो ॥ अ० ७१६ ॥ चिंता मत कर मात जरा, बालक की करणी देख। विद्या से वन वृद्ध विप्र, ली लकडी हाथ विशेख हो ॥ अ० ७१७ ॥ वडा पेट चाल ठडी चल, दरवाजे पर आया। एक सुभट को छोड शेप को, स्थम्भित निवल बनाया हो ॥ अ० ७१८ ॥ सुभट कही बलदेव पै आई, सुन कहे बहु ठगारी। मत्र प्रयोग पति वश कीना यह तो जादूगारी हो ॥ अ० ७१९ ॥ मीठा बोले मोर सर्प, आखाने निगली जावे। शीत जल पहाड़ ने फोड़े, कान्ता कथ नचावे हो ॥ अ० ७२० ॥ देखू इसका मन्त्र जन्त्र यों, कर विचार बलदेव। मनहु सुत की शोभा बढावन, आप चल स्वमेव हो ॥ अ० ७२१ ॥ दरवाजा में आड़ा ब्राह्मण, सोता पाव फैलाई। हलधर कहे उठ खडा हो, रास्ता दे हम ताईं हो ॥ अ० ७२२ ॥ बहु-भामा घर भोजन बहु कीना, तासे उठा नही जाय। विप्र कहे गुरु बुध विचार मत, आगे पाव बढाय हो ॥ अ० ७२३ ॥ बहु-खाना हट दूर यहां से, बोला विप्र तिवार। जीती मक्खी नहीं निगली जा, कीजे हृदय विचार हो ॥ अ० ७२४ ॥ हलधर कोप करी पग पकडी, खेची दूर ले जाय। उतनी काया लम्बी बढ गई, द्विज वहीं बैठा पाय हो ॥ अ० ७२५ ॥ पीछा फिर के बैठा देखे, ब्राह्मण जहां का ताईं। क्रोध करी मन मे सोचे, कैसी माया फैलाई हो ॥ अ० ७२६ ॥ मुझ से भी नहीं बाज आये, तो औरों की कब गिनती। डाकन-शाकन यह प्रत्यक्ष, चढी इसे मदमस्ती हो ॥ अ० ७२७ ॥ क्रोधातुर हो आते देखी, मदन कहे कौन मात। शा कहे यह जादूकुल नायक, तुम पितु हित चहात हो ॥ अ० ७२८ ॥ हरिवश के बीच शिरोमणि, तुम पड़ो पग जाय। भुजग के मुख हाथ डालना, कैसे हो सुखदाय हो ॥ अ० ७२९ ॥ मन्त्रवान् है नाग खिलावे, शा कहे मृगपति मारे। रण चढे जब हल मूसल ले, योद्धाओं को सघारे, हो ॥ अ० ७३० ॥ विप्र वेष तज सिह बना अरु, मस्तक पूछ चढ़ाई। करता दहाड निकला घर से, हाका-हाक मचाई हो ॥ अ० ७३१ ॥ हलधर सोचे भीम सुता यह, पूरी निर्लज्ज नारी। आद्यन्त ली परख इसे,

क्या कर मोहे गिरधारी हो ॥ अ० ७३२ ॥ हलधर और शोर के माहीं भारी युद्ध मचाया । विद्याधर से हलधर को, भूमि पर शीघ्र गिराया हो ॥ अ० ७३३ ॥ बलभद्र समझी माया इसकी वापिस आप सिधाया । मदन गया मात पै जब यह, हृदय उसे लगाया हो ॥ अ० ७३४ ॥ नारद की पूछ पै कुमर कहे, उदधि कुमरी पास । उदधि कुमरी कर कौन-सी बात करो प्रकाश हो ॥ अ० ७३५ ॥ कुंवरी-हरणादिक सारा मुझको सब दिया बोल सुनाई । चकित हो मन में रुक्मणि, उंगली दांत दबाई हो ॥अ० ७३६॥ हे बेटा ! तुम चरित्र बहुत-सा मुझ से कहा न जाय । अब तो मिलो तात से जाके, वह भी मगन सुख पाय हो ॥ अ० ७३७ ॥ जैसा सुख माता को दीना, वैसा सुख दो तात । तात तुम्हारे दर्शन कारण रहे तरसे दिन रात हो ॥अ० ७३८॥ कैसे मिलूं मात तब बोली आप परिचय मात । तात ! तुम्हारा पुत्र मैं आया, मुझसे कहा न जाय हो ॥अ० ७३९॥ यह कौन आया यह कौन आया हर कोई पूछे आय । अच्छा हुआ जो आया मदनवा, मात पिता सुख पाई हो ॥अ० ७४०॥ छोटे बच्चों के माता सम सह न आवे बोल । इसीलिये उदक निशान में मिलूं बना के ढोल हो ॥अ० ७४१॥ बड़ा बाप बन्धों का बन्धु हरि हलधर के साथ । यादव जोर मैं बतलाऊँगा दूंगा शोर मचाई हो ॥ अ० ७४२ ॥ कथन नेमनाथ ने बांधी छाका सब परिवार । अपना आया बता बाप न फेर कर जुहार हो ॥ अ० ७४३ ॥ जब तक पिता को नहीं हाथे दिखलाना । जहाँ तक मेरा परिचय माता मत उनको दिखलाना हो ॥अ० ७४४॥ वचन हमारा माना माता बसो आज मुझ लार । यों कहे बिन पूछे नहीं जाऊ, पतिव्रता आचार हो ॥ अ० ७४५ ॥ उसी समय एक माया रथ पर रुक्मणि को बिठलाई । जहाँ चला पड़े च भग में, शंख आवाज लगाई हो ॥ अ० ७४६ ॥ हरण करी रुक्मणि ले जाऊं जो हो कृष्ण में शक्ति । रक्षा करो और यादवादिक सब की लगाऊं मस्ती हो ॥ अ० ७४७ ॥ पाण्डव शिशुपाल सग, तुमसे करी लड़ाई । वही रुक्मणि मैं ले जाऊं हो मर्द तो लो छुड़ाई हो ॥ अ ७४८ ॥ मैं विद्याधर का नन्दन हूँ

एकाकी वलिन्द । लेकर जाता हू रुक्मणि, जिसका पति गोबिन्द हो ॥ अ० ७४६ ॥ चोर और लम्पट में नाही, नहीं नटखट मे नाम । चौड़े दहाड़ मैं ले जाता, नेत्र खोल घनश्याम हो ॥ अ० ७५० ॥ बिना युद्ध किये नहीं जाऊ, सुन लेना कुल सूर । जो पीछे भगदौड करोगे, तो का पुरुष जरूर हो ॥ अ० ७५१ ॥ इतना सुनते ही यादव में, मचा बहुत हकार । सभी सुभट शस्त्रादिक से, हुवे तुरत तैयार हो ॥ अ० ७५२ ॥ हलधर मूर्छाया यह सुन के, रुक्मणि का अपहार । शीघ्र उठा के ऊभा कीना, कोवित हुआ अपार हो ॥ अ० ७५३ ॥ पाण्डु नन्दन अर्जुन भीम सब, कौन–कौन कर धाये । उग्रसैनादिक सब राजा, दौडे जोश मे आये हो ॥ अ० ७५४ ॥ हाथी घोडा रथ पालखड़ी, चले बडे जुझार । सूर्य तेज रज से हुवा फीका, चमक रही तलवार हो ॥ अ० ७५५ ॥ गवाक्ष चढी ने महिला देखे, सिरे मोरचे स्वामी । शूरवीर की नार कहलाऊं, मत रखजे पिउ खामी हो ॥ अ० ७५६ ॥ ले जा वायुयान मे रुक्मणि, नारद पास बैठाई । पीछे आ मैदान बीच मे, मारा मार मचाई हो ॥ अ० ७५७ ॥ मदन मोद मन मे समझे, माया की सैन्य बनाई । ऐसी करी व्यूह–रचना उसने, हरि की फौज हटाई हो ॥ अ० ७५८ ॥ दक्षिण नेत्र भुजा हरि फरकी, शुभ लक्षण पहचान । इस पर स्नेह जगे बहु मेरा, फिर शत्रु की शान हो ॥ अ० ७५६ ॥ स्त्री रूप भिक्षा मांगो तो शीघ्र रुक्मणि आपू । शस्त्र चलावे तो शस्त्र को, आते पथ में कापू हो ॥ अ० ७६० ॥ ऐड़ी से शिखा तक हरि के, वचन लगे ज्यों ज्वाल । अस्त्र शस्त्र सब व्यर्थ हो गये, एक चली नहीं चाल हो ॥ अ० ७६१ ॥ तब तो मदन सग घुस्तमघुस्ता, आये आप गोविन्द । देख रुक्मणि चिन्तातुर हो, रखे दमेगा नन्द हो ॥ अ० ७६२ ॥ हे नारदजी ! आप जाय यह, झगड़ा शान्त करावो । किसी तरह समझा बुझा के, म्हारो लाल बचाओ हो ॥ अ० ७६३ ॥ नारद आ कहे श्रीकृष्ण से, यह मदन तुम नन्द । तवतो मदन तात पग लागो, उपजो हर्षानन्द हो ॥ अ० ७६४ ॥ हरी उठा हृदय लगायो, मानो अमृत पीना । देख इन्हे परमानन्द मे, सबने युद्ध बन्द कीना हो ॥ ७६५ ॥ भ्रात सुभट पड़े धरनी पर, इसका करें विचार । माया सकोच वैसे ही किये, वर्ता जय जय

कार हो ॥ म० ७६६ ॥ माता बन तो पुत्र एसा जैसा प्रद्युम्न कुमार । जहां जाय वहां विजय कर, शोभा लहे अपार हो ॥ म० ७६७ ॥ समुद्र विजय आदि पुरुषों को प्रद्युम्न चित्त हर्षाय । श्री वसुदेवजी प्रसन्न हो, छीना कण्ठ लगाय हो ॥ म० ७६८ ॥ अर्जुन भीम से मिले प्रेम धर मिला सभी परिवार । राजा रानी और सभीन मेरा हर्ष अपार हो ॥म० ॥ ७६९ ॥ भानुकुंवर भाग के आयो माता भामा पास । बात सुनाई मदन कुंवरकी भामा हुई उदास हो ॥ म० ७८० ॥ मई मामनी भामा रानी चिन्ता करे अपार । जिसको पुण्य ने बड़ा बनाया ओर न चले लगार हो ॥ म० ७८१ ॥ गगन पंथ से शीघ्र सवारा विद्या रूपी विमान । कुमरी को ले प्रद्युम्न रही, चकित हुए राजान हो ॥ ७८२ ॥ रुक्मणि लागी पांव प्रभुके हरी से हंसी न माव । कैसे नहीं दिखाई मुझको सुत आगम की चाव हो ॥ म० ७८३ ॥ नैनों में अमृत वृष्टि हो, परम महा सुख पाय । यह आनन्द ज्ञानी सिवा अब, दूजा जान नाय हो ॥ म० ७८४ ॥ हे भामा तू बड़भागिन, धनवी भी यदु नार । कहो भाग्य अब किसका सुन्दर कौन यही संसार हो ॥ म० ७७५ ॥ हरी कहे मैं बालक पय में, किय हल्स अभिराम । मुझसे भी यह करा सवाया, प्रद्युम्न कुमर अभ्रम हो ॥ म० ७७६ ॥ सारी नगरी को शृंगारा बाज का झनकार । घर घर हर्ष बधावना घर २ मंगलाचार हो ॥ म० ७७७ ॥ पुत्र पिता गज ऊपर बैठे रुक्मणि रथ मझार । बल हसार हलधर संगमाही चले सभी परिवार हो ॥ म० ७७८ ॥ गोख बैठी रमणी बाले, देवें शुभ आशीस । धन्य तू माता रुक्मणि जायो, बेटो बिस्वाबीस हो ॥ म० ७७९ ॥ कोइ पुष्पमाल पहनाइ कोई बोले मंगल वाल । आये रुक्मणि महलों माहीं बाजन्त्रा बहु ढोल हो ॥ म० ७८० ॥ मदन आगम का शुभोत्सव लख, सभी लोग सुख पाया । पर भामा भानुकुमार के चित्त में नहीं सुहाया हो ॥ म० ७८१ ॥ हरी हलधर नन्द सहित और यदुव स राय । रुक्मणि के आरोगे रहे मोद क मांय हो । म ७८२ ॥ इतन दुर्योधन नृप आकर, हरी स करी पुकार । मरी सुता और मधु

आप की, करिये प्रभुजी वहार हो ।। अ० ७८३ ।। चिंतातुर गिरधर को जानी, तत्क्षण मदन कुमार । उदधि कुमरी हाजिर करदी, हरि हर्षे उस वार हो ।। अ० ७८४ दुर्योधन नृप कहे हरी से, व्याहो मदन कुमार । सो कहे यह पुत्री समान मम, लघु भ्रात की नार हो ।। अ० ७८५ ।। अव मदन का व्याह रचाया, श्रीकृष्ण मुरार । खेचर हति अरु खेचरनी को, बुलवायो उस वार हो ।। अ० ७८६ ।। रति सुन्दरी आदि सुता बहु, लेई द्वारिका आया । हरि हलधर भी आये सामने, उन्हे वधाई लाया हो ।। अ० ७८७ ।। रुक्मणि खेचरनी मिल सारी, गावें मगल छद । बहिन ! तुम प्रसाद आज यह, हो मुझ घर आनन्द हो ।। ७८८ ।। भूचरनी और खेचरनी सव, इद्रानी अवतार । उनपचास कन्या जोडी की, भेरी करी उदार हो ।। अ० ।। ७८९ ।। सगा सम्बन्धी बहन भानजा, भूआ सभी परिवार । धूम मची व्याह की भारी, देखे सुर नर नार हो ।। अ० ७९० ।। मदन कुमर वनड़ो वनवायो, घोडे हुवो सवार । काल समर हरि हलधर आये बाग मझार हो ।। अ० ७९१ ।। सर्व कुवरिया एक साथ में, मदन ताहि परणाई । हय गय दासी दास कनक, धन दिया दहेज के माई हो ।। अ० ७९२ ।। ले पचास अन्त:पुर सग मे, आये महल मझार । काम रति की मिली जोड़, वासव शचि अनुसार हो ।। अ० ७९३ ।। मेहमानों को बिदा किये, गय अपने अपने स्थान । कामकुमर अव रहे मोद में, भोगे पुण्य प्रधान हो ।। अ० ७९४ ।। भानुकुमर को उदधि आदि, कन्या दी परणाई । भामा की भी आश फली, तब मन में हुलसाई हो ।। अ० ७९५ ।। हरि सुत कामकुमर की महिमा, सारे जग मे छाई । गुरु प्रसादे चौथमल कहे, पुण्य करी बात सवाई हो ।। अ० ७९६ ।।

शाम्भ कुमर

दोहा —सामकुमर का चरित्र अव, सुनो भव्य चितलाय । चर्म शरीरी आत्मा, नामे सुख प्रगटाय ।। ७९७ ।।

पूर्व जन्म के भ्रात थे, साम्ब प्रद्युम्न कुमार। इस भव में हो इकट्ठा, करणी के अनुसार ॥७६८॥

धर्मे शरीरी साम्बकुमार की है विचित्र कहानी ॥टेर॥ कैटभ जीव आ स्वर्ग बारहवें माने सुरग प्रधान। एक दिन सीमंधर जिनवर पै आया बैठ विमान हो ॥ध० ७९९॥ विधियुक्त वंदन कर पूछा, मुझ बन्धु कहां जाय। मेरा भ्रात कब मिले मुझे, मैं कहां जम्मू जिनराया हो ॥ध० ८००॥ तेरा भ्रात कृष्ण घर जन्मा सुन सुरवर चितलाय। तू भी जाय हरि घर जन्मेगा शहर द्वारिका मांय हो ॥ध० ८०१॥ इतनी सुन प्रभु के पग प्रणमा सुरवर हरि पै आया। बात सुनाइ सकल मांड के, हरि सुनी हर्षाया हो ॥ध० ८०२॥ मणिमासुर एक हार मनोहर दिया कृष्ण के ताईं। सब विधि बता देव फिर गया स्व-स्थान सिधाई हो ॥ध० ८०३॥ हरि मन चिन्त जो यह सुत, भामा रानी के थाय। मदन साथ का द्वेष मिटे, इस कारण उसे प्रख्यात हो ॥ध० ८०४॥ मदन हरि का मर्म जान था मां से सकल सुनाई। हो कह और नम्र नहीं पहाऊं, तू क्या सभा मुस्काई हो ॥ध० ८०५॥ बाहुबल और राम सरीखा लक्ष्मण भीम समान। सिंह सरीखा तेजवान् तू है मुझ प्यारा प्रान हो ॥ध० ८०६॥ मात कहन से आम्बवती पर, आये मदन कुमार। मुझ बंधु सुत तेरे जन्मे, कहा बात विस्तार हो ॥ध० ८०७॥ रमन पसन्द अब आप हरिजी, गये भाग्य के माईं। भामा रूप कर आम्बवतीजी पास हरि के आई हो ॥ध० ८०८॥ न आप हरिजी पहनाया गल हार। सीरख मांग पीछा घर आया देर न करी लगार हो ॥ध० ८०९॥ प्रेम करी मी उक्त वह पक्ष स्वाय। बिना पास मनुष्य पधावे सिंह-सा नहीं फल पाय हो ॥ध० ८१०॥ सपने शुक सपने वायस सो नर खाय मार। भामा रानी के सहसा ही, यह होयगा भवार हो ॥ध० ८११॥ बैरीयास में ओ कोइ रहय, भाई। पर बिन सखां कैसे पावे हौंस कर हो भाई हो। ध० ८१२॥ अब सज धज हरि पै भामा आरा घरी न माथी भाग और चले नहीं, खटक हरि मन माहीं हो ॥ध ८१३॥ मक्खन प्रथम नार ले गई यह पीछा ढाक मन माहीं। अन्य हार मांगा हरिजी, करी मेम पहनाया। सौम्य मोग

भामा गइ घर प, मन बहुत हुलसाया हो ॥ च० ८१० ॥ एक दिन जाम्बवती के हरिजी देखा गले मे हार। जाना अपने कृत्य मदन का, सारा ही उस वार हो ॥ च० ८१५॥ जाम्बवती के वही सुर आया, स्वप्न शेर का पाया। अन्य सुर भामा के आया, पुण्य जैसा दर्शाया हो ॥च० ८१६॥ शुभ तिथि शुभ वार सुत जायो, जाम्बवती सुकुमार। सर्व सुलक्षणवान् तेज तन, हर्षा कुल परिवार हो ॥ च० ८१७॥ उसी समय सारथी घर, जायो पद्मकुमार। बुद्धिसैन पुत्र फिर जायो, एक मत्री की नार हो ॥ च० ८१८॥ सेनापति के जयसैन संतान हुआ है आन। ये चारों पुत्र एक समाना, जन्में ही प्रमान हो ॥ च० ८१६॥ आवें वधावा हरि के आगे, देवें दान रसाल। साम कुमर जी नाम दियो है, घर २ मगल माल हो ॥ च० ८२०॥ सतभामा जायो सुत भीरु, सुभानु दियो है नाम। दिन दिन चन्द्रकला ज्यो बढ़ता, लागे अति अभिराम हो ॥ च० ८२१ ॥ रूपकला गुणों का आगर, चन्द्र वदन शुभ नैन। उभय कुमार को निरख २ के, सब जन पांये चैन हो ॥ च० ८२२ ॥ हाथ कमल यादव नारी का, कुवर भ्रमर सुजान। केलि करें मन गमती सबही, प्यारा प्राण समान हो ॥ च० ८२३ ॥ सुन्दर वसन करी विराजित, सुन्दर भूषण धार। सुन्दर चाल मराल सदृश, है सुन्दर सुख दातार हो ॥ च० ८२४। सांब पढ़ायो रति पति ने, भानु सुभानु जान। अल्प काल में कला कुशल हो, बने दक्ष सुजान हो ॥ च० ८२५ ॥ मन मोहन मेरे लालन हैं, लीलावन्त कुमार। जांववती अरु भामा बोले, प्यारे प्राणाधार हो ॥ च० ८२६ ॥ अति उत्साह से दोनों रमते, मित्रो के परिवार। आये सभाके बीच पिता से, करने आप जुहार हो ॥ च० ८२७ ॥ बैठा काम के पास सांम,भानु पै सुभानु आन। जोड़ी देख प्रसन्न हो राजा, सूरज चन्द्र समान हो ॥ च० ८२८ ॥ कभी साम द्यूत खेल में, सुभानु को नित। लाखो सोनैया लेवे ऐठ,यो हारे नित वित्त हो ॥च०८२६॥ जीत्यो साम फिर कुक्कड़ युद्ध मे. कचन क्रोड़ी दोय। जिसकी पीठ पर कामकुमर है, जीत क्यो नहिं होय हो ॥ च० ८३० ॥ सुभानु को जीत साम यों, क्रोड़ो ही दीनार। देवे दान हाथो से निशिदिन, यश फैले ससार हो ॥ च० ८३१ ॥ भेरी शब्द सुने

एक याजन मेंह का पावन वार। सारे विश्व में जानें दाता का, दान सब में सरदार हो ॥ च० ८३२ ॥ एक दिन प्रद्युम्नकुमार साम स बोला यू हुलसाइ। जो मन में हो मांग भाव सो दिलवाऊं तुम तांई हो ॥च०८३३॥ हे भ्राता इच्छा है इतनी द्वारका शहर मझार। छ महीन तक करू राज्य, तुम वचन लगाओ पार हो ॥ च० ८३४ ॥ तब प्रद्युम्न कुमर ले सामकुमर को, आय सभा के मांई। पिता भीक चरण कमल में, नमन किया नरमाई हो ॥ च० ८३५ ॥ प्रसन्न होय माधव पूछ क्या, इच्छा है मनमाइ। सफल करू भावना तेरी, वचन टलेगा नाइ हो ॥ च० ८३६ ॥ सोलह वर्ष में मिला आप स कभी किया नहीं सवाल। अब मांगू सो दें कृपाकर अपना वचन सभाल हो ॥ च ८३७ ॥ हाथी घोड़ा वस्त्र भूषण मैं तो मांगू नाही। प्रद्युम्न और बलराज भी दी सम्मति इस मांही हो ॥ च ८३८ ॥ द्वारामती का राज्य मास षट्, सामकुमर को दव। पूर्ण करो आशा यह मेरी जग में सुयश लेवो हो ॥ च० ८३९ ॥ दिया राज्य अब सामकुमर को हरि वचन में आई। इसपराक्रम भानुकुमर मिल नमें सभी नृप तांई हो ॥ च० ८४० ॥ नीति छोड़ अनीति पकड़ी, शोर शहर में छाया। कुलीन नार का पतित कर हो निडर खिताज बिसराया हा ॥ च ८४१ ॥ श्री कृष्ण पै पुरजन मिल के, आकर करी पुकार। देइ सान्त्वना वापिस भजी, आप महल मुझार हो ॥ च० ८४२ ॥ जांबवती से कृष्ण कह यह तेरा साम्बकुमार। शील बिनष्ट करे नारियों का अपयश हुआ अपार हो ॥ च० ८४३ ॥ आप बुद्धि क सागर स्वामिन ! मिथ्या बालें लोग। जाने नहीं बोलना अब तक कैसे अन्याई योग हा ॥ च० ८४४ ॥ चुगलखोर के मुह लगाय यह नृप कच्चा कान। उस राजा की शोभा हाना, मुश्किल बना जान हो ॥ ८४५ ॥ अति गंभीर विचारवान् हो सारा कुटुम्ब निभाऊं। सही भूप को प्रजा चहाव जनता का दुख मिटाऊ हा ॥ च० ८४६ ॥ कभी सुनी पै विश्व नहीं देव जहां तक नहीं वे देख। नहीं भरोसे रहे देने पै निश्चय करे विशेष हा ॥ च० ८४७ ॥ [illegible] जो साम पै मतना दोष लगाओ। परगुण असहन के कहने से

भ्रम बीच मत आवो हो ॥ च० ८४८ ॥ श्याम कहे सुन सुन्दर मेरी, झूठ कहे कब लोय । पचों मे परमेश्वर साक्षी, पच करे सो होय हो ॥ च० ८४६ ॥ अगुष्ट से घुटने घुटने से जानू, कटि हृदय खट जाय । हृदय मे से गले चढे तो वह, दुख नहीं सहाय हो ॥ च० ८५० ॥ रक्खे लिहाज मोटा को जग, कहा तक सोचो मन । आखिर मे मर्याद तजे पर, प्रतीत करे मिल जन हो ॥ च० ८५१ ॥ खाय काकड़ी वाड़ उठने, लूटे चोकीदार । माता स्वय पुत्रने मारे, किमप करे पुकार हो ॥ च० ८५२ ॥ तात समान प्रजाके राजा, बोले जगत् तमाम । राजा हो अन्याय करे तो, कैसे कुशल रहे ग्राम हो ॥ च० ॥ ८५३ ॥ इस विधि प्रभु ने कही वहुतसी, सा नहीं मानी एक । वालक वाला औ बावला, एक सरीखी टेक हो ॥ च ८५४ ॥ सुन्दर को समझाने कारण, युक्ति एक उपाई । मेरी वात का यह जव माने, प्रत्यक्ष देऊ दिखाई हो ॥ च० ८५५ ॥ जाम्ववती को बना ग्वालिन सोलह वर्षां माई । इन्द्राणी सम रूप मनोहर, वस्त्राभरण सजाई हो ॥ च० ८५६ ॥ दही दूध की मटकी ले शिर, चली प्रभु के लार । जीर्ण वृद्ध गोवाल हरी वन, चले ज्येष्ठिका धार हो ॥ च० ८५७ ॥ दूध दही लो कहते आये, खेले साम सुजान । लोग कहैं यह कैसी जोडी, छारी ऊट समान हो । च० ८५८ ॥ मासाहारी और लपटी, दोनो सम कहलाय । वह मास वह रूप देखने, फौरन ही ललचाय हो ॥ ८५६ ॥ साब कहे अहीरणी मेरे, महल बीच तू आय । दूध दही सभी विकजावे, लाभ अधिक मिलजाय हो ॥ च० ८६० ॥ ग्वाल कहे सुण कुवरजी, यह आग नहीं आवे । ऐसे लाभ से माफी चहावे, जो इज्जत रह जावे हो ॥ च० ८६१ ॥ मार लात की तुरत वृद्ध के पकडी नार को हाथ । भीतर लेने लगा खींच के, प्रगट हुवे जगनाथ हो ॥ च० ८६२ ॥ माता से तो टल तू पापी यू कहे आप मुरार । जाम्ववती प्रगट होते ही, भागा लाज विसार हो ॥ च० ८६३ ॥ हरी कहे हरिणाक्षी सेती, पेखा सुत का कार । तू कहे नही वोलना जाने, शील भग कर नार हो ॥ च० ॥ ८६४ ॥ नहीं टले सम्वन्ध से जो नर, तो औरो की क्या वात । जो अखज खा जाय मानवी, भक्ष क्यो नहि

गात हा ॥ च ८६५ ॥ सह हाय छुरी सम्रटिया सुद्दी पनाता भाप। चाल सभा में भाया तब तो पूछा उससे चाप हा ॥ च०
॥ ८६६ ॥ यहा साल यह क्या करता है सो कहे सुद्दी बनवाऊ। मो कसका मुझ माव कह, उसके मुसमीष टूकाऊ हो ॥ च०
॥ ८६७ ॥ र र तुम पीर शिरामणी कुकृत्यका करनारा। कहना रहना सरा बराबर पंशा लगाने हारा हो ॥ च० ८६८॥ दिया
गरा निकाला उमका किया भाम स बहार। भेप पड़ा कुम्स का मारा साप न करा लगार हो ॥ च० ८६६ ॥ राजा हो वो
ऐमा हाप न्याय धम प्रीतिपाल। निज मुलकी भी रुप न रक्खी देखा भाप गोपाल हो ॥ च० ८७० ॥ बात सुनी काम
पास भाये भी कराय क पाम। अति नम्र हो चरणा शिरा पर पसी की भरदास हो ॥ च० ८७१ ॥ गगाजल को उष्ण
करे पे, शीतलता नहीं जाय। पुत्र कपूत हो जाता है मा पित विरल बराय हो ॥ च ८७२ ॥ मुझबन्धु नादान हाल नहीं
समझ उमा के माइ किया अपर अपराध आपका, माफी शा बकसाइ हो ॥ च० ८७३ ॥ प्राण स भी प्यारा भ्रात मम सही
न डाय जुदाइ। कब भाय यह चरण भेंटगा सो कृपाकर फरमाई हो ॥ च० ८७४ ॥ कोप करी केशव यों बोल,भानुकुमर
की माय। गजारूढ कर पंचर द्वारसा लाव तब ही भाव हा ॥ च० ८७५ ॥ पहले पानी पाप उतरना, तामस में भरदास।
भाहि साय में भाणधि दना दानों होत विनास हो ॥ च० ८७६ ॥ सामकुमर से मिला भान कहे सुनल भात हमारा । सकट
मोपन मा कर दीना, फिर ता भाग्य तुमारा हो ॥ च० ८७७ ॥ भांसू भर कह सुनो काम, मामा स्वप्न नहीं चहाय । हाथी
बिठाके कैस लाय नाम क भाम लगाव हो ॥ च० ८७८ ॥ रह विघा पगों में तुम जहां वहां पा मुझ पठाइ। फल निकल
जायगा यह भी यह यश ला तुम माइ हा ॥ च० ८७६ ॥ हे बघु तुम धीर धारणा मत चित्त में घबराय । जिस विधि से
मामा लजाय वही करू उपाय हा ॥ च० ८८० ॥ पलट रूप साम का फौरन, कीना दवकुमारी । भामा क रमणीक बाग
में इमको ला पैसारी हा ॥ च ८८१ ॥ रूपट पैन सिरसापा एसा कामी कम्न पड जाय। भाप गया द्वारका माई पिता

जागा काम विकार
सबल कहाय हो ॥ ८८२ ॥ कुमर सुभानु आयो बाग में, सैर करन उस बार । देख निरोपम नारी तन मे, जागा काम विकार
हो । च० ८८३ ॥ दात खटावे देखो आमली, लाख गलावे आग । शील गलावे तुरत सुन्दरी, रागी लोभावे राग हो ॥ च०
॥ ८८४ ॥ मूर्छा खाय पड़ा भूमि पर, कर मत्री उपचार । तुरत उठा ले गये घर वापिस, माता लखा विचार हो ॥ च० ८८५ ॥
सखी साथ ले भामा रानी, आई बागके माई । इन्द्राणीवत् कन्या देख के बड़ा अचम्भा पाई हो ॥ च० ८८६ ॥ भामा भेद रच
नहीं पाई, आई जहां कुमारी । हे बाई तुम कौन कहा की, सूरत मोहनगारी हो ॥ ८८७ ॥ भामा है भद्रीक आप सम, समझे
सबके ताई । ठग लागा है साथ उसी के, देखो ठगने ताई हो ॥ च० ८८८ ॥ बिच्छूके विष रहे पूछ मे, अहि विप दाढा माय ।
ठग के विष रहना हृदय मे, जग बोले यह वाय हो ॥ च० ८८९ ॥ मुख मीठा ठग होय जगत् में, अन्दर अधिक कठोर । दक्ष
पुरुप आखिर तक जाने, मानौं झाडी बोर हो ॥ च० ८९० ॥ चाहे जो तजवीज करो पण, ठग आदन नहीं जाय । आम्र
जाम्ब सुन्दर होते, पर कसावल छुटाय हो ॥ च० ८९१ ॥ कुमरी कहे भामा के ताई, नयना जल वरसाई । अर्ध भर्तृ का नाथ
तात मम, मैं रही मुसाल माई हो ॥ च० ८९२ ॥ व्याह योग्य मुझको जानीने, पिता शीघ्र मम आय । बिठा पालखी मे मुझ
ताई, ले जाता पथ माय हो ॥ च० ८९३ ॥ विश्राम लिया आ इसी बाग में, सोये सब ही लोग । नींद नही आई मुझ ताई,
मामी का पड़ा वियोग हो ॥ च० ८९४ ॥ मैं जा सोई तरु की छाई, दूर रही सुखपाल । पहर पाछली सोती छोडी, आप गयो
भूपाल हो ॥ च० ८९५ ॥ खुली नींद दसो दिशि ढूढा. मिला नहीं वह साथ । यूथभ्रष्ट मृगली के सदृश, फिरती फिरू अनाथ
हो ॥ च० ८९६ ॥ बालवय में भोली डरकन, समझू नहीं लगार । सुख दुख की कहू वात कौन को, कौन करे मेरी सार हो
॥ च० ८९७ ॥ मार्ग बताओ माता सुख हो, गुण नहीं भूलूं थारा । सतभामा कहे मंत रोवे तू . खुल गया भाग्य तुम्हारा हो
॥ च० ८९८ ॥ सुभानु मुझ पुत्र दीपता, हरि का राजकुमार । निन्यानवे कन्या संग व्याहा, मच रही धूम अपार हो ॥ च०

॥ ८६६ ॥ सखी हो वरे ब्याहने की या अवसर यह भारी । आनन्द में निशिदिन रहना वनसा तू पटरानी हो ॥ च० ६०० ॥ मूपर को स्वप्ने नहीं पंख पण होनी की बात । गज चढ़ा पंवर सुर ढाल सेवा भानू मात हा ॥ च० ६०१ ॥ भामा प्रसन्न हो मन सोचे आने साज कमाई । कर तजवीज बिठा गज होरे, लाइ शहरके माइ हा ॥ च० ६ २ ॥ नाना किस्म का भोजन लाकर दीना सब जिमाई । सर्वे ग्रव्य ब्याह के अन्दर भामा मन उम्हाइ हा ॥ च० ६०३ ॥ ऊपर हाथ इधर रास्तू, छोड नहीं कुल रीत । कबूल कीना भामा रानी स्वार्थ करे फजीत हो ॥ च० ६०४ ॥ कुमरी हाथ निज ऊपर राखा निम्यानवें सब लार । सुभानु ने ब्याह करा है हो गया हुप अपार हो ॥ च० ६०५ ॥ सुन्दर भवन में सुभानु अब स सब रमणी लार । आकर बैठा सहस बीच में नाटक का झणकार हो ॥ च ॥ ६०६ ॥ अब सब रमणी आई भवन, सह सुन्दर सज सिनाइ । हीरे रत्नों के फरा अड हैं इत्र बिवा छिटकाइ हो ॥ च ६०७ ॥ प्रजन कुमर न विद्या समरी उसी समय के मांय । साम कुंवर का रूप मूल का कीना आप बनाय हा ॥ च० ६०८ ॥ मह इन्द्रवत् सामकुमर आ बैठा मजो माइ । रूप अनूपम दृग्य समी वह, सुन्दर गइ लुभाई हो ॥ च० ६ ६ ॥ अब सुभानु वस्त्राभरण सज आया मज में चाल । सामकुमर को बैठा देखी ऋष चढ़ा विकराल हा ॥ च ६१० ॥ रे निलज्ज मेरी सेजामें, कैसे छिपकर आया । इन वचनों स देरा यहार किया सो भा नहीं शरमाया हो ॥ च० ६११ ॥ नत्र लाल कर सामकुमर ने, आरा स्याय ललकारा । सुभानु तब दौड़ा आया माता का जाय पुकारा हा ॥ च० ६१२ ॥ भामा रानी चल के आई, देखा सामकुमार । बिना बुलाया क्यों यहां आया दूत धीठ गवार हो ॥ च० ६१३ ॥ चरण लाग कह सामकुमर मत माता नाम रिसाइ । लाल पाल कर गज बैठाऊ, तू ही महल में लाइ हा ॥ च ॥ ६१४ ॥ तब भामा मन में पछताई, किसका देवें शाप । निज हाथों स किया कृत्य फिर वृथा करना रोप हो ॥ च० ६१५ ॥ भामा आय सभा में बाकी हरिने हंसी उड़ाइ । गज बिठा चवर कर लाइ फिर कहने का आई हो । च० ६१६ ॥ सत्यभामा

कर कोप कहे, फिर मुझे भूडी वताई। तेरा स्वभाव नहीं जाय ग्वाला यू कहि महलो आई हो ॥ च० ६१७ ॥ ठग है मात तात भ्रात ठग साम ही आप ठगारा। सव ही ठग मिल गये इकट्ठे, कैसे चले हमारा हो ॥ च० ६१८ ॥ हेमागद राजा की पुत्री, सुहिरनी है नाम। ऐसे सामकुवर ने परणी, कन्या शत अभिराम हो ॥ च० ६१९ ॥ चरण नमीने मात तात के, मदन को कथन सुनायो। नन्दन बातें सुन के उनकी, हृदय हर्ष न मायो हो ॥ च० ६२० ॥ सुभानु ने वे सब कन्या, परणाई सुखकार। मन माने सुख भोगे मोद से, साम सुभानुकुमार हो ॥ च० ६२१ ॥ एक दिन साम कहे वसुदेव को, सुन बाबा धर ध्यान। तुम प्रदेश जा नारी परणीं, मुश्किल से गुण खान हो ॥ च० ६२२ ॥ मैं घर बैठा सव विधि सुन्दर इन्द्राणी उनिहार। ऐमी प्रेमदा परणीं प्रत्यक्ष, देर न लगी लगार हो ॥ च० ६२३ । बेटा तुम सम म्हारा वश मे, जन्मा नहीं कोई और। मसान बीच मे पडा रहा, थैं सहा अपमान कठोर हो ॥ च० ६२४ ॥ इतनी सुन के बाबाजी को कृत अपराध क्षमाया। गुरु प्रसादे चौथमल कहे, अच्छा यश कमाया हो ॥ च० ६२५ ॥

प्रद्युम्न कुमार

दोहाः—सतगुरु पूर्ण गुण निधि, ताम चरण शिरनाय। विदर्भी संग काम का कहूँ ब्याह सुखदाय हो ॥ ६२६ ॥

इच्छित फल पाया प्रद्युम्न कुमार ने, यह भाग्य योग्य से ॥ टेक ॥ एक दिन रुक्मणि के मन माई, ऐसी चिन्ता छाई। भ्रात सुता विदर्भी रूप कला, गुण करी सवाई हो ॥ इ० ६२७ ॥ कामकुमर से हो सम्बन्ध, तो पूर्ण हो मम आश। सच्चा जानू तभी सखी हे पूरा पुण्य प्रकाश हो ॥ इ० ६२८ ॥ भाव भुवा का विदर्भी मे, और ध्यान है नाई। चित्त में चाव लाया है ऐसा, वहुकर वाके ताईं हो ॥ इ० ६२९ ॥ दूत निरोपम तुरंत बुला, उन्हें ऐमी बात समझाई। कुन्दनपुर रुक्म नृप पै, कहना ऐसा जाई हो ॥ इ०

१३०॥ कुशल पूछ कहना वहन रुक्मणि ने मुझे पठाया। प्रजन कुमर को विदर्भी, देने के लिये कहलाया हो ॥ इ० १३१ ॥ समाचार पत्र ले कुन्दनपुर चल के वह आया। राजा रुक्म की जय विजय कर, लिखित पत्र भलाया हो ॥ इ० १३२ ॥ पत्र बांच रुक्म क्रोधित हो बोला विना विचार। पुर से मनमुग्ध है भारी, मेरा हरि के खार हो ॥ इ० १३३ ॥ यह मुझ वल्लभ कुमरी उत्तम चीहन कुंवर घटियारा। उस घर से तो रहे, कुंवारी, बिन परण्या प्रवास हो ॥ इ० १३४ ॥ उस दुश्मन को कायथ लिखत जरा शर्म नहीं आइ। यादव वश में सुता न दूं चाहे डूम का दूं परणाई हो ॥ इ० १३५ ॥ दूत आय कही रुक्मणि को सुन के वह पछताई। जो भामा या हरि जान ले हो बड़ी हंसी इस मांई हो ॥ इ० १३६ ॥ इतने प्रजन कुमर ने देखी चिंतित अपनी मात। कर चतुराई आ कुछ मन की सभी सुनाइ बात हो ॥ इ० १३७ ॥ हे माता मामा का वचन जो सब ही पार लगाऊं। अल्प दिनों में विदर्भी यहूं लाके चरण लगाऊं हो ॥ इ० १३८॥ सामकुमर का लेइ संग में डूम का रूप बनाया। आ कुन्दनपुर बाग बीच में डेरा आप लगाया हो ॥ इ० १३९॥ अब दोनों भ्रात अहोनिशि, घूम सैर वन मांई। बाजा बजावें ताल लगावें, गावें धुन लगाई हो ॥ इ० १४०॥ तीन ग्राम और स्वर सात हैं मूर्छना है एकवीस। गुनपचास तान सब ताई, आन मिस्यावीस हो ॥ इ० १४१॥ रूप जहां पर गुण नहीं होय गुण जहां रूप न जान। रूप गुण इकट्ठा होना पूर्व पुण्य प्रमान हो ॥ इ० १४२॥ राजा प्रजा आवाल वृद्ध सुन राग अति मोहाया। रमणी सो गहला हो फिरती, पशु पंखी लोभाया हो ॥ इ० १४३॥ दुखिया का तो दुःख भुलावे सुखिया न सुखकार। नाद उपचर पांचमा दाख्या मन्मथ रूप उदार हो ॥ इ० १४४॥ कीरति सुन डूमों की राजा लीना तुरत बुलाइ। मुजरो करी सामने बैठ गावें राग मिलाई हो ॥ इ० १४५॥ उसी समय विदर्भी आ, बैठी नृप गोदी मांई। राग सुनी डूमों के मुख से कन्या गइ मोहाइ हो ॥ इ० १४६॥ सुन्दरताई और सुघड़ाई गायन की चतुराई। आगे प्यार कन्या ग्याशा, त्यों निरख तन ताई हो ॥ इ० १४७ ॥ पूछे राजा

रुक्म डूम से, तुम कहां से यहां आये। कौन कौन से ग्राम नगर से, दान दक्षिणा लाये हो ॥ इ० ६४८ ॥ स्वर्गलोक से निकल भूप हम, मृत्युलोक मे आये। देखी द्वारिका नगरी सुन्दर, वहा से यहा सिधाये हो ॥ इ० ६४९ ॥ मदन कुवर सौभागी देखा, श्रीकृष्ण के नन्द। अजब रगीला छैल छबीला, तारा में ज्यों चन्द हो ॥ इ० ६५० ॥ मोहन मूरति भोग पुरन्दर, साब बडा दातार। इन्द्र ऐरावत सदृश स्वय है, सर्वोत्तम सरदार हो ॥ इ० ६५१ ॥ सुन्दर मे है अधिक सुन्दर, शान्त कान्त गुणवन्त। पुण्य प्रतापी कन्या पामे, काम सरीखा कन्त हो ॥ इ० ६५२। अनुरागनी हो गई कुवरी, काम सुयश सुन कान। परणू तो मैं शूर काम ने, नही तो त्यागू प्रान हो ॥ इ० ६५३ ॥ दिखला रूप काम कुमरी को, प्रेम पाश में पकड़ी। कोई लोक भेद नहीं पाया, पूरी स्नेह में जकडी हो ॥ इ० ६५४ ॥ इतने छूटा हाथी स्थान से, नहीं कोई वश मे लावे। नृप कहे जो गज वश कर ले, सो मनवाछित पावे हो ॥ इ० ६५५ ॥ काम साम ने नाद योग से, वश कीना गजराज। भूप कहे डूमों को मांगो, सारू वछित काज हो ॥ इ० ६५६ ॥ आप प्रसाद कमी नहीं कोई, रोटी बनाने वाली। नहीं होने से कारज मारो, अपना वचन सम्भाली हो ॥ इ० ६५७ ॥ यह वैदर्भी कुवरी ताई, दीजे कन्या दान। मेरे समान नहीं वर मिलेगा, तुष्टा श्री भगवान हो ॥ इ० ६५८ ॥ क्रोध करी रुक्मियो बोले, यह क्या कहे चण्डाल। अरे डूमड़ा भगी हो थें, बोलो बोल सम्भाल हो ॥ इ० ६५९ ॥ तुरत डूम को अनुचर हाथे, नगरी बाहर कढ़ाया। रवि अस्त हुआ इतने मे, अन्धकार जब छाया हो ॥ इ० ६६० ॥ कुवरी सोती आप अकेली, तन शृगार सजाई। करे विचार अहो यदुनन्दन !, परणो जल्दी आई हो ॥ इ० ६६१ ॥ मैंने लीना प्रण नाथ अब, परणू तो केवल आप। नहीं तो अपहत्या कर लूगी, सो तुम सिर हो पाप हो ॥ इ० ६६२ ॥ इतने कुवर महल बीच मे, आयो निशा के माई। देख बींद वश मे कुवरी, हृदय बीच हर्पाई हो ॥ इ० ६६३ ॥ रुक्मणि नाम का पत्र बाची, बडा अचम्भा पाई। काम कुमर यही यों जानी, अपना भाग्य सराई हो ॥ इ० ६६४ ॥ अपना मन जिसको मागे, सो ही

करना भर्तार। नारी-जन्म नाथ स बीत ऐसा जग व्यवहार हो ॥ इ० १६५ ॥ पहन पार्तांबर कङ्कण डोरा बांध हाथ क माह। भारस करस याग मिक्षा क किया व्याह दुखसाई हो ॥ इ १६६ ॥ काम कुमर क्रम निज करके, भाया भ्रात के पास। कुंवरी सांई भाप मोक्ष से चिंता हुई विनास हो ॥ इ १६७ ॥ मात होत ही भाय मात भव से दातण भौर झारी। भाकर बोली हुभा सवेरा उठ बैठी इस बारी हो ॥ इ० १६८ ॥ ऐसी नींद में उस कुमरी को कङ्कण बंधा विशेष। कोरी सार्ही पहनी तन पर है परखेहु बेरा हो ॥ इ० १६९ ॥ भास भरी पीछी पक्ष भाइ नृप रानी का साइ। भाप बनी उधरण इस कृत स, चरित्र प्रत्यक्ष दिखाई हो ॥ इ १७० ॥ हे निर्लज्ज दुर्भोगिन दुष्टन क्या अकाज कर डाग। वैर यमा वहिन क सग भौर वचन तुम मे हारा हो ॥ इ० १७१ ॥ राजा कह रानी के प्रति यह कृत विपरीत जान। कुल के कलंक लगाया इमन बेटा वैरी समान हो ॥ इ० १७२ ॥ मध जगत् की रक्खे जिन्दगी दामिनी कर नुकसान। एस दुख घरा में उपजी कन्या जहर समान हो ॥ इ० १७३ ॥ मैं चूका हु वचन मामिनी पापण कन्या ठाय। उधरण बनू द कन्या तुम न अपना कौल निभाय हो ॥ इ० १७४ ॥ बिगड़ा मनुष्य, दुग्ध फटा भरि लंका भगुष्ठ। तीनों धजे सुख हाता है, एस सुता भनिष्ट हा ॥ इ० १७५ ॥ राजा सुता तुम क ताई चीनी राजकुमारी। वचन निभाया द्विवाहिक का साथ न किया लगारी हो ॥ इ १७६ ॥ सीता सती चन्द्र-सी निर्मल कोका दियो कलंक। रघुपती न कोप करी ने, भेजी बन निशक हो ॥ इ० १७७ ॥ कहे तुम तुम सुनो भूपति कठिन मरे निज पट। सुकुमाल यह राज सुता है, करनी इसकी पट हो ॥ इ० १७८ ॥ लाग करे मिल निन्दा जार से कुवरी रुप भपार। मन माना पति मिला भान के, चली तुम के बार हो ॥ इ० १७९ ॥ थोड़ी देर में क्रोध मिटा जब मनन करा मन माई। दी तुम ने सुता भमोलक, कैसी कुमती भाई हो ॥ इ १८० ॥ मानित चोरों के दुगुण का हरगिज गिनवे नाइ। कुमरी कुल्टी बना पुत्र पद्म राजा कहवी नाई हो ॥ इ० १८१ ॥ अक्ष नहीं हुबोवे बरजो काष्ट को, भपना सींचा जान। बहबासल पानी सोप

पर, सागर हरे न प्रान हो ॥इ० ६८२॥ क्रोध वश कुछ नहीं सूझा, करा कृत्य विपरीत। न कुछ बात के कारण तोडी, मैंने सुता से प्रीत हो ॥इ० ६८३॥ तपास कराई उन डूमों की, पता रच नहीं पाया। बिना विचारे जो कर गुजरे, क्या होवे पछताया हो ॥इ० ६८४॥ विद्या योग से प्रजन कुवर ने, सैना विकट सजाई। दे नक्कारा पर डका कुन्दनपुर, पै करी चढाई हो ॥इ० ६८५॥ दूत हाथ कहला भेजा, मैं प्रजन कुवर चढ़ आया। विदर्भी कन्या परनावो, युद्ध करो या आय हो ॥इ० ६८६॥ रुक्म विचारे युद्ध करू तो, इन सग जीतू नाई। वैर वसेगा अति जोर का, करू जाय नरमाई हो ॥ इ० ६८७ ॥ पग अलवाने चल के आया, प्रजन कुवर फिर आय। बीच में आके मिले प्रेम से, लीना कठ लगाय हो ॥इ० ६८८॥ बैठ आ तम्बू के अन्दर, रुक्म नृपादिक सारा। विदर्भी उठ नमी पिता को, मिटा भ्रम उस वारा हो ॥ इ० ६८९ ॥ काम साम को अति उत्साह से, महल वधाई लाया। किया व्याह बड़ी धूम से, दिया दहेज मनचाया हो ॥इ० ६९०॥ अब प्रजन कुवर ले सीख नृप रानी पहुचाया। दे सुता को सीख खुशी में, रहो कही सिधाया हो ॥ इ० ६९१ ॥ आया नगरी आप द्वारिका, हर्पा कृष्ण मुरार। पग लागता रुक्मणि हर्षी, हर्षा सब परिवार हो ॥इ० ६९२॥ जो जो माता रुक्मणि चिन्ते, पुण्य से पूरण होय। सासू बहू व भुआ भतीजी, सब सुख माने सोय हो। इ० ६९३॥ प्रजनकुवर और सामकुवर का, मन एक तन दोय। चांद सूर्य-सी जोड़ी शोभे, निरखत हर्पित होय हो ॥इ० ६९४॥ अनिरुद्धादिक मदन कुमर के, नन्दन शत गुणवान्। इतने ही सुत सामकुवर के, है पूर्ण पुण्यवान् हो ॥इ० ६९५॥ काम साम का चरित्र सुनाया सब का मन हर्पाया। गुरु प्रसादे चौथमल कहे, मनवाछित फल पाया हो ॥इ० ६९६॥

जरासन्ध-वध

दोहा:—नेमिनाथ भगवान् के, चरण कमल शिरनाय। जरासन्ध-शिशुपाल-वध कहूँ सुनो चित्तलाय ॥ १ ॥

रवि ठगे शशि भायमें सिंह भाते मृग जाय । प्रति हरि हनन हरि प्रगट, यह विष का न्याय ॥ २ ॥

प्रबल पुरुषधानी कृष्ण मुरार की अरि आर चले नहीं ॥ टेर ॥ यवन द्वीप से आय व्यापारी रत्न कामला लाया । चला द्वारिका नगरी माहीं लाभ बहुत-सा पाया हो ॥ प्र० ३ ॥ विशेष लाभ की इच्छाधारी राजगृही में आया । जाय यहां उन व्यापारियों का अपन पास बुलाया हो ॥ प्र० ४ ॥ कम्बल रत्न के मोल लगाया, तब सा वणिक पछताया । द्वारामती का लाभ वश नाहक यहां आया हो ॥ प्र० ५ ॥ जीवयशा विस्मित हो पूछे कौन द्वारिका नगरी । और वहां पर कौन भूप है, बात सुनाओ सगरी हो ॥ प्र० ६ ॥ भारत के पश्चिम समुद्रतट सुर ने स्वयं बसाई । वसुदेव सुत कृष्ण बलदाऊ कर राज्य सुखदाई हो ॥ प्र० ७ ॥ जीवयशा सुन नाम कृष्ण का गई आंसू डार । जीवित है पति मारनहारा, इस दुःख का नहीं पार हो ॥ प्र० ८ ॥ पाहुवरा की ऐसा पधनी पीय पति से प्रेम । मैं रंडापा भोग रही हूं, अब जीने का नेम हो ॥ प्र० ९ ॥ पुत्री रोती जान जरासंघ आया शीघ्र चल धाई । सुनी कृष्ण का हाल पराक्रम चोखा क्रोध भराई हो ॥ प्र० १० ॥ हे पुत्री ! मत करे रुदन तूं राखणी दुष्ट रिपु रानी । दुश्मन जीवित है अग माहीं, मैंने बात नहीं मानी हो ॥ प्र० ११ ॥ द्रोही पापी । वैरी को सबल क्यों कीना क्यों नहीं डाला कापी हो ॥ प्र० १२ ॥ मेरा मन्त्री को न ध्यान था, तू स्वामी का नाश । तभी राजगृही आऊंगा मैं बेटी रख विश्वास हो ॥ प्र० १३ ॥ अब लश्कर ले जाऊं द्वारिका, करो भारि दक्ष मन्त्रियों से समझाया पर मानी नहीं लगारी हो ॥ प्र० १४ ॥ तब मगधापति यादव से युद्ध की करी तैयारी । प्रात होत ही जरासंघ नृप, रणभेरी बजवाई । राजा राना सुभट सकल सुन आये करी सजाई हो ॥ प्र० १५ ॥ शिशुपालादिक राजा सुभिया पाटाधर सहदेव । दुर्योधनादि का मिल राजवी ले सेना स्वमेव हो ॥ प्र० १६ ॥ चलते नृप का मुकुट गिरा अरु टूटा गल का हार । छाई चारों भी लागी फड़कने अपशकुन की बाजार हो ॥ प्र० १७ ॥ हुए सामने काँक उगा के गृद्ध शिर पर मंडराया । प्रतिकूल पवन

लगा चिडाने, समय पलटा खाया हो ॥ प्र० १८ ॥ मगधाधिश अभिमान धरी ने, वैठा गज पर जाई। चला द्वारिका नगरी सन्मुख, विकट सैन्य सग माई हो ॥ प्र० १९ ॥ पथ मे नारद ऋषि आन कहे, जरासन्ध के ताई। हरि हलधर का तेज सामने, तेरी चलेगी नाई हो ॥ प्र० २० ॥ राज सुभट कर क्रोध ऋषि का, किया बहुत अपमान। फोडा कमंडल कोपीन खेची, नारद गया असमान हो ॥ प्र० २१ ॥ उतर वहाँ से आया द्वारिका, श्रीकृष्ण के पास। जरासन्ध के आने की सब, करी बात प्रकास हो ॥ प्र० २२ ॥ हरि हलधर सुनते ही तत्क्षण, रणभेरी वजवाई। सुघोपा घंटा सुन यादव, हुवे इकठ्ठे आई हो ॥ प्र० २३ ॥ राजा समुद्रविजय इन माहीं, है ज्येष्ठ पक्ष प्रधान। सुत महानेमि सत्यनेमि, दृढनेमि सुनेमि जान हो ॥ प्र० २४ ॥ रहनेमि श्री अरिष्टनेम प्रभु, जयसेन जयकारी। तेजसैन नयमेघ रुचित्रिक, श्वकल्क गौतम बलधारी हो ॥ प्र० २५ ॥ शिवनन्द विष्वकसैन ये सब, मिल के एक तार। युद्ध मे शरीक होने कारण, आये पितु के लार हो ॥ प्र० २६ ॥ अष्टसुत अक्षोभ भ्रात के, उद्धव धव क्षुभित। महोदधि अभोनिधि जलनिधि, वामदेव दृढव्रित हो ॥ प्र० २७ ॥ स्थिमित भ्रात के ये सुत, उर्मिमान वसुमान वीर पाताल और स्थिर हैं, पाचो ही बलवान हो ॥ प्र० २८। षट् सुत सागर के भो, निष्कंप कम्पन श्रीमान। केशरी लक्ष्मीधर युगान्तक, युद्ध कला का जान हो ॥ प्र० २९ ॥ पचम बधव हिमवान् के, तीन पुत्र गुणवान्। विद्युत प्रभ गधमाल अरु, माल्यवान पहिचान हो ॥ प्र० ३० ॥ सप्त सुन सहोदर अचल के, महेन्द्र मलय सह्यराज। गिरि शैल नग और बल से, दुश्मन जावे भाज हो ॥ प्र० ३१ ॥ सातवे बंधव धरण के और, कर्कोटक धनकार। विश्वरूप श्वेत मुखपचम, वासुकी बलधार हो ॥ प्र० ३२ ॥ भ्रातृ आठवे पूरण के हैं, चार पुत्र अति शूर। दुष्पुर दुमुख दूरदर्शक, दुर्धर वरसे नूर हो ॥ प्र० ३३ ॥ नवे बधव अभिचन्द्र के, छ सुत है रणवीर। चन्द्र शशांक चन्द्राभ शशि, सोम अमृत खीर हो ॥ प्र० ३४ ॥ दशवे दशार्ह वसुदेव सुत, वायुवेग जिताऊँ। अक्रूर क्रूर ज्वलन और अशनिवेग गिनाऊ हो ॥ प्र० ३५ ॥

अमितगति और महेन्द्रगति सिद्धार्थ दोउ सुबाहु। सिंह सत्वाज नारद मरु सुमित्र कापघ्न वारु हो ॥ म० ३६ ॥ कपिलपद्म कुमुद अरवसेन, पुण्डरीक पुरीजान। रत्नगर्भ वज्रबाहु और, चन्द्रकान्त शशीधाम् हो ॥ प्र० ३७ ॥ वाग, वायु अनावृष्टि, दृढमुष्टि हिममुष्टि। बन्धुसख सिंहसेन शिलायुद्ध गधार पिंगल सुदृष्टि हो ॥ प्र० ३८ ॥ अरत्कुमार याह्लीक, सुमुख दुर्मुख और बलराम। वज्र दंष्ट्र अमित प्रभ सब, हैं बहादुर अभिराम हो ॥ प्र० ३९ ॥ बलराम के सुत सग आय, उल्मुक निषधकुमार। प्रकृति द्युति चारुदत्त ध्रुव शत्रुदमन पीठ सार हो ॥ प्र० ४० ॥ प्राम्वज्र नम्दन आमान दशरथ दृषानन्द। विपृथु शान्तनु शतधनु पृथु, नरदेव आनन्द हो ॥ प्र० ४१ ॥ महाधनु दृढ धनवा सुव्रत थ सभा युद्ध क माँहि। दुरमन रन पीछे नहीं हटसे, करता जगत् बखान हो ॥ प्र० ४२ ॥ श्री हरि के पुत्र थ उनका सख्या एक हजार। भानु, सुभानु महाभानु अनुभानु, बृहद् ध्वज सार हो ॥ प्र० ४३ ॥ अग्निशिख, घृष्णु सजय अकम्पन महासन। धीर गम्भीर उदधि गौतम वसुधर्मा चित्रसेन हो ॥ प्र० ४४ ॥ रविचन्द्र चमा, सुकृष्ण सुचारु चारु सुदत्त। भरत शरण प्रद्युम्न शांब युद्ध म जुडें समस्त हो ॥ प्र० ४५ ॥ उग्रसैन भी आय युद्ध में द्वे सुत उनक सार। सुभग गुणधर, शाक्तिक दुर्धर, चन्द्रसागर बल कार हो ॥ प्र० ४६ ॥ ज्येष्ठ नृप के काका सोवन उनके पुत्र हैं चार। महासन विषामत्र यज्ञमित्र दानमित्र कुमार हो ॥ प्र० ४७ ॥ महासन के सुत सुषेण ह, विष मित्र के ह्रदीक। सुषेण क सत्यक, ह्रदीक के, कृतवर्मा निर्भीक हो ॥ प्र० ४८ ॥ हैं सत्यक के युयुधान और युयुधान क गम्ध। माता, सुता, श्वसुर पक्ष क, मित्र कई सम्बन्ध हो ॥ प्र० ४९ ॥ जादूपंश की नारियों चाल रथ में हाथ दिखाजो। शूरवीर की बाजा सुन्दर एसा यश कमाया हो ॥ प्र० ५० ॥ काष्टक श्यामिपी सुवृत्त सीना श्रीकृष्ण के वाहे। अवश्य विजय आपकी होवे इसमें संशय नाहि हो ॥ प्र० ५१ ॥ गरुड़ध्वज गजकृष्ण रथ पर हुये तुरत असवार। दारु सारथी आगे बैठा चपल चाल तुखार हो ॥ प्र० ५२ ॥ विकट सना चतुरंगा साथ म, और सब

जादव साथ। शुभ शकुन ईपान् कोण मे, चाले श्री यादुनाथ हो ॥ प्र० ५३ ॥ द्वारिका से योजन पेतालीस, सेनपल्ली एक ठाम। वहीं पर सैना हरि ठहराई, देख विजय का धाम हो ॥ प्र० ५४ ॥ वसुदेव के अनुयायी खेचर, नृप मिले बहु आई। समुद्रविजय राजा ने प्रेम से, उनको लिये वधाई हो ॥ प्र० ५५ ॥ वैताढ्यगिरी पर और भी खेचर, जरासध को माने। उनका प्रभाव नहीं पडे इन्हो पै, ऐसी युक्ति ठाने हो ॥ प्र० ५६॥ बोले प्रजन शाम्बकुमर और, वसुदेव हर्षाई। हम सब जाके उन खेचर को, पथ मे दे अटकाई हो ॥ प्र० ५७ ॥ समुद्रविजय ने श्रीकृष्ण से, लीनी सलाह मिलाई। उसी तरह सारी व्यवस्था, करी न देर लगाई हो ॥ प्र० ५८ ॥ शस्त्रवारिणी औषध ताई, अरिष्टनेमि भगवान्। जाते समय वसुदेव के, वाधी हाथ के आन हो ॥ प्र० ५९ ॥ उधर जरासन्ध की सेना, पहुँची सरहद आई। हरि सेना से योजन अतर, दीना पडाव लगाई हो ॥ प्र० ६०॥ चक्रव्यूह रचने के खातिर, राजा और सामन्त। जरासन्ध को कीनी सूचना, मन मे अति हरपंतहो ॥प्र० ६१॥ हस नामक मत्रीश्वरजी फिर, या विधी बात सुनावे। जमाई कस का बदला चहावे, न्याय ध्यान मे लावे हो ॥ प्र० ६२ ॥ पट भ्राता हरि के मारे, कीना काज अकाज। उसका फल उसीने भोगा, सोचो जरा महाराज हो ॥ प्र० ६३ ॥ शत्रु समान या दुर्बल भी हो तो भी बढकर जानो। युद्ध करना नहीं युक्ति सगत, अर्ज हमारी मानो हो ॥ प्र० ६४ ॥ रोहिणी के स्वयवर में, वसुदेव भूप हराया। रही राजपूती शान जभी, समुद्रविजय के आया हो ॥ प्र० ६५ ॥ अब तो उनके राम कृष्ण, दो पुत्र वडे वलवान। उनके लिये द्वारिका नगरी, कुबेर बसाई आन हो ॥ प्र० ६६॥ वीर पाण्डव भी हैं सग मे, और नेमिनाथ भगवान। वे एक एक ही सारे विश्वको, छिन में मनावे आन हो ॥ प्र० ६७॥ हे मगधेश्वर! निज शक्ति पर, करे अब नेक विचार। शिशुपाल रुक्म रुक्मणि के, हरण समय गये हार हो प्र० ॥ ६८ ॥ गन्धार देश के शकुनि राजा, कुरुवशी दुर्योधन। छल मे हैं प्रवीन मगर नहीं, वीरो में गिने सजन हो ॥ प्र० ६९ ॥ अग देश के राजा कर्ण हैं, योद्धाओ मे वलकारी। श्रीकृष्ण

की सेना भागे ओर न पस लगागी हो ॥ प्र ७० ॥ राम हरि और अरिष्टनमजी, हैं ये तीनों समान। यहाँ आप की जाती का नहीं मिस एक इम्सान हा ॥ प्र० ७१ ॥ अविसापक हैं देव हरि क निश्चय लेना जान। जिनने छलकर कास कुधर क हर लिये मत्यक्ष मान हा ॥ प्र० ७२ ॥ अब कि आपने युद्ध करनाहित, पाव्य किया उन ताइ। तब स अपनी रक्षा क हित, आप सैन्य सजाइ हो ॥ प्र० ७३ ॥ युद्ध का विचार गर आप छोड़ना तो है मुझ विश्वास। प भी द्वारिका लौट जायेंग मिट जाय सब त्रास हो ॥ प्र ७४ ॥ मंत्री की यह बात सुनकर जरासन्ध को पाया। शत्रु की प्रशंसा करता यादव का भर माया हो ॥ प्र० ७५ ॥ शृगाल का शब्द सुनकर शार नहीं डर सकता। ह दुमसे ! यदि तू कायर क्यों नहीं यहाँ स भगता हो ॥ प्र० ७६ ॥ एसी बातें कहके अन्य का मत म कायर बनाइ। मैं ता अकेला ही काफी हू उन यादवा के तारे का ॥ प्र० ॥ ७७ ॥ चापलूसी स प्रम मन्त्रीने नृपको उत्तेजित कीना। इतन सायंकाल हुआ रजनीन फिर रंग दीना हो ॥ प्र० ७८ ॥ प्रात समय छ सना जरा सन्ध, आया रण मैदान। चक्रव्यूह आकार सना रचन का दरशा वहाँ स्थान हो ॥ प्र० ७९ ॥ एक हजार आरा वहाँ कीना, लश्कर का सज साज। एक एक आर नृप सहस्र हैं, वस्तर शस्त्र युद्ध काज हो ॥ प्र० ८० ॥ एक एक नृप सग रथ सहस्र दो, एक सहस्र गज जान। घोड़ा पांच सहस्र और पयदल सोलह सहस्र प्रमान हो ॥ प्र० ८१ ॥ आठ हजार योद्धा सशस्त्र शूरा में सरदार। चक्र मुख पे स्थाप सब ही कौरव भूप परिवार हो ॥ प्र० ८२ ॥ चक्र मध्य मगधाधिप रहे नृप सग पांच हजार। सवा छै हजार रथाने महिप के, पीतरक्षा सरदार हो ॥ प्र० ८३ ॥ जरासन्ध पीछे रक्षा को, मन्त्री या विधि कीनी। गान्धार और सेंधव राजापुत्र, सेना नियुक्त कर दीनी हो ॥ प्र० ८४ ॥ बायीं और मध्य देश क राजा दाहिनी आर सो कौरव। चिरकामली सुन २ सेनापति, उनके हाथ नव नव हो ॥ प्र० ८५ ॥ चक्रव्यूह क मुख पर शकट-व्यूह रचवाया। चक्र-नाभि की सन्धि सन्धि पर राजा लाक बिठाया हो ॥ प्र० ८६ ॥ जरासन्ध के चक्रव्यूह को, यादव पति सुन

पाई। उसके सामने रचा दुर्भेद्य गरुड-व्यूह सुखदाई हो ।।प्र० ८७।। व्यूह के मुख पर महा तेजस्वी, अर्ध कोटिकुमार। मोर्चे पर बलराम कृष्ण ने, रक्खा अपना अधिकार हो ॥ प्र० ८८ ॥ वसुदेव के अक्रूर सुमुखादि, पुत्र लक्ष रथ धार। किये नियुक्त हरि के अगरक्षक, शूरवीर कुमार हो ॥ प्र० ८९ ॥ उनके पीछे कोटि रथयुत्, राजा उग्रसैन। चार पुत्र उनके तन रक्षक, खडे हुवे ले सैन हो ॥ प्र० ९० ॥ सब के पीछे धर, सारण, शशि, दुर्धर, सत्यक नाम। राजा पाच नियुक्त किये ये, आवे वक्त पै काम हो ॥ प्र० ९१ ॥ दाहिनी ओर नृप समुद्रविजय ने, रक्खा है अधिकार। पच्चीस लाख रथ उनके चौतरफ, नियुक्त हुवे कुमार हो ॥ प्र० ९२ ॥ बायीं ओर वलराम के योद्धा, पाण्डव नियुक्त हुवे आई। उनके पीछे पच्चीस लाख रथ, देव नन्दन सहाई हो ॥ प्र० ९३ ॥ इनके पीछे चन्द्रयशा और सिंहल, वर्बर काम्बोज। केरल, द्रविड इन पट् राजा के, साठ हजार है फौज हो ॥ प्र० ९४ ॥ उनके पीछे शाम्ब भानु आदिक, हैं कुशल कुमार। गरुड़-व्यूह की रची यह रचना, हरि आज्ञानुसार हो ॥ प्र० ९५ ॥ अरिष्टनेमजी युद्ध मे उतरे, वन्धु प्रेम काज। यह जान के शक्रेन्द्रजी ने, देने के हित साज हो ॥ प्र० ९६ ॥ मातली नामक सारथी भेजा, शस्त्र-सहित रथ नामी। नेमी बैठे उसके अन्दर रथ है शीघ्रगामी हो ॥ प्र० ९७ ॥ समुद्रविजय ने श्रीकृष्ण के, ज्येष्ठ पुत्र के ताय। इस व्यूह का सेनापति कीना, जिनका मन उमाय हो ॥ प्र० ९८ ॥ प्रात होत ही दोनों दलों मे, घोर युद्ध हुआ जारी। मची भयकर मार-काट तब, लाशां उपरा-उपरी हो ॥ प्र० ९९ ॥ जरासन्ध के सैनिकों ने, पूरी ताकत दीनी। श्रीकृष्ण की सेना को फिर, तितर-वितर कीनी हो ॥ प्र० १०० ॥ तब श्रीकृष्ण ने झण्डा फर्राकर, सेना सघठित कीनी। कीना धावा जरासन्ध पै, सेना घेरी लीनी हो ॥ प्र० १०१ ॥ महानेमी अर्जुन आदि को, फिर जोश भर आया। अपनी सेना तैयार करके, फौरन शख बजाया हो ॥ प्र० १०२ ॥ अनाधृष्ट वलाहक योद्धा, देवदत्त अर्जुन ने। एक साथ मे कीनी चढ़ाई, शब्द किया कानन ने हो ॥ प्र० १०३ ॥ तीनो महारथी ने मिल कर, चक्रव्यूह को

वाहा। इस पराक्रम अपूर्व बल को शत्रु ने पग बाहा हो ॥प्र० १ ४॥ जरासिन्ध की ओर स फिर वो दुर्योधन भी आया। रुक्म रुधिर स सेना वाहिया सम्मुख आप भिड़ाया हो ॥ प्र० १०५ ॥ दुर्योधन से भिड़ा अर्जुनजी रुक्म स नमी जान। रुधिर से अनाधृष्ट आय के, भिड़ गये सब को मान हो ॥ प्र० १०६ । हुआ युद्ध घ हों में मारी खूब बाण बर्षाया। महानमी के प्रचण्ड मस से, तीनों ही घबराया हो ॥ प्र० १०७ ॥ रुक्म आदि की हार जान के सप्त राजा फिर आया । महानमी ने उनके शस्त्रों का छिन में काट गिराया हो ॥प्र० १०८॥ यह देख सक्तन्तप राजा महानमि के ऊपर। महा भयंकर शक्ति छोड़ी पावन कॅपि थरथर हो ॥ प्र० १०९ ॥ जब मातली ने भी नमि को प्राचीन बाध सुनाई। रावण ने भी अमोघ शक्ति को धरणेन्द्र स पाई हो ॥ प्र ११० ॥ एसे तप कर इस राजा ने बलि से शक्ति पाइ। वज्र सिवाय नहीं अन्य शस्त्र है जा दे इसे हटाइ हा ॥ प्र० १११ ॥ जब नमि ने महानमि को दिया वज्र का बान। चढ़ा धनुष्य पर छोड़ा हुई महाशक्ति की हान हो ॥प्र ११२॥ इतने रुक्मिया शस्त्र स फिर रथ चढ़ करके आया। सक्तन्तप मिल आठों राजा घोर युद्ध मचाया हो ॥ प्र ११३ ॥ महानेमि ने रुक्मिया ताईं किया बाण से नाश। कौमुदी-गदा और अमस बाण स हुई शत्रु की खारा हो ॥ प्र ११४ ॥ लाखों बाणों की वृष्टि वाला विरोचन शर को छोड़ा। महानमि ने माहेन्द्र बाण से आधा बीच में तोड़ा हा ॥प्र० ११५॥ फिर बाण एक दूजा छोड़ा लगा रुक्मि के ताईं। वेणुदारी शिविर बीच में उसको लाया उठाई हो ॥प्र० ११६॥ तदनन्तर फिर महानेमि न, विविध शस्त्र बर्षाया। जिससे सातों नृप हार कर भग के प्राण बचाया हो ॥ प्र० ११७ ॥ समुद्रविजय ने राजा द्रुम को, स्तिमित ने भद्रराया। अक्षोभ्य ने वसुसेन को यमपुरी बीच पठाया हो ॥ प्र० ११८ ॥ सागर ने पुरि मित्र का मारा हिमवाने धृष्टद्युम्न। धरण न अष्टक नृप को मारा, अभिचन्द्र ने शतधन हो ॥ प्र० ११९ ॥ पूरण द्रुपद स भिड़िया साग सुनमि न कुन्ति भोज। सत्यनेमि ने महापद्म का मारा विकट से फौज हो ॥ प्र० १२० ॥ दृढ़नेमि न भी देख को, मारा रण क

माई। उनकी सैना हिरण्यनाभ की चाल शरण मे आई हो ॥ प्र० १२१ ॥ सूरज इतने मे अस्त हुआ है, स्थगित किया संग्राम। शूरवीर सब ही योद्धा फिर पहुँचे निज २ धाम हो ॥ प्र० १२२ ॥ प्रात होत ही हिरण्यनाभ नृप ले सेना को आगा। उसके बाणो को अर्जुन ने फिर, काट काट गिराया हो ॥ प्र० १२३ ॥ केशरी सम गाज के आयो, बाण चलाया पूरा। भीम ने जब गदा की मारी, किया रथ का चूरा हो ॥ प्र० १२४ ॥ जयसेन कुमर महाबली है, समुद्रविजय का नन्द। आय सामने धनुष्य चढाया, करवा अरि निकन्द हो ॥ प्र० १२५ ॥ हिरण्यनाभ कहे भाणेजा! तू, क्यों खोता है प्रान। जयसेन ने तब सारथी को, चढाया, करवा अरि निकन्द हो ॥ प्र० १२५ ॥ हिरण्यनाभ कहे भाणेजा! तू, क्यों खोता है प्रान। जयसेन ने तब सारथी को, तत्क्षण लीनी जान हो ॥ प्र० १२६ ॥ तब तो बाण कडक खींच के हिरण्यगर्भ सरदार। सारथीयुत् जयसेन कुमर को, डाला उसने मार हो ॥ प्र० १२७ ॥ महाजय आयो शीघ्र चाल के, बन्धव मृत्यु देख। तब भूप ने उसे भी मारा, आया दाव मे पेख हो ॥ प्र० १२८ ॥ देख दृश्य यह अनाधृष्टि को, छाया कोप विशेष। हिरण्यनाभ राजा के धनुष्य को, छेदा न रक्खा शेष हो ॥ प्र० १२९ ॥ भीम अर्जुन यादव और भी, चढे जोश स्यो वीर। लडन लगे हैं शत्रु सैन्य से, मार मार कर तीर हो ॥ प्र० १३० ॥ अनाधृष्टि को मारन कारण, हिरण्यनाभ उस वार। पीसे दांत क्रोध के वश हो, काढी खींच तलवार हो ॥ प्र० १३१ ॥ अनाधृष्टि भी रथ को तज के, लियो खड्ग कर माई। अरे दुष्ट मामा अब तुझ को, यम से दूं मिलाई हो ॥ प्र० १३२ ॥ समय देख के अनाधृष्टि ने, मारी खेंच तलवार। धड़ से शिर को हिरण्यनाभ के तत्क्षण दिया उतार हो ॥ प्र० १३३ ॥ अष्टवीश फिर राज पुत्र को, यमलोक पहुचाया। भीम अर्जुन ने देख वीरता, हृदय बहुत हर्षाया हो ॥ प्र० १३४ ॥ उनके मरण से शत्रु-सैन्य में, मचा बहुत हाहाकार। जरासिन्ध अब मन के माई, करन लगा है विचार हो ॥ प्र० १३५ ॥ युद्ध बन्द करके फिर राजा, तप तेला को धार। कुल देवी को याद करी है, माता काज सुधार हो ॥ प्र० १३६ ॥ देवी कोप यादव सैन्य मे, जरा विकुर्वी भारी। सारी सैन्य को निबल बना के, तत्क्षण वह सिधारी हो ॥ प्र० १३७ ॥ नेमिनाथ, हरि, हलधर बरजी, फैली जरा जिम वार।

पाण्डव-सैन्य सब मूर्छ रही मा राम उठ सगार हो ॥ प्र० १३८ ॥ हलधर दुख चिंतित बहु हुवे हरि सुनी जब बात । सूर सुभट बिन अब क्या होगा, इमी किया उत्पात हो ॥ प्र० १३९ ॥ इतने मातुल सारथी बोला प्रभु म बारम्बार । प्रतिहरि को मारन से फिर होत शत्रु की हार हो ॥ प्र १४० ॥ नेम कहे सुन सारथी मार्इ नहीं अनादि न्याय । प्रतिहरि का मार हरी फिर, यम त्रिखण्डी राय हो ॥ प्र० १४१ ॥ ऐसा कही चलाया रथ को करता नाद गंभीर । मानों क्षीर-उदधि तट त्रिग नौका तरती तीर हो ॥ प्र १४२ ॥ मजा काट दिया दुश्मन का, नेम अनन्त बलधारी । जरासन्ध की सना भागी सिंह दरस के क्षारी हो ॥ प्र० १४३ ॥ पूछा कृष्ण ने भी नम से कीजे कौन उपाय । पाण्डव-सैन्य में जरा फैल गई होरा रही कुमलाय हो ॥ प्र० १४४ ॥ चिंता ग्रसित दख हरि को मातली बोला बात । प्रभु नहाय के जल छींट स, मिट जाय उत्पात हो ॥ प्र० १४५ ॥ तब तो प्रभु के स्नान का जल छींट दिया उस बार । जरा मिटी उठ बैठे सारा शूरवीर सरदार हो ॥ प्र० १४६ । प्रभु रथ की रज रह कर लगी है जिसके तन तिस माय । उसका उपद्रव विनाश हुआ है है अपूर्व या बात हो ॥ प्र० १४७ ॥ जरासन्ध ने अब फिर हिंसक, मन्त्री का बुलवाय पाण्डव-सैन्य में जाकर झटपट यह या बात सुनाय हो ॥प्र० १४८॥ समुद्रविजयजी यों हो स्याना सब इकाकार जानो । मेर अधर कितनी ताकत क्या नहीं पहिचाना हो ?॥प्र० १४९॥ कंस-वधक हरि हलधर को दया सौंप इसवार । फिर आनंद में राज करा तुम, मिट जावे तकरार हो ॥प्र १५ ॥ के सदेश हिंसक मन्त्राजी समुद्रविजय पां आया । समय देख सांधि सदेश का उनको तार्इ सुनाया हो ॥प्र० १५१॥ कोप करी कह समुद्रविजयजी सुनले जरा धर ध्यान । हरी हलधर को माँग उसक करूं गर्दे में कान हो ॥प्र० १५२॥ घर में कस अन्यायी जन्मा कुल में कलंक समान । बाप भाई स भी नहीं चूका क्या करूं और बखान हो ॥प्र० १५३॥ उल्टे पैर लौट के मंत्री, आया सिन्ध क पास । यादव पूरे जोरा भर हैं, करा न माँग की आस हो ॥प्र० १५४॥ भार हाल ही कहा भूप न सेनापति के तार्इ । दिया हुक्म सैना ले आओ, चल युद्ध के मार्इ हो । प्र० १५५॥ इतना सुन के सेनापति न, कीना कटक

तैयार। हय गय रथ पायक आदि सब, कहत न आवे पार हो॥ प्र० १५६॥ कर्ण आय के जरासन्ध से, बोला जोड़ी हाथ। रण में जाकर युद्ध करूँगा, आज्ञा देवो नाथ हो॥ प्र० १५७॥ तब राजा कहे जल्दी जओ, मती लगाओ वार। पर इस युद्ध के माई तुमको, रहना बहुत हुशियार हो॥ प्र० १५८॥ फिर कर्ण ने पहना कवच को, लीना तन पर धार। और शस्त्र भी लीने पास में, चलन किया विचार हो॥ प्र० १५६॥ मुद्गर ग्रही हाथ के मांई, समर्यो नाग कुमार। सानिध्यकारी नाग आय के, हो गया उस के लार हो॥ प्र० १६०॥ गागेय जी भी उसी युद्ध मे, आया लडन उम्हाई। लेई हाथ म मुसडी शूल को, बैठा रथ के माई हो॥ प्र० १६१॥ कर्ण कोप यादव के ऊपर, झडा रोपा आई। सुभट देख त्रासित हो भागे, कहे हरि के तॉई हो॥ प्र० १६२॥ भीम गदा लेके हुआ ठाडा, अर्जुन धनुर्लिया धारी। युधिष्ठिर महाराजने इनको, रोक दिया उस वारी हो॥ प्र० १६३॥ भीष्म महोपिता है मोटा, और कर्ण है भाई। इण सग युद्ध में नहीं वडाई, विचार करो दिल माई हो॥ प्र० १६४॥ वसुदेव जब करी चढ़ाई, यों फिर दशों दिशार। उग्रसैन राजा भी युद्ध को, हुआ सग तय्यार हो॥ प्र० १६५॥ हलधर ने दी पिता श्री को, गदा हाथ की खास। इसे आप रण में लेजाओ, दुर्जन पाये त्रास हो॥ प्र० १६६॥ इत वसुदेव उत कर्ण भूपये, लडे दोनो ही आन। करे प्रहार एक दूजे पर, बोल रहे वे भान हो॥ प्र० १६७॥ उग्रसैन गागये परस्पर, लड़े दोनो नरनाथ। एक दूजे को मारण काजे शस्त्र लिया है हाथ हो॥ प्र० १६८॥ भीष्म विद्याधरी का सुत है, उग्रसैन वृद्ध जान। मारी मुसडी ऐसी तान के राजा भूला भान हो॥ प्र० १६६॥ देख सारथी राजा को कहे, भीष्म अनर्थ कीनो। रण-थल से रथ लेय अलहदा, सावचेत कर दीनो हो॥ प्र० १७०॥ वसुदेव और कर्ण भूप ने, युद्ध मचाया भारी। हलधर दत्त मुद्गरभी मारा, नहीं हुआ काज लगारी हो॥ प्र० १७१॥ तब तो अग्नि-बाण को छोड़ा, कर्णराय के लार। देख अग्नि की ज्वाल खसक गयो, देव मिली उस बार हो हो॥ प्र १७२॥ जल को लाय अग्नि बुझाई, वाण देव गया भाज। देवे सहायता नाग कर्ण को, तासे रहा है गाज हो॥ प्र०

१७३ ॥ वासुदेव के सुभट भाग गये, आन क्या बलवान । है तेजस्वी कृष्ण भूप यह, राजा भी लियो जान हो ॥ प्र० १७४ ॥ नारद आय कहे वसुदेव से पत्र पै नागकुमार । थारा तुम्हारा भ्राता वह चोट न लगे लगार हो ॥ प्र० १७५ ॥ इसका उपाय करूं अब आकर चिन्ता दूर निवार । मातली देव से आय शीघ्र बोले इस प्रकार हो ॥ प्र० ७६ ॥ वसुदेव और कृष्ण लखे हैं सो युद्ध देख चाल । वर्षों में नहीं देखा होगा ऐसा युद्ध कमाल हो ॥ प्र० १७७ ॥ वसुदेव के रथ के आगे मातली को बिठाया । नागकुमार लगन इन्द्र सारथी तत्क्षण कृष्ण मनाया हो ॥ प्र० १७८ ॥ इतने सूरज अस्त हुआ है, बन्द करा संग्राम । दोनों राजा निज-निज दल में आय करा विश्राम हो ॥ प्र० १७९ ॥ हंसो महतो आ स्वामी को, ऐसी की अरदास । बिना विचारे पहले भी उस कंस का हुआ विनाश हो ॥ प्र० १८० ॥ अब भी स्वामी हृदय विचारो हित-शिक्षा का सार । नर-संहार होता रुक जावे यश फैले संसार हो । प्र० १८ ॥ ज्वर से भोजन रुचि बिगड़ ज्यों शठ के लगे न ज्ञान । रावणवत् यह जरासन्ध भी बात धरे नहीं कान हो ॥ प्र० १८२ ॥ उल्टा समझा उस मंत्री को, तू यादव बहकाया । किसको डराता तू यहाँ आकर मेरे वीर सब ताया हो ॥ प्र० १८३ ॥ हंसक मंत्री कहे युद्ध में मरना यश का स्थान । आगे उसका जीवन पूरा है मिले न उसको मान हा ॥ प्र० १८४ ॥ प्रात होत ही दोनों दल फिर, युद्ध के लिये उम्हाया । जरासन्ध ने शिशु-पाल को, सेनापति बनाया । प्र० १८५ ॥ यादव ने पहले की भाँति, गरुड़-व्यूह रचाया । शिशुपाल ने भी वैसा ही चक्र-व्यूह बनवाया हा ॥ प्र० १८६ ॥ जरासन्ध हो अत्यन्त रोष में, उठा करी ललकार । मन बादल क्यों फौज खड़ी है बाजा का झनकार हो ॥ प्र० १८७ ॥ शिर पर बांध मुकुट धरा है, मेघाडम्बर छत्र । युद्ध निशान फरका कर उसने तन पर पहना बखतर हो ॥ प्र० १८८ ॥ कमर कटारी बांध रत्न की बैठा रथ में आय । अपराजित आदि सुभट की, संख्या क्रोड़ सहाय हो ॥ प्र० १८९ ॥ सिंहनाद जोर से करते, आये रण के स्थान । आयुध-धन पीछे पड़ते हैं, दल इनमें बलवान हा

॥ प्र० १६० ॥ पूछे जरासिन्ध मत्री से, शत्रु-दल के माई। कहो सुभट हैं कौन-कौन से, मुझको दे बतलाई हो ॥ प्र० १६१ ॥ हाथ उठा हसा कहे स्वामी, देखो निगाह पसार। श्याम अश्व वाले रथ माई, अनाधिष्टि कुमार हो ॥ प्र० १६२ ॥ उमको यादव मिल सब अपना, सेनापति बनाया। उसकी ध्वजा मे है गज लांछन, राजा को दिखलाया हो ॥ प्र० १६३ ॥ नील अश्व वाले रथ में हैं, युधिष्ठिरजी पुन राजा। श्वेत अश्व और कपि ध्वज वाला, रथ अर्जुन का ताजा हो ॥ प्र० १६४ ॥ नील पत्र की कान्ति वाले, अश्व जुते रथ माई। उस मे भीमसैन बैठे है. इसमे सशय नाई हो ॥ प्र० १६५ ॥ समुद्रविजय राजा का रथ है, स्वर्ण सदृश तुखार। ध्वजा ऊपर सिंह वाला चिन्ह है, यह वाका सरदार हो ॥ प्र० १६६ ॥ शुक्ल वर्ण के अश्व जुते रथ, वह नेमि भगवान। है वृषभ का चिन्ह ध्वजा में, जिस कर हो पहिचान हो ॥ प्र० १६७ ॥ कबरे अश्व वाले रथ मे है, अक्रूर नाम कुमार। उनकी ध्वजा मे कदली का चिन्ह, दिखता है इस वार हो ॥ प्र० १६८ ॥ सात्यकि का रथ जिसमे घोड़ा, तीतर वर्णी जानो। कुमुद सम अश्व जुते रथ माई, महानेमि का मानो हो ॥ प्र० १६९ ॥ लाल अश्व जुते हैं जिसके, उग्रसैन का जानो। जरत्कुमार के रथ पै ध्वजा, मृग चिन्ह की थैं मानो हो ॥ प्र० २०० ॥ राजा श्लक्षण राम का सुत. सिंहल रहा दिखाई। कम्बोज देश के अश्वो वाला, रथ चमकीला माई हो ॥ प्र० २०१ ॥ सिन्धु देश वीतभय पतन के, खास है मेरू राजा। श्याम रक्त वर्ण के हय रथ, कपि ध्वज उडती ताजा हो ॥ प्र० २०२ ॥ पद्मरथ राजा के रथ के, अश्व है पद्म समान। कमल ध्वज रथ वाला राजा, सारण है रतिवान हो ॥ प्र० २०३ ॥ बलराम के भ्रात विदुर के, रथ पच तिलक तुखार। ध्वजा कुम्भ की चिन्ह वाली है, देखो वह निहार हो ॥ प्र० २०४ ॥ श्वेत अश्व का सेना बीच मे जो रथ नजरा आवे। उसमे पक्का शत्रु हरि हे, गरुड़ ध्वजा फरावे हो ॥ प्र० २०५ ॥ दाहिनी ओर हरि के पासे, ठाडे हैं बलराम। इनके सिवा अन्य सुभटों का, कहां तक लेवे नाम हो ॥ प्र० २०६ ॥ फिर तो जरासन्ध लपक कर, यादु-दल पर आया। तास पाटवी पवनकुमरजी, अक्रूर पर वे धाया हो ॥ प्र०

२ ७॥ अपराजित और राम परस्पर लड़ते ज्यों गजराज। अनाधृष्टि से शिशुपाल फिर शल्य से अर्जुन राज हो ॥प्र० २ ८॥
रथवाले से रथवाला गजवाले से गजवान्। पयदल स पयदल भिड़ बराबरी का मान हो ॥ प्र० २ ९॥ बाण सनासन चलें
जोर से मानू मेघ की धार। पृथ्वी नभ भी लग कंपन कायर भूले उस वार हो ॥ प्र० २१० ॥ अब नारद जा जरासिन्ध पा,
एसी बात सिखाई। इस स्थान पर विजय कर तब तरी हाथ बड़ाई हा ॥ प्र० २११ ॥ तब हरि स आन कह यों यह भूला मिथ
मान। सरे हाथ का शस्त्र लगे बिन कभी न छोड़े प्रान हो ॥ प्र० २१२ ॥ यवन आर अक्रूरादिक में हुआ घोर संग्राम। आगे
बढ़ते यवन को फिर सहारख दीना थाम हो ॥ प्र० २१३ ॥ यवनकुमार ने क्षण करीन, सहारख रथ का चूरा। तब सहारख
न उसी यवन का धड़ से शिर किया दूरा हो ॥ प्र २१४ ॥ बृहसुत काम देख सहारख का यादव सेना सारी। मारे दृप के
लगी उभसने योधी सब अवकारी हो ॥ प्र० २१५॥ युवराज की मृत्यु होते जरासिन्ध झुंझलाया। भूख शेर की भाँति टूटकर,
शत्रु मार गिराया हो ॥ प्र० २१६॥ बलराम क दश पुत्रों को, तत्क्षण मार गिराया। इस कार्य से यादव दल में, आतंक जार का
छाया हो ॥प्र० २१७॥ जरासिन्ध जिधर जाता है करता साफ मैदान। कितनों को दिये मार वहां पर कई भागे ल प्रान हा ॥प्र०
२१८॥ शिशुपाल हँस कहे हरी से यह नहीं गाकुल ग्राम। देखा कैसा हा रहा यहां पर क्षत्रियों का संग्राम हा ॥प्र० २१९॥ कृष्ण
हँसी कह भाग यहाँ से नहीं तो दूँगा मार। रुक्मणि समय का भूल बैठ क्यों बनता तू गॅवार हो ॥ प्र० २२० ॥ मर्म
वचन सुन शिशुपाल ने हरि पै बाण चलाया। तब तो श्रीकृष्ण न उसको परभव धाम पहुँचाया हो ॥ प्र० २२१ ॥ शिशु
पाल के वध होने पर जरासन्ध को पाया। आप पतंगवत् क्यों मरत हो यादव का जिवलाया हा ॥ प्र० २२२ ॥ कंस
का मामा हरा हरी एकधर सा सुपुत्र मम कीवे। मैं भी लौट के जाऊँ मगध में, तुम आनन्द में राज हो ॥ प्र० २२३ ॥
यह सुन यादव जोश भराये, गिन गिन उनको मारा। जरासिन्ध को मारण काजे टूट पड़े उस वारा हो ॥ प्र० २२४ ॥

जरासन्ध के अठाईस सुनते, बलराम को घेरा। गुणतर सुतने चारो ओर फिर, हरि के लगाया डेरा हो ॥ प्र० २२५ ॥ हरी रामने जरासन्ध के, सुत को लिये पहिचान। अब दोनो ओर से वाण की वर्षा, होन लगी है आन हो ॥ प्र० २२६ ॥ जरा उपद्रव देख उन पुत्रों का, जोश खाय बलराम। हल और मूसल के द्वारा, कर दिया काम तमाम हो ॥ प्र० २२७ ॥ यह दृश्य देख जरासन्धने, गदा राम के मारी। जिससे वे व्याकुल हो गये, हल चल मची है मारी हो ॥ प्र० २२८ ॥ देख पुनःगदा मारता देखी, अर्जुन बीच मे आय। कर युद्ध जरासन्ध से उसने, राम को लिया बचाय हो ॥ प्र० २२९ ॥ देख व्याकुलता बलदाऊ की, श्रीकृष्ण कोपाया। जरासन्ध के गुणतर सुत को, परभव बीच पठाया हो ॥ प्र० २३० ॥ तब तो जरासन्ध की दृष्टि, पड़ी कृष्ण की ओर। राम गया मर जान अर्जुन तज, कृष्ण पर मारा जोर हो ॥ प्र० २३१ ॥ यह देखकर यादवजन कहें, अब नहीं हरी की खैर। उसी समय श्रीनेम प्रभु से, करी मातली टेर हो ॥ प्र० २३२ ॥ सावद्य कर्म से आप विमुख पर, शत्रु दल के मॉई। एक दफा प्रभु रथ फिरा के, दीजे लीला दिखाई हो ॥ प्र० २३३ ॥ तब तो नेमनाथ प्रभु ने, शख दिया फिर फूॅक। जिस से जरासन्ध की सैना, पहलू से गई चूक हो ॥ प्र० २३४ ॥ शत्रु सैन्य को चकित देखी, यादव सैन किया हल्ला। पाण्डव ने भी कौरव के सग, दिल भर लिया बदला हो ॥ प्र० २३५ ॥ बलराम भी स्वस्थ होय ने, हल मूसल के द्वारा। जरासन्ध के बहु सैनिक को, पहुॅचाया यम द्वारा हो। प्र० २३६ ॥ सैना का सहार देख के, जरासन्ध हो लाल। बोला श्रीकृष्ण पां आकर, सुन मेरा सवाल हो ॥ प्र० २३७ ॥ इतने दिन अपनी माया से, तू जीवित रह पाया। माया से ही कालीकुमार और, कस के प्राण नसाया हो ॥प्र० २३८॥ अस्त्र विद्या से हीन तेरे सग, युद्ध करना नहीं चाऊॅ। मगर तेरी माया का अन्त तो, मैं ही होकर लाऊॅ हो ॥ प्र० २३९ ॥ तेरे जीवन के साथ तेरी, माया का अन्त करूगा। पुत्री जीवयशा की प्रतिज्ञा, पूर्ण करी धरूगा हो ॥ प्र० २४० ॥ अभिमानयुत् वचन सुन कर, बोले कृष्ण उस ताईं। देख लूॅगा तेरी अस्त्र विद्या को, इसी

युद्ध के माह हो ॥ प्र २४१ ॥ तब तो जरासन्ध कोपित हो हरि पर बाण चलाया। मगर हरि ने उन बाणों का, बीच में काट गिराया हो ॥ प्र २४२ ॥ जरासन्ध और श्रीकृष्ण ने, भारी युद्ध मचाया। शूरवीर भी दहल गये हैं, विद्याधर कंपाया हो ॥प्र० २४३॥ इधर उधर रथ दौड़ रहे हैं घायल पड़ पथ मांई। मानों प्रलय काल आ पहुँचा ऐसा रहा दिखाई हो ॥प्र० २४४॥ फिर तो जरासन्ध ने झुंझलाकर, चक्र रत्न चलाया। यादव सुभट देख उस ठांई, तुरत मुख कुम्हलाया हो ॥ प्र० २४५ ॥ चक्र राजन को हरि पालख, करा बहुत उपचार। योद्धाओं ने भिन्न भिन्न प्रकार गये सभी बकार हो ॥प्र० २४६॥ दुर्निवार्य वह भी था चक्कर, गति हुई नहीं मग श्रीकृष्ण के स्पर्श हुआ है गेन्द लग ज्यों भग हो ॥प्र० २४७॥ श्रीकृष्ण ने उस चक्र को ग्रहण किया कर मांई। सब के जी में जी आया फिर सभी रहे हुलसाई हो ॥प्र० २४८॥ देवगण कहें भरतक्षेत्र में प्रगट वासुदेव। गन्धोदक और पुष्प वर्षा कर, कीनी सब ने सेव हो ॥ प्र० २४९ ॥ ऐ अभिमानी जरासन्ध ! क्या यह भी मेरी माया ? हित चाह तो पीछा हट जा हरि ने उसे खिजाया हो ॥प्र० २५०॥ युद्ध दशा दया मुझ आवे, दो दिन तू मिजमान। इसलिये मारण हाथ रुके हैं खास बात या मान हो ॥ प्र० २५१ ॥ मेरे इन वचनों पर यदि तू नहीं धरेगा ध्यान। तो चक्कर ही तुझ का, तुरत देगा जरा मान हो ॥ प्र २५२ ॥ जरासन्ध कहे इसी चक्र से नहीं मैं डरने वाला। कुम्भकार के चक्रवत् समझूं सुन ले तू गोपाला हो ॥ प्र० २५३ ॥ नहीं माने पर हरि रोष कर, उस पर चक्र चलाया। जरासन्ध का शीश क्षण तब चौथी नर्क सिधाया हो ॥ प्र० २५४ ॥ श्रीकृष्ण की विजय हाथ ही, चौतरफ आनन्द छाया। करी पुष्प की वृष्टि देवों ने, जय जयकार मनाया हो ॥ प्र० २५५ ॥ हुओ हरि के पगपग प्रगट इच्छित नवनिधि आन। गुरु प्रसादे चौथमल कहे पुण्य बड़ा बलवान हो ॥ प्र० २५६ ॥ दोहा —श्रीकृष्ण वासुदेव का, करें राज्याभिषेक। यह विवरण श्रोता सभी सुना चित्त कर एक ॥ २५७ ॥ युद्ध समाप्त हो जाने पर फिर, नेमिनाथ भगवान। हरि के शत्रु राजाओं को, बन्धनमुक्त किये आन हो ॥प्र०

२५८ ॥ हाथ जोड के उन राजाओं ने, प्रभु के गुण वहु गाया। विश्व-प्रेम के कारण आपकी, शरण आय सुख पाया हो ॥ प्र० २५९ ॥ उन राजाओं को संग मे ले प्रभु, श्रीकृष्ण पां आया। उनका कृत अपराध माफ, फिर कृष्ण से करवाया हो ॥प्र० २६० । फिर हरि ने जरासन्ध सुत, सहदेव के ताईं। मगध देश का चतुर्थ भाग दे, पितु पद दिया बैठाई हो ॥ प्र० २६१ ॥ ऐसे समुद्र-विजय के सुत को, महानेमि कुमार। शौरपुर का स्वय हरि ने बना दिया दरबार हो ॥ प्र० २६२ ॥ हिरण्यनाभ के सुत रुक्मा को, कौशलाधीश बनाया। उग्रसैन के सुत के ताईं, मथुरा तख्त भोलाया हो ॥ प्र० २६३ ॥ पाण्डवराय को फिर माधव ने, दीना वञ्छित देश। और सभी को दिया आपने सुन्दर देश विशेप हो ॥ प्र० २६४ ॥ इतने सूर्य अस्त होते ही, प्रभु नेमि नाम कुमार। मातलि को रथ सहित बिदा कर, भेजा स्वर्ग मझार हो ॥ प्र० २६५। तदनु कृष्ण और नेमिकुमारजी, शिविर वीच मे आया। समुद्रविजयजी भी आ शिविर मे, आनन्द खूब मनाया हो ॥ प्र० २६६ ॥ युद्ध समय हलधर सोचा था, हैं विद्याधर ऐसे। जो मिल जाये जरासिन्ध से, जीतेंगे फिर कैसे हो ॥ प्र० ६७ ॥ इस कारण फिर शाम्भकुवर को, और प्रद्युम्न भाई। भेजे थे इनको फिर वहां पर कीनी थी चतुराई हो ॥ प्र० २६८ ॥ पिता वचन को मान कुवरजी, विद्याधर की ओर। रोक थाम करने के कारण, जाई मचाया शोर हो ॥ प्र० २६९ ॥ वहा जाकर विद्याधर ताईं, जीत लिये छिन माईं। इधर से जरासिन्ध मृत्यु की, खबरें भी सुन पाई हो ॥ प्र० २७० ॥ दौड विद्याधर आया सीधा, मदरवग नृप पास। उनको कहा शरण लो हरि का, बात मेरी या खास हो ॥ प्र० २७१ ॥ दो नृप कन्या मदनकुवर को, उन्हे ला परणाई। दो नृप कन्या साम्वकुवर को दीनी हर्ष मनाई हो ॥ प्र० २७२ ॥ लेकर भेटना सग मे वहां से, कीना है प्रस्थान। देकर सदेश विद्याधर को, भेजा पिता के स्थान हो ॥प्र० २७३॥ आय विद्याधर हरि के पास मे, बोले यो हर्षाई। लेय भेटना शाम्बकुमरादि, आ रहे चरण के मईं हो ॥प्र० २७४॥ इतने में वे सब के सब ही, आ पहुँचे उस वार। समुद्रविजय ने उनका यथोचित, करा खूब सत्कार हो ॥ प्र० २७५ ॥ स्वर्ण रत्न

विविध मुक्ताफल, हाथी घोर तुखार। करी हरि क भेंट खुशी से कर लीने स्वीकार हो ॥ प्र २७६ ॥ युद्ध बीच म मर गये धारण, उनका अब इस बार। श्रीकृष्ण और जयसन न कीना अग्नि-संस्कार हो ॥ प्र० २७७ ॥ जरासन्ध मरा उस युद्ध में, उसके शव क ताईं। सहदव न करा संस्कार जब, दिल में बहु पछताई हो ॥ प्र २७८ ॥ जीवयशा ने देखा नजर स पति पिता संहार। हो अग्नि-प्रवेश मर्दिया, पूर्व की उस बार हो ॥ प्र २७९ ॥ सैन्य-पड़ाव का नाम धरकर हरि, आनन्दपुर दिया नाम। शान्तपुर एक नवीन बसाया उस निकट शुभ धाम हो ॥ प्र २८० ॥ चक्र मार्ग से हरि ने आया, अति सब मंडल। फिर भूतले आवे जहाँ पर कोटि शिला प्रबल हो ॥ प्र २८१ ॥ एक योजन की लम्बी चौड़ी ऊँची इतनी जान। प्रथम वासुदेव उठाई उस का, उन्मे भुजा प्रमान हो ॥प्र २८२॥ दूजा मस्तक तीजा कण्ठ तक चौथे सीना ताइ। पांचवें हृदय छठ कमर तक, सातवें जंघा बताई हो ॥प्र०२८३॥ आठवें जानु तक उठाई नवमें वासुदेव। अंगुल चार उठाई भू से, परचा दिया वसुदेव हो ॥प्र० २८४ ॥ आठ वर्ष में दिग्विजय कर बढ़ता तज प्रताप। क्षेम-कुशल स घर पधार, शहर द्वारिका आप हो ॥प्र०२८५॥ चक्र सुनद धनुष्य चक्र और शक्ति गदा शंख बान। मनावास आ मिले हरिको कम्बु बना पुण्यवान हो ॥ प्र० २८६ ॥ सहस्र सहस्र प्रधान देवता रत्नों क रक्षक। ऐसे आठ हजार करीने सेवित हो गोपाल हो ॥ प्र २८७ ॥ हल, मसूल और गदा मास के, चार चार हजार। य सब देव हलधर को भी, सेवें हैं हरबार हो ॥ प्र० २८८ ॥ सुरनर ने मिल भक्ति पूर्वक, करा अभिषेक उदार। वासुदेव का समय २ पर, करता जय जयकार हो ॥ प्र० २८९ ॥ समुद्र विजयादि हैं जिन के भा, दश दशार्ह उदार। बलदेव आदिक हैं पाँच व, महावीर कुँअर हो ॥ प्र० २९० ॥ उग्रसेन मुकुट बन्ध राजा आदिक सोलह हजार। प्रद्युम्न आदि साढे तीन क्रोड, केशरिया कुमार हो ॥ प्र० २९१ साठ हजार दुर्दान्त कुँअर हैं, साम्बादिक प्रधान। वीरसेनादि इक्कीस हजार हैं, वीर उन्हें सा मान हो ॥ प्र २९२ ॥ आज्ञाकारी महासेनादि, हैं पचास हजार। मानें आज्ञा श्रीकृष्ण की सार्थवाह

साहूकार हो ॥ प्र० २६३ ॥ रुक्मणि सत्य भामा जाम्बुवती है, गौरी और गंधारी। पद्मावती, सुषमा, लक्ष्मणा, आठों हैं पटनारी हो ॥ प्र० २६४ ॥ ऐसे सोलह हजार रमणी के, हैं माधव भर्त्तार। एकवीस खंड के रत्न महल मे, भोगें सुख संसार हो ॥ प्र० २६५ ॥ बन्धुमती रेवती राजिव, सुलोचन वरनार। ऐसे आठ हजार रमणी के, वलभद्र भर्त्तार हो ॥ प्र० २६६ सतरह खड के महल बीच मे, भोगें सुख उदार। ऐसे सवही राज कुमार रहें, मोद बीच हरवार हो ॥ प्र० २६७ ॥ द्वारामती सा शहर मिला है, कृष्ण सरीखा राज। गुरु प्रसादे चौथमल कहे, मिले पुण्य के काज हो ॥ प्र० २६८ ॥

॥ पूर्वार्द्धम् समाप्तम् ॥

पाण्डव-चरित्र

॥ दोहा ॥ अरिहंत सिद्ध अरु सद्गुरु, चौथा धर्म उदार । इन चारों की शरण ले, कहूँ द्रौपदी अधिकार ॥ १ ॥
छट्ठु अंग ज्ञाता विषय, है जिस का विस्तार । महावीर फरमावियो, गौतम को हितकार ॥ २ ॥

स्वयंवर रचाया द्रुपद भूपने द्रौपदी सुता का ॥टेर॥ करे राज हस्तिनापुर मांहि पाण्डु नृप बलवान् । हित शिक्षा देकर प्रजा को, पाले पुत्र समान हो ॥ स्व० ३ ॥ एक दिन काम्पिलपुर नगर से राजा द्रुपद का दूत । नृप पाण्डु के पास आयके, नमन किया विनय युत हो ॥ स्व० ४ ॥ हे राजन् राजा द्रुपद के, धृष्टद्युम्न कुमार । कन्या द्रौपदी एक मनोहर इन्द्रानी अनुसार हो ॥ स्व० ५ ॥ इसी समय उस कन्या का स्वयंवर भूप रचाया । जिस में दश दशार्ह हरि हलधर दमदन्तादि बुलाया हो ॥ स्व ६ ॥ जोशी बुलाके लग्न दिखाया अब उसने जितलाया । पोष शुक्ल तीज गोधूलिक मुहूर्त शुभ बताया हो ॥ स्व० ७ ॥ चम्पा से शल्य गंधारी शकुनी वैराट् से कीचक राज । मथुरा से शीधर मालव देश का ययरीसास महाराज हो

॥ स्व० ८ ॥ शिशुपाल, रुक्मि, कर्ण, दुर्योधन कई बलवान । राजाराज कुमार सभी को निमंत्रित करे हित जान हो ॥ स्व० ६ ॥ कई राजा तो पहुँच गये और, कितने शीघ्र ही आवे । राज पधारे दिव्य पुत्र ले, स्वयवर शोभ वढावे हो ॥ स्व० १० ॥ दूत मुख से वचन सुनीने, पाण्डव नृप हर्षाया । करी सजाई पांचो सुतले, कम्पिलपुर को आया हो ॥ स्व० ११ ॥ आगत का स्वागत द्रुपद ने, किया खूब धर ध्यान । और ठहरायो यथायोग्य दे, वासस्थान प्रधान हो ॥स्व० १२॥ मेवा मिठाई भोजन सरस, सब के ताई जिमाया । नाटक गीत विनोद बीच सुख, मान रहे सब राया हो ॥ स्व० १३ । मण्डप छटा अति जोर की, स्वर्ण स्थम्भ रोपाया । मुक्ताफल रत्न रचित छत, देखत नयन लोभाया हो ॥ स्व० १४॥ स्थान-स्थान फूलों की माला, तोरण ध्वजा लगाई । धूप महक रही सर्वत्र वहा, सुगन्ध बहु छिटकाई हो ॥ स्व० १५ ॥ लग्न दिवस सजधज सब राजा, बैठे सिंहासन आई । पांच बाणयुत कामदेव सम, पाण्डव रहा शोभाई हो ॥ स्व० १६ ॥ तब स्नान कर द्रौपदी अर्चे, इष्टदेव को आई । दिव्य दीजे भर्त्तार मुझे, यह वर मांगा हर्षाई हो ॥ स्व० १७ ॥ रूप अनूपा वह नवयुवती, सुन्दर बदन हुलास । तत्क्षण पीछी फिर के आई, निज माता के पास हो ॥स्व० १८॥ शशिवदनी और मृगलोचनी, सुन्दर कोमल काय । कोकिल कण्ठ गति मराल-सी अमृत वाक्य शोभाय हो ॥ स्व० १९ ॥ सजी शृगार नाना विधि तनु पर, भूपण विविध प्रकार । शीश फूल कानो कुण्डल अरु, नखवेसर उदार हो ॥ स्व० २० ॥ कर कंकण पावो मे बीछा, मुद्रिका अगुली माई । झीनी साड़ी बदन पे सोहे, कज्जल नैन सराई हो ॥ स्व० २१ ॥ हाथ पाव में मेंहदी लगी है, तिलक ललाट पर सार । मणिमुक्ता के हार गले में, रति रभा अवतार हो ॥ स्व० २२ ॥ रथ शृगारा अति जोर का, घुघरमाल लगाय । सखी सहेलिया सग लेके, लागी जननी पाय हो ॥ स्व० २३ ॥ मनमाना वर लेना तू यो, जननी दे आशीप । फिर रथ माई बैठी मोद से, धर ध्यान जगदीश हो ॥ स्व० २४ ॥ बना सारथी स्वय भ्रात सग, लिये सुभट सिरदार । रथ की रक्षा काज समझना, रत्न यत्न विचार हो ॥ स्व० २५ ॥

सावधान रजपूत रक्षया, हाथ गही तलवार । आये चल के कुशल क्षेम से हर्षे राजकुमार हो ॥ स्व० २६ ॥ किया मचरा मण्डप के अम्बर, देखे माधव राम । और भी देखी अन्य नरेश को सब को करे प्रणाम हो ॥ स्व० २७ ॥ पुष्प रचा वर पुष्पमाल ले, सकल सहेली संग । गजगामिनी हर्षित मुखमों देख भूप हुए दंग हो ॥ स्व० २८ ॥ सखी लिये हाथ में दर्पण मीरा निर्मल रूप । मणी माणक का चौखटा सरे, ता बीच देखे भूप हो ॥ स्व० २९ ॥ नाम स्थान कुलधरा आदि, शूर वीर उदार । भाव ताव भाव भामरनी, राज ऋद्धि मण्डार हो ॥ स्व० ३० ॥ कहती हुई वर्णन यों सबका, दासी चतुर सुजान । कुमरी के एक तरफ चाल दिखावी राना राजान हो ॥ स्व० ३१ ॥ राज कुमारी प्रसन्न होगई देखी बहु राजान । मण्डप बीच आई मन उलका, जैसे हथिनी स्थान हो ॥ स्व० ३२ ॥ नारी एक भूपति बहु मिल के निरखें निगाह पसार । ज्यों रवि की किरण निकसत विकसें कमल हजार हो ॥ स्व० ३३ ॥ राज कुमारी आई जहाँ पर बैठे कृष्ण अनूप । भाग रस भारीसा मांई, दिख जावे यह रूप हो ॥ स्व० ३४ ॥ सखी कहे सुन स्वामिनी मेरी मन स्थिर नयन निहार । धारे जो मन माने कण्ठ में पहना दे वर माल हा ॥ स्व० ३५ ॥ इस अवसर को भवना भूके हृदय करी विचार । द्वारामती नगरी के राजा, बैठे कृष्ण मुरार हा ॥ स्व० ३६ ॥ भाग मद बल भद्र वीर वर दखे दसों दसार । वसुदेवजी को भी देखे, पर जिन के हैं चहुनार हो । स्व० ३७ ॥ राजसुता चिन्त बहु भारी, कहाँ को उजास । सबही का निश्चोक राखना, कौन करे पंपाल हा ॥ स्व ३८ ॥ आगे फिर सहदेव बताया राजगृही का स्वामी । ठाकर का चाकर यों हुवो इस के भाग्य में खामी हा ॥ स्व० ३९ ॥ इस विधि सकल राज को देखी खुबही सोच समाल । तब कुमरी कहे दासी मेरी यहां से आगे चाल हो ॥ स्व० ४० ॥ देखे आगे पाण्डुसुत पांचों तब हो गई कुमारी । निदान योग से वर माला पांचा के गले पहनाई हा ॥ स्व० ४१ ॥ दर्शक गण यह दृश्य देख के सब चकित हो जावें । क्या द्रौपदी पांचों भ्रात को, प्रिय पति बनाये हो ॥ स्व० ४२ ॥ उसी समय ज्ञानी मुनि आये, जब कृष्ण

दिक राव। पूछा द्रौपदी के लिये यह, कैसे बना बनाव हो ॥ स्व० ४३ ॥ मुनि कहे गति कर्मों की, विषम जगत के माई। पूर्वा पार्जित कर्मों के कारण बना बनाव यो आई हो ॥ स्व० ४४ ॥ द्रौपदी के पूर्व जन्म का, कहूँ जिक्र चितलाय। आप सभी का संशय मिटता, सुनो कान लगाय हो ॥ स्व० ४५ ॥ भरत क्षेत्र में चम्पापुरी थी, नगरी बडी सुखदाई। सोमदेव, सोमभूति, सोमदत्त, तीनों विप्र रहें वॉई हो ॥ स्व० ४६ ॥ नाग श्री और भूत श्री है यक्ष श्री, क्रमश जिन के नार। तीनो भ्रात के प्रेम बहुत है, धन से भरे भडार हो ॥ स्व० ४७ ॥ अधिक प्रेम के खातिर उनने, ऐसी सलाह विचारी। क्रमशः एक के घर पर ही, भोजन करने की धारी हो ॥ स्व० ४८ ॥ तब आई वारी सोमदेव की, नाग श्री उस वारी। नाना भाँति का भोजन बनाया, आल की तरकारी हो ॥ स्व० ४९ ॥ विष समान कटु थी तूम्बड़ी, चखने पर पहचानी। छिपा उसे अन्य भोजन को फिर जिमाया हित आनी हो ॥ स्व० ५० ॥ उसी समय धर्म घोप पधारे, चवदे पूर्व के धारी। जिन के शिष्य धर्म रुची संग, मास-क्षमण तपधारी हो ॥स्व० ५१॥ धर्मरुची के आया पारना, लेने गये वे आहार। दैवयोग से आये नागश्री घर, तब उसने किया विचार हो ॥ स्व० ५२ ॥ जान उखेडी दी पात्र मे, लौकी की तरकारी। लाके धरी गुरु के आगे, गुरु लख कहे उस वारी हो ॥ स्व० ५३ ॥ हे वत्स! यदि यह खावे तो, टिके न तेरे प्रान। वाहर जाय प्राशुक भूमि मे, पठ दो करुणा आन हो ॥स्व० ५४॥ तब धर्मरुची आये उद्यान में, एक बूंद दीना डार। उसकी गध से चींटी बहु आई, खाते ही मरती निहार हो ॥ स्व० ५५ ॥ एक बूंद से इतना अनर्थ, सब डाले क्या होय। ऐसा सोच सारा पी गये वे, करुणा दिल मे जोय हो ॥ स्व० ५६ ॥ हुई वेदना उन मुनिवर के, उज्ज्वल ध्यान को लाया। अनशन कर त्रिरत्न अराधी, स्वार्थ सिद्ध सिधाया हो ॥ स्व० ५७ ॥ धर्मरुची जब नहीं आया तब, शिष्यो से खोज कराई। मृत शरीर विपिन मे देखा, आकर बात सुनाई हो ॥ स्व० ५८ ॥ ज्ञान लगा कर देखा शिष्य को, स्वार्थ सिद्धि के माई। लघु मोक्ष मे जाय विराजे, तेंतीस सागर थिति पाई हो ॥ स्व० ५९ ॥ उसी ज्ञान से नागश्री का,

दुष्करित कीना जान। सवर स्थान पर भाभव कीनो छूटी विरम क स्थान हो ॥ स्व० ६० ॥ इस विधि बात जान कर साधु, भाया शहर क माहिं। सामदत्त और भन्य लोगों से सारी बात सुनाई हो ॥ स्व० ६१ ॥ चारों ओर नागश्री की निन्दा, फैल गई तत्काल। सामदत्त न क्रोध करी फिर घर स दी निकाल हो ॥ स्व० ६२ ॥ दुखित हाय वह नागश्री नित मांग-मांग के खावे। पापादय उसक तनु सोलह, राज रोग प्रगटाये हो ॥ स्व० ६३ ॥ वहां स मर वह दुष्टा नारी, छठी नर्क सिधारी। दीर्घ काल तक धार वहना, भागी कर्मानुसारी हो ॥ स्व० ६४ ॥ वहां स म्लेच्छों म आ जन्मी फिर सप्तमी का स्थान। पुन म्लेच्छ पुन: नर्क सातवीं पाई दुख असमान हो ॥ स्व० ६५ ॥ इस प्रकार प्रत्यक नर्क में, दो दो बेर हो आइ। फिर पृथ्वी आदि अनेक योनि का भुगती आगम गाइ हो ॥ स्व० ६६ ॥ उसके बाद चम्पा नगरी में सागर सेठ घर आय। सुभद्रा सेठानी उदर स कुमारी प्रगटी आय हो ॥ स्व० ६७ ॥ जिनदत्त नामा एक सार्थवाह, रहे वहां धनधाम। जिसकी स्त्री भद्रा ने जन्मा, सागर पुत्र गुण-धाम हो ॥ स्व० ६८ ॥ एक दिन सागर दत्तकुमार को, गया बाग के माहिं। पथ में आत उसी कन्या को, देखी गया लोभाई हो ॥ स्व० ६९ ॥ कामाग्नि स वह कुम्हलाया, घर आया हो दिलगीर। मात पिता उसने पूछा क्यों सुत हुआ अधीर हो ॥ स्व० ७० ॥ पुत्र कहे सुनो मात पिताजी, जो चाहो मुझ खैर। सागरदत्त सुता परणाओ मती लगाओ देर हो ॥ स्व० ७१ ॥ बात सुनी हर्षित हो सेठजी, ले मित्रों को लार। सागरदत्त सेठ घर आकर मिला मुजा पसार हो ॥ स्व० ७२ ॥ कैस आना हुआ यहां पर सारा हाल सुनाया। सुता तुम्हारी दो मुझ सुत को मन काज मनभाया हो ॥ स्व० ७३ ॥ सेठ कहे यह मेरी अंगजा जीवन प्राण समान। पर जमाई जो रह हमारे, लाओ चढ़ा के जान हो ॥ स्व० ७४ ॥ विलक्ष सेठ आ कह पुत्र ने, सुत ने चुप मनाई। मौन सम्मति लक्षण मान, किया सुत परणाई हो ॥ स्व० ७५ ॥ सुहागरात मनान हित दोनों सज में आया। तनु-स्पर्श पर आग सा दुखा सागर अति घबराया हो ॥ स्व० ७६ ॥ बांधा निकाचित कर्म जीव न मिले न वंछित भोग।

ऐसा जान कर्म मत बांधो, जो सुख चाहो हो ॥ स्व० ७७ ॥ आई नींद पत्नि को तब फिर, समय देख कुमार । अहि-कचुकवत् तजी वहा से, घर पर गयो सिधार हो ॥ स्व० ७८ ॥ सुकुमालिका जग कर देखे, पति नजर नहीं आया । गद्-गद् हो के रुदन करे कहा, जाकर नाथ छिपाया हो ॥ स्व० ७९ ॥ झारी लेकर दासी आई, देखी रंग विरंग । शीघ्र सेठानी से जा बोली, क्या करा जमाई ढंग हो ॥ स्व० ८० ॥ निज पत्नि से सुन सागरदत्त, गया क्रोध में छाय । जिनदत्त सेठ के ताईं कोप भर, दिया ओलभा जाय हो ॥ स्व० ८१ ॥ बोले सेठ बुला निज सुत से, यह क्या किया अकाज । छोड नींद में [illegible] पत्नि को, कैसे आया भाज हो ॥स्व० ८२॥ अग्नि-प्रवेश, विष-भक्षण करलूं, सागर में गिर जाऊं । पितु आज्ञा सभी [illegible] उसके पास नहीं जाऊं हो ॥स्व० ८३॥ प्रच्छन्न सुन सागर घर आई कहे सुता के ताईं । वह बिलकुल तुझसे विरक्त [illegible] जलाई हो ॥स्व० ८४॥ हे बेटी ! तैं पूर्वजन्म में, प्राणी बहुत सताया । वही कर्म तू भोग रही अब, [illegible] ॥स्व० ८५॥ एक दिन बैठा सेठ गोख में, देखा भगता आता । हाथ ठीकरा मक्खियां भिनके, [illegible]

[illegible] भोजन सरस जिमाया । बाल बना कर स्नान कराया, वस्त्राभरण पहनाया हो ॥स्व०

[illegible] । खुला भाग्य मिले सुख नाना [illegible] हो ॥स्व० ८८॥ [illegible]

॥ मालूम हुआ, [illegible] हो ॥ स्व० ८९ ॥ [illegible]

[illegible] समझा टली बलाय हो ॥ स्व० ९० ॥ [illegible]

वशीकरण मन्त्रादिक पूछा वश होने मचोर हो ॥ ६४ ॥ साध्वी कहे मन्त्र तन्त्र जंत्र, औषध बूटी प्रेम । कामन मोहन जैन धम में करन करायन नम हो ॥ स्व० ६५ ॥ चारित्र का उपदेश करा जब लीना संयम धार । करे तपसा कठिन तजे नहीं, अन्तर काम विकार हा ॥ स्व ६६ ॥ आज्ञा बहार हा गई विपिन में स आतापना भारी । बाहु पर रह बाहु विपिन में, भावों पर पावी सारी हो ॥ स्व० ६७ ॥ रहे शहर क अन्दर प्रेमी पांच दोस्त प्रधान । राजा भी सन्मान दे उनको मानी भँवर सुभान हो ॥ स्व ६८ ॥ बैठ रथ में वेश्यायुत वे पहुर वन म आया । रथ से उतर बैठ तरु छाया सुन्दर वसन बिछाया हो ॥ स्व० ६९ ॥ एक पुरुष व पान मुख म, एक रक्खे शिर छत्र । एक वेस हाले चाखों में एक पत्ता डाले उस पर ॥ स्व १०० ॥ एक बिठाय गाय बाच में पाँचो करत प्यार । सुकुमारी साध्वी इनको देखी कर विचार हा ॥ स्व० १ १ ॥ कैसा इसने पुण्य कमाया, पाच पुरुष रहें लार । तिरस्कार करने पर इससे हस पास हरबार हो ॥स्व० १ ४॥ मैंने कैसा पाप कमाया चखे नहीं लगार । जो तप फल हो भावी जन्म म, मिले पांच भरतार हा । स्व० १ ३॥ बहुत वप तक स्वच्छन्द विचरी तप में जोर लगाया । बिना आलोचना अन्त समय उसन संथारा ठाया हो ॥स्व० १०४॥ आयुष्य पूर्ण कर दूजे स्वर्ग में, सुर गणिका हुई आय । नव पल्योपम की स्थिति पाइ इच्छित सुख प्रगटाय हो ॥ स्व० १०५ ॥ पांचाल देश कपिलपुर माहीं, राजा द्रुपद क आय । हुई द्रौपदी सुकुमारी वह मुनि ने दिया सुनाय हो ॥ स्व० १०६ ॥ बना बनाव पूर्व कृत्य से यह, कोई आश्चर्य नहीं लाना । मुनि से यों सुन कृष्ण आदि का, संशय सब विरलाना हो ॥स्व० १ ७॥ आये द्रुपद राजा से पाण्डव, मिल मोद भराई । उनके सामने द्रुपद सुता को परखी हर्ष मनाई हो ॥ स्व० १ ८ ॥ कोड सोनैया नकद पाण्डव को, दिया द्रुपद उस वार । मणि मुक्तादिक वस्त्राभरण भी गजरथ ने तुखार हो ॥ स्व० १०९ ॥ अठारा देश की दासी दीनी छत्र चँवर पुन' दास । बेटी जमाइ को प्रसन्न कर उम्मेद निकाली खास हो ॥ स्व० ११० ॥ कर

लगे नकारे ठौर हो ॥ स्व० १११ ॥ आडा सत्कार विदा किया सब को, जो आये नृप और। कमलापति की चली सवारी, लगे नकारे ठौर हो ॥ स्व० ११२ ॥ श्रीकृष्ण ने फिरी पाण्डु नृप बोले, सुनों हरी अरदास । हस्तिनापुर पावन सब कीजो, पूरो हमारी आस हो ॥ स्व० ११३ ॥ चूलना रानी चली पहु-आति मोद से, मानी उनकी बात। अन्य नृप भी हरि के सग मे, चले छर कर खांत हो ॥ स्व० ११४ ॥ प्रीतम पहले तू नित उठजे, आलस चाने, बोली नैन भराई। सासु श्वसुर की सेवा कीजे, रीजो आज्ञा माई हो ॥ स्व० ११५ ॥ अरिहत देव सुगुरु दया धर्म, लीजे मन ला मत अग। पति जिमाया बाद जीमजे, मत कीजे कभी कुसंग हो ॥ स्व० ११६ ॥ निंदा पराई कभी ना करना, नहीं रखना अभि-में धार। बिना बिचारी मती बोलजे, गिणजे नित नौकार हो ॥ स्व० ११७ ॥ साधु सती का आदर करजे, दीजे शुद्ध मन मान। अवगुण ऊपर गुण तू कीजे, मत तप का करना निदान हो ॥ स्व० ११८ ॥ पितु मात भ्रात सुध लीजे, पत्र कुशल को दीजे। दान। अन्तराय मत दीजे पर के, करजे तू धर्म ध्यान हो ॥ स्व० ११९ ॥ हे बेटी! तू गुण की पेटी, आवे याद दिन रात। आज चली तू छोड़ पीहर ने, सदा सुख में रीजे हो ॥ स्व० १२० ॥ बेटी! मात पडी अब छेटी, बोली आसू डार। फिर मिलेगी किस दिन आकर, करे विलाप यों मात हो ॥ स्व० १२१ ॥ पगे लाग माता के द्रौपदी, बैठी रथ के माई। उदासीन आवे भ्रात साथ यह थारे, हस्तिनापुर तक लार हो ॥ स्व० १२२ ॥ रोती विसुरती रानी यो फिर, बेटी रही पुकार। चित्त लगे नहीं हो करके माता, लौट महल में आई हो ॥ स्व० १२३ ॥ दास दासी मिलके समझावे, रानी! रुदन निवार। बेटी वेग आसी बाग महल में, विरह बुरा ससार हो ॥ स्व० १२४ ॥ द्रुपद राजा भेंट जमाई को, पूरो प्रेम जनायो। सब राजो से मिली जुली अपने घर, पच दश दिन मंझार हो ॥ स्व० १२५ ॥ गजपुर में अब चली सवारी, बाजा के झनकार। घर घर हुआ हर्ष वधावा, घर फिर, पाछो पुरमें आयो हो ॥ स्व० १२६ ॥ पांचों भ्रात की जोडी सुन्दर, द्रौपदी अप्सरा नार। विविध भांति का महोत्सव देखा, आया घर मगलाचार हो ॥

महल मंझार हो ॥ स्त० १२७ ॥ पाण्डु भूपति सब राजाओं को सम्मानी उस बार । दी पहरावना विविध भाँति स शोभा हुई अपार हा ॥ स्त० १२८ ॥ बहुत दिनों तक महोत्सव कीना, सब का दिल हर्षाया । दीची सीख सभी राजों को निज २ स्थान सिधाया हो ॥ स्त० १२९ ॥ हर्षित हुई कुन्ती तब रानी, वधू लागी परनार । पुत्रवती तू हाजे वधु यह आशिष दा सुखकार हो ॥ स्त १३० ॥ पाण्डव यशधारी, प्रगटे उपकारी, कुरुवश में ॥ टेर ॥ सुख विलसे अब पाण्डव मोद स कलि करें मनचाह । द्रुपद सुता रहे रग महल में मधु गया सिधाइ हो ॥ पां १३१ ॥ एक दिन कच्छल नामा नारद नभपथ होकर आया । श्रीकृष्ण पाण्डव दे आदर, सिंहासन बैठाया हो ॥ पां० १३२ ॥ जादूराय कहे ऋषिवर म सुनकर करा विचार । पाँचों पाण्डव वरी द्रौपदी एकन ही के लार हा ।पां० १३३॥ ऋषि सुना पांचों पाण्डव मे कहे सुना धर ध्यान । इसी कारण स मैं चल आया, वचन करो प्रमान हो ॥ पां० १३४ ॥ नारी कजे केई मूढ पनमा कलह मूल है नारी । परम वैर का कारण जग में शास्त्र कह हर वारी हो ॥पां०१३५॥ भरत खण्ड में नगर रत्नपुर, समृद्धिशाली जान । श्रीषेण राजा है न्यायी, तेजस्वी बलवान हो ।पां०१३६।अभिनन्दा और शिखिनन्दा यों दो नृपके पटरानी । इन्दुषेण विदुषेण हुई सुत, शशि रवि सम लासानी हो।पां० १३७ पढ़ लिखके होशियार हुए फिर, यौवन वय को पाया । सुन्दर राजकुमारियाँ साथे दोनों को परणाया हा ॥ पां० १३८ ॥ अनंगसन वेश्या रहे वहां पर सौन्दर्यवय में तरुणी । हाव भाव कर नवयुवकों क मन को आकर्षण करणी हा ॥ पां० १३९ ॥ आसक्त हुए दोनों सुत नृप क उस गणिका क मांई । एक हुनी और दा आनवत भाखा राड मचाई हो ॥ पां० १४० ॥ दोनों कुंवर को पास बुलाया बात भूप जब जानी । हे पुत्रों ! मत अधम वेश्या हित फेरो बात पर पानी हो ।।पां० १४१॥ स्वार्थवश यह अनक पुरुष से, करती है प्रसग । तुम कुलीन का योग्य नहीं है फिरना वेश्या सग हा ॥पां १४२॥ मना करा नृप का नहीं माना, दोनों युद्ध किया ठाम । नृप रानी दुःखमय अहर ला, तत्क्षण छाडे प्रान हो ॥ पां० १४३ ॥ दोनों भ्राता युद्ध कर मर गये

ऋषि ने यो समझाया। एक स्त्री के योग जीव, पांचो ने प्राण गमाया हो ॥ पां० १४४ ॥ चाहे स्नेही सगा भ्रात हो, एक रमा
आसक्त। परिणाम इसी का मृत्यु जानो, तासे वनो विरक्त हो ॥ पा० १४५ ॥ कुल मोटा है कुरु भूप का, रखे कलक लग जाय।
इस कारण वत्स ! एक वात कहू, जो आवे तुम दाय हो ॥ पा० १४६ ॥ पच दिन ऋषि नियत करी, वारा दीना वांध । द्वादश
वर्ष वन भोगवे, जो दे नियम विराध हो ॥ पा० १४७ ॥ जिस दिन वारा हो जाने का, वही वहा पर पाय । अन्य नहीं उस
दिन वहा जावे, द्रौपदी के घर माय हो ॥ पा० १४८ ॥ जो मर्यादा भग करे गर, पाचो मे से एक । वह वारह वर्ष वनवास
भोगवे, इसमे मीन न मेक हो ॥ पा० १४९ ॥ पाचो भ्रात मजूर करी, तव, ऋषि स्वस्थान सिधाया। श्रीकृष्ण भी गये द्वारिका,
रहे सुख मे पाडुराया हो ॥ पा० १५० ॥ कालान्तर मे पचाली ने, क्रमशः सुत पच जाया। हुआ प्रसिद्ध पचाला नाम से, दिन
दिन वृद्धि पाया हो ॥ पां० १५१ । दोहा —प्रण ग्रहण करना सहल है, कठिन लगाना पार। पतित वने प्रण तोड के, ताको
लाख धिकार ॥ १५२ ॥ प्रण रक्खे तो पुण्य वढ़े, हुआ भील का भूप। गज मस्तक मोती मिले, उज्ज्वल वडे अनूप ॥ १५३ ॥
अर्जुन उपकारी, पाली प्रतिज्ञा पूर्ण प्रेम से ॥ टेक ॥ एक दिन द्रोणाचार्य सामने, जुडी सभा प्रसग। करी प्रतिज्ञा अर्जुन ने, और
बोला देखी ढग हो ॥ अ० १५४ ॥ जो कोई तस्कर हस्तिनापुर से, गऊ चुरा ले जाय। तो मैं प्रहार करी चोरो से, तत्क्षण
लाऊँ छुडाय हो ॥ अ० १५५ ॥ जहा तक गउए हाथ लगे नही, चोर नही पकडू जाय। वहा तक अन्नपानी नही लूंगा, ली
प्रतिज्ञा ठाय हो ॥ अ० १५६ ॥ एक दिन गैया चोर हरण करी, अर्जुन करे विचार । धनुष्य वाण रह गया तहां पर, खास
द्रौपदी द्वार हो ॥ अ० १५७ ॥ धनुष्य वाण लेने के ताई द्रौपदी के घर मांय। वारा युधिष्ठिर का था उस दिन, तो भी आया
धाय हो ॥ अ० १५८ ॥ ले हथियार वहा से लौटा, हो सशस्त्र उस वार। पीछा किया चोरो का जाकर, मारा तीर ललकार हो
॥ अ० १५९ ॥ चोरो से गउएँ छुडवा कर, करी जय जिस वार। ले गउओ को पीछे लौटे, लोग करे जयकार हो ॥ अ० १६० ॥

नगरपोल क बाहर ठहर कर तुरत दूत पठाया। मात पिता पे आय कहो यों, तुम सुत न कहलाया हो ॥ म १६१ ॥ ऋषि वचन उलंघा मैंने लोपा बारा आन। बारह वर्ष वनवास रहूँगा प्रायश्चित इसका मान हो ॥ म० १६२ ॥ पांडु नृप माता कुन्ती सुन आवे स परिवार। जहां अर्जुन बैठा वट की छाया, खास नगर क बाहर हो ॥ म० १६३ ॥ हाथ गही अर्जुन से बोल कर नाना विलाप। मात पिता ने भाव विलखता कहां सिधावो आप हो ॥ म० १६४। गऊ-रक्षा हित मनुष्य किया सो नहीं दूषण तुम भाई। उपकार किया प्रजा पर भारी तव स्वार्थ कुछ नाहं हो ॥ म० १६५ ॥ हे पुत्र ! कोई राजकुवर हो ज्ञानगुण उद्योत। स चारित्र वन बीच जाय वो यह कुल की रीत हो ॥ म० १६६ ॥ पर इस तरह स वन जान की बात न मुख पर लाओ। शूर वीर गुणधीर खास तुम हमें छोड़ मत जावो हो ॥ म० १६७॥ कहे युधिष्ठिर भीम प्रेम स सुन वल्लभ मुझ भ्रात। वरी जुदाई सही न जाय मत कहो वन की बात हो ॥ म १६८ ॥ हितकारी वच मात पिता का, जो कोई कर वयाप। कारज सिद्ध ना होय कसी का, करता पश्चाताप हो ॥ म० १६९ ॥ इतनी सुन अर्जुन कहे भ्राता ! सत्य कहो तुम सारी। पर ऋषि समक्ष लीना प्रतिज्ञा टलती नहीं इस बारी हो ॥ म १७० ॥ मैं जाऊं वनवास रहु नहीं, मत कोई करो मनाइ। प्रसन्न होय आज्ञा दो मुझ को सुनो कुटुम्ब चित लाई हो ॥ म० १७१ ॥ दे आज्ञा सब की चल दीना विलम्ब न करा लगार। मंगलीक तिलक किया कुटुम्ब न पहुँचावे उस पार हो ॥ म० १७२ ॥ सहचरा हो कह द्रौपदी सुन वल्लभ भरतार। मात तात भ्रात सब तुम को, मना करें हरबार हो ॥ म० १७३ ॥ ह वालम्भर ! नित्य प्रति हम को याद आपकी आसी। तुम्ह विलास का त्याग करी क्यों बनो आप वनवासी हो ॥ म० १७४ ॥ वर्ष बराबर दिवस बनेगा, पल सो पहर समान। तुम बिन प्राण पाहुना होसी नहीं रुपसी अब पास हो ॥ म० ७५ ॥ यहां आहार सरस है हाजिर मधादि जो चाव। वहां वनफल केवल खाय क कैसे दिवस बितावे हो ॥ म० १७६ ॥ शीतल वायु सुहावनी यहां पर, शिर पर छत्र धराय। रवि तेज से उष्ण भूमि पर,

चरण कोन विधि ठावे हो ॥ अ० १७७ ॥ गद्गद् स्वरसे बोली उसके, हृदय दुख नहीं मांय । नयनाश्रु ने लिया रोक कही, अमगल होजाय हो ॥ अ० १७८ ॥ करी अर्ज अन्त मे ऐसी, वेगा राज पधारे। भले भले सज्जन मिलने पर, हमे न नाथ बिसारें हो ॥ अ० १७६ ॥ मिली प्रेम से धनुष्य बाण ले, एकाकी बन धाया । सज्जन परजन पहुचा उनको, लौट शहर मे आ-या हो ॥ अ७ १८० ॥ आया विपिन में एक सरोवर,करी स्नान उस वार । जाप जपी नवकार मन्त्र का, फल का कीना आहार हो ।अ०१८१। मध्याह्न समय लख के अर्जुन,सोये तरु की छाया। थोड़ी देर में चला उठ जहां,नहीं मनुष्य का जाया हो अ०१८२ है कौन्तेय अति धैर्यवान्, और साहसिक शिरमौर । नदी नाला पहाड़ उलघते, ऊच नीच सब ठौर हो ॥ अ० १८३ ॥ हिसक जीवों का वास जहां, सिंह व्याघ्र और शूर । सामर, रोज, कपि, भालु, मृग, त्रण-आहारी भरपूर हो ॥ अ० १८४ ॥ विशाल गिरि आया पुनः पथ में, ऊँचा शिखर शुभस्थान । चढ़ के अर्जुन देखे वहा एक, बैठा मुनि धर ध्यान हो ॥ अ० १८५ ॥ बधी मुखपती मुखके ऊपर, रजोहरण है पास । लब्धी धारी उग्रविहारी, हरे जग की त्रास हो ॥ अ० १८६ ॥ दे प्रदक्षिणा तीन मुनी को, वदे शीश नमाई । भव जल तारक जहाज समा हो, सब जीवां सुखदाई हो ॥ अ० १८७ ॥ भाग्योदय से विकट स्थान में, दर्शन आपका पाया । सेवा भक्ति करी प्रेम से, आगे कदम उठाया हो ॥ अ० १८८ ॥ देखा आगे एक पुरुप को, मरने को तय्यार । तस नारी दुखियारी रोके, माने नहीं लगार हो ॥ अ० १८६ ॥ अर्जुन कहे उसी पुरुप से, मत कर आतम घात । दुख मिटाऊ तेरा सारा, कहे बीतक तब बात हो ॥ अ० १६० ॥ वह पूछे क्या नाम आपका, है कौनसा बश ? कुरु-वशी मैं पांडव सुत हूं, अर्जुन इन्द्र का अश हो ॥ अ० १६१ ॥ इतना सुन कहे धन्य उपकारी, जाऊ थारी बलिहारी । बात कहू कृपा कर सुनजो, हो जग बल्लभकारी हो । अ० १६२ ॥ दक्षिण श्रेणी वैताढ्यगिरिपर, वसे रतनपुर ग्राम । चन्द्रावतसक राजाके रानी, कनकसुन्दरी नाम हो ॥ अ० १६३ ॥ तास पुत्र मैं मणिचूड हूं, वहिन प्रभावती जान । व्याही है मागध भूप को,

नगरपास के बाहर ठहर कर तुरत दूत पठाया। मात पिता पे जाय कहो यों, तुम सुत न कहलाया हो ॥ म० १६१ ॥ यद्यपि वचन उलंघा मैंने लोपा थारा आन। बारह वर्ष वनवास रहूँगा, प्रायश्चित इसका मान हो ॥ म० १६२ ॥ पांडु नृप माता कुन्ती सुन आये स परिवार। जहां अर्जुन बैठा तरु की छाया, खास नगर के बहार हो ॥ म० १६३ ॥ हाथ माही अर्जुन म वाल कर नाना विलाप। मात पिता न छोड़ बिलखता कहां सिधाया आप हो ॥ म० १६४ । गऊ-रक्षा हित मनुष्य किया सो नहीं दूषण तुझ माहि। उपकार किया प्रजा पर भारी तब स्वार्थ कुछ नाहि हो ॥ म० १६५ ॥ हे पुत्र! कोई राजकुंवर हो ज्ञानयुत उपाल। से चारित्र वन बीच जाय वो यह कुल की रीत हो ॥ म० १६६ ॥ पर इस तरह स वन जान की बात न मुख पर लाओ। शूर वीर गुणधीर लाल तुम हमें छोड़ मत जाओ हो ॥ म० १६७ ॥ कहे युधिष्ठिर भीम मम म सुन वल्लभ मुझ भ्रात। तजी जुदाई सही न जाय मत कहो वन की बात हो ॥ म० १६८ ॥ हितकारी वच मात पिता का जो कोई कर उथाप। कारज सिद्ध ना होय उसी का करता पश्चाताप हो ॥ म० १६९ ॥ इतनी सुन अर्जुन कहे भ्राता! सत्य कहा तुम मारी। पर यद्यपि समझो लीना प्रतिज्ञा टलती नहीं इस बारी हो ॥ म० १७० ॥ मैं जाऊं वनवास रहूं नहीं मत कोई करो मनाई। प्रसन्न होय आज्ञा दो मुझ को सुनो कुटुम्ब चित लाई हो ॥ म० १७१ ॥ ले आज्ञा सब की पग दीना विलम्ब न करा लगार। मगलाक तिलक किया कुटुम्ब न पहुँचावे बस बार हो ॥ म० १७२ ॥ दुःखभरा हो कहे द्रौपदी सुन वल्लभ भरतार। मात तात भ्रात सब तुम का, मना करें हरबार हो ॥ म० १७३ ॥ हे प्राणप्यार! नित्य प्रति हम को याद आपकी आसी। सुख विलास का त्याग करी क्यों बनो आप वनवासी हो ॥ म० १७४ ॥ वर्ष बराबर दिवस बनेगा, पल वा पहर समान। तुम बिन प्राण पाहुना होसी नहीं रहसी अब प्राण हो ॥ म० १७५ ॥ यहां आहार सरस है हाजिर मधादि जो चाव। वहां वनफल केवल खाय क कैसे दिवस बिताबे हो ॥ म० १७६ ॥ शीतल वायु सुहावनी यहां पर, शिर पर छत्र धराय। रवि तेज से उष्ण भूमि पर,

चरण कौन विधि ठावे हो ॥ अ० १७७ ॥ गद्‌गद् स्वरसे बोली उसके, हृदय दुख नही मांय । नयनाश्रु ने लिया रोक कहीं, अमगल होजाय हो ॥ अ० १७८ ॥ करी अर्ज अन्त मे ऐसी, वेगा राज पधारे । भले भले सज्जन मिलने पर, हमे न नाथ बिसारें हो ॥ अ० १७६ ॥ मिली प्रेम से धनुष्य बाण ले, एकाकी वन धाया । सज्जन परजन पहुचा उनको, लौट शहर मे आया हो ॥ अ७ १८० ॥ आया विपिन में एक सरोवर, करी स्नान उस वार । जाप जपी नवकार मन्त्र का, फल का कीना आहार हो ।अ०१८१। मध्याह्न समय लख के अर्जुन, सोये तरु की छाया । थोड़ी देर मे चला उठ जहा, नहीं मनुष्य का जाया हो अ०१८२ है कौन्तेय अति धैर्यवान्, और साहसिक शिरमौर । नदी नाला पहाड उलघते, ऊच नीच सब ठौर हो ॥ अ० १८३ ॥ हिसक जीवों का वास जहा, सिंह व्याघ्र और शूर । सामर, रोज, कपि, भालु, मृग, त्रण-आहारी भरपूर हो ॥ अ० १८४ ॥ विशाल गिरि आया पुन. पथ में, ऊँचा शिखर शुभस्थान । चढ के अर्जुन देखे वहा एक, बैठा मुनि धर ध्यान हो ॥ अ० १८५ ॥ बधी मुखपती मुखके ऊपर, रजोहरण है पास । लब्धी धारी उग्रविहारी, हरे जग की त्रास हो ॥ अ० १८६ ॥ दे प्रदक्षिणा तीन मुनी को, वदे शीश नमाई । भव जल तारक जहाज समा हो, सब जीवा सुखदाई हो ॥ अ० १८७ ॥ भाग्योदय से विकट स्थान में, दर्शन आपका पाया । सेवा भक्ति करी प्रेम से, आगे कदम उठाया हो ॥ अ० १८८ ॥ देखा आगे एक पुरुष को, मरने को तय्यार । तस नारी दुखियारी रोके, माने नहीं लगार हो ॥ अ० १८६ ॥ अर्जुन कहे उसी पुरुष से, मत कर आतम घात । दुख मिटाऊ तेरा सारा, कहे बीतक तव बात हो ॥ अ० १६० ॥ वह पूछे क्या नाम आपका, है कौनसा वश ? कुरुवशी मैं पाडव सुत हू, अर्जुन इन्द्र का अश हो ॥ अ० १६१ ॥ इतना सुन कहे धन्य उपकारी, जाऊ थारी बलिहारी । बात कहू कृपा कर सुनजो, हो जग वल्लभकारी हो । अ० १६२ ॥ दक्षिण श्रेणी वैताढ्यगिरिपर, वसे रतनपुर ग्राम । चन्द्रावतसक राजाके रानी, कनकसुन्दरी नाम हो ॥ अ० १६३ ॥ तास पुत्र मैं मणिचूड हू, बहिन प्रभावती जान । ब्याही है मागध भूप को,

कर मोटे भजान हो ॥ म १९८ ॥ पञ्चामना है मेरे महिला, इन्द्रानी अनिहार । कुल क्रम जो विद्या पिता ने सिखलाई पर प्यार हो ॥ म० १९५ ॥ उसत तुमको विद्या साधन हित, पर कोइ कम सवाग । मात पिता परलोक सिधाया विद्या साधन नहीं याग हो ॥ म० १९६ ॥ सामन्त मन्त्री मिली मेरे को, राजगादी बिठलाया । कालान्तर में भावी ने यह कष्टा रंग दिखाया हो ॥ म १९७ ॥ गोत्री भ्रात विद्याधर था मम, नामे विद्युत् वेग । ले लश्कर पापी चढ़ आया, सबल मचाई तेग हो ॥ म० १९८ ॥ राज भ्रष्ट कर दिया उसीने मैं भागा इस ठौर । भाई नार कुलिधारी संग में इव मिले आप जग मौर हो ॥ म० १९९ ॥ अस जीवन अपयश मरन है ऐसी दिल में ठान । इसी लिये मरना चाहता हूं, करूं साफ बयान हो ॥ म० ॥ २०० ॥ इतनी सुन के अर्जुन बाला मत कर चिन्ता भाई । करूं प्रीत मैं तेरे साथ में, कुछ मिथ्री क नाई हो ॥ म० २०१ ॥ विद्युद्वेग का दल गादी से तुमको करूं भूपाल । अमृत वचन का श्रवण करीने, मणिचूड़ हुआ खुशाल हो ॥ म० २०२ ॥ एक बात में कहूं हितकारी सुन अर्जुन महाराज । खेचर की विद्या के सामने भूचर आवे भाज हो ॥ म २०३ ॥ विद्या मेरे पास अवश्य है कुल क्रम के अनुसार । सीखो साधो युक्ति से फिर करे शत्रु संहार हो ॥ म० २ ४ ॥ प्रसन्न होय अर्जुन जब बोले द विद्या मुझ वार । तब वो विद्याधर दी विद्या, पूर्ण प्रेम आनाइ हो ॥ म २०५ ॥ निज नारी को पीहर पहुंचाई आप सबल विलयाय । दूजी शुक दिन चन्द्रबल और करी गुरु को याद हो ॥ म० २०६ ॥ एकान्त गुफा में पद्मासन कर, दृष्टि नासाग्र टिकाई । करे सिद्ध विद्या को अर्जुन ज्यों योगी ध्यान लगाइ हो ॥ म० २०७ ॥ पांच सात दिवस जाने पर व्यन्तर कइ प्रगटाया । ध्यान छुड़ाने के कारण फिर नाना रूप बनाया हो ॥ म० २०८ ॥ कइ मृतक के पट को चीरी, मांस खाते दिखावे । नर मुंड की माला बना अर्जुन के गले पहनावे हो ॥ म० २०९ ॥ कूदें नाचें धूम मचावें डरावने दांत दिखावें । कर हाथी का रूप शुंडा से फिर उसमें दिखावें हो ॥ म० २१० ॥ अजगर बनके बींट कोई

सिंह वनी डकरावे। विषधर वनी फुकार करे, विच्छू वन डंक लगावे हो ॥ अ० २११ ॥ वना रूप कुन्ती माता का, सन्मुख आय दिखावे। द्रौपदी का ला खींचे तव फिर, विलखी रुदन मचावे हो ॥ अ० २१२ ॥ ऐसा चरित्र वना अर्जुन को, देव भय उप-जावे। तो भी ध्यान से नहीं डिगे, वह निश्चल मन रहावे हो ॥अ० २१३॥ इसी तरह से छ मास तक, साधी विद्या चितलाई। सहायक साधक वना मणिचूड, लिया श्रम हर्षाई हो ॥ अ० २१४ ॥ प्रज्ञप्ती प्रमुख विद्या की, अधि देवी प्रगटाय। दे दर्शन कहे माग पुरुष तू, जो तेरे मनचाय हो ॥ अ० २१५ ॥ जव-जव समरू माता आपने, पूर्ण करजो आस। मणिचूड का काज सुधारो, मेटो इसकी त्रास हो ॥ अ० २१६ ॥ यों कही अर्जुन नमन किया, फिर देवी दे विश्राम। दे वरदान प्रज्ञप्ती तदनु, अन्तर्ध्यान हुई खास हो ॥ अ० २१७ ॥ मणिचूड भी विद्या साधी, सिद्ध हुई उसके आन। अव दोनों बैठे गिरि शिखर पर, रख इष्ट को ध्यान हो ॥ अ० २१८ ॥ उसी समय नभ पथ में उतरे, आकर दोय विमान। स्वर्ण घूघरू छमछम करते, सूरज तेज समान हो ॥ अ० २१९ ॥ कई विद्याधर प्रगट होय ने, नमन करी हर्षावे। अर्जुन अरु मणिचूड ने, तत्क्षण स्नान करावे हो ॥ अ० २२० ॥ चन्दन चर्चमाला पहिनावे, नाना भूषण सजावे। शिर पर छत्र चवर वीजते, नाटक कर दिखावे हो ॥ अ० ॥ २२१ ॥ नजर सामने उसी वक्त फिर, तुरत विमान के माँई। प्रगटी रानी चन्द्रानना, सौम्य वदन सुखदाई हो ॥ अ० २२२ ॥ वायुयान में शीघ्र बैठने, अर्जुन और मणिचूड गिरि वैताढ्य के सन्मुख चाले, ख्याल वाक्य का पूर हो ॥ अ० २२३ ॥ विद्याधर कहे देखो वन्धु, अर्जुन का उपकार। सब बोले धन धन है इसको, उत्तम कुल आचार हो ॥ अ० २२४ ॥ शीघ्र आय रत्नापुर ठहरे, देखी शीतल छाया। फिर वैरी विशुद्वेग पा, अपना दूत पठाया हो ॥ अ० ॥ २२५ ॥ दूत आय राजा पै तत्क्षण, सारी वात सुनाई। भाले की नोक में पत्र झेलाकर, खडा सामने आई हो ॥ अ० ॥ २२६ ॥ अर्जुन पाण्डव है मुझ पक्ष पे, उनने यों कहलाया। भ्राता मेरा मणिचूड का, क्यों थे राज्य छुड़ाया हो ॥ अ० २२७ ॥

ओ तू अपना जीना चाहे तो तू तज दे राज। नहीं माने तो कर संग्राम धारी, तुरत मिटाऊं लाज हो ॥ अ० २२८ ॥ वचन सुनी दूत का राजा चिगुद्दग को पाया। भाई मौत अर्जुन की मिलकर सोता सिंह जगायो हो ॥ अ० २२९ ॥ मम धनुष्य बाण आमिषत् अर्जुन ईंधन जान। आप करी सेना सजवाई धमका सामने आन हो ॥ अ० २३० ॥ निज स्वामी स सारी बात कह कही दूत ने आय। अर्जुन कहे जैसी हानी हो वैसी निकसे दाय हो ॥ अ० २३१ ॥ मणिपूर के ससुरे ने भयी फौज यहां तमाम। उभय सैन्य क मांहो मांही हुआ घार संग्राम हो ॥ अ० २३२ ॥ लगा तीर अर्जुन क हाथ से चिगुदेश के आय। लेई सैन्य वह पसा भागा, श्वान क्यों दुम दबाय हो ॥ अ० २३३ ॥ मणिपूर मार अर्जुन ने अब रत्नापुर शृंगारा। सामन्त सहित फिर गजारूढ हो शहर माय सिधारा हो ॥ अ० २३४ ॥ कर महोत्सव फिर मणिपूर को, दिया तख्त बैठाई। की प्रतिज्ञा अर्जुन ने वह दीनी पार लगाई हो ॥ अ० २३५ ॥ राज्य पिता का मणिपूर पा हृदय बहुत हर्षाया। रहे मोद स अर्जुन यहां पर प्रेम रंग बर्षाया हो ॥ अ० २३६ ॥ यहां से फिर देशाटन करना, अर्जुन के मन भाया। तब मणिपूर विद्याधर नृपने, सुन्दर यान सजाया हो ॥ अ० २३७ ॥ अर्जुन चला गगन में संग है विद्याधर परिवार। आय एक गिरिके ऊपर जहां ज्ञानी थे अणगार हो ॥ अ० २३८ ॥ कर प्रणाम पचांग नमा कर बैठे सन्मुख आय। मुनिराज धर्मोपदेश दे, तीर्थ चार बताय हो ॥ अ० २३९ ॥ प्रथम तीर्थ है मुनि राज का, दूजा साध्वी जान। तीजा तीर्थ अनुव्रती का है, चौथा श्राविका मान हो ॥ अ० २४० ॥ चार तीर्थ की करे जो भक्ति, आवागमन मिटजाय। उत्कृष्ट जो फल पावे तो तीर्थंकर-पद पाय हो ॥ अ० २४१ ॥ या विधि भ्रमत बारह वर्ष बीत घर आने उम्हाया। पर उसी विपिन में कोलाहल यहां शब्द सुनाई पाया हो ॥ अ० २४२ ॥ खेचर नाम खेचर का भजा खबर लन के काज। चौकस कर आ कह तुरत वह सुन अर्जुन महाराज हो ॥ अ० २४३ ॥ स्थान हिरण्यपुर नामा है एक, यहां मागध दरबार ॥ पटरानी प्रभावती जिनके सोती शयन मंझार हो ॥ अ० २४४ ॥ हरण करी

रानी को कोई, जिसकी मची पुकार । जागी भूप तलवार ग्रही ने, पकडा उसका लार हो ॥ अ० २४५ ॥ पीछा पकडा बहुत दूर
तक, पर न आई वह हाथ । क्रोध करी सैना लेकर, चढ़ चाल्यो नरनाथ हो ॥ अ० २४६ ॥ गूथे फूल शिर पर से रानी, पथ मे
डालती जाय । उसके खोज से राजा चल कर, आयो इस बन मांय हो ॥ अ० २४७ ॥ खोज चला नहीं आगे उसका, किससे
करे पुकार । खबर पाय ने अर्जुन तत्क्षण, मन में करे विचार हो ॥ अ० २४८ ॥ मणिचूड का यह बहनोई, मागद नृप प्रधान ।
प्रभावती है भगनी उसकी, हरण करी कोई आन हो ॥अ० २४९॥ उसकी बहिन सो मेरी है अब, करी यत्न उसे लाना । मनुष्य
का कर्त्तव्य श्रेष्ठ है, पर के दुख मिटाना हो ॥ अ० २५० ॥ केशर के साथ अर्जुन कहलाया, चिंता तज दे भूप । शिक्षा करी शत्रु
की नार ला, दूगा तुमको सूप हो ॥ अ० २५१ ॥ तब केशर मागद पा आकर, अर्जुन की बात सुनाई । दे आश्वासन धैर्य बधा
कर, शीघ्र विद्याधर आई हो ॥ अ० २५२ ॥ प्रभावती ने हरण करी शत्रु, जिण दिशि मे धायो । बैठ विमान मे अर्जुन भी, उसी
दिशा सिधायो हो ॥ अ० २५३ ॥ इतने मे एक पुरुष आय कर, मागद से बात सुनाई । प्रभावती रानी इस वन मे चूटे फूल
हर्पाई हो ॥ अ० २५४ ॥ इत आय भूप रानी ने देखी, उत अहि दशा आय । प्राणनाथ प्रियतम यो बोली, पड़ी भूमि पर जाय
हो ॥ अ० २५५ ॥ देख व्यवस्था राजा ने भी, धरण पछाडा खाया । शीतोपचार कर सामन्त मत्री, पीछा होश मे लाया हो
॥ अ० २५६ ॥ ऐसा रुदन करा राजा ने, सब का दिल दहलाया । नारी वियोग में राजा दुखी हो, चिता जलाने धाया हो ॥अ०
२५७॥ सामन्त मत्री दासी दोस्त मिल, राजा ने समझावे । मगर मोहवश माने नहीं वह, जरा ध्यान नहीं लावे हो ॥अ०२५८॥
ले रानी को हाथ बीच मे, बैठा चिता में आई । सामन्तादिक सग मरण हित, जुदी चिता बनाई हो ॥ अ० २५९ ॥ अग्नि रक्खी
चिता बीच जब, धूँआ गगन में छाया । उसी समय बैठी विमान मे, अर्जुन प्रभावती लाया हो ॥ अ० २६० ॥ धूम्र योग से
हुआ अँधेरा, अग्नि का बीच उजारा । मागद को जलता देखी, अर्जुन ने उसे उबारा हो ॥ अ० २६१ ॥ इस उपकारी अर्जुन भ्रात

न, कष्ट स मुझे छुड़ाया। फिर वा छत्रेम मार विद्या स मागा प्राण बचाया हा ॥ भ० २६२ ॥ भजुन का यह तब गुण कर चकित हुये सब राया। ऊँचे सिंहासन उन्हें बिठा कर, उपकारी गुण गाया हो ॥ भ २६३ ॥ कृपा कर मसलामो इकीकत पूछें सब उस बार। तब केसार विद्याधर सब कुछ, बात कहे विस्तार हो ॥ भ० २६४ ॥ वैडूर्यपुर का मघनाद नृप, प्रभावती को लेय। हेमकूट गिरि इन्द्र उद्यान में, रखी भपनी भपने तेय हो ॥ भ० २६५ ॥ फिर वह नित्यप्रति यों कहता, बनो मरी पटरानी। इन्द्र इन्द्रानीवत् सुख विलसो इस मतलब से मानी हो ॥ भ २६६ ॥ गगन गामिनी विद्या सिखलाऊँ, जिसस मिले बहु मान। तेरा पति वा मरे सामने हैगा कीट समान हो ॥ भ० २६७ ॥ आशा ग्याय प्रभावती भाखी सुन पापी एकचीत। परनारी परधन के ऊपर क्यों बिगाड़े नीत हो ॥ भ० २६८ ॥ क्यों मुख से तू धूर निकाले मैं चाहूं तुझ नाथ। कभी सिंहनी घास न खाय जो कंचन हो आय हो ॥ भ २६९ ॥ कहाँ अमृत कहाँ जहर हलाहल कहाँ रत्न पाषान। कहा मुझ पति कहाँ तू व्यभिचारी कहाँ सा जग हो ॥ भ २७० ॥ मुझ पति लावग द्वीप क माई क्यों तू मरे पतंग ? परनारी के काज जगत म हुआ बहुत ॥ भ० २७१ ॥ इसने हाक धाक ये करते बैठे भाय विमान। शीघ्र पास क भाय भजुन, विद्या में बलवान हो ॥ भ० २७२ ॥ भजुन का उस पापी अधम से कीना काज भकाज। यह भगिनी है मणिचूड़ की धर्म बहन मुझ भाज हा ॥ भ० २७४ ॥ यह सती शिरोमणि प्रभावती है, मार इसे इस बार। नहीं ता इसी छुरय से पापी पड़सी थारे मार हो ॥ भ० २७५ ॥ कहे प्रभावती सुन विद्याधर किया खूब मनभाया। निर्मल कुल में कलंक लगाकर अपयश भति कमाया हा ॥ भ० २७६॥ यह भ्रात है भर्जुन धर्म का, मम सहायक बन भाया। महारथी योद्धा रण बांका कुंती रानी जाया हो ॥ भ० २७७ ॥ सपने में भी परपुरुष पर, बिगड़ी न हो मम नीत। सा मुझ शील प्रभाव करी न हा भजुन की जीत हो ॥ भ० २७८ ॥

वचन सुनी धनञ्जय हर्षा, कहे विद्याधर ताईं । अरे दुर्मति हो जा तैयार तू, मजा दिखावे आई हो ॥ अ, २७६ ॥ शस्त्र ले विद्याधर भी फिर, युद्ध परस्पर ठाया । पाण्डव मारा प्रहार उसी पर, पडा भूमि मूर्च्छाया हो ॥ अ० २८० ॥ दयावन्त अर्जुन उस वेला, कर शीतल उपचार । हो सचेत कहे विद्याधर यों, मानी तुम से हार हो ॥ अ० २८१ ॥ तीन लोक में पाण्डव सदृश, नहीं योधा सुन पाया । बिना विचारे मैंने आपसे, वृथा युद्ध मचाया हो ॥ अ० २८२ ॥ दुर्व्यसन ले मुझको रोका, पडता नर्क बचाया । शील रत्न को धारा मैंने, तुम गुण जा नहीं गाय हो ॥ अ० २८३ ॥ नत मस्तक हो प्रभावती को, अपनी वहिन बनाई । विद्याधर का दृश्य देख कर, पाण्डव रहा हर्षाई हो ॥ अ० २८४ ॥ चिप्र वंचिनी विद्या भेजी थी, मागद मारन काज । तुरत जायने उन्हें बचाया, रक्खी तिनकी लाज हो ॥ अ० २८५ ॥ मेघनाद निज स्थान सिधाया, अर्जुन ले तुम नारी । बैठी विमान तुम यासे आयो, प्रत्यक्ष पर उपकारी हो ॥ अ० २८६ ॥ कैशर ऐसा मागद को जब, सारा चरित्र सुनाया । कृत्रिम नारी प्रभावती भागी, पाण्डव महत्व दर्शाया हो ॥ अ २८७ ॥ केशर मुख से श्रवण करी जब, पाण्डव की प्रशंसा । मागद खुश हो बोला फिरतो, धन्य धन्य यह कुरुवंशश हो ॥ अ०२८८॥ मागद ने अर्जुन को लेकर, रानी और परिवार । नगर हिरण्यपुर आया चलकर, खुशी छाई उस वार हो ॥ अ० २८६ ॥ सिंहासन बिठा पांडव को, नृप ने अर्ज गुजारी । यह राज्य सब ग्रहण करो मैं सेवा करू तुम्हारी हो ॥ अ० २६० ॥ और भेंट क्या करू आप के, हो उपकारी महान् । अर्जुन ने स्वीकार करा नहीं, निर्लोभी गुणवान हो ॥ अ० २६१ ॥ मणिचूड यह खबर पायकर, शीघ्र गया वह आई । मिला धनञ्जय से प्रसन्न हो, और भगनी से भाई हो ॥ अ० २६२ ॥ बहन मुखसे सुन हाल सब, अर्जुन कृत उपकार । रहे मोद से कितने दिन वहां, स्नेह बडा ससार हो ॥ अ० २६३ ॥ करे परस्पर बात एक दिन, इतने आ द्वारपाल । बोला हस्तिनापुर से पाण्डु का, आया अनुचर चाल हो ॥ अ० २६४ ॥ तुरत बुला पूछा उस नर से, करी नम्र प्रणाम ।

पत्र सामने रखकर उनसे करी अर्ज सुन स्वाम हो ॥ २९५ ॥ पांडु नृप अब वृद्ध भये तुम मिलने हेतु बुलाया। सदा याद करे कुंती और भ्रात मिलन उम्हाया हो ॥ अ० २९६ ॥ इस कारण तुम चलो शीघ्र ही, मतना विलम्ब लगाओ। नित्य प्रति याद करें आपको आकर प्रेम बढ़ाओ हो ॥ अ० २९७ ॥ सुनकर अर्जुन बोला तुरत ही, यदि है ऐसी इच्छा। सारठ दश का होकर आऊं यों कहि भेजा पिच्छा हो ॥ अ० २९८ ॥ मणिचूड़ को लेई संग में चले बैठ विमान। आये द्वारिका तब हरिने कीना स्वागत मान हो ॥ २९९ ॥ बांह पसार दोउ भ्रात मिले फिर, पूछी कुशल अरु क्षेम। शामिल बैठ जिमाया मोदक घरी चौगुणा प्रेम हो ॥ अ० ३०० ॥ बहिन सुभद्रा श्रीकृष्ण की अर्जुन को परणाई। कनक, गजत मणि माणक आदि दिया दहेज के माँई हो ॥ अ० ३०१ ॥ कुछ दिन वहां रहकर कीना चलने का विचार। कृष्ण पहुंचाने को चल आये, बहिन को दस वार हा ॥ अ० ३ २ ॥ बैठी यान म चले नभ म, करते हाश्यत कल। ग्राम नगर शहर देखते नाना गिरि वन बेल हो ॥ अ० ३ ३ ॥ कई किस्म के बाजे बाजें करते जय जयकार। हस्तिनापुर क बाग बीच में ठहर आ दस वार हा ॥ अ० ३०४ ॥ पिता, पितामह भ्रात सज्जन सुनत सामने आया। अम्बो अम्ब देखी ने सब के हृदय हर्ष नहीं माया हो ॥ अ० ३०५ ॥ पाण्डु राय के पद प्रणमी फिर मिले भ्रात धर प्यार। गांगेय आदि के चरण नमन कर, यों मिले सकल परिवार हो ॥ अ० ३०६ ॥ कलश बधावें मिली सुहागन भर अक्षत की थाल। घर घर तोरण स्तंभ रोपिया बांधी वन्दनवाल हो ॥ अ० ३०७ ॥ आई शहर के बीच सवारी, बाजा के झनकार। घर घर हर्ष बधावा होवे घर २ मंगलाचार हो ॥ अ० ३०८ ॥ कोई प्रशंसे पितु मात न दे अर्जुन धन्यवाद। पितु मात वश को प्रशंसे, यों सुनता कीर्ति नाद हो ॥ अ ३०९ ॥ आय महल माता पग लागे, सुभद्रा नमें चरनार। दे आशिष बहु को सासू चलो फूला सुखकार हो ॥ अ० ३१ ॥ द्रौपदी से मिलें प्रेम धर पूछी कुशल की बात। गज–रक्षक अर्जुन पास आया पुरजन

सव गुण गान हो ॥ अ० ३११ ॥ मागद और मणिचूड का, करी खूब सत्कार । प्रेम धरीने विदा किये वे, गये निज नगर सिधार हो ॥ अ० ३१२ ॥ पाण्डव यशधारी प्रगटे, उपकारी कुरुवश में ॥ टेर ॥ एक दिन पाण्डुराय सभा मे, ऐसी बात सुनाई। विषय-भोग तज चारित्र धारूँ, दूँ राज युधिष्टिर तांई हो ॥ पा० ३१३ ॥ गांग्रेय विदुर कहा खूब सांची, कुरु-वश का आचार। धर्म-आराधन का चौथापन, अच्छा करा विचार हो ॥ पा० ३१४ ॥ धर्म-पुत्र को राज देन हित, अब पाण्डु महाराज। सकल सामग्री करी इकट्ठी, बुला कुटुम्ब समाज हो ॥ पां० ३१५ ॥ ऊँचे तोरण लगा द्वार के, सजवाया घरवार। स्थम्भ स्थम्भ पर रचना कीनी, देवलोक अनुसार हो ॥ पा० ३१६ ॥ तम्बु तणाया चारों ओर फिर, राजा बुलाया सारा। गावे बजावें मगल सब मिल, दे दान मान सत्कारा हो ॥ पां० ३१७ ॥ गांगेयादिक ने दिल मे धारी, कारीगर बुलवाया। अद्भुत रचाया स्नान को मडप, देखी सभी लुभाया हो ॥ पां० ३१८ ॥ रत्न कनक का भद्र पीठ एक, ताके बीच बनाय। ता ऊपर आभूप युधिष्ठिर, वैठेस्वयं वहा आय हो ॥ पां० ३१९ ॥ रजत कनक के कुम्भ भूप ने, गगा जल से भराया। स्नान करावे धर्म पुत्र को, बाजे नौबत सरनाया हो ॥ पां० ३२० ॥ पाडुराय अभिपेक करीने, पहनावे फूल माल। वस्त्राभरण सजा वपु पर, तिलक करा फिर भाल हो ॥ पां० ३२१ ॥ मस्तक मुकुट कान युग कुंडल, गले अमोलक हार। शीश पै छत्र चॅवर दोविजै, शोभे इन्द्र उनिहार हो ॥ पां० ३२२ ॥ पाण्डु प्रमुख नमन करीने, बोले जय जयकार। आवे भेटणा गावे मगल, मिली सुहागन नार हो। पां० ३२३ ॥ दे दान याचक को राजा, दीनो का दुख मिटाया। राजा धर्म-पुत्र हुआ सुनकर, शत्रु-हृदय कपाया हो ॥ पां० ३२४ ॥ बैठ सभा में राजा युधिष्ठिर, भ्रातों के हित काज। दिया आपने दुर्योधन को, इन्द्रप्रस्थ का राज हो ॥ पा० ३२५ ॥ दुर्योधन के जो अनुज थे, उनका भी आदर कीना। भूप युधिष्ठिर ने फिर उनको, प्रान्त राज दे दीना हो ॥ पां० ३२६ ॥ परिपद नृप को अपना करके, निज निज स्थान सिधाय। पुरुषोत्तम भी आप द्वारिका, तत्क्षण पहुँचे आय हो ॥ पा० ३२७ ॥ मात पिता युत

दुर्योधन न इन्द्रप्रस्थ किया वास। द्रोणाचार्य विदुर गांगेयजी रहे युधिष्ठिर पास हो ॥ पां० ३२८ ॥ राय युधिष्ठिर ने पाण्डु स, करी गय नरमाई। दीक्षित दान स वचित रक्षकर, ठहराये घर माइ हो ॥ पां० ३२९ ॥ एक दिन भूप युधिष्ठिर से मिल, गुप्त सलाह मिलाइ। देश साधने की ली आज्ञा विराट सैन्य सजाई हो ॥ पां० ३३० ॥ चला भीम ले सैन्य पूर्व में अग बग कलिंग। पांचाल डाहल आदि देश को साधे जीती जग हो ॥ पां० ३३१ ॥ आकर भूप पड़े पांवों में ले स भेंट रसाल। रोपा गगा सागर के तट पर जय स्तम्भ विशाल हा ॥ पां० ३३२ ॥ दक्षिण देश महाराष्ट्र कर्नाटक द्राविड़ वसाट विलग। देशाधिप का पांव लगाया ल रत्न गज तुरंग हो ॥ पां० ३३३ ॥ नदी ताम्र सागर सगम तट शुभ मुहुर्त के मांय। जय स्तम्भ को गाड़ा वहां पर पुण्य-भाल पहिनाय हो ॥ पां० ३३४ ॥ नकुल चला पश्चिम दिशि मांइ सारठ न गुजरात। कई मनाइ भूपा को नमाइ, ली भेंट बहु ख्यात हो ॥ पां ३३५ ॥ नदी सरस्वती सागर सगम, देखो सुन्दर स्थान। जय विजय का स्तम्भ वहां पर गाड़ा आपन मान हो ॥ पां० ३३६ ॥ सहदेव उत्तर दिशि साधी अपना तेज दिखाइ। कंबोज मालव देश के नृप को, दिये पांव लगाई हा ॥ पां० ३३७ ॥ मणि माणक की भेंट लेयकर चारों जय कर आया। राय युधिष्ठिर के चरणन लागी जय का नाद सुनाया हा ॥ पां० ३३८ ॥ करें सब युधिष्ठिर नृप की चारों भाव विकास। मानों जैसे सुधम इन्द्र की सेव करें दिग्पाल हो ॥ पां० ३३९ ॥ वनचारी आराम मनोहर करें केलि मन चाही। नाटक का मणकार पद चोर रहे मोद के माही हो ॥ पां० ३४० ॥ सुभद्रा रानी जब जन्मा पुत्र एक प्रति रूप। नाम धरा अभिमन्यु उसका, दिया युधिष्ठिर भूप हो ॥ पां० ३४१ ॥ पुत्र जन्म की खुशी के मांहे महोत्सव राय मनाया। अनुचर भज सभी राजों को उत्सव बीच बुलाया हो ॥ पां० ३४२ ॥ नकुल गया हरि लेन द्वारिका दुर्योधन को सहदेव। अमूल्य भेंट ले सब नृप आये, सपरिवार स्वमव हा ॥ पां ३४३ ॥ अर्जुन का मित्र मणिचूड़ है, जिस कारण उस वार। सभा सुधर्मी सदृश इसने, सभा बनाई सार हा ॥ पां० ३४४ ॥ मणिरत्न के स्तम्भ

मनोहर, नील मणि का चौक। स्फटिक रत्न भी जडे हुवे हैं, देख प्रसन्न हो लोक हो ॥ पां० ३४५ ॥ कहीं चन्द्र उदय हो जैसा,
कहीं रवि प्रगटाया। जल स्थल भींत द्वार उलट, लख, सब जन विस्मय पाया हो ॥ पा०३४६ ॥ नाना तरह की रत्न पुतलिया,
नाना किस्म के काम। नाना भाति की करी कोरणी, नाना तरह चित्राम हो ॥ पां० ३४७ ॥ फटिक सिहासन ता बीच बनाया,
वहा बैठे पाण्डव राय। कृतकृत्य हो ऐसी रचना, रची खेचर चित लाय हो ॥ पा० ३४८ ॥ आये बुलाने से हरि हलधर, और
दशो दसार। द्रुपद प्रमुख वड़े राजवी, शूरवीर सरदार हो ॥ पा० ३४९ ॥ ऊँचे आसन बैठे सभा मे, राजा राजकुमार। रूप
प्रतिरूप अपना अवलोकी, हर्षित हुवे अपार हो ॥ पां० ३५० ॥ इतने दुर्योधन भी चल आया, उसी सभा के मांय। जादव
पाण्डव की जगमग ज्योति, देख गया मुर्भाय हो ॥ पां० ३५१ ॥ इस महोत्सव मे राय पाडव ने, खर्चा द्रव्य अपार। सज्जन
सम्बन्धी और राजवी, पोपा सब परिवार हो ॥ पा० ३५२ ॥ अष्ट दिवस का महोत्सव कीना, नाटक हुवे केई भांत। प्रेम
वढ़ नृपो मे परस्पर, खुशी लावें दिन रात हो ॥ पा० ३५३ ॥ विदा किये सब राजा ताईं, पहुँचे निज निज ग्राम। समुद्र
विजय हरि हलधर आदि, गये द्वारिका ठाम हो ॥ पा० ३५४ ॥ भ्रात होन के कारण पाण्डव ने, दुर्योधन के ताईं।
अधिक ठहराये उनको वहा पर, विशेप प्रेम जनाई हो ॥ पां० ३५५ ॥ पाण्डव की यो देख उन्नति, दुर्योधन दिल दाजे।
मन मलीन मीठा मुख ऊपर, हृदय कपट विराजे हो ॥ पां० ३५६ ॥ दुर्योधन जब जन्म लिया तब, कही निमित्तिये बात।
यह कुल नाशक आगे होगा, सो सुन सभी वृत्तान्त हो ॥ पा० ३५७ ॥ एक समय मणिचूड रचित, सभा देखन के काज।
दुर्योधन फिर चला उमग से, सग मे सारी समाज हो ॥ पां० ३५८ ॥ करते ही प्रवेश लखा जब, नील मणि का चौक।
जल द्रह जान उठाया वस्त्र, खडे हसे सब लोक हो ॥ पां० ३५९ ॥ देख जल स्थान को थल गिरा वहा, दुर्योधन उस माईं।
हसा भीम पर दिये युधिष्ठिर, दूजे वस्त्र पहनाई हो ॥ पा० ३६० ॥ सम भूमि जान गड्ढे मे गिरा फिर, भीत से गया

भपकार। भजुन हसा तब दुर्योधन क, क्रोध गया दिल छाई हो ॥ पां० ३६१ ॥ आन दीवाल को दर्वाजा फिर, टक्कर उससे खाई। दुर्योधन कहे मरा पॉ सुन हंसी नकुल को आई हो ॥ पां० ३६२ ॥ द्वार को दीवाल जान के आप रुका जब पांही। कहे द्रौपदी भध का अन्धा, देखो दिखता नांहि हो ॥ पां० ३६३ ॥ तब तो मुँह माड़ कर दखे, कहने वाली यह कौन। जाना द्रौपदी बोल रही है मानों भाव पर लौन हो ॥ पां० ३६४ ॥ मूल कलह की जग में हांसा रोग मूल है खासी। विगोवे चोर ने दखो भासी, करो काम विमासी हो ॥ पां० ३६५ ॥ सभा दखकर पीछे लौटा, होकर अधिक उदास। पाण्डव पूर्व चिन्ता कौनसी करो भाव प्रकास हो ॥ पां० ३६६ ॥ हंसी मजाक करना औरों की मुझ ठीक नहीं भाया। दुर्योधन कह हंसी उड़ाइ जिससे क्रोध हो आया हो ॥ पां० ३६७ ॥ धर्मपुत्र कह रमत गमत में भाव क्रोध नहीं कीज। ऐसी छोटी बातों पर तुम कभी लक्ष नहीं दीज हो ॥ पां० ३६८ ॥ विदा हुआ दुर्योधन यहां से, दूर न हुआ अहंकार। इन्द्रप्रस्थ पुर चलकर आया, मामा स कर विचार हो ॥ पां० ३६९ ॥ ये पाण्डव नहीं भ्रात हमारे हैं दुश्मन अति क्रूर। अद्भुत सभा बना हुसार, हसी करी भरपूर हो ॥ पां० ३७० ॥ पूव पुण्य इनके प्रगटाया सब राजा यहां आया। देख विभूति उनकी मरा, दिल बहुत दुख पाया हो ॥ पां० ३७१ ॥ फिर दुर्योधन कह इशारा हो शकुनि मामा सुन लीजे। इनका पतुष सकू नहीं हरगिज हो कोई बात कह दीजे हो ॥ पां० ३७२ ॥ करक सबल सहायक कोई इनका सदॅ मान। नहीं तो मरना श्रेष्ठ जगत में, जीना ही अपमान हो ॥ पां० ३७३ ॥ तब शकुनि कहे धृतराष्ट्र-सुत, बात भली यह नाय। भाइ भाइयों से बढ़ती शोभा, माई हुआ कहलाय हो ॥ पां० ३७४ ॥ जिस तरह छाया गज उभा रहे सुख पाम दिन रात। उसी तरह का गर भजे तो शाभा नहीं तिलमात हो ॥ पां० ३७५ ॥ ऐसी कुमति मत रखो भाणजा मना करा हर बार। जब उसके मन में नहीं आया पुन बोला उस बार हो ॥ पां० ३७६ ॥ तुम रात भ्राता और सब में क्यों भूप मिल सारा। पाण्डववत् पृथ्वी ने

साधे, धारो मत्र हमारा हो ॥ पां० ३७७ ॥ पृथ्वी पाण्डव साध चुके हैं, फेर साधी नहीं जाय । दुर्योधन को शकुनि का यह, मत्र नहीं सुहाय हो ॥ पा० ३७८ ॥ देव जीत सके नहीं मामा, इन पाण्डव के तांय । तो मानव है कौन गिनत में, कीजे और उपाय हो ॥ पा० ३७९ ॥ मत बनो जुवारी, राजा पाण्डव में हुआ ख्वार है ॥ टेक ॥ इन पाण्डव को जुए रमाकर, अपने वश में करसां । कार्य सफल तब ही तो होगा, मत्र रहस यह धरमां हो ॥ ३८० ॥ इत्यादिक विचार करीने, मामा और भाणेज । आये इन्द्रप्रस्थ पुर चलकर, लाये मुख पर तेज हो ॥ म० ३८१ ॥ आडम्बर युत पुर में आये, नमे पिता के पांय । उदास देख पुत्रों को बोला, धृतराष्ट्र उन ताय हो ॥ ३८२ ॥ हे पुत्रो ! हस्तिनापुर मांडे, क्या हुआ कोई अपमान ? जिस कारण मन-मालिन दीखो, कहो बात सब आन हो ॥ ३८३ ॥ नहीं लोप कोई आन तुम्हारी, सेव सब राजान । अलकापुरीवत् इन्द्रप्रस्थ है, भोगो राज प्रधान हो ॥ म० ३८४ ॥ अन्त पुर बहु सुन्दर तुमरे, अप्सरा के अनुहार । कनक रजत मणि मुक्ता करके, भरे पडे भंडार हो ॥ म० ३८५ ॥ सुन्दर देश उपज घनेरी, गज रथ बहु तुम्हार । देव-भवन से महल तुम्हारे, सामग्री सुखकार हो ॥ म० ३८६ ॥ सौ भ्रात की जोड सबल है, छेड सके नहीं कोय । फिर चिन्ता का काम कौनसा बतलादे सुत मोय हो ॥ म० ३८७ ॥ दुर्योधन कहे सुनो तात मैं, पाण्डव ऋद्धि निहारी । राई पहाड जितना अन्तर है कहूँ आज विचारी हो ॥ म० ३८८ ॥ रवि उदय होते ही पिताजी, दीप ज्योति छिप जावे । इसी प्रकार पाण्डव के आगे, फीकी ऋद्धि दिखावे हो ॥ म० ३८९ युधिष्ठिर को नमे राजा, मणि मुकुट के धारी । देख उन्नति पाण्डव की यह, होत न सहन लगारी हो ॥ म० ३९० ॥ धृतराष्ट्र को सहन हुआ नहीं, वह बोला उस बार । रे दुष्ट पुत्र ! तेरे विचार को, बारम्बार धिक्कार हो ॥ म० ३९१ ॥ प्रमुदित होना दूर रहा कहो, लख उन्नति निज भ्रात । पर संतप्त होते यह तुमको, बडी शर्म की बात हो । म० ३ २ ॥ पिता वचन सुन दुष्ट दुर्योधन, मन में तो सकुचाया । पर निज ईर्ष्या-पोषन कारन, युक्ति वाक्य सुनाया हो ॥ म०

३९३ ॥ हे पितु ! पाण्डव भ्रात स मुझ को द्वेष नहीं तिल मात । सभा बीच में हँसी करी मेरी मामा से सुनो बात हो ॥ म० ३९४ ॥ तब शकुनि न हँसी आदि की सारी बात सुनाई । धृतराष्ट्र एक दम फिर, पड़ा विचार के माई हो ॥ म० ३९५ ॥ बोला उठा दुर्योधन द्यू में द्रौपदी मुख भ्रात सारी । नहीं तो अग्नि प्रवेश करूँगा, प्रतिज्ञा लीजो भारी हो ॥ म० ३९६ ॥ धृतराष्ट्र कहे काम करो यह, मन में सोच विचार । लौकिक में उपहास नहीं हो शोभा करे ससार हो ॥ म० ३९७ ॥ भ्रात सग में वैर पसाना नहीं कुशल का काम । नहीं पार पड़ यह बेटा ! सुनो बात तमाम हो ॥ म० ३९८ ॥ लख योद्धा पाण्डव कहलावें, लख वीर को मार । जो करें सामना उनका उनसे फिर, पहुँचावें यम द्वार हो ॥ म० ३९९ ॥ धृतराष्ट्र के वचन सुन कर, शकुनि बोला मन लाइ । पाण्डव लक्ष्मी लेन उपाय मैं, आनूँ हूँ बतलाई हो ॥ म० ४०० ॥ नहीं युद्ध नहीं काम शस्त्र का नहीं कुशल अप-मान । द्यूत-कला सार पासा में हूँ प्रवीन लो जान हो ॥ म० ४०१ ॥ युधिष्ठिर है आसक्त इसीसे, खेलें उनसे खल । सर्वस्व लेवें जीत उन्हों का, करें उनका फैल हो ॥ म० ४०२ ॥ तब बोला दुर्योधन मामा सुन्दर बात सुनाई । जो पिता स्वीकार करें तो, हो सारी मन चाह हो ॥ म० ४०३ ॥ मैं हूँ विदुर का आज्ञावर्ती, पूछूँ उनके ताईं । फिर उत्तर दूँगा निश्चित मैं, सोच समझ मन लाई हो ॥ म० ४०४ ॥ तब दुर्योधन प्राण तजे तव विदुर मरु तुम तात । रीजो मोह में राज सँभारी जो नहीं मानों बात हो ॥ म० ४०५ ॥ धृतराष्ट्र सुन सुत के सर रख हाथ कहे जिस बार । समय पाय उपाय करूंगा, नक धैर्य तो धार हो ॥म० ४०६॥ तात वचन पर दुर्योधन के समता हृदय समाई । मामा भाणेज सोचें छिता छिव बैठ एकान्त में आई हो ॥ म० ४ ७ ॥ जो चाहता है बुरा और का वही उसका फल पाय । बाय पेड़ बबूल का कोई आम्र कौन विधि खावे हो ॥ म ४०८ हर मनुष्य के हृदय मन्दर सुमति कुमति का स्थान । सुमति संपति का कारण है कुमति विपदा की खान हो ॥ म० ४०९ ॥ गोत्रीजन पर रखलो ईर्ष्या कुलांगार कहलाय । इसी अधम कृत्य से भारत, कैसा दुख उठावे हो ॥ म० ४१० बुरी सगत दुर्योधन न मामा

शकुनि की पाई । व्यसन द्यूत रमने की युक्ति, उसने खूब बताई हो ॥ म० ४११ ॥ जब दुर्योधन कहे तात से मतना विदुर बुलावे बनी बनाई बात उलट दे, यो पितु को समझावें हो ॥ म० ४१२ ॥ राय युधिष्ठिर के मणिचूडने, जैसी सभा बनाई । वैसी सभा लो यहाँ सूत्रधार बुलाई हो ॥ म० ४१३ सूत्रधार को तुरन्त बुलाकर, शुभ मुहूर्त्त के माई । कनक मणि की भींत नीलम अरु, पन्ना की अगणाई हो ॥ म० ४१४ ॥ मुक्ता से स्थमो को जड़े जहाँ , जग मग शोभा छाई । दुर्योधन, शकुनि सब जन, देखत रहे लुभाई हो ॥ म० ४१५ ॥ इतने मे विदुर राय भी आयो, धृतराष्ट्र मिला हर्षाई । भोजन भक्ति करी फेर निज, सुत की वात सुनाई हो ॥ म० ४१६ ॥ दें उपालम्भ दुर्योधन को, क्यों थें जाल रचाई । रुष्ट हुआ दैव तुझ ऊपर. कुल मे आग सुलगाई हो ॥ म० ४१७ ॥ तुरत कलह कोई पैदा करसी, कुल के कलक लगाय । मुझको ऐसा भास रहा है, होगा अनर्थ कोई आय हो ॥म० ४१८॥ विदुर सीख दी दुर्योधन को, कमी न रक्खी कोय । भावी को नहीं कबूल है यह, किस विधि माने सोय हो ॥ म० ४१९ ॥ विदुर कहे सुन धृतराष्ट्र तुम, करी मना सुत ताईं । द्यूत न खेले जो नर वह तो, रहे सदा सुख माँई हो ॥म० ४२०॥ वह कहे नहीं माने यह मेरी, ऐसी पकड़ी टेक । तब तो विदुर दुर्योधन को फिर, सुझावे कर विवेक हो ॥ ४२१ ॥ जूवा से धन कुल कीर्ति अरु, प्रीति मित्रता जावे । दुर्मति निर्लज्ज नीच कहावे, देश विदश भ्रमावे हो ॥ म० ४२२ ॥ नल राजा दमयन्ती हारी, कैसी हुई ख्वारी । देखो वंश को बुरा दिखाया, बात जगत मे जहारी हो ॥ म० ४२३ ॥ राज जीत लो तो भी पाण्डव, नहीं निकाले जाय । रे वत्सल तुम खूब समझलो, सुमति हृदय बसाय हो ॥ म० ४२४ ॥ विदुर-नीति दुर्योधन के हुई, अहि-दुग्ध के न्याय । वारियो रहे नहीं हार्‍यो रहावे, पीछे ही पछताय हो ॥ म० ४२५ ॥ धृतराष्ट्र ने दुर्योधन को, समझाया कई बार । पर पापी ने जरा न माना, क्रोधित हुआ अपार हो ॥ म० ४२६ ॥ दुर्योधन नहीं समझा तब तो, विदुर गया निज स्थान । कहना सुनना बेकार समझा, मध्यस्थता लीनी ठान हो ॥ म०

४२० ॥ तब दुर्योधन ने भेजा है, जयद्रथ को समझाय। हस्तिनापुर को जल्दी जाओ, जहाँ युधिष्ठिर राय हो ॥म० ४२८॥
यह सदृश आकर कहना इन्द्रप्रस्थपुर मांई। ऐसी दिव्य सभा बनाई, मृत्युलोक में नाई हो ॥ म० ४२९ ॥
देखन हित उस शीघ्र पधारो कृपा करी एक बार। ज्येष्ठ बन्धु हो आप हमारे कुल में हो आधार हो ॥ म० ४३० ॥
अब जयद्रथ हस्तिनापुर आया पाण्डव नृप के पास। विनम्र होय सदेशा सुनाया की सब बात प्रकाश हो ॥ म० ४३१ ॥
करी वीनती कपट धरी ने बोली मिष्ट जबान। सरल हृदयी युधिष्ठिर ने सोची लीनी मान हो ॥ म० ४३२ ॥
तब पाँचों पाण्डव सपरिक, इन्द्रप्रस्थ सिधाया। दुर्योधन निज शहर शृंगारी शाम्र सामन आया हो ॥ म०४३३ ॥ भीष्म द्रोण
पाण्डव को लेकर, राज महल में आया। भोजन सबको जिमा प्रेम से शिष्टाचार बताया हो ॥ म० ४३४ ॥ सभा देखन का
चले समीजन प्रसन्न हुवे निहार। कहीं नाचे कहीं नाटक होवें कहीं पर चौपड़ सार हो ॥ म० ४३५ ॥ रहे मास स पाण्डव
यहाँ पर निज कुटुम्ब के साथ। मगर कपट का भेद न पाया युधिष्ठिर नरनाथ हो ॥ म० ४३६ ॥ भ्रात युधिष्ठिर अपन खेलें
चौपड़ पासा सार। यह समय मिला है अच्छा आप करो स्वीकार हो ॥ म ४३७ ॥ अच्छी बात कही दुर्योधन पासा सार
मँगाओ दर्शकों को आमंत्रण दे दो बाजी जुगत रचाओ हो ॥ म० ४३८ ॥ हार जीत का खेलें जूआ, जिसस होगा नाम। तब
युधिष्ठिर ध्यान देकर देखें खेल तमाम हो ॥ म० ४३९ ॥ प्रथम दाव पर रक्खी सोपारी फिर मुद्रिका असवार। माला कण्ठी
कड़ा अनोड़ गया युधिष्ठिर हार हो ॥ म० ४४ ॥ दुर्योधन ने सार पासे को सचिव सब कर दीना। भूप युधिष्ठिर इसी बात पर
ध्यान तक नहीं कीना हो ॥ म० ४४१ ॥ शकुनिराय ने दुर्योधन का, ऐसी कला सिखाई। जिसस हाथ में आई सफाई द्यूत-कला
क मांई हो ॥ म० ४४२ ॥ स्वयं दुर्योधन खल स्वभावी शकुनि मिला गया और। मानों बाकण चढ़ी अरस पर चले न किस
का जोर हो ॥ म० ४४३ ॥ राय युधिष्ठिर द्यूत खेल में मगन भयो दिन रात। खाना पीना राग रंग यह सभी गया विसरात हो

॥ म० ४४४ हार रहा है तौ भी राजा खेले बारम्बार । यह जग-प्रसिद्ध बात है भाई, जूवा मीठी हार हो ॥ म० ४४५ ॥ प्रथम हारा आभरण सारा, फिर हारा भण्डार हाथी, घोड़ा, ऊँट, रथ सब, राज महल परिवार हो ॥ म० ४४६ ॥ देख हारता युधिष्ठिर को बोला भीम अकुलाई । क्यों होते हो ख्वार आप यों, कुबुद्धि क्या छाई हो ॥ म० ४४७॥ जूवा छोडो मानो युधिष्ठिर, भीष्म कहे हर बार । हे सद्गुण-भण्डार द्यूत से, डुबोगे मजधार हो ॥ म० ४४८ ॥ मतिमान भी जो तुम सरीखे, डूबें द्यूत के माईं । तो औरों को कहे कौन विध, सोचो ध्यान लगाई हो ॥ म० ४४९ ॥ जो अँधेरा रवि से प्रगटे करे कौन उद्योत । शीतल उसको कौन कहेगा, चन्द से अग्नि होत हो ॥ म० ४५० ॥ किसने ऐसा व्यसन सिखाया. तुम पूरे विद्वान । विष अमृत दोनों इक पातर मे, देखा सुना नहीं कान हो ॥ म० ४५१ स्वय आप सयाने सब मे, तुम्हे सीख क्या दीजे । स्वघर हानि जगत में हाँसी साँची कर लख लीजे हो ॥ म० ४५२ ॥ है अयोग्य बात यह तुमको, द्यूत से करना प्रीत । दत्त पुरुष के विनाश काल में, उपजे बुद्धि विपरीत हो ॥ म० ४५३ ॥ करा मना गागये जोश खा, तौ भी रहा न चुप । राज ऋद्धि लक्ष्मी जब हारी, करा रूप कुरूप हो ॥ म० ४५४ ॥ ज्यों धर्मराय हारता जावे, कर्ण खुशी मनावे । दुर्योधन से कर समस्या, वचन-बद्ध बनावे हो ॥ म० ४५५ ॥ जो राज को हारे द्यूत में, जीते के तावे माईं । बारह वर्ष तक रहे कर्ण कहे, सब जन के मन भाई हो ॥ म० ४५६ ॥ ऐसा दाव धर जूआ खेला, गया भूप फिर हार । दूजी बाजी मे भीमादिक भी, बन्धु हारे चार हो ॥ म० ४५७ ॥ दासपणे दुर्योधन के घर, करसी काज और काम । तीजे दाव मे खुद को हारा, चौथे नार अभि-राम हो ॥ म० ४५८ ॥ खड़े खड़े सब लोग पुकारें, मचा कोलाहल भारी । कैसी अयोग्य बात बनी यह, कही न जाय लगारी हो ॥ म० ४५९ ॥ युधिष्ठिर को कई नर निन्दे, कई दुर्योधन तांई । कोई होनहार बतलावे, कैसी वक्त या आई हो ॥ म० ४६० ॥ ऊँचा हाथ कर ऊँचा स्वर से, शकुनि बोला बैन । जीता दुर्योधन हारा युधिष्ठिर, सुनजो सारा सैन हो ॥ म० ४६१ ॥ चित्रित

४२० ॥ तब दुर्योधन ने भेजा है, जयद्रथ को समझाय । हस्तिनापुर को जल्दी आओ, जहां युधिष्ठिर राय हो ॥म० ४ ८॥
यह संदेशा जाकर कहना इन्द्रप्रस्थपुर माइ । ऐसी दिव्य सभा बनाई, मृत्युलोक में नाइ हो ॥ म० ४२९ ॥
देखन हित तुम शीघ्र पधारो, कृपा करी एक बार । ज्येष्ठ बन्धु हो आप हमारे कुल में हो आधार हो ॥ म० ४३० ॥
तब जयद्रथ हस्तिनापुर आया पाण्डव नृप के पास । विनम्र होय संदेश सुनाया जी मन पाव प्रकाश हो ॥ म० ४३१ ॥
करी बीनती कपट भरी ने बोली मिष्ट अघान । सरल हृदयी युधिष्ठिर ने सारी लीनी मान हो ॥ म० ४३२ ॥
तब पाँचों पाण्डव सपरिक, इन्द्रप्रस्थ सिधाया । दुर्योधन निज शहर शृंगारी शाम्र सामने आया हो ॥ म ४३३ ॥ भीष्म द्रोण
पाण्डव को लेकर राज महल में आया । भोजन सबको जिमा प्रेम से शिष्टाचार बताया हो ॥ म० ४३४ ॥ सभा देखन का
चले समीजन प्रसन्न हुए निहार । कहीं नाचें कहीं नाटक होवें कहीं पर चौपड़ सार हो ॥ म० ४३५ ॥ रहे मोद में पाण्डव
यहां पर निज कुटुम्ब के साथ । मगर कपट का भेद न पाया युधिष्ठिर नरनाथ हो ॥ म० ४३६ ॥ भ्रात युधिष्ठिर आपन गमें
चौपड़ पासा सार । यह समय मिला है अच्छा आप करो स्वीकार हो ॥ म ४३७ ॥ अच्छी बात कही दुर्योधन पासा सार
... को आमंत्रण दे दो बाजी शुरु रचाओ हो ॥ म० ४३८ ॥ हार जीत का गर्ज जूआ जिसमें होगा नाम । तब
... दूर्गे सब तमाम हो ॥ म० ४३९ ॥ प्रथम दाव पर रखदी माफरी, फिर मुद्रिका उसवार । माला कण्ठी
... हो ॥ म० ४४० ॥ दुर्योधन ने सार पासे का मंत्रित सब कर दीना । भूप युधिष्ठिर इमी पात पर
॥ शकुनिराय ने दुर्योधन का, ऐसी कला सिखाइ । जिससे हाथ में आइ मनचाइ द्यूत-कला
... मायावी शकुनि मिल गया और । मानों डाकण चढ़ी जरख पर पासे ने किम
... भयो दिन रात । खाना पीना राग रंग सब, सभी गया विसरात हो

४७८ ॥ पुण्य अपना अब जोर भरे तो, कैसे हर ले चीर। इस कारण मत बोलो भाई, धरो ज़रा मन धीर हो ॥ म० ४७६ ॥ हुई अनाथ अबला इस विरिया, उल्टी चली समीर। थर थर थर थर कांप रही है, नयना बरसं नीर हो ॥ म० ४८० ॥ दुर्योधन ने दिखाई नारी को, डाबी जाघ उघाड। बैठो जघा पर आकर प्यारी, तज घूंघट की आड़ हो ॥ म० ४८१ ॥ क्रोध करीने लाल आख कर, बोली द्रौपदी वाय। रे पापी इस दुष्ट कृत्य से, क्यों न भस्म हो जाय हो ॥ म० ४८२ ॥ दुर्योधन कहे क्रोध करीने, छीनो इसके चीर। तुरत दुःशासन साडी पकडी, जाकर उसक तीर हो ॥ म० ४८३ ॥ पाण्डु सुत थे दीन दयालू, देखा यह अन्याय। हा खाकर इस विरिया माई, किसको देऊँ सुनाय हो ॥ म० ४८४ ॥ कौन पत राखे आज सभा मे, कोपा दुर्जन काल। आओ शीघ्र लज्जा मुझ रखन, शील तणा रखवाल हो ॥ म० ४८५ ॥ धर परमेष्ठी ध्यान हृदय मे, जा शासन शिरताज। पडी दुष्ट के पाले आकर, मुझे छुडाओ आज हो ॥ म० ४८६ ॥ पांच पति हैं शिर ऊपर मेरे, मदद करे नहीं कोय। महाबली हैं तौभी वे सब, बैठे नीचे जोय हो ॥ म० ४८७ ॥ हुआ कोलाहल शहर में भारी, क्या कीनी करतार। पाण्डव की पत्नि को देखो, लूटे सभा मझार हो ॥ म० ४८८ ॥ हे प्रभु मुझ को नग्न करें हैं, आज सभा के माई। मेरी हसी नहीं, हसी धर्म की, इसमें संदेह नाई हो ॥ म० ४८६ ॥ प्राण कण्ठ मे आन लगा है, क्यो प्रभु देरी लगाई। जो लज्जा नहीं रहे सभा मे, जीने में कौन भलाई हो ॥ म० ४६० ॥ दुख भजन जो नाम आपका, पल मे डूबा जाता। श्रीकृष्ण रक्षपाल कहावे, वह भी नजर नहीं आता हो ॥ म० ४६१ ॥ खींचा चीर सती के तन का, होय दु'शासन क्रूर। प्रच्छन्न आन के हो गये ठाडे, सानिध्यकारी शूर हो ॥ म० ४६२ ॥ प्रथम चीर लेने पर दूजा, चीर ढका तन पाया। ऐसे खींचते नाना भांति के, पचरग चीर दिखाया हो ॥ म० ४६३ ॥ पडा विचार में दुर्योधन अव, सभा चकित हुई सारी। या नारी है या सारी है, या सारी या नारी हो ॥ म० ४६४ ॥ क्या द्रौपदी जादूगरनी है, हमको

सभा हुई सब सुनके सज्जन जन मूर्च्छाया। धन गय मृत्यु सदरा पाण्डव दुर्योधन हरषाया हो ॥ म० ४६२ ॥ दुर्योधन ने पाण्डव आदि पर, सारा अधिकार जमाया। वस्त्राभरण सब छीन उन्होंके, जोग वसन पहनाया हो ॥ म० ४६३ ॥ फिर दुःशासन बोला थान कर, भ्राताओं के साथ। लाओ द्रौपदी इसी सभा में, जल्दी से तुम जाय हो ॥ म० ४६४ ॥ तब सो भाग मता से बोला, वेरा रूठा करतार। जिस कारण पाण्डव पांचों मुझे मिले भरतार हो ॥ म० ४६५ ॥ अब पुरुष भाग दुर्योधन की आप बनोगी रानी। पांचों पाण्डव से पिंड छुटा चलो सग तुम सयानी हो ॥ म० ४६६ ॥ यदि नहीं साथ चलेगा तू अब, ठुकरा वचन हमारा। चोटी पकड़ खेंच ले आऊँ ओर चले नहीं चारा हो ॥ म० ४६७ ॥ सती कहे देवर ! सुन ला थे कुल सुगन्धी कहो बात। कुल के विपरीत बात करें तो, रक्त होय उत्पात हो ॥ म० ४६८ ॥ जो जा दुष्ट दुःशासन शाणी शंक जरा नहीं राखी। पर सती ने सत्य नहीं मानी रही सामन आखी हो ॥ म० ४६९ ॥ हे देवर ! मैं रजस्वला हूँ एक ओढ़ने मात्र। इस कारण नहीं आऊँ सभा म, मानो बात हमारी हो ॥ म० ४७० ॥ द्रौपदी की कर्मों ने यह फिर, कैसी दशा बिगारी। चोटी पकड़ सभा में लाया, हाहाकार मचा है भारी हो ॥म० ४७१॥ सती कहे पापिष्ट करे क्या मैं तुम्ह मात अनुहार। क्यों पिंड भावना ऐसी करता, कुल तुम केरन कुठार हो ॥ म० ४७२ ॥ मेरा मुख किसने नहीं देखा लाया सभा में नीच। इसी दुष्कर्म से तुम गिरोगे सभी नर्क के बीच हो ॥ म० ४७३ ॥ सती द्रौपदी सभा बीच में करती रुदन अपार। जैसे सिंह हरिणी को पकड़, जोर न चले लगार हो ॥ म० ४७४ ॥ पांचों पाण्डव दृश्य लखाती, द्रौपदी की जिम चारी। लाजवश मुख ढाँक वस्त्र स, जोवें भूमि मँझारी हो ॥ म० ४७५ ॥ दुःखभरी यह देखी व्यवस्था, भीष्म जैसे राया। किया ढक वस्त्र से मुख को, मन में अति अकुलाया हो ॥ म० ४७६ ॥ दुर्योधन कहे हँसी करी मुझ, कहा अंधे का जाया। उसका बदला भोग आज तू, क्या होय पछताया हो ॥ म० ४७७ ॥ दुर्वचन सुने यही सामन, वेगे कूमी मार। भरया नेत्र हो गये भीम के रोका धर्मकुमार हो ॥ म०

धृतराष्ट्र का वचन मानकर को, भेजे विपिन मॅझार हो ॥ म० ५१२ ॥ जो मेरा कहना नहीं माने, तो तुझ करूँ विनाश । धृतराष्ट्र का वचन मानकर हुक्म दिया बनवास हो ॥ म० ५१३ ॥ भीष्मादिक गुरुजन के सन्मुख, बोला दुर्योधन वेण । यह पाण्डव है वैरी मेरा, कभी न जानूँ सेण हो ॥ म० ५१४ ॥ द्वादश वर्ष पूर्ण हो वहा तक, रहकर के वनवास । वर्ष तेरहवे प्रच्छन्न रहे जो, इच्छे राज्य की आस हो ॥ म० ५१५ ॥ यदि प्रकट हो कदाचित्, बारह वर्ष दुबारा । रहना होगा वनवास इन्हो को, क्योकि द्यूत मे हार हो ॥ म० ५१६ ॥ भीष्म विदुर द्रोणादि सबने, बात करी स्वीकार । वस्त्रादि पाण्डावो को दीना, और सभी हथीयार हो ॥ म० ५१७ ॥ दुर्योधन ने शर्त रक्खी जो, बिना उज्र ली मान । वचन निभाने के लिये सभी, सहन करा अपमान हो ॥ म० ५१८ ॥ लेई द्रौपदी पॉचो पाण्डव, घर को किया प्रस्थान । भीष्मजी उन्हे रथ बैठाये, वात्सल्य गुणमन ठान हो ॥ म० ५१६ ॥ देखो द्यूत में सर्वस्व हारा, ऋद्धि राज्य भण्डार । फिर रहने का बारह वर्ष वन, इसलिये बुरी जुगार हो ॥ म० ५२० ॥ ऐसी जानके मित्रों ! त्यागो, जग मे बुरी जुगार । इसी जूये ने युधिष्ठिर को, कैसा किया खुवार हो ॥ म० ५२१ ॥ हस्तिनापुर को शीघ्र आय कर, मिला सभी परिवार । पाचो भ्राता चले वहा से, विलम्ब न करा लगार हो ॥ म० ५२२ ॥ नाना भाति हथियार लिया है, गदा लीनी है हाथ । भीष्म धृतराष्ट्र सब मिल के, चले पहुँचाने साथ हो ॥ म० ५२३ ॥ मात पिता भी चले सग में, और नगर के लोक । नयनो से आसू गिरते है, सब के छाया शोक हो ॥ म० ५२४ ॥ सखी सहेली सभी मिल के, चली द्रौपदी संग । गद्गद् वाणी बोले मुख से, कैसा हुआ यह ढग हो ॥ म० ५२५ ॥ कहें सखी दुर्योधन पापी, राज्य लिया सब खोस । कोई होनहार बतलावे, कोई कर्म रही कोस हो ॥ म० ५२६ ॥ हस्थिनापुर को द्यूत ने खोया, भेजा विपिन मंझार । धन्य धन्य सती द्रौपदी रानी, चले पति के लार हो ॥म० ५२७॥ तेरह वर्ष पूर्ण कर आसी, फिर करसी यह राज । कुशलक्षेम वरतेगा इनका, बोले सारी समाज हो ॥ म० ५ ८ ॥ प्रत्येक जन से ऐसी बातां, सुनता पाण्डव राय । पुरवासी जन मिल बहु सख्यक,

भाग्य में हाल। मत्र कौनसा यह अपती है भक्त पारा नहीं पास हो ॥ म० ४६५॥ कितने चीर पहन के भारी देखो कपटन नारी। मद्दे दुर्योधन इसके तन स सार क्षमा उतारी हो॥ म० ४६६॥ एक शत भट्ट चीर बड़े हैं अनुपम चीर परम। शील प्रभाव सभा बीच में उसकी रक्खी शर्म हो॥ म० ४६७॥ सब जयकार करें देवता सत्य सती का जान। दुष्ट दुःशासन हुआ खिसाणा उतरा उनका मान हो॥ म० ४६८॥ देख व्यवस्था निज पत्नि की भीम को आया जोश। क्रोधावश हो खम्भ ठोक कर बोला कर आक्रोश हो॥ म ४६६॥ कौरव रावणों फिरे मटकती मन-मन मांय विलखती। वा मेरा है नाम भीमजी मेरी वचना शाकी हो॥ म० ५००॥ मारूँ दुर्योधन पापी को करू शत्रु सहार। भ्रात भाम ! मत बोलो जरा तुम नहीं समय इस बार हो॥ म ५०१॥ चोटी पकड़ कर लाये सभा में बिसर गये सब सुध। तास भुजा को जो नहीं मरोड़ूँ तो मैं लजाया दूध हो॥ म० ५०२॥ जांघ दिखाई जिसने वाकी भेदूँ द तलवार। सींचू भूमि तास रुधिर स छिन में कर दूँ स्वार हो॥ म० ५०३॥ भीष्मादि सब जनता सम्मुख, बोला यों ललकार। सदा हू प्रतिज्ञा एसी, कहे भीम उस बार हा॥ म ५०४॥ भीम शब्द सुन मची खलबली, सारी सभा मझार। कइ अधोशिर करके बैठ, क्यों रूठा करतार॥ म० ५०५॥ भीष्म विदुर कहे दुर्योधन से, कैसा नाम कमाया। कुरुवंश था कैसा निर्मल, लांछन दुष्ट लगाया हा॥ म० ५ ६॥ दृढा सती पतिव्रता की, अनहद करी ख्वारी। अरे अन्ध ! सुत कैसे तेरे, किया न काज विचारी हो॥ म० ५०७॥ द्रव्य अन्ध पिता है तर द्रव्य भाव सुत अन्ध। माता सम है तुम सब ही के, कैसे नार सम्बन्ध हो॥ म० ५०८॥ अय धृतराष्ट्र ! तेरे पुत्रों ने कैसा किया है भ्रम। भस्त दिनों में कुरु वंश का नहीं रहेगा नाम हो॥ म ५०६॥ जा तू मारे दुर्योधन को, कुल का मिटे जजाल। यह राज के योग्य नहीं है यह अवसर मत टाल हो॥ म० ५१०॥ जो यह तेरे शासन भावे तो तू कर एक काम। दे वनवास पाण्डव के तांई, पुन: करेंगे राज हो॥ म० ५११॥ धृतराष्ट्र ने दुर्योधन को, धिक्कारा बहु बार। नारी सुत पाँचों पाण्डव

को, भेजे विपिन मॅझार हो ॥ म० ५१२ ॥ जो मेरा कहना नहीं माने, तो तुझ करूँ विनाश । धृतराष्ट्र का वचन मानकर हुक्म दिया वनवास हो ॥ म० ५१३ ॥ भीष्मादिक गुरुजन के सन्मुख, बोला दुर्योधन बेण । यह पाण्डव है वैरी मेरा, कभी न जानूँ सेण हो ॥ म० ५१४ ॥ द्वादश वर्ष पूर्ण हो वहा तक, रहकर के बनवास । वर्ष तेरहवे प्रच्छन्न रहे जो, इच्छे राज्य की आस हो ॥ म० ५१५ ॥ यदि प्रकट हो कदाचित्, बारह वर्ष दुबारा । रहना होगा बनवास इन्हो को, क्योंकि द्यूत मे हार हो ॥ म० ५१६ ॥ भीष्म विदुर द्रोणादि सबने, बात करी स्वीकार । वस्त्रादि पाण्डावों को दीना, और सभी हथीयार हो ॥ म० ५१७ ॥ दुर्योधन ने शर्त रक्खी जो, बिना उज्र ली मान । वचन निभाने के लिये सभी, सहन करा अपमान हो ॥ म० ५१८ ॥ लेई द्रौपदी पॉचो पाण्डव, घर को किया प्रस्थान । भीष्मजी उन्हें रथ बैठाये, वात्सल्य गुणमन ठान हो ॥ म० ५१९ ॥ देखो द्यूत में सर्वस्व हारा, ऋद्धि राज्य भण्डार । फिर रहने का बारह वर्ष वन, इसालिये बुरी जुगार हो ॥ म० ५२० ॥ ऐसी जानके मित्रो ! त्यागो, जग में बुरी जुगार । इसी जूये ने युधिष्ठिर को, कैसा किया खुवार हो ॥ म० ५२१ ॥ हस्तिनापुर को शीघ्र आय कर, मिला सभी परिवार । पांचों भ्राता चले वहां से, विलम्ब न करा लगार हो ॥ म० ५२२ ॥ नाना भांति हथियार लिया है, गदा लीनी है हाथ । भीष्म धृतराष्ट्र सब मिल के, चले पहुँचाने साथ हो ॥ म० ५२३ ॥ मात पिता भी चले सग मे, और नगर के लोक । नयनो से आंसू गिरते हैं, सब के छाया शोक हो ॥ म० ५२४ ॥ सखी सहेली सभी मिल के, चली द्रौपदी सग । गद्‌गद् वाणी बोले मुख से, कैसा हुआ यह ढग हो ॥ म० ५२५ ॥ कहें सखी दुर्योधन पापी, राज्य लिया सब खोस । कोई होनहार बतलावे, कोई कर्म रही कोस हो ॥ म० ५२६ ॥ हस्थिनापुर को द्यूत ने खोया, भेजा विपिन मंझार । धन्य धन्य सती द्रौपदी रानी, चले पति के लार हो ॥म० ५२७॥ तेरह वर्ष पूर्ण कर आसी, फिर करसी यह राज । कुशलक्षेम वरतेगा इनका, बोले सारी समाज हो ॥ म० ५ ८ ॥ प्रत्येक जन से ऐसी बाता, सुनता पाण्डव राय । पुरवासी जन मिल बहु सख्यक,

क्यों पहुँचान आय हा ॥ म० ४२६ भयानक एक राक्षस आया नभ पथ स उस बार। काला रूप सा किरमिर नाम है, भीषण भय करनार हा ॥ म० ४३० ॥ पीले केश शिर पर बिखरें हैं चपल नयन रग पीत। अरुण मुख अरु लम्बा दाढ़ ज्यों, वक्र पवन विपरीत हो ॥ म० ४३१ ॥ सर्प समान यह राक्षस अपनी, जीभ बहार दिखावे। कटकट करे आपाग दांत स देखत ही डर आय हो ॥ म० ४३२ ॥ आ धमका पापी हत्यारा, करने को यह त्रास। हाथ छुरा यमदूत सा दीखे करता यह अट्टहास हो ॥ म० ४३३ ॥ भय पा तडफत बैठी द्रौपदी उसने भाव दरसाइ। तब तो दसी भीम एकदम बोला जोश में आई हो ॥ म० ४३४ ॥ रे अधम ! राक्षस पापी तू क्यों डरावे नार। इसका फल तू पावे अभी यों दीना गदा प्रहार हो ॥ म० ४३५ ॥ शिर फूटा और पड़ा भूमि पर मर गिरा नर्क मंझार। दुर्योधन का पक्ष क्षेत्र से हुआ बहुत सुधार हो ॥ म० ४३६ ॥ आदि ॐकार है जैसे बन में मंगलाचरण का स्थान। महाभारत यों दैत्य मृत्यु से, प्रारम्भ हुआ सो जान हो ॥ म ४३७ ॥ विजय पाय चले अब वहां से काम्यक बन में आया। कुछ दिन यहां निवास करी ने पथ का श्रम मिटाया हो ॥ म० ४३८ ॥ धर्मपुत्र का हुक्म पाय के, भोजन करा तैयार। अर्जुन ने विद्या बल से पोषा सब परिवार हो ॥ म० ४३९ ॥ या विधि दिन दिन विद्या के बल बन रसवती आई। स्वयं द्रौपदी सबको परुसे पंक्तिबद्ध बैठाइ हो ॥ म० ४४० ॥ द्रुपदराय की आज्ञा स पत्र धृष्टद्युम्न यहां आया। बहिन बहिनों स मिलकर के ऐसा वाक्य सुनाया हो ॥ म० ४४१ ॥ वनवास की बात सुनी तब मुझको दिया पठाई। आओ सबको अपने नगर में रहें सदा सुख मांई हो ॥ म० ४४२ ॥ वचन बद्ध स ये नहीं आवें तो लाओ द्रौपदी बाई। ये वनवास रहें यहां तक ये ठहरे पीहर के मांई हो ॥ म ४४३ ॥ कहे द्रौपदी निज भ्राता स, नहीं छोड़ूं पति संग। पांचों भाणज ने तुम ले जाओ घर कर खास उमंग हो ॥ म० ४४४ ॥ युधिष्ठिर को कह संग में, लिये पांच पचास। आकर वृत्तान्त सुनाया सारा द्रुपद को तत्काल हो ॥ म० ४४५ ॥ दूज दिन कोई अनुचर आया, ऐसा संदेशा लाया। भी

कृष्ण मिलने को आवे, सुनकर सभी हर्पाया हो ।।म० ५४६।। इतने सामकुमर हरि आये, गांगेय लिया वधाई । कर प्रणाम कुन्तीजी को हरि ने, आशिप ली सुखदाई हो ।। म० ५४७ ।। सानन्द से सब बैठ गये फिर, बोले कृष्ण मुरार । धर्मपुत्र ये गये हार सब, राज ऋद्धि भण्डार हो ।। म० ५४८ ।। मिल गये सिद्ध अरु साधक कपटी, शकुनि कर्ण ये दोई । कपटयुक्त दुर्योधन खेली, लूट लिया सब जोई हो ।।म० ५४६।। पास तुम्हारे जो मैं होता वे, कैसे जीत ले सार । वुध पास हो जब शशि के राहु नहीं ग्रहे लगार हो । म० ५५०।। अर्जुन भीम तो दुर्योधन को छिन मे मार गिरावें । मगर दृढ प्रतिज्ञ होन के कारण, सब ताईं अटकावे हो ।। म० ५५१।। सती द्रौपदी को दुख दीना, दुर्योधन ने भारी । वदला लूँगा उससे इसका, भूलूँ नहीं लगारी हो ।।म० ५५२।। धर्मराज कहे आपके आगे, होता सुरेन्द्र मात । दुर्योधन है कौन गिनत मे, कहता हूँ साक्षात हो ।।म० ५५३।। फिर लो देखो भीष्म दादा, शान्त जिन्हो का आनन । कुरुवंश के आप मुकुट हैं, गुण के हैं ये कानन हो ।म० ५५४। दैवयोग वनवास जाने का, आया है प्रसग । कृपा कर हमे शिक्षा दीजे, और नहीं उमग हो ।। म० ५५५ ।। तब गांगेय कहे तुमरे सग में मैं भी चलू इस काल । धर्मराज ने रोका कहकर, घर की करो प्रतिपाल हो ।। म० ५५६ ।। काम क्रोध मद लोभ हँसी अरु अधैर्यपणो अज्ञान । सप्त व्यसन असत्य अदत्त है, सब अनर्थ की खान हो ।। म० ५५७ ।। दान ज्ञान सुप्रभमुत्व, सुकृत, सत्पात्र, का सग । यह पॉचो भूपति धारे, तो सुधरे सब ढग हो ।। म० ५५८ ।। इन सोलह को त्याग युधिष्ठिर, करना नित धर्म ध्यान इस प्रकार भीष्म की शिक्षा, मानी अमृत समानहो ।।म० ५५६।। धर्मपुत्र धृतराष्ट्र को नम के, बोला प्रेम जनाई । प्रजाको पाले पुत्रवत्यों कहे दुर्योधन ताँई हो ।म०५६०। विदुर कहे यो धर्मनद से, वृद्ध है पांडुराय । राणी माद्री रक्खो घरपर, सेवा करे चितलाय हो ।म०५६१।माता कुन्ती द्रौपदी रानी, पॉचो भ्रात परिवार । करो सिद्ध वनवास तुम्हारे, हो जो कुशल जयकार हो ।म०५६२। भीष्म पाण्डु विदुर द्रोण, कृपाचार्य से फीर । ले आज्ञा आशिप विनम्र हो हृदय कछु नहीं पीर हो ।। म० ५६३ ।। पाण्डु नृप युधिष्ठिर

को फिर, रत्न मुद्रिका पहनाइ। गद्गद् स्वर से कहा इस योग दुरव नहीं होगा काई हो ॥ म० ५६४ ॥ कहे कुन्ती स सुन त्मी तू पुत्रो की रक्षा करना। तूहे माता इसीलिये यह सदा ध्यान में रखना हो ॥ म० ५६५ ॥ सत्यवती क भी चरण छूए इमी तरह अन्य मात। प्रत्युत्त दीघी शुभाशीष सब सुख म रीजा महाराव हो ॥ म० ५६६ ॥ या विधि पहुँचाये उनको वहाँ मिल सज्जन परिवार। आये वापिस लौट वहाँ से निज निज नगर मुँझार हो ॥ म० ५६७ कुन्ती द्रौपदी पाँचों पाण्डव वहाँ स किया पयान। कुछ दूरी तक श्रीकृष्ण गये, आगे सुना पयान हो। म ५६८ रत्न मुद्रिका युधिष्ठिर के श्रीकृष्ण लग्न पाइ। पूछा माधव ने यह कहाँ से लाये देओ बताइ हो ॥ म० ५६९ ॥ विशालाक्ष विद्याधर ने सब प्रत्युपकार निमित्त। दीधी थी मुझ पिता भा को, करके अति सुप्रीत हो ॥ म ५७० ॥ या विधि बातें करते परस्पर, नासिक नगर में आया। स्थिवर मुनियों क दर्शन करके रूम रूम हर्षाया हो ॥ म० ५७१ ॥ कुछ दिन के लिये ठहरे वहाँ पर रम्य शमित स्थान। कृष्ण पाण्डव दोनों मोद स, करते गीत अरु गान हो ॥म ५७२॥ माधव युधिष्ठिर बैठ एक दिन, आया पुरोचन पास। भेजा दुर्योधन न मुझको यों, पाला चित्र तत्काल हो ॥ म ५७३ ॥ धर्मपुत्र से दुर्योधन ने, कहलाया इस प्रकार। मैं सद्गुण क निधि पूर हो मैं हूँ दुर्गुण भण्डार ॥ म० ५७४ ॥ म उत्तम मैं अधम भ्रात हूँ विश्वासघाती सो जान। मेरे दुष्कृत्य पर हे भ्राता तुम जरा न धरिय ध्यान हो। ॥म० ५७५॥ मैं पुण्यवान मैं पापी पूरा दीना तुम्हें वनवास। हे पछताता इसी बात का, दिया सती का त्रास हो ॥ म० ५७६ ॥ कृत अपराध की माफी दीजे, लघु भ्रात निज जान। कृपाधार कुल म भानु सम अपना विरद पहचान हो ॥ म० ५७७ ॥ करा राज्य पुन हस्तिनापुर का जनता सब ही चाहे। यदि इच्छा वहाँ नहीं हो तो, फिर वारणावती तो आव हो ॥ म० ५७८ ॥ सती वस्तु सब क मन भावे जग-नियम सा जान। ता कारण वहाँ शीघ्र पधारो, करा अर्ज को मान हो ॥ म ५७९ ॥ कृष्ण युधिष्ठिर बात सुनीने हरस्य बहुत हर्षाया। स्वय सरल सरल सभे समझा, पास उसी सग आया हो ॥ म० ५८० ॥ वारणावती के

नगर लोक ने, सारा शहर सिंगारा। हरि पाण्डव को लाये वधाई, नूतन महल उतारा हो॥ म० ५८१ ॥ दुर्योधन भी आया सामने, प्रेम बहुत दर्शाया। नाना भाँति के माल मसाले, खाने को पहुँचाया हो॥ म० ५८२ ॥ सुख में पाण्डव जान हरि जी, ले सुभद्रा बहैन। अभिमन्यु-युत् आये द्वारका सुन पाये सब चैन हो॥ म० ५८३ ॥ एक समय सत्यवर्ती युधिष्ठिर, बैठा कुटुम्ब के माई। दुर्योधन की करे प्रशंसा, सुखी दिया बनाई हो॥ म० ५८४ ॥ उसी समय प्रियवद दूत एक, विदुर का चल आया। ले एकान्त युधिष्ठिर को दे, पत्र हाल जिताया हो॥ म० ५८५ ॥ उस कागज के अन्दर विदुर ने, लिखी बात हितकारी मैं गया था किसी कारण वश, पढ़जो कर विचारी हो॥ म० ५८६ ॥ एक दिन बैठा धृतराष्ट्र पॉ, दुर्योधन भाव लख पाया। दुःशासन कर्ण कुबुद्धि सिखाई, तब पुरोचन को बुलवाया हो॥ म० ५८७ ॥ पुरोचन से कहे पाण्डव बैरी, जीवें जब तक जग मे। सुख नहीं है दुर्योधन को, करो ध्यान एक मग में हो॥ म० ५८८ ॥ इस कारण उनको मारणहित वारणावती सिधाय। ऐसा करो उपाय जायकर, नाम रहे कछु नाय हो॥ म० ५८९ ॥ लाख काष्ट का महल बनाओ, राल तेल युत् खास। आग लगाकर उन पाण्डव का, उसमें करो विनाश हो॥ म० ५९० ॥ इस हेतु से पाण्डव ! तुमको, विप्र कपट से लाया। विदि चतुदर्शी आग लगावे, यह मनसूबा ठाया हो॥ म० ५९१ ॥ युक्ति से दुर्योधन तुम्हारी, करना चाहे हान। इस कारण होशियार रहीजो, मैंने सुना है कान हो॥ म० ५९२ ॥ पाण्डव ने यो पत्र पढ़कर, धरी हृदय में बात। दीधी सीख तब दूत के तांई, मुख से सुन वृत्तान्त हो॥ म० ५९३ ॥ काका विदुर कहलाई सो सब, सांची लीनी मान। मात भ्रात नार के तांई, तुरत जिताई आन हो॥ म० ५९४ ॥ विदुर ने फिर सुरग कारक को, भेजा हो हुल्लास। नाम सुन कहे ऐसा उसका, आया युधिष्ठिर पास हो॥ म० ५९५ ॥ धर्मपुत्र ने उसको जितलाया, करो हमारा काज। रैन समय इस महल बीच मे, करो सुरग धर दाज हो॥ म० ५९६ ॥ द्वैत नाम वन की ओर तुम, करजे सुरग को द्वार। आग लग जाने पर भाई निकल जावें हम बहार हो॥ म० ५९७ ॥ सुख

मीठा हृदय मलीन है दुर्योधन अन्याई। कैसी आस रची शाली ने जैसे है कोई नाई हो ॥ म० ५९८ ॥ पुण्य प्रभाव जहां घरे पाँव वो, शूल अधो हो जावें। पुण्य हीन क्या करे सामना अन्त वही पछतावे हो ॥ म० ५९९ ॥ भीम कहे सुन भ्रात विप्र का करूँ आप सहार। पीछे अपने शीघ्र यहां से भागे चल बीयार हो ॥ म० ६०० ॥ भीम के अर्जुन सहमत हुआ पर युधिष्ठिर करी मनाई। जो बल शक्ति है तुममें वो, हममो दुर्योधन ताई हो ॥ म० ६०१ ॥ पाण्डव के इस प्रकार दुर्जन, होसी भ्रात अनेक। इन जैसों को हमने से कोई, लोक कहें नहीं नक हो ॥ म० ६०२ ॥ मृगपति को मृग ने मारे, शोभा नहीं अगार। एकद पछाड़े अब कुअरने, तो प्रशंस ससार हो ॥ म० ६०३ ॥ एक शिक्षा फिर मानों बन्धु तेरह वर्ष पर्यन्त। विराणल से जोष करे फिर कहीं जाना नहीं मतिमन्त हो ॥ म० ६०४ ॥ सुख परिश्रम के सिवाय भोजन, अन्य का करें कभी भाई। इन दृढ़ मतिसा से फिर भाई छले न कोई भाई हो ॥ म० ६०५ ॥ शयन करे भीम उस स्थानक पलंग तले सस पार। सबक बनाया सुरंग दक्षता से, निकल सकें सब बहार हो ॥ म० ६०६ ॥ चतुर्दिशि अम्बरी के दिन, करसी आगि लगाय। सपरिवार कुशल क्षेम से निकसें सुरग संयोग हो ॥ म० ६०७ ॥ पाचों पाण्डव रैन समय फिर उसी सुरंग के मांय। अभ्यास करें आने जाने का, नक्षत्र योग मिलाय हो ॥ म० ६०८ ॥ ऊपर महल सुरग भूमि तल, विप्र कछु नहीं जाने। चतु र्दिशी दिन कर्म करेगा, वह विप्र यही ठाने हा ॥ म० ६०९ ॥ दोनों का द यान द्रोपदी मटी उनकी शाम। ध्यान घरे ईश्वर का कुन्ती, कुशल रहन के काज हो ॥ म० ६१० ॥ पाण्डव रहते प्रसन्न चित्त स, देखी पुरोचन दास। मिष्ट वचन स मैंने इनको, कैसा दिया विश्वास हो ॥म० ६११॥ धन्य है मेरी कला कौशल्य को, मूर्ख दिया बनाय। चतुर्दिशि अंबरी के दिन, दूंगा इन्हें जलाय हो ॥ म ६१२ ॥ एक भूखी सुत पांच बहू एक, आया महल के मांह। अनुकम्पा से कुन्ती माता अपने दिग ठहराई हो ॥ म० ६१३ ॥ भक्तियुक्त भोजन दिया उनको कर मनुहार विभाव। सेवा धर्म के फल को जानी, शाता सबको उपजाय हो ॥ म० ६१४ ॥

विदि चतुर्दिशि का कुन्ती को, रच रहा नहीं ध्यान। ता कारण से उन्हे न चेताया, जिससे हुआ नुकसान हो ॥ म० ६१५ ॥ भीम रहे सजग सदा वह, हो पूरा सावधान। दुष्ट पुरोचन की वातो को, सुनता रहे धर ध्यान हो ॥ म० ६१६ ॥ पुरोचन ने अपनी धृष्टता, छोडी नही लगार। पर पाण्डव के प्रवल पुण्य हैं, रक्षा करे हर वार हो ॥ म० ६१७ ॥ विप्र प्रच्छन्न रही अर्ध निशा मे, आग लगाई भारी। तव पाण्डव उस सुरग द्वार से निकल गये उस वारी हो ॥ म० ६१८ ॥ उठी ज्वाल विकराल महल में, चहुँ दिशि धूँवा छाया। भीम रहकर उसी प्रोहित को, दे मुष्टि मार गिराया हो ॥ म० ६१९ ॥ डाला आगमे गाया नर्क मे, पाया कृत्य कमाई। मिला भीम भ्राता पॉजाई, सभी कुटुम्ब के मॉई हो ॥ म० ६२० ॥ रवि उदय होने परदेखा, महल भस्म हो पाया। पाण्डव मर गये जनता ने, हाहाकार मचाया हो ॥ म० ६२१ ॥ देखो दुर्योधन कर्म कमाया, राच ऋद्ध के तॉई। मरकर परभव इसको जाना, सोचा नहीं मन मॉई हो ॥ म० ६२२ ॥ दुर्योधन पापी है पूरो, पाण्डव-वश नशायो। कुल के कलक लगाया तभी तो, कुलखापन कहायो हो ॥ म० ६२३ ॥ सुरग से निकल कर पाण्डव चाले, कष्ट वहुत सा पावें। राय युधिष्ठिर के पग सूजे, श्रम से चला न जावे हो ॥ म० ६२४ ॥ नकुल और सहदेव यही विध, वे भी वेदना पावें। पर लज्जा के वश में होके, कहते वन नहीं आवे हो ॥ म० ६२५ ॥ माता कुन्ती और पत्नि को देखी दुख मे भारी। राजा युधिष्ठिर मन में चिंते, अहो कर्म गति न्यारी हो ॥ म० ६२६ ॥ पीहर सासरे वीच मातने, कभी दुख नही पाया। पथ के श्रम से दुखी होय अव, मुख इसका कुम्हलाया हो ॥ म० ६२७। पुण्यशाली योधा पाण्डव की, देखो यह पटनार। सुरेन्द्र की पत्नि सदृश है, भ्रमती विपिन मॅझार हो ॥म० ६२८॥ कोमल चरण दाम से विंधे, चीरा चल लोही आया। तन वसन पर धूली छाई, विकल रूप दर्शाया हो ॥ म० ६२९ ॥ दुख नहीं पावे वह पत्नि भी, जाके एक भर्त्तार। पच भर्त्तारी होकर द्रौपदी, पावे दुख अपार हो ॥ म० ६३० ॥ राय युधिष्ठिर थाको पथ मे, श्रमित वना परिवार। भीम महावली है सब माँई, साहसिक

सरदार हो ॥ म० ६३१ ॥ कुन्ती भी बाकी पथ मांई जीव रहा घबराय । भूख तृषा से पीड़ित उसके, रह नैन मिचाय हो ॥ म० ६३२ ॥ कुन्ती द्रौपदी घबराय पथ में, पड़ी भूमि मुर्झाई । मुख बिलखाय दिया सबी ने कुमल ज्यूं कुम्हलाई हो ॥ म० ६३३ ॥ भमित धर्म पुत्र सर पहुँची लाया शीतल नीर । कुन्ती द्रौपदी को पायो तब, साता हुई शरीर हो ॥ म० ६३४ ॥ राज गया बैरी-भय पीछ रैन पलायन कीध । नहीं हुआ स्वप्नान्तर ऐसा सो दुख विघना दीध हो ॥ म० ६३५ ॥ बदन सकोमल ठिग नहीं संबल कैसे लांघ कांतार । चिंतित धर्मपुत्र को देखी, करा भीम विचार हो ॥ म० ६३६ ॥ दक्षिण स्कंध पर मात बैठाइ, बांयें स्कंध पर नार । लघु भ्रात दोनों को पीठ पर, दानों भुज आधार हो ॥ म० ६३७ ॥ भीम चली स चला पथ में, धुम बीच को जाय । झाड मार उखाड़ फेंक दे, मार्ग सम बन जाय हो ॥ म० ६३८ ॥ चार प्रहर की रजनी बीती प्रात' रवि प्रगटाया । मार्ग बीच शहर जो आया भीम वहीं पर आया हो ॥ म० ६३९ ॥ वड तरु की छांया सा उतारी भीम सुखे नींद सोया । अर्जुन जा दो काल विपिन में फल फूल कच को लाया हो ॥ म० ६४० ॥ निज नारी ने करी रसोई, सब को तोई जिमाया । शाप चना द्रौपदी जीमी, वहां से फेर सिधाया हो ॥ म० ६४१ ॥ चलते पथ में रवि अस्त हुआ वहीं पर डाला डेरा । सोते सब ही नींद बीच में, भीम खड़ा दे पहेरा हो ॥ म० ६४२ ॥ सोच भीम युधिष्ठिर देखी, देखो कर्म का भोग । मखमल सज में सोते थे ये आज कंकराली सोग हो ॥ म० ६४३ ॥ नित्य नये नाटक होते थे, बत्तीस राग रसाल । अब सोये थे बिना बिछोने, रपट यहां विकराल हो ॥ म० ६४४ ॥ बैठ विमान में व्योम लांघते कुंकुम तिलक लगाय । थकित हुवे अब पग स चलते धूल बदन लिपटाय हो ॥ म० ६४५ ॥ वस्त्राभरण अमूल्य पहनत, नाना भोजन खाते । वे ही बन्धु अब फले मलपुत, कन्द मूल को खाते हो ॥ म० ६४६ ॥ विचित्र गति है कर्मन की यह, नहीं पावे कोई पार । राम लखन सीता जैसों का भेजे विपिन मंझार हो ॥ म० ६४७ ॥ या भांति करुणा रस भरियो, भ्रात भाम तत्काल । रुदन विलाप करें खिस

कारण, नेत्र हुवे हैं लाल हो ॥ म० ६४८ ॥ सोये साथ के सभी नींद मे, दे चौकी चहुँ फेर । हुई राक्षसी प्रगट वहां पर, लिया भीम को घेर हो ॥ म० ६४६ ॥ पीतनयनी है पापिन पूरी, छुरे सदृश हैं दांत । वैठी नासिका पीनस जैसी, कान सूप के भांत हो ॥ म० ६५० ॥ ताड वृक्ष के जैसी लाबी, हड़ हड़ करती हास । ऊभी आय भीम के पासे, देने को वह त्रास हो ॥ म० ६५१ ॥ देखी भीम का रूप मनोहर, जगा काम विकार । विपरीत रूप वदल के तत्क्षण, वनी अप्सरा अनुहार हो ॥ म० ६५२ ॥ सुनो रूप देख भीम हुवे चकित, पूछे उसे उस वार । कौन, कहां से आई यहां पर, रैन समय इस वार हो ॥ म० ६५३ ॥ सुनो बात मनमोहन मेरी साच कहू मैं नार । शुद्ध मन से थे देओ आदर, अहो भोगी भरतार हो ॥ म० ६५४ ॥ इस वन मे राक्षस एक रहता, हिडम्ब नाम है खास । वहन हिडम्बा उसकी मैं हूँ, आई आपके पास हो ॥ म० ६५५ ॥ विद्याधरों के कुल की जाई, राज ऋद्धि बहु म्हारे । साधी राक्षसी विद्या जिससे, राक्षस लोक पुकारे हो ॥ म० ६५६ ॥ हिडम्ब नाम है इस वन खड का, रहता इसमें वोही । गध उड़ी मनुष्य की भारी, और न देखा कोही हो ॥ म० ६५७ ॥ जाच करन को मुझको भेजी, आई राक्षसी वनके । देखी तेरा रूप अनुपम, विकार जगे मेरे तन के हो ॥ म० ६५८ ॥ यथार्थ रूप वनाया मैंने, अव देखो इस वार । हाथ पकड़ लो जल्दी अव तो, वनो आप भरतार हो ॥ म० ६५६ ॥ कहे भीम कन्या सुन मेरी, साफ देऊँ जितलाय । भाग्यवश ही तुझ सी पावे, चतुर नार सुखदाय हो ॥ म० ६६० ॥ ये सोये वन्धव मुझ प्यारे, ये वृद्धा मुझ माय । यह पत्नी है मेरी द्रौपदी इस तुल्य और है नाय हो ॥ म० ६६१ ॥ ऐसी गुणवन्ती होने पर, और न परणी जाय । कल्पलता जो छती पास हो, कोई न आवे दाय हो ॥ म० ६६२ ॥ नहीं आदरो जो तुम मुझको, देऊॅ मैं प्राण गमाय । भीम कहे हो कैसे या विधि, सुन सुन्दर चितलाय हो । म० ६६३ ॥ विद्या चाक्षुसी और उद्योतनी, जो तेरे हैं पास । वो सिखाओ मुझको तव तो, बात बने फिर खास हो ॥ म० ६६४ ॥ तब राक्षसी ने विद्या सिखाई, भीम को जिस वार । धर्म- प्रभावे देखो पाण्डव का, पूर्ण

हुआ अन्धकार हां ॥ म० ६६५ ॥ उसी समय क्या वो एक दम भूमि और बनराय । ह ह ह हास हँस तो हिडम्ब राक्षस आया धाय हो ॥ म० ६६६ ॥ देखी कामासक्त भगिनी को पाण्डव राग रँगाई । भृकुटी चढ़ा भीषण गर्जन कर, माला रोष भराई हो ॥ म० ६६७ ॥ अरे हिडम्ब का भाई किस कारण कुल खापण तू रांड । अरी म चक्षारी अब तक तेने भूख लगी मचाएड हो ॥ म ६६८ ॥ कोई नर आया होय यहां सो कहना मुझको आय । मार कूद भक्षण कर आऊँ, वपु पुष्ट हो जाय हो ॥ म० ६६९ ॥ कामातुर तू बन के रीता, भ्रातृ-स्नेह बिसराय । गोरा कुची मिल गई आकर, पहरा कौन लगाय हो ॥ म० ६७० ॥ प्रथम मारूँ तुमको सबस फिर हनूं ओ साथ । ऐसा बोली भगिनी को हनवा ऊँचा कीना हाथ हो ॥ म० ६७१ ॥ भीम झुँझला उठा जोश का, क्या शठ भगिनी मारे । क्या काल तेरा आन पहुँचा है, क्यों नहीं हृदय विचारे हो ॥ म० ६७२ ॥ गदा महीने स मुगर पाया, मार करूं चकचूर । झट से राक्षस भीम पर आया, भरा जोश भरपूर हां ॥ म० ६७३ ॥ करा खड्ग प्रहार भीम पे तब वह मूर्च्छा खाया । सावचेत हो भीम उठा फिर, अति कोप में छाया हां ॥ म० ६७४ ॥ सिंह नाद होत सब जाग, देखा युद्ध उस बार । भारी गदा राक्षस मूर्छाया, फिर उठा लगी नहीं बार हो ॥ म ६७५ ॥ सारी बात हिडम्बा भाखी जानी युद्ध की बात । फिर इक-प्रहार करा तब भीम हुआ मुर्छ पात हो ॥ म० ६७६ ॥ विलापात करती कह कुन्ती, बेटा सुन मुझ बात । कौन सहायक पथ में बनसी, कुण सुख देसी मात हो ॥ म० ६७७ ॥ शीतल पवन कर नीर अब छिड़का अर्जुन साहसिक वीर । तुरत उठकर गदा स उसका, जरजर करा शरीर हां ॥ म० ६७८ ॥ रस्सा डाल ग्रीवा को पकड़ी मारकर निर्जीव बनाया । पारिवारिक जन सब ही का फिर, कुछ भय नहीं माया हो ॥ म० ६७९ ॥ भ्रात शोक नहीं करा हिडम्बा काम रूप मन में छाया । भीम संग में मग्न होय कब मिले सुख मन पाया हां ॥ म० ६८० ॥ कुन्ती द्रौपदी आग सभी जन प्रम घरी उस बार । पिछली रात म चले वहां से, करके पद बिहार हां ॥ म ६८१ ॥ नभ-पथ में चलती वह हिडंबा दिशा के अरमान । हुआ

मध्याह्न तब धूप से सबको, लगी प्यास अति आन हो ॥ म० ६८२ ॥ कुन्ती मूर्छा खाय गिरी है, सुध बुध को विसराय । चारो भ्रात जल लेने दौडे, देखी मरती माय हो ॥ म० ६८३ ॥ बैठा पास रोवे युधिष्ठिर, हा हा होत अन्याय । पानी मिला नहीं लौट आये तब, भ्रात सभी घबराय हो ॥ म० ६८४ ॥ मूर्छित मात देख सब रोवे, धीरज नहीं शरीर । दौड हिडम्बा कमल पत्र मे, लाई निर्मल नीर हो ६८५। जल छिडका कुन्ती के तन, फिर पाया शीतल वारी । उठ बैठी हां पूछे वाता, शुद्ध मे आई जिवारी हो ॥ म० ६८६ ॥ सारे कुटुम्ब को जीतव दीना, धन्य धन्य या नारी । मुक्त कण्ठ से करी प्रशमा, पाण्डवो ने उस वारी हो ॥ म० ६८७ ॥ पाण्डव वहा से सभी मिलके, जब चले पथ के माई । साथ चूक कर गई द्रौपदी, भयानक वन के माई हो ॥ म० ६८८ ॥ सिंह प्रचण्ड एक सन्मुख आयो, पाचाली कम्पाई । आडी लकीर निकाली उसने, बोली मन के माई हो ॥ म० ६८९ ॥ लांघो नहीं हो कभी सत्य रेखा, जो मेरे भरतार । तो तू भी अब मती लांघजे, यह रेखा इस वार हो ॥ म० ६९० ॥ सत्य वचन श्रवण कर सिंह ने, लाघी नहीं है लीक । शील तणी यह महिमा जग मे, नार भई निर्भीक हो ॥ म० ६९१ ॥ उसी तरह से वापिस फिरता, देखा सर्प को बाई । सूर्यास्त होने पर फिर तो, तरु तले ठहरी आई हो ॥ म० ६९२ ॥ परोपकारिणी राक्षसी तब तो, ढूढत वन मे आई । परमेष्ठी जपती हुई द्रौपदी, चिंता युक्त दिखाई हो ॥ म० ६९३ ॥ तेरे विरह से कुन्ती पाण्डव, ऐसी प्रतिज्ञा ठाई । जो न मिले द्रौपदी हम को, देशा प्राण गमाई हो ॥ म० ६९४ ॥ तेरे नहीं मिलने से देवी ! हुआ दुखी परिवार । अन्न जल लेना छोड दिया है, तासे चलो मुझ लार हो ॥ म० ६९५ ॥ पकड हाथ द्रौपदी उसने, उडा के चली आकाश कुशल क्षेम से तत्क्षण उसको, लाई पाण्डव के पास हो ॥ म० ६९६ ॥ विद्याधरी अपने सग लाई, द्रौपदी को उस वार । देख दृश्य यह पाण्डव सारे, पुलकित हुवे जीवार हो ॥ म० ६९७ ॥ चले वहा से आगे पाण्डव, बीच पडे कई पहाड । विपम मार्ग को लाघ बैठे जहा, बडे २ हैं झाड़ हो ॥ म० ६९८ ॥ कुन्ती बोली हिडम्बका से, सुन कन्या मुझ बात । तैने उप-

कार किया था हमपर, मुख से कहा न जाता हो ॥ म० ६९९ ॥ मांग सोई मैं दुंगी तुम को यही मेरे मन भाई । पांच साल हिडम्बा वाली भीम से हा परणाई हो ॥ म० ७०० ॥ सब को सहमत जान सहदव, मुहूर्त दिया बताई । तुरत भीम हिडम्बा के संग विवाह करा मन भाई हो ॥ म० ७०१ ॥ विद्याधरी ने महल बनाया भीम ठहर गये भाई । हिडम्बा के गर्भ रहा है पुरुष भाग से भाई हो ॥ म० ७०२ ॥ अब यहां से आगे पाण्डे फिर करत लील विलास । आया शहर एक सुन्दर अनुपम देखत हरष हुलास हो ॥ म० ७०३ ॥ उस एक चम्पा नगरी बाहर सुन्दर बड़ा उद्यान । वहां धर्म घोष केवली ठहरे मुनियों में प्रधान हो ॥ म० ७०४ ॥ पद्मासन से ऊंचे आसन, बैठे वहां मुनिराज । धर्म सुनाना सुने को आ, पाण्डव सागे पांच हो ॥ म० ७०५ ॥ सभासदों ने देख पाण्डव का विस्मित हो गये सार । उस दिन का था विषय दया का जो सब ही का तारे हो ॥ म० ७०६ ॥ आत्मघात नहीं करू त्रियाग खेचरी ने व्रत धारा । सुसंगत से सुधर गई है, पुण्य का हुआ सजारा हो ॥ ७०७ ॥ धर्मोपदेश के बाद कुन्ती ने प्रश्न किया उस बारी । दुःख सागर से पुत्र हमारे कब उबरे गुणधारी हो ॥म०७०८॥ धम धाप केवली यों भाप, हैं पाण्डव पुण्यधाम् । अल्पकाल में राज लक्ष्मी, भिलजासी फिर आन हा । म ७०९ ॥ राज भी सुख भोग मागधी लसी संयम भार । कर्म खपा क केवल पाई, लगा मोक्ष उधार हो ॥ म० ७१० ॥ प्रसन्न हुवे सब वाणी सुन क, कवली कियो विहार । धर्म पुत्र कह विद्याधरी स तूं उपकारी नार हा ॥ म ७११ ॥ तेरी सहाय से हमने सोधा गिरि बन अटवी पुर । त्याई द्रौपदी अटवी माई शाघ लाउ असूर हो ॥ म० ७१२ ॥ विद्याधरनी बात यह मेरी, सुन ल तूं या सांची । अब पति वे भीम बनाया प्रेम राग में रांची हो ॥ म० ७१३ । अब हम सो कुछ काल रहगे इस नगरी के माई । तुम पीहर जाकर रहो धैर्य धर वन्धु से स्नेह जनाइ हो ॥ म० ७१४ ॥ गर्भ रत्न की यतना करना सोधा धर्म पहचानी । मान जेठ की बात हिडम्बा आई निज राजधानी हो ॥ म० ७१५ ॥ रहे मास स पीहर बीच में करे धर्म

प्रतिपाल। समकित रत्न के गुण को धारे, मंत्र जपे त्रिकाल हो ॥ म० ७१६ ॥ वेष विप्र का पाण्डव धारा, करा रूप में
फेर चले एक चक्रा को तब तो, देवशर्मा हुआ लेर हो ॥ म० ७१७ ॥ विप्र-रूप अतिथि को घर, लाकर उन्हे जिमाया।
पाण्डव सपरिवार के ताईं, उचित-स्थान ठहराया हो ॥ म० ७१८ ॥ ब्राह्मण रूप मे पाण्डव रहते, कोई भेद नहीं पावे।
जैन धर्म की करें आराधना, अरिहत ध्यान लगाये हो ॥ म० ७१९ ॥ सावित्री द्विज की पत्नि ने, सरला कुता के ताईं। धर्म
मात बनाई प्रेम धर, तब उसने ठहराई हो ॥ म० ७२० ॥ सुख से रहें कुन्ती प्रमुख वहां बीते कितने मास। घनिष्ट हुई
परस्पर प्रीति, हृदये रहा हुल्लास हो ॥ म० ७२१ ॥ देखी एक दिन सावित्री को, करती रुदन विलाप। तब तो देवशर्मा
ब्राह्मण से, पूछे कुन्ती आप हो ॥ म० ७२२ ॥ पत्नी तेरी क्यों रोती है, क्या दुख हुआ आज। भेद बताओ इसी बात
का, अभी आप द्विजराज हो ॥ म० ७२३ ॥ द्विज बोला सुन माता कुन्ती, एक दिन का वृत्तान्त। पुरी प्रमाण ले शिला
विद्याधर, खड़ा ज्यू खे कृत्तान्त हो ॥ म० ७२४ भय दिखा विद्याधर बोला, आया तुम्हारा काल। शिला डाल के सब को
मारूँ, नगर करूँ समताल हो ॥ म० ७२५ ॥ प्रबल वायु का वेग करी, वृक्षादिक नगर धुजाया। भूत प्रेत राक्षसों द्वारा, सब
जन को डराया हो ॥ म० ७२६ ॥ नगर लोक स्वदेव यादकर, कहे यह कष्ट मिटाओ। हाथ जोड राजा भी वीनवे, मतना भय
दिखाओ हो ॥ म० ७२७ ॥ रक्षा करो तुम देव हमारी, चाहो सो फरमाओ। नगरलोक का भय मिटा दो, दया सभी पर लाओ
हो ॥ म० ७२८ ॥ प्रगट हुआ विकराल रूप में, वह विद्याधर खास। भयभीत होके सबने देखा, सम्मुख ऊभा पास हो ॥ म०
७२९। बुक नामा विद्याधर हूँ मैं, रत्न शैल गिरि स्थान। राक्षसी विद्या साधी, बना हूँ, नर भक्षी मम जान हो ॥ म० ७३० ॥
सच कह दू मुझे लगे मनुष्य का, मांस अति ही प्यारा। नित्य मनुष्य एक दीजो वारीसर, यह है प्रश्न हमारा हो ॥ म० ७३१ ॥
द्रोण प्रमाण शालि रांधी ने, और दो हित को जान। पुर बाहर एक स्थान बनाकर, रखना उसमे आन हो ॥ म० ७३२ ॥ तब

हो माता चकोर्चू अपनी, यों सो बात कहो माग। जिस दिन हागी इसकी कमी वो बद खुला सब प्रान हो॥ म० ७३३ ॥ सरासर है अयोग्य बात पर, भय से धीमी मान। फिर वो राक्षस गया वहाँ से हो करके गम्यान हो ॥ म० ७३४ ॥ जब नगर के लोक और राजा, मिलकर एक ही स्थान। प्रत्येक घर पर बारी बाली, क्या छोटा क्या महान हो॥ म० ७३५॥ जिस दिन जिस पर चिट्ठी आवे, वह छूटन नहीं पावे। चिट्ठी आई हमारे घर या, तासे रुदन मचावे हो॥ म० ७३६ ॥ कुन्ती मेरु पा वस माझ्य पर अनुकम्पा दिल आनी। तेरे पति को दुख नहीं होगा, मत राये दिल आनी हो॥ म० ७३७॥ दुष्ट राक्षस का क्षण में मारे मुझ सुत है बलवान। तेरे पति के बदले भेजूं, मुझ सुत को उस स्थान हो॥ म० ७३८॥ देव शर्मा ब्राह्मण फिर बोला क्यों मोजी दुख देटो। परहित कारण पुत्र मारा कर क्यों थें वश को मेटो हो॥ म० ७३९॥ सुन कर भीम बोला उस ठाँई मत कर मेरा साच। मात वचन को जो मैं लोपूं पड़े वचन में मोच हो॥ म० ७४०॥ तब तो बात यह सोची राम, विम कहे उस बार। एक दिन केवल ज्ञानी आये थे, किया कथन हितकार हो॥ म० ७४१॥ द्यूत खेल में पाण्डव हारकर वे बस यहाँ पर आसी। पुर बाहर जा एक राक्षस का परभव में पहुंचासी हो॥ म० ७४२॥ विघ्न मिटेगा इस नगरी का यों कही किया विहार। सभी से बैठे इसी ध्यान में कब आवें पचमार हो॥ म० ७४३॥ इतन हस्तिनापुर से आया एक पथिक सुनार। उसको लोगों ने मिल पूछा पाण्डवों का अधिकार हो॥ म० ७४४॥ वारणावती नगरी में पुगाया उन साता के तांई। लाख काष्ठ के नूतन महल में सबको दिये ठेरांई हां॥ म० ७४५॥ दुर्योधन ने गूढ़ कपट को रच कर अपनी चाल। कीधी करतूत ऐसी जिससे, जल कर हो गये राख हा। म० ७४६॥ पंथी मुख स बात सुनी ने, हुवे लाग दिलगीर। नहीं मिला ज्ञानीजन का यह वचन बड़ा गंभीर हो ॥म० ७४७॥ पग भयभी म कुलदेवी का ब्राह्मण हुवो तैयार। इष्टदेव का ध्यान धरा तब, कुन्ती कह उस बार हा ॥म०७४८॥ इमरासा को आता राका कहीं हा आप तुम्ह बात। कभी कुछ हासे थी नाहिं जो नहीं बेमर्सी बात हा॥ म ७४९॥ कुन्ती

भीम को विदा किया है, तुम बिन सरे न काज । अभयदान दो इस वस्ती को, ऐसा करो इलाज हो ॥ म० ७५० ॥ ले तन्दुल की गाड़ी निकला, आया बक के स्थान । पूछा पुजारी से बतलादे, कब आसी वेईमान हो ॥ म० ॥ ७५१ ॥ पुजारी बोला क्या बकता है, होकर तू बे भान । उसकी धाक से शूरबीर भी, छोड देते हैं प्रान हो ॥ म० ७५२ ॥ इस शिला पर बैठ जाय तू, चावल धर के आगे । अभी आय तुझको खावेगा, देखी लीजि सागे हो ॥ म० ७५३ ॥ पूजारी पूछे नाम क्या है, खीच खाएया मेरा नाम । यो कही बैठ सामने रक्खा, चावल का जब ठाम हो ॥ म० ७५४ ॥ लप भर भर कर खाता देखी, बोला तुरत पुजारी । रे मूढ़ ! इस राक्षस भेंट को, क्यो खोता इस वारी हो ॥ म० ७५५ ॥ भीम कहे बुरा क्या कीना, खाने योग्य को खाई । अधिक देर तक पड़ा रहे हो, बू आवे इस माई हो म० ७५६ खा कर सोया भीम वहापर, विना विछोने सोय । निर्भिकता है जिसके वदनमे, डर नहीं उसको कोय हो म० ७५७ इतने राक्षस भी वहां आया, सोया देख उस वार । नहीं मावे यह शिला पर भी, कैसा पुष्ट तय्यार हो ॥ म० ७५८ ॥ इसके भक्षण से तो मेरी, भूख भगेगी खास । भाग्योदय से मिला आज यह, पूर्ण मास पुमांस हो ॥ म० ७५९ ॥ भीम के ओढ़न के कपड़े को, राक्षस कीना दूर । लगाया दात बटका भरने को, देह का करने चूर हो ॥ म० ७६० ॥ भीम की वज्र काय के कारण, तड तड टूटे दात । दोनो जवडों में से फिर तो, खुन की लगी है तांत हो ॥ म० ७६१ ॥ नाखून जब छाती के मारे, वह भी गये हैं फाट । नहीं भीम का कुछ भी विगड़ा, पडा ज्यों लोह की लाट हो ॥ म० ७६२ ॥ विस्मित, लज्जित हो गया राक्षस, सोच रहा मन माय । लज्जित हो परिवार साथ ले, भीम से भिडगया आय हो ॥ म० ७६३ ॥ करडा दात से सारे वदन को, दसन पड़े सब भाज । भीम अंग पीडा नहीं व्यापी, नहीं हुई किंचित् खाज हो ॥ म० ७६४ ॥ बक यो बोला सुनो कुटुम्ब जन, मैंने बहुतो को खाया । यह अचम्भा कभी न देखा, ऐसी वज्र की काया हो ॥ म० ७६५ ॥ इसे उठालो सभी मिली ने, ले जाओ घर द्वार । असी से खड करने खासा, राक्षस सभा मझार हो ॥ म० ७६६ ॥ कठिनाई से सब मिल तोका, भीम ने वजन लगाया । अधो-

मुख से पड़ सब राक्षस आस देर से आया हो ॥ म० ७६७ ॥ ज्यों त्यों फेर उठाया उसको ले गये निज आवास । भीम के मन में राक्षस पर को, देखन की थी आस हो ॥ म० ७६८ ॥ जिमने नहीं दखी गाड़ी जब राक्षस स्थान पर आया । पूछी बात पुजारी से जब, उसने हाल सुनाया हो ॥ म० ७६९ ॥ आज पक्ष-वन का नर आया राक्षस खाने नहीं पाया । असी से काट इसे खावें यों, अभी सई सिखाया हो ॥ म० ७७० ॥ ब्राह्मण रोता घर पर आया, उपकारी मरवायो । अपने रात रत्न न खोयो, दे मर मुझे बचायो हो ॥ म० ७७१ ॥ दुखित हो कुंती पै आकर, सब वृत्तान्त सुनाय । कुन्ती द्रौपदी दोनों को ला जिम ठौर दिखाय हो ॥ म० ७७२ ॥ सुन कर बात पुजारी से, हो गये सब उदास । किंकर्तव्य मूढ़ हो कर ठाडे रही कछु नहीं आस हो ॥ म० ७७३ ॥ युधिष्ठिर कहे बात सुनो सब चिंता दूर निवारो । भीम को राक्षस मार सके नहीं, मजबूती दिल धारो हो ॥ म० ॥ ७७४ ॥ इत भीम का मस्तक नभ से पड़ा सामने आन । देखी हुआ अचम्भा सब को धीरज किया प्रयान हो ॥ म० ॥ ७७५ ॥ रोन लगे सब बोम्ब फाड़ कर, कर कर गुणों की याद । मूर्छा खा गिरे धरणी पर सुध नहीं रही उस बाद हो ॥ म० ७७६ ॥ हो सचेत युधिष्ठिर भाखा, वज्रमयी उसकी काया । धर्म-शरीरी उसे बताया पुराकृत ऐसा ही छाया हो ॥ म ७७७ ॥ अर्जुन कहे यह कमल नाल ज्यों मस्तक छुदा आज । भीम रहा नहीं इस कारण से, मिट नहीं या राज हो ॥ म० ७७८ ॥ भीम का मस्तक लेई द्रौपदी, काष्ठ चिता रचाइ । ता बीच बैठन करी तय्यारी विलम्ब न मन के माहीं हो ॥ म० ७७९ ॥ सभी भ्रात भी इसी तरह से, मरण हुवे तैयार । कुंताजी भी संग में जलन को पक्का किया विचार हो ॥ म० ॥ ७८० ॥ देवरामों भी बोला झटपट नहीं जीने में सार । सब मरण की करी तयारी हुआ बहुत हकार हो ॥ म० ७८१ ॥ पांच पुरुष और दोनों नारी मरने की दिल धारी । इतने ही में शब्द राक्षस का सुन चौंके उस वारी हो ॥ म० ॥ ७८२ ॥ युधिष्ठिर भाखे मार भीम को फिर राक्षस यहां आया । अब मारेगा सब के तांई, ऐसा ध्यान में आया हो ॥ म० ७८३ ॥

जब अर्जुन ने धनुष्य चढाया, राक्षस सन्मुख धाया। लूगा भ्रात का वदला उस से, तो मैं कुन्ती का जाया हो ॥ म० ॥ ७८४ ॥ सोचे द्रौपदी जिस दुश्मन ने, वली भीम को मारा। वह अर्जुन से केमे मरेगा, छूटी आंसू धारा हो ॥ म० ॥ ७८५ ॥ उसी समय राक्षस सहारी, आयो भीम भूम्कार। देखी ने सव हर्षित हो गये, मिटा दुख जंजार हो॥ म० ७८६॥ राक्षस हने भीम के ताई, युधिष्ठिर कहे यह भूठ। कभी भीम ने शत्रु ताई, नहीं दिखाई पूठ हो ॥ म० ७८७ ॥ साधु कभी भूठ नहीं कहवे, भूठ कहें नहीं देव। भीम को कोई जीत सके नहीं, जो जुज नितमेव हो ॥ म० ७८८ ॥ सुन के हर्षित हुवे सकल जन, फूले अग नहीं मावे। केवली कथित यथार्थ है यह, सव के ताईं सुनावे हो ॥ म० ७८९ ॥ विनययुत भीमजी प्रणमे, कुन्ती युधिष्ठिर पांय। जब दोनों ने भीमजी ताई, हृदय लिया लगाय हो ॥ म० ७९० ॥ मस्तक तेरा फटा देख के, जीव नणो दुख पायो। जीवित देख तुझे सवके मन, आनन्द रग अति छायो हो ॥ म० ७९१ ॥ भीमजी को जब देखा द्रौपदी, पुलकित हो गई काया। उसी घडी से समझी मन मे, सारा दुख विनशाया हो ॥ म० ७९२ ॥ मिली कुटुम्ब से भीमजी का मन, एक दम अति हर्षायो। राक्षस युद्ध से हुआ परिश्रम, जिसको दूर नसायो हो ॥म० ७९३॥ नगर लोक यह वात सुणीने, गज मुक्ता से वधाया। लोग लुगाई खुशी मनावें, सब का दुख नशाया हो ॥ म० ७९४ ॥ राजा सुनके इस घटना को, आया भीम के पास। निरख नयन से उपकारी को, बोले वचन हुलास हो ॥ म० ७९५ ॥ धन्य है तुम पुरुष पुंगव को, राक्षस मार गिरायो। तासे उपद्रव मिटा सपूर्ण, भलो नाम कमायो हो ॥ म० ७९६ ॥ दुर्बुद्धि अरु महावल नामा, दोनो विद्याधर खास। उतर आये नभ पथ से नम्र हो खड़े भीम के पास हो ॥ म० ७९७ ॥ यह महावल है बक का लड़का, मैं हूं मत्री खास। बक मारण के समय इसी का, था लंका में वास हो ॥ म० ७९८ ॥ घर आने पर घटना सारी अथ से इति तक जानी। भीम को मार पिता वैर लूं, युद्ध करन की ठानी हो ॥ म० ७९९ ॥ तव राक्षस की कुल देवी के युद्ध करने से वारा। करो भीम की सेवा भाई, तुरत वचन को

मारा हा ॥ म० ८०० ॥ इसी कारण हम एक मता हो करन भीम की सेवा। आये यहां पर हम धरीने कृपा आपकी लेवा हो ॥ म० ८०१ ॥ नर हिंसा का त्याग कराया शानों विद्याधर तांई। रत्न दीने तब अपनी मकार में गरपकरी नहीं कांई हो ॥ म० ८ २ ॥ पूछे युधिष्ठिर मस्तक विषय में, हुआ कौन प्रकार। तब मंत्री सुबुद्धि बोला, इसका सुनो विचार हो ॥म० ८०३॥ एक मारण के समय सुनाया, राक्षस की करतूत। कृत्रिम मस्तक बना के पटका डरा नहीं यह भूत हो ॥ म० ८०४ ॥ सोचा मन में इसे देखकर, मर जासी परिवार। जिससे इस महायशी भीम को होगा दुःख अपार हो ॥ म० ८०५ ॥ प्रबल पुण्य है आज तुम्हारा हुई न किसी की घात। मानों लेख रेखा है उतने प्रान मिल हैं भ्रात हो ॥ म० ८०६ ॥ एक का राज्य दीना महाबल को करा युधिष्ठिर न्याय। सेवक श्रेणी में समझा तब से दीनी धीरज बंधाय हो ॥ म० ८०७ ॥ नगरी पति न महा स्सव मनाया, घर घर तोरण बंधाया। गजारूढ़ पाण्डव को करके, निज महिलों में लाया हो ॥ म ८ ८ ॥ भोजन कर नृप चाले या विधि, गुण नहीं जावे गाया। कुन्ती सती बस्ती में आई तब से सुख विरसाया हो ॥ म० ८०९ ॥ दीनी सीख तब महाबल तांई तब वह घरे सिधाया। रहे युधिष्ठिर मास बीच में, चहुँ दिशि में यश छाया हो ॥ म० ८१० ॥ एक दिन राय युधिष्ठिर भाव से, एसी बोला वाणी। जब सबक राक्षस को मारा, सब मे दुनिया जाणी हो ॥ म० ८११ ॥ दुर्योधन भा मान गया है पाण्डव जीवें सारा। इस हेतु आज अब निशा में चलें यहीं दिल धारा हा ॥ म० ८१२ ॥ उठ निशा में चले सभी मिल भेद किम नहीं पाया। विषम पथ लांघी भीत सहाय से द्वैत वन में आया हो ॥ म० ८१३ ॥ उस वन के अन्दर रहकर, सिंह व्याघ्र गरजावें। हाथी करे गुलसाट शब्द फिर, रीछ भी नमरा आवे हा ॥ ८१४ ॥ जरख शूकर भी इत उत डोलें अम्बर धूम मचावें। घुग्घू आदि भयानक बोलें जो नहीं कान सुहाय हो ॥ म० ८१५ ॥ तस्कर डाकू पशु लुटेर, छुक कर रहते न्यारे। पथिक जनों का एहाँ इकदक पड़ते उनके लारे हा ॥ म० ८१६ ॥ कई तरह के वृक्ष फलों स लदे पुये हैं महान। एसे

वन के बीच पाण्डव ने कुटी बनाई आन हो ॥ म० ८१७॥ मलिन वसन हैं तन के ऊपर, धूल रही लिपटात। थके चलन के काज इस हेतु, रहते वहीं दिन रात हो ॥ म० ८१८॥ फल फूलादि खाकर मोद से, पहरे वल्कल चीर। अर्हम् प्रभु की करे आराधना, पीवें निर्मल नीर हो ॥ म० ८१६ ॥ दोहा। सावधान करन हित, प्रियवद अनुचर खास। भेजा विदुरजी शीघ्र ही, आया पाण्डव पास ॥म० ८२०॥ इसी समय शीघ्र चल आया, दूत प्रियंवद नाम। पाव लग युधिष्ठिर नृप के, वैठा कर प्रणाम हो। म० ८२१। हस्तिनापुर से चलकर आया, तू है वड़ा मतिमान। पूछे कुशल क्षेम की वातें, निज सेवक को जान हो ॥ म ८२२ ॥ पांडु राय गांगेय विदुरजी, और माता परिवार। गुरु द्रोणादिक नगर लोक के, होंगे कुशल मझार हो ॥ म० ८२३ ॥ उत्तर मे यो कही दूत ने, है कुशल परिवार। गांगेय विदुर पितामह सारे, रहते सुख मझार हो ॥ म० ८२४ ॥ सकल कुटुम्ब है मोद बीच में, मित्रीदिक सब भ्रात। जो पूछी ते सब ही भाखी, कुशल क्षेम की वात हो ॥ ८२५ ॥ हमको तुमने कैसे जाना, द्वैत-वन का वास अग्नि योग से बच जाने की, वात करो प्रकास हो ॥ म० ८२६ ॥ मुख कमल सुन्दर तुम निरखी, हर्षित हो गया आज। साच कहू मैं निज हृदय का, दुख गया सब भाज हो ॥ म० ८२७ ॥ लाख महल जला तब वहा मे, पहुचा था उस वार। गजब हो गया वोले नगर जन, रोवे दे पुकार हो ॥ म० ८२८ ॥ पानी से जब आग बुझाते, पूछा उनके ताईं। उत्तर दीना पाण्डव जल गये, सोच भरा मन माइ हो ॥ म० ८२६ ॥ यो कहा मूर्छित पडा भूमि पर, बात कही नहीं जाय। होय सचेत मुख से यो निकला, दुर्योधन पापी राय हो ॥ ८३० ॥ अति आक्रन्द करीने रोयो, कीना वहु विलाप। हस्तिनापुर जा बात करी जब, सबको हुआ सताप हो ॥ म० ८३१ ॥ पाच पुरुष और नारी दोई, अर्ध जला सा दीठ। दुख हुआ सभी के दिल में, हो गई बात अमीठ हो ॥ म० ८३२ ॥ पांडु प्रमुख बात सुणीने, पडे भूमि मूर्छाई। सावचेत हो आक्रद करते, हाहाकार मचाई हो ॥ म० ८३३ ॥ कौन मनोरथ अब मम पूरे, किस विध रहसी शान। यह आचेती पडी विजली, कैसो

दुख की खान हो ॥ म० ८३४ ॥ विदुर कहे सुनो बात हमारी, बचे न वे रे पूत । वापिस आके राज्य करेंगे दुर्योधन को सूत हो ॥ म० ८३५ ॥ ज्ञानी के हैं वचन ये सागे कुछ न हाथ लगार । इस कारण विश्वास रक्खा तुम संदेह दूर निवार हो ॥ म० ॥ ८३६ ॥ विदुर बात पे धरा धैर्य पर रट सुत क तोड़ । निमित्तक ने भी सार कहा यह, पाण्डव हैं सुख माहें हो ॥ म० ८३७ ॥ पाण्डवों की मृत्यु को सुनकर दुर्योधन हुआ राजी । थोड़े दिनों में मिट गया फन्दा भाल रहा यों पाजी हो ॥ म० ८३८ ॥ एक दिन हस्तिनापुर के माहें पक्षी आयो एक । एक चाका नगरी की सारी, कही बात पर विवेक हो ॥ म० ८३९ ॥ बक ने करा युद्ध वहां भारी, फिर वह हुआ निस्तेज । भीम ने उस को मार गिराया, करा नहीं कुछ सब हा ॥ म० ८४० ॥ सब बात अनुक्रम स भाषी पाण्डव की था सारी । सब ने सुन क हर्ष मनाया कुनब न उस धारी हो ॥ म० ८४१ ॥ पाण्डु दुखा पक्षी से पूछा, कहो सभी वृत्तान्त । जैसी हुई वैसी सब कहदी, अभय किया घर शान्त हो ॥ म० ८४२ ॥ सुख—कुशल की बात सुणी म, पाण्डु बहु हर्षाया । दुर्योधन को नींद न आवे, जब वृत्तान्त सुन पाया हो ॥ म० ८४३ ॥ चिन्तित हो शकुनि को बुलाया दुर्योधन दुर्बुद्धि । पाण्डव जिस दिन मार गिराऊ होगी हृदय की शुद्धि हा ॥ म० ८४४ ॥ देखी उदास दुर्यो मन को शकुनी कहे सुन बात । फिकर कौनसा है वे रे दिल रही कौनसी खांत हो ॥ म० ८४५ ॥ दिन दिन राज ऋद्धि भर बधती बढ़ता तेज विशाप । हुक्म उठावें सब ही तरा, चाहता यश विस्तार हा ॥ म० ८४६ ॥ बात मामाजी सुनो जरा मैं करो ध्यान एक चित्त । पाण्डव बसे द्वैत वन माहें, बचकर रहे जीवित हो ॥ म० ८४७ ॥ स लश्कर को चलें जहां पर, पाण्डव हैं जिस वन में । एक दम धावा वाहें जाकर, करें कत्ल एक दिन में हा ॥ म० ८४८ ॥ शकुनी बोला ठीक बात यह मेरे मन को माहें । इसी लश्कर पाण्डव फिरतो, दुखित होंगे मन माहें हो ॥ म० ८४९ ॥ जब देखेंगे पाण्डव अपन का होगी असूया उनक । आवेंगे व अवश्य जारा में दृग उनके फटक हा ॥ म० ८५० ॥ अपनी सेना समुद्र तुल्य है पाण्डव बूंद समान ।

होगा ख्वार अल्प समय मे, मत कर आर्त्त-ध्यान हो ॥ म० ८५१ ॥ दुर्योधन और शकुनी मिल के, मनसूबा यह ठाया । गुप्त बात विदुर जानकर, मुझको यहां पठाया हो ॥ म० ८५२ ॥ सावधान रहिजो सब कोई, बात भेद की भाखो । विदुर दक्ष ने जो कहा था, मैंने तुम को दाखी हो ॥ म० ८५३ ॥ युधिष्ठिर पूछे फिर दूत से, दुर्योधन वह मानी । न्याय नीति मे कैसे चाले, क्यो कर रक्खे राजधानी हो ॥ म० ८५४ ॥ और बात मे सब ही ठीक है, प्रजा है खुश हाल । आप के मारण ध्येय से पुर में, निन्दे उसकी चाल हो ॥ म० ८५५ ॥ हुआ कष्ट तब मरण सुनकर, मात पिता को भारी । दुर्योधन कपटी यो बोले, मिष्ट वचन उस वारी हो ॥ म० ८५६ ॥ होनहार की बात बनी है, क्यों झुरते दिन रात । मुझको पुत्र अपना कर जानो, सेवा करूंगा तात हो ॥ म० ८५७ ॥ भोजन समय भीम अर्जुन का जो कोई नाम सुनावे । मुख का कवल रहे मुख माई, हाथ का हाथ में रहावे हो ॥ म० ८५८ ॥ सोया रात मे भड़क के बोले, पाण्डव मैंने मारे । भानुमती प्रिया कहे प्रीतम, क्यों तुम झूठ पुकारे हो ॥ म० ८५९ ॥ इत्यादिक करतूत बहुतसी, कहा तक कहे हम बात । तब जीवित की ईर्ष्या माही जलता रहे दिन रात हो ॥ म० ८६० ॥ कहे युधिष्ठिर दूत के तांई, पाण्डुराय मुझ तात । उनके चरणो झुककर कहना, विनययुत मेरी बात हो ॥ म० ८६१ ॥ तुम प्रसाद से हम यहा सब ही, रहते मोद के मांई । चिन्ता मत करना हम ओर की, आप रहो खुशी लाई हो ॥ म० ८६२ ॥ भीष्म और महोपिता हमारे, विदुर और लघु मात । कीजे प्रणाम तू हाथ जोड़ने, विनय युत बहुभाति हो ॥म० ८६३॥ कृपाकर जो विदुर कहलाया, सो सब लीना मान । जाय कहीजे उनके तांई, तू है बुद्धिवान हो ॥ म० ८६४ ॥ उसी समय द्रौपदी वोली, सुनो दूत मुझ बात । दुष्ट दुर्योधन फिर नहीं धाया, लाजे उसकी मात हो ॥ म० ८६५ ॥ केश पकड चोटी के मेरे खेंची सभा में आया । दिया वनवास और क्या चावे, विचार जरा नहीं लाया हो ॥ म० ८६६ ॥ ऐसे सुत को पैदा करके, कुंती भला क्या कीना । शत्रु सम्मुख गाडर हो बैठे, इससे श्रेष्ठ है मरना हो ॥ म० ८६७ ॥ कहे कुंतीजी पुत्रवधू का, कहना है अकसीर ।

भीम कभी नहीं सहन करे पर, युधिष्ठिर क्षमी धीर हो ॥ म० ८६८ ॥ कुन्ती कहे युधिष्ठिर ताईं मन में करो विचार । ऐसी क्षमा करने से तुम्हारी शोभा नहीं लगार हो ॥ म० ८६९ ॥ राजवेष को छोड़ी पुत्रों ! वल्कल लीने धारी । देखो द्रौपदी रानी या भी दुख सहे अपारी हो ॥ म० ८७० ॥ राजमाता की देख अवस्था तुम्हें लाज नहीं आवे । राज कुटुम्ब भिक्षु की भांति, वन में कष्ट उठावे हो ॥ म ८७१ ॥ मात वचन सुन युधिष्ठिर ने उत्तर दीना नाईं । तब तो द्रौपदी ऊँचे स्वर से बोली जोश में आईं हो ॥ म० ८७२ ॥ तापसवत् मत बैठ रहो तुम वा हथियार कर माईं । जो प्रतिज्ञा बाध्य करे तो, दो आज्ञा भ्रात के ताईं हो ॥ म० ८७३ ॥ सुन वचन द्रौपदी के आशांसे भीम अर्जुन झुंझलाया । दुर्योधन आ जाय अभी तो, न जीवे यों सुनाया हो ॥ म० ८७४ ॥ वचन धारा का सुनी युधिष्ठिर, बोला भ्रात के ताईं । ज्यों त्यों वर्ष तेरह का कभी रहे नहीं भाई हो ॥ म० ८७५ ॥ तुमरे वचन हैं क्षत्रियपन के पर इतनी अरदास । मेरे वचन को पार लगा दो, मत करो अरि विनाश हो ॥ म ८७६ ॥ अब किया वचन मान सभी ने तुरत किया प्रयान । सत्य प्रतिज्ञा है दृढ़ इनकी, कर रहे सभी बखान हो ॥ म ८७७ ॥ युधिष्ठिर बोला यहां नहीं रहना, होता कहीं क्लेश । गन्धमादन वन में जा रहवें, है यह उत्तम देश हो ॥ म० ८७८ ॥ प्रस्थान किया शुभ मुहूर्त में फिर पांडव सब ही वहां से । मार्ग बीच में भेंटे मुनीश्वर, ज्ञान प्राप्त किया वहां से ॥ म० ८७९ ॥ व विद्या में प्रकाशक मुनिजी, दर्शन कर सुख पाया । वहां से चल कर गन्धमादन में सुखे-सुखे वहां आया हो ॥ म० ८८० ॥ उस वन बीच कई वृक्ष सघन हैं सुन्दर जिनकी छाया । निर्मल नीर वहां बह रहा दगदग, देख पावे सुख काया हो ॥ म० ८८१ ॥ उसी वन में कुटी बनाई, रहने को सुखदाई । चारों ओर से पुष्प सुगन्ध की, महक रही है भाई हो ॥ म० ८८२ ॥ अर्जुन कहे युधिष्ठिर ताईं, विद्या साधन चित चाया । जो आज्ञा फरमाओ आज तो सुन्दर अवसर आया हो ॥ म० ८८३ ॥ ले आज्ञा इन्द्र कील गिरि पर आसन दृढ़ लगाई । विद्या समरते सुर आ बोला काम कहो हम ताईं हो

हो ॥ म० ८८४ ॥ जब समरू तब वेगी आजे, यू कही उन्हे पठाया। इत पर्वत की छटा देखन हित, मन इनका ललचाया हो ॥ म० ८८५ ॥ ता कारण से घूमे विपिन मे, देखी छटा हर्षाई। गो को खींचता आया सूअर एक. उन पहाडो के माई हो ॥ म० ८८६ ॥ देखी अर्जुन जब धनुष्य चढ़ा के, उसके तीर लगाया। उसी तीर को लेन कारणे, सूकर पासे पुन' आया हो ॥ म० ८८७ ॥ भील एक वहा खडा पुकारे, अर्जुन को चोर बनावे। दीखत को एक भलो आदमी, क्यो नही लज्जा पावे हो ॥ म० ८८८ ॥ बोली पर तकरार होयकर, हुआ युद्ध विकराल। तब अर्जुन ने पकड भील को, दिया भूमि पर डाल हो ॥ म० ८८९ ॥ भील रूप बदली विद्याधर, हुआ नहीं करी वार। माग इच्छित मैं दू तुझ ताई, साहसिक सरदार हो ॥ म० ८९० ॥ पार्थव कहे तू इन्द्र–जालिया, या विद्याधर राज। वह कहे मैंने माया रची थी, तुझ बल देखन काज हो ॥ म० ८९१ ॥ विशालाक्ष विद्याधर का सुत, चन्द्र शिखर मम नाम। मित्रता तुम सग करने खातिर, मैं आया इस ठाम हो ॥ म० ८९२ ॥ वर जो दिया तैने मुझ ताई, लूगा समय पर खास। पर मुझ को यह बात बता द, क्यों आया मुझ पास हो ॥ म० ८९३ ॥ रहू वैताढ्य गिरिपर अर्जुन। रतनपुर मम धाम। जहा है विद्युत् प्रभा राजाजी, प्रजा को अभिराम हो ॥ म० ८९४ ॥ उसके इन्द्र और विद्युन्माली, दो सुत हैं सुखदाई। इन्द्र को दिया राज्य विद्युत् को, दिया युवराज बनाई हो ॥ म० ८९५ ॥ विद्युत्प्रभा सयम ले मुख पर, मुह पत्ति या बाधी। केवल ज्ञान पा गये मोक्ष मे, दश विधि धर्म आराधी हो ॥ म० ८९६ ॥ इन्द्र सुरेन्द्र सम बन प्रजा पर, खासा रोब जमाया। ऐरावत हाथी को कल्पी, फिर लोकपाल बनाया हो ॥ म० ८९७ ॥ सात अनिका सेना की कल्पी, पत्नि को बना इन्द्रानी। अमरावती दे नाम नगरी का, शोभा अधिक बखानी हो ॥ म० ८९८ ॥ विद्युन्माली होय उद्दण्ड नित्य, ताके पर की नारी। नगर लोक से लूटे धन को, हो रहा अत्याचारी हो ॥ म० ८९९ ॥ नागरीक जन सबही राजा से, करबद्ध करे पुकार। विद्युन्माली के जरिये हम सब, दुख पावे सरकार हो ॥ म० ९०० ॥ सुनी अर्जी प्रजा की ध्यान

है दिल में किया विचार । विद्युन्माली का दरा निकाला, दिया तुरत उसधार हा ॥ म० १०१ ॥ पहिङ्कार से विद्युन्माली तब, करी भाव पै रीस । राज्य-भ्रष्ट कर इसको डारूं मारूं विस्वा बीस हो ॥ म १०२ ॥ यों विचार कर वहां स चला फिर आया स्वर्णपुर माई । वहां स्वरदूषण पराक्र रहता राक्षस कुल का आई हा ॥ म० १०३ ॥ निवात कवच है नाम उसी का पदवी पाक सवाई । उसके साथ में करी मित्रता, वैर करी नहीं कांइ हो ॥ म० १०४ ॥ यह राक्षस है निर्भय सब म पूरा है बलवान । जिसके कारण सारी प्रजा फिर, हो रही त्राहि मान हो ॥ म० १०५ ॥ हाथ साधु का एक दम पांच मार जार का जाय । इसी निमित्त से यह मरता है तस साधु इन्सान हो ॥म १०६॥ विद्युन्माली उनसे मिलके लीना पक्ष चढ़ाइ । करे बिगाड़ इन्द्र का आकर, छूट मनसा धाई हो ॥ म० १०७ ॥ पूछा निमित्तिक स इन्दर ने उनसे कही या बात । अर्जुन आने स आये आपदा पाण्डु-पुत्र विख्यात हो ॥ म १०८ ॥ इन्द्र कील गिरि के ऊपर अर्जुन है इस बार । आप्रा आमन्त्रण करा उन ताइ देगें काम सुधार हा ॥ म १ १ ॥ उन बिन मानगा नहीं हरगिज तस वासव पक्षपात । युद्ध में विजय करेंगे व ही निश्चय जान हा ॥ म ११ ॥ अर्जुन को लाभोजी पर उपकारी दु ष्य टालसी ॥ टर ॥ वचन सुनी जोगी का तब तो इन्द्र हुआ खुश हाल । मुझ का पूछा करे यों राजा, तुम जाआ तत्काल हा ॥ म १११ ॥ तरे बिना अर्जुन का यहां पर लाय सके नहीं कोय । तब पिता क साथ मित्रता, उनकी है तू जोय हा ॥ म० ११२ ॥ एक दिन थ सब पितु बन्धन में पाण्डुराय छुड़ाया । यों कही मुझ को भजा यहां पर, चालो अर्जुन राया हा ॥ म० ११३ ॥ चिरकाल अरु पाण्डव नृप क थी प्रीति सवाई । जिसकी साक्षी मूड मुद्रिका, मित्र ! तेरे कर माइ हो ॥ म० ११४ ॥ इमस धाव रूमझे तुरत फिर, नभ पथचारी खास । पाण्डुराव न युधिष्ठिर का बन जाते दीनी तास हा ॥ म० ११५ ॥ प्रभावशाली है यह मुद्रिका रखजो पास हमेशा । इसके सानी की नहीं जग में तुम अर्जुन नरेश हो ॥ म० ११६ ॥ वराह रूप जो मैंने बनाया तब मत वेग्नन काज । किया युद्ध मैंने

तुम सग में, नहीं हटे तुम आज हो ॥ अ० ९१७ ॥ द्रोण-शिष्य है एकाकी तू, अद्भुत बल है थारो । कृपा करीने जल्दी अब इन्द्र की भीड़ पधारो हो ॥ अ० ९१८ ॥ पाण्डुराय ने विशालाक्ष को, जीवित दीना दान । तैसे इन्द्र को देओ दान तुम, चलकर वहा सुजान हो ॥ अ० ९१९ ॥ चन्द्र शेखर के बचन सुणी ने, अर्जुन विस्मित होय । बात सभी है साची इनकी, भेद रक्खू नहीं कोय हो ॥ अ० ९२० ॥ तू है सच्चा भाई मेरा, मिलू हृदय लगाई । युधिष्ठिर सम आज्ञा आप की, मानू शिश चढाई हो ॥ अ० ९२१ ॥ यह मुद्रिका मेरे भ्रात ने, पहनाई मुझ ताई । ज्येष्ठ भ्रात का लघु भ्रात पर, होता स्नेह अधिकाई हो ॥ अ० ९२२ ॥ बैठ विमान चल अब दोनो, गिरि वैताढ्य पर आये । तल तालु को है राजधानी, उसी तरफ को धाये हो ॥ अ० ९२३ ॥ जहां निवात कवच विद्याधर, काल केतु सम जान । अर्जुन आया इन्द्र मदद पर, ऐसा हुआ भान हो ॥ अ० ९२४ ॥ सन्नद्ध बद्ध होवे को राजा, रण-भेरी बजवाई । मार गिराऊ पाण्डु-पुत्र को, इन्द्र जावे शरमाई हो ॥ अ० ॥ ९२५ ॥ दोनो और की आई सेना, रणक्षेत्र के माई । झण्डी फरकते भिड़ गई सेना, युद्ध करन के ताई हो ॥ अ० ९२६ ॥ विद्याधर अर्जुन दोनों ने, बाण खूब वर्षाया । अर्जुन ने बाणों के बल से, अरिदल दूर भगाया हो ॥ अ० ९२७ ॥ शत्रु को गिन गिन के मारा, जो सम्मुख हो आया । हारा पक्ष विद्युन्माली का, पाण्डु-सुत जय पाया हो ॥ अ० ९२८ ॥ करे देव पुष्पो की वृष्टि, जय २ शब्द उच्चारें । इन्द्र खबर पा आया विमान से, जय के लग रहे नारे हो ॥ अ० ९२९ ॥ चन्द्र-शेखर बोला राजा से, है यह अर्जुन खास । करी विजय इन्हीं ने यहां पर, देखो भुज बल तास हो ॥ अ० ९३० ॥ सुन चन्द्र की बात इन्द्र का, हर्षित होगया हिया । उतर विमान से अर्जुन चरण को, शिर से वन्दन किया हो ॥ अ० ९३१ ॥ अर्धासन बैठाय अर्जुन को, कीना बहु सत्कार । करें प्रशसा मुक्त कण्ठ से, आनन्द हुआ इस वार हो ॥ अ० ९३२ ॥ निष्कारण उपकार करीने, मुझ को करा सनाथ । तुम पसाय से मेरा पीछा, राज लगा है हाथ हो ॥ अ० ९३३ ॥ अर्जुन को

बैठा विमान में चन्द्र शेखर ले लार। वैताढ्यगिरि की छटा दिखाई, हर्षा हृदय अपार हो ॥ अ० १३४ ॥ आडम्बर से रथनुपुर लाये, देखे दुनिया सारी। भोजन जिमाय इन्द्र दीनवे परणों राजकुमारी हो ॥ अ० १३५ ॥ मन में प्रमुदय करें हम पाण्डव दिल में करो विमास। ऐसे समय में दिखाई करें किम सांची दी प्रकास हो ॥ अ० १३६ ॥ चित्रांगदादिक राजपुत्र रात अधिक लेके आया। धनुर्वेद की विद्या सिखाओ तुमको गुरु बनाया हो ॥ अ० १३७ ॥ प्रसन्न होय कर धनुर्वेद की विद्या उन्हें सिखाई। विद्या सीख मुदित हुये सब अर्जुन महिमा गाई हो ॥ अ० १३८ ॥ हाथी घोड़ा रथ पालखी, लायें भेंट उस वारी। अर्जुन कहे नहीं भेंट जरूरत, सुणजो बात हमारी हो ॥ अ० १३९ ॥ काम पड़े बुलावें तुम को, अब यहां जल्दी आना। अब आता स मिलूं आयकर, ये विचार दिल ठाना हो ॥ अ० १४० ॥ चन्द्रशेखर को लिया संग में बैठी आप विमान। इन्द्र नृप गया पहुंचाई तुरत गा के निज स्थान हो ॥ अ० १४१ ॥ पाण्डव आय कुंती पग लागा मात परम सुख पाई। हृदय लगाया निज नन्दन को मानू लाख कमाई हो ॥ अ० १४२ ॥ युधिष्ठिर के चरण भेंटने, लीना कण्ठ लगाई। इसी तरह स सभी भ्रात रहे, रोम-रोम हर्षाई हो ॥ अ० १४३ ॥ विद्याधर मुख से विजय की सारी बात सुन पाई। नृपद-सुता का मन विकसाया फूली नहीं समाई हो ॥ अ० १४४ ॥ फिर विद्याधर सीख मांग कर गया वह निज ठाम। पाण्डव सुख स रहें यहां पर गंध-मादन आराम हो ॥ अ० १४५ ॥ दोहा ॥ कमल-फूल के निमित्त मे पाण्डव हो गये फेर। धर्म आराधन योग स मिट गया सारा खेद ॥ १४६ ॥ एक दिन नृपद-सुता गांव में, वायु क प्रसंग। सहस्र-पत्र का कमल पड़ा था, कनक वर्ण सारंग हा ॥ अ० १४७ ॥ मन मुदित हुई देख उसी को, सुन्दर स्वरूप सुवास। भीमसेन को इसी समय में, ऐसी की अरदास हो ॥ अ० १४८ ॥ एसा कमल मुझ का यें लादो भीम लेन दिल जाय। ज्येष्ठ बन्धु की आज्ञा लेन की बात विचारी नाय हो ॥ अ० १४९ ॥ प्रथम

तहा पर, अपशकुनादि जोग । पाण्डव माहोमाही चिन्तवे, क्यों विघ्न होई होय हो ॥ ज० ६५१ ॥ जगत में धर्म बड़ा सुखदाई, धर्म से संकट सब मिट जाय ॥ टेक ॥ अभी तक नहीं आया भीमजी, लाया नहीं कुसुमराय । कहे द्रौपदी चाकर जल्दी, खबर करो महाराय हो ॥ ज० ६५२ ॥ कुटुम्ब साथ ले चले युधिष्ठिर, ढूंढन को वन माहिं । नाले पहाड़ लांघ कर फिर तो, पहुंचे जहां वनराई हो ॥ ज० ६५३ ॥ आगे जाते फिर वहां आई एक सरिता भारी । लांघ सके नहीं उसको सब तो, बोला अर्जुन [illegible] हो ॥ ज० ६५४ ॥ भाई युधिष्ठिर करो न देरी, लो विद्या अजमाई । जिससे परले पार पहुंचें, वचन मानो सुखदाई हो ॥ ज० ६५५ ॥ युधिष्ठिर कहे इस विद्या में नहिं, लेना है कुछ काम । याद करो अब हिडम्बा भाई, करती काम तमाम हो ॥ ज० ६५६ ॥ उसने कहा था याद करे पर, मैं आऊंगी ठीक । कठिन काम को आसान करूंगी, मानो यह तहकीक हो ॥ ज० ६५७ ॥ करते याद हिडम्बा आई, उत्सुक हो तज ठाम । बालक साथ में है उसके फिर, घटोत्कच शुभ नाम हो ॥ ज० ६५८ ॥ युधिष्ठिर कहे हिडम्बा देवी, करो भीम की शोध । नदी पार हमको ले चालो, करो [illegible] हो ॥ ज० ६५९ ॥ लेकर कुटुम्ब को हिडम्बा चाली, विद्या बल के जोर । नदी पार सबको रख दीने, कमल की ठौर हो ॥ ज० ६६० ॥ देख भीम को पहले लाना, [illegible] खुशहाल । दिया फूल द्रौपदी ताई, मिटा सभी जंजाल हो ॥ ज० ६६१ ॥ सासू के पग लागी हिडम्बा, विनय करी विशेष । कुन्ती पोतो हृदय लगा कर, निरख रही अनिमेष हो ॥ ज० ६६२ ॥ भीम-पुत्र को देखो बन्धु, [illegible] । लेकर गोद में बन्धु-पुत्र को, सब ही ने खेलाया हो ॥ ज० ६६३ ॥ राय युधिष्ठिर गोद रमावे, निरख-निरख तनु गात । भीम सरीखा है पुत्र सोभागी, जिससे दीप जात हो ॥ ज० ६६४ ॥ प्रशंसा कर हिडम्बा की [illegible] गई निज धाम । पाण्डव रहे गंधमादन में, सरवर तट अभिराम हो ॥ ज० ६६५ ॥ कमल लेन द्रौपदी ने प्रेरा, भीम गयो सर माहिं । सर से बाहर नहीं निकले भीमजी, [illegible] हो ॥ ज० ६६६ ॥ कहे पुत्र को सुधी लाओ, सर तट पर तुम जाई । देर करो अब जरा न भाई, [illegible] हो ॥ ज० ६६७ ॥

मुझसे सुनो ध्यान धर, कहू सर्व अवदात हो ॥ ज० ६८४। है यथार्थ प्रगट मेरा, हरिणगमेषी नाम । अनुजीवी मैं शक्र इन्द्र का, आयो तुम्हारे काम हो ॥ ज० ६८५ केवल ज्ञान हुआ एक मुनि को, तस महिमा के काज। शक्र इन्द्र जाते हैं वहा पर, सग मे देव समाज हो ॥ ज० ६८६ ॥ तुम ऊपर से होकर निकला, तासे रुका विमान। देखा तुरत जब नीचे तुम को, ठाडी इक चित्त ध्यान हो ॥ ज० ६८७ ॥ अवधि ज्ञान के बल से जाना, पण्डव विरह विचार । मात नार ने कायोत्सर्ग कीना, नौ पद चित्त मे धार हो ॥ ज० ६८८ ॥ भेजा इन्द्र ने यहा पर मुझ को, पाण्डव मेटन पीर । कमल लेन को नारी प्रेरा गयो भीम सरतीर हो ॥ ज० ६८६ ॥ जल क्रीडा करी डुबकी मारी, तोडी कमल की नाल । नागदेव का सरवर था यह, नाग करे रखवाल हो ॥ ज० ६६० ॥ अनुचर नाग के बांधा भीम को, यो पुन भाई चार। य जल्दी बाध पाताल ले गये, जहा पर नागकुमार हो ॥ ज० ६६१ ॥ नागदेव के पास शक्र ने, भेजा मुझे जरूर । जा देखे पाण्डव को मैंन, सकट मे भरपूर हो ॥ ज० ६६२ ॥ नाग-पाश मे बधे हुवे थे, डाल रहे निश्वास। बोल रहे थे देव फिर वे यो, प्राणदण्ड दो खास हो ॥ ज० ६६३ ॥ उसी समय उनके सम्मुख फिर, जा धमका उस वार। इन्द्र हुक्म से मै यहा आया, सुनजो नागकुमार हो ॥ ज० ६६४। तीनों लोक मे जानें इनको, पाण्डव प्रबल जुझार। नागदेव तुम हो यशधारी, इन्द्र खड़े हैं वहार हो ॥ ज० ६६५ ॥ पाण्डव को छोडोगे जब तुम, होगा मार्ग साफ । कुन्ती दुख देखा न्हीं जावे, गुस्ताखी हो माफ हो ॥ ज० ६६६ ॥ सुनकर बातें नागदेव का, हृदय बहु हर्षाया । किये मुक्त बन्धन से तब तो, पाण्डव अति सुख पाया हो ॥ ज० ६६७ ॥ विपनाशक मणि की माला, दीनी नागकुमार । नीलकमल देके पाण्डव का, किया बहु सत्कार हो ॥ ज० ६६८ ॥ वस्त्राभरण देकर बोले, तब रहो हमारे पास। देव कहे इनके रखने से, कुन्ती पावे त्रास हो ॥ ज० ६६६ ॥ करो विदा इस कारण इनको, मत रोको पाताल दीनी सीख नाग ने फिर तो, लायो देव तत्काल हो ॥ ज० १००० ॥ सुर बोला यो सुनो कुंतीजी किया कष्ट का नाश। कुशल-क्षेम मे लाके सोंपे, पुत्र तुम्हारे पास हो

॥१० १॥ गया इन्द्र मुनि चरान दिव मैं भी यहाँ पर जाऊँ। मौर कहूँ हो काय आपका, अभी हुक्म उठाऊँ हो ॥अ० १००२॥ कुन्ती बोली तुमने हम पर करा बहुत उपकार । द्वैत वन में फिर हमारा बहुभाभो परिवार हा ॥ अ० १००३ ॥ भेज दिया द्वैत वन इनको, हरिणगमेषी देव । तुरत गया वह बस करके जहां, इन्द्र करैं मुनि सेव हो ॥ अ० १००४ ॥ कही हकीकत इन्द्र को सब, सुन के हुआ खुशहाल । चौथमल कहे अब आगे की सुणजो बात रसाल हो ॥ अ० १००५ ॥ दोहा ॥ अपकार प्रति उपकार का कर्त्ता दुर्लभ जान । यह गुण पाण्डव में बहु सुनो मित्र धर ध्यान ॥ १ ०६ ॥ चाहे क्रोड़ यतन कर दुर्जन नहीं छोड़े अपनी दुष्टता ॥ टेक ॥ पाच वर्ष पूरा हो आया पाण्डव को वनवास । द्वैतवन में रहे मोद मे करते लील विलास हा ॥ चा० १ ७ ॥ किया विचार था दुर्योधन ने पाण्डव मारण के ताईं । उसी विचार म ले सेना का आया इन वन माईं हो ॥चा० १ ०८॥ बाग बीच में चित्रांगद का आया राज उस बार सीमा रक्षक ने राकी सेना, बोला यों टंकार हा ॥ चा० १० ९ ॥ बिना हुक्म चित्रांगद के तुम, बाग नहीं जा सकते । यदि हौंस कर बढ़ गये आगे जीवित नहीं रह सकते हा ॥ चा० १०१० ॥ सुन दुर्योधन भभका दिल म भरा नयन में राष । कान फगला यहां ध्यान रखना है,तूने जमाइ घोप हो ॥ चा० १०११ ॥ यों कही आगे बढ़ा दुर्योधन घुसा बाग क माईं । महल बीच में डेरा लगाया सुनता किसकी नांइ हा ॥ चा० १०१२ ॥ वन पालक के मना करन पर, उल्टी दीनी त्रास । तब तो जाय सब बात सुनाय, निज स्वामी के पास हा ॥ चा० १० ३ ॥ राजा दुर्योधन वनमें आया दीना बाग नशाइ । आ घुसा वह महल क माईं, चौफेरा सैन्य ठेराईं हो ॥ १ १४ ॥ सुन चित्रांगद को मर आया जोश हृदय के मांय । बिना हुक्म घुस गया सीमा में, समझा मुफ्त का माल हो ॥ चा० १ १५ ॥ सुसज्जित सेना को साथ ले चढ़ आया रणधार । मजा चाखें अब मेरे हाथ का ग्यारह के यह वीर हो ॥ चा० १ १६ ॥ दुर्योधन भी आय भिड़ा फिर कर्ण है जिनके साथ । भूपर खेचर दल बहु भिड़के, सब रह

लगा तीर पग छूट कर्ण के भगा न
बाथो बाथ हो ॥ चा० १०१७ ॥ तीर तोप तलवार शस्त्र मे, हुआ युद्ध वहां भारी । दुश्मन के तीरों मे अब तो, घिर गये
कीनी वारी हो ॥ चा० १०१८ ॥ दुर्योधन नेक खड़ा रहकर, सोच रहा मन माँई । सेना भग गई अपनी जिसमें, हुई विश्रा-
सव भाई हो ॥ चा० १०१९ ॥ क्या धारा क्या बना आन के, बात बनी विपरीत । एक बन्धन में बांधे उनको, जोर चला कछु
धर जीत हो ॥ चा० १०२० ॥ चित्रागद ने शत भ्राता को, रक्खे जेल के माँई । गति कर्म की नहीं जा बरनी, नहीं रहे कर्म लुकाई
नाई हो ॥ चा० १०२१ ॥ दुर्योधन पर यह अनधारा, कष्ट पड़ा तम आई । यों जानी मत बांधो कर्म थे कवि रहा चताई
हो ॥ चा० १०२२ ॥ खाई खोदी पाण्डव के ताँई, स्वत जा पड़े उस माँई । आई दौड़ पाण्डव की ओर वह, करती रुदन
हो ॥ चा० १०२३ ॥ लगी खबर यह दुर्योधन की, पत्नि को उस वार । आती सामने देखी दूर से, एक अबला जाँचार
अपार हो ॥ चा० १०२४ ॥ उसी समय घूमन हित वन मे, जावे द्रौपदी नार । क्यों आई तू बहिन अकेली, दिखती बहुत उदास हो
हो ॥ चा० १०२५ ॥ रानी जानी दुर्योधन की, गई उसी के पास । पकड़ हाथ जब लाई द्रौपदी, निज आश्रम के माय हो
॥ चा० १०२६ ॥ बोल सकी न दुर्योधन रानी, तब करुणा दिल लाय । सुख तेरा क्यों कुम्हलाया है, सारा भेद बताओ हो ॥ चा०
॥ चा० १०२७ ॥ कुन्तीजी आदर दे बोली, बहू अठीने आवो । दुर्योधन प्रमुख भाई सब हैं कुशल के माँई हो ॥ चा० १०२९ ॥
॥ १०२८ ॥ आसु युत नेतर देखीने, पूछे युधिष्ठिर आई । कण्ठ अवरूधनी वह बोली है होय पति की पात हो ॥ चा० १०३० ॥
आसु पूछ कुन्ती माताने, पूछी हितकर वात । द्वैत वन में आये ले लश्कर, संग में सारी समाज हो ॥ चा० १०३१ ॥ शत्रु
एक दिन पतिराज हमारे, गोकुल देखन काज । पकड़ कैद कर डाले जेल में, बीती उनके माँई हो ॥ चा० १ ३२ ॥ खबर पाय गांगेय
चित्रागद विद्याधर ने, शत भ्राता के ताँई । वे कहे पाण्डव काज करे यह, समरथ है जाग माँई हो ॥ चा० १०३३ ॥ इस कारण तू जा वहाँ
द्रौणको, कही बात मैं जाई ।

पर जहाँ हो पाण्डव पथ। हाथ जोड़ बिनती करना था शूर करे भव रथ हो ॥ चा० १०३४ ॥ साधु पुरुष अपकारी पर भी सदा करें उपकार। भीष्म का था वचन सुरगीन भाइ यहाँ इसवार हो ॥ चा० १०३५ ॥ विनय युत हो आपसे मांगू पति भिक्षा मैं आज। बन्धन मुक्त करा यहाँ आकर रक्खो हमारी लाज हो ॥ चा० १०३६ ॥ कुल-दीपक हो कुरु-वंश में अप्रिय-कुल शृंगार। या भानुमती स्वाभ परा हा भज करें हर बार हो ॥ चा० १ ३७ ॥ राजा युधिष्ठिर बोले सब से बात बराबर साँची। नहीं है इसमें शक जरा भी, मत समझो मैं काँपी हो ॥ चा० १०३८ ॥ एकान्त लेय भ्राता को पूछे अब क्या करना चाहिये। दुर्योधन को पकड़ लिया है कैसे अब तुम कहिये हो ॥ चा० १०३९ ॥ जैसा किया वैसा फल पाया कहे भीम भी भाई। अपने जाय छाइयों इसमें हानी कैसी भलाई हो ॥ चा० १०४० ॥ धर्मपुत्र कहे सुणो भ्रात तुम कही बात यह साँच। परस्पर की गणना नाहीं तो व शत अपन पांच हो ॥ चा १०४१ ॥ अन्यशत्रु के सम्मुख अपन हैं एक शत सारा एक। कुरुकुल की यह है प्रवृत्ति, रक्खा सब मिल टेक हो ॥ चा० १०४२ ॥ फतह करो जा वत्स ! धनञ्जय, दुर्योधन छुड़ाओ। यह अवसर दुर्लभ मिलन का जग में सुयश पाओ हो ॥ चा० १ ४३ ॥ अग्रज बन्धु का वचन मानन अर्जुन चला तत्काल। अपने घनिष्ठ मित्र इन्द्र का, लीन वाक्य सँभाल हा ॥ चा० १०४४ ॥ विद्याधरी संग कहलाया इन्द्र को सन्देश। कार्य हित थ भशो मना ना काज दर विशेष हो ॥ चा० १०४५ ॥ वचन सुर्यान देखा मुख से इन्द्र हुआ तैयार। चन्द्रशेखर सेना ले आया करी न कुछ भी बार हा ॥ चा १०४६ ॥ बैठ विमान चले नभपथ से तुरत वहीं पर आया। चित्रांगद भी सम्मुख आकर घोर युद्ध मचाया हा ॥ चा० १०४७ युद्ध करता अर्जुन को चीन्हा, चित्रांगद उस बार। बैर छोड़ गिरा चरणों में ले सारा परिवार हा ॥ चा० १०४८ ॥ भ्रम धरा अर्जुन को संग ले वन-भवन में आया। जहाँ दुर्योधन बन्दी रहने में बिलखत अपन दिल पाया हा ॥ चा० १०४९ ॥ आज हमारा अर्जुन कहीं यों बंधन-मुक्त कराया। गई बात को याद करो मत यों उन्हें समझाया हो ॥ चा

१०५० ॥ दुर्योधन मन मे यों सोचे, अर्जुन मुझे छुडावे । मान गये से मरना अच्छा, कैसे मुंह दिखावे हो ॥ चा० १०५१ ॥
पूछे अर्जुन बात इसी की, कहो चित्रागद राय । दुर्योधन ने क्लेश करने का, कीना कौन उपाय हो ॥ चा० १०५२ ॥ विद्याधर
कहे सुनो वीरवर, एक दिवस के माईं । नारद ऋषि आन के बोला, बात कहू तुझ ताईं हो ॥ चा० १०५३ ॥ धर पाण्डव
पर द्वेष ऋद्धि वह, अपनी दिखाने काज । आय रहा है दुर्योधन वह, ले सग कटक समाज हो ॥ चा० १०५४ ॥ नदन वन की
ओपम जैसा, तुझ बन करा विनाश । ऐसा कहकर तुरत वहा से, उड के गये आकाश हो ॥ चा० १०५५ ॥ तुम से द्वेष रक्खे
वह हरदम, फेर विनाशा वन । यह अपराध सुनी कानों से, क्रोध हुआ उत्पन्न हो ॥ चा० १०५६ ॥ करा घोर सग्राम इसी सग,
मैंने अन्यायी जान । हत प्रहत कर थोड़ी देर में, बाध मिटाया मान हो ॥ चा० १०५७ ॥ इसमे नहीं हुई भुल हमारी, सुनो वात
धर ध्यान । अब कुछ दिन यहा ठहर हमारी, विनय जरा लो मान हो ॥ चा० १०५८ ॥ रहे चार दिन अर्जुन यहां पर, वढ़ा
प्रेम प्रचार । चित्रागद दुर्योधन सग ले, करा प्रयाण उस वार हो ॥ चा० १०५९ ॥ उपकारी तो धन धन वाजे, सब जग मे यश
छावे । नर नारी मिल मगल गावें, हर्ष धरी बधावे हो ॥ चा० १०६० ॥ आया अब उपकारी अर्जुन दुश्मन देखी लाजे ।
नौबत निशान उड़े जोर से, जीत नगारा बाजे हो ॥ चा० १०६१ ॥ विद्याधर अर्जुन प्रसन्न हो, लगे युधिष्ठिर पांय । दुर्योधन
नहीं लगा पाव वह, श्वान-पूंछ के न्याय हो ॥ चा० १०६२ ॥ अभिमानी वह चिन्ते मन में, यह ईश्वर क्या कीना । अर्जुन द्वारा
छोड़ाय मुझ को, कलंक लगाई दीना हो ॥ चा० १०६३ ॥ राजा युधिष्ठिर दुर्योधन से, मिला प्रेम जनाई । मिष्ट वचन से बोल
कर उसका, स्वागत किया हर्षाई हो ॥ चा० १०६४ ॥ चित्रागद कहे सुनो राजवी, दुर्योधन इसवार । मुझ वन नदन वन के सदृश,
इसने करा खुवार हो ॥चा० १०६५॥ वन में एक महल रत्नो का क्रीड़ा काज बनाया । मटिया मेट कर दिया महल को, देख दिल दुख
पाया हो ॥चा० १०६६ ॥ यह छोड़न के योग्य नहीं है, आप इसे छूडाया । मानों जगत के माही प्रभु ने, यश का द्रुम लगाया

पर जहाँ हाँ पाण्डव पथ। हाथ जोड़ बिनती करना था, दर करे मत रथ हो॥ चा० १०३४॥ साधु पुरुष अपकारी पर भी सदा करें उपकार। भीष्म का या वचन सुणीने भाइ यहाँ इसवार हो॥ चा० १०३५॥ विनय युत हा आपसे मांगू पति भिक्षा में आज। बन्धन मुक्त करा यहाँ आकर रक्खो हमारी लाज हो॥ चा० १०३६॥ कुल-दीपक हा कुरु वंश में क्षत्रिय-कुल शृंगार। माँ भानुमती स्वाथ वश हो अर्ज करें हर बार हो॥ चा० १०३७॥ राजा युधिष्ठिर बोले सब स बात बराबर सोंचो। नहीं है इसमें शक जरा भी मत समझो ये ओंची हो॥ चा० १०३८॥ एकान्त सब भ्राता को पूछे अब क्या करना चाहिये। दुर्योधन का पकड़ लिया है कैसे अब तुम कहिये हो॥ चा० १०३९॥ असा किया वसा फल पाया कहे भीम जी भाई। बाय भाइयों इसमें होगी कैसी भलाई हा॥ चा० १०४०॥ धर्मपुत्र कह सुणो भ्रात तुम कही बात यह सोंच। परस्पर की गणना नाहीं तो व शत अपन पांच हो॥ चा १०४१॥ अन्यशत्रु के सम्मुख अपन हैं पच शत सारा एक। कुरुकुल की यह है प्रवृत्ति, राखो सब मिल टेक हो॥ चा० १०४२॥ कहा करो जा वत्स! धनञ्जय, दुर्योधन छुड़ाना। यह अवसर सुलभ मिलन का जग में सुयश पाना हो॥ चा० १ ४३॥ ज्येष्ठ बन्धु का वचन मानने अर्जुन चला तत्काल। अपने घनिष्ठ मित्र इन्द्र का, लीन वाक्य सँभाल हा॥ चा० १०४४॥ विद्याधरी सग कहलाया इन्द्र को सन्देश। कार्य हित व भेजो सेना, ना काज हर विशेष हो॥ चा० १०४५॥ वचन सुणीने रथी मुख स, इन्द्र हुआ तैयार। चन्द्रशेखर सेना ल आया करी न कुछ भी बार हा॥ चा १०४६॥ बैठ विमान चला नभपथ स, तुरत उसी वन आया। चित्रांगद भी सम्मुख आकर घोर युद्ध मचाया हो॥ चा १०४७ युद्ध करता अर्जुन का पीछा, चित्रांगद उस बार। बैर छोड़ गिरा चरणों में ले सारा परिवार हा॥ चा० १०४८॥ भ्रम धरा अर्जुन को सग ले, वन-भवन में आया। जहाँ दुर्योधन बन्दी खाने में विलम्ब वदन दिख पाया हो॥ चा० १०४९॥ भ्रात हमारा अर्जुन कहीं माँ, बन्धन-मुक्त कराया। गई बात को याद करो मत यों उन्हें समझाया हा॥ चा

१०५० ॥ दुर्योधन मन में यों सोचे, अर्जुन मुझे छुडावे । मान गये से मरना अच्छा, कैसे मुंह दिखावे हो ॥ चा० १०५१ ॥ विद्याधर पूछे अर्जुन बात इसी की, कहो चित्रागद राय । दुर्योधन ने क्लेश करने का, कीना कौन उपाय हो ॥ चा० १०५२ ॥ विद्याधर कहे सुनो वीरवर, एक दिवस के माई । नारद ऋषि आन के बोला, बात कहू तुझ ताईं हो ॥ चा० १०५३ ॥ धर पाण्डव पर द्वेष ऋद्धि वह, अपनी दिखाने काज । आय रहा है दुर्योधन वह, ले सग कटक समाज हो ॥ चा० १०५४ ॥ नदन वन की ओपम जैसा, तुझ वन करा विनाश । ऐसा कहकर तुरत वहा से, उड के गये आकाश हो ॥ चा० १०५५ ॥ तुम से द्वेष रक्खे वह हरदम, फेर विनाशा वन । यह अपराध सुनी कानों से, क्रोध हुआ उत्पन्न हो ॥ चा० १०५६ ॥ करा घोर सग्राम इसी सग, मैंने अन्यायी जान । हत प्रहत कर थोड़ी देर में, बाध मिटाया मान हो ॥ चा० १०५७ ॥ इसमे नही हुई भुल हमारी, सुनो बात धर ध्यान । अब कुछ दिन यहा ठहर हमारी, विनय जरा लो मान हो ॥ चा० १०५८ ॥ रहे चार दिन अर्जुन यहा पर, बढ़ा प्रेम प्रचार । चित्रागदं दुर्योधन संग ले, करा प्रयाण उस वार हो ॥ चा० १०५९ ॥ उपकारी तो धन धन बाजे, सब जग मे यश छावे । नर नारी मिल मगल गावें, हर्ष धरी बधावें हो ॥ चा० १०६० ॥ आया अब उपकारी अर्जुन दुश्मन देखी लाजे । नौबत निशान उड़ें जोर से, जीत नगारा बाजे हो ॥ चा० १०६१ ॥ विद्याधर अर्जुन प्रसन्न हो, लगे युधिष्ठिर पाय । दुर्योधन नहीं लगा पांव वह, श्वान-पूछ के न्याय हो ॥ चा० १०६२ ॥ अभिमानी वह चिन्ते मन में, यह ईश्वर क्या कीना । अर्जुन द्वारा छोडाय मुझ को, कलंक लगाई दीना हो ॥ चा० १०६३ ॥ राजा युधिष्ठिर दुर्योधन से, मिला प्रेम जनाई । मिष्ट वचन से बोल कर उसका, स्वागत किया हर्षाई हो ॥ चा० १०६४ ॥ चित्रांगद कहे सुनो राजवी, दुर्योधन इसवार । मुझ वन नदन वन के सदृश, इसने करा खुवार हो ॥ चा० १०६५ ॥ वन में एक महल रत्नो का क्रीड़ा काज बनाया । मटिया मेट कर दिया महल को, देख दिल दुख पाया हो ॥ चा० १०६६ ॥ यह छोड़न के योग्य नहीं है, आप इसे छूडाया । मानों जगत के माहीं प्रभु ने, यश का द्रुम लगाया

हो ॥ चा० १०६७ ॥ चित्रागद से सीख गया घर, दुर्योधन भी आवे । भानुमति अति हर्षित होगई, दुख सभी विसरावे हो ॥ चा० १ ६८ ॥ स सम्मान दुर्योधन ताई, विदा किया उस वार । जाते हुये को राय युधिष्ठिर, बोले इस प्रकार हो ॥ चा० ॥ १ ६६ ॥ पुत्रवत् प्रजा को पाल था करजो जतन शरीर । आनन्द म रीजो निशिदिन यें, रखकर मन में धीर हो ॥ चा ॥ १०७ ॥ विना रुचि स सुन के दुर्योधन हो म हो मिलाई । फिर आया वह अपने शहर को, इन्द्रप्रस्थपुर माई हो ॥ चा० ॥१०७१॥ रहें द्वैत वन में वे पाण्डव सुख में जा दिन रात । एक दिन लश्कर आते देखा सारे पाण्डव भ्रात हो ॥चा०१०७२॥ यह तो कटक चोर का दीसे खबर करो कोई जाय । तुरत पहिचाना ध्वजा—योग से, जयद्रथ है इस माय हो ॥ चा० १०७३ ॥ बाई दुशल्या का पति आया, आया बहुत सवार । आन पहनोई दुर्योधन का किया बहु सत्कार हो ॥ चा० १ ७४ ॥ जयद्रथ कुन्ती क पग नवामें दी आशीष हर्षाय । पाण्डव साला मिले सभी आ आनन्द रंग मचाय हो ॥ चा० १०७५ ॥ हमको खबर मिली नहीं पहले कैसे राज पधारे । पाण्डव पूछे सुनो जयद्रथजी, बोले दिन्न सिवार हो ॥ चा० १ ७६ ॥ जयद्रथ बोला सुनो साहबी इन्द्रप्रस्थ एक मास । रहा यहां में परमानन्द से हुई न कोइ त्रास हो ॥ चा० १०७७ ॥ दुर्योधन ने निज भगिनी को, परणाई मुझ साथ । यहां स विदा हो सुनी आपकी, जाय मिलूं इस हाथ हो ॥ चा० १ ७८ ॥ यों विचार कर आया आज मैं, दरश आप के पाया । दुर्योधन पाण्डव का समझू दो शरीर एक माया हो ॥ चा० १०७६॥ या विधि बात सुनी हर्षाया पाण्डव मन क मांय । कुन्ती पास दुशल्या लागी हृदय लीनी लगाय हो ॥ चा० १०८ ॥ द्रौपदी कौशल्या रहें मोद स, भक्ता करत मन जोय । कपटी के मन बसे कपट नित हृदय शुद्ध नहीं पाय हो ॥ चा० १०८१ ॥ जय द्रथ हृदय बस हलाहल, मुख मीठा ज्यों दाख । देख रहा है मौका ताककर, पाण्डव फसरन पांख हो ॥ चा० १०८२ ॥ एक दिन पाण्डव गये जगल में घूमन को उस वार । फिर क्या था जयद्रथ के लिय आया समय का सार हो ॥ चा०

॥ १०८३ ॥ बैठा द्रौपदी को रथ माहीं, चला दुर्गुण-भण्डार । सती पुकारे पाण्डव दौडो, जल्दी करो वहार हो ॥ चा०
॥ १०८४ ॥ भीम अर्जुन सुन के यो जाना, नारी चोर ले जावे । ले हथियार लगे पीछे तव, कुन्ती वचन सुनावे हो ॥ चा०
॥ १०८५ ॥ कहा दुशल्या विधवा हो जावे, यह मत करना जाया । मात-वचन प्रमाण करी ने, शत्रु के ढिग आया हो
॥ चा० १०८६ ॥ सेना से मार्ग अवरोधा, जयद्रथ बड़ा क्रूर । जाय पहुच सेना के तांई, करी भीम चकचूर हो ॥ चा०
॥ १०८७ ॥ टकार सुनी अर्जुन धनुष्य की, योद्धा हृदय कपाय । भाग निकल जाने की युक्ति, ढूढ रहे मन मांय हो॥चा०
॥ १०८८ ॥ भारी युद्ध करी जयद्रथ को, लिया पशु ज्यों पकड़ी । मस्तक पर से डाल मुकुट को, लाया मात पा जकडी हो
॥ चा० १०८९ ॥ पाच स्थान पर रख के केश को, मस्तक मूडा सारा । किया रूप विरूप जयद्रथ का, नानी मार से मारा
हो ॥ चा० १०९० ॥ विना पहुच के करे काम नर, वह पीछे पछताय । लाज गमाई जयद्रथ राजा, प्रत्यक्ष देखो न्याय हो
॥ चा० १०९१ ॥ हस भीमजी बोले जयद्रथ से, कहो जवाइ राज । रही दहेज में कमी न होगा, और फरमाओ काज हो ॥चा०
॥ १०९२ ॥ द्वेपानल मे जल के बोला, चोटी रक्खी पच खास । केतु-समान तुम को यह होगा पाण्डव करन विनास हो ॥ चा०
॥ १०९३ ॥ ऐसा दुर्वचन कहने पर, भीम गया रिसाई । मारन लगा जयद्रथ को तवतो, युधिष्ठिर दिया बचाई हो ॥ चा० १०९४ ॥
जयद्रथ भाग गया निज घर पर, करा मान का भग । पीछा फिर नही देखा उसने, जैसे काचु भुजग हो ॥ चा० १०९५ ॥ करे अनीति
अगर नर कोई, अन्त मे होत फजीत । मिथ्या पक्ष मे पडके श्रोता, रहा कौन नचीत हो ॥ चा० १०९६ ॥ दोहा ॥ धर्माराधन को
विश्व मे, है प्रत्यक्ष प्रभाव । विघ्नस्थान मगल हुवे, सुनो भव्य धर चाव ॥ १०९७ ॥ विघ्न विडारण मारे विश्व मे, एक दया धर्म है
॥ टेर ॥ चिंता रहित हो एक दिन पाण्डव, बैठे द्वैत वन माई । करे प्रशसा अर्जुन-बल की, युधिष्ठिर मन हर्पाई हो ॥वि०१०९८॥
उसी समय नारद ऋपिजी, चल आये अकस्मात । विठा आसन सन्मान देय कर, पूछे कुशल की बात हो ॥ वि० १०९९ ॥ कहे

भीम नारद ऋषिवर से, भल पधारे आप। दुर्योधन कैसे घर पहुंचा कहो पास तुम साफ हो ॥ वि०१ ० ॥ नारद कहे भीम सन में क्यों दुर्योधन लाड़ा। भजा नगर उसको तुमन यों, आन भाया मैं धोखा हो ॥ वि० ११०१ ॥ अध पथ में पड़ा आय क एक वट की छाया। क्या भूप ज्यों त्यों समझ क, हस्तिनापुर में लाया हो ॥ वि ११०२ ॥ बेडी थी जिस कारस उसक पग दोनों ही सूझ। दुशासन हाथ पकड़ के पास सो भी काया घूमे हो ॥ वि० ११०३ ॥ पाण्डव कौन विध मर तुरत ही यसा करो उपाय। तब धृतराष्ट्र कष्ट दोनों मिल समझावें पितलाय हो ॥ वि० ११०४ ॥ बन्धनमुक्त करा तुम ताई कसा किया उपकार। फिर उनकी मृत्यु तुम चाहो, धिक्-धिक् तुम व्यवहार हो ॥ वि० ११ ५॥ मना करा नहीं माना पापी दोनों छोड़ी फिराय। सारी जनता को जिवलाया करा न डर उस माय हो ॥ वि० ११०६। सात दिवस की इस अवधि में जो काइ इन्सान। प्राण हने पांचों पांडव के दूं उसको सन्मान हो ॥ वि० ११०७॥ हाथी घोड़ा रथ पालखी, दू आधो फिर राज। वह उपकारी मेरा सच्चा, आ सारे मुझ काज हो ॥ वि० ११ ८॥ पुराहित दुर्योधन का जाना सुलोचन है नाम। कारागृह में उसका जलाया, किया भीम ने नास हो ॥वि० ११०९॥ उस के भ्रात ने बदला धन का अपन मन में ठानी। ढोंडी राक दुर्योधन नृप पां आके बोला वानी हा ॥ वि० १११० ॥ कृत्या नाम की राक्षसी विद्या मैंने आराधी आय। भहि-मण्डल को लाय एकदम जो आज्ञा मम पाय हो ॥ वि० १११ ॥ वा ये प रकय कान गिरत में सुना भूप धर ध्यान। सात दिवस में पांचों मारूँ, नहीं चिन्ता का स्थान हो ॥ वि० १११२ ॥ दुर्योधन हर्षित हो उसका किया स्वागत उस बार। मुझ काम करे कुल मेरा, पांचों पाण्डव मार हो ॥वि० १११३॥ दुष्ट समरी राक्षसी विद्या करो होम जप जाप। तुम्हें बेताने आया यहां पर अवन करीडा आप हा ॥ वि १११४ ॥ इतना कहि नारद गय वहां स नभपथ हा कर खास। ऋषिवर क वचनों पर इनको पूरा है विश्वास हो ॥ वि० १११५ ॥ कहें परस्पर पाण्डव अब क्या करना यहां विचार। भीम कह मैं गदा हाथ ले

करूँ युद्ध प्रहार हो ॥वि० १११६॥ मम्मुख जाय हे भ्रात ! कृत्या को, मार करूँ चकचूर। कहे युधिष्ठिर सत्य वचन पर, राक्षसी है क्रूर हो ॥ वि० १११७ ॥ इस कारण से सात दिवस तक, धर्म करा हितकार। जिससे विपदा क्षय हो करके, होगा जय-जयकार हो ॥ वि० १११८ ॥ बात या सब के मन भाई, भ्रात मात अरु नार। सोलह भक्त उपवास एकदम, त्याग दिया चउ आहार हो ॥ वि० १११६ ॥ ब्रह्मचर्य इन्द्रियां वश करके, जपे जाप नवकार। ऐसी उग्र तपस्या धारी, विघ्न विडारण हार हो ॥ वि० ११२० ॥ वीरासन उत्कटिकासन, गो दुग्धासन कोई बार। ले आतापना विशुद्ध भाव से, परमेष्ठी उर धार हो । वि० ११२१ ॥ खडा-खडा अर्जुन एक पग से, विद्या समरे धीर। या विधि षट् दिन पूर्ण होने पर दुर्बल हुआ शरीर हो ॥ वि० ११२२ ॥ दिन सातवे शस्त्र पास ले, किया एकाग्र ध्यान। इतने धूल की आंधी आई, अंधकारमयी जान हो ॥वि० १ २३॥ कोई नर आ बोले यो तानके, कौन खडे यहा आन। जो चाहो तुम कुशल क्षेम तो, जाओ छोड़ यह स्थान हो ॥ वि० ११२४ ॥ धर्मावतसक नामे राजा, यहा रहने हित आवे। भीम जोश खा गदा ले बोले, यहां कोई आन न पावे हो ॥वि० ११२५ ॥ यों कही उन्हें उछाल फेक दिये, इतने सेना आई। लिये घेरी पाचो पाण्डव को, वीरता अपनी बताई हो ॥वि० ११२६ ॥ सुभट हटाये छिन में पाण्डव, दूर उन्हें भगाया। इधर द्रौपदी कुन्ती के ढिग, भव्य मनुष्य एक आया हो ॥वि० ११२७ ॥ दोनो सती डरी मन माई, देख उसी के ताय। पकड़ हाथ जोर से उनका, लीनी अश्व बैठाय हो ॥वि० ११२८॥ रोती द्रौपदी को हर चाला, इत पाण्डव गये आय। रुदन सुनी निज स्त्री का फिर, दौड़े क्रोध भराय हो ॥ वि० ११२६ ॥ उत लश्कर फिर होय इकट्ठा, पाण्डव के हुवे लार। हुआ युद्ध अति जोर का सरे, चले तीर हाथियार हो ॥ वि० ११३० ॥ अर्जुन पीछा करके जोर से, सारी सैन्य भगाई। धर्म पुत्र अब ऐसे बोले, नकुल सहदेव बुलाई हो ॥ वि० ११३१ ॥ सात दिवस का पूर्ण हुआ, चऊ आहार पचखाण। करते युद्ध प्यास मुझ लागी, मानो निकसे प्राण हो ॥ वि० ११३२ ॥ प्रथम जल लाके

भाम मारद ऋषिवर से, भल पधारे भ्राप। दुर्योधन कैसे घर पहुंचा कहो बात तुम साफ हो ॥ वि०१ ०॥ नारद कहे भीम सन ये, क्यों दूर्योधन छाका। भेजा नगर उसको तुमने यों, जान भामा में दीखा हो ॥ वि० ११०१ ॥ मध पथ में पड़ा आय क एक तरु की छाया। क्यों भूप क्यों त्यों समझ क, हास्तिनापुर में लाया हो ॥ वि ११०२ ॥ बेड़ी थी जिस कारण उसके पग दोनों ही सूभ। दुशासन हाथ पकड़ के चाल वो भी काया घूमे हो ॥ वि० ११०३ ॥ पाण्डव कौन विध मरें तुरंत ही ऐसा करो उपाय। सब धृतराष्ट्र कर्ण दानों मिल समझावें पितलाय हो ॥ वि० ११०४ ॥ बन्धनमुक्त करा तुम वाके कैसा किया उपकार। फिर उनकी मृत्यु तुम चाहो, धिक्-धिक् तुम भवतार हो ॥ वि० ११ ५॥ मना करा नहीं माना पापी दीनों आँखी फिराय। सारी जनता को जितलाया करा न डर उस मांय हो ॥ वि० ११०६। सात दिवस की इस अवधि में जो कोइ इन्सान। प्राण हने पाँचों पांडव के दू उसको सम्मान हो ॥ वि० ११०७॥ हाथी घोड़ा रथ पालखी दूं आधो फिर राज। वह उपकारी मेरा सच्चा आ सारे मुझ काज हो ॥ वि० ११ ८॥ पुरोहित दुर्योधन का जाना सुलोचन दे व्यास। लाक्षागृह में उसका जलाया, किया भीम ने नास हो ॥वि० ११०९॥ उसके भ्रात न बदला लेन की अपने मन में ठानी। आँखी रोक दुर्योधन नृप पां आके बोला वानी हो ॥ वि० १११० ॥ कृत्या नाम की राक्षसी विद्या मैंने आराधी जाय। मदि-मदक को त्याग एकदम जो आज्ञा मम पाय हो ॥ वि० १११ ॥ वो ये प बचन कान गिणाव में सुना भूप धर ध्यान। सात दिवस में पाँचों मारूँ, नहीं चिन्ता का स्थान हो ॥ वि० १११२ ॥ दुर्योधन हर्षित हो उसका किया स्वागत उस बार। तुम बिन काम करे कुन मेरा पाँचों पाण्डव मार हो ॥वि० १११३॥ दुष्ट समरी राक्षसी विद्या करी होम जप जाप। तुम्हें बताने आया यहां पर जतन करीजो आप हो ॥ वि ११९४॥ इतना कहि नारद गये वहां से नभपथ हो कर खास। ऋषिवर क वचनों पर इनका पूरा है विश्वास हो ॥ वि० १११५॥ कहें परस्पर पाण्डव अब क्या करना यहां विचार। भीम कहे मैं गदा हाथ ले

मावे नहीं, देख रहा अरिमेख हो ॥ वि० ११४६ ॥ कैसी है कर्मों की गति यह, मुख से कही न जाय । कहां मात, अरु नार कहां है, व्यथा कही नहीं जाय हो ? ॥ वि० ११५० ॥ कैसी नींद मे सोते भ्राता, मुझ एकाकी छोडी । कहा जाऊँ और करूँ कौन विधि ? किसे सुनाऊँ दौडी हो ? ॥ वि० ११५१ ॥ दुर्योधन दु शासन बदले, नहीं लीने हैं भीम । बक, किरमिर, हिडवा वश की, शौर्य वन्त की सीम हो ॥ वि० ११५२ ॥ दुष्ट विद्याधर तैं सब साधे, साधी विद्या-सार । धनुर्वेद की विद्या साधी, करता अरि सहार हो ॥ वि० ११५३ ॥ नारि-केश खींचे थे जिसका, कौन लहेगा बेर । शूरवीर गभीर बात थै, मोचो करी कुछ देर हो ॥ वि० ११५४ ॥ द्रौपदी को अब कौन लायगा, सोये खूँटी ताण । बारह वर्ष तो ज्यो त्यो वीते, रहा वर्ष प्रमाण ॥ वि० ११५५ ॥ समझा था जा जल्दी करेंगे, हस्तिनापुर का राज । दुस्तर समुद्र तिर गये भाई, गोपद डूबे आज हो ॥ वि० ११५६ ॥ मुख दिखाऊ कैसे मातने, जीना ही धिक्कार । विलख विलख कर रोता हूँ मैं, कौन सुने इस वार हो ॥ वि० ११५७ ॥ आय एक वनचर नर बोला, सुनरे बात हमारी । कातर पुरुष की भांति रोवे, कीर्ति न इसमे थारी हो । वि० ११५८॥ पौरुष-हीन क्यो बना तू इतना, खबर न लेवे जाय । चाबुक मार से तेरी नारी, रोती बहु चिल्लाय हो ॥ वि० ११५६ ॥ नारी पति ! पति पुकारे, आओ पतिजी धाय । इस कारण तू शीघ्र दौडके, पराक्रम करी छुड़ाय हो ।वि० ११६०। युधिष्ठिर सोचे पकडी नार ने, जिससे रही पुकार । शीघ्र जायने नार छुडाऊँ, पानी पी इक वार हो ।।वि० ११६१।। आय सरोवर जल को पीना, प्यास मिटी ततखेव । चलते आय गिरे भ्रात ढिग, देखे तमाशा देव हो ।।वि० ११६२।। क्षणमें आख खोली सब देखें, खडी द्रौपदी नार । पानी बीचमे मणिमाला को, पखाली है उस वार हो ।।वि० ११६३।। पांचो पांडव के ऊपर छिड़के निज प्रिया हरबार । पाडव देखके चकित हो कहे, क्या यह स्वप्न विचार हो ।वि०११६४। देखी फिर कुती माता को, पडती आसूधार । करती हवा वस्त्र से सुत पर पास न कोई उस वार हो ।वि० ११६५।। पूछे द्रौपदी को यो युधिष्ठिर, छूटकर कैसे आई । उत्तर मे मैं कहू हकीकत, सुनो थे कान लगाई हो ।।वि० ११६६।। मुझे

तुम पावो सुख पावे भुक्ष काम। पीछे पुत्र करक लोकावें इसमें सन्देह नाय हो ॥ वि० ११३३ ॥ तृषा याग स मुख कुम्हलाया सुध बुध गई बिसराय। जलस्थान की ओर सहदेवजी पानी लेने आय हो॥ वि० ११३४॥ निर्मल जल का सरवर देखी, पानी पिया वहां आई। कमल पत्र में जल ल लौटे गिरे पथ मुर्छाई हो ॥ वि० ११३५ ॥ सहदेव लौट के न आने पर नकुल हुआ तैयार। सर तट ऊपर वे भी पहुंचे पिया नीर उस बार हो ॥ वि० ११३६ ॥ लिया कमल दल पानी भर के चले आये उस ओर। मूर्छित होकर गिरे वहीं पर, भ्रात गिरा जिस ठोर हो ॥ वि ११३७ ॥ क्या कारण है जो जावे सो पीछा लौट नहीं आवे। असमंजस में पड़े अर्जुनजी, चिन्ता न मन में माय हो ॥ वि० ११३८ ॥ अर्जुन आय सरोवर तट पो, मृतवत् दखे भाइ। पानी प्यास से बन्धु मर गये देखो दिन पलटाई हो॥ वि ११३९॥ कर रुदन अर्जुनजी सोच, बिन जल मरसी भ्रात। ता कारण पानी ल आकर करूँ उनको मैं शान्त हो ॥ वि ११४० ॥ पानी पी भर चले वहीं पर गिरे जो दोनों भ्रात। अर्जुन ने भी लाई वो मूर्छा शस्त्र खोलकर माथ हो॥ वि० ११४१ ॥ आज्ञा लय भीमजी आया, पदचिह्न के अनुसार। देख मृत्युवत् तीनों को तब हुआ दुख अपार हो ॥ वि० ११४२॥ साथ ही में आश्चर्य हो आया किसने लूट मान। होम मालूम अभी उसके वो पो दू दीक्षा दान हो॥ वि० ११४३॥ हाय हाय यह हुई कौन विध विलापात यों करते। आस पास नहीं देख किसी को चिन्ता चित्त म परत हा॥ वि० ११४४॥ पानी बिन नहीं जीवे युधिष्ठिर ता कारण जल लाऊँ। जल को पी भर चले सोच क, पाकर भ्रात जिवाऊ हो॥ वि० ११४४॥ तीन गिरे वहीं चौथे ये भी, आकर मूर्छा आवे। तब युधिष्ठिर करे प्रतीक्षा कब भ्रात जल लाव हा॥ वि० ११४६॥ राय युधिष्ठिर चित्त में सोचे अब तक वे नहीं आया। पदचिन्ह से मैं जाऊँ वहां पर लाऊँ भात का साया हो॥ वि० ११४७॥ बन्धव पड दख भूमि पर युधिष्ठिर गये घबराय। सुध रही नहीं लगु की जिनको शक्ति म उनक मोव हो॥ वि ११४८॥ राय युधिष्ठिर [illegible]

मावे नहीं, देख रहा अरिमेख हो ॥ वि० ११४६ ॥ कैसी है कर्मों की गति यह, मुख से कही न जाय । कहा मात, अरु नार कहा है, व्यथा कही नहीं जाय हो ? ॥ वि० ११५० ॥ कैसी नींद में सोते भ्राता, मुझ एकाकी छोडी । कहा जाऊँ और करूं कौन विधि ? किसे सुनाऊँ दौडी हो ? ॥ वि० ११५१ ॥ दुर्योधन दु शासन बल्ले, नहीं लीने हैं भीम । चक्र, किरमिर हिडंबा वश की, शौर्य वन्त की सीम हो ॥ वि० ११५२ ॥ दुष्ट विद्याधर तैं सब मारे, साधी विद्या सार । धनुर्वेद की विद्या मारी, करता अरि सहार हो ॥ वि० ११५३ ॥ नारि-केश खींचे थे जिसका, कौन लहेगा वेर । शूरवीर गंभीर भ्रात थे, मानो करी कुछ देर हो ॥ वि० ११५४ ॥ द्रोपदी को अब कौन लायगा, मोये खूंटी ताण । बारह वर्ष तो ज्यों त्यों बीते, रहा वर्ष प्रमाण ॥ वि० ११५५ ॥ समझा था जो जल्दी करेंगे, हस्तिनापुर का राज । दुस्तर समुद्र तिर गये भाई, गोपद डूबे आज हो ॥ वि० ११५६ ॥ मुख दिखाऊ कैसे मातने, जीना ही धिक्कार । विलख विलख कर रोता हूँ मैं, कौन सुने इस बार हो ॥ वि० ११५७ ॥ आय एक वनचर नर बोला, सुनरे बात हमारी । कातर पुरुष की भाति रोवे, कीर्ति न इसमे थारी हो । वि० ११५८॥ पौरुष-हीन क्यों बना तू इतना, खबर न लेवे जाय । चाबुक मार से तेरी नारी, रोती बहु चिल्लाय हो ॥ वि० ११५९ ॥ नारी पति ! पति पुकारे, आओ पतिजी धाय । इस कारण तू शीघ्र दौडके, पराक्रम करी छुडाय हो ॥वि० ११६०॥ युधिष्ठिर सोचे पकडी नार ने, जिसमें करी पुकार । शीघ्र जायने नार छुडाऊँ, पानी पी इक बार हो ॥वि० ११६१॥ आय सरोवर जल को पीना, ग्याम मिटा तत्क्षण । चलते आय गिरे भ्रात ढिग, देखे तमाशा देव हो ॥वि० ११६२॥ क्षणमें आंख खोली सब देखे, खडी द्रौपदी नार । पानी बीचमें मणिमाला को, पखाली है उस बार हो ॥वि० ११६३॥ पाचो पाडव के ऊपर छिड़के निज प्रिया हरबार । पाडव देखके चकित हो कहे, क्या यह स्वप्न विचार हो ॥वि० ११६४॥ देखी फिर कुती माता को, पडती आसूधार । करती हवा वस्त्र से सुत पर पास न कोई उस वार हो ॥वि० ११६५॥ पूछे द्रौपदी को यो युधिष्ठिर, छूटकर कैसे आई । उत्तर में मैं कहूं हकीकत, सुनो थे कान लगाई हो ॥वि० ११६६॥ मुझे

हरण कर आ स भागा सघन वन क माइ। फिर कहां छोडी मुझको उसने यह स्मरण में नाइ ।।वि० ११६७। मैं एकाकी वनमें फिरती, रोती और बिलखाती। बाला था एक समय यों वनचर उसे रही थी सुनती हो ।। वि० ११६८ ।। युवभ्रष्ट मृगछौवत् डाले सुन ए भोली नार। जो चाहे तू पति–मिलन का अब चल मेरे लार हा ।। वि० ११६६ ।। मुझे सुरक्षित यहां पहुंचाकर फिर सासू को लाया। हम दोनों ने देखे आप को मूर्छा में थी काया हो ।। वि० ११७ ।। मृतक सदृश देख तुम भाई रुदन किया उस बार। इतने म अट्टहास हुआ सुन भय का रहा न पार हा ।। वि० ११७१ ।। मैंन जाना यही राक्षसी, आई है इस ठोर। पति समान गति अब होगी भग जावों किस ओर हो ।। वि ११७२ ।। यों सोचते कृत्या राक्षसी प्रगट हुई तत्काल। श्यामवर्ण और लाल नेत्र हैं जैसे काल कराल हो ।। वि० ११७३ ।। बाढ़ दान्त छुरसि विसव करती मुख से हाक। बिखरे केश शिरके हैं सारे बैठा जिसका नाक हो ।। वि० ११७४ ।। रूप भयंकर धरके हुआ स छुरी हाथ हथियार। खाऊ खाऊ करती आ लपकी आ रुमी तिस बार हो ।। वि ११७५ ।। राक्षसियां हैं बहुत साथ में चपल चलाव नैन। मृत सदृश तुम्ह देख राक्षसी, विकल कहे यों बैन हो ।। वि० ११७६ ।। दुराचन पापी ने मुझको, क्यों भखी इस ठोड़। खान–खाय का केस खाऊ कर करके मैं क्षेड़ हो ।। वि ११७७ ।। वनचर कहे सुनो राक्षसी, ब्राह्मण दुष्ट प्रयोग। तुमको भी धोखे में डालो, यही मारण के जाग हो ।। वि० ११७८ ।। तब तो राक्षसी भभ में उड़कर आ ब्राह्मण को खाया। भल मलाई बुरे बुराई, सुन सबही पाया हा ।। वि० ११८० ।। नहीं समझ में आया क्या है या स्वप्न का माया। सना के कहां गये सुभट वे बादल ज्यों बिरलाया हो ।। वि ११८१ ।। मृतक ज्यों वलीने तुम को, रो उठे उस बार। ध्यान आया तब कपोलस्थल का, देखा निगाह पसार हो ।। वि० ११८२ ।। गुफा है जिसमें बहुत बड़ा हक, सुना मालूमी राज। कमल विकसित रहे जहां तक जीवित

हो पतिराज हो ॥ वि० ११८३ ॥ खास बात यह कही थी नागने, देते समय उस वार । ता कारण नहीं होवे झूठ यह, लो हृदय थैं धार हो ॥ वि० ११८४ ॥ देखो कमल है विकसित सासूजी, या विधि कही मै बात । ता कारण पाण्डव सचेत हैं, नहीं होगा व्याघात हो ॥ वि० ११८५ ॥ इस प्रकार हम सासू बहू के, हुई परस्पर बात । मूर्च्छा कैसे मिटे उपाय जब, ढूढन लगी धर खात हो ॥ वि० ११८६ ॥ उत किरात बोला था प्रेम स, सुनिये द्रौपदी बाल । तव पति-कण्ठ से रत्नमाल को, ले तू जल्दी निकाल हो ॥ वि० ११८७ ॥ पानी बीच पखाल उसे फिर, तन पर डालो छिटे । पाचो पाण्डव होगे होश मे, मूर्छा तन की मेट हों ॥ वि० ११८८ ॥ उसी तरह से हमने करके, जब जल छींटा शरीर । मूर्छा मिट गई तुरत आपकी, उठ बैठे तुम वीर हो ॥ वि० ११८९ ॥ प्रसन्न हो गये तुमको देखी, चित्त की चिन्ता नाशी । धन्य दिन है आज हमारा टली अब सब फांसी हो ॥ वि० ११९० ॥ फिर वह बनचर किधर सिधाया, मिला नहीं कोई ठौड़ । था गुणसागर उपकारी वह, ज्यो मस्तक शिरमौड़ हो ॥ वि० ११९१ ॥ सुन के द्रौपदी की ये बातें, पाण्डव हो गये चकित । मति भ्रम है, इन्द्रजाल या, देव का हुआ निमित्त हो ॥ वि० ११९२ ॥ इतने देव प्रगट हुआ आकर, करता दिशि उद्योत । देव कहे सुन पाण्डव ! धर्म से, मनवाञ्छित फल होत हो ॥ वि० ११९३ तुम सबहीने एकाग्रचित्त से, स्मरा मत्र नवकार । दिन सात की तपस्या से फिर, कर्म होगये छार हो ॥ वि० ११९४ ॥ मैं हू इन्द्र का सेवक खासा, तुम को कष्टित देखे । कृत्या कष्ट मिटाने के हित, लगे समय यह लेखे हो ॥ वि० ११९५ ॥ यों विचार आया मैं यहा पर, सब या मेरी माया । सैना सब ही मैंने बनाई, द्रौपदी ले मैं धाया हो ॥ वि० ११९६ ॥ सरवर-जल विप-तुल्य मैं कीना, तुम रक्षा के काज । उसी जल को पीकर तुम सब, गिरे सरवर आज हो ॥ वि० ११९७ ॥ वह बनचर मुझ को ही जानो, कृत्या से की बात । मरगये, इनको तू क्या खावे, यों हटाई वद जात हो ॥ वि० ११९८ ॥ सुरोचन विप्र ने यह धोखा, दीना तुझ देवी के ताई । सुनकर लौट के मारा विप्र को, दिया नर्क पठाई हो ॥ वि०

हरण कर आ के भागा सघन वन के माइ। फिर कहां खोवी मुझको उसने यह स्मरण में नाईं ॥वि० ११६७॥ मैं एकाकी वनमें फिरती, रोती और चिल्लाती। सोचा था एक समय यों वनचर उसे रही थी सुनती हो ॥ वि० ११६८ ॥ गुणभ्रष्ट मृगजीवन् बोले सुन ए मासी नार। जो चाहे तू पति-मिलन का अब चल मेरे लार हा ॥ वि० ११६९ ॥ मुझे सुरक्षित यहां पहुंचाकर फिर साधु को लाया। हम दोनों ने देखे आप को मूर्छा में भी काया हो ॥ वि० ११७ ॥ मृतक सदृश देख तुम ताईं, रुदन किया उस वार। इतने में अट्टहास हुआ सुन भय का रहा न पार हा ॥ वि० ११७१ ॥ मैंन जाना वही राक्षसी, आई है इस ठार। पति समान गति अब होगी भग जावो किस ओर हो ॥ वि ११७२ ॥ यों सोचत इत्या राक्षसी प्रगट हुई तत्काल। श्यामवर्णी और लाल नेत्र हैं जैसे काल कराल हो ॥ वि० ११७३ ॥ दांत शान्त छुरीसे विकराल करती मुख से हाक। बिखरे केश शिरके हैं सारे बैठा जिसका नाक हो ॥ वि० ११७४ ॥ रूप भयंकर धरके दुष्टा ले छुरी हाथ हथियार। खाऊं खाऊं करती आ लपकी, आ ऊभी तिस वार हा ॥ वि ११७५ ॥ राक्षसियां हैं बहुत साथ में चपल चलावे नैन। मृत सदृश तुम्हें देख राक्षसी, विलख कहे यों वैन हो ॥ वि० ११७६ ॥ दुराचार पापी ने मुझको, क्यों भजी इस ठोड। ध्यान-खाद्य का केस खाऊं कर करक में कोड हो ॥ वि० ११७७ ॥ वनचर कहे सुनो राक्षसी, मायावी दुष्ट अयाग। मुझको भी धोखे में डाली, वही मारण के जाग हो ॥ वि० ११७८ ॥ तब सो राक्षसी नभ में उड़कर का आवरण को लाया। भले भलाई बुरे बुराई, सुन सबही दपाया हो ॥ वि० ११७९ ॥ वनचर नहीं, नहीं है सरवर नहीं है वट की छाया। प्रथम जहां बैठे थे वहीं पर स्वयं बैठे पाया हा ॥ वि० ११८० ॥ नहीं समझ में आया क्या है या स्वप्न की माया। सेना के कहां गये सुभट वे बादल क्यों बिरलाया हो ॥ वि० ११८१ ॥ मृतक ज्यों देखीने तुम को, रो उठे उस वार। ध्यान आया तब कपोतपक्ष का, देखा निगाह पसार हो ॥ वि ११८२ ॥ गुण है जिसमें बहुत बड़ा इक सुना मासूमी राग। कमल विकासित रह जहां तक जीवित

से, चिन्ता है अब नाई हो ॥ वि० १२१६ ॥ एक वर्ष प्रच्छन्न हो रहस्या, अपने नगर विराट । मच्छ भूप की सेवा करस्यां सोची चालते वाट हो ॥ वि० १२१७ ॥ जय, जयवन्त, विजय, जयसेन, जयवल्लभ यो नाम । यो सकेतिक नाम ठहराया, कीना रक्षा हित काम हो ॥ वि० १२१८ ॥ विराट नगर समीप वे आये, जहां है खास मशान । मणि धारी फण धर वहा रहवें, वृक्ष शामली जान हो ॥ वि० १२१९ ॥ फुकार जोर की है जिस कारण, पास कोई नहीं आवे । सदा वहीं पर डटा रहे जो, छेड़े सो फल पावे हो ॥ वि० १२२० ॥ बिल पास में पर्वत था एक, गुफा सहित उसे जान । शस्त्र सभी वहा रक्खे पाण्डव ने, जानी गुप्त स्थान हो ॥ वि० १२२१ ॥ देख एक गुप्त गृह माईं, कुन्ती को ठहराई । समय देख सभालेगे नित्य, ऐसा उसे जिताई हो ॥ वि० १२२२ ॥ द्वादश तिलक बनाया तनु पर जटा, इक लम्बी धोती । पहनी जनोई शरीर मे फिर, काने कुण्डल मोती हो ॥ वि० १२२३ ॥ युधिष्टिर बना विप्र शेष फिर, धारा रूप सब न्यारे । इत उत शहर को देखत फिर वे आये राज द्वारे हो ॥ वि० १२२४ ॥ मच्छराय का हुक्म पायके, सभा बीच में आया । ब्राह्मण देखी प्रणमा राजा, आदर दिया सवाया हो ॥ वि० १२२५ ॥ प्रत्यक्ष दीखे सुरगुरु कोई, आया मुझ दरबार । करत पवित्र आज मुझ ताई, दिल में करे विचार हो ॥ वि० १२२६ ॥ लम्बी भुजा प्रचण्ड बदन है, पाचों का इस वार । लोक देख अचम्भे हुआ, निरखे बारम्बार हो ॥ वि० १२२७ ॥ दे आशिप रहे उभे सामने, वे ब्राह्मण तिसवार । पूछे भूप कहा से आये, बात कहो विस्तार हो ॥ वि० १२२८ ॥ कक नाम का मैं हूॅ ब्राह्मण, धर्मपुत्र का मित्र । प्रोहित कह के मुझे पुकारे, जानू कला विचित्र हो ॥ वि० १२२९ ॥ द्यूत कला मे प्रवीण हूॅ, हर घड़ी मेरी जीत । मच्छ कहे यह मानू कैसे, कबूल करे नहीं चित्त हो ॥ वि० १२३० ॥ धर्मपुत्र का जब तू मित्र है, और द्यूत प्रवीन । तब बोलो वे हारे कैसे, था तू बडा सगीन हो ॥ वि० १२३१ ॥ प्रोहित बोला सुनो राजाजी, मैं नहीं था नृप पास । मेरे होते कब वे हारते, सुनो बात यह खास हो ॥ वि० १२३२ ॥ कपट करी द्यूत वह खेला, जीता दुर्योधन राय । देश

११६६ ॥ धर्म प्रभाव स आज तुम्हारी, मैंने कीनी सहाय । बहुत कष्ट उठाया तुमने, अब दुख सबही जाय हो ॥ वि० १२०० ॥
अब जाता हूं स्वर्ग बीच में सुख रहना तुम प्रसन्न । सहाय करूंगा फिर भी आकर रहकर मैं प्रच्छन्न हो ॥ वि० १२०१ ॥
दिनकर अस्त होने के समय में पाण्डव करें विचार । इनको दुर्योधन दुष्ट पापी ने, कीना कौन प्रकार हो ॥ वि० १२०२ ॥ कृष्णा
का बहु पक्ष मिटाया इनको देव यहां आन । विन स्वारथ उपकार करा दे, धर्म राग पहिचान हो ॥ वि० १२०३ ॥ इस प्रकार
बातो सब करके सारी रैन बिताइ । प्रात होत ही जपे परमेष्ठी इक टक ध्यान लगाई हो ॥ वि० १२०४ ॥ स्नान करीने फिर
द्रौपदी, धनफल लेकर आइ । दिन साथ पारणा कारन, सुरस रसोई पकाइ हो ॥ वि० १२०५ ॥ जीमन को बैठे उस बिरियां, भाव
भावना ताजी । साधु आवें वहरण काज मन हो जाय राजी हो ॥ वि० १२०६ ॥ जैसी मन में होवे भावना, वैसी ही फल
आवे । आये साधुजी वहरन काजे देर्शनें इनाव हो । वि० १२०७ ॥ करी भाव स वन्दन उनको, सप्त पग सामे जाई । रोम
राम हर्षित हो बोले, भले पधारे भाई हो ॥ वि० १२०८ ॥ एक मास का व्रत था मेरे, पारणे तपस्वी राज । आहार लेन आया हूं
यहां पर, और न मेरे काज हो ॥ वि० १२०९ ॥ पाण्डव सुन यह बोला मुनि स, कृपा मेह बरसाया । आज मनोरथ सफल
हुआ मम, दुःख सभी बिरलाया हो ॥ वि० १२१० ॥ शुद्ध भाव से दाना भमणा को स्वच्छ प्रासुक आहार । पंच दिव्य
प्रकट हो सुर यहां कर जय जयकार हो ॥ वि० १२११ ॥ बजी दुन्दभी कंचन बरसे की पुष्प गंध जल धार । धर्म ध्याप
मुनि आहार वहरत शुद्धि हुई उदार हो ॥ वि० १२१२ ॥ करी पारणा यहां स मुनिवर पहुंचे थे निज स्थान । पाण्डव-नार
मात कर भोजन, सुरर पाया बहु मान हो ॥ वि० १२१३ ॥ नभ के बीच में कोई देवता वाक्य ऐसी बाय । अशुभ कर्म टले
बहुतर, इब उदय शुभ आय हो ॥ वि० १२१४ ॥ द्वादश वर्ष जो बीत गये अब वर्ष तेरहवां आया । वेष छिपा विराटनगर
में रहना है सुन भाया हो ॥ वि० १२१५ ॥ युधिष्ठिर की बात मान और रहे ठेल मन गाइ । काल छिन रहकर चल यहां

से आना हुआ तुम्हारा, तब बोली वह बानी हो ॥ वि० १२५० ॥ पांडुराय की रानी द्रौपदी, उनकी दासी जान। स्नान मंजन
कराती प्रेम से, थी कृपा-पात्र महान हो ॥ वि० १२५१ ॥ द्वारकाधीश की भामारानी, रक्खे प्रेम सदाई। राजवश मे बड़ी हुई
मैं, जिससे रूप बहुपाई हो ॥ वि० १२५२ ॥ सपत्नि पाण्डव गये वन में, मैं आई इस ठाम। जाति मालिनी मेरी स्वामिनी,
सैन्ध्री मुझ नाम हो ॥ वि० १२५३ ॥ रानी कहे तुम रहो मोद से, दूँ एक बात जिताई। तेरा रूप यदि पति देखले, आदर दे मुझ
नाई हो ॥ वि० १२५४ ॥ मेरा सोच तू मत कर रानी, मुझ पति विद्याधार। मेरी रक्षा खातिर पाँच यहाँ, रहते चौकीदार हो
॥ वि० १२५५ ॥ बुरी नजर से देखे मुझको, उस के हक़ में हानि। तब रानी हर्षा के रखली, दे आदर मन मानि हो ॥ वि०
१२५६ ॥ प्रोहित-वेष में रहे युधिष्ठिर, भीम रसोई दार, अर्जुन नाट की और सहदेव, फेरे सदा तुखार हो ॥ वि० १२५७ ॥
गोप वेप में नकुल रहते, करें भूप की सेव। नारी हुई वह कृपा-पात्रिका, रानी की नित्य मेव हो ॥ वि० १२५८ ॥ माता कुन्ती
रहे वहाँ पर, राज-भवन ढिग आई। मास ग्यारह प्रच्छन्न बीत गये, खबर न किसने पाई हो ॥ वि० १२५६ ॥ रानी का रहे
भ्रात कीचक वहाँ, देखी द्रौपदी नार। अद्भुत रूप निरख लुभाये, उपजा काम विकार हो ॥ वि० १२६० ॥ मत करो अनीति
कीचक दुख पायो, निश्चय देख लो ॥ टेक ॥ कीचक पापी कुमति विचारी, अशुभ कर्म के योग। कीड़ी के जब पर आ जावें,
निश्चय मरण का जोग हो ॥ म० १२६१ ॥ कीचक ने दूती को भेजी, उस मालिन के पास। जाय दूती यो बोली मालन से, सुनो
बात मुझ खास हो ॥ म० १२६२ ॥ कीचक है नवयुवक प्यारी, बड़ा है सुन्दराकार। मच्छ राजा के खास सालाजी, काम देवउ
निहार हो ॥ म० १२६३ ॥ तुम्हें देख उसके तन माई, काम-ज्वर गया व्याप। स्पर्श तुम्हारा औषधि मिले तो तुरत मिटे सब
ताप हो ॥ म० १२६४ ॥ किस्मत खुल गई दासी तेरी, करो बात प्रमान। क्रोध-वश हो बोली द्रौपदी, रक्खी न उसकी कान हो
॥ म० १२६५ ॥ नाक काट नकटी तुझे करदें, तोभी लगे नहीं पाप। कैसी बात कही मुझे आगे, सुनता हो सताप हो ॥ म० १२६६ ॥

निष्कसा दिया पांचा को बारह वर्ष विताय हो ॥ वि १२३३ ॥ खबर करें उनकी मैं फिर-फिर पता कहीं नहीं पाया । कष्ट-पावन की चिन्ता मेटन पास आपके आया हो ॥वि १२३४॥ मोहित को अपना माहिर कर रख लीना है पास । करी उदारता नृप मत्स्य ने दीना है सुखवास हो । वि० १२३५ ॥ भीम से पूछा आप कौन है ? यह कह सुन महाराय । राय युधिष्ठिर के मैं रहता सूपकार कहलाय हो ॥वि० १२३६॥ पाक विधि में मैं प्रवीण हूं बल्लभ मेरा नाम । मल्ल-युद्ध भी सीखा मैंने, और क्या बताऊं काम हो ॥ वि० १२३७ ॥ सुन के नाम तुम्हारा स्वामी, आया करन मैं सेवा । भोजन बनाऊँगा मैं ताजा खास-खास नित मेवा हो ॥ वि १२३८ ॥ तब हर्षित हो उसको दीना सूपकार का काम । रहो मौज में सदा यहां पर क्या सुना तुम नाम हो ॥ वि० १२३९ ॥ नटी रूप में थी एक सुन्दर जिसका था स्वरूप । एक टकी लगा खड़ी सामने कौन है ? पूछे भूप हो ॥ वि० १२४० ॥ नहीं नार नहीं पुरुष, नृप मैं खण्ड बृहन्नट है नाम । नृत्य-कला और गीत-कला को जानत हूं सब काम हो ॥ वि० १२४१ ॥ तब तो राजा कहे आप भी, सुख रहो यहां मांई । मेरी सुता का कला सिखा के दो प्रवीण बनाइ हो ॥ वि० १२४२ ॥ चाबुक रक्खा है हाथ के मांई कमर बैंधा है खास । राजा पूछे कौन ? कहे धन सुनो भूप विमास हो ॥वि० १२४३॥ नृप युधिष्ठिर के यहां करता अश्वपान का काम । अश्व चिकित्सा माथ निपुण हूं, जानूं काम तमाम हो ॥ वि० १२४४ ॥ सुपुर्द कर दिये अश्व उसी के कर उसका सन्मान । फिर देखा है एक पुरुष का गोप रूप युवान हो ॥ वि १२४५ ॥ पूछा उसको नर यह कौन है ? बोला यह हितकारी । पांडव के गोकुल का सारा, मैं था वां अधिकारी हो ॥ वि० १२४६ ॥ गौ की चर्या मैं करता हूं सब सम्यग् विधि जान । मैथिक मेरा नाम है राजन ! आया कर्म प्रमान हो ॥वि० १२४७॥ दया करी राजा रख लीना, निज गोकुल के मांई । गौ महिपालिक सौंपी उसको करो काम चित लाई हो ॥वि० १२४८॥ सुदरानी नृप के पटरानी सद्गुण की है खान । रूप द्रौपदी को यह बोली, सुना बहिन ! धर ध्यान हो ॥ वि १२४९ ॥ तू नृप-कुल की दीस आवे सुरत देख पहिचानी । कहां

से आना हुआ तुम्हारा, तब बोली वह बानी हो ॥ वि० १२५० ॥ पांडुराय की रानी द्रौपदी, उनकी दासी जान। स्नान मंजन
करातो प्रेम से, थी कृपा-पात्र महान हो ॥ वि० १२५१ ॥ द्वारकाधीश की भामारानी, रक्खे प्रेम सदाई। राजवश मे बडी हुई
मैं, जिससे रूप बहुपाई हो ॥ वि० १२५२ ॥ सपत्नि पाण्डव गये वन में, मै आई इस ठाम। जाति मालिनी मेरी स्वामिनो,
सैन्ध्री मुझ नाम हो ॥ वि० १२५३ ॥ रानी कहे तुम रहो मोद से, दूँ एक बात जिताई। तेरा रूप यदि पति देखले, आदर दे मुझ
नाई हो ॥ वि० १२५४ ॥ मेरा सोच तू मत कर रानी, मुझ पति विद्याधार। मेरी रक्षा खातिर पाँच यहाँ, रहते चौकीदार हो
॥ वि० १२५५ ॥ बुरी नजर से देखे मुझको, उस के हक़ में हानि। तब रानी हर्षा के रखली, दे आदर मन मानि हो ॥ वि०
१२५६ ॥ प्रोहित-वेष में रहे युधिष्ठिर, भीम रसोई दार, अर्जुन नाट की और सहदेव, फेरे सदा तुखार हो ॥ वि० १२५७ ॥
गोप वेष में नकुल रहते, करें भूप की सेव। नारी हुई वह कृपा-पात्रिका, रानी की नित्य मेव हो ॥ वि० १२५८ ॥ माता कुन्ती
रहे वहाँ पर, राज-भवन ढिग आई। मास ग्यारह प्रच्छन्न बीत गये, खबर न किसने पाई हो ॥ वि० १२५६ ॥ रानी का रहे
भ्रात कीचक वहाँ, देखी द्रौपदी नार। अद्भुत रूप निरख लुभाये, उपजा काम विकार हो ॥ वि० १२६० ॥ मत करो अनीति
कीचक दुख पायो, निश्चय देख लो ॥ टेक ॥ कीचक पापी कुमति विचारी, अशुभ कर्म के योग। कीड़ी के जब पर आ जावे,
निश्चय मरण का जोग हो ॥ म० १२६१ ॥ कीचक ने दूती को भेजी, उस मालिन के पास। जाय दूती यो बोली मालन से, सुनो
बात मुझ खास हो ॥ म० १२६२ ॥ कीचक है नवनुवक प्यारी, बडा है सुन्दराकार। मच्छ राजा के खास सालाजी, काम देवउ
निहार हो ॥ म० १२६३ ॥ तुम्हें देख उसके तन माई, काम-ज्वर गया व्याप। स्पर्श तुम्हारा औषधि मिले तो तुरत मिटे सब
ताप हो ॥ म० १२६४ ॥ किस्मत खुल गई दासी तेरी, करो बात प्रमान। क्रोध-वश हो बोली द्रौपदी, रक्खी न उसकी कान हो
॥ म० १२६५ ॥ नाक काट-नकटी तुझे करदें, तोभी लगे नहीं पाप। कैसी बात कही मुझे आगे, सुनता हो सताप हो ॥ म० १२६६ ॥

मुख बिगाड़ दूती आई वापिस सारी बात सुनाई। कीचक सुनकर भया उदास फिर, कब होगी मनचाई हो ।म० १२६७। प्रलोभन की बात कहकर फिर भेजी है दूती। आप मालिन को कही तब तो लाई मुख पर जूती हो ॥ म० १२६८ ॥ एक दिन आता पकड़ी हाथ तब बोली द्रौपदी गात। बिना मौत क्यों मरता पापी पहुँचा तेरा काल हो ॥ म० १२६९ ॥ ऐसा कहकर हाथ छुड़ाके, भागी पग के बाँध। मारी लात पीठ पे पापी फिर उसी के वाम हो ॥ म० १२७० ॥ राज सभा में की पुकार पर राजा सुनी न कान। करती रुदन आ गई भीम पाँ रजनी के दरम्यान हो ॥ म० १२७१ ॥ चुपके जगा बात सब दासी, नयना आँसू डार। ऐसा दुख में कहाँ तक देखूँ, अब तो पति विचार हो ॥ म० १२७२ ॥ सुन के बात द्रौपदी की सारी, भीम सैन कोपाया। नाश करूंगा कीचक को मैं जो कुंती का जाया हो ॥ म० १२७३ ॥ नाट्यशाला अर्जुन की जिसमें, भेज निशा के माई। एकान्त स्थान है उसमें उसको दूंगा फल चखाई हो ॥ म० १२७४ ॥ हे प्यारी ! मत रुदन कर तू, तेरा बदला मैं धारूँ। जा सोऊँगा नाट्य शाला में बस स मार पछाड़ूँ हो ॥ म० १२७५ ॥ दूजे दिन सैरन्ध्री के फिर, कीचक पकड़े हाथ। बोला जोश का सुनिये सैरन्ध्री !, नहीं कोई तब साथ हो ॥ म० १२७६ ॥ दासीपन मिटा के तेरा कर दूंगा मैं रानी। दासी-दास हुक्म में रहेंगे, ले बात मेरी मानी हो ॥ म० १२७७ ॥ अब हस के सैरन्ध्री बोली नाट्यशाला के माई। अर्ध निशा में आके मिलना, मैं भी मिलूंगी वाईं हो ॥म० १२७८॥ रैन अँधेरी जान भीम ने, स्त्री वेष बनाया। इत कीचक नहीं फूला समावे, भूषण-वस्त्र सजाया हो ॥म० १२७९॥ मेवा मिठाई पान फूल फल, लेई निशा में आया। नारी रूप में सोया भीम यह कीचक भेद नहीं पाया हो ॥ म० १२८० ॥ हे प्यारी ! क्यों सो रही अब तो अपनी प्रेम दिखाओ। खड़ा दास यह सम्मुख तेरे, अब तो तुम मुस्काओ हो ॥ म० १२८१ ॥ फिर बदन पर हाथ लगा कर, सोचे मन के माई। कौन कुबुद्धि यहां पर आया यह तो नारी नाईं हो ॥ म० १२८२ ॥ मधुर वचन से बोल भीमजी, आया केम सुजान। बहुत देर हुई है मुझको सुनो मैं जीवन प्राण हो ॥ म० १२८३ ॥ ऐसा कहि उठा भीम

जब, कीचक चीख लगाई। नहीं करूँगा ऐसा कभी मैं, छोड़ो मेरे ताईं हो ॥ म० १२८४ ॥ हाथ पकड़ के डाला जमीं पर, उस
पर घुटने टेके। दूं सजा परनारी की नहीं, छोड़ूँ प्राण बिन लेके हो ॥ म० १२८५ ॥ मार पीट के हाथ पांव को, जकड दिया
मजबूत। फल पाया कीचक ने वैसा, जैसी की करतूत हो ॥म० १२८६॥ मण्डप छत्त को उठा वीच मे, कीचक वहा धर दीना।
कीचक का निकला है किचड़का, कृत कर्म फल लीना हो ॥ म० १२८७ ॥ प्रात भ्रात की मृत्यु देख, शत भाई रुदन मचायो।
कौन दुष्ट ने मारा इसको, पतो रंच नहीं पायो हो ॥ म० १२८८ ॥ अनुचर एक कहे सब ताईं, सुनो हमारी बात। यह चाहता
था मालन ताईं, सोई कराई घात हो ॥ म० १२८९ ॥ मालन और कीचक के तन को, सम्मिलित कर दो दाग। इसी काज से
भ्रात मरा है, करता इस सग राग हो ॥ म० १२९० ॥ कीचक का भ्रात वस्त्र पकड कर, सैन्ध्री को लाया। इस हत्यारन पापिन
ने मम, भ्रात को मरवाया हो ॥ म० १२९१ ॥ रोने लगी द्रौपदी वहा पर, त्राहि-त्राहि कर भारी। भीम कहे जो अवला मारे,
उसकी करूँ खवारी हो ॥ म० १२९२ ॥ कीचक भाई यो फिर बोला, मालन जलावा साथ। दोनों का था प्रेम इसी से, और न
इसका नाथ हो ॥ म० १२९३ ॥ वल्लभ कहे जो इसे जलाओ, रूसेगा भरतार। वैर वधेगा उसके सग मे, देगा कष्ट अपार हो
॥ म० १२९४ ॥ फिर वह बोला झगड़न को जो, इसकी आवे भीर। उनको भी इसके सग जलावां, जो बोले दूं चीर हो ॥ म०
१२९५ ॥ भीम कोप के वृक्ष उपाड़े, सब को मार भगाया। वायु योग अकतूल उडे ज्यों, उन सब ताईं उडाया हो ॥म० १२९६॥
रानी कहे राजा से रोष भर, भ्रात दिया मेरा मार। ता कारण वल्लभ को मारो, करो न इसमे वार हो ॥ म० १२९७ ॥ जो नहीं
लेंगे वैर भ्रात का, मरसूँ फांसी खाय। राजा कहे प्रिये ! धारो धैर्यता, करसूँ वही उपाय हो ॥म० १२९८॥ तव बन्धव के
अनर्थ सहे वे, तेरे प्रेम के ताईं। सामर्थ्यवान् अन्य सहन करे कब ? सोच समझ मन माईं हो ॥ म० १२९९ ॥ इसको
शिक्षा अवश्य करूगा, रख पूरा विश्वास। यों तो यह बलवान अकेला, करदे सेना नास हो ॥ म० १३०० ॥ नृप कर्प्पर

दुख विगत दूती आई वापिस,सारी बात सुनाई। कीचक सुनकर भया उदास फिर कब होगी मनचाह हो।म० १२६७। प्रलोभन की बात कहकर फिर भेजी है दूती। जाय मालिन को कही सब वा न्याह मुख पर जूती हो॥ म० १२६८॥ एक दिन जाता पकड़ी हाथ उन दीनी द्रोपदी गाल। बिना मौत क्यों मरता पापी पहुंचा तेरा काल हो॥ म० १२६९॥ ऐसा कहकर हाथ छुड़ाई, भागी पग के मौंय। मारी लात पीठ पे पापी फिर उसी के जाय हो॥ म० १२७०॥ राज सभा में की पुकार पर राजा सुनी न काम। करती रुदन वा गई भीम पाँ रजनी के दरम्यान हो॥ म० १२७१॥ चुपके जगा पाव सब दागी, नयना आँसू धार। ऐसा दुख में कहाँ तक देखूं, अब तो पति विचार हो॥ म० १२७२॥ सुन के बात द्रोपदी की सारी, भीम सेन कांपाया। नाश करूंगा कीचक को मैं जो कुंती का जाया हो॥ म० १२७३॥ नाट्यशाला अर्जुन की जिसमें, मेज निशा के माह। एकान्त स्थान है उसमें उसको दूंगा फल चखाई हो॥ म० १२७४॥ हे प्यारी! मत रुदन कर तू, तेरा वेष मैं धारूँ। आ साऊंगा नाट्य शाला में, जब स मार पछारूं हो॥ म० १२७५॥ दूस दिन सैरन्ध्री के फिर, कीचक पकड़ हाथ। बाला जारा गया सुनिये सैरन्ध्री!, नहीं कोई अब साथ हा॥ म० १२७६॥ दासीपन मिटा के तरा कर दूंगा मैं रानी। दासी-दास हुक्म में रहेंगे, ले पात मरी मानी हो॥ म० १२७७॥ जब हस के सैरन्ध्री बोली नाट्यशाला के माई। अर्द्ध निशा में आके मिलना, मैं भी मिलूंगी वाई हो॥म० १२७८॥ रैन अंधेरी आन भीम ने, स्त्री वेष बनाया। इत कीचक नहीं फूला समावे, भूषण-वसन सजाया हो॥म० १२७९॥ मेवा मिठाई पान फूल फल, लेई निशा में आया। नारी रूप में सोया भीम यह कीचक भेद नहीं पाया हो॥ म० १२८०॥ हे प्यारी! क्यों सो रही अब ता जल्दी मम दिखाओ। रखा दास यह सम्मुख खड़े, अब तो तम मुस्काओ हो॥ म० १२८१॥ फिर वसन पर हाथ लगा कर, सोचे मन के माई। कौन कुबुद्धि यहां पर आया यह तनु नारी माह हो॥ म० १२८२॥ मधुर वचन से बाल भीमजी, आओ कंथ सुजान। बहुत देर हुई है मुझको, सुनो मैं जीवन प्रान हो॥ म० १२८३॥ एसा कहि उठा भीम

की ताकत भारी । बिना भीम के मार सके नहीं, केवल वही बल धारी हो ॥ क० ॥ १३१७ ॥ बिना शस्त्र से मार गिराया, मेरे योद्धा मल्लको । अत: भीम है निश्चय कुटुम्ब युत, सब ही पूछो दिल को हो ॥ क० ॥ १३१८ ॥ लेकर सैन्य ढूँढन को जावे, जहाँ विराट है राय । मेरे ध्यान मे यही इक आया, सोचो और दिल मांय हो ॥ क० ॥ १३१९ ॥ दक्षिण उत्तरार्द्ध दिशि से गौंको, डाका डाल के लावे । उन गऊओं को छुडाने कारण, पाण्डव चलकर आवे हो ॥ क०॥ १३२० ॥ प्रकट हुए तो द्वादश वर्ष को, फिर भोगो वनवास । गुप्त रहे तो निपट जायेगे, मिट जावे वन त्रास हो ॥ क० ॥ १३२१ ॥ ले सग सैन्य को दुर्योधन फिर, विराट सीम मे आवे । दक्षिण दिशि से गाया हरणकर, डाका डाल ले जावे हो ॥ क० ॥ १३२२ ॥ गोप पुकारे मच्छराय से, जागो छत्तर धारी । आया सुशर्मा जागीरदार वह, ले सेना सग भारी हो ॥ क० ॥ १३२३ ॥ दुर्योधन का है पक्षपाती, गउए हरण की सारी । क्षत्रिय-धर्म विचार गायो को छुडाओ इस बारी हो ॥ क० ॥ १३२४ ॥ मच्छराय कहे गउ-रक्षाहित, अर्पण प्राण है मेरा । सेना ले तत्क्षण वह लपका, जाकर शत्रु को हेरा हो ॥ क० ॥ १३२५ ॥ स्त्री-वेष लख अर्जुन को तज चारों पाण्डव चढिया । सहदेव गुप्त शस्त्र ले जा, अग्र फौज से अडिया हो ॥ क० ॥ १३२६ ॥ मच्छरायने दूत एक भेजयों, उसके साथ कहलाया । सुन कौरव-सेवक सुशर्मा, क्यों तैं वश लजाया हो ॥ क० ॥ १३२७ ॥ वेग गति से जाकर दूतने, ज्यों का त्यो सुनाया । सुशर्मा तू भगकर जाता, कहाँ बचाके काया हो ॥ क० ॥ १३२८ ॥ हे मिजमान ! युद्ध सूखडी, क्यो न जीमकर जावे । भगा जाय तू पूठ दिखाकर, लाज जरा नहीं आवे हो ॥ क० ॥ १३२९ ॥ इतना सुनके किया सामना, क्रोध-वीच में जलता । घोर सग्राम मचा परस्पर, तीर सड़ासड़ चलता हो ॥ क० ॥ १३३० ॥ सेना परास्त होने पर मच्छने, लीने शस्त्र स्वहाथ । लडन लगा स्वय मच्छराया, बनके सेना नाथ हो ॥ क० ॥ १३३१ ॥ दुश्मन-सैन्य की प्रबलता कारण, मच्छको लीना घर । बिठा रथ

दुर्योधन पास है बड़ा मल्ल एक नामी। उसके संग में युद्ध करावो, करदे अन्तर्यामी हो ॥ म १३०१ ॥ अन्न-क्रिया राजा ने कराई, साला की तत्काल। खबर भेज मल्ल को बुलवाया आया सभा में चाल हो ॥म० १३०२॥ नमन करी वह ऊभा सामने, विनवे बारम्बार। है कोई सभा बीच यहां हाजिर मल्ल-उपाधि धार हो ॥ म० १३०३ ॥ जो मुझसे कुश्ती कर सकता मेटूं उसकी खाज। नृप कुम्भेर यों गर्व करी ने बोल रहा है गाज हो ॥म० १३ ४॥ मच्छराय ने अनुचर भेजी, वल्लभ तुर्त बुलाया। मल्ल युद्ध में प्रवीन जो बाजा करो युद्ध सवाया हो ।म० १३०५॥ बात मान किया स्नान दोनों ने मुख में पान चबाया। केसर चन्दन का लेप लगा कर, वपु को अति सजाया हो ॥ म० १३०६। भुजा ठोक फटकारें जोर से, गोल गिर्दे दोड़ फिरता। दोनों आकर भिड़े परस्पर लोग असाहस करता हो ।म० १३ ७। हाथ पेंच कर तुरत भीम ने मल्ल को मार पछारा। दस्त ही पिस कर दिया उसको धर्मी पटक दे मारा हो ।म० १३०८। भीम की जीत हुई सब हर्षे मच्छ राजन् विकसाया। रानी आय पुकार भूप से जीवित वल्लभ रहाया हो ।म० १३०९। रानी को राजा समझावे,अभी चुपकी जो धार। समय पाय वल्लभ मारेंगे अभी में नहीं सार हो ॥ म० १३१० ॥ भीम का यश सुनी भाइयों ने मन उनका हर्षाया। जीत देख द्रौपदी के मन में अतिशय आनन्द पाया हो ॥ म० १३११ ॥ जो हद स्वय शील में होवे क्या कर व्यभिचारी। मनुष्य मदद तो करे अवश्य पर, धर्म करे दरबारी हो ॥ म० १३१२ ॥ पर नारी का संग मत करजो, नहीं तो फिर पछतासो। ऐसी जानकर शील शुद्ध पालो नर तन यें कब पासो हो। म० १३१३ ॥ दोहा ॥ कौरव ने माया रची, पाण्डव होन प्रकाश। निमित्त पायके सत्य का क्यों न होत विनाश हो ॥ १३१४ ॥ कपट की झपट सुनो नरनार, सत्य का होता नहीं बिगार ।टेक। बात वल्लभ की सुन दुर्योधन भाई सेव बुलाया। कर्ण दुःशासन द्रोण गांगेय को, बीतक सही सुनाया हो । क० १३१५ । कुश्ता भी कसा गए उनसे सुयोधन संहारा। वर्ष तेरहवें गुप्त हैं कैसे, निश्चय करन विचारा हो ॥ क० १३१६ ॥ इस कारण भेजा था मल्ल को जिस

सके नहीं, केवल वही बल धारी हो ॥ क० ॥ १३१७ ॥ बिना शस्त्र से मार की ताकत भारी । बिना भीम के मार सके नहीं, केवल वही बल धारी हो ॥ क० ॥१३१८॥ लेकर सैन्य गिराया, मेरे योद्धा मल्लको । अत' भीम है निश्चय कुटुम्ब युत, सब ही पूछो दिल को हो ॥ क० ॥ १३१९ ॥ ढूँढन को जावे, जहाँ विराट है राय । मेरे ध्यान में यही इक आया, सोचो और दिल माय हो ॥ क० ॥ दक्षिण उत्तरार्द्ध दिशि से गौको, डाका डाल के लावे । उन गऊओ को छुडाने कारण, पाण्डव चलकर आवे हो ॥ क०॥ १३२० ॥ प्रकट हुए तो द्वादश वर्ष को, फिर भोगो वनवास । गुप्त रहे तो निपट जायेंगे, मिट जावे वन त्रास हो ॥ क० ॥ १३२१ ॥ ले सग सैन्य को दुर्योधन फिर, विराट सीम मे आवे । दक्षिण दिशि से गॉया हरणकर, डाका डाल ले जावे हो ॥ क० ॥ १३२२ ॥ गोप पुकारे मच्छराय से, जागो छत्तर धारी । आया सुशर्मा जागीरदार वह, ले सेना सग भारी हो ॥ क० ॥ १३२३ ॥ दुर्योधन का है पक्षपाती, गउएं हरण की सारी । क्षत्रिय-धर्म विचार गायो को छुड़ाओ इस बारी हो ॥ क० ॥ १३२४ ॥ मच्छराय कहे गउ-रक्षाहित, अर्पण प्राण है मेरा । सेना ले तत्क्षण वह लपका, जाकर शत्रु को हेरा हो ॥ क० ॥ १३२५ ॥ स्त्री-वेष लख अर्जुन को तज चारों पाण्डव चढ़िया । सहदेव गुप्त शस्त्र ले जा, अग्र फौज से अडिया हो ॥ क० ॥ १३२६ ॥ मच्छरायने दूत एक भेजयों, उसके साथ कहलाया । सुन कौरव-सेवक सुशर्मा, क्यों तैं वश लजाया हो ॥ क० ॥ १३२७ ॥ वेग गति से जाकर दूतने, ज्यों का त्यो सुनाया । सुशर्मा तू भगकर जाता, कहाँ बचाके काया हो ॥ क० ॥ १३२८ ॥ हे मिजमान ! युद्ध सूखडी, क्यो न जीमकर जावे । भगा जाय तू पूठ दिखाकर, लाज जरा नहीं आवे हो ॥ क० ॥ १३२९ ॥ इतना सुनके किया सामना, क्रोध-वीच मे जलता । घोर सग्राम मचा परस्पर, तीर सड़ासड़ चलता हो ॥ क० ॥ १३३० ॥ सेना परास्त होने पर मच्छने, लीने शस्त्र स्वहाथ । लडन लगा स्वयं मच्छराया, बनके सेना नाथ हो ॥ क० ॥ १३३१ ॥ दुश्मन-सैन्य की प्रबलता कारण, मच्छको लीना घर । बिठा रथ

में चला वहाँ से, बजते बाजा ढेर हो ॥ क० ॥ १३३२ ॥ कहता कंक वल्लभ के साँई सुख से रहें जिस पास । वह पकड़ाया दुश्मन हाथ में हवा अपन को त्रास हो ॥ क० ॥ १३३३ ॥ करी बात स्वीकार कंक की वल्लभ महा भट शूर । गदा-प्रहार कर शत्रु रथको तोड़ किया चकचूर हो ॥ क० १३३४ ॥ सुशर्मांने लिया दुःख युद्ध में पराजय की भी मान । जब जिन्दा छोड़ा वह दौड़ गया वह अपने स्थान हो ॥ क० ॥ १३३५ ॥ वल्लभ ने स्वरथ में मत्स्यको पिठा चला उसवार । नृप चिन्त यह पुरुष नहीं है देव स्वरूप अवतार हो ॥ क० ॥ १३३६ ॥ वल्लभ को नृपने बहु माना दीना द्रव्य अपार । आया शहर क माप राजाका, रानी करे विस्तार हो ॥ क० ॥ १३३७ ॥ सुन प्रीतम प्यारा, आश्चर्यकारी मैं दाखूँ बातड़ी ॥ टेर ॥ उत्तर दिशि में दुर्योधन और, भीष्म कृपादि आय । गाय भैंस सब हरण करीने गोपको दिया दबाय हो ॥ सु० १३३८ ॥ भारी सैन्य थी उनके सगमें, जिस से था अहंकार । लगे ग्वाल को पापी मारण किस नहीं दया लगार हो ॥ सु० ॥ १३३९ ॥ कई ग्वाल प्राण बचा के, भाग राज्य में आया । उत्तर राजकुमार सामने सारा हाल सुनाया हो सु० ॥ १३४० ॥ बात सुनकर उत्तर कुँवर को आया क्रोध अपार यदि सारथी कुशल मिले तो, पहुचाऊँ ले पार हो ॥ सु० ॥ १३४१ ॥ मेरे सामने एक दुर्योधन कौन गिनत के माँय । पर नहीं सारथी रथ-विशेष है इस से चित्त अकुलाय हो ॥ सु० ॥ १३४२ ॥ कहे मालन सुना कुँवरजी ! यह बृहन्नट है खाँस । इस जैसा नहीं सारथी जगत में, मत चूको अ चाँस हो ॥ सु० ॥१३४३॥ इसके योग से युद्धजीतोगे, त्यागो मत पंच मान । तब तो कुँवर सारथी कीनो, वचन मालन का मान हो ॥सु ॥१३४४॥ गया एकाकी कुँवर वहाँ पर, जहाँ धाडतीआय । सुनके राजा इसी बात को, मन में अति अकुलाय हो ॥ सु० ॥ १३४५ ॥ विकट सैन्य कहाँ कुरुनृपकी कहाँ मुग्ध उत्तर कुमार । अवश्य आरिदल रूप अग्नि में, ज्यों पतंग हो क्षार हो। ॥सु०॥ १३४६ ॥ यों विचार राजा हुआ चिंतित, सालाधी कहे राय । मत करो सोच जरा तिलभर भी बृहन्नट संग है

ताय हो ॥ सु० ॥ १३४७ ॥ किसी तरह का भय नहीं होगा, निश्चय लो यह धार । जिता कुवर को अभी यहा आवे, देखोगे दीदार हो ।सु०॥१३४८॥ कक प्रोहित आकर बोला, सुनो राजाजी बात । उत्तर कुवर बृहन्नट, आता देर न का लेकर भ्रात हो । सु० ॥ १३४९ । इतने मे उत्तर कुवर और, बृहन्नट दोनो सग । आते देख मच्छराय फिर, हर्षा धरी उमग हो ॥ १३५० । पिता चरण पर झुका कुवरजी, अति हर्ष से आय कैसे युद्ध जीता कहो बेटा, पूछे भिन्न भिन्न राय हो ॥ सु० ॥ १३५१ ॥ कुवर कहे थे सुनो पिताजी, जीतन का यह ढग । दुर्योधन मिल आये उत्तर दिशि, गोपन को किया तग हो ॥ सु० ॥ १३५२ ॥ जब आकर उनने हम ताईं, सूचन किया उसवार । सुनकर-समुद्र के माईं, डुब गया मझधार हो । सु० ॥ १३५३ ॥ मालन के कहने से मैंने, बृहन्नट को लिया संग । बनाया सारथी उसके ताईं, जीतन को जब जंग हो ॥ सु० १३५४ ॥ कौन ठौड वह जाय के अपना, लाया निज हथियार । मुझको कहे तुम देखो तमाशा, मुझ शर का इस बार हो ॥ सु० ॥ १३५५ ॥ पड बैठ बैरी के सन्मुख, फोरन रथ चलाया । देखे शत्रु रूपा कर्णादिक, यमजैसा दर्शाया हो ॥ सु० ॥ १३५६ ॥ हे बृहन्नट ! यह भारी सेना, कैसे जीतू आज । भाग चलो अपन तो यहां से, लेकर अपनी लाज हो ॥ सु० ॥ १३५७ ॥ विराट नृप का तू सुत होकर, क्यो अपकीर्ति चावे । धार धैर्यता शत्रु भगाकर, अपूर्व यश कमावे हो ॥ सु० ॥ १३५८ ॥ बना सारथी मुझे आप, स्त्रीका वेष हटाया । देख वीरता उस समय, मैं तो विस्मय पाया हो ॥ सु० ॥ १३५९ ॥ तीर चलाया बृहन्नट ने ज्यो, बादल नभ मे छाया । करके युद्ध भयकर इसने, कर्ण को वेग हराया हो ॥ सु० ॥ १३६० ॥ आगे चलकर देखा कुवरने, दुर्योधन है राया । संग मे हैं जिनके सब गायां, बचा के जाता काया हो ॥ सु० १३६१ ॥ सुनरे दुर्योधन कहा जाता है, चोरी कर्म तू करके ? ठहर जरा मिजमानी चख ले, पीछे जरा तू फिरके हो ॥ सु० ॥ १३६२ ॥ विद्या समरी युद्ध मचाया, कायर

देख बरोंया। सिंह की भांति टूट पड़ा है यह क्षत्राणी का जाया हो॥ सु० १३६३॥ किसी का छेदे सारा हाथ पग कइ को मार गिराया। भागे बैरी देख वीरता हाहाकार मचाया हो॥ सु०॥ १३६४॥ एक तीर से दुर्योधन का, राज चिह्न गिराया। दूजे तीर बख्तर तोड़ा तीजे धनुष्य नसाया हो॥ १३६५॥ अवरथ लगाम हाथ में लेकर ऐसा रथ दौड़ाया। सुवचन द्वारा दुर्योधन से गोता युध छोड़ाया हो॥ सु०॥ १३६६ वीर बेधक से चाना दुर्योधन अर्जुन को उसबार। धनुर्विद्या और युद्ध विधि में नहीं इसके अनुसार हो॥ सु ॥१३६७॥ दुर्योधन ससैन्य मूर्छित हो ऐसा गैस को छोड़ा। इस गैस से निद्रित होकर भान रहा नहीं थोड़ा हो॥ सु०॥ १३६८॥ उस सेना के शस्त्र पर कर लीना अधिकार। बाकी देरके बाद सब सैना, जगकर हुई हुशियार हो सु०॥ १३६९॥ अपनी एस व्यवस्था सपने लज्जित होगये सार। जाकर मुंह बतावें कैसे, शस्त्र नहीं हैं सार हो॥ सु०॥ १३७०॥ दुर्योधन भी गिरा रथ से उससे मदन भराया। बैठ गया वह चुप चुप रथमें, दिल में बहु शर्माया हो॥ सु० १३७१॥ दयावंत नट है यह ऐसा जैसा नहीं कोई और। दुर्योधनादि को नहीं मारे, धर्मज्ञान दिया जोर हो। सु० १३७२॥ गायुधले आया घर पास सबको यों जितलाया। जाता युद्ध कुमरने भारी अपना नाम छिपाया हा। सु ॥१३७३॥ सुनी वीरता राजकुमर से राजा बहु हर्षाया। क्या रूप में है गुणम्नट पर विद्याधर राया हो॥ सु०॥ १३७४॥ एकाकी इस वीर सुभट ने, शत्रु सभी हटाया। है अस्तह यक्ष का यह भारी, साख्यात दीप सवाया हो॥ सु० १३७५॥ तुरंत शिखंडी का राजा ने लीना पास बुलाय। स्वागत कीना बड़े प्रेम से, हर्षी हृदय लगाय हो॥ सु १३७६॥ सी पप का दूर करीन उत्तम वस्त्र पहनाया। अवरन कर निज सिंहासन पर राजा उसे बिठाया हो॥ सु० १३७७॥ क्या दिवस आज का सुन्दर, जगा हमारा भाग। करी स्तुति बार बार फिर, उपना प्रेम प्रेम अथाग हो॥ सु०॥ १३७८॥ कृपा करीने आप कुमरको दीना जीवित दान। कष्ट रूप सागर से बचाया धन्य तू

दया निधान हो ॥ सु० १३७६ ॥ कक बल्लभ ने मुझे छुडाया, सुशर्मा से खास । पिता पुत्र उऋण नहीं होवे, वने दास का दास हो ॥ सु० १३८० ॥ प्रसन्न होय अर्जुन यो बोले, सुन राजन् मुझ बात । पाण्डुराय के हम नन्दन हैं, पाण्डव पाच विख्यात हो ॥ सु० १३८१ ॥ मालन रूप मे है या द्रौपदी, वृद्धा कुन्ती लो जान । प्रच्छन्न रहे एक वर्ष वरावर, तव पास लो मान हो ॥ सु० १३८२ ॥ मच्छ भूपति प्रसन्न होयने, वस्त्राभरण मँगाया । करवद्ध होकर खड़ा सामने, ऊँचे तखत बिठाया हो ॥ सु० १३८३ ॥ कुन्ती चरण नमीने करे विनती, लो वस्त्रादिक राज । मुझको आप अपना ही समझे, फरमाओ कोई काज हो ॥ सु० १३८४ ॥ कुन्ती द्रौपदी पांचों पाण्डव, हृदय वहुत हर्षाया । वस्त्राभूषण धारण करके, परस्पर प्रेम वढ़ाया हो ॥ सु० १३८५ ॥ नम्र होय फिर बोला राजा, तुम गुण के भण्डार । तुच्छ शब्दों के लिये माफी दो, मुझको तुम इस वार हो ॥ सु० १३८६ ॥ धर्म पुत्र स मच्छ फिर बोला, मुझ पुत्री गुणवान । पाणिग्रहण अर्जुन से करादो, सुनो आप या कान हो ॥ सु० १३८७ ॥ जव अर्जुन कहे मैंने सिखाई, सो मुझ सुता समान । अभिमन्यु के सग मे व्याह दो, सुभद्रा सन्तान हो ॥ सु० १३८८ ॥ राजा ने स्वीकार करी जव, पाण्डव दूत पठाया । नार सुभद्रा हरि अभिमन्यु, आदि को बुलवाया हो ॥ सु० १३८९ ॥ प्रिय कान्ह पधारो, पाण्डव बुलावे अति प्रेम से ॥ टेक ॥ सोरठ देश द्वारिका नगरी, सिरी कृष्ण के पास । आय दूत नत मस्तक होकर, ऐसी की अरदास हो ॥ प्रि० १३९० ॥ राय युधिष्ठिर मुझको भेजा तुम्हें बुलावन काज । वहू सुभद्रा अभिमन्यु को, संग में ले चलो आज हो ॥ प्रि० १३९१ ॥ तेरह वर्ष होने पर प्रगटे, पांचों पाण्डव आय । नगर विराट मे रहे मोद से, ध्यान हरि के माय हो ॥ प्रि० १३९२ ॥ हरि हर्षित हो चले वहां से, लारे ले परिवार । वाजा नौवत वजे जोर से, लश्कर जिनके लार हो ॥ प्रि० १३९३ ॥ आय वाग के बीच उतर गये, जो है नगर के बहार । पाण्डव आय मिले प्रेम से, हृदय हर्ष अपार हो ॥ प्रि० १३९४ ॥ ले परिवार मच्छ-राय भी, पावा लागो आय । आडम्बर से ले गये उनको अपने महल के माय हो ॥ प्रि० १३९५ ॥ कृष्ण अभिमन्यु सुभद्रा,

लग कुन्ती के पांया। भोजन कराया अति प्रेम से उचित स्थान ठहराया हो ॥ प्रि० १३९६ ॥ द्रुपद राजा को बुलवाया, भाया सैन्य ले लार। मिले प्रेम से पांचों पाण्डव करके हर्ष अपार हो ॥ प्रि० १३९७ ॥ गुरु बंधकर हय मनाया मच्छ राय परिवार। रहें मोद में रात दिवस सब, बरते मंगलाचार हो ॥ प्रि० १३९८ ॥ हरी द्रुपद ने वनवास की पूछा सब ही बात। तब मुख दुख की बात सुनाई बीती थी जिस भांत हो ॥ प्रि० १३९९ ॥ अभिमन्यु के संग में मित्रा ब्याहन राजदुलारी। मच्छराय ने करी तैयारी लगन शुभ विचारी हो ॥ प्रि० १४०० ॥ बाने बिठाय अभिमन्यु को, कर रहे मंगलाचार। लग्न दिवस जब बरात चढ़ी है, बाजा के झनकार हो ॥ प्रि० १४०१ ॥ तोरण आय करी विध चोंवरी फेरा दोनों फिरिया। मच्छ राय ने दहेज दिया बहु कर भोजन की तिरियां हो ॥ प्रि० १४ २ ॥ दिया दान बहु याचक जन को नृप ने यश कमाया। कर भोजन नाना भांति के सारा गांव जिमाया हो ॥ प्रि० १४०३ ॥ बढ़ी परस्पर प्रीति भूप के, सब ने हर्ष मनाया। आनन्द से हुआ ब्याह वहां पर नारी मंगल गाया हो ॥ प्रि० १४ ४ ॥ बहुत दिनों तक रह कर लीनी, सीख जा आप मुरारी। चल द्वारिका पाण्डव आदि को, ले संग में दल भारी हो ॥ प्रि० १४०५ ॥ स्वागत कीना हरि का सब ने ले गये नगर मझार। दिया महल पाण्डव को रहने मिला सहु परिवार हो ॥ प्रि० १४०६ ॥ राजा विराट के पास रहकर, कानी छद्मता भारी। पाण्डव के गुण ये तुम धारो, माना सीख हमारी हो ॥ प्रि० १४०७ ॥ दोहा ॥ विदुर के वैराग्य का मिल निमित्त अब आय। यह सम्बन्ध चार्खु सभी सुना मित्र चितलाय हो ॥ प्रि० १४ ८ ॥ भावी नहीं टलसी हरगिज भरत ला धारे सा कर लो ॥ टेक ॥ पाण्डव रहें द्वारिका मांहि, प्रगटी अब पुण्याई। रहे कौनसी कमी उनी के, जिसके कृष्ण सहाइ हो ॥ भा० १४०९ ॥ एक दिन सभा लगाई मिलके करें परस्पर बात। सुभद्रा अर्जुन को परणाई जाकी उत्तम ख्यात हो ॥ भा० १४१ ॥ रही लक्ष्मी भगवती विजया, और रति कुमारी। चारों भ्रात को चारों दे ए समय मिला है भारी हो

॥ भा० १४११ ॥ तब युधिष्ठिर नृप प्रमुख को, परणाई वे वाला। रहे सुख मे सदा वहा पर, मिटा सर्व जजाला हो ॥ भा० १४१२ ॥ एक दिवस में भीम के द्वारा, यादव पति तत्काल। द्रुपद का प्रोहित बुलवाया, जो था दक्ष वाचाल हो ॥ भा० १४१३ ॥ उसको दिया एक लिखित पत्र, दुर्योधन के काज। हस्तिनापुर को जाकर देना, जरा न करजे लाज हो ॥ भा० १४१४ ॥ मणि-लेय पत्र को वहां से चलके, हस्तिनापुर मे आया। राज्य सभा मे आकर प्रथम, आशीर्वाद सुनाया हो ॥ भा० १४१५ ॥ दक्षिण चूड विद्याधर विरचित, देव सभा ज्यों जान। रत्न जडित सिंहासन बैठो, दुर्योधन राजान हो ॥ भा० १४१६ ॥ कृपाचार्य भुजा की ओर विराजे, गगासुत सिरदार। द्रोणाचार्य वामे कर बैठे, अश्वत्थामा भी लार हो ॥ भा० १४१७ ॥ गधारेश मही-और सिंह राजवी, भगदत्त कर्णकुमार। भूरिश्रवा आदि भूपों से, खूब जुड़ा दरबार हो ॥ भा० १४१८ ॥ पति और, नृप सुत का नहीं पार। दु शासन आदि सब देखे, सौ भाई परिवार हो ॥ भा० १४१९ ॥ जुडी सभा ज्यो मानु इन्द्र की, शोभा न वरणी जाय। तारे बीच में शोभे चन्द्रमा, त्यों दुर्योधन राय हो ॥ भा० १४२० ॥ नाटक चेटक राग रग जहां, नाना भाति दिख पाया। विस्मय मन उपजा है उसके, देखी ठाठ सवाया हो ॥ भा० १४२१ ॥ सुन दुर्योधन द्विज कहे यों, कृष्ण हुक्म तुझ ताई। वनचरवत् पाण्डव वन भोगा, कष्ट महा उठाई हो ॥ भा० १४२२ ॥ द्वादश वर्ष प्रकट रह करके, गुप्त रहे वर्ष एक। गोदू समय हुआ है प्रगट, पाली अही जो टेक हो ॥ भा० १४२३ ॥ वचन निभाया उनने अपना, नहीं करी तकरीर। तुम भी अपना पार लगाओ, वचन कहा जो वीर हो ॥ भा० १४२४ ॥ मिलो जाय पाण्डव बन्धु मे, परस्पर प्रेम वढाओ। उनकी राजधानी दे उनको, जग मे यश कमाओ हो ॥ भा० १४२५ ॥ कुटुम्ब साथ मे मेल रक्खो तुम, यह उत्तम आचार। कलह कुटुम्ब सग है नहीं अच्छा, हँसे लोक ससार हो ॥ भा० १४२६ ॥ जो माधव वचन नहीं मानसो, अही हठ अहकार। हानि होगी भारी आपकी, टूटेगा फिर प्यार हो ॥ भा० १४२७ ॥ महाबली पाडव पाचों हें, जगत् बीच

सुंमहर । ताकौं ढलाक मूल से तुमको क्या निकसेगा सार हो ॥ मा १४२८ ॥ नदी तट तरु हद नहीं रहता सतमण पलट ठोड़ । तिस कारण तुम धर्म पुत्र के चरण नमो हट छोड़ हो ॥ मा० १४२९ ॥ प्रथम मिष्ट कटु वचन पीछे, दूत किया भिस साड़ । श्रीकृष्ण ने कहा था वसा, दीने वचन सुनाई हो ॥मा १४३०॥ चढ़ा क्रोध दुर्योधन को अब सुनी प्राहित का मन । पयस में उत्तर यों देता करी भरुण मुख नैन हो ॥मा० १४३१॥ पहले मिष्ट पीछे कटु वाला बाकी रक्खी नाइ । वृतपन स्वामा की भक्ति, तेन सुप बजाइ हो ॥मा० १४३२॥ मारा कंस को अब श्रीकृष्ण ने सौप रण नहीं आया । अब चढ़ा है पान मुझ स सामा सिंह अगाया हो ॥ मा० १४३३ ॥ गोकुल बीच में रमतो फिरता तता मटकी फाड़ । दुर्योधन से आय भिज ता नासगा शिर ताड़ हो ॥मा० १४३४॥ दही दूध को चार क खाया ग्वालन का घमकाइ । ढोर चरानवाला वह क्या, जाने राज के माइ हो ॥ मा० १४३५ ॥ बक कीचक को मीमे मारा दिसा बल प्रबल । जा मुझ स वह भिड़ा युद्ध में मार करूँ शत खंड हो ॥मा० १४३६ ॥ विद्याधरों को उसने हराया कीने अपने दास । उस अर्जुन को तीखे बाण से मार करूँगा नास हो ॥ मा १४३७ ॥ भुजबल से मैंने ले रक्खा, इस धरणी का भार । मुझ स कोई नहीं छीन सकेगा, जो आप करतार हो ॥ मा० १४३८ ॥ सिंह मुख से गर मास छीनन का हौंस करे मति मन्द । यों पाण्डव चाहे उद्यत होगे करु जमर में बन्द हो ॥मा०॥ ॥ १४३९ ॥ रवि-तेज स शशि-ग्रहों की, हो जावो मन्द उद्योत । चींटी क पर जब पर आवे, तब आती है मौत हो ॥ ॥ मा० ॥ १४४० ॥ हरि पाण्डव सी लाख इकट्ठे करें घाणा की चाट । मुझ सेना में यों गल जाय जल में लौन की पोट हो ॥ मा० ॥ १४४१ ॥ शृगाल मृग च जब तक खेलें आय न वाँ वनराज । सिंह पहुँचत हा पशु सारे जाव सब ही भाग हा ॥ मा० ॥ १४४२ ॥ क्या पाण्डव और क्या कृष्णजी, जो हाथें मालफूल । मुझ सामन सब उड़ जाव ज्यों वायु अकतूल हो ॥ मा० ॥ १४४३ ॥ जाके कहना उन पाण्डव को मिथ्या हौंस विसराया । मैंने जोती राज लक्ष्मी

जिसमें रज न दावो हो ॥ भा० ॥ १४४४ । सुनी वार्ता अभिमानी की, बोला दूत सुजान । रे दुर्योधन ! तेरे कथन को, कौन करे प्रमान हो ॥ १४४५ ॥ अभिमान वृथा मत कीजे समझने काज । बिना विचारे किये काज से, पचो मे जा लाज हो ॥ भा० ॥ १४४६ ॥ वृष कर्प्पर मल्ल को मारा, ऐसा भीम बलवान । कौन सामना करे उन्होका, जिस को प्यारा प्रान हो ॥ भा० ॥ १४४७ ॥ चित्रांगद जब तुझको बांधा, देई बहुत सी त्रास । भानुमती गई रोती बिसुरती, पाण्डव राय के पास हो ॥ भा० ॥ १४४८ ॥ अर्जुन आन छोडाया तुझको, भूल गया वह बात । मूर्च्छित करके अस्त्र शस्त्र लिये, मारी तुझको लात हो ॥ भा० ॥ १४४९ ॥ गोहरण समय तुझको छोड़ी, रथ को किया चकचूर । जिन्दा तुझको वहा पर छोड़ा, अब क्या रखता नूर हो ॥ भा० ॥ १४५० ॥ बास नली मे रक्खी डाल के, छ महीना तक भाई । श्वान पूछ की देखो वक्रता, तो भी मिटती नाई हो ॥ भा० ॥ १४५१ ॥ ब्राह्मण की सुन ऐसी वार्ता, राज सभा दरम्यान । करी रिस दुर्योधन बोला, रक्खी न मेरी कान हो ॥ भा० ॥ १४५२ ॥ कोई बोले यह दूत अवध्य है, फिर ब्राह्मण को जायो । किन्तु इसके कटु वाक्य से, सब को कोप भरायो ॥ हो ॥ भा० ॥ १४५२ ॥ एक कहे इसी द्विज की, जीभ कटके मारो । कोई कहे धर्म खाते छोड़ो, मतना अन्य विचारो ॥ भा० ॥ १४५४ ॥ दुर्योधन कहे काढो इसको, धक्का देकर बाहर । आयो दूत अपमानित होकर, जहां श्रीकृष्ण मुरार हो ॥ भा० ॥ १४०६ ॥ श्रीकृष्ण और पाण्डव सन्मुख, सब ही बात सुनाई । दुर्योधन अभिमानी पूरा, बात न माने काई हो ॥ भा० १४५६ ॥ कहे कृष्ण अब निर्दूषित हुवे, दूत भेज कर साफ । करो युद्ध की तैयारी पाण्डव, काढ़ो जसकी भाफ हो ॥ भा० ॥ १४५७ ॥ भीम कहे भूमि जब आवे, शत्रु का शिर भांजा । अर्जुन बोले बिन संग्रामे, धरती लेता लाजा हो ॥ भा० ॥ १४५८ ॥ खींचे वस्त्र द्रौपदी के मिलकर, दुःशासन हर्षाई । उनके प्राण खेंचकर लेंगे, तभी बात सवाई हो ॥ भा० ॥ १४५९ ॥ सर्व कुटुम्ब सहार होयगा, धर्मपुत्र कहे भाई ।

कूप राई के न्याय बात अब कैसी बन यह आई हो ॥ मा० ॥ १४६० ॥ भीमसैन युधिष्ठिर स कहे यों ही अन्य भा रूठे । सत्य बात यह होगा जिनका मन्द भाग्य जो फूटे हो ॥ मा० ॥१४६१॥ आयो सारथी धृतराष्ट्र का सञ्जय उसका नाम । धर्मपुत्र के चरण नमीने, कहे बात तमाम हो ॥१४६२॥ धृतराष्ट्र ने मुझको भेजा कहन ऐसा बैन । प्यारा बान्धव पाण्डव म्हारा, तुम मुझ सांचा सैन हो ॥ मा० ॥ १४६३ ॥ दुर्योधन को बहु समझाया मान नहीं कपूत । तुम युद्ध मत करो मान सो जो राखा परका सूत हो ॥ मा० ॥ १४६४ ॥ पाण्डव कहे कलह करन की, नहीं इच्छा तिलमात्र । राज्य हरण विषाद बढ़ाया, सब तेरे अंग जात हो ॥ १४६५ ॥ पाण्डव की सुनकर के बात फिर इन्द्रप्रस्थपुर आया । धृतराष्ट्र का सञ्जय वचन सब, कही बात सब जाय हो ॥ मा० १४६६ ॥ धृतराष्ट्रने दुर्योधनको अपने पास बुलाया । कही बात यों हितकर उसको, मानों चन्दन या लाया हो ॥ १४६७ ॥ रहो परस्पर हिलमिल सबही दो पाण्डव का राज । युद्ध होने में हानि बहुत सी मतना करो अकाज हो ॥ मा० ॥ १४६८ ॥ तब दुर्योधन क्रोधित होकर, हाथ गही तलवार । निश्चय रास्या इसके योग स, होगा जय जयकार हो ॥ मा० ॥ १४६९ ॥ पाँच अधिष्ठायक हैं इसके, मस्त खसी उस बार । ता कारण पाँचों पाण्डव का रासगी या मार हो ॥ मा० ॥ १४७० ॥ तदनंतर मारेगा हरिको, और का कर संहार । साथ भौमपर मुझरा होगा, जोसे भरा संसार हो ॥ मा० ॥ १४७१ ॥ सञ्जय मिला है आय अरि स इसको बाहर कढ़ाओ । बात करे शत्रु की खिसस, रसना तुरत कटाओ हो ॥ मा० ॥ १४७२ ॥ विदुरजी न दुर्योधन ताइ, भिन्न भिन्न स समझाया । माना जरा तुम हठ का छोड़ो करो न मन का चाया हो ॥ मा० ॥ १४७३ ॥ जाना यों गृह-युद्ध होयगा तब चल घर पर आया । अनित्य जान संसार विदुरजी सब स मोह छिटकाया हो ॥ मा० ॥ १४७४ ॥ विश्वकीर्ति नामा आचारज, आये जब चौमासी । चारित्र लिया उनके पास सुन वीतराग की वानी हो ॥ मा० ॥ १४७५ ॥ देखो विदुरजी पाप स डरकर लीना संयम भार ।
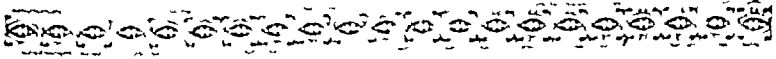
धन्य धन्य यों बोले सकल जन, अपना किया उद्धार हो ॥ भा० ॥ १४७६ ॥ मुख पर बान्धी आप मुँहपत्ती, जीव दया के हेत। गुरु शिक्षायुत् सयम पाले, समिति गुप्ति समेत हो ॥ भा० ॥ १४७७ ॥ एक दिन श्रीकृष्ण मुरारी, लेकर सेना लार। आये हस्थिनापुर सभा बीच, जहा जुडा खास दरबार हो ॥ भा० । १४७८ ॥ भीष्मादि से कृष्ण यों बोले दो पाण्डवने राज। वचन निभाओ अपना सब मिल, जो चाहो सुख साज हो ॥ भा० । १४७९ ॥ भीष्म कहे ये सुनो श्रीकृष्णजी, आप कही सो ठीक। जरा दुर्योधन को समझा दो, नहीं छोडे वो लीक हो ॥ भा० ॥ १४८० ॥ तब श्रीकृष्ण दुर्योधन तॉई, समझावे हित-लाई। पॉच गॉव भी दो पाण्डव को, सधि देऊँ कराई हो ॥ भा० ॥ १४८१ ॥ प्रथम कुस्थल दूजा वृक्षस्थल, तीजा माकन्दी जान। चौथा वारणावत पॉचवॉ, हस्थिनापुर को स्थान हो ॥ भा० ॥ १४८२ ॥ दुर्योधन कहे सुनो कृष्णजी, सुई-अग्र प्रमान। भूमि नहीं दूँ उनको हरगिज, सुनो थें देकर कान हो ॥ भा० ॥ १४८३ ॥ विना युद्ध करके जो मेरी हौंस न पूरी होय। दुर्योधन मरने पर फिरतो, राज्य करो हर कोय हो ॥ भा० ॥ १४८४ ॥ कृष्ण कहे मैं कहूँ सॉच तू, दुर्योधन सुन बात। दुष्ट वचन मुख से थें बोला, होगा तेरी घात हो ॥ भा० १४८५ ॥ होनहार के अनुसार ही, वचन निकसे सोय। ब्रह्मा विष्णु महेश देव भी, टाल सके नहीं कोय हो ॥ भा० ॥ १४८६ ॥ वचन सुनकर दुर्योधन के, कृष्ण भये कोपित। तब भीष्मजी कहे नम्र हो, तब आज्ञा लोपित हो ॥ भा० ॥ १४८७ ॥ करे क्या हम दुर्योधन की, प्रकृति हो गई ऐसी। युद्ध करके बात गमासी, होगई बुद्धि वैसी हो ॥ भा० ॥ १४८८ ॥ आप दयालु हो जिस कारण, कहते आप के तॉई। युद्ध बीच मे आप न उतरे, करुणा हम पर लाई हो ॥ भा० ॥ १४८९ ॥ पाण्डव हैं जग बीच में योद्धा, शूरवीर रणधीर। पक्ष खेच पांडव की मतना, आओ उनकी भीर हो ॥ भा० ॥ १४९० ॥ भीष्म वचन मान हरि बोले, नहीं करूं सग्राम। पार्थव सहायक बनी उन्होंका, साधूंगा सब काम हो ॥ भा० ॥ १४९१ ॥ बात सुनी माधव की भीष्म, भीष्म गया निज स्थान। तदनु कृष्णजी कर्ण के तॉई, बोले बान्धव जान हो ॥

मा० ॥ १४९२ ॥ ले एकान्त कहे उसके सौंई तु कुन्ती भगवान । कहा भुवा ने मेरे आगे, वेरा सब हाजात हो ॥मा० ॥१४९३॥ राधा का सुत नहीं हैं भाइ नदी प्रवाह मे पाया । हीरा-खान में हीरा होवे, समझो चित्त में माया हो ॥ मा० ॥ १४९४ ॥ कुल क्षय कारक रे दुर्योधन दुर्गुण को भंडार । तुझ से गुणी का इस दुर्जन पॉ, रहना नहीं सगार हो ॥ मा० ॥ १४९५ ॥ कर्ण हृदय म अति हर्षाया सुनी भ्रात की बात । सॉची मानी सब ही बाता झूठ नहीं तिलमात हा ॥ मा० ॥ १४९६ ॥ छत्र चॅवर सुत मुझको दीना नगरी चंपा का राज । फिर बन्धन कर मुझको थापा बड़ा मस-समाज हा ॥ मा० ॥ १४९७ ॥ इनको मैं हरगिज नहीं छोड़ूँ स्वामी धर्म प्रमान । दुर्योधन के कारण हरिजी ! प्राण करूँ कुरबान हा ॥ मा ॥ १४९८ ॥ चार बन्धु है प्राण प्रिय मम करूं न उनकी घात । मुझ वैरी अर्जुन को मारूँ छोडूँ नहीं किया भॉत हु ॥ मा० ॥ १४९९ ॥ युद्ध बीच अर्जुन को मारी, मै बनसूँ वस ठोड । मात को कहना जाके तुम यह मेरे, मन का कोड हो ॥ मा० ॥ १५०० ॥ इतना कहकर कर्ण वहां स, अपने घर पर आया । इव हरिजी पाण्डु नृपपा, भाक हाल सुनाया हो ॥ मा० ॥ १५०१ ॥ पॉच ग्राम पाण्डव को नहीं दे, रहा राज्य तो दूर । नहीं समझे दुर्योधन पापी, कपटी महा क्रूर हो ॥ मा० ॥ १५०२ ॥ तब पाण्डु कह मुझ पुत्रा को, यह सवरा कहीओ । आश पास मत करो इसी का मती भरोसे रहीओ हो ॥ मा० १५०३ ॥ राज पाट यह गया हकारी, देगा नहीं किस वार । सीधी अंगुली घी नहीं निकले लीजो हृदय विचार हा ॥ मा० १५०४ ॥ पाण्डव यादव समग्र मिलकर बाकी सैन्य समाज दुर्योधन को मार जान से, लो हस्तिनापुर का राज हा ॥ मा० १५०५ ॥ हो यादवकुल शिर सेहरा करो कृष्ण तुम सहाय । हस्तिनापुर को पवा राज तुम, सारा शत्रु दबाय हा ॥ मा० १५०६ ॥ पाण्डु नृप से सीख पाय हरि, बैठे रथ के मॉई । अल्प दिनों में आये द्वारिका, वर न कहीं लगाई हो ॥ मा १५०७ ॥ कही नारायण बात सभी ने न दे दुश्शासन राज । तब पाण्डु ने कहा समझकर शत्रु मार करो काम हो ॥ मा० १५०८ ॥ ॥ दोहा ॥ अब पाण्डव को दे

मॉंग भूमि को कौन ते । कै चारण कै सखा, सुणजो कृष्ण मुरार । लेगे भूमि भुज बले, भारत कर इसवार ॥ १५०६ ॥ मॉंग भूमि को कौन ते । कै चारण कै भाट । क्षत्री युद्ध कर भूमि ले, देवे शत्रु को पाट ॥ १५१० ॥ पाण्डु हुक्म से सैना जोडी, सिनगारे गज राज । श्याम घटा ज्यों बदन शोभते, है भानु गिरिराज हो ॥ भा० १५११ ॥ नाना देश का तुरग मगाया, भॉंति भॉंति मजाया । लोहमयी पाखर डाले उन पर, हण हणाट मचाया हो ॥ भा० १५१२ ॥ छत्तीस विधि आयुध से भरिया, रथ किया तैयार । ध्वजा पताका कलश शोभता, जिनका तेज अपार हो ॥ भा० १५१३ ॥ देह प्रचंड मांस से उपचित, स्कंध वृषभ मुख नूर । स्वामि भक्त महा बलवता, सुभट हुवे सज शूर हो ॥ भा० १५१४ ॥ तोप धमूका बारूद्ध गोला, लीना युद्ध समान । सब प्रमियो को खबर पठाई, मिलो सैन्य मे आन हो ॥ भा० १५१५ ॥ विकट सैन्य सज पाण्डव अपनी, हरि सैना भी लार । शुभ लग्न चन्द्रबल शुभ दिन, चलो फैज ललकार हो भा० १५१६ ॥ कुन्ती मात ने पाचो सुत के, तिलक करा है भाल । दी आशिष जय होय तुम्हारी, पहनोगे जय माल हो ॥ भा० १५१७ ॥ द्रुपद वैराट आदि बहु राजा, पाण्डव साथ मे आया । दश दशाहि वसुदेव पक्ष के विद्याधर बुलाया हो ।भा०१५१८। नेमि महानेमि सत्यनेमि,कुमर कोटि भरपूरा । कृष्ण बलभद्र बैठे रथ मे जो युद्ध मे हैं शूरा हो ॥ भा० १५१६ ॥ गिरनार गिरि जा डेरा दीना, विचित्र तम्बु खिंचवाया । ग्रीष्म ऋतु गये वर्षा उमड़ी, घटा घोर घन छाया हो ॥ भा० १५२० ॥ बाजा बाजे अति जोर का, मानोँ हो सिंहनाद । चढा वीर रस सब सुभटो को, हृदय धर आह्लाद हो ॥ भा० १५२१ ॥ सधवा नारी मिली पथ मे, गले फूल की माला । अश्व हीचता गज शृंगारित, नीर कलश ले बाला हो ॥ भा० १५२२ ॥ मुकुर निसान वृषभ की जोडी, चमर छत्र और गाय । तरुत अकुश बाजा नृत्य आदि, शुभ वचन सुन पाय हो ॥ भा० ॥ १५२३ ॥ बाये तीतर, खर, सारस, शिखि, भैरवी मृग हो डाया । वर्द्ध-मान, बींजन, मृत्तिका, शकुन देख हर्षाया हो ॥ भा० १५२४ ॥ निर्ग्रन्थ मुनि फिर मिले पथ मे, जब अर्जुन उस वार ।

शकुन भय कैसे नारायण, जिवसाथा इस पार हो ॥ भा० ॥ १५२५ ॥ कम–भारि का जीव सहगा, यह शिवपुर का राम। इसी शकुन स लाग अजुन हस्तिनापुर का राज हो ॥ भा० १५२६ ॥ माद्री का भ्रात नाम शल्य जिसका, यह भा आया पास। मिला युधिष्ठिर स प्रसन्न हो, मांग चीन्ह तत्काल हो ॥ भा० ॥ १५२७ ॥ कुशल क्षेम के बीच आप रहा और सभी परिवार। भाखजो को डाकस दी यों, मामा न उस पार हो ॥ भा १५२८ ॥ राम आप पुरा सत मानों सुना हमारा येम। शिर मुकुट सम हो हमारे वल्लभ सौंपा सेन हा ॥ भा० १५२९ ॥ प्रथम दूत दुर्योधन भेजने मर पाह बुलाया। करा सहायता मरा आक, या रूपक म लाया हा ॥ भा० १५३० ॥ दिया वचन मैंने भा उसका करसूं भारी सहाय। तीजे दिन दूत आपका आया मैया वचन बधाया ॥ हो ॥ भा० ॥ १५३१ ॥ पाण्डव बाल वचन यह हा, आभा उसके भीर। दिया वचन टालो तुम कैसे हा पूरे गुणधीर हो ॥ भा० १५३२ ॥ शल्य कह एक बात करूँगा रह कर भी उन संग। कर्णराज के युद्ध करन का, उत्साह करूँगा भग हा ॥ भा० ॥ १५३३ ॥ तुम्हें छोड़कर नहीं जाता मैं, पलटू कैसे वचन। समय सम्म युधिष्ठिर बोले मनचा तेरा कथन हो ॥ भा० ॥ १५३४ ॥ ले शल्य आज्ञा धर्म पुत्र की गया दुर्योधन पास। वचन पक्ष स आता हूं पर मन नहीं मेरा खास हा ॥ भा० ॥ १५३५ ॥ अब दूज दिन पाण्डव कटक स, सपरिवार सिधाया। सरस्वती नदनी के तट पर, कुरुक्षेत्र में आया हा ॥ भा० १५३६ ॥ शीतल पवन वृक्ष सुशोभित अति सुन्दर ठाम। तम्बु डरा शाघ्र लगाया धारण करे गुण माम हो ॥भा०॥१५३७॥ विशाल तम्बु लगा हरि का गरुड़ की ध्वजा लगाइ। गज–गजमा अश्व–रथाद से, नदनी तट रहा गुजार हा ॥ भा ॥ ॥ १५३८ ॥ दुर्योधन सुनी पाण्डव आय, दल अक्षौहिणी मात। सरस्वती–तट डरा दीना अरि गिनता तिलमात हो ॥ भा० ॥ १५३९ ॥ अक्षौहिणी सम सेना साथ, धरके मन अहंकार। मेरे सामने हरि पाण्डव और क्या है दश हजार हा ॥ भा० ॥

१५४० ॥ मार गिराऊँ इनको क्षण में, और करूं चकचूर। अधकार का बल है जहाँ तक, सूरज होवे दूर हो ॥ भा० ॥ १५४१ ॥ जब दुर्योधन गर्व धरीने, एक दम हुक्म लगाया। ग्यारह अक्षौणी सैन्य सजाओ, शस्त्र लो मन चाया हो ॥ भा० ॥ १५४२ ॥ इक्कीस हजार आठ सौ सत्तर, गज एता रथ जान। पैंसठ हजार छ. सौ दश घोडा, चचल तेज महान हो ॥ भा० ॥ १५४३ ॥ एक लक्ष इक्याण सहस्र हैं, पैदल सैन्य प्रधान। चौथमल कहे एक अकक्षौणी, ग्रन्थ लिखे प्रमान हो ॥ भा० ॥ १५४४ ॥ नृप-मण्डल से फिर यो बोला, दुर्योधन दुर्दन्त। गागेयादि कहो आय सब, मिल करके मतिवन्त हो ॥ भा० ॥ १५४५ ॥ अर्द्धरथी और महारथी पुन, अति रथ सुभट यह तीन। अपने लश्कर बीच कौनसा, निश्चय करो प्रवीन हो ॥ भा० १५४६ ॥ जीते सहस्र एक अर्द्धरथी हो, अतिरथी दश हजार। एक लक्ष सुभट को जीते सो, महारथी सरदार हो ॥ भा० १५४७ ॥ अतिरथी जाना था कर्ण को, पर यह रण के स्थान। अर्जुन को नहीं जीत सका है, तासे अर्द्धरथी जान हो ॥ भा० १५४८ ॥ रोप धरी कर्ण कहे सुन ले, दुर्योधन चित्तलाय। तू सेनापति रहे वहा तक, लड्डू युद्ध मे नाय हो ॥ भा० १५४९ ॥ सुन दुर्योधन मुदित होकर, दियो शीघ्र शिर पाव। सेनापति गागेय वनाया, जो था मन मे चाव हो ॥ भा० १५५० ॥ इत धर्मपुत्र हरि से पूछा, कहो अतिरथी वतलाओ। धृष्टद्युम्न द्रुपद के सुत को, सेनापति बनाओ हो ॥ भा० १५५१ ॥ रण सज्जित हो दुर्योधन ने, मुख्य मुख्य सुभट बुलाया। दु शासन आदि सब भाई, शस्त्र ग्रहीने आया हो ॥ भा० १५५२ ॥ द्रोणाचार्य सुत अश्वत्थामा और, भीष्म, कर्ण भी लेरा। शल्य जयद्रथ प्रमुख महावल, भिन्न २ दिया डेरा हो ॥ भा० १५५३ ॥ हुकम होत ही चली सैन्य जव, हुआ कोलाहल भारी। बाजा बाजे अति जोर से, कायर कपे निहारी हो ॥ भा० १५५४ ॥ दिशि लाल दिग्दाह दिखावे, धरती थर थर धूजे। सन्मुख वायु डाले धूल मुख, सम्मुख सिंह फिर गूजे हो ॥ भा० १५५५ ॥ शिवा रटे दिशा मे ठाडी, जीमना

रासम भूँके। भूत प्रेत नाचता दखे सियार औमण्या कूके हो ॥ भा० १५५६ ॥ काला नाग सामने आता मृग वाम में आय। सम्मुख विधवा नार बगल तम शकुन कहे मत जाय हो ॥ भा० १५५७ ॥ द्रोणा कृपाचार्य भीष्मजी दुर्योधन को पास। एस अपशकुन हुए भला सू युद्ध करन क्यों चाल हो ॥भा० १५५८॥ मेरे मुख से बात निकल गइ उस फिर कौन टल। एस युद्ध का भार कहो कौन ? अपन शिर पर मल हो ॥ भा० १५५९ ॥ गांगेयादि से कह दुर्योधन सब हो थें गुणवान। महारथी तुम शूरवीर स चिन्ता का नहीं स्थान हो ॥ भा० १५६० ॥ प्रसन्न चित्त स करो युद्ध अब और आज्ञा सब साथ। विजय करन क हेत शत्रु को, मारो पकर साथ हो ॥ भा० १५६१ ॥ हाथी घोड़ा रथ समकर हाथ ला हथियार। एक बार चमका था रण म परा सैन्य सरदार हो ॥ भा० १५६२ ॥ ज्यों रत्नागिरि पानी उमड़ त्यों दुर्योधन फौजां। ग्यारह अक्षौहणी चलो मान स करती माना मौजा हो ॥ भा० १५६३ ॥ अब दुर्योधन अभिमान का एक दूत पठाया। श्रीकृष्ण पाण्डव क सम्मुख आ सन्देश सुनाया हो ॥ भा० १५६४ ॥ कुरुक्षेत्र रण-स्थल क माँहे, आवे हैं सुन काला। जो रजपूति शान दिखाओ तुम भी वहाँ आ जाना हो ॥ भा० १५६५ ॥ पाण्डव योद्धा उत्तर दाना, सुन दुर्योधन पापी। प्रभात होते ही आते हम यों दुश्मन दरे कांपी हो ॥ भा० १५६६ ॥ धर्मपुत्र न दूत को भेजा श्रीकृष्ण क पास। कहीए उनसे जाकर क यों मेरी बात या खास हो ॥भा० १५६७॥ प्रथम समस्त आप ही कीजे इन कौरव क साथ। करो विनती स्वीकार आप मा, सुना य पाण्डव नाथ हो ॥ भा० १५ ८ ॥ दूत गया फिर स मथुरा, श्रीकृष्ण के ठौर। कही बात सब ही इस ढंग स सुन सरसता ठाइ हो ॥ भा० १५६९ ॥ मधुसूदन न कहा उत्तर में, शत्रु दुष्ट तुम्हारा। इनका हनन करने में हमारा क्यों खेद तुम सहारा हो ॥ भा० १५७० ॥ तुम कहन स वीर अर्जुन का सारथि पद ल लूंगा। धनुधारी वीर योद्धा को सन्मुख में कर दूंगा हो ॥ भा० १५७१ ॥ जब आज्ञा था धर्म

दोनो दिखावें। शूरवीर शूरा रस चढ़िया, कायर उर कंपावे हो॥ भा० १५७३ ॥ पांडव पांचों अति उम्हाया, युद्ध करन के काजे। इतने में आये उत्तर दिशि से, यान माहि विराजे हो॥ भा० १५७४॥ उतर पडे विमान से एकदम, विद्याधर महमान। धर्म पुत्र के प्रेम धरीने, भेटे चरण को आन हो ॥भा० १५७५॥ चित्रांगद और मणिचूड यो, चन्द्रपीड बलवान। सहस्राक्ष ने महाबल है, पाचों मुखिया जान हो ॥भा० १५७६॥ नमन करी पाण्डव से बोले, युद्ध ठना सुन पाया। प्रेम धरीने इसी वास्ते, पास तुम्हारे आया हो ॥भा० १५७७॥ उपकार करा अर्जुन ने हम पर, सो भूला नहीं जाय। प्रत्युपकार करन हित आये, सबही रहे उम्हाय हो ॥भा० १५७८॥ हिडम्बका का तनुज खास वह, घटोत्कच है नाम। वह भी आया अरि हनन को, लेके सुभट तमाम हो ॥भा० १५७९॥ आकर नमन किया वृद्ध जन को, सबने हृदय लगाया। सुख पाया पाण्डव सुत देखी फूले नहीं समाया हो। भा० १५८०॥ सन्नद्ध बद्ध हुवे सुभट सभी फिर, करने भारत युद्ध। निज २ पतिने नार वीनवे, होकर मोह मुग्ध हो ॥ भा० ॥ १५८१ ॥ कोई पत्नि कह पति के तांई, रण मे गज को मार। मस्तक विडार के मोती लावजो, करूँ गले का हार हो ॥ भा० १५८२ ॥ एक नारी यूँ कहे पति मे, जो हो मुझ से प्रेम। देवांगना थे मतो परण जो, आजो कुशल घर क्षेम हो ॥ भा० १५८३ ॥ एक नारी कहे आप पतिने, सामा घाव झेलो जो। पीछा पाव कभी मत दीजो, कुल कलंक मत कीजो हो ॥ भा० १५८४॥ वीर बाला एक कह कथ ने, चिन्ता दूर निवार। टूक टूक होना युद्ध बीचमें, सुयश करे संसार हो॥ भा० १५८५ ॥ तिलक करी एक नारी बोली, सुन बाला भर्त्तार। आब चढ़ाजो कुल वश मे शत्रु दल को मार हो ॥ भा० १५८६ ॥ खूब जोर का भारत कर जो, सुनजो मेरे नाथ। थे जाजा फिर् स्वर्ग बीच मे, मै करसूँ तुम साथ हो ॥ भा० १५८७॥ एक नार यूँ कहे पति से, यूँ भिडजो रण ठाम। वीर पुरुष की नार कहलावां, ऐसा करजो नाम हो॥ भा० १५८८॥ योद्धा वीर परस्पर बोले, शत्रु मार भगाओ। युद्ध मण्डप मे जयमाला को, स्वामी ताई पहनाओ हो

।। भा० १५८९ ।। हय गुडगुडाट हाथी करत हैं रथहयाट धुरकार । भखभखाट रथ करत हैं सनसनाट सवार हो ।। भा०
१५९० ।। गगनभेदी वाजित्र बाजता समुद्र गिरि थराया । धर्मराज रथ में बैठीने रणभूमि में आया हो ।। भा० १५९१ ।।
धृष्टद्युम्न सेनापति सैन्य से, युद्धस्थान में धाया । रज कर रवि हुआ आच्छादित अन्धकार तब छाया हो ।। भा० ।।
।। १५९२ ।। वाजा वाइट विद्याधरों ने रणभूमि के माइ । जिस कर कटक पाण्डव का शोभा यथायोग्य ठेराइ । भा० ।।
१५९३ ।। कौरव पाण्डव का युद्ध देखन को देवा देखता आय । चारण भाट भी युद्ध उत्तेजक, वीर काव्य सुनाय हो ।।
भा० ।। १५९४ ।। अब दुर्योधन की सेना सेना में हुआ शस्त्र का नाद । जिस कारण सब हुए सम्बद्ध पद्ध धर दिल
में आल्हाद हो ।। भा० १५९५ ।। युद्ध की शर्तों में से एक यह जिसका रखना ध्यान । जैसा हो वैसा ही उस से
कर युद्ध बुद्धिवान हो ।। भा० १५९६ ।। इसी शर्त के कारण फिरता, हुए अनुक्रम आन । गज वाले से गजवाला ही,
रथ से रथ रथवान हो ।। भा० १५९७ ।। घोड वाले से घोड वाला पैदल से फिर पैदल । इस प्रकार युद्ध करने हेतु
नियुक्त हुए कर दल हो ।। भा० ।। १५९८ ।। विद्याधरों से विद्याधर जूझे राजा से फिर राजा । शस्त्रधारी से शस्त्र
धारी हो कई सामने आजा हो ।। भा० १५९९ ।। सुनो मित्र ! दुर्योधन ध्यान में हरि-कथन आ जाता । पूर्ण शान्ति
व्यापक होती ऐसा समय नहीं आता हो ।। भा० १६०० ।। सत्ता पाय कोइ पुण्य योग से करे न दुरुपयोग । नीति
पथ को नहीं तजे, वही प्रशंसा योग हो ।। भा० १६०१ ।। दोहा ।। नमूं सिद्ध भगवान को नमूं सभी अणगार । कहूँ
कथन महायुद्ध का, हुआ कौन प्रकार ।। १६०२ ।। कुरुक्षेत्र की भूमि में अब, दोनों वीर धर चाव । न्याय-युद्ध करने का
काज ऐसा किया ठेराव हो ।। भा० १६०३ ।। बिन अपराध बिना शस्त्र हो या हो अबला नार । इनको कभी नहीं
मारना सबने का स्वीकार हो ।। भा० १६०४ ।। यों रण मच्यो भीमार्जुन शस्त्रों की बौछार । धृष्टद्युम्न का आगे कौना आया

माहसिक धीर हो ॥ भा० १६०५ ॥ अर्जुन पूछे मधुसूदन से, कौरव सेना देख । सुभट वता दो शत्रु के अब, जिन के मारूं मेरा हो ॥ १६०६ ॥ हरि कहे अर्जुन तुम सुनलो, सन्मुख रथ का धारी । महारथी भीष्मपितामह, अरि को करे ख्वारी हो ॥ भा० १६०७ ॥ रक्त अश्व सयुक्त रथ वाला, महारथी गुरुलो जान । द्रोण शस्त्र-विद्या का ज्ञाता, युद्ध हित ऊभा आन हो ॥ भा १६०८ ॥ नील अश्व धनुष्य का धारी, बैठ कनक रथ आया । क्रोड़ सुभट सयुक्त देख ले, यह दुर्योधन गया हो ॥ भा० १६०९ ॥ चन्दन वर्ण के अश्व जुते रथ, है यह कृपा चार्य कमडल चिह्नकी ध्वजा ऊपरे, प्रत्यक्ष रही दिखाय हो ॥ भा० १६१० ॥ पीतरग के अश्व रथवाला, है दु शासन खास । केश चीर खेंचा जिसने वह, ऊभा दखो तास हो ॥ भा० १६११ ॥ अश्वत्थामा शल्य के रथ को फिर, जयद्रथ का लो जान । भूरिश्रवा भगदत्त रथो के, समझो ये सहिनान हो ॥भा० १६१२॥ कहाँ तक इनका नाम वताऊँ, कहता आवे नहीं पार । युद्ध हेत रण प्रागण माई, ऊभा कई हज्जार हो ।भा०१६१३। शस्त्र डाले हैं अर्जुन वीरने, इस रणभूमि मे ॥टेक॥ खेद खिन्न होकर बहुतेरा,मन मे करी विचार । हाथ जोड़ हरी से यों बाले, अर्जुन भक्त तिसवार हो ॥श० १६१४॥ भीष्म महापिता मुझ दादा, यह गुरु द्रोणाचार्य । मामा, स्नेही बान्धव ये मेरे, युद्ध में खडे सब आय हो ॥१६१५॥ श्रीकृष्ण से अर्जुन यो वीनवे, करूँ न युद्ध लगार । गात्र कुटुम्ब की हिंसा होवे, हिंसा नर्क दातार हो ॥श० १६१६॥ दुर्लभ मनुष्य जन्म देह मिलना, पुण्य योग से पाई । गुरु भ्रात मातुल हनने म, क्या, इसमे अधिकाई हो ॥श० १६१७॥ युद्ध करूँ न हनूँ किसी को, तजूं गात्र-नहार । मौन पकड के गया बैठ फिर, छोड दिया हथियार हो ॥श० १६१८ ॥ कृष्ण कहे श्रीवीर अर्जुन से ऐसी मत कहो बात । क्षत्रिय हो वह नहीं विचारे. युद्ध गोत्र की घात हो ॥ श० १६१९ ॥ क्षत्रिय धर्म पालना दुष्कर, मानों खड्ग की धार युद्ध करते नहीं गिने किसी को, स्व पर का परिवार हो ॥ श० १६२० ॥ धनुष्य तीर को लेकर हाथ मे, झूझे उन से झूझ । दुश्मन मार ले यश जगत मे, क्या सम-

मावें तुम हो ।।शे० १६२१।। आ नहीं कर सामना जहा तक, बन्धु उसको जान । अब करे अपने पर मार तब तो वह है शत्रु समान हो ।।शे० १६२२।। कारज कर ही दुष्ट कर्मोंने, शीघ्र बुलाया काल । तू तो अर्जुन निमित्त मात्र है पाण्डव पक्षा तत्काल हो ।।शे० १६२३।।जीत जग में यश सवाया मरे स्वर्ग सिधाया । सत्य धर्म पर युद्ध करने से मन मन में सुख पाय हो ।।शे०१६२४।। कृष्णा वाक्य या सुन अर्जुन ने, लीनी युद्ध की ठान । शस्त्र गण्डीव गहे जोर से शत्रु मन धमान हो ।। शे० १६२५ ।। उपदेश जगत में है आदू मम, करते काम कमाल । श्रीकृष्ण के इस उपदेश से आया जोश तत्काल हो ।। शे० १६२६ ।। राय युधिष्ठिर उतर रथ से करता पश्चाताप । कौरव सेना बीच आयकर बोला वचन या नाप हो ।। शे० १६२७ ।। गांगेय और द्रोणाचार्य के चरण नमी उस बार । तुम पुरुषों से कहो हम फँस, युद्ध करें इस बार हो ।। शे० १६२८ ।। भीष्मजी बोले धम पुत्र से हानी टलती नाय । मेरा प्रेम है तुम संग ज्यादा वह पलटा नहीं जाय हो । शे० १६२९ ।। दुर्योधन ने कर पालिसी हमको लिया बनाय । जिससे उनका पक्ष ले लीना और बात है नाय हो ।। शे० १६३० ।। तुम हो धर्म नीति उपासक सारा जीतोगे खास । धर्म भलाइ सुर सुरास, रहती है यों वास हो ।। शे० १६३१ ।। फिर भीष्म ने धर्म पुत्र का दिया मान उस साथ । द्रोण कृपाचार्य गुरु ने, दिया पीठ पर हाथ हो ।। शे० १६३२ ।। होगी जीत तुम्हारी राजा, सुन हर्षो भूपाल । इष्ट वचन कर माना उनका नमी चरण तत्काल हो ।। शे० १६३३ ।। राय युधिष्ठिर चलकर वहाँ से, रथ पर कर म आय । रथ में बैठी शस्त्र सज्जित हो सेना युद्ध में लाया हो ।। शे० १६३४ ।। धृष्टद्युम्न और भीष्म सेनापति ने युद्ध का हुक्म लगाया । होने लगा है युद्ध धमाधम जोर से शस्त्र चलाया हो ।। शे १६३५ ।। रथ रोकता हाथी मागता, घोड़ा चक्कर लगाय । सिंह सम गुरु धरणी धूजे, जोरा लूब दिखावे हो ।। शे० १६३६ ।। कराल काल की भाँति फिर तो युधिष्ठिर गो चढ़ आया । इनकी तेज असुन्न धस जनका, भरि सुभट घबराया हो ।। शे० १६३७ ।। अभिमन्यु उत्तराकुमार और द्रौपदी-सुत पांचाल । समरांगण हो सन्मुख

रण में, आधमके वहाँ चाल हो ॥ श० १६३८ ॥ शत्रुदल समुद्रवत् मथियो, मच्छ ज्यो अरि टलवलता। ध्वजा पाँच वर्ण की फरके, करे चोट नहीं टलता हो ॥ श० १६३९ ॥ अर्जुन युद्ध हेतु जब लपका, करता बाण बोछार। ता कारण नभ छाया अँधेरा, वर्णन का नहीं है पार हो ॥ श० १६४० ॥ कई गिरे कई भागे त्रसित हो, लज्जित हो कई दौडे। गेद हिट ज्यो लौटे योद्धा, यो सर अर्जुन छोड़े हो ॥ श० १६४१ ॥ झूँझे बडे बड़े सुभट जहाँ, वीर रम मे हो राता। गिरि सम हाथी शोभे जिनके हैं वे मद मे माता हो ॥ श० १६४२ ॥ दोनों वीर लड़े जोश खाके, सेनापति सरदार। धृष्टद्युम्न गांगेय दोनो ही करते मार अपार हो ॥ श० १६४३ ॥ चले सनासन तीर जहाँ पर, शस्त्रो की बोछार। वर्षा ऋतुवत् चिखल हुआ वहा रुधिर का उस वार हो ॥ श० १६४४ ॥ नदी सम धारा चली खून की, धग २ कर उस वार। हय गय नर की लाशे उछलती, उपमा मे नहीं सार हो ॥ श० १६४५ ॥ खून–धारा में सुभट शीश ज्यो, कमल नजर मे आवे। केश शैवाल के मानिन्द दीखते, मच्छ ज्यों कर तड़फावे हो ॥ श० १६४६ ॥ पैर दीखें मगर ज्यों उसमें, देख हृदय थर्रावे। रक्तपात की नदी देखकर, कायर डर भगजावे हो ॥ श० १६४७ ॥ रथ मे बैठकर भीष्म दौड़ा, सगमे वीर जुँझार। शल्य जयद्रथ और अतिरथीजी शस्त्र लिये फिर धार हो ॥ श० १६४८ ॥ गदा गुर्ज गोला गोफणी, बरछी तीर कटारी। तोप तलवार धनुष्य नेजा, आयुध छत्तीस प्रकारी हो ॥ श० १६४९ भीष्म युद्ध मचाया भारी, सन सन छोडे तीर। कई सारथी और छत्तरो को, दिये छिन्न में छीर हो ॥ श० १६५० ॥ उत्तराकुमर से शल्य जा भिड़ा, बोले मारो मारो। शस्त्र से शस्त्र को छेद गिरावे, करे गदा प्रहारो हो ॥ श० १६५१ ॥ उत्तराकुमर को शल्य ने वींधा, छूटे उसके प्राण। पाण्डव हाहाकार करा है, शल्य बडा बल-वान हो ॥ श० १६५२ ॥ मात सुदेष्णा सुन के झूरती, धर्म पुत्र समझावे। वीर सुभट का यही धर्म है, जूँझे नहीं पछ–तावे हो ॥ श० १६५३ ॥ यो जानी तुम चिन्ता निवारो लो धीरज को धार। जिसने तेरा पुत्र हना है, उसको लूँगा मार

हो ॥ रा० १६५४ ॥ सात दिवस यों युद्ध करा है भीष्म सी बलवान। पाण्डव सेना भीष्म हन्होंने, पहुँचाया नुकसान हो ॥ रा० १६५५ ॥ धृष्टद्युम्न भी युद्ध करा है सात दिवस इकसार। कौरव के सब राजाओं को और भी किया मार हा ॥ रा० १६५६ ॥ सन्ध्या हुई युद्ध बन्द कीना सुभट गये निज स्थान। रात पड़े नहीं होय लड़ाई, यह युद्ध का प्रमाण हो ॥ रा० १६५७ ॥ स्वसुभ्रिका का पक्षाल पाण्डव ने छींटा घायल ठाँई। तासें घाव भराया सबके हुआ प्रसन्न चित्त माई हो ॥ रा० १६५८ ॥ विद्या के योग स भीष्मने भी अपनी सेना माँई। घायल नर को किये आराम फिर, तुरत फुरत छिन माई हो रा० १६५९ ॥ दोना दिवस में युद्ध करें और लें रजनी विश्राम। करें मोहब्बत परस्पर मिलके घर कर प्रम तमाम हो ॥ रा० १६६० ॥ पाण्डव-सेना रूप सघनवन बालन का उस बार। भीष्म हुआ दावानल सदृश सातों दिवस मॅझार हा ॥ हा रा० १६६१ ॥ दोनों पक्षों में मिलकर भाई सुभट-सख्या कई लाख। एक सहस्र मुकुट धर राजा, रहे रण का ठाठ हा। रा० १६६२ ॥ रण में अर्जुन समर बढ़ हो दिवस आठमें आया ॥ पाँच सहस्र भूप हैं संगमें, रात्रु-मारन चित्त चाया हो ॥ रा० १६६३ ॥ अर्जुन भीष्म की सेना दोनो भिड़ गइ माहा माहीं। हुआ घोर संग्राम परस्पर कमी रक्खी है नाहीं हो ॥ रा० १६६४ ॥ पाण्डव के राजाओंने युद्ध म, बल दिखलाया पूर। दुर्योधन क हय गय सुभट बहु भाँग किया चकचूर हा ॥ रा० १६६५ ॥ भीष्म के नृप घायल हाने स मच गई कोलाहल। अर्द्ध फल समान भूमिवस, निश्चल विलखाया हो ॥ रा० १६६६ ॥ अर्द्धचन्द्र सा बाण से अर्जुन कई का शीश उड़ाया। खण्डित हा राजा कई भाग भीष्मजी हा ॥ रा० १६६७ ॥ रवि अस्त हाने पर भीष्म पहुँचा अपने स्थान। हर्षित हो पाण्डव भी आये, लहराते निसान हा ॥ रा० १६६८ ॥ भीष्म को मोहमा देख आ दुर्योधन राय। सब सम्मुख सेना चूरी रूप मरो जस माँय हो ॥ रा० १६६९ ॥ किया पक्ष तुमने अर्जुन का मरे भूप हनवाया। विश्वासघात ऐसा नहीं कीजे भरोसे तव युद्ध ठाया हो ॥ रा० १६७ ॥ गांगय

हॅस कहे सुन दुर्योधन, यों क्या बोले बाय। किया युद्ध आठ दिन पूरे, कौरव पाण्डव राय हो ॥ श० १६७१ ॥ प्रिय सज्जन पाण्डव के संग मे, युद्ध की नहीं बड़ाई। तेरे प्रेम के कारण करें युद्ध, गुन्हा नहीं उन मॉई हो ॥ श० १६७२ ॥ सहस्रो नृप को हने तुझ काजे, हिंसा नहीं विचारी। तेरी विजय नहीं होगा इसमे, अर्जुन की मार करारी हो ॥ श० १६७३ ॥ तेरे लिये मैंने प्राण समरपे, तो भी न समझा कपटी। फिर भी ओलभा दे मुझ तॉई, प्रकृति तेरी न पलटी हो ॥ श० १६७४ ॥ कल दिन को तू देख जरा मै, पाण्डव-सैन्य खपाऊँ। रणभूमि में जो करे सामना, उसको मजा चखाऊँ हो ॥ श० १६७५ ॥ भीष्म के सुन वचन दुर्योधन प्रसन्न हुआ मन माई। प्रात. होत ले सेना भीषमजी, कीनी विकट लडाई हो ॥ श० १६७६ ॥ मथी सैन्य पाण्डव की जैसे दीरवाई मे डाल खाई। सह सके नहीं धनुष तेज को, जोश है उसके माई हो ॥ श० १६७७ ॥ कई नाशे कई छिपे भागे, भीष्म उन्हे खदावे। चार याम के युद्ध में एकदम, पाण्डव सैन्य हटावे हो ॥ श० १६७८ ॥ सोच हुआ पाण्डव को भारी, प्रलयवत् यह जूझे। इनके तीर से दिशा हो धूॅधल, जिसमे नहीं कुछ सूझे हो ॥ श० १६७९ ॥ रात हुई युद्ध बन्द कर दिया, कौरव मन हर्षायो। वलिहारी बोले भीषम की, पाण्डव-दल भगायो हो ॥ श० १६८० ॥ पाण्डव कृष्ण करे मिल सलाह, भीषम मे बहु जोर। इनको नहीं कोई पहुॅच सके है, यह जूझे रण घोर हो ॥ श० १६८१ ॥ कृष्ण कहे भीषम मारन की युद्ध समय मन आई। मुझको इसने शपथ दिलाया सो बदला किम जाई हो ॥ श० १६८२ ॥ कहे युधिष्ठिर नारायण से, वडे वलवान। इन्द्र चन्द्र भी डरे तुम सेती, माणस की क्या शान हो ॥श० १६८३॥ हरि कहे यो धर्मपुत्र से, सूझा एक उपाय। उससे अवश्य मरे भीषमजी, सशय है कछु नाय हो ॥ श० १६८४ ॥ नारी, नपुसक, दीन, अनाथ फिर, हाथ नहीं हथियार। इतने को नहीं मारे भीषमजी, लो प्रतिज्ञा धार हो ॥ श० १६८५ ॥ द्रोपद-सुत है नाम शिखडी, षढ वही कहलाय उसे बुलाकर शीघ्र यहॉ पर, नारी वेप सजाय हो ॥ श० १६८६ ॥

पिठा वसे फिर रथ के आग, यही पसाव धीर। माहीं मारे भीष्मजी उसको बधनयह है वीर हो ॥ शा० १६८७ ॥ अर्जुन पैठ
पास पूठ म अपना वदन छिपाय। बाण मार भीष्म को बींधे, काय सिद्ध हो जाय हा ॥ शा० १६८८ ॥ हरी बात मन के मन
माहीं हर्षा सब परिवार। यही निश्चय कर पहुँच सब ही अपने स्थान के द्वार हा ॥ शा १६८९ ॥ दशवें दिन फिर युद्ध मिड़ा
है सब वीर सज आया। भीम अर्जुन एक रथ में बैठे आगे पट बिठाया हा ॥ शा० १६९० ॥ भाष्म मर किप ताग म उलश
मन में लिया या धार। भीष्म भी मारी सना स आया शस्त्र धार हो ॥ शा० १६९१ ॥ बैठक अमा धनुष्य उठाग, यगाम
सभी उस वार। धीर सनासन बाण छोड़ने ज्यों बरस जल धार हो ॥ शा० १६९२ ॥ एक तीर म अनेक थी र है ज्यों पाय
मणिधार। घुस पड़ सेना के बीच में करते हुए संहार हो ॥ शा० १६९३ रथ को तूरे सुभट का मार किया युद्ध घमसान। सिंह
समान जूझ सब पाण्डव कायर हुए म भान हा ॥ शा० १६९४ ॥ रणभूमि में टिक सके नहीं सैनिक के अप पाँव। कौरव
सेना गई भाग सब गांगेय टिके आय हो ॥ शा० १६९५ ॥ देखो भागती फौजाँ अपनी, दुर्योधन रोष। दुःशासन सब भाइ
साथ म आया है रण ठोष हो। शा० १६९६ ॥ हरि-कहन स अर्जुनजी ने लीनी पट की ओट। फिर चलाया पाण सनासन
भरि हुए चोट पाट हो ॥ शा० १६९७ ॥ सारा शरीर बींधा भीष्मका, बाणों म उस वार। मम स्थान बींधाने स फिर मूर्छित
हुआ तिणवार हो ॥ शा० १६९८ ॥ मूर्छा मिटने पर गंगासुत बोला एक दम तान। नहीं पाण शिखंडी का यह, है अर्जुन का
बान हो ॥ शा० १६९९ ॥ वृद्ध शरीर पे प्रहार देखने रोवें कौरव राय। हा देव! यह कैसी कीनी, करुणा कान सुनाय हा ॥ शा०
१७०० ॥ गांगेय मूर्छित हुआ जानके आय पाण्डव पास। अण चीता का दर्शन फिर हुआ अधिक उदास हा ॥ शा १७०१॥
भीष्म बोले सुनो सब अन बालपना के माहिं। समकित गुरु व्रत धारे मैंने, आरमारिन के तौर हा ॥ शा० १७०२ ॥ मुनिचन्द्र
साधु ने कहा था तुमको अब यहाँ मारेगा। दुर्योधन की मदद करेगा जूझेगा बद के रथ हा ॥ शा० १७०३ ॥ अर्जुन पाण के

हो ॥ श० १७०४ ॥ चारित्र पाल शुद्ध एक
के कारण भीष्म, निर्बल वन उस वार। भद्रगुप्त आचार्य समीप, लेगा संयम भार
वर्ष तक, आलाई अतिचार द्वादशवे देवलोक जायगा हो एका अवतार हो ॥ श० १७०५ ॥ जब विमानवर करे धर्म कर, मति
लगाओ देर। साधु-वचन प्रमाण करीने युद्ध से मन लो फेर हो ॥ श० १७०६ ॥ ऐसी सुनके पुरजन सारा, हो गये शोका
क्रान्त। दिन हुवा दशवॉ पूरा फली रजनी शान्त हो ॥ श० १७०७ ॥ निकटवर्ती गिरि गुफा मे, भद्रगुप्त अणगार। समासने
हैं पुण्य के योगे, करते पर उपकार हो ॥ श० १७०८ ॥ पाण्डव कौरव दानों मिल के, भीष्म को गुरु के पास। लाय लिटा
आदर से वहॉ पर, बैठे तहॉ हुल्लास हो ॥ श० १७०९ हस्तिनापुर मे सजय मुख से, श्रवण करी वृत्तान्त। धृतराष्ट्र भी आया
भीष्म पॉ, करता ऑसूपात हो ॥ श० १७१० ॥ कौरव पाण्डव तरफ देख कर भीष्म बोला उस वार। हो रही वेदना गर्दन
माहीं, मस्तक बिन आधार हो ॥ श० १७११ ॥ कोमल तकिया कौरव लाया भीषम को नहीं भाया। कंक पत्र बाणों का तकिया,
तब अर्जुन लगाया हो ॥ श० १७१२ ॥ बाण निकाले शरीर मे से, विनवे यों धर्मराय। मुद्रिका खोल पानी को छींटे, व्रण ठीक
हो जॉय हो ॥ श० १७१३ ॥ आतम युद्ध कीना भीष्म भूपन तज हिंसा युद्ध ने ॥ टेक ॥ तजो सुश्रूषा इस काया की, लूँगा संयम
भार। क्यो परिचर्या तुम करते हो, कहे भीषम उस वार हो ॥ आ० १७१४ ॥ भीषम बोले तृषा बहुलागी, जीव बहुत घबरावे
ऐसा पानी लाके पिलाओ, सो तुमको जितलावे हो ॥ आ० १७१५ ॥ तिर्यंच झूठा नहीं कीना हो, रवि चन्द्र बिन स्पर्शा। ऐसा
पानी पिला दो मुझको, मिट जावे मम तृषा हो ॥ आ० १७१६ ॥ ऐसा पानी कहॉ से लाने, सबको हुआ विचार। तब अर्जुन
धनुष्य चढा के, कार्य किया उस वार हो ॥ आ० १७१७ ॥ होय अधोमुख भूमि मे फिर, मारा खेंची तीर। उछल पडा है भूमि
में से बहता निर्मल नीर हो ॥ आ० १७१८ ॥ कनक कटारे मे भर जल को, लाये भीषम काज। हाथ जोड़ अर्जुन यों बोले पानी
लो महाराज हो ॥ आ० १०१९ ॥ आप कहा वैसा ही पानी, प्रगटा जल पाताल। तब गंगासुत पानी पीना मिटी तृषा की ज्वाल

हो भय भीत। रथ के टूक टूक हुए बहुतेरे, फिर भी हारन जीत हो ॥ आ० १७३६ । रवि अस्त हुवा रजनी छाई, गये सब निज ठाम। करें औषधी निज सुभटों की, बन्द हुआ संग्राम हो ॥ आ० १७३७ ॥ दुर्योधन की आज्ञा लेकर, सशप्तक वह खास। त्रिगर्त देश का बड़ा है राजा, आया अर्जुन पास हो ॥ आ० १७३८ ॥ कहे अर्जुन से सुनो हमारी, जो तू कहावे शूर। पूठे रह कर युद्ध करने मे, यश नहीं है भरपूर हो ॥ आ० १७३६ ॥ जो तू होवे सच्चा शूरमा, एक की हो आजे। युद्ध करूँगा तेरे साथ मैं, जीतन के ही काजे हो ॥ आ० १७४० तब अर्जुन ने उत्तर दीना, आना तुम जरूर। जालंधर के राज वंशि थे, मनना रहीजो दूर हो ॥ आ० १७४१ ॥ हे राजन्! तुम छिप मत जाना, बनकर के वाचाल। टिके रहीजो युद्ध बीच मे वाचा को प्रतिपाल हो ॥ आ० १७४२ ॥ प्रभात होत ही मैं एकाकी, आऊँगा रण ठोड। थे पण वेगा आजो रण मे, रखकर के थे कोड हो ॥ आ० १७४३ ॥ होत प्रात ही सज के आया त्रिगर्त का भूपाल। अर्जुन भी वह आया अकेला, युद्ध मे चल तत्काल हो ॥ आ० १७४४। धृष्टद्युम्नकुमार भी आया, हो गज पर असवार। संग मे सेना लेकर धमका, कौरव को ललकार हो ॥ आ० १७४५ ॥ दधि मथे जैसे सैना को, अर्जुन ने मथ डारी। रथों को चूर ध्वजा को खोसी, माने नहीं लगारी हो ॥ आ० १७४६ ॥ छिन्न भिन्न सेना देखने, लपका द्रोण उसवार। पाण्डव को तृण समान गिनकर, करता बहु संहार हो ॥ आ० १७४७ ॥ फिर गध हस्ती के ऊपर चढ, भगदत्त वह भूपाल। द्रोण के आगे झट बढ निकला, जाने कोपा काल हो ॥ आ १७४८ ॥ सुभटों को उछाले सूँड से, भाजे रथ भरपूर। छोटा बडा न गिने किसी को, सबका बिगाडे नूर हो ॥ आ० १७४६ ॥ पाण्डव सैन्य को बिखेर डाली, करके युद्ध जब भारी। तब अर्जुन ने तीक्ष्ण बाणों को, छोड़े जल धारी हो ॥ आ० १७५० ॥ दोनो ओर की सैना लडती, खभो को फटकार। प्रहर तीन तक युद्ध रहा जारी, देखा सुर नर नार हो ॥ आ० १७५१ ॥ सुप्रतीक गज को अर्जुन पै, भगदत्त दिया चलाय। जब अर्जुन ने तीर योग से, दीनी सूँड नमाय हो ॥ आ० १७५२ ॥ आय पडे दोनो भूमी पर,

बाजा जीत नकारा हो ॥ भा० १७५३ ॥ पुष्प वृष्टि देवों ने कीनी अर्जुन पर उसवार । द्रोण देख खिसियाया एकदम अस्त
हुआ दिन कार हो ॥ भा० १७५४ ॥ भगदत्त के मरने से कौरव-सैना बहुत दुख पाइ । निशि मे युद्ध बन्द करके फौजें
गइ निज डेरा माई हो ॥ भा० १७५५ राजा युधिष्ठिर को पकड़न सेना रचूँ यों मागी । द्रोण मता ऐसा कर लाना हृदय
बीच विचारी हो ॥ भा० १७५६ ॥ खबर मिली पाण्डव को तब कद अभिमन्यु उसवार । चक्रव्यूह-प्रवेश करन की
जानू कला उदार हो ॥ भा० १७५७ ॥ विधि नहीं जानू निकसन का जब भी कह कर गोर । फाड़ चक्र का छिन में निकसू
निवस देख वस मोर हो ॥ भा० १७५८ ॥ सुनके हर्षित हुए पाण्डव सब फिर हुआ प्रभात युद्ध मचा है दिवस
तरहव राजा चले कई भाँत हो ॥ भा० १७५९ ॥ जालम्भर राजन् के सम्मुख आया अर्जुन दौड़ । सबल बाण से उस
नृपति का बख्तर दीना तोड़ हो ॥ भा० १७६० ॥ भगदत्त नृप के वध-होने से कोपातुर हो द्रोण । मारूँ आज भीम
अर्जुन का, मुख माग है कौन हो ॥ भा० १७६१ ॥ अभिमानी दुर्योधन आया रण में हाथ दिखाओ । धर्मपुत्र का लाओ
पकड़ कर युद्ध सफल बनाओ हो ॥ भा० १७६२ ॥ ला फिर कटक आया रण थल में पाण्डव करन का अन्त । चक्रव्यूह
दल से डाला घेरा, करी दृढ़ता अत्यन्त हो ॥ भा० १७६३ ॥ अभिमन्यु को लेकर साथ में पाण्डव आये धार । चक्रव्यूह
मध्य के घुस गये भय नहीं जरा लगार हो ॥ भा० १७६४ ॥ चक्रव्यूह में रहकर पाण्डव युद्ध किया भरपूर । मुद्गर और
गदा-प्रहार से अरि का कीन चूर हो ॥ भा० १७६५ ॥ एक तीर में अभिमन्यू ने बींधे सुभट दशाधीश । गदा-प्रहार से अरथ
गदा-मार कर के उड़ाय शीश हो ॥ भा० १७६६ ॥ आशा छाय अभिमन्यु फिर तो टूट पड़ा उसवार । कौरव की सेना अब
भागी, करके हाहाकार हो ॥ भा० १७६७ ॥ युद्ध का कोलाहल सुन करके शल्य कर्णादि आया । कृपाचार्य अश्वत्थामा भी
फिर, दौड़ ठोड़ रण धाया हो ॥ भा० १७६८ ॥ दुर्योधन मा दौड़ के आया सुन के शोर अपार । रोक दिया आगे बढ़ने से

अभिमन्यु कुमार हो। आ० १७६६ ॥ कई जनों के बखतर तोडे, काटे नाक और कान। कई के धनुष्य तोड़ गिराये, कई के
हन प्रान हो ॥ आ० १७७० ॥ घेरा अभिमन्यु को सब मिल, चक्रव्यूह के मॉडे। कर्ण ने धनुष्य को तोड कुमार के, मारा
सारथी वॉडे हो ॥ आ० १७७१ ॥ कृतवर्मा ने अभिमन्यु के, रथ को कीना चूर। सब ही मिल के अभिमन्यु पर मारे तीर क्रूर
हो ॥ आ० १७७२ ॥ वहुत घायल होने पर भी वह, गिरते गिरते वीर। दु शासन के रथ को तोड़ा, शत्रु को किये चीर हो ॥
आ० १७७३ ॥ चारों ओर मे घिरने कारण, तीक्ष्ण तीर बोछार। ता कारण गिर गये भूमि पर, हो मूर्छित उसवार हो ॥ आ०
१७७४ ॥ उस अवस्था मे जयद्रथ ने, काट लिया फिर सिर को। हुआ प्रसन्न वह मन मे पापी, बालक मारी वीर हो ॥ आ०
१७७५ ॥ हणी जालधर के राजन् को, अर्जुन आया भीर। इतने में रवि अस्त हुआ फिर, ठेली युद्ध की पीर हो ॥ आ० १७७६॥
अभिमन्यु की देख व्यवस्था, अर्जुन शोच भराना। आय सुभद्रा को कह दिना, भावी ने यही जाना हो ॥ आ० १७७७ ॥
उत्तरा वधु है गर्भवती या, निश्चय जनसी पूत। अभिमन्यु के मरने पर भी, रखसी घर का सूत हो ॥ आ० १७७८ ॥ प्रात
होत ही जयद्रथ मारूँ, नहीं तो अग्नि-प्रवेश। यों कही क्रिया कीनी सुतकी, धारा प्रण विशेष हो ॥ आ० १७७९ ॥ हुआ
तेरहवॉ दिन यह पूरा, युद्ध किया है वन्द। अपनी अपनी छावनी मॉई, गये सुभट के वृन्द हो ॥ आ० १७८० ॥ द्रोणाचार्य ने
तुरत ही प्रतिज्ञा, अर्जुन की सुन पाई। जयद्रथ के रक्षण हित फिर, शकटव्यूह रचाई हो ॥ आ० १७८१ ॥ युद्ध करने को आया
द्रोण जो, रण भूमि मे वग। पाण्डव भी जा भिड़े सामने, खूब चलाया तेग हो ॥ आ० १७८२ ॥ प्रथम द्रोणाचार्य गुरु ने,
नमन करी उसवार। शकट-व्यूह मे फिर अर्जुन जी, घुसा न लागी वार हो ॥ आ० १७८३ ॥ शकट-व्यूह मे रहकर भूप ने,
अर्जुन पै बाण चलाया। अर्जुन ने भी फेंके बाण जब, सकल अरि थर्राया हो ॥ आ० १७८४ ॥ सह सके नहीं तेज अर्जुन का,
अरि ने प्राण छिपाए। पुत्र-शोक की आग से तपकर, शत्रु को मार भगाए हो ॥ आ० १७८५ ॥ सुतघाती को ढूंढत रण मे,

हय उत अर्जुन वीर। कौरव सैन्य मगी धुरव जब, ऐसा था बहुवीर हो ॥ भा० १७८६ ॥ शकट-व्यूह में जब अर्जुन ने, अपना शंख बजाया। विजय रूप सुन नाद को फिर तो, युधिष्ठिर हर्षाया हो ॥ भा० १७८७ ॥ हार मान दुर्योधन राजा युद्ध करन को आया। दुर्योधन को रोक के आगे, बढ़े अर्जुन हर्षाया हो ॥ भा० १७८८ ॥ हरि सारथी हैं अर्जुन के, जिसस मोद सवाया। जयद्रथ का देखा रणबल में, पता कहीं नहीं पाया हो ॥ भा० १७८९ ॥ उसके नहीं मिलने पर अर्जुन, अन्य का करा संहार। प्रतिज्ञा पूर्ण करन की लग रही आशा उसपार हो ॥भा० १७९०। युधिष्ठिरने भेजा सात्यकी को अर्जुन शोधन काज। कर हाहाकारी शकट-व्यूह म घुसा शत्रु से साथ हो ॥ भा० १७९१ ॥ भूरिश्रवा और सात्यकी क यों हुआ परस्पर युद्ध। दोनों के रथ टूट गये जब मन में आया क्रुद्ध हो ॥भा० १७९२॥ द्रोणाचार्य युधिष्ठिर जी का पकड़न ही क काज। कर रहा युक्ति भाँति भाँति की रचकर के नहीं साज हो ॥ भा० १७९३॥ भूरिश्रवा ने सात्यकी का शिर छदन खड्ग उठाया। घेर लिये सात्यकी मर अर्जुन ! जरा ध्यान में लाया हो ॥ भा० १७९४ ॥ भूरिश्रवा का हाथ पकड़के सात्यकी फिर बच जाय। तब अर्जुन भी भूरिश्रवा का काट हाथ गिराये हो ॥ भा० १७९५ ॥ अर्जुन की निन्दा वह करता चला रथ को फर। अब सात्यकी ने भूरिश्रवा का किया असि से हर हो ॥ भा० १७९६ ॥ अर्जुन शुद्धि काज युधिष्ठिर भीम का खास पठाया। शकट-व्यूह में घुस के योद्धा, कई का मार गिराया हो ॥ भा० १७९७ ॥ कर्ण राजा के रथ को भाँजा, दोनों ध्वजा गिराय। तब तो कर्ण भीम क सग में, दोनों युद्ध मचाय हो ॥ भा० १७९८ ॥ नवीन रथ में कर्ण बैठ कर टिड्डी ज्यों तीर चलाया। भगा दल शीघ्र ही इत उत, भीम न मूछा खाया हो ॥ भा० १७९९ ॥ कर्ण साचे यों प्रतिज्ञा मेरे, अर्जुन बिन ले प्राण। हणू नहीं या कारण भीम को, सीमी हृदय या घाव हो ॥ भा १८०० ॥ तब अर्जुन ने पिछले दिन में देखा जयद्रथ राय। तीर चलाया बहुत उसी पर कमी न रक्खी काँय हो ॥ भा १८०१ ॥ दोय घड़ी तक युद्ध किया है लाकर के बड़ रीस। अर्द्धचन्द्र सा बाण करीने छेदा जिस का शीस हो ॥

आ० १८०२ ॥ एक तरफ शिर फदक रहा है, दूजी और धड़ कूदे। जेसे कुम्हार मिट्टी का गूंदे, त्यो शिर उसका रूंदे हो ॥ आ० १८०३ ॥ प्रण पूरा हुआ अर्जुन का और, हुआ सूर्य उत अस्त। दोनो युद्ध बन्द करके फिर ता, गये स्थान हो मस्त हो ॥ आ० १८०४ ॥ सात अक्षौहिणी दुर्योधन की, दिन चवदा में खास। पाण्डवो ने युद्ध बीच उसको, करदी वहाँ पर नास हो ॥ आ० १८०५ ॥ बहनोई के वध को जानी, दुर्योधन को पाया। बुला सेना पति को राजा, ऐसा मता उपाया हो ॥ आ० १८०६ ॥ रजनो मे युद्ध किया नहीं पर, अब करना है भाई। मारो अचानक धावा ऐसा, अरि जावे घबराई हो ॥ आ० १८०७ ॥ द्रोण कहे सुन दुर्योधन तू, करो युद्ध की तैयारी। अब विचार कुछ नहीं करन का जो आव सो मारी हो ॥ आ० १८०८ ॥ तुम तो पीछे रहकर देखो, रण मे हाथ हमारो। भूखे शेर की भाति भिड़ूं जा, मै हू हितेच्छु थारा हो ॥ आ० १८०९ ॥ पाडव सुन के वे भी आये, शस्त्रों को ले लार। होन लगा है युद्ध निशि मे, लोपी दुर्योधन कार हो ॥ आ० १८१० ॥ प्रकाश डाल-डाल के लडते, दोनों आपस माहीं। सेना दवती देख घटोत्कच, आया वह भी वाहीं हो ॥ आ० १८११ ॥ रथ को भाज सुभट को मार, घटोत्कच उस वार। जीते महावली सुभटो को, करके जोश अपार हो ॥ आ० १८१२ ॥ भीम-सुत के पराक्रम को देखी, कहे धन पाडव वस। आया कर्ण दौड़ के वहा पर, करता वैरी विध्वस हो ॥ आ० १८१३ ॥ कर्ण घटोत्कच के आपस मे, युद्ध हुआ विकराल। परस्पर तीर चले वहुत से, वच गये चल के चाल हो ॥ आ० १८१४ ॥ घटोत्कच ने आई सामने, वांधी सेना सर्व। देख कर्ण क्रोधातुर हुआ, मेटा मेरा गर्व हो ॥ आ० १८१५ ॥ देवदत्त शक्ति को समरी, जो थी पार्थव काज। मत्र के डाली घटोत्कच पै, छुटते हुई आवाज हो ॥ आ० १८१६ ॥ पड़ते अग्नि की ज्वाल घटोत्कच, तत्क्षण मृत्यु पाया। देखी कौरव सेना नाची-कूदी, हर्ष मनाया हो ॥आ० १८१७॥ विलखा के वो पाचा पाण्डव, युद्ध करा विशेष। राजा कर्ण के ऊपर इनका, जागा अधिका द्वेष हो ॥ आ० १८१८ ॥ सुभट से सुभट जा भिड़िया, सवार से अरु सवार। गजवाले स गजवाला यो, वीती रैन

तिसबार हो ॥ श्रा० १८१६ ॥ दिवस सगत द्रोणाचार्य न द्रुपद विराट क वार्ई। बाण फेंक दोनों को मारे मरे न पीठ दिखाई हो ॥ श्रा० १८२० ॥ हुआ घोर संग्राम बीत गये ऐसे आठों याम। विषम रैन सब गया युद्ध म लिया नहीं विराम हो ॥ श्रा० १८२१॥ दिन पन्द्रहवें प्रात काल ही, फिर मचाया युध। धृष्टद्युम्न और द्रोण मिल दाना लड़े न रक्खा सुध हा ॥श्रा० १८२२॥ दाना सुभटों क तीरों स, सूर्य छत्र हुआ मन्द। शिर धड़ करके पट गई भूमि दृश्य रहे मुकुन्द हो ॥ श्रा० १८२३ ॥ कई सुभटा न मार्ग् बाण की सघन चलाई झोय। उस नीच साथ सुभट व, लम्बी नींद क मांय हो ॥श्रा १८२४॥ कौरव-सेना रूप समुद्र म, मगटा अर्जुन वीर। मानों बड़वानल समान शाखे वैरी नार हो ॥श्रा १८२५॥ द्रोण प्रलय पावक क जैसा बाले पाण्डव घन। उस बुझाने का धृष्टद्युम्न मेघ ज्यों हुआ उत्पन्न हो ॥श्रा० १८२६॥ धृष्टद्युम्न और द्रोणाचार्य का, युद्ध हुआ बहु बार। पाण्डव पक्ष की जय होती ह सुनजो म इसबार हा ॥ श्रा० १८२७ ॥ उसी समय मालव नृप का, युद्ध में था गज और। पाण्डव के सुभटों ने मारा जिसका मचा है शोर हो ॥ श्रा० १८२८ ॥ अश्वत्थामा था नाम उसीका जिसकी पड़ी पुकार। मारा गया है युद्ध के बीच में सुन लो हरबार हो ॥ श्रा १८२९ ॥ राय युधिष्ठिर भी यों बोला, अश्वत्थामा का मारा। द्रोणाचार्य सुनक जब बोला, क्या मरा पुत्र हमारा हा ॥ श्रा० १८३० ॥ सोच किया है भारी द्रोण न तजी युद्ध उसवार। धृष्टद्युम्न का कर मरणा, युद्ध में भी प्रचार हा ॥ श्रा० १८३१ ॥ वैर बाप का लेने का अब, अवसर मिला है शुद्ध। द्रोण रो रहा दुःख क मारे छोड़ दिया निज युद्ध हा ॥श्रा० १८३२॥ मारा बाण द्रोण के ऐसा पड़ा भूमि में आय। पुत्र मरा नहीं गज मरा है, खबर मिली फिर आय हो ॥श्रा० १८३३॥ विप्र पास आ राय युधिष्ठिर, पूछ सुख समाधि। विप्र कहे दुःखी ने ता गया, साग करी उपाधि हा ॥श्रा० १८३४॥ सत्यव्रत जा लीना तुम न, भ हुआ मारन काज। राय कहे मैं झूठ न बोला आपही ने भ्रम राख हो ॥ श्रा० १८३५ उसी समय देव आ बाणी, हुई नभ के मांय। आप तजो उपराम गुरुवारों शुद्ध भाव मन लाय हो ॥ श्रा० १८३६ ॥ अब समता-रस द्विज

ने धारा, सर्व पाप आलोची। ध्यान धरा नवकार मन्त्र का, खूब ही मन में मोची हो ॥ आ० १८३७ ॥ पिता-वैर सँभाल असि से, माथो लियो उतार। पहुँचा स्वर्ग पाँचवें माहीं, यहा इसका विस्तार हो ॥ आ० १८३८ ॥ विना नेत्र के मुख नहीं शोभे इसी तरह लो जान। द्रोण बिना कौरव की सेना शोभ नहीं लो मान हो ॥ आ० १८३९ ॥ दिन पन्द्रहवें का हुआ आधा, दुर्योधन यों सोचे। द्रोणाचार्य थे मुखिया अपने, जरा नहीं थे पोचे हो ॥ आ० १८४० ॥ मरा द्रोण हर्षा पाण्डव जन अश्वत्थामा गया कोप। जोश खाय बोला वह तम को, करूँ अरिका लोप हो ॥ आ० १८४१ ॥ चढ़ आया सेना लेकर के, संग में शस्त्र लाया। करूँ पाण्डव का नाश जाय के, तो ब्राह्मण का जाय हो ॥ आ० १८४२ ॥ केवल जूँझे अश्वत्थामा वह, छोड बाण करारा। वायु से झडे पान वृक्ष के, त्यों शत्रु सहारा हो ॥ आ० १८४३ ॥ कौन सहे शर अश्वत्थामा का भाद्रव ज्यों वर्षाया। अर्जुन जूँझे सन्मुख उसके, देखी जन घबराया हो ॥ आ० १८४४ ॥ अर्जुन की बाण-बौछार से अरि का चला न जोर। तब तो द्विज क्रोधावेश में हो, बदले नैन के तोर हो ॥ आ० १८४५ ॥ एक ही भस्म करे जगत् ने, ज्यों पावक की ज्वाल। ऐसा नारायणी शस्त्र छोडा, अर्जुन पै तत्काल हो ॥ आ० १८४६ ॥ मानो आग पाताल से निकली, धाँय धाँय कर आई। या बड़वानल उठो निधि से, यों समझे मन माईं हो ॥ आ० १८४७ ॥ श्री कृष्णजी जोर से बोल के सुभटों को जितलावे। बचने की युक्ति से बचकर, अपने प्राण बचावें हो ॥ आ० १८४८ ॥ उसी तरह से सुभटों ने जब, कर लिना वह काम। नारायणी वह शस्त्र फिर तो, निष्फल हुआ तमाम हो ॥ आ० १८४९ ॥ नारायणी शस्त्र हुआ निष्फल, छोड़ा अग्नि का बान। जिससे पाण्डव-सेना बीच में, भभकी आग महान हो ॥ आ० १८५० ॥ वारुण अस्त्र छोडो अर्जुन ने, शान्ति शान्ति वरताई। जोर चला नहीं अश्वत्थामा का, तब वह गया बिखलाई हो ॥ आ० १८५१ ॥ सुरने वाणी करी नभ से, सुनो विप्र चित्तलाई। पहुँच सके नहीं तू अर्जुन को, जिसके हरि हैं, सहाई हो ॥ आ० १८५२ ॥ कालभ्रष्ट ज्यों हुआ चीता,

स्या यम बड़ा पर बास । पहर राय हुआ दिन पूरा शान्ति रक्षक यों बोले हो ॥ भा० १८५३ ॥ अपने अपन आश्रम करे युद्ध बन्द हो पाया । गये निवस्थान सभी सैनिक, पाण्डव-दल हर्षाया हो ॥ भा १८५४ ॥ दिवस साखवें के होत ही दुर्योधन उसपार । गया-सुत को किया सेनापति र शिरोपाव उतार हो ॥ भा० १८५५ ॥ समरांगण में शत्रु-दल का दुःशासन का ध्यान । नाना भाँति क शस्त्र सुभट संग आय युद्ध के स्थान हो ॥ भा० १८५६ ॥ धृष्टद्युम्न और अर्जुन साहसीक युद्ध आरंभा आन । मार-काट' के शब्द सिवा वहाँ दूजा सुन न कान हो ॥ भा० १८५७ ॥ दोनों दल में युद्ध भिड़ा है बाजे सिंधू बाजा । पड़े धड़ा धड़ शिर सुभटों क मानो वृक्ष फल साखा हो ॥ भा० १८५८ ॥ कई सुभटों हाथ बीच है रुधिर भरी तलवार । मानों रण-लक्ष्मी का इसने, पहन लिया सिंगार हो ॥ भा० १८५९ ॥ शिर धड़ फरक क सब हो मानों हर्षोत्कर्ष दिखावें । स्वग माय में देवी इस मेंटें, फूल माल पहनावे हो ॥ भा० १८६० ॥ कयी कई सुभट को मारा शर योग तत्काल । महार विरद का करन कारण प्रगटा प्रलय काल हो ॥ भा १८६१ ॥ दुःशासन तीर चपा सम फक, पाण्डव-सना भाँई । भीम रथ बैठी सम्मुख आया द्रौपदी बात चितलाई ॥ भा १८६२ ॥ गदा मार के रथ को तोड़ा दुःशासन घबराया । भीम न उसका दबाय लिया तब दुःख बदला पाया हो ॥ भा० १८६३ ॥ भीम कहे रे पापी दुष्टा य द्रौपदी का दुःख शाना । यही पाप अब फूटा तेरे कलम्भ का फल लेना हो ॥ भा० १८६४ ॥ ऐसा कही भीम जब मारा पग दे काढ़ प्राण । दोनों हाथ उखाड़ फेंक माखी मूसा जान हो ॥ भा १८६५ ॥ मरके नर्क सातवीं पहुँचा कम उदय बस आया । द्रौपदी पाण्डव सब हर्षाया भीम न वचन निभाया हो ॥ भा० १८६६ ॥ रवि अस्त अब हुआ तब सभा सुभट स्थान सिधाया । दुःशासन के मरन की सुनकर दुर्योधन दुःख पाया हो ॥ भा १८६७ ॥ अब रैन-समय म कौरव-पक्ष क सब सामन्त बुलाया । कसे हाथ जीत आपनी, राय बताओ भाया हो ॥ भा १८६८ ॥ कृष्ण कह सुना

राजन्! मेरी, अर्जुन को लो मार। फिर स्वजीत होने के माहीं, सदेह नहीं लगार हो ॥ आ० १८६९ ॥ शल्य सारथी बने हमारा, तो सिद्ध हो सब काज। शल्य कहे मैं नृप का सुत हूं, कैसे बनूं महाराज हो ॥आ० १८७० ॥ हस काग नहीं होय बराबर, गधा कहां तुखार। दुर्योधन कहे मित्र के नाते, बात करो स्वीकार हो ॥ आ० १८७१ ॥ स्वामी-वचन है शिर आंखो पर, सारथी बनूं इसवार। शल्य कहे एक मेरी बात भी, आप करो इकरार हो ॥ आ० १८७२ ॥ रण मे कहूं आप सो खमजो, मत करजो अपमान। जब राधा-सुत ने सुहर्ष से, करी बात प्रमान हो ॥ आ० १८७३ ॥ कर्ण कहे दुर्योधन राय से, अर्जुन लूगा मार। नहीं तो जीवित ही आग्न मे प्राण करूं सहार हो ॥आ० १८७४॥ इतना कह कर डेरे पहुंचे, रन करन को पूरी। गुरु प्रसादे चौथमल कहे, है बात अभी अधूरी हो ॥आ० १८७५॥ दिन सतरहवे कर्ण भूप ने, शल्य को ले कर साथ। शस्त्र अस्त्र धारन कर आया, बनने को वह नाथ हो ॥आ० १८७६॥ होन लगा है युद्ध जोर का चले तीर तरवार। धूल उड़ कर छाया अंधेरा, तो भी न माने लगार हो ॥आ० १८७७॥ चमके शस्त्र अंधेरे मांही, ज्यों बिज्जू झमकार। एक दूसरे पर मारे खजर की, करे न कुछ भी वार हो ॥ आ० १८७८ ॥ घायल होके पडे भूमि पर, तो भी जोश भरपूर। फिर भी अरि को मारन धावे, वर्षे मुख पर नूर हो ॥ आ० १८७९ ॥ अर्जुन! अर्जुन! मुख से बोलता, दौड़ा कर्ण सरोप। शल्य कहे थे सुनो कर्णजी, तुझ मे है यही दोष हो ॥आ० १८८०॥ किंचित् समझ नहा तुझ मांहीं, मारू अर्जुन आज। नहीं तो मरूं आग मे गिरके, प्रण करा किस काज हो ॥ आ० १८८१ ॥ गऊएं चोरने के मौके पर, अर्जुन तुम्हे भगाया। चित्रागद बाधा जब शर मे, तब थे मुंह छिपाया हो ॥ आ० १८८२ ॥ बाधे दुर्योधनादि भ्रात को, मारन ही के काज। अर्जुन आय छुडाया तुम को, क्या रखते हो नाज हो ॥ आ० १८८३ ॥ कौन अर्जुन है मेरे सामने, मत शल्य ऐसा बोल। ऐसा कही धनुष्य चढ़ा के, शर फेके दिल खोल हो ॥ आ० १८८४ ॥ हनता हुआ अनेक सुभटो को, वह योद्धा सरदार। 'अर्जुन किधर? किधर?' यो कहता, देखे

निगाह पसार हो ॥ भा० १८८२ ॥ अर्जुन के हैं हरि सारथी, बैठा रथ सो एक। कर्ण मनी मग्गूम वह माया वेर करो नहीं
मक हो ॥ भा० १८८६ ॥ अब युधिष्ठिर आया सामने सुत हुआ अप्राम। धर्मपुत्र के शरीर में खून निकला फटक धाम हो
॥ भा० १८८७ ॥ हरि कह तुम अब भाग का बींधा सारा शरीर। फिर भी कानों पे नहीं रेंकती, जूँ
तरे सुधार हो ॥ भा० १८८८ ॥ इससे तो कुन्ती के सुवा तूं अम्मती तो ही ठीक। आमात आके करत सहायता दिखाके
अपना पाक हो ॥ भा० १८८९ ॥ तबता सारा चढ़ा अर्जुन का मिला कर्ण में आन। धनुष्य चढ़ा टंकार करा के आड़े सना
सन बान हो ॥ भा० १८९० ॥ धर्म पुत्र का क्रोध कर्ण में, अर्जुन से कीना युद्ध। शस्त्र शस्त्र से वचन वचन से चढ़ा आर फा
युद्ध हो ॥ भा० ८९१ ॥ कर्ण को अर्जुन ! थे कानों धनुर्वेद अभ्यास। प्राप्त-शिक्षा उपाध्य होने का आज होगा प्रकाश हो
॥ भा० १८९२ ॥ कर्ण चलाके बाण बहुत में, कीयो मार संघार। रथ सारथी निशान सभी का, छेद दिये विचार हो ॥ भा०
१८९३ ॥ अर्जुन-शर सूरज-किरण सम, करता सुरस प्रकाश धूम्र समान उन कर्ण बाणों का छिन में कीना विनाश हो
॥ भा० १८९४ ॥ अर्जुन का मारन जिस कर्ण ने अहि-राय चलाया। फुत्कार करता नागक सदृश मानों दशका धाया हो
॥ भा० १८९५ ॥ गरुड़-अस्त्रों का अर्जुन भट्टी में, फेंक अरिके सम्मुख। क्षणत ही भुजग सप भाग व्यापा नहीं कोई दुःख
हो ॥ भा० १८९६ ॥ पश्चाताप हुआ बहुतेरा, कर्ण को उस बार। जो शक्ति-हथियार मुझ पासे, एक ही था प्रकार हो ॥ भा०
॥ १८९७ ॥ उस शक्ति का एक दम मैंने घटोत्कच पर डाली। जिसकर हो गया खाली हाथ यों, करनी अब क्या चाली हो
॥ भा० १८९८ नहीं था मारता आज अर्जुन को आराबर बलधारी। रथ सारथी उल्टा अब यह, मन में कर विचारी हो
॥ भा० १८९९ ॥ दोनों परस्पर जूझे मारो सुर देखन को आया। सिंह-नाद सम करें गर्जना घोर युद्ध मचाया हो ॥ भा० १९००॥
पार्थी, गज, सुभट वहाँ सारे त्रासें युद्ध को देख। मध्य सहित सबों आन भिड़े भट देखें अनिमष हो ॥ भा० १९०१ ॥

कृष्ण, शल्य दोनो सारथी, रथ फेरें चहुं मेर । दोनो के दल उभय पार्श्व मे, मार किया जहां ढेर हो ॥ आ० १६०२ ॥ कर्णिर मिश्रित कर्दम अधिक है, कर्ण रथ तस ठौड । नाभी तक गड़ा भूमि में रुक, गया करता दौड हो ॥ आ० १६०३ ॥ अश्वों को वहां खुब चलाया, शल्य ने देकर जोर । गडा हुआ रथ नहीं निकला तब, चिंता हुई उस ओर हो ॥ आ० १६०४ ॥ कर्ण कहे, सुनो तुम अर्जुन, क्षत्रिय-धर्म विचार । रथ नहीं निकले वहा तक, तीर खेंच मत मार हो ॥ आ० १६०५ ॥ दीन-वचन या मुख से बोलते, शल्य कहे उस ठोड़ । शत्रु को यों बोल के तुमने, खोदी अपनी मरोड हो ॥ आ० १६०६ ॥ प्राण जाय पर वैरी सामने, सूर न भाषे दीन । टले न टाली भवितव्यता की, देखो मेष या मीन हो ॥ आ० १६०७ ॥ दुर्योधन ने नहीं सोच कर, मुझको सारथी कीना । सिंह को भेज शृगाल के सगमे, गजब यह कर दीना हो ॥ आ० १६०८ ॥ साहसिक हो युद्ध करो तुम, मरने का तज कर सोच । शूर मरे पर दीन वदे नहीं, करे नहीं सकोच हो ॥ आ० १६०६ ॥ भांति भाति करके समझाया मत कायरता लाय । पौरुष चढ़ा धुजा दे धरनी, मूछा वन्ट लगाय हो ॥ आ० १६१० ॥ कृष्ण कहे तब राधा-सुत ने, तू कहे क्षत्रिय धर्म । अहिवन मे मारा बालक को, कहां गया क्षत्रिय-कर्म हो ॥ आ० १६११ ॥ वह एकाकी तुम मिल मारे, किया शस्त्र-प्रहार । क्षत्रिय धर्म रहा कहा तेरा, दिल मे सोच गवार हो ॥ आ० १६१२ ॥ स्वय चले नहीं न्याय-पथ मे, शिक्षा अन्य को देवे । ऐसी बात करी चरितार्थ, जरा शर्म नहीं लेवे हो ॥ आ० १६१३ ॥ समय देखकर कहे हरीजी, सुन अर्जुन मुझ बात । तेरे सुत को मारा इसने, ले वैर कर घात हो ॥ आ० १६१४ ॥ मौका देख हने न वैरी को, वह पीछे पछतावे । हरि की बात सुणी ने कोपी, अर्जुन धनुष्य उठावे हो ॥ आ० १६१५ ॥ चन्द्रबाण से शिर को छेदा, उछल पडा आकाश राहु-सम मस्तक को जान के, अस्त हुआ रवि खास हो ॥ आ० १६१६ ॥ सांज होन पर युद्ध वन्द कीना, गये सुभट निज स्थान । शल्य भूपने दुर्योधन पां, कही बात सब आन हो ॥ आ० १६१७ ॥ कर्ण कानो से कुण्डल लेके, अर्जुनजी उस वार । ताके माता पास रख दीना,

माता देख जिघार हो ॥ धा० १५१८ ॥ भवि भाक्रंद कर कुन्ती रोवे, कहे युधिष्ठिर वैन । हर्ष-स्थान पर दुख क्यों हुआ, मतु बरसे नैन हा ॥ धा० १५१९ ॥ तब कुन्ती कहे निज पुत्रों को कर्ण-जन्म की बात । माता-मुख से सुनी हकीकत विस्मित हो गये भाव हो ॥ धा० १५२० ॥ मधुसूदन को भी मालूम, तब उनने सब सुनाई । अर्जुन कहे तुम मनुज हुआ यों पहले खबर नहीं पाई हो ॥ धा० १५२१ ॥ प्रथम क्यों नहीं कही मात में बात भ्रात की सारी । लागी हत्या या बन्धु की, जिसका दुख है भारी हो ॥ धा० १५२२ ॥ हरी कहे हस्तिनापुर जावे, मूषा कही थी बात । सो मैं कर्ण को सर्व सुनाई कुन्ती थारी मात हो ॥ धा० १५२३ ॥ पाण्डव से हिल मिल के रहो तुम, दुर्योधन को छोड़ । विषभक्ष्य तुम्ह सा होके मत तू बन्धु से रख राड़ हो ॥ धा० १५२४ ॥ इत्यादि कही बहुत समझायो नहीं भाई उस दाय । दुर्योधन है मित्र हमारो, ऐसा बोला वाय हो ॥ धा० १५२५ ॥ पाण्डव को शत्रु सम जानूं, बोला कोरा मराई । अब मैंने भी समझा कर्ण को है यह बड़ा अन्याई हो ॥ धा० १५२६ ॥ मारते या भगर मारते इसे न क्षत्रिय-धर्म । ऐसी काज सभी पछताओ छोड़ो मिथ्या भर्म हो ॥ धा० १५२७ ॥ प्रत किया कीधी मिल पांडव, इतने प्रगटे देव । वे कहें भमुधर नागदेव क सेवा करें नित नेम हो ॥ धा० १५२८ ॥ कमल लेन को भाये ब;अन,पकड़ लिये सब ताई । हरवागमेषी भाया तब तब, छोड़ नाग दर्याई हो ॥ धा० १५२९ ॥ उसी समय इक वर दियो था तुम को नाग कुमार । कष्ट पड़म पै होंगे सहाई, यों भाया इसवार हो ॥ धा० १५३० ॥ रथ कर्ण का हमने गाड़ा तुम स देव विचार । मात होत ही शत्रु सब के लीजो राज भीकार हो ॥ धा० १५३१ ॥ हर्षे पाण्डव हृदय बीच में, करी देवता भीर । कर्ण-मृत्यु सुन के दुर्योधन हुआ बहुत दिलगीर हा ॥ धा० १५३२ ॥ 'कर्ण कथ' यों सपे आप मुख, बीच बड़ा दुख पाय । अश्वत्थामा कहे धैर्य धरो जरा चैन की बंसी बजावे हो ॥ धा० १५३३ ॥ करें युद्ध मात मिल सार पाण्डव पांचों मारें । शल्य को बना सेनापति अपना, सारा काज सुधारें हो ॥ धा० १५३४ ॥ प्रसन्न

हुआ दुर्योधन सुन के, जैसे रमको घास। काटे बाद मिले जो पानी, फिर पामे उल्लास हो ॥ आ० १६३५ ॥ दिवस अठारवां उदय हुआ जब, शल्य सेनापति थाप। दुर्योधन रथ बैठ सैन्य ले, आया रण-थल आप हो ॥ आ० १६३६ ॥ कृपाचार्य, कृत-वर्मा आदि सब, अश्वत्थामा ले साथ। मुख से कहता पाण्डव से, यो, आज दिखाओ हाथ हो ॥ आ० १६३७॥ राय युधिष्ठिर सज धज कर, ले भाई परिवार। रथारूढ हो रणभूमि में, आया सैन्य ले लार हो ॥ आ० १६३८॥ जूझे सुभट परस्पर दोनो, आगे पांव बढ़ावे। शस्त्र से शस्त्र को छेद के, भूमि खूब धुजावे हो ॥ आ० १६३९ ॥ भिड़ता हुआ नकुल को देखा, करता शत्रु-सहार। शल्य आय के सन्मुख जूझे, बाजे के झनकार हो ॥ आ० १६४० ॥ चले तीर भाला गुरज जहां, पड़ें खड्ग प्रहारो। वायु-वेग से खिरे जाम्बु ज्यों, टूटे शिर हजारो हो ॥ आ० १६४१ ॥ शल्य ने पाण्डव की सेना को, करके जोर हटाई। सेना मुड़ती देख हरि ने, पाण्डव को जितलाई हो ॥ आ० १६४२ ॥ धर्मपुत्र तू देख रहा क्या ? शल्य को जल्दी मार। उत्तराकुमर का वैर लेय के, मिटे सभी तकरार हो ॥ आ० १६४३ ॥ करी प्रतिज्ञा धर्मपुत्र ने, दोय पहर के माईं। शल्य राय ने निश्चय मारूँ, जीवित छोड़ूँ नाई हो ॥ आ० १६४४॥ करें युद्ध अब शल्य युधिष्ठिर, दोनों वीर सरदार। कायर देख थरथर कपावे, चले शस्त्र प्रहार हो ॥ आ० १६४५ ॥ टूट-टूट के पड़े सुभट वहां, कई भागे ले प्रान। रुधिर-नदी मे तड़प रहे हैं, कमजल मच्छी जान हो ॥ आ० १६४६ ॥ शल्य की मदद करन हित आये, कई कौरव के राय। अर्जुन भी वहां आया दौड़ के, शत्रु दिये गिराय हो ॥ आ० १६४७ ॥ शक्ति-बाण को ऐसा मारा, हने शल्य के प्रान। जीत हुई युधिष्ठिर नृप की, दिन आया मध्यान हो ॥ आ० १६४८ ॥ दुर्योधन सुन शल्य मृत्यु की, क्रोध जोर का छाया। भिड़ा आय पाण्डव-सेना से, घन ज्यों शर वर्षाया हो ॥ आ० १६४९ ॥ शकुन भूप ने कर कपटाई, सहदेव लिया घेर। घड़ी एक सग्राम करा है, दोनों ने मिल फेर हो ॥ आ० १६५० ॥ छेदे बाण से बाण उभय मिल, फेर के रथ चहु मेर। तीखे-शर शकुनी को मारा, किया उसी का ढेर हो ॥ आ० १६५१ ॥ तब दुर्यो-

घन भाग गया रे, छिपा सरोवर मांय। सेना उसकी खूट रही है, अपने नायक साथ हो॥ भा० १५५२॥ पाण्डव आवें दुर्योधन को बलधर कोई वहां माय। दुर्योधन गया पैस सरोवर, दीनी खबर सुनाय हो॥ भा० १५५३॥ अब पांडव का दल अक्षोहिणी एक रहा अवशेष। छ' अक्षोहिणी रणखेत रही सब सो भी बल विशेष हो॥भा० १५५४॥ पाण्डव मिल के उस सरवर को चहु दिशि कीना घेर। रे कायर! तें युद्ध को छोड़ी क्यों पैसा इसमें फेर हो॥ भा० १५५५॥ शूरो नहीं वध रण में पीठ दे सन्मुख आ जूंझे॥ टेक॥ कौरव वंश के कलंक लगाया धिक् दुर्योधन पापी। कायर बनी शरणा लिया सर का, लाजी कीर्ति कापी हो॥ शू० १५५६॥ निकल बाहर तू क्या छुपे अब, भाग्या सरोवर तीर। नहीं तो अस्त्र-शोषण-विधि से शोषूं सघला नीर हो॥ शू० १५५७॥ तृण-सम गिनता सारे जगत् को करता खूब अहंकार। औरों को कुछ नहीं समझता वह गर्व कहां इस बार हो॥ शू० १५५८॥ यदि मरने से डरता था तो क्यों नहीं कीना मेल। शूरवीरता कहां गई वह भगकर हुआ तू फैल हो॥ शू० १५५९॥ पांच ग्राम पाण्डव को दे यों श्रीकृष्ण ने समझाया। लोभ-ग्रसित होकर नहीं दीना अब क्या तो घबराया हो॥ शू० १५६०॥ मधुसूदन का वचन न माना सो तें भला न कीधो। इसका फल पाया यह तैने जल शरणों में लीधा हो॥ शू० १५६१॥ निकल नीर से झटपट तू अब, आजा रण के स्थान। छिपा रहेगा कहां तक तू यहां है तेरा अपमान हो॥ शू० १५६२॥ करे न युद्ध तू सब के संग में कर ले बन्धु साथ। जो इतना मंजूर होय तो देखें सब तुम हाथ हो॥ शू० १५६३॥ धर्मपुत्र का वचन सुणी ने, निकल नीर से आया। गदा युद्ध में करूँ भीम संग सब के मन में भाया हो॥ शू० १५६४॥ लेके गदा दोनों ने हाथ में आ भिड़ गये उस बार। हाकाहाक करें जोर से, देखें सब नरनार हो॥ शू० १५६५॥ उभय हरि हलधर वहां देखें, सिंहनाद मुख करता। कूद उछल कर धरती धुजावे मल्ल ज्यों अरथी करता हो॥ शू० १५६६॥ फेर सँभारी दुर्योधन ने तान भीम के मारी। लगी चोट शिर पर गदा की, स्याई मूर्च्छा

भारी हो ॥शू० १६६७॥ सचेत होय के दुर्योधन के, हृदय गदा फटकारी। क्षण पीड़ को सहन करीने, फिर भीम के मारी हो ॥शू० १६६८ ॥ नैन मिचे भीम हुआ मूर्छित, पांडव ऐसा पुकारे। प्यारे भ्रात भीम जैसे को,मारा इस हत्यारे हो ॥शू० १६६९॥ अर्जुन कहे जब यादुपति से, बात हुई अनजानी। दिन सतरह जीते युद्ध मे, गोपद नाव डुबानी हो ॥ शू० १६७० ॥ मधुसूदन अब कहे अर्जुन को, सुनो हमारी वानी। छल की बात भीम यदि जाने, होवे तब मन मानी हो ॥ शू० १६७१ ॥ जाघ बीच गदा की मारे, दुर्योधन मरजाय। भीम बात सुनी उठ बैठा, लीनी गदा सहाय हो ॥ शू० १६७२ ॥ कभी बगुला ज्यों दोनों भमता, कभी दादुर-गति धारे। हार जीत दोनों की नाहीं, दुनिया खड़ी पुकारे हो ॥ शू० १६७३ ॥ मारी गदा की दुर्योधन-शिर, दूजी दीनी जांघ। लगी चोट तस गुप्त-स्थान मे, गया कुभ ज्यो भाघ हो ॥ शू० १६७४ ॥ मूर्छा खाय पड़ा दुर्योधन, होगया मृत्यु समान। देखी कौरव-दिल बिलखाया, पाण्डव हर्ष महान हो ॥ शू० १६७५ ॥ फिर भीम दुर्योधन के शिर, पग से ठोकर मारी। देखी दृश्य बलभद्रजी को, छाया कोप जीवारी हो ॥ शू० १६७६ ॥ बलभद्र कहे मूर्ख भीम क्यों, मरे हुवे को मारे। इतना कहके युद्ध-स्थान से, अपने स्थान सिधारे हो ॥ शू० १६७७ ॥ इधर रवि भी अस्त हुआ है,शासन निशा जमाया। पाण्डव को ले आप हरीजी, बीच छावनी आया हो ॥ शू० १६७८ ॥ धृष्टद्युम्न ने शिखण्डी को, रक्षक वहा बनाया। फिर पाण्डव हरी के साथे, वहां से आप सिधाया हो। शू०१६७९॥ उरू-भंग स अब दुर्योधन, रहा दुःख वह पाड। उसी समय अश्वत्थामा, कृपा,-कृतवर्मा बोला आई हो ॥ शू० १६८० ॥ दुर्योधन राजाजी ! आपको, हैं लाखो धन्यवाद। नमे नहीं शत्रु को आकर, होय रहा यश-नाद हो ॥ शू० १६८१ ॥ लावे काट पाण्डव के शिर हम, युद्ध करी इस वार। सच्चे सेवक तभी तुम्हारे, देर न करें लगार हो ॥ शू० १६८२ ॥ दुर्योधन सुन भूली वेदना, बोला धीरे वानी। शीघ्र जाय पाण्डव शिर लाओ, कृपा कर गुण खानी हो ॥ शू० १६८३ ॥ क्योंकि मित्रो ! अब हमारे, प्राण बहुत सी वार। नहीं रहना चाहते

इस वन म, निश्चय सोजो विचार हो ॥ शू० ११८४ ॥ तब अश्वत्थामा, कृतवर्मा और कृपाचार्य सब सार । स लार कर धाया जब बोला पाण्डव-सैन्य मंझार हो ॥ शू० ११८५ ॥ जब धृष्टद्युम्न शिखण्डी आये निज २ ले हथियार । किया सामना इन दुष्टों का, लगी बहुत सी वार हा ॥ शू० ॥ ११८६ ॥ बाप का बदला लेन विप्र के, मन म पूरी आंट । धृष्टद्युम्न शिखण्डी का यहां किया शीश अब काट हो ॥ शू० ११८७ तदन्तर पांचाल जाग्या सा, करा युद्ध उस बार । कौरव-सुभट सभी संहारे शानिषम् लागी सार हो ॥ शू० ११८८ ॥ जब विप्र कोप कीश्च बाणों स, पांचों को लिया मार ॥ अश्वत्थामा कृपाचार्य, हर्षित हुए अपार हो ॥ शू० ११८९ ॥ पांचालों के शिर तीनों ल आये दुर्योधन पास । लाय शिर पाण्डव के ऐसा, करा यहां प्रकास हो ॥ ११९ ॥ दुर्योधन सुन वचन इन्हों का, खुशी हुआ मन माइ । इस दृष्टि पसार तब बोला यह क्या कीना भाई हो ॥ शू० ११९१ ॥ व शीश पाण्डव क नहीं हैं बूझे क सा भान । यह तुम म कहां बने अरिका शीश दिया भी मान हो ॥ शू० ११९२ ॥ पांचालों के शिर तुम लाये, किया बहुत तिरस्कार । मरा कार्य करा नहीं तुमने, हंगा लाम्ब धिक्कार हो ॥ शू० ११९३ ॥ छोड़ प्राण क्षेम बीच हाक, उपना सातवीं नर्क । तैंतीस सागर स्थिति दुर्योधन, भोग वहां बिन तर्क हो ॥ शू ११९४ ॥ दुर्योधन राजा के मरते हो गया अवसर भंग । सभी साथ कौरव का बिखरा बिगड़ गया सब ढंग हो ॥शू० ११९५॥ सज्जनजन कह माइ मरा है यह दुर्योधन हठी । मुखिया मरते ही फिर यहां पर सारी गोठ विघट्टी हो ॥ शू० ११९६ ॥ पाण्डव आय बलभद्र मना के, डर संग में लाया । पांचालादिक की बात सुणी न, पाण्डव रुदन मचाया हो ॥ शू० ११९७ ॥ पाण्डव रोते देख धैय द श्रीकृष्ण समझावें । दुःख करे से क्या होना है ? मर न पीछे आवें हो ॥ शू ११९८ ॥ रोती नीठ द्रौपदी राखी, इन सब की कर बात । होनहार टलती नहीं हरगिज जाको विलापात हो ॥ शू० ११९९ ॥ महाभारत यह पूर्ण हुआ है हुई पाण्डव की जीत । ऐसी जाण नीति पर रीझा पामोग सुख मीत हो ॥ शू० ॥ २० ० ॥ हरि

पाण्डव मिल धृतराष्ट्र पा, बोले इस विधि आन। मत करना तुम दु'ख पुत्रो का, सुनो बात धर ध्यान हो ॥ शू० २००१ ॥ ऐसी सोच
अस्थिर यौवन वय सपदा, अस्थिर पुत्र परिवार। ज्ञान-दृष्टि लगा के देखो, है मिथ्या ससार हो ॥ शू० २००२ ॥ ऐसी सोच
के दु'ख विसारो, होनी हो सो होय। यह पांचों ही पाण्डव तुम्हारे, विनयवत सुत जोय हो ॥ शू० २००३ ॥ था अभिमानी
दुर्योधन नृप, बात तानिक नहीं मानी। वृद्ध-पुरुष का वचन सुना नहीं, तासे हुई तस हानी हो ॥ शू० २००४ ॥ यो उपदेश देय
नृप को, त्यो गांधारी नारी। शोक निवारा तब सबही ने, हरि-वचन को धारी हो। शू० २००५ ॥ गाधारी आदिक सब
राणिया, मिल चाली रण ठोड। कृष्ण पाण्डव भी आये वहां पर, धृतराष्ट्र ने छोड़ हो। शू० २००६। दुर्योधन को पडा देखने
करा आक्रन्द पुकार। क्यो सोया तू वत्स! उठ अब, हमको कौन आधार हो ॥ शू० २००७ ॥ विलापात करती देखी ने, झुरे
पाण्डव तिस वार। भानुमती शिर कूट के रोवे, दीन वचन उचार हो ॥ शू० २००८ ॥ जयद्रथ-मृतक निहार दुशल्या, रोई दे
पोंकार। रोने की सुनके रोए सब, पशु पक्षी नर नार हो ॥ शू० २००९ ॥ राय युधिष्ठिर तत्क्षण बोले, रोती रोकी बाल। मरे हुवे पीछे
नही आवें, कौन भरोसा काल हो॥शू०२०१०॥ तीर्थंकर गणधर मुनि जग में, सुर सुरेन्द्र नर जात। करा संहार काल ने सब को, औरो
की क्या बात हो॥शू०२०११॥ अब नदी सरस्वती के तट ऊपर, अर्जुन विद्याधार। अग्नि-अस्त्र प्रभाव करीने, सबका किया सस्कार हो
॥शू०२०१२॥ राय युधिष्ठिर भी वहा आया, मिली सब परिवार। उर्द्ध-देही कीजे क्रिया जब, सब कीनी तिसवार हो॥शू० २०१३॥
गांधारी प्रमुख पहुॅची घर, सारा शोक मिटाया। घर-घर रंग वधावा गावें, घर-घर आनन्द छाया हो ॥ शू० २०१४ ॥
कृष्णादिक सब साथ लेय के, आया युधिष्ठिर भूप। विजयकारी है सैना सग मे, शोभा बनी अनूप हो ॥ शू० २०१५ ॥
घर-घर तोरण ध्वजा बॅधाया, हस्तिनापुर शृगारा। कुंकुम का थापा दे दीना, स्वस्तिक किया दुबारा हो ॥ शू० २०१६ ॥
मस्तक मुकुट काना युग कुडल, रत्नों के गले हार। गजारूढ हो गये युधिष्ठिर, सजधज के उस वार हो ॥ शू० २०१७ ॥

हरि हलधर प्रद्युम्नकुमर और साम्ब नेमी है पास। कई हाथी कई घोड़े पाड़िया भीम प्रमुख पञ्चास हो ॥ शृ० २०१८ ॥ मगल गाव मिली गोरड़ी, बैठी गवाक्ष मंझार। आई सवारी शहर बीच में, बाजा क झनकार हो ॥ शृ० २०१६ ॥ चंवर बीजसा छत्र सोहता, राय युधिष्ठिर आवे। भीष्म प्रमुख करें भेंटणा सुहागन कलश बधाव हो ॥ शृ० २०२० ॥ सौम्य नजर से निरख सब को प्रजा का बतलावे। मणि–माणक–मोती बहुत से, थाल भरीने लावे हो ॥ शृ० २०२१ ॥ करें पुष्प की वर्षा ऊपर, बाज जीत नगारा। बन्दीजन यश गा रहे हैं, देवें दान हिलकारा हो ॥ शृ० २०२२ ॥ राज भवन में आये थाल के मोती चौक पुराया। नृप सिंहासन आरूढ़ हुवे जब, इन्द्र सम दर्शाया हो ॥ शृ० २०२३ ॥ कुंकुम तिलक करा हरि ने, हय गय द्रव्य बहु दीना। हरि सहायक हैं पाण्डव के, पुण्य फल यह लीना हो ॥ शृ० २०२४ ॥ आवें भेंटणा दशों दिशि से हय गय पुन शस्तर। नग जड़िया भूषण कई भांति, जरिकस के वस्तर हो ॥ शृ० २०२५ ॥ पांडु कुंती पिता–मात पर, जैसा नृप का प्रम। गांधारी और धृतराष्ट्र पर स्नेह साचवे तेम हो ॥ शृ० २०२६ ॥ हरि हलधर आदि को जिमावे, भाजन नाना भांत। दिन-दिन सेवा करें अनूपम रहे दिन रात हो ॥ शृ० २०२७ ॥ कुछ दिन ठहर कर यादव वहां स सीख मांग फिर जावें। दोय म नक्ष पहुँचा के पांडव, प्रेम धना घर आय हो ॥ शृ० २ २८ ॥ नृप विनवे यों दुःश्मसन से, छूटा वैभव समाज। ऐसी ज्ञान क सारा देश स मेटा अपमन महा राम हो ॥ शृ० २ २६ ॥ जो थे संग में और राजवी, दई शिरपाव उन तांय। कर स मान विदा किया उनको, कुशल निज घर जाय हो ॥ शृ० २ ३० ॥ राजा चित्रांगद प्रमुख सभी को विद्याधर परिवार। दे सम्मान विदा किया उनकों, आया निज घर द्वार हो ॥ शृ० २०३१ ॥ दया मांहि नृप पड़ह फिरायो, रोके नहीं शिकार। देवे सुख ही दान हाथ से, घर घर सत्कार हो ॥ शृ० २०३१ ॥ गउ–बरस वत् प्रजा पाले ले सब की आशीष। पाण्डव रहें सदा आनंद में हस्तिनापुर के धीश हो ॥ शृ० २०३३ ॥ अभिमन्यु की उत्तरा रानी, जाया सुन्दर नन्द। नाम परीक्षित उसका दीना, माना परमानन्द हो ॥ शृ० २ ३४ ॥ एक दिन नृप युधिष्ठिर पास मुनि

दर्शन हित चाले । हुवे गांगेयजी दीक्षित त्यागी, तन मन अर्प को गाले हो ॥ गु० २०३५ ॥ सब मिल के चालो दर्शन करवाने मुनिराज का ॥ टेक ॥ निज परिवार को संग में लेकर, कुरुक्षेत्र में आया । इस बात की होगे प्राप्ति, मुनि की संगत पाया हो ॥ सं० २०३६ ॥ हैं गांगेय मुनि गुण सागर, करता आत्म-ध्यान । शम, दम, क्षमा को धारे हृदय में, हैं शुद्ध क्रियावान हो ॥ सं० २०३७ ॥ तीन प्रदक्षिणा करी आन के, वंदे शीश नमाय । राउसी देवसी सुख साता यों, पूछे गुरु के तांई हो ॥ सं० २०३८ ॥ दया धर्म की कही मुनि जय, पाण्डव हुवे खुशहाल । उचित स्थान बैठ के बोले, आज हुवे निहाल हो ॥ सं० २०३९ ॥ अब साधु दे धर्म-देशना, यह संसार असार । नर जन्म को लाहो ले लो, होय सफल अवतार हो ॥ सं० २०४० ॥ ऐसा जन्म नर भव पाकर, जो न करे निज धर्म । वह डूबे भव-समुद्र बीच में, बांधे चीकने कर्म हो ॥ सं० २०४१ ॥ बिन धर्म करे से निष्फल जाता है, नर भव देख लो ॥ टेक ॥ अर्थ, काम की जो है देशना, सो समझो ससार । देवे देशना धर्म-मोक्ष की, भव जल तारण हार हो ॥ वि० २०४२ ॥ दान, शील और तप-भावना, यही धर्म का अंग । सद्भावों से करे आराधना, मिटे पाप का संग हो ॥ वि० २०४३ ॥ अभयदान और ज्ञान-दान है, तीजा सुपात्र दान । जो कोई देवे शुद्ध भाव से, हो उसका कल्याण हो ॥ वि० २०४४ ॥ शील धर्म है दो प्रकार का, सागारी अनगार । द्वादश व्रत है सागारी का, महाव्रत ले अनगार हो ॥ वि० २०४५ ॥ बाह्य अभ्यन्तर दो तरह का, तप युधिष्ठिर जान । बाह्य तप से लब्धि होवे, अभ्यन्तर केवल ज्ञान हो ॥ वि० २०४६ ॥ दान शील और तप बीच में, भाव धर्म प्रधान । भावों से ही मिले मोक्ष फिर, होता सिद्ध भगवान हो ॥ वि० २०४७ ॥ भांति भांति करके समझाया, खूब किया उपदेश । साधु-वचन जो धारे हृदय में, करे न नर्क प्रवेश हो ॥ वि० २०४८ ॥ जब पाण्डव कर जोड़ बीनवे, किये मनुष्य संहार । कूड़ कपट कर पाप कमाया, हो कैसे निस्तार हो ॥ वि० २०४९ ॥ धन्य धन्य हो तुम वैरागी, मोह के फन्द को छोड़ा । युद्ध बीच में ज्ञान पाय कर, कर्मों का बन्ध तोड़ा हो ॥ वि० २०५० ॥ भद्रगुप्त नामा आचा-

रत्न उसी समय के मांय। मुनि गांगय स ऐस बोले धम में ध्यान लगाय हो ॥ चि० २०५१ ॥ अल्पायुष्य है मेरा भद्र ! रत्न त्रय आराधो। क्षमत क्षमापना करके सब से आतम-अरज साधो हो ॥ चि० २ ५२ ॥ विजयमुत् गांगेय उठके करा गुरु के पांव। सल्लेखणा की आज्ञा मांगी विशुद्ध भाव को लाय हा ॥ चि० २०५३ ॥ प्रथम ईर्यावही प्रतिक्रमी, तीनों करण फिर सोच। ज्ञान दर्शन चारित्र का फिर, अतिचार आलोच हा ॥ चि० २०५४ ॥ द्वादश भेदे करी तपस्या,टाली मे अतिचार। अष्टादश पापों के तांई, आलोचा इसवार हो ॥ चि० २०५५ ॥ हिंसा करी युद्ध के अन्दर, सब्या विषय कषाय। राग द्वेष सारा आलोऊं, मित्र-भावना लाय हो ॥ चि० २०५६ ॥सुकृत का मैं करू अनुमोदन दुष्कृत को परिहार। चारों शरणा होना मर,भव जल तारण हार हो ॥ चि २०५७ ॥ चारों आहार को त्याग दिया है अनशन व्रत लिया धार। पुनः चारित्र को धार लिया है, महाव्रत चार प्रकार हो ॥ चि० २०५८ ॥ तब पाण्डव आ पड़े चरण में, अहो गुणनिधी अगाध। अर्जुन कहे मैं मार वीर सो माफ करो अपराध हो ॥ चि० २०५९ ॥ गुरु-वाणी में बींध आप को अनर्थ किया अपार। किया कर्म बिना विचारा इसका मुझे धिकार हा ॥ चि० २ ६० ॥ बार बार अपराध खमाकर चरणों शीश नमाया। शम, दम गुणकर युक्त मुनिवर, राग द्वेष नहीं लाया हो ॥ चि० २ ६१ ॥ एक वर्ष चारित्र पाला संथारा एक मास। द्वादशवें देवलोक जाय के किया आपने वास हो ॥ चि० ॥ २ ६२ ॥ चन्दन काष्ठ की चिता बनाके मुनि किया संस्कार। पाण्डव कुरु मान के आया हस्तिनापुर मंझार हो ॥ चि० २०६३ ॥ अब पाण्डव रहे सदा मोद स धर्म नीति चितलाइ। गुरु प्रसादे कहे चौथमल, अगाडी पूर्व पुण्याई हो ॥ चि० २ ६४ ॥

द्रौपदी हरण

अरिष्टनेम भगवान को, वन्दू मन वच काय । कथा द्रौपदी-हरण की, सुनजो ध्यान लगाय ॥ १ ॥

शियल शुद्ध पाला संकट बीच में, महासती द्रौपदी ॥ टेर ॥ करें राज्य हस्तिनापुर मांहे युधिष्ठिर महाराज । सज्जन और परजन के सांग, आप सुधारें काज हो ॥ शि० १ । गगन-पथ से नारद आया, नाना देश विदेश । पाण्डव-राय के महल बीच मे, किया आन प्रवेश ॥ शि० २ ॥ पाचों पाण्डव, मात, तात उठ, दिया तुरत सत्कार । ऊंचे आसन बैठा उनों को, पूछे कुशल उसवार हो ॥ शि० ३ ॥ असयती और अव्रती मरे, ऋषिराज को जान । उस कारण से द्रौपदी ने, दिया न आदर मान हो ॥ शि० ४ ॥ अपमान देख नारदजी चिंते, या पाण्डव की नार । पाच पति को पाकर होने का, रखती गर्व अपार हो ॥ शि० ५ ॥ सच कहा है, दुनिया बीच में, एक पुरुष की नार । वह भी गर्व करे बहु मन में, क्यों नहिं पचार हो ॥ शि० ६ ॥ पाच पुरुष की नारी को फिर, क्यों नहीं आवे मान । रूप जोबन में पड़के द्रौपदी, मुझे समझा हैवान हो ॥ शि० ॥ ७ ॥ जो इसका नहीं मद उतारू, तो क्या नारद नाम । उमर भर फिर याद करे यह, ऐसा ले मुझ काम हो ॥ शि० ८ ॥ विच्छू-डंक समान नारद के, लागे है यह चटका । चला वहां से उठ गगन में, रख अपमान का खटका हो ॥ शि० ९ ॥ सोलह

हजार देरामें बरते श्रीकृष्ण की भान। इनको छोड़ के अन्य प्रान्त का एकान्त शुद्ध स्थान हो॥ शि०१ ॥ जम्बू द्वीप लवण निधि तज के धातु-खण्ड के माय। तास भरत में सुरकका है, शहर बड़ा सुखदाय हो ॥शि०११॥ पद्मनाभ राजा है वहां पर सात सो हैं पटरानी। रूप अनूपम है शशिवसी, यौवन गुण की खानी हो ॥शि० १२॥ नारद पहुंच आया वहांपर खास महल के मांय। राजा रानी मिलके सबही स्वागत करी हर्षाय हो ॥शि०१३॥ हे नारद ! तुम कई भूप की राण्यां नजरों दखी । पर मेरे हैं रानियां जैसी, कहीं न तुमने देखी हो॥ शि०१४॥ नारद बोले सुनो भूपति !, है मिथ्या अहंकार। कूप-मण्डूक के सदृश तुम तो मानो सुख अपार हो ॥शि०१५॥ हे राजन ! है नार जगत में, एक एक से अधिकी। नहीं देखा समुद्र-दादुर सुख मानें कूप में फलकी हो ॥ शि० १६॥ सुना भूप है जम्बू-द्वीप में, भरत-क्षेत्र शुभ स्थान। हस्तिनापुर में पाण्डव नृप घर नार निरूपम जान हो ॥ शि० १७ ॥ उस पग-अंगुष्ठ खास भाग में लगें न यह सब रानी। उसके सामने कहूँ कहां तक ये भरती हैं पानी हो॥ शि १८ ॥ ऐसा कहा ऋषि चल दीना नृप के चटकी लागी। विषयों के वश आतुर होकर देखन की मति जागी हो॥ शि० १९ ॥ पिया सुमरते सुर प्रगट हो, बोला इस प्रकार। वह स्त्री नहीं चाहे अन्य को तज दो अनिष्ट विचार हो॥ शि० २०॥ राजा का हठ जान देव फिर, आया त्रिया हेत। कीनी निद्रित द्रौपदी ताई, करके अधिक अचेत हो॥ शि० २१ ॥ युधिष्ठिर के महल से लेकर अमरकका में लायो। अशोक-वाटिका में रख सती को नृप को आन मिलायो हो॥ शि २२ ॥ बिन सोच कर्तव्य ये कीना सोच मानजे राजा। अब तेर पावेगा जग में अपकीर्ति का बाजा हो ॥ शि० २३ ॥ अब मुझको मत कभी बुलाना साफ कहूँ मैं आज। सती शिरोमणि है यह सती, कीजे धैर्य स काज हो ॥शि० २४॥ मत करना खिद इसके सग में सू कही गया निज स्थान। पर-कामांध सीख नहीं माने, वो जग में बेइमान हो॥ शि० २५ ॥ रानी द्रौपदी जाग कह मुझे, कौन हरण कर लाया ? फिक्र हुआ बहुतरा उसके, विचार हृदय में आया हो॥ शि० २६ ॥ कहां हस्तिनापुर सासु ससुरा कहां मुझ प्रीतम प्यारा। कौन जगह का यह महल

शत्रु, देखो आज निकारा हो ॥ शि० २७ ॥ कहां है महल मेरे वे सुन्दर, कहां रत्नों की सेज । मलीगिरी दासी कहां मेरी, चौं- तरफा रही गेज gaze हो ॥ शि० २८ ॥ कहां हिंडोला है कचन का, यह नहीं मेरा बाग । कोई शत्रु ने कुबुद्धि करी है, रखकर मन में लाग हो ॥ शि० २९ ॥ दे ओलम्भो आर्य देव ने, रानी कई प्रकार । करने मे ओछी मत रखजे, तेरी आज है बार हो ॥ शि० ३० ॥ ले अन्त पुर पद्मनाभ सग, चाल सती पा आया । घूघट का पट करी द्रौपदी, बैठी सकोची काया हो ॥शि०३१॥ केसा तेरा रूप अनूपम, विधिना विविध बनाया । हे मृगनयनी ! पद्मिनी ! तैंने, इन्द्राणी-मान नसाया हो ॥ शि० ३२ ॥ तुझ कारण मैं देव मनाया, करी तीन उपवास । वहा से तुम को यहां बुलाई, पूरो हमारी आस हो ॥ शि० ३३ ॥ मत रखजो कोई बात का, मैं हूं नृप बलकारी । अन्य भूप सब अनुचर मेरे, मान विनती म्हारी हो ॥ शि० ३४ ॥ सारे राज्य की करूं मालिकन, और थापू पटराणी । सब रानी तेरा हुक्म उठावे, करो प्रकाश थें वाणी हो ॥ शि० ३५ ॥ किसकी लाज करे तूं प्यारी, होजा झटपट राजी । मन की घुडी खोल बोल दे, एक बार तू गाजी हो ॥ शि० ३६ ॥ सोचे सती है हाथ शिला तल, कर्म-योग से आया । कर तजवीज धर्म बचाना, यही विचार मन ठाया हो ॥ शि० ३७ ॥ काल बिताने की खातिर वो, बोली यों नरमाई । छ' मास तक कुछ मत बोलो, सोचू जरा मैं काई हो ॥ शि० ३८ ॥ इतने मे सहायक अवश्य होंगे, मेरे देव मुरार । नहीं तो कब्जे हूं मैं तेरे, चिता भूप निवार हो ॥ शि० ३९ ॥ पाण्डव और हरी के रथ सब, जल थल में भी जांय । जहां चाहें वहां लेजा सके हैं, गति-भग नहीं थाय हो ॥ शि० ४० ॥ धन्यवाद ही उनको मिलता, जो दृढ धर्म के माई । उसकी ही हो जग में प्रशसा, माने बात सवाई हो ॥ शि० ४१ ॥ साठ सहस्र वर्षों तक देखो, तप सुन्दरी ने कीना । कृष बनाई काया को फिर, सयम प्रभु पां लीना हो ॥ शि० ४२ ॥ सतियो माडे फिर शिरोमणि,सत्यवती या एक । राजा रावण आगे रक्खी, अपनी पूरी टेक हो ॥ शि० ४३ ॥ स्ववश मे नहीं कोई कठिनता, शील-पालन के साई । परवश मे दृढ़

होकर रहवे, उसकी होय मखाई हो ॥ शि० ४७ ॥ एक सेसनी दूजी कामनी, हाथ पराये जाय । साबुत पीछी नहीं आती है, लोक-वचन जग मांय हो ॥ शि० ४२ ॥ विषयासक्त रावण था पूरा दुखी रानी खास । वो भी शीयल को नहीं खण्डा है, उसको है शाबास हो ॥ शि० ४६ ॥ कष्ट पड़न पर भी नर नारी तजें न शील अगार । उसको सब नमन करते हैं, यश गावे संसार हो ॥ शि० ४७ ॥ बसे देखे करे बहु पारना, आयम्बिल रूखा आहार । विघ्न-विडारन सती द्रौपदी सो तप लीना धार हो ॥ शि० ४८ ॥ इत जाग कर युधिष्ठिर देखे, नहीं द्रौपदी पास । दूजी बहां पर पाण्डव नृप ने सुधि न लागी तास हो ॥ शि० ४६ ॥ राज हमारे राज्य बीच में, करे कौन अन्याय । ऐसा कौन सबल सुभट आग, पकड़ मैं दूं मिलाय हो ॥ शि० ५० ॥ कही हकीकत आप बाप को सुन के आश्चर्य आया । भेजे सुभट तलाश करन को खबर न कोई लाया हो ॥ शि० ५१ ॥ कुन्ती से पाण्डु नृप बोले तू द्वारिका जाय खास कहीजे मधुसूदन से खसी पता लगाय हो ॥ शि० ५२ ॥ जब कुन्तीजी खास वहां से, चलकर द्वारिका आई । हरी आय भूआ के सामने माथा धरे बधाई हो ॥ शि० ५३ ॥ भोजन-भक्ति स निवृत्त होय के, बोले कृष्ण मुरार । किस कारण से भूआजी ! पधारे, कहो बात विस्तार हो ॥ शि० ५४ ॥ तब कुन्तीजी कहे भतीजा ! सुनलो मेरी बात । हरण करी है द्रौपदी तांई, कोई गुप्त घपजात हो ॥ शि० ५५ ॥ सुन के हकीकत हरी क दिल में हांसी नहीं समाव । राजन करी बापू ने देखो, शोध न रक्खी तिसमात हो ॥शि० ५६॥ इतनी नार की रक्षा करूं मैं सुनो भूआ ! इस बार । पांचों पाण्डव महाबली से रक्खी न गई एक नार हो ॥ शि० ५७ ॥ कृष्ण कहे भूआ के तांई, चिन्ता दूर हटाव । स्वर्ग, मर्त्य पाताल कहीं से, सौंपूंगा तुम्हें लाय हा ॥ शि० ५८ ॥ दे विश्वास हस्तिनापुर भेज कुन्तीजी घर आई । गोविन्द से जो बात हुई वह सारी कह सुनाई हो ॥ शि० ५६ ॥ हरी कराई शोध आप अब लीना सब सम्भार । लाधी नहीं कहीं द्रौपदी जिससे हुआ विचार हो ॥ शि ६० ॥ इतने नारद ऋषि वहां आये, दे उन को सत्कार । कुशल

क्षेम की बात करी ने, पूछे इस प्रकार हो ॥ शि० ६१ ॥ ग्राम, नगर, पुर, पाटण जाओ, देखो देश विदेश। जो देखी हो कहीं द्रौपदी, बात कहो विशेष हो ॥ शि० ६२ ॥ अमरकंका है धातृखड मे, पद्मनाभ जहां राय। पंचाली मम मे वहा देखी, सशय है दिल माय हो ॥ शि० ६३ ॥ जब हरिजी नारद मे बोले, हुई तुम्हारी किमिया। हम पडे सुनकर नारदजी, तब निश्चय करलिया हो ॥ शि० ६४ ॥ तब गोविन्द ने कागज माडे, लिखी हकीकत सारी। बुला दूत को पत्र सौंप कहे, जा गजपुर इस वारी हो ॥ शि० ६५ ॥ पाण्डु नृप से जाकर कहना, सोच करो मत काई। मिली खबर द्रौपदी की अब धातू खंड के माई हो ॥ शि० ६६ ॥ इस कारण सेना ले आना, पूर्व सागर के तीर। मैं भी फोज ले वहां पर आऊ, फिर उतरेंगे नीर हो ॥ शि० ६७ ॥ दूत चाल हस्तिनापुर आया, पाण्डु नृप के पास। कर जुहार फिर पत्र सौंपने, बात करी प्रकाश हो ॥ शि० ६८ ॥ पत्र पढा और सुनी बात सब, सारे पाण्डव हर्षाये। लेके सेना साथ बहुत सी, जल्दी आप सिधाये हो ॥ शि० ६९ ॥ इत नारायण भारी फौज ले, सागर के तट आई। उचित स्थान देख आपने, तम्बु दिया तणाई हो ॥ शि० ७० ॥ पाण्डव भी पहुचे सागर तट, विलम्ब करी कछु नाय। मिले हरी से प्रेम जनाई, दूधा मेह वर्षाय हो ॥ शि० ७१ ॥ दोनों सेना हुई इकठ्ठी, जब बोले हरिराय। दो लक्ष योजन लवण समुद्र है, कैसे लाघा जाय हो ॥ शि० ७२ ॥ दश दशार बलभद्र बोले, जलनिधि होना पार। हरि सिवा नहीं तिर सकते हैं, तिरे हरी आधार हो ॥ शि० ७३ ॥ तीन उपवास हरिजी करके, स्वतिक ध्यान लगाया। हुआ सुर तीजे दिन प्रगट यों, आनन्द कृष्ण के छाया हो ॥ शि० ७४ ॥ किस कारण मुझे याद किया है, केशव दिया जिताय। लाना द्रौपदी पद्मनाभ से, उसने किया अन्याय हो ॥ शि० ७५ ॥ मत जाने का कष्ट उठाओ, दू मैं द्रोपदी लाय। सुरकका को उठा मूल से, जल में दू डूबकाय हो ॥ शि० ७६ ॥ हरी कहे तुम कर सकते हो, इसमे सन्देह नाहे। हाथों हाथ सौंपन का मैंने, कहा भूआ के ताई हो ॥ शि० ७७ ॥ छः रथ और सात जनो को, देव लगाया पार। पहुच गये अमरकका

का, ठहरे बाग मभ्धार हो ॥ शि० ७८ ॥ हरि ने दारू नामा सारथी, नृप के पास पठाया। जाके साथ मारी सिंहासन, माले पत्र मझाया हा ॥ शि० ७९ ॥ कठिन वचन से यों फटकारा अरे लपटी भूप। श्रीकृष्ण योद्धा यहां आये करपद्ध होजा भूप हो ॥ शि० ८० ॥ भूप कोप के हरि दूत को काढ़ा कर अपमान। निज सेना को तुरत बुलाई हाजिर हो गइ आन हो ॥ शि० ८१ ॥ सुसज्जित होके फिर राजा हाथ गही शर चाप। गज एरावत हो आरूढ़ पत्र सन्मुख आया आप हो ॥ शि० ८२ ॥ पाण्डव के प्रति श्रीकृष्ण कहे अरि साथ संग्राम। तुम हममें स कौन करे अब धन पाण्डव कहें श्याम हो ॥ शि० ८३ ॥ अब हरें समाम बीच में तब तुम करजो पार। यों कही हरि को नमन करके रथ पर हुवे सवार हो ॥ शि० ८४ ॥ हम नहीं या पद्मनाभ नहीं, यों कही पाण्डव धाया। माधव सांचे जीत हाथ कब प्रथम वचन सुनाया हा ॥ शि० ८५ ॥ हुआ परस्पर युद्ध इन्हों के मन ज्यों शर बर्षाया। देखी जोर अरि का भारी, जब पाण्डव घबराया हो ॥ शि० ८६ ॥ ध्वजा पताका काटी रथ की पाण्डव पांचों भागा। हरि कहे समुद्र भरा है आगे नहीं वहां पर भागा हो ॥ शि० ८७। मैं नहीं या यो पद्मनाभ नहीं गाया अमगल गीत। किया अपशकुन पहले ही तुम, कैसे आया जीत हा ॥ शि० ८८ ॥ रथारूढ़ हा कर कृष्णजी, मन में अरि भगाऊं। हरा उसी का द्रौपदी लाई उसके हाथ मँगाऊं हा ॥ शि० ८९ ॥ आया रण के पास हरिजी राजा भी फिर आया। पांच भगे यह कौन गिनत में अभिमान या छाया हो ॥ शि० ९० ॥ पंचायण शंख लेई हाथ में हरि धुंधकार लगाई। तीजे भाग की सेना भागी राय सोच मन माई हो ॥ शि ९१ ॥ टंकार सारंग धनुष्य की सुन के, राजा मन घबराया। सेना हट गई पीछे तब तो, राजा गढ़ में धाया हा ॥ शि ९२ ॥ दर्वाजा बंद किया शहर का पर चन बोलें चाय। भूप लंपटी प्रमुख होड़, कौन करे अब सहाय हो ॥ शि० ९३ ॥ हरि आय दरवाजा सन्मुख नरसिंह रूप बनायो। करी अगराम जोर से भारी, पंजों शुद्ध लगायो हो ॥ शि ९४ ॥ गढ़ काट, महल गवाक्ष वेग्रथ ही खण्डित हो गये

सारे । जाय सती के पास बोला यों, अब तो तू ही तारे हो ॥ शि० ६५ ॥ सती कहे नहीं जाने मुझको, हरि-भ्रात की नार ।
मुझे मंगा के वासुदेव सग, तैने करा बिगार हो ॥ शि० ६६ ॥ विलम्ब रहित स्नान कर भीगी-साड़ी तन पर धार । ले अंतेवर
मुझ आगे कर, पड़ उनके चरनार हो ॥ शि० ६७ ॥ उत्तम पुरुष हैं वही जगत में, छोडेंगे तुझ ताईं । इसी विधि से भूप हरि के,
पड़ा चरण में जाई हो ॥ शि० ६८ ॥ बहन हमारी तू यहां लाया, देता सजा करूर । पडा चरण मे जिससे तुझको, माफी दू
जरूर हो ॥ शि० ६६ ॥ लेई द्रौपदी श्रीकृष्ण ने, सौंपी भ्रात के हाथ । वापिस लौटके चले वहां से, लेकर सबको साथ हो
॥ शि० १०० ॥ द्रौपदी के ये शील-धर्म से, और हरि की शक्ति । विजय हुई पाण्डव की इसमें, करे क्या अन्य व्यक्ति हो ॥ शि०
१०१ ॥ तदनु हरि साथ ले सब को, जा रहे समुद्र मंझार । जम्बुद्वीप के भरत खड मे, कब पहुचे मन धार हो ॥ शि० १०२ ॥
उसी समय वहां के भरत में, मुनि सुव्रत भगवान । चपा नगरी के बाग बीच मे, समोसरे हैं आन हो ॥ शि० १०३ ॥ कपिल
नामा वासुदेवजी, आय वन्दे शिर नाई । सुनें देशना सभी प्रेम से, सफल गिने दिन राई हो ॥ शि० १०४ ॥ उसी समय सुनने
मे आया, शख-शब्द घन नाद । चौंकीने उनके चित्त माई, पैदा हुआ विखवाद हो ॥ शि० १०५ ॥ कौन नया यहां आके
उप्पना, वासुदेव बलराम । मेरे सरीखा ही है कोई, संदेह का नहीं नाम हो ॥ शि० १०६ ॥ हरि नमन कर प्रभु से पूछे, शंख
शब्द विचार । जिन कहे तुम सोच करो नहीं, पद्म का हुआ ख्वार हो ॥ शि० १०७ ॥ एक क्षेत्र के एक समय में, चक्री जिन
वलदेव । वासुदेव कभी नहीं होते, युग्म समझो नित मेव हो ॥ शि० १०८ ॥ पद्मनाभ से युद्ध जब करते, कृष्ण बजाया शंख ।
वो श्रवण कर तेरे होगये, दोनों कान फट बंक हो ॥ शि० १०६ ॥ कपिल बात सुनी हर्षाया, हरि से मिलना चाया । प्रभु बदी
जब चला तभी तो, जिनवर यों फर्माया हो ॥ शि० ११० ॥ हरि हरि से कभी नहीं मिलते, करलें क्रोड़ उपाय । यदि तूं इसी
समय में जावे, ध्वजा ही दिख पाय हो ॥ शि० १११ ॥ नम के प्रभु को गजारूढ़ हो, आया वहां तत्काल । जाते रथ की देखी

ध्वजा की, पीत वस्त्र मद बात हो ॥ शि० ११२ ॥ शंख बजाया जब हरि ने, कृष्ण सुनो अरदास । एक बेर दीदार दिखाओ, पूरो मन की आस हो ॥ शि० ११३ ॥ हरि ने बजाय दिया शंख से, शंख से शंख मिलाया । सागर लांघ गये पाण्डव से, अब आगे नहीं आया हो ॥ शि० ११४ ॥ तब वहां स चल करके आया अमरकंका क मांय । पद्मनाभ आकर के सम्मुख हरि के लागे पांव हो ॥ शि० ११५ ॥ पूछा पद्म से इस नगरी का हुआ कौन प्रकार । कौन शत्रु ने आकर यहां पर, सताया इस वार हो ॥ शि० ११६ ॥ स्वामी राज्य तुम्हारा क्षेम कृष्ण आप स्वयं आज । मैंने सामना करी हटाया, अब आया यह बात हो ॥ शि० ११७ ॥ कपिल मुन के करी कोप गादी मे उसे हटाया । दिया राज्य तब उसके सुत को, दुःख बहु वह पाया हो ॥ शि० ११८ ॥ इत श्रीकृष्ण समुद्र लांघ के पाण्डव का चितलाय । स्वस्तिक सुर से मिल सुख के मैं अभी मिलूंगा आय हो ॥ शि० ११९ ॥ तुम नौका से गंगा तर जाओ लीजो तट विश्राम । नौका यहान तुम शीघ्र भेज जो शुभ कारज अभिराम हो ॥ शि० १२० ॥ पांचों पाण्डव सती द्रौपदी चल गंगा-तट आया । बैठी नाव में पार हुआ जब, पाण्डव-दिल यों आया हो ॥शि०१२१॥ जो मन में थी बात भूप के सब के ताई सुनाई । हानहार वश होके सब ही, सहमत हो गये भाई हो ॥ शि १२२ ॥ कूप कूप का जुदा पानी, मुख मुंड भिन्न बानी । मस्तक मस्तक मति भिन्न यों, पाण्डव मति भी मानी हो ॥ शि० १२३ ॥ अनर्थ होता है हांसी बीच में पाण्डव के देखो ॥ टेक ॥ हास्य के वंश में करके अकाज शान्ति में करी उपाधि । जान बूझ के खोटा ध्यावे उसके होवे व्याधि हो ॥ अ० १२४ ॥ श्रीकृष्ण का बल देखनको पाण्डव के मन आया । नौका छिपाय बैठ गये सारे करक हठनी माया हो ॥ अ० १२५ ॥ जिसके देख से श्रीकृष्णजी गंगा के तट आया । नहीं देखी तहां नौका जब तो विचार मन में लाया हो ॥ अ० १२६ ॥ एक हाथ मही रथ घोड़ा, दूजे काढा नीर । साढे बासठ योजन का पाट है कब पहुंचू अब तीर हो ॥ अ० १२७ ॥ अधबीच आय थकन पड़ा है आगे तिरा न जाय । हरि सोचे पांडव क्यों हारे जो अधिक बलमाय हो ॥अ०

१२८ ॥ गगा देवी का आसन कपा, हरि की चिंता जानी। दिया थाह जब श्रम निवारा, वहा पर सारग प्रानी हो ॥ अ०१२६॥ दूजी छलांग सारिता–तट पहुंचे, पाण्डव सम्मुख आया। यहा तक तो है प्रेम परस्पर, अब भावी पलटाया हो ॥ अ० १३० ॥ कृष्ण कहे सब सुनो पांडवो, तुम बलवान अपार। गंगाजल को भुज बल तिरिया, फिर नारी ले लार हो ॥ अ० १३१ ॥ मैं गंगा के अधबीच आया, भारी चढा थकान। तब गगादेवी ने मेरी, करी सहायता आन हो ॥ अ० १३२ ॥ मुझमे तो तुम हो बलवंता, बोले प्रेम वश वाय। पद्मनाभ से कैसे हारे: यह सन्देह मन माय हो ॥ १३३ ॥ कपट छोड अव पाडव बोले, लाके सरलता भाव। तुम बल देखन कारण हमने, रखी छिपाई नाव हो ॥ अ० १३४ ॥ कृष्ण कोप कहे सुनो पांडवो, क्यो कुमति तुम छाई। बालवय से रहते सगमें, नया मिला मैं आई हो ॥ अ० १३५ ॥ गोवर्धन को तोका जब नहीं, देखा बल का थाग। फिर बालवय में मैंने ही तो, नाथा काली नाग हो ॥ अ० १३६ ॥ बड़े बडे मल्लो को पछाडे, कंस जरासध मारा। पद्मनाभ के समय मे तो, तुम भी थे मुझ लारा हो ॥ अ० १३७ ॥ पद्मोत्तर का तेज देखने, तुम तो रण से भागा उसी समय मै बैठ रथमे, अरि के पीछे लागा हो ॥ अ० १३८ ॥ भूप भाग शहरमे घुस के, दिये कपाट लगाई। गढ़ महल गवाक्ष गिराया, नरसिंह रूप बनाई हो ॥ अ० १३६ ॥ स्त्री रूप बनाके राजा, पड़ा चरण में आय। सो बल मेरा दाय न आया, अब देखन की चाय हो ॥ अ० १४० ॥ मरता कृष्ण क्या जाता तुम्हारा, पुण्य सुधारा काम। होगया काम तुमारा अबतो, कुण लखे श्याम हो ॥ अ ० १४१ ॥ पर इतना तुमने नहीं सोचा, ऐसी हरि पटनार। जो गगा बीच डूबता मैं तो, देता कौन समाचार हो ॥अ० १४२॥ हृदय कठोर निर्गुण मुख मीठा, है तुम्हारा साथ। तुम पांचों पूरे अपराधी, यों भाखे श्री नाथ हो ॥अ० १४३॥ ना कुछ बात के कारण तुम ने, कीना काज अकाज। मेरी तनिक बात नहीं रक्खी, निस्नेही होके आज हो ॥अ० १४४॥ लोह मुद्गर का उठा हाथ मे, केशव कोप भराय। लो अब तुम को बल दिखलाऊँ, बोले अरुण मुख थाय हो ॥अ० १४५॥ देखो कोप में ज्येष्ठ राज को, थरथर-कापी

माथा। भारी फिरी ऊभी रही सामने बोले बचन रसाला हो ॥ म० १४६ ॥ नहीं ज्येष्ठजी दोष तुम्हारा दोपी पति हमारा। आप साथ ऐसा छल करना शोभे नहीं लगारा हो ॥म० १४७॥ है गति विचित्र कर्म की भारी टाल सके नहीं कोय। जैसी होनी होवे ज्येष्ठजी, वैसी बुद्धि होय हो ॥म० १४८॥ मोरू ही यदि कुबोरू होवे मो पित समे हरवार। बिनऊँ गोद बिठाय ज्येष्ठजी दीजे रोप निवार हो ॥म० १४९॥ तुम मोटे महाराज जगत में सब विधि हो बुद्धिवान। निज परिवार ज्येष्ठजी जानी, माफ करो गुणवान हो ॥म १५०॥ तेरे पति के छल द्रौपदी कैस भूले आय। जो इतने मरे साथ करा यह शत्रु करता नाय हो ॥म० १५१॥ इसी गस्सा से आज मिटेगा, पांचों का उमाद। मेरा बल दिखलाऊँ इनको, यह भी करेगा याद हो ॥ म १५२ ॥ विलख वचन रानी हो बोले, नयनों आंसू डाल। ऊभी सामन अर्ज कर यह रोप तजो नन्दलाल हो ॥ म० १५३॥ भूआ कुन्ती की लाज रक्खो थें, पाण्डु को सुत जान। गो-ब्राह्मण-प्रतिपाल ज्येष्ठजी !, जाने सकल जहान हो ॥ म १५४ ॥ बात हुई यह बजन गजन की, क्या तक कहूं मुरारी। जो थे मनुष्य होय अगर तो, समझें याद बहु भारी हो ॥ म० १५५ ॥ ऐसा कोप आपका देखी, मुझसे सहा न जाय। रक्खो अखंड सुहाग ज्येष्ठजी ! हा मा कहूं तुम छोय हो ॥ म० १५६ ॥ ऐसा वचन सुन के बहुनन्दन मन में करा विचार। हठ लीनी अबला ने भारी, यों मन का किया मार हो ॥म० १५७॥ कराय न सुदर को फिराया कोप करी भरपूर। पाण्डव इनके पांचों रथ को, भांग किया चकचूर हो ॥म० १५८॥ फिर बोले हरि रोप भरा यों, जहां बरते सुख धाम। पाण्डव तुम परिवार युक्त अब मत रहना उस स्थान हो ॥म १५९॥ रथ मर्दन क स्थान हरि ने, शहर एक बसाया। स्वागत सहित श्रीकृष्णजी शहर द्वारिका आया हो ॥म० १६०॥ करें सोच पाण्डव वे वहां पर, कैसी बनी करतार। बिगड़ी बात अनायास अब तो भिन्न गये मुरार हो ॥म० १६१॥ लई द्रौपदी पांचों पाण्डव हस्तिनापुर में आया। पाण्डुराय कुन्ती माता सब, देखत ही हर्षाया हो ॥ म० १६२ ॥ विलख-वदन देख अंगज को पूछ पाण्डु

विचार। कुन्ती मात भी सुने बैठ के, और सभी परिवार हो॥ अ० १६३॥ पाण्डव बोले मात पिता से, सुनो हमारी बात। श्रीपति की थी प्रीति बहुतसी, अब नहीं रही तिलमात हो॥ अ० १६४॥ रोष करके श्याम ने हमको, दीना देश निकाला। वचन कहे दस बीस कठिन जो, चुभते हैं त्रिकाला हो॥ अ० १६५॥ पाण्डु नरिन्द पूछे कहो बेटा!, कैसे हुआ बिगार। वे कहें मिले समुद्र के तट जा, धर के प्रेम अपार हो॥अ० १६६॥ स्वास्तिक सुर को हरि आराधी, ले गये सबको पार। पद्मनाभ से युद्ध करी ने, भगा दिया उस वार हो॥ अ० १६७॥ नरसिंह रूप बना महल को, भू पै धुजा गिराया। जब राजा सग ले के द्रौपदी, चरणों शीश नमाया हो॥ अ० १६८॥ रथारूढ़ हो उतरे जलाधि, हरि कहे तुम्हे जिताऊं। गगा पार कर नाव भेजना, मैं सुर से मिल_आऊ हो॥ अ० १६६॥ हम गगा को तिरे नाव से, पहुचे परली पार। बैठ तरुतल हरि को करते, याद हम हरवार हो॥ अ० १७०॥ इते श्रीकृष्ण सीख ले सुर से, गगा के तट आया। मिली न नाव तब भुजा से तिर कर, गगा पार जब पाया हो॥ अ० १७१॥ हरि ने पूछा बिना नाव तुम, कैसे आये तीर। जब हम बोले बैठ नाव मे, आये पांचों वीर हो। अ० १७२॥ मेरे लिये नौका नहीं भेजी, विलम्ब क्यो करवाया। सरल–भाव से कह दिया हमने, वल आज अजमाया हो॥ अ० १७३॥ इतना सुन के हरि क्रोध कर, बोले निरस ही बोल। देखे अब पाण्डव को हमने, कृतघ्न मूढ़ निठोल हो॥ अ० १७४॥ दोलाख योजन समुद्र लाघ के, बहू तुम्हारी लाया। मुझ वल को फिर भी नहीं देखा, की मुझ से कपटायां हो॥ अ० १७५॥ कभी मुख तुम मत दिखलाना, यो कहि हरी सिधाया। होय दूमना हम यहा आये, दर्श आपका पाया हो॥ अ० १७६॥ पाण्डु राय कहे बुरा करा सुत!, हरी के साथ बिगारा। किया काम कृष्ण ने कैसा, सारा काज सुधारा हो॥ अ० १७७॥ मन मोती टूटा नहीं जुडता, लेना हृदय तोल। मोती तो मिल जाय मोल, फिर मन मिले नहीं मोल हो॥ अ० १७८॥ पाडु राय कुन्ती को भेजी, श्रीकृष्ण के पास। उन्हे शान्त करके तुम

पूछो कहां पर कर निवास हो ॥ म० १७६ ॥ अब कुन्ताजी आई द्वारिका, माधव लाग पांय। कैसे आना हुआ भुआ का, तब बाकी मरमाय हो ॥ म० १८० ॥ मन–मुटाव आ हुआ तुम्हारे, कही बात सब ज्ञान। तीन खण्ड में आन तुम्हारी, रहें चैन स स्थान हो ॥ म० १८१ ॥ मात पिता छोरों के ऊपर कभी रुष्ट नहीं होय। गोदी बिठा मनावें उनको, शिक्षा दें हित जाय हां ॥ म० १८२ ॥ पाण्डव ख्यात पै यों कोपो तो कहां रहसी वह जाय। दुर्योधन के सुत सब हससी वीरा! ध्यान में लाव हो ॥ म० १८३ ॥ कोय वृक्ष हाथों नहीं काटे जो फल द नहीं सोय। रक्खा पास मत दूर निकालो हमारी ओर तुम जोय हो ॥ म० १८४ ॥ भी पाहर की आशा तुमको याद आवें हरबार। सभी केह दिखलावे वीर!, कुछ तो हृदय विचार हो ॥ म० १८५ ॥ दीन वचन सुन माधव बोला भुआ दुःख मत आने। पाण्डव से है अधिक प्रेम मुझ मतना ओछा जानो हां ॥ म० १८६ ॥ पाण्डव मथुरा नगरी बसा आ दक्षिण सागर तट जाय। सुत को जाकर यों कह देना रहना वहां सुख मांय हो ॥ म० १८७ ॥ अधीठ सबक रही सेवा करजो, पालीजा थिर राज। मेरी तरफ से निर्भय समझे, करजो इच्छित काज हो ॥ म० १८८ ॥ इतनी सुन स सीख भुआ पुनः गजपुर चलके आई। पति–पुत्र को सारी हकीकत ज्यों की त्यों दिखाई हो ॥ म० १८९ ॥ जहां तक बान्धव सजन अपना जहां तक पुण्य बलवान। भूप रहेगी वहां तक मित्रों! अस्त होय नहीं भान हा ॥ म० १९० ॥ पांडव मथुरा नगरी बसाइ समुद्र के तट जाई। पालें राज्य सुख से वहां पर मूछ मे भूमि छुवाई हो ॥ म० १९१ ॥ अर्जुन पौत्र अभिमन्यु का सुत, परीक्षित कुंवर के ताई। श्रीकृष्ण ने हस्तिनापुर का, दीना भूप बनाई हा ॥ म० १९२ ॥ पद्मनाभ का न्याय विचारी मात गिनो परनारी। गुरु–प्रसादे चौथमल कहे है शिक्षा हितकारी हो ॥ म० १९३ ॥

—✦—

श्री राजीमती का जन्म

यशोमती का जीव है, अपराजित विमान । वहां से चवके जन्म लिया, मर्त्यलोक में आन ॥

सती राजमतीजी, रूप विद्या में, परम निधान है ॥टेक॥ उग्रसैन राजा की धारिणी, उसकी कोख में आई । गर्भ काल पूर्ण होते एक, सुन्दर पुत्री जाई हो ॥स० १॥ दिया उसी का नाम राजमती, पिता बहु हर्षाय । लालन पालन करने से वह, होती बड़ी सुख मांय हो ॥ स० २ ॥ अध्यापिका से पढ़ाई उसको, सिखी सब सुघडाई । ज्यों ज्यों वय में बडी होय त्यों, खिले पुष्प के नाई हो ॥ स० ३ ॥ एक रूप और दूजी दक्षता, तीजी लज्जावान । ऐसी अनूपम यादुवश में, और न कन्या जान हो ॥स०४॥ उग्रसैन राजा ने सुनी जब, नेम की बहुत बडाई । राजमती के योग्य वर है, सोचा मन के माई हो ॥ स० ५ ॥

श्री नेम से विवाह का आग्रह

चरित्र-नायक नेम प्रभु, बढ़े बीज ज्यों चन्द । विवाहादिक चारित्र का, सारा कहूं सम्बन्द ॥

एक दिन समुद्र विजय राजाजी, अरु सेवादेवी रानी । बैठे महल के बीच विनोद की, कहते थे वे कहानी हो ॥ १ ॥

उसी समय राजा या भावा, अरिष्टनेम कुमार। यौवन वय में प्राप्त हुआ है ब्याह का करा विचार हो ॥ २ ॥ इसके योग ही सुन्दर कन्या, ढूंढो भारत मांई। इतने आया नेम प्रभुजी देख माता हर्षाई हो ॥ ३ ॥ प्रसन्न होकर निज नंदन को, अपने पास बिठाया। कहा कुंवर को ब्याह करन हित मात पितु समझाया हो ॥ ४ ॥ हे वत्स ! तुम बालक नहीं हो हो युवक सुयोग। अविवाहित अब रहने में भला कहे नहीं लोग हो ॥ ५ ॥ इसीलिये है आग्रह हमारा विवाह करो स्वीकार। पुत्र वधु का मुख दरसन हित आवे बाट परिवार हो ॥ ६ ॥ प्रभु हर्षो कहे मात पितु से ब्याह का मत लो नाम। ब्रह्मचारी रहन से धरा का कभी न हो बदनाम ॥७॥ आगे भी तीर्थंकर हुए उनने करा विवाह। विवाह करने में हर्ज नहीं है ऐसो शास्त्र निगाह हो ॥ ८ ॥ आवागमन है मूल मार्ग यह संदेह नहीं लगार। पर मात पिता के आगे कहना पत्थर पर जल धार हो ॥ ९ ॥ ऐसा सोच के मात पिता से प्रभु ने यों फरमाया। धैर्य रक्खो से सब कुछ होयगा, यह समय के आया हो ॥ १० ॥

श्री नेमनाथ का विवाह

नेमनाथ भगवान की, बल परीक्षा होय। अतुल बली प्रभु जगत में, पहुंच सके नहीं कोय ॥

यह चरित्र रसीला करुणा अवतारी नेम जिनंद का ॥ टेक ॥ एक दिवस प्रभु नेमिनाथजी, निज सखा के लार। घूमत आये वासुदेव के, आयुधशाला मंझार हो ॥य० १ ॥ नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्र को देखे निगाह पसार। सारंग धनुष्य पंचायण का लिया कर में धार हो ॥य० २॥ शस्त्रागार का रक्षक चारु,कहे सुनो नेमनाथ। हरि सिवा कोई उठा सके नहीं भवी लगाया

हाथ हो ॥ ३ ॥ तब तो नेम ने तुरत उठाया, सारग धनुष्य के ताई। कमल नाल सम नमाके उसको, टकारा जोश लगाई हो ॥ य० ४ ॥ सारग धनुष्य टकार सुन के, सारा शहर कपाया। श्रीकृष्ण का दुश्मन वह फिर, कहा से चल के आया हो ॥ य० ५ ॥ थोडी देर के बाद नेम ने, शख को दीना फूक। तब तो प्रजा जन इत उत झांके, गये सभी छिप लूक हो ॥ य० ६ ॥ यों सुदर्शन-चक्र घुमाया, गदा कौमुदी जान। खड्ग घुमाया शस्त्र पांचवां, रक्षक सोचे धर ध्यान हो ॥ य० ७ ॥ सुन चकित हो आये कृष्णजी, आयुध-शाला मांई। देख वहां पर नेमनाथ को, चिन्ता मन मे आई हो ॥ य० ८ ॥ जान गये हरि मन मे यों वे, हैं पूरे बलवान। तौ भी अजमाने कारण उनको, लाए अखाड़े स्थान हो ॥ य० ९ ॥ सखा गोप के हुवे इकट्ठे, नरनारी के वृन्द। मेरी भुजा को नेम नमा दो, यों बोले गोविन्द हो ॥ य० १० ॥ कमल-नाल की भांति क्षण मे, हरि की भुजा नमाई। नेमनाथ ने अपनी भुजा को, फिर उची उठाई हो ॥ य० ११ ॥ झुका सके नहीं भुजा उन्हो की, समस्त बल लगाया। तब तो हरिने नेमनाथ को, अपने गले लगाया हो ॥ य० १२ ॥ भ्रात! तुम्हारा बल देखीने, असीम हुआ आनन्द। लखी परस्पर प्रेम दोनों का, दर्शक हुवे सानन्द हो ॥ य० १३ ॥ वहां से विदा हो दोनो भाई, अपने स्थान सिधाया। हरिने बलदाऊ भैया को, ऐसा आन जिताया हो ॥ य० १४ ॥ नेमिनाथ के बल के आगे, निर्बल सब ससार। यह चाहे तो सारे भारत पै, अपना करे अधिकार हो ॥ य० १५ ॥ बलराम कहे सत्य कथन तब, है नेमि बलवान। किन्तु राज्यादि विषयो मे यह, निस्पृह लेना जान हो ॥ य० १६ ॥ तो भी शंक नहीं जाय हरि की, जब निशा के माई। कुलदेवी प्रगट हो बोली, आप हरि के ताई हो ॥ य० १७ ॥ इक्कीसवे जिनराज ने कहा था, बाईसवे जिनराज। आजीवन ब्रह्मचारी रहकर, सारेंगे निज काज हो ॥ य० १८ ॥ इतना कह कर देवी फिर वह, होगई अन्तर्धान। प्रात.हुआ हरि सोचे मन मे, चिन्ता का नहीं स्थान हो ॥ य० १९ ॥ नेमिनाथ जी विवाह कर लेवे, ऐसा रचू उपाय। जिस से बल छीजेगा इनका, सब झगडा मिट जाय हो ॥ य० २० ॥ समुद्र विजय सेवा

रुपी को करत यों फरमान। विवाह करन का कहा बहुत पर मम धरे नहीं कान हो ॥ य २१ ॥ समुद्रविजय समादेवी अब कहें कृष्ण के ताईं। भ्रात तुम्हारा फिरे कुंवारा, इसमें शोभा नाईं हो ॥ य० २२ ॥ विवाह करन की कही बहुत पर नहीं हमारी माने। आपकी बात नहीं टाल सकेगा, इसी लिये कहा थान हो ॥ य० २३ ॥ इतना सुन हरी रणवास में आकर करे विचार। किस युक्ति से भ्रात नेमजी विवाह करे स्वीकार हो ॥ य २४॥ चिन्तातुर निज नाथ को देखी, बोली भामा राणी। चमसभवा है यह कौनसी ? नहीं बोलो हंस वाणी हो ॥ य० २५ ॥ हे प्यारी ! मुझ भ्रात नेमजी, हो गये पूरे युवान। उनकी वय का नहीं कुंवारा याद्-परा दरम्यान हो ॥ य० २६ ॥ इतनी वय तक रह कुंवारा, मरा होकर भ्रात। कहुं क्या यह मेरे लिये है लज्जा की या बात हा ॥ य २७ ॥ नहीं चिन्ता की बात नाथजी, करें कारज यह सहज। विवाह इन्हें स्वीकार कराना, बायें हाथ का खल हो ॥ य० २८ ॥ नेम के साथ विवाह करन को अनेकों राज-कुमारी। लालायित होंगी सब मन में संदेह नहीं लगारी हो ॥ य० २९ ॥ हे प्यारी ! तुम सोच करो पर नेमनाथ मुझ भाईं। मात पिता भी कह के हारे, कबूल करे यो नाईं हो ॥ य० ३० ॥ हे स्वामी ! हो आज्ञा आपकी समझावां इसी बार। तब तो हरि कह सौंपा कार्य यह करदो जल्दी तैयार हो ॥ य० ३१ ॥ रैवत गिरिपर बसन्तोत्सव की, करें आप तैयारी। देवर को विवाहित के लिये बाध्य करें बस सारी हो ॥ य० ३२ ॥ हरा सम्पू लगवाया गिरि पर भूमि सब समराई। सपत्नि हरि उसपर पहुंचे, ले नेम मेरा के साईं हो ॥ य० ३३ ॥ एक बच वाले यादव सब ही सपत्नि उसवार। चले सभी रथ बैठ वहां पर, भरक हय अपार हो ॥ य० ३४ ॥ पथ में हरि की रानियां मिलकर नेमिनाथ के संग। हंसी विनोद की बातें करती नाना रंग के ढंग हो ॥ य० ३५ ॥ रेवाचल के मध्य वन में सब चलके यहां आवें। गावें बजावें नाचें कूदें, सपत्नि हर्ष मनावें हो ॥य० ३६॥ क्रीड़ा करें नाना भांति की, खेले हस्तिवत रास। नेम कुंवर को विषयों का यहां, रच न लाग मैल हो ॥य० ३७॥ हरि हरि की पटनारी और यादव-कुल नरनार।

सरोवर बीच प्रवेश होय के करें, क्रीडा उस वार हो ॥य० ३८॥ हरि हार पुष्पो का लेकर, नेम के गले पहनाया । तब तो सत्य-भामादि मिल के, सारा बदन सजाया हो ॥ य० ३९ ॥ लगे नार का बदन नेम के, जागे नहीं विकार । मन रूपी हाथी के उनने, ज्ञानाकुश दी मार हो ॥ य० ४० ॥ हे देवर ! आगामी बसन्त पर, पत्नि सहित पाओगे । पति पत्नि मिल विनोद करन हित, यहां पर थे आओगे हो ॥ य० ४१ ॥ प्रयत्न निष्फल जान माधव की, रानी बनी निराश । तो भी प्रयत्न करने से वे फिर, हुई नहीं हताश हो ॥ य० ४२ ॥ तव भ्रात के अनेक नार अरु, कई के इक इक नार । बिन पत्नि नहीं शोभो देवरजी, विवाह करो स्वीकार हो ॥ य० ४३ ॥ जात न्यात में टोला मारे जरा तो कुछ विचारो । इक नार के भरण पोषण मे, क्योंकर करो थे टारो हो ॥ य० ४४ ॥ सीमातीत अनुरोध देखकर, मन में कर विचार । दिया मुस्कराय रुक्मणि ने जबतो, समझ लिया स्वीकार हो ॥ य० ४५ ॥ कहन लगी यों मिली सफलता, हर्षा मन हमारा । मान बात भावज की आपने, व्याह करना स्वीकारा हो ॥ य० ४६ ॥ रुक्मणि आदि सभी देवी ने, करी बात प्रसिद्ध । विवाह मनाया नेमनाथ का, ऐसी युक्ति किद्ध हो ॥ य० ४७ ॥ सब ही रानी आके हरि से, बात दीनी सुनाई । देवरजी को विवाह करन की, मजूर करा हम आई हो ॥य० ४८ ॥ हरि हलधर ने सुन के बात यह, मन मे आनन्द छाया । रेवाचल से चलके हरिजी द्वारा माति मे आया हो ॥ य० ४९॥ समुद्रविजय शिवा-देवी को, हरि ने आन सुनाया । अरिष्टनेम ने विवाह स्वीकारा, सुन आनन्द मनाया हो ॥ य० ५० ॥ वहा से गोविन्द रणवास में, आकर करे विचार । नेमनाथ के योग्य कन्या को ढूंढे कहां इस वार हो ॥ य० ५१ ॥ सत्यभामा कहे मेरी वहिन है राज-मती गुणवान । विद्युमणि समान प्रभा है, देवर योग्य है जान हो ॥ य० ५२ ॥ शिवादेवी देवकी आदि, सबने बात बखानी । श्रीकृष्ण के जंची बहुत और, तबियत भी हुलसानी हो ॥ य० ५३ ॥ उग्रसैन पा चलकर आये, श्रीकृष्ण मुरार । उग्रसैन ने किया खूब ही, माधव का सत्कार हो ॥ य० ५४ ॥ फिर सासू से मिलने खातिर, रणवास में आया । सासू ने भी स्वागत कर

क, ऊंच स्थान बिठाया हो ॥ य० ५५ ॥ राजमती हरिजी स मिलने, आई घर आह्लाद। अभिवादन करने पर हरि ने दिया आशीर्वाद हो ॥ य० ५६ ॥ यह सौन्दर्य की साक्षात् प्रतिमा अच्छा मिला है जाग। अरिष्टनेमि की पत्नि बनन को है सर्वथा योग हो ॥ य ५७ ॥ ऐसा सोच के उग्रसैन पां, आकर कह मुरार। राजमती दो नेमिनाथ को बात करो स्वीकार हो ॥य० ५८ ॥ यह कह पहले ही सोचा था राजमति के काज। सोना सुगन्ध सम नेमनाथ है, जो मिले वर राज हो ॥ य० ५९ ॥ कन्या दूंगा तभी आप जो मानों मेरी बात। नेमिनाथ को दूल्हा बनाके आओ आप बारात हो ॥ य० ६० ॥ हरिजी या करी कबूल तब उग्रसैन उस बार। सभा मण्डप से उठकर आये रणवास मंझार हा ॥ य ६१ ॥ परिवार हितैषी पटरानी मे सब जन साई बुलाया। राजमती संग नेम लग्न का सब वृत्तान्त सुनाया हो ॥ य० ६२ ॥ सर्व सम्मति से पास हुआ पर यों बोला नृपराज। राजमती की बिना सम्मति, नहीं होता कोई काम हो ॥ य० ६३ ॥ लेन सम्मति रानी धावक, राजमती पां आई। सगाई सम्बन्धी सारी बात का प्रेम धरी जिताई हा ॥ य० ६४ ॥ नेमनाथ वर मिले आकांक्षा भी पहले दिखलाई। फिर माता मुख सुन क सोचे होगई मन की चाई हो ॥य० ६५ ॥ राजमती की सम्मति, राजाको जित लाइ। तब तो कृष्ण स आन कहे यों, हम का कबूल सगाइ हो ॥ य० ६६ ॥ हरिजी फिर हर्षित हो आये समुद्र विजय के पास। करी सगाई राजमती से भी सब बात प्रकास हो ॥य०६७॥ सब तो कौशिक ज्योतिषी तांई बुला लग्न दिखाया। श्रावण शुक्ला पक्ष का दिन यों उनने उत्तम बताया हो ॥ य० ६८ ॥ समुद्र विजय दिन निर्धारित कर समधी से कहलाया। दोनों और जोरों क साथ मे विवाह काम रचाया हो ॥ य ६९ ॥ तैल पाठी कर स्नान कराके वस्त्राभरण पहनाव। बाजा बजे चार से वहां पर सखियां मंगल गावें हो ॥ य० ७० ॥ सोने रजत आदि कलशों से, जल भरके मंगवाया। अनक औषधियां डाल नेम को उत्तम स्नान कराया हो ॥ य० ७१ ॥ बहुमूल्य वस्त्राभूषण को पहनाए नेम क तांई। सेहरा

बांधा शिर के उपर, शोभा वर्णी न जाई हो ॥ य० ७२ ॥ दूल्हा–वेश मे देख नेम को, मातपिता परिवार। फूले अग नहीं मावे सारे, हर्ष का रहा न पार हो ॥ य० ७३ ॥ बींद के लिये श्रीकृष्ण का, गध हाथी प्रधान। अच्छी तरह सजाया जिस पर, आरूढ़ हुवे पुण्यवान हो ॥ य० ७४ ॥ किया हुआ है छत्र नेम पर, चवर वींजते चार। चतुरगिणी सेना है आगे, बाजा के झनकार हो ॥ य० ७५ ॥ समुद्रविजय और वसुदेवजी, हरि हलधर परिवार। यादव आदि सभी सग में, रथ गज चढ़ तुरवार हो ॥ य० ७६ ॥ पडे नकारे ठोर किया है, शुभ मुहूर्त प्रस्थान। केसरिया कसूमल वाराती, है पचरगिया निशान हो ॥ य० ७७ ॥ स्त्रिया छतों पर वैठीं जाकर, पुरुष राजपथ माई। श्रेणीवद्ध हो देखे वरात को, जत्र वहा पर वा आई हो ॥ य० ७८ ॥ गावें मगल गीत जोर से, वन्दीजन वरदावे। उग्रसैन राजा के घर पर, वारात धूम से जावे हो ॥ य० ७९ ॥ विमानो में बैठ देवगण, छटा देखने आया। दूल्हा रूप मे भगवन नेम के, दर्शन कर हुलसाया हो ॥ ८० ॥ शक्रेन्द्र को ज्ञान हुआ जब, दिल मे करा विचार। रहेगे वालब्रह्मचारी ये तो, परणे नहीं लगार हो ॥य०८१॥ ब्राह्मण रूप को धार इन्द्र तव, आया बारात के माई। कहे हरि से लग्न ठीक नहीं, किसने दिये वताई हो ॥ य० ८२ ॥ श्री कृष्ण कहे, सुनो विप्रजी, तुम को कौन बुलाया। विन पूछे मत बोलो आप यों, रहने दो निज माया हो ॥य०८३॥ हरि की बात सुन मुस्कराये, और बोले द्विजराज। विवाह होय नेम का कैसे, मै भी देखू आज हो ॥ य० ८४ ॥ उग्रसैन नृप जाय सामने, लावे वारात बधाई। इत राजमती को सखिया मिलकर, रही सिंगार सजाई हो ॥ य० ८५ ॥ एक सखी यो कहे बहन यह, अपनी राज–कुमारी। वृक्ष के साथ लता शोभे ज्यों, शोभेगा सुखकारी हो ॥ य० ८६ ॥ दूजी कहे हा फिर हम तुमको, जावेगी ये भूल। तीजी कहे नहीं भूलें अपन को, वचपन से अनुकूल हो ॥ य० ८७ ॥ चौथी कहे अवश्य भूलेगी, प्रिय सखा को पाय। कहे पांचवी वर सुन्दर है, ऐसा दूजा नाय हो ॥ य० ८८ ॥ छठी सखी कहे क्यों घवराओ, अपनी राज दुलारी।

तुम हम सबका सग में लगी संवद नहीं लगारी हो ॥ य० ८६। कह सावथीं सज्ञान में तुमका क्या है सार। तुम भभक से प्रीतम मिलन में हा आवगा भार हा ॥ य० ६० ॥ ऐसी भक्तोस की बातें सुन के राजमती मुस्काई । सजनु बाराव था वमे दिखाई एम स्थान पे भाइ हो ॥ य० ६१ ॥ महल गवाक्ष म खड़ी होयके निरख निरख हरावी । राजमती भी ले सखिया संग, भाई देखने मराती हा ॥ य० ६२ ॥ दरान करके राजमती फिर अपने दिल के माइ । एसे अलौकिक पति बने मम भाग्य की कर बड़ाई हो ॥ य० ६३ ॥ इतने राजमती की दाहनी, आंख भुजा फड़काई । अपशकुन हुआ जान नयन में आंसू वह बरसाई हो ॥ य० ६४ ॥ सखियां कहे अपराध हुआ तो माफ करो तुम बाई । तब अवरुद्ध कण्ठ से मन की सारी बात सुनाई हो ॥ य० ६५ ॥ अंग फरकना है स्वभाव तुम चिंता दूर हटाओ । मगल समय अमंगल की मत बात जबां पे लाओ हा ॥ य० ६६ ॥ नमि-कुमार निकट द्वार के जब वे पहुंचे आइ । तब उन्हें कई पशुओं का वहां दिया शब्द सुनाइ हो ॥ य ६७ ॥ पूछा सारथी से कहो भाइ उग्रसेन दरबार । किस कारण पशु घर रक्खे हैं, कई नाना प्रकार हा ॥ य० ६८ ॥ सारथी बोला सुनो नमजी बात कहूं मैं सारी । विवाह बाद इन पशुओं की यहां होगी निश्चय ज्यारी हो ॥ य० ६६ ॥ कहे नेमजी सुनो सारथी बक्षा यहीं पर लास । मनुष्य हाथ के दया करे नहीं, जन्म विफल है तास हो ॥ य १०० ॥ तब प्रभु को तुरत सारथी उसी जगह पर लाया । दस प्रभु को पशु पक्षी ने अपना दुःख बताया हो ॥ य १ १ ॥ स्वतन्त्रता छिनी स्थान भी छूटा फिर मृत्यु का डर । अरे बचे रह विपिन में बोले यों दीन स्वर हो ॥ य० १०२ ॥ यदि विवाह नहीं होय हमारा, बच जावें य सार । हिसा बहुत बुरी है जग में फल हैं बहुत करारे हा ॥ य० १०३ ॥ नमनाथ की आज्ञा स फिर सारथी न उस बार । बन्धन मुक्त किया तिर्यच का, दर न करी लगार हो ॥ य० १०४ ॥ निर्बन्धन होनेसे सारे प्रमुदित हुवे अपार । अपने अपने स्थान सिधाए बस गहके उस बार हो ॥ य० १०५ ॥ प्रभु-प्रसन्न हो सारथी तांइ, दिये भ्राता अलंकार । अमूल्य आभूषण पाय हृदय म

माना हर्ष अपार हो ॥ य० १०६ ॥ हे सारथी ! रथ के ताईं, पीछा दो लोटाय । जीवों की रक्षा के काज मे, विवाह दूं छिटकाय हो ॥ य० १०७ ॥ जब सारथी साहस धरीने, फेरी तुरत सवारी । देख लौटते सारी वारात मे कोलाहल हुआ भारी हो ॥ य० १०८ ॥ राजा समुद्रविजय हरि हलधर, शिवादेवीजी माता । रोहिणी आदि सवारी छोड के दौड वहा पर आता हो । य० १०९ ॥ समुद्रविजय और शेवादेवी कहे, नैना आसू वहाई । हे पुत्र ! क्यों वापिस जाओ, विवाह समय के माई हो ॥य० ११०॥ जब नेमीश्वर मात पिता को, साफ साफ जितलाया । मुझे आप क्षमा करियेगा, व्याह नहीं मन भाया हो ॥ य० १११ ॥ ज्यों पशु बन्धन में बधे थे, त्यो आतम को जानो । मुक्त होने पर खुशी हुवे व, यों ही जीव को मानो हो ॥ य० ११२ ॥ कृष्ण, बल-राम, स्वजन आदि ने, भांति भाति समझाया । एक न मानी नेमप्रभुजी, वास-स्थान पै आया हो ॥ य० ११३ ॥ यही देख लौकान्तिक आया, प्रभु को खास जिताया । तीर्थ वरताओ नाथ ! आप अब, समय अमोलक आया हो ॥ य० ११४ ॥ इन्द्र हुक्म से जूम्भक देवता, भरा खजाना आन । नेमनाथ अब निज हाथो मे, देवे वर्षी दान हो ॥ य० ११५ ॥ एक क्रोडा आठ लाख नेमजी, नित्य प्रति दे दीनार । दीन, अनाथ, राजा प्रजा ले,बोले सब जयकार हो ॥ य० ११६ ॥ पशु पक्षी को अभयदान दे, भूषण सारथी ताईं देके नेमजी लौट गये सुन, राजमती मुर्छाई हो ॥ ११७ ॥ सखी सभाले दौड, दौड, भूमि से उसे उठावे । पखा करके कहे उस ताईं, वर राजा वो आवे हो ॥ य० ११८ ॥ नाना भाति सखियो ने मिल के, दवा करी चित्त लाई । फिर तो राजमति सचेत हो, तुरन होश मे आई हो ॥ य० ११९ ॥ युगल कपोल पर केश बिखरे हैं, आंसू भीगी साडी । करे विलाप ऐसी नहीं जानी, क्यों हृदय से काडी हो ॥ य० १२० ॥ दांया अग फरका था जब से, संदेह था मन माईं । कहा नेमी कहां हत-भागिन मैं, जोड मिले क्यों आई हो ॥ य० १२१ ॥ पाणि-ग्रहण नहीं करना था तो, लाये क्यो वारात । सत्पुरुष और समुद्र मर्यादा, तजे नहीं दिन रात हो ॥ य० १२२ ॥ हे प्रीतम नहीं वांक आपका, यह कर्मों का दोष । ऐसा विचार के राजमती रही,

निज माग्य न कोस हो ॥ य० १२३ ॥ दम्पतियों के माहीं मैंने, डाला होगा भय । वही कर्म इस भव के माहीं, ऐसा होगा खेद हो ॥ य १२४ ॥ सखी कहे क्यों सोच करे तू वह था ग्रामी फोक । गार्हस्थ जीवन निभा सकने में था वह पति डरपोक हो ॥ १२५ ॥ विवाह किये के बाद त्यागता होता बड़ा अकाज । तम स भी था वह सांवरा नहीं थी लौकिक लाज हो ॥य० १२६॥ अभा कुवारी तुम कन्या हो कुछ नहीं हुआ बिगार । सुन्दर वर संग विवाह करेगा नृप रानी इस बार हो ॥ य १२७ ॥ सुनी सखी की बात राजमती बोली सब ललकार । नेमीश्वर सा तीनों लोक में नहीं दूजा अनुहार हो ॥ य १२८ ॥ मन वच स पति मान चूकी हूं, दूजा वर नहीं होय । कुल्टा की बातें मुझ आगे मत कहना अब कोय हो ॥ य० १२९ ॥ विवाह नहीं किया मुझ साथे, दीक्षा तो वे लसी । अन्म मरणका दुख मेटने हैं पूर हितैसी हो ॥ य० १३० ॥ सखियां सुन के रही मौन कर राज मतीजी ग्रास । नाना भांति संदेशा भेजे, अपन नेम के पास हो ॥ य० १३१ ॥ राजमती क मात पिता यों बोले आंसू डार । सुन के अरा तू बात हमारी करस कुछ विचार हो ॥ य० १३२ ॥ हे बेटी ! तू अक्षत कुमारी, चिन्ता दूर निवार । अन्य पुरुष संग विवाह करेंगे नहीं इसमें बिगार हो ॥ य० १३३ ॥ राजमती कहे माय-पुत्री का विवाह होय एक बार । पति त्यागे या विधवा होय, अन्य न वरना लगार हो ॥ य० १३४ ॥ मेरा विवाह सो होय चूका है नेमनाथ के लार । माता कहे यों कैसे हुआ वह, भाषा म नेम घर द्वार हो ॥ य० १३५ ॥ हृदय से मैं नेमिनाथ को पति किया स्वीकार । इस कारण तुम मात पिताजी करा न काइ विचार हो ॥ य० १३६ ॥ व्रतावली मत वन ए बटा !, काम बलवान । बड़े बड़ों का पागल कर दे तू नादान हो ॥ य० ॥ १३७ ॥ हे माता ! यदि विवाह दान पर जो विधवा हो जाती । सब की सम्मति में पाती हो ॥ १३८ ॥ मात पिता अन्तिम उत्तर सुन बिल्कुल हुवे हताश । काम दीपन के समय माताजी ! क्या विश्वास हो ॥ य० १३९ ॥ दिन रात सखियां समझावें रत्न न होवे काच । राजमती ने एक न मानी रहगई सब अवाच

हो ॥ य० १४० ॥ नेमिकुमार उस समय आपने देखा लगा के ज्ञान । राजमती के मन की बाते, लो आपने जान हो ॥य०
१४१ ॥ वार्षिक दान पूर्ण होने पर, शक्रादि सुर इन्द्र । दीक्षाभिषेक किया नेम का, मिल के चोसठ इन्द्र हो ॥ य० १४२ ॥ नोर
मुकुट काना युग कुण्डल, हृदय अमोलक हार । आभरण से अलंकृत करके, सुर नर मिल उस वार हो ॥ य० १४३ ॥ रत्न
सेविका बीच नेम को, बिठलाया उस बार । देव मनुष्य मिल तोके सेविका, खुशी का नहिं है पार हो ॥ य० १४४ ॥ सौ धर्म
इन्द्र और ईशान इन्द्र ने, कर मे चवर लिये धार । सनत्कुमार ने छत्र रखा है, माहेन्द्र ग्रही तलवार हो ॥ य० १४५ ॥ ब्रह्म
इन्द्र ने दर्पण ले लीना, कुम्भ को लान्तक,जान । महाशक्र के पास स्वस्तिक है, सहसार धनुष्य लो मान हो ॥य०१४६॥ प्राणत
इन्द्र के पास श्री वत्स है, नन्दावर्त अच्युत खास । चवर इन्द्रादि शेष शक्रो के, धारण का लिया चास हो ॥ य० १४७ ॥ मात
पिता बलराम कृष्णजी, सग मे है परिवार । नेमनाथ का चला जुलूस यों, राज मार्ग उस बार हो ॥ य० १४८ ॥ जय जय नदा
जय जय भद्दा, बोलें सब जयकार । बाजा बाजता अति जोर का, मगल गावे नार हो ॥ य० १४९ ॥ रेवतागिरि के सहस्राम्र
वन मे, पहुचे हैं तिसवार । सेविका से धां उतर नेम ने, भूषण किया परिहार हो ॥ य० १५० ॥ श्रावण शुक्ला छठ सूर्योदय,
चित्राचन्द्र का योग । छठ तप में पचमुष्टि लोच यह, किया देख रहे लोग हो ॥ य० १५१ ॥ लोच समय कहे वासुदेवजी, मन
वाञ्छित झट फलजो । ज्ञान दर्शन चारित्र वाधक का, सग सदा थें तजजो हो ॥ य० १५२ ॥ केश देव दूष्य वस्त्र म ले, क्षीर
सागर डलवाया । दीक्षा लेते समय कोलाहल, होता बन्द रखवाया हो ॥ य० १५३ ॥ जगद्गुरु प्रभु नेमनाथ ने, सिद्ध को कर
नमस्कार । सर्व सावद्य योग त्याग के, सामायिक ली धार हो ॥ य० १५४ ॥ मनपर्यव ज्ञान हुआ तुरत ही, नेमनाथ के ताईं ।
एक हजार राजा दीक्षा ली, प्रभुजी के सग माईं हो ॥ य० १५५ ॥ इन्द्र और कृष्णादिक सारे, प्रणमीने भगवान् । रैवाचल से
वापिस आवे, पहुचे निज २ स्थान हो ॥ य० १५६ ॥ दुन्दुभि नाद गन्धोदक वृष्टि, वस्त्र अशर्फी जान । नभ से बोले देव दिव्य

पाखी मसो दियो है दान हो ॥ प० १५७ ॥ घाति कर्म को चय करन हित करते उम विहार। मुनिराज हैं संग में जिनके, पाप शुद्ध आधार हो ॥ प० १५८ ॥ इक नेम का छोटा भ्राता रथनेमि है कुमार। राजमती का रूप देखने मोहित हुआ अपार हो ॥ प० १५९ ॥ भेजे उसको सुन्दर अति वस्तु,कुसलाता न ताई। राजमती स्वीकार करे यह आली मन नहीं पाई हो ॥ प० १६० ॥ यह समझी आवा के याग स यह रखता है राग। यह समझे अब राजमती का, मुझ से हुआ अनुराग हो ॥ प० १६१ ॥ एक दिन राजमती स बोला खुब जमा क ढंग। योवन वृथा क्यों खाती हो तुम विवाह करा मुझ संग हो ॥ प १६२ ॥ मेरा भाव सांसारिक सुख से था बिल्कुल अज्ञात। मरी भावना स्वीकार करो यों, बोले नम्र हो बात हो॥प० १६३ ॥ राजमती उपदेश देयकर भांति भांति समझाया। कुसर पाज क्यों रथनमि के, जरा ध्यान नहीं आया हो ॥ प० १६४ ॥ एक दिन दूध पट भर पीना राजमती धीकार। उसी समय रथनमी आया पोला करके प्यार हा ॥ प० १६५ ॥ औषध स पय वमन करा दे, अनक थाल के माई। रथनेमी कुछ पीछे हटकर, मुख को लिया फिराई हो ॥ प० १६६ ॥ राजमती कह रहनेमी मे पास हमारे आया। वमन किया हुआ इस पयको, जल्दी तुम पी जाओ ॥ १६७ ॥ इतना सुनक रथ नेमी का क्रोध बदन में छाया। क्या कोया या कुत्ता समझा, जो यह वचन सुनाया हो ॥ प० १६८ ॥ निज स्वरूप सुन्दरता मद में, गिनो न तुम इन्सान। भद्र पुरुष का इस प्रकार से करती क्यों अपमान हो ॥ प० १६९ ॥ राज कुयर मत क्रोध करो तुम, रक्खो धैर्य दिल स्थान। यह तो कसम तेरे प्रेम की, करती हूं पहिचान हो ॥ प० १७० ॥ मेरे साथ विवाह करन में होता तू तयार। फिर क्यों वमन किए दूध को, पीने में इनकार हो ॥ प०१७१ ॥ राजमती तो नेमनाथ की,त्यागी हुई है नार। तू लघु भ्रात मेर स्वामिन्द्र का क्यों कर करे स्वीकार हो ॥ १७२ ॥ राजमती के मुख से सुन यों रहनेमि हुआ चूप। लज्जित होकर छोटा निज घर बना मुख बदरूप हो ॥ प० १७३ ॥ राजमती की पढ़ी लगन जब मिले नेम भगवान। आशा अमर आन हृदय

संयम ले लिया ऐसा राजमती,
में, धरती उनकी ध्यान हो ॥ य० १७४ ॥ मोह ममत्व ससार से छोडी, अरिष्टनेमि भगवान । सब आशा पर पानी फिर गया, धिग
सुन पाई जब कान हो ॥ य० १७५ ॥ बहुत दुख उसको हुआ सरे, दर्शन नहीं कर पाई । पड रहे ऐसे कष्ट भोगने व्याकुल हुई मन
जीवन जग माई हो ॥ य० १७६ ॥ मैंने कौन से पाप किये थे, जिसका फल यह पाई । तब तो राजमती को होगया, जाति स्मरण ज्ञान हो ॥ य०
माई हो ॥ य० १७७ ॥ देखे मैंने किसी जन्म मे, यही नेम भगवान । नवमें भव मे एकान्त त्याग का, चाहे पालना नेम हो ॥य०१७६॥
१७८ ॥ जान लिया अपना और प्रभु का, आठ भवो का प्रेम । मैं भी दीक्षा धारण करूगी, जग से मोह निवार हो ॥ य० १८० ॥ नेम–दीक्षा
सयम द्वारा पाना चाहे, शिवपुर सुख अपार । आके बेटी पास देखे तो, ढग वही दिखाता हो ॥ य०१८१ ॥ हे सुपुत्री ! सयम लेन का,
का समाचार सुन, राजमती की माता । मानो लोहे के चने चवाना, ज्यों है सैन्ट्रल जेल हो ॥ य० १८२ ॥ इस प्रकार कर मात पिता ने, खूब उसे
नहीं बच्चो का खेल । राजमतीजी एक इच भी, पीछे हट नहीं पाई हो ॥ य० १८३ ॥ मात पिता ने जान लिया है, लगा सयम भार ।
समझाई । राजमतीजी एक इच भी, पीछे हट नहीं पाई हो ॥ य० १८४ ॥ राजमती उपदेश दिया है, सखियों को फिर भारी । सात सो
अपने को बाधक रूप होना, उचित नहीं लगार हो ॥ य० १८४ ॥ राजमती उपदेश दिया है, सखियों को फिर भारी । श्रीकृष्ण आदि
सखियां हुई वैरागिन, सयम लेन को सारी हो ॥ य० १८५ ॥ उग्रसैन ने राजमती का, महोत्सव खूब मनाया । कर सयम स्वीकार
यादव भी, शरीक होने को आया हो ॥ य० १८६ ॥ सुन्दर बालो का राजमती ने, तुरत लोच कर डाला । राजमती श्री आर्याजी की,
प्रसन्न हो, छोड़ा मोह जजाला हो ॥ १८७ ॥ तब ही सात सो सखियों ने भी, लीनो सयम भार । घोर ससार सागर को तिरकें, जल्दी होजो
शिष्या बनी उदार हो ॥ १८८ ॥ उग्रसैन हरि हलधर बोले, कीना अच्छा विचार । उग्रसैन हरि हलधर आदि घर आये उस वार हो
पार हो ॥ य० १८९ ॥ इतना कहकर महासती को, करके फिर नमस्कार । अल्प दिनों मे बहु श्रोता हो, करती आत्म–उद्धार हो
॥ य० १९० ॥ लगी विचरने राजमती निज, शिष्या के परिवार ।

॥ य० १६१ ॥ तप दीक्षा स धकर मौना ! चौपन दिन तक जान । भूमण्डल में विचर प्रतिबोधे नमिनाथ भगवान हो ॥ य० १६२ ॥ रैवतगिरि सहस्राम्र वन में, नेम प्रभुजी आया । बैंतस वृक्ष के नीचे अट्ठम तप करके ध्यान लगाया हो ॥ य०१६३॥ शुक्ल ध्यान से घनघाति क चारों कर्म खपाया । आश्विन मास की अमावस्या दिन चित्राचन्द्र सग आया हो ॥य० १६४॥ केवल ज्ञान केवल दर्शन जब नेमनाथ प्रभु पाया । केवल कल्याण का महोत्सव मिल के चौंसठ इन्द्र मनाया हो ॥ य० १६५ ॥ समवशरण की रचना कीनी, देवी देवता आया । उद्यान-रक्षकों ने आ प्रभु का कृष्ण को हाल सुनाया हो ॥ य० १६६ ॥ साढ़े बारह क्रोड़ सोनैया इनाम में दे दीना । नेम वन्दन की लग रही जल्दी, वाणी अमृत पीना हो ॥ य०१६७॥ गजारूढ़ हो हरी हलधरजी सग में स परिवार । दश दशार्ह आर कइ कुमार हैं राजा सोलह हजार हो ॥ य० १६८ ॥ सहस्राम्र वन में चल आय छत्रकर तजी सवारी । राज चिह्न तज समवशरण में चरण धरे गिरधारी हो ॥ य० १६६ ॥ सौधर्म इन्द्र के पीछ हरजी बैठे सपरिवार । इन्द्र हरि मिल करें स्तुति प्रभु की कइ प्रकार हो ॥ य० २०० ॥ दवें देशना नेम प्रभुजी, सुनओ सब भव्य प्रानी । मनुष्य जन्म दुर्लभ मिलता है, धर्म करो हित जानी हो ॥ य० २०१ ॥ समस्त सम्पदा विद्युतवत् है सपना स्वप्न समान । यौवन वत्स-छाया सम जाना, क्षणभुर तनु अनुमान हो ॥ य० २०२ ॥ इसलिय ससार असार में त्रिरत्न है सार । सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्र स, सफल करा अवतार हो ॥ य०२०३ ॥ नव तत्त्वों पर श्रद्धा रखना सम्यग्दर्शन जान । सभी भाँति तत्त्वों का बोध हो यही कहाव ज्ञान हो ॥ य० २०४ ॥ सावद्य योग से विरक्त होना यही चारित्र बतलाया । देश-चारित्र श्रावक के व्रत हैं सर्व व्रती मुनिराया हो ॥ य० २०५ ॥ ऐसा उपदेश सुन राजा वरदत्त परम वैराग्य में आया । इतने में हरि हलधर वामों प्रश्न एक उठाया हो ॥ य० २०६ ॥ हे प्रभो ! प्रेम करे जग तुम से, अपना जान कल्यान । अधिक राजमती का प्रेम है, कारण कहो सुजान हो । य० २०७ ॥ धन धन धनवती के भव स

आठों भव अधिकार । अपना राजमती के सम्बन्ध का, कहा सभी विस्तार हो ॥ य० २०८ ॥ राजा वरदत्त को दीक्षा दे, प्रभु
ने शिष्य बनाया । दो हजार क्षत्रिय दीक्षा ली, जो दर्शन को आया हो ॥ य० २०९ ॥ धन के भव मे धनदत्त और, धनदेव थे
माई । अपराजित भव विमल बोध था, एक मत्री सुखदाई हो ॥ य० २१० ॥ वे तीनों मेरे ही सग मे, भ्रमण करते संसार । इस
भव मे वे तीनों नृप हुवे, वेभी आये इस वार हो ॥ य० २११ ॥ भगवन मुख से राजमती का, सुन सारा अधिकार । जाति
स्मरण ज्ञान पाय के, लीना सयम धार हो ॥ २१२ ॥ वे तीनो और वरदत्तादि, ग्यारह बने गणधार । उत्पाद व्यय अरु ध्रौव्य
सुन के, रचे अग उसवार हो ॥ य० २१३ ॥ अनेक कन्याओं को साथ ले, यक्षिणी राजदुलारी । दीक्षा ले किया ज्ञान सम्पादन,
प्रवर्तनी पद को धारी हो ॥ य २१४ ॥ दश दशार्ह और उग्रसेन ने, प्रद्युम्न शाम्बकुमार । इन सभी ने श्रावक-व्रत को, कर
लिय अगीकार हो ॥ य० २१५ ॥ चतुर्विध यों सघ को स्थापा, करके विधि विधान । तदनु जनता नमी नेम को, पहुचो निज
निज स्थान हो ॥ य० २१६ ॥ दूजे दिन के प्रथम याम मे, प्रभु ने ज्ञान सुनाया । दूजे पहर मे वरदत्त मुनि ने, मार्ग खूब सुझाया
हो ॥ २१७ ॥ गोमेध देव हुआ शासन रक्षक, आम्बिका देवी उदार । दूजा नाम कूष्माण्डी है तस, सुमरे हो सुखकार हो
॥ य० २१८ ॥ नेमनाथ भगवान विराजे, जिस समय गिरनार । देवी देवता राजा प्रजा मिल, सेवा करे हर वार हो ॥ य०
२१९ ॥ थी उत्कण्ठा राजमती के, दर्शन की मन माइ । निज शिष्या-परिवार साथ ले, गिरि गिरनार सिधाई हो ॥ य०२२०॥
चढ़ रही थी वह पर्वत ऊपर, धरके प्रभु का ध्यान । इतने आंधी पानी का फिर, आया प्रचड तूफान हो ॥ य० २२१ ॥ धूल के
कारण छाया अधेरा, सूझे न पथ के माइं तित्तर वित्तर हुई साध्वी, ध्यान वधा कछु नाइ हो ॥ य० २२२ ॥ रहगई सती राज-
मतीजी, देखो अकेली आप । कपडे सारे भीग गये हैं पानी पड़ा अनाप हो ॥ २२३ ॥ समय बाद अधकार हुआ कम,
ढिग गुफा दिखलाई । वस्त्र सुखाने के कारण वह, निर्जन गुफा में आई हो ॥ य० २२४ ॥ राजमती सती नग्न होय के

सब सभा मुरझाया। दमक दमक बिजली समान ज्यों इसका तन चमकाया हो ॥ भ० २२५ ॥ वसी गुफा रथनेमि धर्म को चिन्तवन करता मांइ। अन्धकार के कारण सती को यह न दिया दिखाइ हो ॥ भ० २२६ ॥ देख नग्न शरीर सती का रथनेमि अणगार। धैर्य ज्ञान ध्यान सब छूटा आगृत हुआ विकार हो ॥ भ० २२७ ॥ पहले से मोहित था इस पर, नहीं मुझको स्वीकारा। किन्तु तपस्या करके मुझसे मोह का भुजंग उतारा हो ॥ भ० २२८ ॥ जिस से मैं विरक्त होयके नेम भ्रात के लार। संयम ले के साधु हुआ मैं, तज जग का व्यवहार हो ॥ भ० २२९ ॥ वही अनूपम आज सुन्दरी मिली एकान्त के मांइ। विकारवान होके कुचेष्टा करने लगा हुलसाइ हो ॥ भ० २३० ॥ जान लिया कोइ पुरुष भीतर है तब तो करी चतुराइ। अङ्गोपाङ्ग ले राजमतीजी, बैठ गई के मांइ हो ॥ भ० २३१ ॥ गीले कपड़े डाल शरीर पर बोली वह ललकार। कौन तुम बैठा एकान्त मांइ कर कपट व्यवहार हो ॥ भ० २३२ ॥ मैं हूं रथनेमि सुन प्यारी! रञ्च भय मत लाओ। तुम्हें देख के भ्रम उपजा है, तुम भी भ्रम दिखाओ हो ॥ भ० २३३ ॥ हे भद्रे! हे मधुरभाषणी! मानों बात हमारी। अबके का क्यों कष्ट सहो पूरूं आशा तुम्हारी हो ॥ भ० २३४ ॥ पहले दुर्लभ मनुष्य, भोगो भोग उदार। भुक्त भोगी होन के बाद फिर जिन मग लेंगे धार हो ॥ भ० २३५ ॥ चरित्र दूषित सुन रथनेमि की भी सारा ही बातें। राजमती ने जाना अब यह, संयम से भग जाता हो ॥ २३६ ॥ राजमतीजी पूर्ण विदुषी, है दृढ़ व्रत के मांइ। नीचे नयन करके या बोली रथनेमि के तांइ हो ॥ भ० २३७ ॥ रथनेमि क्या मन का बिगाड़ फसू न आस मझार। शक्रेन्द्र भी तूं बन के आवे तो भी न इच्छू लगार हो ॥ भ० २३८ ॥ अगन्धन कुल में आया सर्प वह पड़ अग्नि के मांइ। वमन करा विष का नहीं इच्छे क्यों समझे विषवाद हो ॥ भ० २३९ ॥ भोजविष्णु की हूं मैं पुत्री दृढ़ प्रतिज्ञा धारा। अपने धर्म को नहीं छोडूंगी मर मिटूं इसवारी हो ॥ भ० २४० ॥ अन्धग विष्णु के पुत्र होय के कुल का करो विचार। त्यक्त विषय को चाहो भोगना मरना तुम्हें

मुनिघात जिन धर्म उपेक्षा, बोधि
श्रेकार हो ॥ य० २४१ ॥ सती के सतीत्व को नाश करे अरु, धर्म का द्रव्य खा जावे । हरड तरु ज्यों उखड़ पडोगे, अस्थिर रहे
बीज नहीं पावे हो ॥ य० २४२ ॥ ग्राम नगर मे तुम विचरोगे, सुन्दर देखी नार । संयम मार्ग ग्रहण करी मत, जन्म मरण वढ़ाओ
विचार हो ॥य०२४३॥ अपने कृत्य का पश्चाताप कर, प्रतिज्ञा पूर्ण निभाओ । जिस प्रकार अंकुश लगने से, हाथी आवे स्थान हो
हो ॥ य० २४४ ॥ रथनेमि का हुआ हृदय शुद्ध, सुनी सती से ज्ञान । स्वतः से बना अपराध उमी का, क्षमा मागने लागे हो ॥ य०
॥ य० २४५ ॥ लज्जित होकर मस्तक झुकाया, राजमती के आगे । भवसिन्धु मे, डूबत मुझको, ले लीना उबार हो ॥ य० २४७ ॥ फिर
२४६ ॥ हे सती ! मुझ ऊपर आपने, बहुत किया उपकार । प्राण जांय तो भले जाय पर, मन न करूगा दण्डित हो ॥ य० २४८ ॥ सुन
से प्रतिज्ञा करता हू मैं, पुनः न करूगा खण्डित । अब भी धर्म को शुद्ध पालोगे, पाओगे आह्लाद हो ॥ य० २४९ ॥ राजुल जब निकल
प्रतिज्ञा राजमती ने, दिया उन्हें धन्यवाद । शिष्यां सबहा ढूढ रही थीं, मिली प्रेम जनाई हो ॥ य० २५० ॥ ले शिष्या को राजमतीजी,
गुफा से, गिरिके पथ पर आई । विधि सहित वदना करके, दर्शन कर सुख पाई हो ॥ य० २५१ ॥ चातुर्मास उस उपवन माहीं, करके जग-
नेमनाथ पां आई । तदनु विहार किया है वहां मे, भव्यो का करन उद्धार हो ॥ य० २५२ ॥ गांव नगर पूर पाटन विचर कर, किया खूब
दाधार । पुनरपि आये शहर द्वारिका, ठहरे बाग मझार हो ॥ य० २५३ ॥
उपकार ।

सागर श्राद्धक

शहर द्वारिका में बसे, सेठ बड़ो धनसेन । कमलमाला तस सुता, है घर में सुख चैन ॥ १ ॥

सागरचन्द्र श्रावक क्षमा धारीन, गया सुरलोक में ॥ टेक ॥ उग्रसेन के पुत्र नभसेन से, करने काज सगाई । पास चल रही थी उसी समय में नारद मुनि गये आई हो ॥ सा० १ ॥ कारयश उस नभसेन ने नहीं किया सत्कार । उसके ऊपर कुपित होके नारद गये सिधार हो ॥ सा० २ ॥ बलराम का सुत निषध है तस सुत सागरचन्द्र । शाम्बकुंवर का मित्र मित्र है क्षीर नीर सम्बन्ध हो ॥ सा० ३ ॥ सागर के घर नारद आया सागर ने सत्कार । पूछ नारद से कोई घटना बतलाओ इसवार हो ॥ सा० ४ ॥ ऋषि कहे धन सेन सेठ के, कमला है सुखारी । ऐसी अनूपम सुन्दर कन्या नहीं दूसरी कोई भारी हो । सा० ५ ॥ इतना कह नारदजी आये अपने स्थान के मांई । सागरचन्द्र के मन में तपस कमला मिलन चित चाई हो ॥ सा० ६ ॥ वहां से चल कमला के घर पर नारद ऋषिजी आया । कमला नम्र हो पूछे नारद से कहीं क्या आश्चर्य पाया हो ॥ सा० ७ ॥ आश्चर्य यही सागरचन्द्र सा नहीं देखा कहीं रूप । दूजा आश्चर्य नभसेन सा, नहीं दूजा कुरूप हो ॥ सा० ८ ॥ नारद से सुन करके बातें भूल गई नभसेन । सागर की अनुरागी होगई मानो मन सुखचैन हो ॥ सा० ९ ॥ कन्या का अनुराग सभी सागर को आन जिताया । फिरतो उसके प्रेम पीच में सारा भान भुलाया हो ॥ सा० १० ॥ उस को व्यथित सुन करके सभी सज्जन भयो था सारा । शाम्बकुंवर मिलने को आया, नहीं ध्यान लगाता हो ॥ सा० ११ ॥ सागर बोला यही विचार में, आई कमला माला । शाम्बकुंवर कहे कमला सखी को, मैं हूं मिलान वाला हो ॥ सा० १ ॥

सागरचन्द्र कहे सच्चा मन्त्री, मेरा शाम्ब कुमार। मम कार्य करने को समर्थ है, निश्चय लिया है धार हो ॥ सा० १३ ॥ वचन बद्ध होगया आज मैं, शाम्ब कुमर को जाना। जब तो सोचे ज्यों त्यों करके, होगा पार लगानो हो ॥ सा० १४ ॥ नभसैन के विवाह का दिन, निकट पहुचा आन। शाम्बकुमर प्रज्ञप्ति विद्या का, समरं पूरे ध्यान हो ॥ सा० १५ ॥ फिर अपने सब मित्रों को ले, एक उद्यान मे आई। सुरग द्वारा कमलामेला को, घर से ली बुलवाई हो ॥ सा० १६ ॥ सागरचन्द्र के सग ब्याह वहाँ, विधि सहित करवाया। वह सागर से अनुरागी थी, तासे वल नहीं आया हो ॥ सा० १७ ॥ इधर विवाह के समय सुता का, घर मे पता न पाया। सागर से होगया विवाह है, यह सुनने मे आया हो ॥ सा० १८ ॥ विद्याधरी का रूप धार कई, यादव बैठे आई। कमलामेला प्रसन्नचित्त से, बैठी है बीच माई हो ॥ सा० १६ ॥ उग्रसैन नृप कहे कृष्ण से, मेरे सुत की माग। विद्याधरी ने हरण करी है, जिसकी तन में आग हो ॥ सा० २० ॥ कोपित कृष्ण उपवन मे आये, तब निज रूप को धार। सागर शाम्ब कमलामेला या, नमें आय चरनार हो ॥ सा० २१ ॥ कृष्ण देख चकित हो बोले, सुनरे शाम्बकुमार। आश्रित है नभसैन हमारे, कीना क्यों थें बिगार हो ॥ सा० २२ ॥ शाम्ब-कार्य की निन्दा करके, हरि नभ को समझाया। किया कर्म इसने है बेजा, अब तो यह हो पाया हो ॥ सा० २३ ॥ विवाह तुम्हारा करवा दूगा दूजी कन्या लार। यों समझा के नभसेन को, भेजा उसके द्वार हो ॥ सा० २४ ॥ कमलामेला और सागर को, निज घर पर भिजवाया। सिरी कृष्ण बाग मे चलकर, निज महलों मे आया हो ॥ सा० २५ ॥ नभसैन सागर के सग मे, रक्खे वेर सदाई। मगर जोर नहीं चले इसी से, रहता चुप मनाई हो ॥ सा० २६ ॥ एक बर द्वारिका बाहिर, नेम प्रभु पधारे। सागरचन्द्र सुन हर्षित होके, जय के लगावे नारे हो ॥ सा० २७ ॥ आप प्रभु का दर्शन करके, वाणी सुन हर्षाया। द्वादश व्रत श्रावक का धारी, विरक्त भाव मन लाया हो ॥ सा० २८ ॥ धर्म ध्यान नित्य करी हृदय में, माने परमानन्द। ममता तज समता को धारे, जग लख मिथ्या फंद हो ॥ सा० २६ ॥ इक दिन अभिग्रह धारण

करके, वाके नगर बहार। ध्यान धरा शमशान बीच में, जड़ चेतन भिन्न विचार हो ॥ सा० २० ॥ नभसेन उसके मित्रों को देखत रहत सदाई। सागरचन्द्र को देख अकेला, धीमा पास में आई हो ॥ सा० २१ ॥ अरे पाखण्डी क्या करता है तुम को ध्यान दिखाऊं। कमलामला के हरन का यह फल अब तुझे चखाऊं हो ॥ सा० २२ ॥ क्रूर-स्वभावी नभसेन ने फूटे घट को लाय। सागरचन्द्र के शिर पर रख के अग्नि भरदी मांय हो ॥ सा० २३ ॥ सागरचन्द्र ने समभावों से, सहन परिषह कीना। पंच परमेष्ठी स्मरण कर के डेरा स्वर्ग में दीना हो ॥ सा० २४ ॥ वहां से चय के मनुष्य जन्म पा फिर भी संयम लेगा। गुरु प्रसादे चौथमल्ल कहे, मुक्ति में डेरा देगा हो ॥ सा० २५ ॥

ढंढन—मुनि

प्रभु कहे कर्म अन्तराय, मत बांधो नर नार। इस पर ढंढन मुनि का, सुन लेना अधिकार ॥ १ ॥

ढंढन मुनिवर को, वन्दन नित्य होजो भारी प्रेम से ॥ टेर ॥ सिरी कृष्ण के रानी ढंढना, इन्द्रानी अनुहार पुत्र रतन जाया है उसने ढंढन नाम कुमार हो ॥ ढं० १ ॥ युवा अवस्था बीच कुंवर का सुन्दर बाला संग। विवाह किया खूब धूम धाम से धरके मन उमंग हो ॥ ढं० २ ॥ एक बार सुन प्रभु देशना विरक्त रंग रंगाया। सिरी कृष्णजी महोत्सव करके प्रभु के शिष्य बनाया हो ॥ ढं० ३ ॥ उसी दिन से प्रभु साथ में करत ग्राम विहार। धर्म निष्ठा के कारण मन मुनि करत इन स

और मुनि जो सगमे जावे, वे भी रहें निर आहार
प्यार हो ॥ ढ० ४ ॥ आहार हेतु भिक्षा को जावे, मिले न उनको आहार। यदि भूल के सग में होय तो, एकादशी हो जावे हो
हो ॥ ढ० ५ ॥ उनको छोड़ के जावें गोचरी, आहार बहुत मिल जावे । कोई नहीं ले जावे सगमें, देखो कर्न की माया हो ॥ ढ० ७ ॥
॥ ढ० ६ ॥ निविड अन्तराय कर्म बन्धा है, वही उदय में आया । धनिक बहुत यहां ढढन को फिर, क्यों न मिलता आहार हो ॥ ढ० ८ ॥
कई मुनि मिल प्रश्न करे यो, प्रभु से वारम्वार । पराशर ब्राह्मण था राजाके, दिवान बडा अभिराम हो ॥ ढ० ९ ॥ उसने
प्रभु कहे एक समय मगध मे, धान्य पूरक था ग्राम । भरी दुफेरी मे उन सब से, करवाया इकरार हो ॥ ढ० १० ॥ सरकारी खेती
एक दिन कृषको ताई, पकड लिए वेगार । कृषक घरो से, भोजन आया, तो भी पाडे फोडे हो ॥ ढ० ११ ॥ भूखे प्यासे ही कृषकों से,
जुतवाई, टके हाथ नहीं छोडे । एक चांस फिर भी कडवाई, देखत दृष्टि पसारे हो ॥ ढ० १२ ॥ कर्म अन्तराय बन्धा इसी से फिर
वैल भी प्यासे न्यारे । अनेक योनि मे भटक पराशर, ढढन रूप मे आया हो ॥ ढ० १३ ॥ उसी कर्म के उदय यहां पर, भिक्षा
वह मृत्यु पाया । इतना सुन ढढन मुनिवर को, विराग बहु मन छावे हो ॥ ढ० १४ ॥ पर लब्धी का आहार न लूगा, ढढन
ये नहीं पावे । आहार मिले न इन को तिल भर, फिरते घर घर द्वारी हो ॥ ढ० १५ ॥ छ महिने नहीं आहार मिला है, पिंजर
प्रतिज्ञा धारी । जरा खेद नहीं लावे मन में, समभावी मुनिराया हो ॥ ढ० १६ ॥ एक दिन हरजी आया माद से, नेमनाथ के
हा गई काया । कर वन्दन सम्मुख आ बैठे, करवद्ध होके खास हो ॥ ढ० १७ ॥ पुछे कृष्ण हैं मुनि आप के, अष्टादश हजार । उन मे
पास । मुनि कौनसा ऐसा, दुष्कर तप का धार हो ॥ ढ० १८ ॥ प्रभु कहे हैं सब मुनि मेरे, दुष्कर तप के धारी । पर सब मे ढढन मुनि
अधिके, सहे परिषहे भारी हो ॥ ढ० १९ ॥ कर प्रणाम गये कृष्ण शहर में, गज पर हो असवार । पथमे उनने देखे आते, वही
ढढन अनगार हो ॥ ढ० २० ॥ मुंह पर बधी मुहपत्ति जिन के, निची निगाह लगाई । आहार काज वे चक्कर काटे, इत उत

घरके माई हो ॥ह०२१॥ गम से स्वर प्रणाम करी ने, किया बहुत सत्कार । धन्य धन्य तुमने सफल करा है मानव का अवतार हो ॥ ह० २२ ॥ हरि की भक्ति देख सेठ ने मुनि को घरे बुलाया । भक्ति पूर्वक सत्कार करी ने लड्डू उन्हें बहराया हो ॥ ह० २३ ॥ आप प्रभु से कहे मन्दराय, कर्म क्षय हो पाया । मुक्त लब्धि का मोदक देखो आज हाथ में आया हो ॥ह०२४॥ हे वत्स ! तुम लब्धि का नहि, नहीं मिला है आहार । वन्दन करत देख कृष्ण को, दिया भोजन सत्कार हो ॥ ह० २५ ॥ कृपा कर लब्धि फरमाया दास किया के ताई । जिस कारण रह रह गई आलसा रही बात सवाई हा ॥ ह० २६ ॥ आप पड़ निवारण माम में कर्ई न धर लगार । ईंट आवाह पर्युष माखी से, लड्डू लिए निकार हो ॥ ह० २७ ॥ लड्डू चूर ज्यों उत्तम भाव से त्यों कर्मों का चूर । रहन अपाप्पर मन ता फिर से हो गय ज्ञान में पूरे हो ॥ह० २८॥ सुरत देवता केवल ज्ञान का महात्सव किना आन । कवल ज्ञान की बैठक माई प्रश्न किया है स्याम हो ॥ ह० २९ ॥ एस मुनियों के यश का गाके सम किव रत्न आराधा । गुरु प्रसाद चौथमल का अम्बरा कम मत पाम्धा हो ॥ ह० ३० ॥ नमनाथ प्रभु आये विचरते पाया नगर मझार । भीम नामका राजा वहां पर, सरस्वती पटनार हो ॥ ह० ३१ ॥ रानी जन्म स निरी मुग्धा है जिस से नृप हरान । पुछा कान कम से मूग्धा यह फरमाओ भगवान हो ॥ ह० ३२ ॥ पूर्व जन्म में हे राजन ! एक, पद्य नाम भूपाल । उसके पद्मा और चन्द्रमा भी दो रानी सुकमाल हो ॥ ह० ३३ ॥ राजा ने एक पद्य अथ को, पूछा पद्मा ताइ । तुरत उपाय पढाया उसने पथि रहा हर्षाई हो ॥ ह० ३४ ॥ उस पर पति का राग देख कर चन्द्रन रोष भर आइ । ज्ञान उपकरण को ले कर उसके, फेंके आग के माह हा ॥ ह० ३५ ॥ इस जन्म में वही चन्द्रना बनी तुमारी रानी । पूर्व संचित कर्मों का फल यों भोगे है मझानी हो॥ह०३६॥पूछे सरस्वती इस कर्म का कैसे होवे नाश । ज्ञान पचमी करो आराधन होय ज्ञान प्रकाश हो ॥ह० ३७

---

७ गुण ग्राहकता
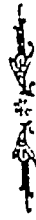
अवगुन उर धारे नहीं, गुण ग्रहे हरबार । मनुष्य क्या सुर लोक मे, महिमा होत अपार हो ॥ १ ॥

सुर नर गुण गावे कृष्ण मुरार का पूरे गुणग्राही ॥टेक॥ एक समय शक्र इन्द्र सभा मे, बोले इस प्रकार । भरतक्षेत्र में
शहर द्वारिका, भूपति कृष्ण मुरार हो ॥ सु० १ ॥ दोषो को त्याग गुण कीर्तन करते, हैं पुरे गुणग्राही । युद्ध मे भी न्याय नीति
पूर्वक, लेते काम सदाही हो ॥ सु० २ ॥ इन्द्र की बात पर एक देव ने, नहीं करा विश्वास । परीक्षा हेतु आया द्वारिका, ठेट हरि
क पास हो ॥ सु० ३ ॥ उस समय हरि वन क्रीडा को, जा रहे वन माहि । मरा कुत्ता ज्यों बना देव ने, डाल दिया फिर वाहे
हो ॥ सु० ४ ॥ उसके मुख की दुर्गन्ध कारण, रहागीर नाक चढावे । किन्तु कृष्ण देखी कुत्ते को, मुख से यों फरमावे हो
॥ सु० ५ ॥ इस काले कुत्ते के देखो, कैसे दान्त हैं सुन्दर । मानो मरकत रत्न की थाल मे, मोती सजाए अन्दर हो ॥ सु०
६ ॥ फिर देवने धाड़ पाड़ू का, खासा रूप बनाया । सुन्दर अश्व एक सिरी कृष्ण का, तुरत चुरा के लाया हो ॥ सु० ७ ॥
इस पर अनेक सैनिको ने मिल, उसका पिछा किना । उन सभी वीरो के ताई, पराजित कर दिना हो ॥ सु० ८ ॥ सुनी हाल
लपक कर दौड़े, स्वयं ही कृष्ण मुरार । कहां ले जावे धूर्त ! घोड़े को, बोले कर ललकार हो ॥ सु० ९ ॥ मेरे बैठन का है
यह घोड़ा, तुमको नहीं मिल पावे । यदि लेना यह चाहो घोडा, मुझ से युद्ध मचावे हो ॥ सु० १० ॥ देव कहे बाहु युद्ध
आदिक, मुझ को नहीं पसन्द । पीठ युद्ध करने को चाहू, जो तुम करो गोविन्द हो ॥ सु० ११ ॥ इतना सुनी कृष्ण हंस

लाता। दूजा लालची था वह पूरा, स्वार्थ ही दिखलाता हो ॥ सु० २६ ॥ एकबार श्री कृष्ण ने पूछा, धरके दिल में दाज। दोनों वैद्यों की गति कौनसी, होवेगा जिनराज हो ॥ सु० ३०॥ स्वार्थी वैद्य तो नरक सातमी, उत्पन्न होगा जाय। वैतरणी विन्ध्याचल पर्वत मे, होगा वन्दर राय हो ॥ सु० ३१ ॥ उस वन में सार्थवाह सगमें, आवेंगे मुनिराय। काटो चुभने से एक साधु, रूक जावे वही आय हो ॥ सु० ३२ ॥ मुनि को देख युथपति बानर ने, जाति स्मरण पाया। तब विशल्या और रोहिणी, औषध गिरिसे लाया हो ॥ सु० ३३ ॥ विशल्या लगाने स मुनि पग को तुरत निशल्य वनाया। रोहिणी लगाये पूर्ण रूप से, स्वस्थ हुए मुनिराया हो ॥सु० ३४॥ फिर मुनि को भूमि पर लिखकर, बानर दिया जनाई। मैं वैतरणी नामा वैद्य था, शहर द्वारिका माई हो ॥सु० ३५॥ मुनि से ज्ञान सुन तीन दिन का, अनशन बानर ठाया। देव होय सहस्रार स्वर्ग में, अवधि ज्ञान लगाया हो ॥सु० ३६॥ देव आय कहेगा मुनि से, तुम कृपा रिद्ध पाई। फिर मुनि को मिला मुनि सग, सुर जावेगा सिद्धाई हो ॥सु० ३७॥ इतना सुन हरि आया शहर में, करके यो नमस्कार। नेम प्रभुजी वहां से फिर तो कर दीना विहार हो ॥सु० ३८॥ भूमण्डल मे आप विचर कर, करते पर उपकार। वर्षा ऋतु के पहले द्वारिका, प्रभुजी गये पधार हो ॥सु० ३९॥ एक दिन हरिजी सेवा करते, पूछा इस प्रकार। वर्षा काल मे आप मुनिगण, क्यों नहीं करत विहार हो ॥ सु० ४० ॥ वर्षा काल में त्रस स्थावर की, उत्पत्ति बहु होवे। इस कारण नहीं करे विहार मुनि, जीव रक्षा को जोवे हो ॥सु० ४१॥ सत्य वचन है आपका, यों कही कृष्ण सिधाया। वर्षा काल में अधिक फिरना, खुद ने बन्ध रखाया हो ॥सु० ४२॥ सपरिवार नेम वन्दन को, पुनः मोहन एक वार। आए वाग मे कर नमन यों, बैठे सभा मझार हो ॥सु० ४३॥ उसी दिन नेमिनाथ प्रभु ने, यति धर्म विस्तारा। सुन के जनता बोली मोद से, यही करे निस्तारा हो ॥सु० ४४॥ कृष्ण कहे मुझ से नहीं पलता, मुनि धर्म इस वार। कर दलाली दीक्षा दिलवाऊ लीनी प्रतिज्ञा धार हो ॥सु० ४५॥ ले अभिग्रह राज भवन मे, लौट कृष्णजी आया। उसी रोज से करी दलाली, कई

को मुनि बनाया हो ॥सु० ४६॥ एक दिन श्रीमाधवजी ने समस्त मुनि के ताई। विधि विधान से वन्दना करते थकान उनको आई हो ॥सु० ४७॥ हे भगवन् ! संग्राम तीन सौ साठ कर जिसवार। अब तो मम मालूम नहीं हुआ, क्यों हुआ इस बार हो ॥सु० ४८॥ आज आप बहु पुण्य कमाया, क्षायक समकित पाया। बांधा तीर्थकर गोत्र सर्वोपरि, भंजनादि कर्म घटाया हो ॥सु० ४९॥ हरि के समान एक वीर पुरुष ने की वन्दना बहु बार। थका नहीं वह देख प्रभु तब, पूछे आप मुरार हो ॥सु० ५० ॥ मुझ से वन्दना अधिक कारक को फल हुआ सुविशेष। प्रभु कहे अनुकरण करने से कवल काय क्लेश हो ॥सु० ५१॥ द्रव्य वन्दन से भाव वन्दन का, फल बड़ा है भारी। इतना सुन प्रणाम करी ने गया आप सिधारी हो ॥सु० ५२॥

राजकुमारों की दीक्षा

चारित्रावरणी कर्म का, क्षयोपशम जब होय। चारित्र तभी धारन करे, सुन लीजो सब कोय ॥ १ ॥

धन धान धर्मी के पूर्ण पुण्यवानी हो जिस जीव की ॥ टेक ॥ उसी काल और उसी समय में शहर द्वारिका माइ। अंधक विष्णु भूप धारिणी- रानी है सुख दाई हो ॥ ध० १ ॥ एक दिन माता श्री शय्या में, सिंह का सपना आया। मास सवा नौ पूर्ण हुआ पुत्र-रत्न को जाया हो ॥ ध० २ ॥ गौतम कुमार नाम रक्खा है, सबके मन में भाया। आठ वर्ष की वय होने पर, पाठक पास पढ़ाया हो ॥ ध० ३ ॥ तरुण वय में आठ नृप की, कन्या संग परणाई। आठ क्रोड़ का आया दहेज अब रहे महल के माई। चार प्रकार के देवा दुनवा मेवा करें सुखसाई हो ॥ध०४॥ श्रीकृष्ण गौतम कुमार भी दर्शन के हित आया।

वीतराग की वाणी सुन, वैराग कुवर को छाया हो ल० ६ आज्ञा मांगी आ माता से माता मूर्छा खाया। सावधान हो फिर नन्दन को, भाति भांति समझाया हो ॥ ल० ७ ॥ नहीं मान पर महोत्सव करके, संयम इन्हे दिलाया। लीजो मोक्ष यों दे शिक्षा फिर, मात पिता घर आया हो ॥ ल० ८ ॥ सुमति गुप्तियुत गौतम मुनिजी, आतम-साधन में लागे। निर्ग्रन्थो के प्रवचनो को, विचरें नित्य रख आगे हो ॥ ल० ६ ॥ अरिष्टनेमि के स्थविर मुनि से, पढे एकादश अंग। नाना भाति की करे तपस्या, तज प्रमाद का सग हो ॥ ल० १० ॥ अरिष्टनेम प्रभु नदन वन से, कर गये अन्यत्र विहार। भव्य जीवो को प्रतिबोधते, करते पर उपकार हो ॥ ल० ११ ॥ द्वादश भिक्षु की पडिमा का, तप आराधन कीना। गुणरत्न संवत्सर तप कर, पाप हवन कर दीना हो ॥ल०१२॥ प्रभु आज्ञा ले स्थवीर मुनि सग, शत्रुञ्जा पर जाई। मास सथारे कर्म काटने, गये मोक्ष के माई हो ॥ ल० १३ ॥ गौतम होगये सिद्ध आत्मा, दुःख गया सब नास। केवल ज्ञान केवल दर्शन में, करते अहो नित वास हो ॥ ल० १४ ॥ यो समुद्र, सागर गम्भीर स्थिमित और अचलकुमार। काम्पिल्य अक्षोभ प्रसेन विष्णु, यह तो राजकुमार ॥ ल० १५ ॥ इन सबको है माता धारणी, अंधक विष्णु पितु जान। गौतम कुमार ज्यों सयम लीना पहुचे मोक्ष दरम्यान हो ॥ल० १६॥ उसी द्वारिका के वासी हैं, अधक विष्णु राया। उनकी धारणी रानी ने सुत, आठ अनोखा जाया हो ॥ ल० १७ ॥ अक्षोभ सागर, समुद्र, हिमवंत, अचल धरण सुनाम। पूर्ण अभिचन्द ये सब जानो, विद्या में अभिराम हो ॥ ल० १८ ॥ इन आठों ने नेम प्रभु की, सुन के सुन्दर वानी। जन्म मरण से भयभीत होके, लीना संयम सुखदानी हो ॥ ल० १६ ॥ द्वादश पडिमा ग्रही भिक्षु की, गुणरत्न तप को धारा। सोलह वर्ष का संयम पाली, कर लीना निस्तारा हो ॥ ल० २० ॥ शत्रुजा पर करके सथारा, गौतम मुनि समान। कर्म खपा के केवल पाये, हुवे सिद्ध भगवान हो ॥ ल० २१ ॥ उसी द्वारिका नगरी माई, वसुदेव है राया। धारणी देवी सिंह सुपन लही, सारणकुमार को जाया हो ॥ ल० २२ ॥ पचास राजदुलारी परणी, दहेज यही विधी जान। सयम लीना नेम

बोली होश मे आई । मत वोलो यों बोल लाल ! तुम, मत जाओ छिटकाई हो ॥ ल० ९ ॥ सब नारी मिल करे विनति, गोवें आंसू डाल । निराधार हमको मत छोडो अहो सासु के लाल हो ॥ ल० १० ॥ सयम-मार्ग यह महा कठिन है, लीजो आप पहचानी । भांति भांति करके समझाया, उनने एक नहीं मानी हो ॥ ल० ११ ॥ छः ही सहोदर दीक्षा ले ली, मोह माया का छोड़ । आजीवन छट छट करन की, आज्ञा मांगी कर जोड हो ॥ ल० १२ ॥ ज्यो सुख हो वैसे ही कीजे प्रभु ने दिया फरमाय । प्रसन्न चित्त हो करे तपस्या, आत्म-ध्यान लगाय हो ॥ ल० १३ ॥ उन्हीं दिनों द्वारिका बाहिर, नन्दन वन उद्यान । अरिष्टनेम प्रभु समोसरे हैं, सग मे मुनि गुणवान हो ॥ ल० १४ ॥ शिष्यो माही छः शिष्य सहोदर, हैं वैराग्य के मांई । रंग रूप वय कर सम दीसें, अलसी फूल के ताई हो ॥ ल० १५ ॥ श्रीवत्स साथिया करके उनका, वक्षस्थल शोभावे । छः हो मुनि कुबेर के सुतवत्, सुन्दर अति दिख पावे हो ॥ ल० १६ ॥ छः भाइयो के आया पारना, एक ही दिन के मांई । तीन सिघाड़ा होके आये, नीची निगाह लगाई हो ॥ ल० १७ ॥ एक सिंघाड़ो आयो महल मे, देवकी के निवास । देख मुनि को स्वागत कीना, जाके उनके पास हो ॥ ल० १८ ॥ केशरीयां मोदक से रानी, भर के पूरी थाल । उलट भाव कर हाथो से, बहराया तत्काल हो ॥ ल० १९ ॥ जिसका चित्त देने का होवे, उस घर वित्त न जोय । वित्तवान का चित्त न होव, चित्त वित्त पुण्य से होय हो ॥ ल० २० ॥ चित्त वित्त दोनो आन मिले पर, फिर दे पात्र को दान । पात्र वडा ससार वीच मे, सब सुकृत की खान हो ॥ ल० २१ ॥ द्विगुणा होता दिये व्याज के, चतुर्गुणा व्यवसाय । सहस्त्र गुणा होता खेती से दान से अनन्त फल पाय हो ॥ ल० २२ ॥ ज्यो २ पानी उलीचन सेती, निर्मल आवे नीर । चने चूटन मे फैले बहुत ये, न्याय बड़ा अक्सीर हो ॥ ल० २३ ॥ इन्हीं न्यायो को समझ रानी ने, मोदक दिया अनमोल । इतने दूजा सिघाड़ा आया, रूप करी सम तोल हो ॥ ल० २४ ॥ उसी विधि और उसी भाव से, मुनि वन्दे फिर जोय । उदार भाव से, लड्डू वहराये, मन मे भद

नहीं काय हो ॥ मु० २५ ॥ योगानुयोग से तीजा सिंघाड़ा वह भी यहां पर आया । एक दूजे को मालूम नहीं है यहां योग बन पाया हो ॥ मु० २६ ॥ फिर लड्डू का वैसा विधि से बहराया मुनि दोय । पर एक शंका उपनी आके रानी के मन मांय हो ॥ मु० २७ ॥ मुनिवर गुणधारी अर्जी एक मेरा कबूल आपसे ॥ टेक ॥ कहता आवे लाज मनरी बिन कहे रहा न जाय । पुण्य योग से तीन वक्त तुम आये यहां मुनिराय हो ॥ मु० २८ ॥ बारह योजन लम्बी द्वारिका नव योजन विस्तार । कृष्ण नरेश्वर राज करे जहां हो रहा जय जय कार हो ॥ मु० २९ ॥ हैं धनी और धर्मानुरागी पुष्कल जिनके धन । ऐसे श्रावक धर्म शहर में मोक्ष जिनका मन हो ॥ मु० ३० ॥ साधु सती को दिये दान बिन जीमें नहीं अन्न पानी । है ऐसा नित्य नियम जिन्हों के, सदा सुने जिन वानी हो ॥ मु० ३१ ॥ मिला नहीं क्यों आहार अचंभा मेरे मन में आया । क्या नगरी के पुण्य में खामी, योग कहीं नहीं पाया हो ॥ मु० ३२ ॥ मुनि कहे मैं देवकी ! हेरे बार बार नहीं आया । एक सरीखे हैं षट बन्धु एक उदर का जाया हो ॥ मु० ३३ ॥ नाग सेठ सुलसा माता भद्दिलपुर के वासी । नेमनाथ की वाणी सुन के जग से हुए उदासी हो ॥ मु० ३४ ॥ बत्तीस बत्तीस नारी को त्यागी, बत्तीस क्रोड़ सोनैया । तभी भोग योग को धारा जन्म मरण से डरैया हो ॥ मु० ३५ ॥ तभी रोज से छट छट तप की प्रतिज्ञा लीनी भारी । पारना कारण तीन सिंघाड़ा, आये हैं तुम द्वारी हो ॥ मु० ३६ ॥ नहीं शासन सद्गुरु का हमारे शासन शिव का भारी । इतना उत्तर दे के मुनि गये, चिंता में समझ भारी हो ॥ मु० ३७ ॥ रानी सोच कहा मुनि ने होगा तुम अठ नन्द । एक माता के सिवा न ऐसा पूछूं नेम जिनन्द हो ॥ मु० ३८ ॥ प्रात होत ही प्रभु पे आई सराम मटन काज । हाथ जोड़ के वन्दना कीधी, जब भाषे जिनराज हो ॥ मु० ३९ ॥ छः मुनियों का हर देवकी ! संशय तुमको आया । ये तेरे ही पुत्र देवकी ! नहीं सुलसा ने जाया हो ॥ मु० ४० ॥ पिछला सब वृत्तान्त सुनाया तब रानी हर्षाई । छः ही मुनी के पास आयके, चरणे शीश नमाई हो ॥ मु० ४१ ॥ निरखत निरखत के मिस पुत्रों का रोम राम

हे पुत्रो ! मैं सौभाग्यवती हू, तुम जैसे सुत
विकसाया। टूट के कसें कचुकी स्तन में, तुरत दूध भर आया हो॥ मु० ४२ ॥ किन्तु दुःख का विषय यही है, गोद न एक
जाया। राज्य करो चाहे दीक्षा लो तुम, मुझ मन बहु हरषाया हो ॥ मु० ४३ ॥ हे देवकी ! रज करे मत, पूर्व कर्म कमाया।
खिलाया। निरख पुत्र को फिर देवकी, प्रभु को शिर नवाया हो ॥ मु० ४४॥ सौते तो के सात रत्न थे, गुप चुप से ले लीना।
जो इस जन्म मे वही कर्मफल, उदय भाव मे आया हो ॥ मु० ४५ ॥ सातों रत्न के बदले तेने, सातों नन्द गमाया। एक रत्न देने मे
बहुत रुदन करने पर तैने, एक रत्न दे दीना हो ॥ मु० ४६ ॥ कर वन्दन प्रभु नेमनाथ को, आई निज घर चाल। बैठ शैय्या मे लगी
वापिस, कृष्ण रत्न को पाया हो ॥ मु० ४७ ॥ धन्य है उस माता को जो निज, नन्दन गोद खिलावे। मैंने पुण्य किया नहीं
सोचने, खेलाया नहीं बाल हो ॥ मु० ४८ ॥ नयनों मे पानी भर आया, धिक् जीवन मुझ आज। उसी समय चल हरिजी
ऐसा, सुख कहां से पावे हो॥ मु० ४९ ॥ देख मात को चिंतावश मे, पूछे आप मुरारी। क्या कारण है आर्त-ध्यान का, जब
आये, पद-वन्दन के काज हो॥ मु० ५० ॥ क्या पूछे चिंता की बेटा !, टूटा दुःख का पहाड। मात पुत्र जाया तुझ सरीखा, नहीं लड़ाया
बोली महतारी हो॥ मु० ५१ ॥ छः पुत्र बधे सुलसा के घर पर, तू गोकुल के मांय। नहीं सुख देखा किसी एक का, कहू किसको मै जाय
लाड़ हो॥ मु० ५२ ॥ सिरी कृष्ण जी कमरे मे जा, बालक रूप बनाया। आय मात की गोद में लौटे, मां ने हृदय लगाया हो॥ मु०
हो॥ मु० ५३ ॥ कभी कूदे कभी दौड़े कभी वह, रोवे बहु चिल्लाया। कभी कहे मैं दूध पिऊंगा तब माता मगवाया हो॥ मु० ५५ ॥ बिना
५४ ॥ पतासे के नहीं पीऊ, दीने पतासा डाल। जब रोकर कहे अति जोर से, पतासे बहार निकाल हो॥ मु० ५६ ॥ कहे देवकी यह
पतासे के नहीं पीऊ, दीने पतासा डाल। जब रोकर कहे अति जोर से, पतासे बहार निकाल हो॥ मु० ५६ ॥ कहे देवकी यह
तुम लीला, तब निज रूप बनाय। आम की चाह नहीं मेटे आमली, समझो लाल यह न्याय हो॥ मु० ५७ ॥ मत चिंता कर
मात हमारी, दिया खूब विश्वास। करू उपाय हो लघु भ्रात मुझ, सफल होय तुम आस हो॥ मु० ५८ ॥ पोषधशाला मे तेलो

कीना हरसगमेषी आयो। हागा लघु भ्रात तुम्हारे यों कहि वच सिधायो हो ॥ मु० ५६ ॥ कही मात से मान हरी फिर आप सभा में आया। इस नगरी भर में आया, रचा पुरस कमाया हो ॥ मु० ६० ॥ भव्य जीवों को प्रतिबोध के, कीना नम विहार। गांव नगर पुर पाटन विचरे सम्य जीवां हितकार हो ॥ मु० ६१ ॥ गर्भ दिवस पूर्ण होने पर जाया सुन्दर नन्द। घर घर हुए बधावना हरे, घर घर मंगलानन्द हो ॥ मु० ६२ ॥ गज तालुए सम कोमल काया रक्त वरण क्यों भान। गजसुकमाल नाम दिया है है पूरा पुण्यवान हो ॥ मु० ६३ ॥ होंस निकाल माता अपनी, कर लाड घर प्यार। माधव की सब रानियां खिलावें भार बाहस परिवार हो ॥ मु० ६४ ॥ बाल-विनोद की लीला दरसो मात परम सुख पाय। मोद भरकर देवकी रानी गोदी बीच बिठावे हो ॥ मु ६५ ॥ पढ़ा लिखा होस्यार बनाया गजसुकमाल के तांई। माता मन अनाथ अधिको, लाड करे दिन गई हो ॥ मु० ६६ ॥ इतन नम पधारे द्वारिका वन्दन आय मुरार। लघु भ्रात को सग में लीना और सभी परिवार हो ॥ मु० ६७ ॥ सोमल विप्र की सुन्दर कन्या भ्रात परणवा काज। भली पधारे चम्पापुर में, नाइ वन्द जिनराज हो ॥ मु० ६८ ॥ गजसुकमाल हरीजी प्रमुख सुटी परिषदा धार। नेमनाथ प्रभु दई देशना भव जीवां सुखकार हो ॥ मु० ६९ ॥ भव-भयहारी उत्तम भावना कहें द्वादश प्रकार। भिन्न भिन्न कर ठ फरमावें त्रिभुवन तारण हार हो ॥ मु० ७० ॥ जो सुख जाय फिर नहीं आवे यह भव नर भव। प्रमाद छोड़ धर्म को धारो दिया है आरज क्षेत्र हो ॥ मु० ७१ ॥

(१) अनित्य भावना।

या संसार अनित्य विचारो ज्यों पथी [illegible]-वासा। संध्या-रंग रैन का सपना बाजीगर तमासो हो ॥ मु० ७२ ॥

[illegible]) अशरण भावना।

जैसे सिंह मृग को पकड़े, देखो निगाह पसारे। काल गह पसे मानव को, कोई न राखनहार हो ॥ मु० ७३ ॥

(३) ससार–भावना ।

चारों गती के चक्कर काटे, कर्म योग कई वार । ऊच नीच पन को थे पाया, सहे दु ख अपार हो ॥ मु० ७४ ॥

(४) एकत्व–भावना ।

आयो एकलो जावे एकलो, काई न आवे लार । तरु तले बैठ कहे तरु मेरा, मोह वश होय गंवार हो ॥ मु० ७५ ॥

(५) अन्यत्व–भावना ।

जीव सचेत अचेत है काया, एक कभी नहीं होय । वह शिव चावे यह भव चावे, तू कर्म–मल को धोय हो ॥ मु० ७६ ॥

(६) अशुचि–भावना ।

तन अशुचि अपावन जानो, धोया शुद्ध न होय । दसो द्वार वहे निशि वासर, वाह्य देख मत मोय हो ॥ मु० ७७ ॥

(७) आश्रव–भावना ।

मृग पतग मीन गज भवरो, एक इन्द्री वश मरता । पाचो इन्द्री के वशीभूत हो, जन्म जन्म में फिरता हो ॥ मु० ७८ ॥

(८) सवर–भावना ।

आश्रव रोक संयम को धारे, संवर का फल मोय । व्यापारी व्यापार वीच में, जान न खावे खोट ॥ मु० ७९ ॥

(९) निर्जरा–भावना ।

उदय होय सो कर उदिरणा, कर्म–निर्जरा मानो । अन्य मत इसका भेद न जाने, तप कर कर्म खपानो हो ॥ मु० ८० ॥

(१०) लोक–भावना ।

चवदह राज का ऊचा नीचा, यह है लोक प्रमान । इसके वीच में है जीवों का, आवागमन का स्थान हो ॥ मु० ८१ ॥

(११) बोध-भावना ।

भ्रमा काल अनन्त जगत् में समकित रत्न नहीं पाया । भगती द मिथ्यात्व त्याग, समय अमोलक आया हो ॥ मु० ८२॥

(१२) धर्म-भावना ।

धर्म बिना सब धन्धा मिथ्या, कुछ हाथ नहीं लाग । धर्म बिना रुलिया भव भव में जे मन क्या नहीं जागे हो ॥ मु० ८३॥
सुना सराना था जिनवर की दरी मधुर उस बार । शक्ति के अनुसार त्याग कर, पहुँच नगरी मझार हो ॥ मु० ८४ ॥
जिनवाणी को भव हृदय में गज सुकुमाल कुमार । विषयों स विरक्त होय ने, मन म करे विचार हो ॥ मु० ८५ ॥
विषया विष से है अनिष्ट विषया नाम कुनाम । विषया वश में होकर चतन !, दो भव कर निकाम हो ॥ मु ८६ ॥
भाग-विषय प्रथम स रोके नहीं पामे विस्तार । निश्चय मन में इसका धारी व्याह किया परिहार हो ॥ मु० ८७ ॥
विनययुक्त वन्दन कर प्रभु का, आया जननी पास । आज्ञा मांगो आप संयम की हृदय भरी उल्लास हो ॥ मु० ८८ ॥
आज्ञा द्यो मा संयम आदरी शिवपुर म जावों ॥ टेक ॥
मूर्छा खाइ जब माता देवकी, बात सुनी उस बार । चेत होही कह आया वल्लभ तू मुझ प्राणाधार हो ॥ मा० ८९ ॥
अरे सुन लाल हमारी संयम मत लेवा खांडा धार है ॥ टेक ॥
सम्यर पुष्प सम्पना दुर्लभ, जैसा जग दरम्यान । कहाँ तक कहूं लालजी तुमको, ? तुम दरशन भान हो ॥ मा० ९० ॥ तू सुकुमाल बड़ा है भारी कामल काले समान । नाठ होंस पूरी हुई लालजी ! ऊजन मरो सो मान हो ॥ म० ९१ ॥ मोम दांत से चना छोड़ का हरगिज चबा न जाय । एम चारित्र कठिन है मार्ग, मेरा ध्यान में लाय हो ॥ म० ९२ ॥ कामल करा का खोचन करना, भिक्षा दिस घर फिरना । मानों कहो मु[illegible] तरना सागर भुज स तिरना हो ॥ म० ९३ ॥ प्रथम हाथ वताचल बटा ।

घर दे जल्दी छोड। पड़े परिषह जब संयम मे, कई आवे घर दौड हो॥ अ० ६४ ॥ कुमर कहे माताजी सुन लो, जो चाहे जग भोग। उस कायर से कभी सधे नहीं, वीतराग का जोग हो॥ अ० ६५ ॥ शूरवीर और साहसीक के, तीनों योग वश माई। उसके लिये है संयम सुलभ, सुनो मात! चित्त लाई हो॥ अ० ६६ ॥ यावन धन अथिर है जननी, और अथिर है देह। इसी कारण से चतुर पुरुष झट, तोड फेंक दें स्नेह हो॥ अ० ६७ ॥ धन जीतब और भोग से चेतन, कभी तृप्ति नहीं पावे। ऐसी जान आत्मा को तारूं, मत माता अटकावे हो॥ ६८ ॥ हरी सुनी दौडके आवे, लीनो गोद बिठाई। द्वारिकाधीश बनाऊं तुझ को, मत सयम ले भाई हो॥ अ० ६९ ॥ मौन महीने रहे आप तब, तुरत बनाया राजा। हाथ जोड़ने अर्ज करें सब, फरमाओ कोई काजा हो॥ अ० १०० ॥ तीन लक्ष सौनेया जल्दी, श्री भण्डार से लाओ। दोय लाख का ओघा पात्रा, लक्ष दे नाई बुलाओ हो॥ अ० १०१ ॥ शिर पर चोटी छोड के नाई, सुन्दर बाल बनाया। मफेद वस्त्र में बाल झेल के, आंसू मात वर्षाया हो॥ अ० १०२ ॥ स्नान कराके वैरागी को, वस्त्राभरण पहनाया। त्रिठा मेत्रिका माई सभी ने, जय जय शब्द सुनाया हो॥ अ० १०३ ॥ बाजा बाजे अति जोर का, मरे बाजार हो आया। हरि हलधर माता सब मिल के, नेम प्रभु पां लाया हो॥ अ० १०४ ॥ उतर सेविका से वैरागी, प्रभु को शीश नमाया। मात कहे दू सुत की भिक्षा, ग्रहण करो जिनराया हो॥ अ० १०५ ॥ ईषान कोण मे जाय आपने, वस्त्राभरण उतारा। मुख पै बांधी मुख वस्त्रिका, वेष मुनि का धारा हो॥ अ० १०६ ॥ चौथे प्रहर आज्ञा ले प्रभु की, ध्यान धरा शमशान। सोमल ससुरे देखके उसको, क्रोध चढ़ा है महान हो॥ अ० १०७ ॥ मिट्टी की शिर पाल बांधने, अगारा रख दीना। जड़ चेतन को भिन्न लखी नहीं, खंडित ध्यान को कीना हो॥ अ० १०८ ॥ क्षपक श्रेणी करी मुनि ने, शुक्ल ध्यान को ध्याया। केवल ज्ञान पा मोक्ष सिधाया, निराबाध सुख पाया हो॥ अ० १०९ ॥ षट्मासवत रजनी बीती, पुत्र-विरह विकराल। प्रातः ही प्रभु पां आई देवकी, जोवा गजसुखमाल हो

मे। जन्म लिया गज सुख के रूप में, मत रख संशय मन में हो ॥ अ० १२७॥ शिर पै रोट-बन्धन से मरा वह, जन्मा इसी नगरी में। वही घातक गजसुख का जानो, फर्क न है कर्मन मे हो ॥ अ० १२८॥ गजसुखमाल के पूर्व जन्म का वृत्तान्त सुनाने सारा। तोभी श्रीकृष्ण के दिल मे, मिटा न रज लगारा हो ॥ अ० १२९॥ प्रभु को वन्दी आये शहर में, छोड़ी सदर बाजार। चले गली के मार्ग मुरारी, चिन्ता का नहीं पार हो ॥ अ० १३०॥ इत सोमल हृदय मे साचे, नेमिनाथ है ज्ञानी। मेरा नाम लेगा हरि आगे, उनसे जरा न छानी हो ॥ अ० १३१॥ कौन मौत से हरि मारेगा, ऐसा करी विचार। गली मार्ग हो चला वह घर से, गुप चुप से उस वार हो ॥ अ० १३२॥ इतने हरि की देखी सवारी, जाना पकडने आया। धसका खाके पड़ा जमीं पर, तड़फ के प्राण गमाया हो ॥ अ० १३३॥ मरा हुआ देखीने उसको, जान लिया मन माई। तुरत लाश का बाहर डला के, भूमि शुद्ध कराई हो ॥ अ० १३४॥ उग्र पाप करे जो कोई, उग्र करी विचार। कर्म उदय तत्क्षण हो उसके, संशय नहीं लगार हो ॥ अ० १३५॥ आये द्वारिका बीच हरिजी, शोक सभी विसराय। सारे कुटुम्ब को धैर्य बधाके, रहे सुख के मांय हो ॥ अ० १३६॥ गजसुखमाल गया मोक्ष मे, क्षमा धर्म को धार। गुरुप्रसादे चौथमल कहे, क्षमा करो नरनार हो ॥ अ० १३७॥ गजसुखमाल की तरह और भी, राजपुत्र कई वीर। दीक्षा धारण करी उन्होंका, जिक्र सुनो धरधीर हो ॥ अ० १३८॥ सुमुख दुमुख और कुमक दारुकने, दीक्षा धारण कीनी। बलदेव पिता और धारिणी माता, जिनने आज्ञा दीनी हो ॥ अ० १३९॥ वसुदेव धारणी के जाया, दारू राजकुमार। अनाधृष्ट इन दोनो भाई ने, दीक्षा ली उस वार हो ॥ अ० १४०॥ पचास पचास कन्या के साथ में, विवाह हुआ था आई। पचास करोड का दहेज मिला है, प्रत्येक प्रत्येक के माई हो ॥ अ० १४१॥ इस वैभव और सुन्दर कन्या को, छिन में दी छिटकाई। श्री नेम प्रभु पां सयम लीनो, आतम हित को चाई हो ॥ अ० १४२॥ चारित्र वीस वर्ष तक पाला, पूर्ण आज्ञा धार। कर मास संथारो शत्रुजा पर,

पहुंचे मोक्ष मझार हो ॥ भ० १४३ ॥ वसुदेव धारणी के जाया जाली मयाली कुमार। उवयाली और पुरुषसेन हैं वारीसेन सुखकार हो ॥ भ० १४४ ॥ समुद्रविजय अरु शिवादेवी जाया यादव नार। इन सभी ने संयम लीना हरि के अनेक कुमार हो ॥ भ० १४५ ॥ आठ कृष्ण की कई कन्या प्रभु पै दीक्षा लवी। महाभाग्य रही अखंड कुंवारी, भाग कर्म का ठेली हो ॥ भ० १४६ ॥ कनकवती राहणी देवकी पे रही घर मंझार। बाकी वसुदेव की रानियाँ लीना संयम धार हो ॥ भ० १४७ ॥ करती विचार भव स्थिति का कनकवती घर मांहे। चार कर्म का क्षय करीने शुद्ध भावे केवल पाई हो ॥ भ० १४८ ॥ तब देवों ने मिलकर भारी महोत्सव खुब मनाया। उपमहत्व साध्वी का महत्व करके वरी प्रभु का पाया हो ॥ भ० १४९ ॥ आय विपिन में तीस दिवस का, अनशन इसने ठाया। अघाती कर्म का क्षय करीने, पद निरञ्जन पाया हो ॥ भ० १५० ॥

प्रद्युम्न कुमार

आय द्वारिका बाग में, नेमनाथ भगवान्। कृष्ण प्रद्युम्न आदि जन, दर्शन करें वहां आन ॥ १ ॥

लग ध्यान उसी के पूर्ण पुण्यवानी हो, जिस जीव के ॥ टेक ॥ प्रभु-वचन सुन मदन विचारे सारू आतम काज। संसारी सुख बहुत भोगवे अब साधू शिवराज हो ॥ ल०१॥ ज्ञान-उद्योत हुआ हृदय में मोह नींद से जागा। घर आय फिर नमन करके, इस संयम का मांगा हो ॥ ल० २ ॥ प्रद्युम्नकुमार का नाम श्रवणी ने हरी हलधर सुणाया। वज्रपात सी बात विचारी धरण पछाड़ा खाया हो ॥ ल० ३ ॥ चतराई कर सुनर बेठा! कीजे भाग विलास। यह समय है नहीं योग का, हृदयके विमास

हो ॥ ल० ४ ॥ कुमर कहे मुझे जिन वचनों मे, शका नहीं लगार। जावे सो आवे नहीं हरगिज, यह अवसर हर वार हो
॥ ल० ५ ॥ पंडित, मूर्ख, बूढ़ा, बालक अरु, कायर, शूर, कहावे। राजा, रानी, मौत सामने, कोई रहन नहीं पावे हो ॥ ल०
६ ॥ मात पिता ने बान्धव बेटा, वार अनन्ती पाया। काल रूप सिंह ने जब पकडा, कोइयन आय छुड़ाया हो। ल० ७ ॥
भूला था तो अत्यन्त भूला, अब भूला न जाय। खाया जहर बिना जान मे, जानी दक्ष नहीं खाय हो ॥ ल० ८ ॥ अनित्य
असार जगत् को जानी, वैराग हृदय मे छाया। आज्ञा दो सयम की मुझको, डाव तिरन का आया हो ॥ ल० ९ ॥ सम-
झाया कुदुम्बजनों ने, और उन्हीं के तात। चारित्र ग्रहण का लगा उम्हावा, माने न किन की बात हो ॥ ल० १० ॥ करी विनती
फिर माता से, प्रद्युम्नकुमरजी आई। सयम लूंगा नेम समीपे, आज्ञा दे मुझ तांई हो ॥ ल० ११ ॥ वचन सुणीने धरणी
ढल गई, सुध न रही लगार। वांह पकडने बैठी कीनी, करी बहुत उपचार हो ॥ ल० १२ ॥ आय होश में बोली माता, मुझ
एकाकी लाल। केवल एक आधार तुही है, बोलो बोल संभाल हो ॥ ल० १३ ॥ चार दिना की दिखा चांदनी, मतो दिखा तू
रात। तुझे देख आनन्द मानू, मत सुख में मारे लात हो ॥ ल० १४ ॥ विद्याधर के घर पर था जब, आशा थी मन पूरी।
तभी लाल को निरखा मैंने, भाव बड़ा बलकारी हो ॥ ल० १५ ॥ सुत के पीछे ही माता की, दुनिया करे बडाई। सिहनी रहे
निशक विपिन में, एक सिह को जाई हो ॥ ल० १६ ॥ ऊँची चढ़ा जगत मे मुझको, अब नीची मत डाल। दुःख सहन नहीं
हो बेटा !, सोथन होगी खुशहाल हो ॥ ल० १७ ॥ लाल नगीना प्यारा वल्लभ, यादव-वंश का टीका। तेरे बिना यह खाना
पीना, सब ही लागे फीका हो ॥ ल० १८ ॥ अति जोर से रोवे रुक्माणि, भर भर आसू लावे। गोद बिछा क कहूं गोदी मत,
खाली करके जावे हो ॥ ल० १९ ॥ मदन कहे मत रोवे माता, मोह-जगत दुखदाय। इसी मोह ने मुक्ति जाते, जीव रखे
अटकाय हो ॥ ल० २० ॥ है अस्थिर जगत् का मेला, झूठ सभी झमेला। इन्द्र धनुष्य, रैन का सपना, मिटते लगे न वेला

हो ॥ स० २१ ॥ करनी कर अमर हो जाऊं, आऊं न गर्भावास । मदनकुंवर यों मात मनाई, आज्ञा ली उन पास हो ॥ स० २२ ॥ वहां से चल के आये अन्तःपुर निज नारियां ह्वपाय । मदन कहे में सुनो सब प्रिया, ध्यान एकाग्र लगाय हो ॥ स०२३॥ हे प्रिया ! हम संयम लेंगे जानी जगत् असार । धन पाप जो सुख में रीजा, शिक्षा लीजो धार हो ॥ स० २४ ॥ वचन सुणीने सब ही महिला कुसुम ज्यों कुम्हलानी । चिन्तित होके आंसू गेरती बोलीं गद् गद् वानी हो ॥ स० २५ ॥ प्रियतम हाके अमीठी वाणी, कैसी आज सुनाइ । संयम लेन की तजो बात यें राखी रक्खो हम तांई हो ॥ स० २६ ॥ आप इन्द्र समान शोभते हम सबही इन्द्रानी । क्या मांग मत छोड़ा नाथजी ! अर्जे हमारी मानी हो ॥ स० २७ ॥ कहे मदन सब सुनो कामनी विषयों को छिटकाया । यही जीव भव सागर से तीर मोक्ष गति को पाया हो स० ॥ २८ ॥ प्रीतम ! चारित्र सरल नहीं है, करना केश का लोच । नित्य घर घरमें भिक्षा करनी यो कभी नहीं सोच हो ॥ स० २९ ॥ उष्णोदक धोवण का पानी सो पिया किम जाय । फिर चलावे पयदल चलना भारी कष्ट इस माय हो ॥स०३०॥ हे प्यारी ! क्या कम कष्ट का कष्ट नरक के माय । जन्म मरण का कष्ट मिटाने है संयम सुखदाय हा ॥स०३१॥ नाथ बिना नारी निराधारी, निपट निकम्मी होय । अंकुश बिन अगली नहीं शोभे सेना बिन राजा जोब हो ॥स० ३२॥ सासरा पीहर दोनों अनूठा आप बिना सरदार । द्रव्य, धन चाहे कितना हो पर आप बिना निस्सार हा ॥स० ३३॥ धन्य दमयन्ती धन्य द्रौपदी धन्य धन्य सीता नार । आपद बीच में रही पति संग होके लिद्मधगार हो ॥स० ३४॥ नारी के पति संग मठ है, क्या घर क्या वनवास । पतिव्रता का यही धर्म है, सुख दुःख दे समतास हो ॥ स० ३५ ॥ पति संग में संयम लेवें सारें सब सिद्ध काज । मुक्ति-महल में स्वामी सदा, करसां अविचल राज हो ॥ स० ३६ ॥ या विधि परामर्श करीने, आये क्षमा मझार । दीक्षा-महोत्सव करें मदन का, हरि हलधर सब बार हो ॥ स० ३७ ॥ वस्त्राभिक्षेप कराके उनको वस्त्राभरण पहनाया । सहस्र मनुष्य उठावें वैसी सीविका बीच बिठाया हो ॥ स० ३८ ॥ धमना छायकर मारे मदनजी संयम

लेने जावे। शिर पर छत्र धरें महिला जन, चारों चंवर दुरावे हो ॥ ल० ३९ ॥ हरि हलधर भी चले साथ में, देते दान तिस वार। हजारों लोक चल रहे साथ में, वाजा का झनकार हो ॥ ल० ४० ॥ माधव जैसे तात इन्हों के, रुक्मणि जैसी मात। छता भोग तज सयम लेवे, है अचरज की वात हो ॥ ल० ४१ ॥ ऐसे घर और ऐसे वेभव को, ओर आदर सन्मान। अप्सरा जैसी नारी को त्यागी, मदन बड़ा भाग्यवान हो ॥ ल० ४२ ॥ इनने खेचर की भूमि लीनी, भूचर महिमा पाई। अव मोक्ष साधन के हित में, सारी ममता मिटाई हो ॥ ४३ ॥ इस प्रकार नागरिक जन वोले, होय प्रसन्न चित्त माई। धूम धडाके आई सवारी, कमी रही नहीं काई हो ॥ ल० ४४ ॥ प्रभु-वन्दन कर आये ईशान में, खोले मोती-हार। वस्त्राभरण को उतार फेंके, सर्प-कचुकी अनुहार हो ॥ ल० ४५ ॥ मुख वस्त्रिका मुख पै वांधी, रजोहरण लियो धार। मदनकुमर ने सयम लीना, छोड मोह परिवार हो ॥ ल० ४६ ॥ इसी तरह से साम्वकुवर भी, वैराग्य मे जा रगे। जाम्ववती से आज्ञा लेकर, लिया सयम चित्त चगे हो ॥ ल० ४७ ॥ सतभामा मात ने पूछी, भानु नाम कुमार। चारित्र धर्म को ग्रहण करीने, वने आप अणगार हो ॥ ल० ४८ ॥ प्रद्युम्न का सुत अनिरुद्ध है, वैदर्भी का जाया। सयम लीनो नेम समीपे, छता भोग छिटकाया हो ॥ ल० ४९ ॥ सत्यनेमी और दृढ़नेमी भी, नेमनाथ के भ्रात। चारित्र-धर्म को स्वीकारा है, करने कर्म निपात हो ॥ ल० ५० ॥

द्वारिका-दहन
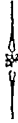
हलधर कहे श्रीकृष्ण से, पुण्य गया पलटाय। कारण प्रकट यह दिख रहा इम सताप के न्याय ॥ १ ॥
मोटे का गर भग्न हो, नहीं छाड़े नर कोय। आव हना सुख माल सा, मझा अपयश हाय ॥ २ ॥

कह नेम प्रभुजी भावी नहीं टलती माधव दरसाओ ॥ टेक ॥ उसा समय द्वारापुरी बाहिर, नेम प्रभुजी आया। वन माली से पाय सूचना सिरी कृष्ण हर्षाया हो ॥ क० १ ॥ दर्शन हेतु हरिजी पधारे, सग में बहु जन आया। नमन करी प्रभु पां बैठ, हर्षादिक भी आया हो ॥ क० २ ॥ पद्मावती रुपी न भी जब प्रभु खबर सुन पाई। प्रसन्न वदन हो आय प्रभु की सेवा करे चित लाई हो ॥ क० ३ ॥ सुन के देशना सारी परिषदा आई उसी दिशि जाय। वन्दन कर हरि प्रश्न पूछा है फरमाओ जिनराय हो ॥ क० ४ ॥ बारा योजन की लम्बी चौड़ी नव योजन की खास। स्वर्ग लोक सी यही द्वारिका कैसे होगा नाश हो ॥ क० ५ ॥ वदतु हरिको कह समजी सुनो ध्यान धर आज। द्वीपायन ऋषि के निमित्त से पूरी जायगा भाज हो ॥ क० ६ ॥ इरजी बाले धन्य जाली आदि को लिनो सयम भार। मुझ से वृत्ति को सी नहीं जाती राच रहा ससार हो ॥ क० ७ ॥ सयम लेन की मन में चाहा यह होने की नाई ॥ वासुदेव निधान करी सब हाल हैं जग माह हा ॥ क० ८ ॥ फिर पूछा हरि नेमनाथ न, इतना पुन फरमाओ। महो की लिसा पूर्ण करी ने, कुण जन्मू बतलायो हो ॥ क० ९ ॥ पी शराब यादव के लड़के इसी विपीन के माई। कालेंगे द्वीपायन ऋषि को, तब वह कोप भराई हो ॥ क० १० ॥ करी निदान भर अग्नि

कुमार में, वह उपजेगा जाई। वही ऋषि द्वारिका ताई, देगा हरि जलाई हो ॥ क० ११ ॥ तब तो तुम यहां से निकली,
हरि हलधर दोई भाई। पांडव मुथरा जाने के हित, जाओगे पथमाई हो ॥ क० १२ ॥ कौशाम्बी के निकट विपिन में, वट तरु
की छाया। पीताम्बर–तनु ढक बैठोगे, वहां पर तुम हरिराया हो ॥ क० १३ ॥ तुमरे काज बलदाऊजी वहां, जावेगे जल काज।
इत पहुचे सरवर के तट पर, उत होगा अकाज हो ॥ क० १४ ॥ उसी अवसर पर जरा कुमर फिर, तीक्ष्ण छोडेंगे बान। दहिने पांव में
लग पहुंचोगे, शिलाधाम निज स्थान हो ॥ क० १५ ॥ इतना सुन के हृदय बीच में,सोच हरि के आया। नेमनाथ ने फिर जब उनको,
ऐसा साफ जिताया हो ॥ क० १६ ॥ यहां से इसी भरत खड मे,उत्सर्पणी के माई। पुण्डरीक देश के अन्तर्गत में, शतद्वारा में आई हो
क० १७ ॥ अमम नामके द्वादश मे थे,होंगे तीर्थङ्कर खास। कर उधार जगत का फिर तुम,पहुंचोगे शिववास हो ॥क०१८॥ इतना सुन
के सिरी कृष्ण के,हर्ष का रहा न पार। सींहनाद को करा जोरसे,मल्लवत भुज फटकार॥ क० १९॥ नमन करी हरि गजारूढ़ हो, निज
महलों मे आया। बैठ सिंहासन कौटुम्बिक पर,आपने हुक्म लगाया हो। क०२०। सारे शहर मे ड्योंडी पिटकर,ऐसा दो जित–
लाई। द्वीपायन योग से यह द्वारिका, जावेगा विनसाई हो ॥ क० २१ ॥ राजा युवराजा कई तलवर, फिर कौटुम्बिक सारा।
इभ्भ सेठ देवी सुकुमारी, और कई कुंआरा हो ॥ क० २२ ॥ जो नेम समीपे सयम लेगे, महोत्सव करे मुरार। अवशेष कुटुम्ब
का यथोचित ही, कृष्ण करेगा सार हो ॥ क० २३ ॥ तीन वार ड्योडी पिटवाई, सारे शहर मझार। पीछा आय हरि के
आगे, दिनी अर्ज गुजार हो ॥ क० २४ ॥ प्रभु मुख द्वारा निज विनाश का, यादव सुन कंपाया। जरा कुमर लगे बुरा
सभी को, नजर सामने आया हो ॥ क० २५ ॥ जरा कुमर को भी दु:ख हुआ, यह नहीं होय अकाज। ऐसा सोच द्वारिका
छोड़ी, गया विपीन मे भाज हो ॥ क० २६ ॥ द्वीपायन सोचे मुझ अधम से, होगा द्वारिका नाश। इस दुष्कृत्य से बचने
खातिर, वन मे किना वास हो ॥ क० २७ ॥ अनर्थ उत्पादक जान हरिने, सब मद्य को मंगवाया। गिरनारी कादम्बरी

गुफा क कुरड बीच हलवाया हा ॥ क० २८ ॥ उसी समय बलराम से बोला सिद्धार्थ सारथी भाय। बुरी व्यवस्था यादव कुल की, मुझ से सही न जाय हो ॥ क० २९ ॥ आज्ञा दीजे संयम ले लूं, श्रीभगवान के पास। मेरा यह साहस नहीं होता, यहां पर करूं निवास हो ॥ क० ३० ॥ बलराम कहे आज्ञा देवे, मेरा विघ्न नहीं चाले। पर संयम ग्रहण करने में भी, विघ्न कभी नहीं डाले हो ॥ क० ३१ ॥ हे भ्राता मेरी जब तुमको याद ध्यान में आना। देव बनो जब मुझ आनके समय पड़े जिताना हो ॥ क० ३२ ॥ सिद्धार्थ ने बलराम को वचन दिया उस बार। नमी प्रभु के निकट आयके, लिना संयम धार हो ॥ क ३३ ॥ छः मास तक सिद्धार्थ मुनि ने कठिन तपस्या धारी। अनशन करके आप हुआ है देवलोक अधिकारी हो ॥ क ३४ ॥ एक दिन यादव क्रीड़ा करते, गये कुरड क पास। प्यास लगने पर पानी जानके पी लीना मद्य खास हो ॥ क० ३५ ॥ द्वैपायन मुनि का आश्रम है, उसी गुफा के पास। होनहार वश ये कुमार सब आये उसी क पास हो ॥क०३६॥ इस याग यादव कुल विनशा इसको करो निकंद। पास रह मा पढे बांसुरी, सबको हुई पसन्द हो ॥ क० ३७ ॥ द्वैपायन को लात घुसा अरु पत्थर की दे मार। मृत्यु तुल्य बना ऋषि को, घर पर गये कुमार हो ॥ क० ३८ ॥ गुप्तचरों से सुन हरि हल धर ऋषि के आश्रम आया। शान्त उन्हें मनाने खातिर, मिष्ट वचन सुनाया हो ॥ क० ३९ ॥ मदिरा के वश उन पुत्रों ने, काना यह तोफान। क्षमा करो और माफी बक्षो आप बड़े गुणवान हो ॥ क० ४० ॥ इस प्रकार द्वैपायन ऋषि को कृष्ण बहुत सम-झाया। किन्तु किसी तरह प्रसन्न भी हो नहीं वह पाया हा ॥ क० ४१ ॥ ऋषि बोले मैं तुम हित काजे किया वन में वास। पर निष्कारण तुम पुत्रों न दीनी भारी त्रास हो ॥ क० ४२ ॥ अब तो मैंने की प्रतिज्ञा यादवयुत सब शहेर। तुम दोनों भ्राता का छोड़ी करूं जला के ढेर हो ॥ क ४३ ॥ द्वैपायन की बात सुनी न, बलदाऊ कहे भाई। यह योगी नहीं समझेगा है पूरा अन्याई हो ॥ क० ४४ ॥ होनी हो करके ही रहेगी वह टलने की नाहीं। मिथ्या कभी नहीं हो सकता है नेम ने जो फरमाई

लोग गये कंपाई हो ॥ क० हो ॥ क० ४५ ॥ जब हरि हलधर लौट के आये, द्वारापुरी के माई । द्वैपायन की सुनी वात सव,
४६ ॥ दूजे दिन गोविन्द नगर मे, घोषणा यों करवाई । विपत्ति टालन को धर्म ध्यान थे, विशेष करो चित लाई ॥ क० ४७ ॥
उसी समय रेवताचल ऊपर, भगवत किया निवास । मधुसूदन आदि वहु राजा, वन्दे आय हुलास हो ॥ क० ४८ ॥
कृष्ण आदि उपदेश सुनी ने, वन्दन कर घर आया । पद्मावती को समवशरण मे, वैराग जोरका छाया हो ॥ क० ४६ ॥ हे
भगवन् ! सुन बानी आपकी, जग सप्रा लिया जान पति देव की आज्ञा ले कर, संयम लूंगा आन हो ॥ क० ५० ॥ प्रभु कहे सुख
हो सो कीजे, चाल हरि पां आई । रथ से उतर कर हाथ जोड के, सयम वात सुनाई हो ॥क०५१ ॥ हुक्म होय तो नेम समीपां ।
लेऊ सयम भार । गोविन्द कहे सुख होजो कीजे, मेरा नहीं इन्कार हो ॥ क० ५२ ॥ एकसो आठ सुवर्ण कलश से, किना है
अभिषेक । आभूषण से करी विभूषित, कमी न राखी नेक हो ॥ क० ५३ ॥ सहस्र वाहिनी सेविका सुन्दर, वैठाई उसमाई ।
जय जय नंदा भद्दा कहते वाजे रहे वजाई हो ॥ क० ५४ ॥ सरे बाजार खास होकर के, सहस्रावन मे लाया । उतर पालखी से
वैरागिन, प्रभु को शिष नमाया हो ॥ क० ५५ ॥ हे प्रभो ! यह पद्मावती है, इष्ट कत मुझे भारी । शिष्यनी रूप भिक्षा देता हूं,
ग्रहण करो इस वारी हो ॥ क० ५६ ॥ प्रभु कहे सुख हो जो कीजे, तव पद्मावती नार । जाय ईशान कोण भूषण को,
उतार फेंके उस वार हो । क० ५७ ॥ पच मुष्टि कर लोच हाथ से, भेष साध्वी धार । मुह पर वांध मोहपत्ति आके, वोली
इस प्रकार हो ॥क० ५८॥ हे जिन ! लगी ससार वीच मे, जन्म मरण की लाय । इससे वचने आई आप पां, कीजे मेरी सहाय
हो ॥क० ५६॥ दीक्षा दे यक्षिणी सती की, चेली इसे वनाई । पाले शुद्ध आचार विनययुत्, चले आज्ञा के माई हो ॥ क० ६० ॥
ग्यारे अंग का ज्ञान भणी ने, करी तपस्या भारी । वीस वर्ष का सयम पाली, मास संथारो धारी हो ॥ क० ६१ ॥ केवल ज्ञान पा
अन्त समय मे, गई मोक्ष के माय । गुरु प्रसादे चौथमल कहे, वन्दु शिष नमाय हो ॥ क० ६२ ॥ यो गोरी गधारी लक्ष्मणा,

सुसमा सम्भूवती जान । सतभामा रुक्मणी पद्मावती, सब पाईं शिवान हो ॥क० ६३॥ यों शाम्बकुवर की मूल श्री अरु मूल- श्रिया हो नार । पद्मावती ज्यों संयम लेके पहुंची मोक्ष मझार हो ॥क० ६४॥ नेम जिनन्द ने द्वारापुरी में कीना है अब विहार । दे उपदेश भव्य जीवों को, करते आप उद्धार हो ॥क० ६५॥ कुछ दिन बाद द्वैपायन ने अब देखी मृत्यु पाइ । अग्नि कुमार में हुआ असुर यह, अकाम तप से आई हो ॥क० ६६॥ यथा समय वैर स्मरण कर यह द्वारिका आया । तप में मग्न देख नागरिक को, कुछ भी कर नहीं पाया हो ॥क० ६७॥ चतुर्थ षष्ठम अष्टम आदि तपस्या के परभाव । घूमे द्वारिका उपर अहो निशि कर सके न विभाव हो ॥क० ६८॥ द्वादश वर्ष तो बीत गये हैं, लोग करे विचार । धर्माचरण से द्वैपायन का जोर न चला लगार हो ॥क० ६९॥ अब हमारा क्या कर सकता, ऐसा मन में धारा । मद्य मांस के भोगी बनके, करते अत्याचारा हो ॥ क० ७० ॥ द्वैपायन का जोर चला अब करने लगा उत्पात । उल्कापात भूकम्प नभ से अग्नि का पर्यात हो ॥ क० ७१ ॥ चन्द्र सूर्य का ग्रहण अचानक, हुआ नभ के माइ । भूत प्रभुत् द्वैपायन भी, सब को दिया दिखाइ हो ॥ क० ७२ ॥ कृष्ण राम के हल मूसल और, रत्न चक्रादि सारे । उसी समय में गायब हो गये बचा न एक ही खारे हो ॥क० ७३॥ इन सब उपद्रवों के कारण आतङ्क नगर में छाया । विनाशकाल नजदीक जान के लोग सभी घबराया हो ॥क० ७४॥ द्वैपायन ने संवर्त वायु उपजाई विकराई । तृण काष्ठादिक चारों ओर से हुए इकट्ठे आई हो ॥ क ७५ ॥ मौत भय से लोग भाग के नगरी बाहिर जावे । वायु योग से पीछे खिंचके वे नगरी में आवे हो ॥ क० ७६ ॥ अमर्षी अत्याचारी असुर को रंच दया नहीं आइ । चहुं ओर द्वारिका माइ उसने आग लगाई हो ॥ क० ७७ ॥

भोगे इक सागे कर्म सबुरायी वेदन देख लो ॥ टेक ॥

मेवा लक्षण आया यथाविध देखत काज सिधावे । कर्म बन्ध दो एक सरीखा स्वामी यों फरमावे हो ॥ भा० ७८ ॥ जभी

दीने सबको जार हो ॥ भो० ७६ ॥ कोट किला अगन से सभी द्वारिका, हुआ बहुत हाकार। निकल भगे उनको फिर लाकर, दीने सबको जार हो ॥ भो० ८० ॥ बाल गाय ब्राह्मण पोली घर सारा, ग्वाल महल बाजार। राज भवन आदि जलने मे, तनिक न लागी वार हो ॥ भो० ८१ ॥ कौम कौम की अवला सारी, अरु अवला, मोटी हिंसा चार। इसी प्रकार क्रोध वश उसने, करी बहुत उसवार हो ॥ भो० ८२ ॥ बच्चों को माताले गोदी, बछड़े कई हजार। उभी करें पुकार। कौन सुने उस वेला देखो, रोवे आसू ढार हो ॥ भो० ८३ ॥ बाथे भरे परस्पर सब ही, सही न जावे झाल। निकल जलती बाला विलख विलख के, दीन वचन उचार हो ॥ भो० ८४ ॥ नार मरे निज पति के खातिर, प्रियतम नारी लार। माता मरे नहीं सकते थे कोई, रोवे बाल गोपाल हो ॥ भो० ८५ ॥ सेवक स्वामी से कहता है, रहता मैं नित पास। ताप नहीं लगने वालक के कारण, अपना सम्बन्ध निहार हो ॥ भो० ८६ ॥ कथ लखे ऊभी कामनिया सरे, पत्नि प्राणाधार। जैते थे सब जले उसी दम, लगी देता था, कहा कराऊ वास हो ॥ भो० ८७ ॥ रानी रोहिनी और देवकी, श्रीवसुदेव तिवार। हरि हरलधरजी लगे निकालन, रथके मध्य न किंचित वार हो ॥ भो० ८८ ॥ दरवाजा जब पडा टूटके, हरि राम रहे बहार। बचे नहीं वसुदेवजी, हुए देव अवतार हो ॥ भो० ८९ ॥ बेसार हो ॥ भो० ९० ॥ और कई यादव की अबला, गन्तव्य स्थान सिधाई हो ॥ भो० ९० ॥ बल-कर अनशन हरिजी की रानियां, देवगती को पाई। और कई यादव की अबला, गन्तव्य स्थान सिधाई हो ॥ भो० ९१ ॥ नेमनाथने मुझे राम का एक पुत्र था, कुब्ज वारक कुमार। महल अटारी चढ़के जोर से, करन लगा पुकार हो ॥ भो० ९२ ॥ किस कारण या आग धधकती, बताया, चरम शरीरी जीव। इसी जन्म से तप संयम कर, पावेगा तू शिव हो ॥ भो० ९३ ॥ उसी समय नेमीनाथ विराजे, पल्लव कैसे आज जलावे। जृम्भक जब ऊठा उसीको, प्रभु के पास ले आवे हो ॥ भो० ९४ ॥ हरि हलधर झट निकल शहर से, ऊभे देशके माई। कुब्जवारक ने दीक्षा लेली, शरण जिनन्द के आई हो ॥ भो० ९५ ॥ हलधर लगे हरि से कहने, सुनो हमारी बाहिर जाई। निरख द्वारिका धधक धधकती, दुःख हिये न समाई हो ॥

बात। शहर बसावें अपन दूसरा दुखी न होओ भ्रात हो ॥ मो० ९६ ॥ सगए सगे की पीड़ हरत है सगा सगा आधार। हरि पांडव ने याद करत हैं आर्जव में उपकार हो ॥ मो० ९७ ॥ चले आप पांडव मथुरा को, केवल मान्धव होय। पानी लाने क खातिर भी हो साथ न दीजा कोय हो मो० ९८ ॥ साथ नहीं हाथी रथ पाला पैदल चले विचार। शुभ दिन पलट ऐसा होवा हृदय करो विचार हो ॥ मो० ९९ ॥ गर्व करा तुम मत लक्ष्मी का भूल न कोई वार। दुःख न जो अपने प्रिय धम की दूजा कौन सुमार हो ॥ मो० १०० ॥ आती लक्ष्मी सब अभिलाष जाती जाय वियोग। द्वारापति का सब ही सज्जन, छना न्याय सुयोग हो ॥ मो० १००१ ॥ निजबल परबल तब तक जानो, जब तक दिन है अपना। दिवस पलटन पर सब पलटे, मानो होय सपना हो ॥ मो० १ २ ॥ हरि हलधर का सब बल भारी सुर बल हुआ अपार। दिन पलटे पर कोई नहीं आया नाशन व्याधि विकार हो ॥ मो० १०३ ॥ छः मास तक जली द्वारिका सुख्य सक नहीं कोय। सागर जल भी निकट भरा था, काम न आया सोय हो ॥ मो० १०४ ॥

कर्म गति बड़ी जबर है, कहो कौन मिटाय ॥ टेक ॥

ऋषि मुनि अवतार असुर भी, तीर्थंकर बल धारी। राजा रंक धनी निर्धन को, क्षण में करे सुधारी हो ॥ क० १०५ ॥ बांधे कर्म कभी ना छूटें ज्ञानी का फरमान। हरि हलधर पांडव मथुरा को तुरत किया पयान हो ॥ क० १ ६ ॥ हस्तिकल्प नामक पुर आया पथ में तरु अभिराम। तभी भ्रात दोनों उपवन के तरु तल किया विराम हो ॥ क० १०७ ॥ स्वजन वन लोकों का दुख तो, हरि के दिल में दुःख। तब हरि को लगी आकरी विकट प्यास के भूख हो ॥ क० १०८ ॥ महा अनिष्ट भूप अमागिन, राजा जानी नाम। हो आकरी मत तू बांध गिने न ठाम कुठाम हो ॥ क० १ ९ ॥ हलधर से हरिजी यों बोले, यो वैरी को वास। धृतराष्ट्र का सुत अच्छुन्द है मत करजो विश्वास हो ॥ क० ११० ॥ जो मुझ कर की रत्न मुद्रिका देय सुधारो काम।

लाओ जीमन हेतु सूखडी, बाकी लाजो दाम हो ॥ क० १११ ॥ हलधर चाल पुरी में आया, हलवाई के पास । नामांकित की देख मुद्रिका, बांच करी तपास हो ॥ क० ११२ ॥ राजा को वह बात सुनाके, कीना जाहिर नाम । ले सैना राजा चढ़ आयो, नाद करा बलराम हो ॥ क० ११३ ॥ नाद सुनी हरि उठके धायो, पुर के जडे दुवार । मार लातकी तोड हटाया, आया आप बाजार हो ॥ क० ११४ ॥ घेरा हुआ वहा देखा भ्रात को, जोश हरि के आया । गज पर चढ़ ग्रही शिखा भूप की, भूपै उमे गिराया हो ॥ क० ११५ ॥ टूटी टाग होने पर भी वह, घट को डाले फोड । राजा नमी पडा चरनन मे, याचे क्षमा कर जोड हो ॥ क० ११६ ॥ पुनरपि आये आप वाग में, हलधर और मुरार । आई भेट सूखडी जीमी, वहा से, गये सिधार हो ॥ क० ११७ ॥ पहुचे आप कौशम्बी वन में, हरि को प्यास जो व्यापी । बैठे बिना बिछौने वटतल, पानी रहे अलापी हो ॥ क० ११८ ॥ बलदाऊ कहे प्यारा भ्रात मैं, पानी ले यहा आऊ । रहना आय यहीं मोये यों, कहके अब सिधाऊ हो ॥ क० ११९ ॥ जरा कुमरजी कृष्ण रक्षा हित, रहे इसी वन माई । मृग शिकार की खोज करन को, डोलत फिर हे ताई हो ॥ क० १२० ॥ बलराम गये जल लेने को, उसी समय के मांय । पूर्व संचित कर्मों का प्रेरा, वह पहुंचा वहा आय हो ॥ क० १२१ ॥ इत उत फिरे ढूढता वन मे, अपने लिये शिकार । हरि के पग मे पद्म देख के, मृग की आस विचार हो ॥ क० १२२ ॥ मारा तीर जरा व्याध ने, दिल से दया विसार । लगा कृष्ण के दाये पैर मे हुआ आर का पार हो ॥ क० १२३ । किसने मारा तीर यह तीक्षण, मेरे पांव के माई । हे भाई बलदेव ! कहा तू, मारी चीख घबराई हो ॥ क० १२४ ॥ कहां मात कहां तात, द्वारिका, कहा यादव-परिवार । बलदाऊ भी निकट नहीं है, करे कौन अब सार हो ॥ क० १२५ ॥ यह वनखण्ड है अति भयकर, न अपना अरु पराया । देख व्यवस्था मधूसूदन की पक्षी रुदन मचाया हो ॥ क० १२६ ॥ शब्द सुनी ने बट तले आके, बोले जरा कुमार । वसुदेव का मैं हू नन्दन, रहू विपिन मझार हो

१६१ ॥ रूप नहीं है फन्द जगत में यह बालक दुःख पाया । ऐसा सोच के ऋषिराज तो वन में पाछा सिधाया हो ॥ क० १६२ ॥ शशि से प्रकट होवे शीतलता, रवि से होत उद्योत । नौका याग से तिरे नीर को, न हो अमृत से फोत हो ॥क०१६३॥ मेरे योग से बालक बचता यह तो बात है खास । आज उल्टा होगया देख के, प्रत्यक्ष उसकी त्रास हो ॥ क० १६४ ॥ अब बस्ती में कभी न आना ली प्रतिज्ञा धार । करें कठिन व्रत विपिन के माईं कर्म का कर रहे छार हो ॥ क० १६५ ॥ करे पारना वसी विपिन में जो मिले शुद्ध आहार । शीत उष्ण लाभ अलाभ में सुख दुःख एक शुमार हो ॥ क० १६६ ॥ रूप देख के फिसल पड़ नहीं उस विपिन के माईं । इस कारण बलदाऊ एकान्त ध्यान धर है माइ हो ॥ क० १६७ ॥ व्याघ्र सिंह आदि ने अपना स्वभाव को पलटाया । वैर विरोध तजी परस्पर, रक्खे प्रीति भराया हो ॥ क० १६८ ॥ जाति-स्मरण होने से एक मृग करे मुनि की सेवा । जहां कहीं ो योग आहार का, यह आके मन्न सेवा हो ॥ क० १६९ ॥ काटे विशाल तरु की शाखा, एक बढ़ई माईं । उसकी मार माग का लक्ष्कर तुरत वहां पर आई हो ॥ क० १७० ॥ भोजन काम काम बन्द कीना पता मृग को पाया । पारण काल बलदाऊ मुनि को शीघ्र वहां पर लाया हो ॥ क० १७१ ॥ बढ़ई रथकार भाव से, वहरे श्री ऋषिराया । भावे भावना हरिण वहां पर समय मृत्यु का आया हो ॥ क० १७२ ॥

शुद्ध आत्मा भावना इच्छित सुख पावे उससे आत्मा ॥ टेर ॥

वह की शाखा टूटी क्या से तीनों मृत्यु पाया । स्वर्ग पांचवें हुआ देव वर , भोगे सुख सवाया हो ॥ शु० १७३ ॥ बिना भाव के व्यापारी का, पड़ा रहे सब माल । भाव ही भाव के हा आव व पाखिक मालो माल हो ॥ शु० १७४ ॥ दान शीयल और तप तीनों में केवल भाव प्रधान । भावों से भवो दधि तिर जावे भावो पद निर्वान हो ॥ शु० १७५ ॥ लूण बिना से भोजन फीका पुत्र बिना परिवार । दाम बिना कमला फीकी है सौंच बिना नर नार हो ॥ शु० १७६ ॥ जैसे पति के बिना

कामनी, शील बिना सिगार । दया बिना धर्म है वृथा, भूप बिना दरबार हो ॥ शु० १७७ ॥ गुरु बिना ज्ञान नहीं होवे, ज्ञान
बिना नहीं ध्यान । भाव बिना सब करनी थोथी भाव सब मे मुख्य मान हो ॥ शु० १७८ ॥ आदिनाथ प्रभु की माता, श्री मरु
देवी जान । तिरी भाव से भव सागर को, पामी शिव सुख स्थान हो ॥ शु० १७६ ॥ श्री भरतेसर केवल भाव से, पाये केवल
ज्ञान । यों आठो ही पाटो धर ने, भावे ली निर्वान हो ॥ शु० १८० ॥

जन्म सुधारा, पाण्डु भूपति, चौथा आश्रम मे ॥ टेक ॥

धर्म पुत्र अब राज करे है, पाण्डु मथुरा माई । सारी प्रजा रहे मोद मे, स्वर्गपुरी के नाई हो ॥ ज० १८१ ॥ हर्षानन्द मे बहु वर्ष
बीते, वरते मगलाचार । सिद्धार्थ आ देव कहे यो, पाण्डु से उस वार हो ॥ ज० १८२ ॥ द्वारापुरी का दहन होयगा, भाषी नेम
जिनराय । पाण्व सुन के दुःखित हुवे बहु, वचन असत्य नहीं थाय हो ॥ ज० १८३ ॥ पाण्डु ने जग देख लिया है, जग मे नहीं
कोई सार । नेमनाथ यदि यहां पधारे, व्रतो को ले धार हो ॥ ज० १८४ ॥ अभिप्राय पाण्डु का जाना, भगवत न उस वार ।
गांव नगर पुर पाटन विचर के, मथुरा गये पधार हो ॥ ज० १८५ ॥ रचा समवशरण देवो ने वहां, पाण्डु आदि सब आया ।
नेमनाथ ने करी वन्दना, धर्म सुने हुलसाया हो ॥ ज० १८६ ॥ भगवत देवे धर्म देशना—, सब जीवां हितकार । आश्रव छोड़
संवर को धारो, जो होना भवपार हो ॥ ज० १८७ ॥ निज आतम का हित विचारी, मोह मे मती लोभावो । धर्म केवली से
प्रतिबूझी, नर भव सफल बनावो हो ॥ ज० १८८ ॥ यह ससार बन्दी खाना सम, कुटुम्ब है चौकीदार । गुरु चेतावे जो चेते
तो, छुटे दु'ख अपार हो ॥ ज० १८६ ॥ चचल धन आयु यौवन बल रूप तनु परिवार । जाते देर लगे नहीं समझो, सध्या
राग विचार हो ॥ ज० १६० ॥ चार महाव्रत हैं साधु के, श्रावक के व्रत बार । सर्व व्रती है मुनि धर्म यो, देशव्रत आगार
हो ॥ ज० १६१ ॥ इस प्रकार वाणी जिनवर की, मानी अमृत समान । हाथ जोड पाण्डु नृप बोले, सुनो गुरु गुणवान हो

॥ क० १२७ ॥ श्री कृष्ण की रक्षा के हित धर्म हुआ यहाँ भार। पर इस वन में नर नहीं देखा मैंने कोई यार हो ॥ क० १२८ ॥ मेरे पाप कर्मों के उदय से आज यहाँ तुम आया। मुझ को हत्या देके तुमने हिंसक दुष्ट बनाया हो क०१२६॥ कृष्ण कहे या बात सुन बान्धव! जिस कारण रहे वन में। वही मैं हूँ भ्रात दरअस्ल फर्क न पड़ा वचनमें ॥क०१३०॥ सुनी वचन जब जराकुमर ने भू पर मूर्छा खाया। थाड़ी देर में होश आन पर भारी रुदन मचाया हो ॥ क० १३१ ॥ आंसू टालते पूछा जरा ने हरि के चरणों पकड़। हे भ्राता! इस वन में एकले क्यों आय जी पड़के हो ॥ क० १३२ ॥ कहाँ सवारी? कहाँ बलदाऊ? कहाँ सभी परिवार। नेम वचन प्रमाणित हुआ क्या कहो सभी विस्तार हो ॥ क० १३३ ॥ जराकुमर को भी कृष्ण ने अपने गले लगाई। यादव विनाश का सारा किस्सा दिया तुरत सुनाई हो ॥ क० १३४ ॥ हे पृथ्वी! दे मार्ग मुझको तेरे बीच समाऊँ। भ्रात-हत्या करके जग माहीं, मैं जीना नहीं चाऊँ हो ॥ क० १३५ ॥ नेम प्रभु का वचन सुनी ने जो सत्य देता मान। यह दिन देखन को नाहीं मिलता मरते न मुझ से कान हो ॥ क० १३६ ॥ हरि कहे एक तू ही बचा है यादव-कुल के माह। शीघ्र चला जा रक्षा कर निज, यहाँ मत ठहरो भाइ हो ॥क० १३७॥ ले यह रत्न कौस्तुभ्म मणि की, दीजे उन्हें निशानी। कुन्ती भुआ से कहना यों हुआ, पीहर पूरा खो आनी हो ॥ क० १३८ ॥ चला जा यहां से भ्राता! तू जो बलदाऊ आसी। हरगिज नहीं जिन्दा छोड़ेगा नाहक प्राण गमासी हो ॥ क० १३६ ॥ शुभ्चक! तेरा नहीं दोष है यह कर्मों का बदला। हरगिज बिन भोगे नहीं छूटता क्या निबला क्या सबला हो ॥क० १४०॥ इस कष्ट में कैसे छोडूं 'जरा' बाला उस बार। आप कहन से मैं जाता हूँ हृदय दुःख अपार हो ॥ क० १४१ ॥ पीछे देखता चला जाय वह, पाण्डु मथुरा की ओर। नैनों से बह रही धार यह बरस गये सब तोर हो ॥ क० १४२ ॥ होने लगा जब कष्ट हरि को पलटे तुरत विचार। जो द्वैपायन होय सामन छिन में खाक मार हो ॥ क० १४३ ॥ इसी ध्यान में तुरत हरि ने रोक दिया है श्वास। उस समय न यहां एक ही और न कोई पास

हो ॥ क० १४४ ॥ पलाश-पत्र के दोने मांहीं, इत जल लेकर आये। बलदाउजी बोले भ्रात से, लो जल पात्र कर माये हो ॥ क०
१४५ ॥ पास आय खड़े हो देखे, हिलते नहीं लगार। ऐसी नीन्द नहीं देखी तेरी, जो आई इस वार हो ॥ क० १४६ ॥ हे बन्धु !
हे भ्राता ! शब्दों से, खूब उन्हे बोलावे। उत्तर नहीं मिलने पर फिर तो, वस्त्र खीच जगावे हो ॥ क० १४७ ॥ उठो प्रिय बन्धु !
पीओ पानी, मती लगाओ देर। मिला नहीं नजदीक इसी से, इतनी हुई अबेर हो ॥ क० १४८ ॥ प्राण से प्यारा तूं मुझ बन्धव !
रहा नही मैं दूर। क्षण भर भी नहीं रक्खा अबोला, आज क्यो बदला नूर हो ॥ क० १४९ ॥ मात तात परलोक पधारे, रहे
वन्धव कुल दोई। तेरे सिवाय अब विपिन के माई, सगा नहीं है कोई हो ॥ क० १५० ॥ एक बेर मुख से अब बोलो, समय
होगया काफी। जल लाने में लगा देर तो, उसकी चाहू माफी हो ॥ क० १५१ ॥ ऐसी तुमने कभी न कीनी, आज ही बना
अनूठा। दिल पलटा है इसी काज तो, आज आप भी रूठा हो ॥ क० १५२ ॥ बलदाऊजी रोवे जोर से नयना आसू गिरावे।
कोई आय समझाओ इसको, पुन: पुनः इत उत जाये हो ॥ १५३ ॥ स्कन्ध उठा फिरे बन बन मे, वीत गये षट् मास। हलधर
मोहवश समझे नहीं यों, निकल गया है श्वास हो ॥ क० १५४ ॥ करी रेत घाणी सुर ने, इनका हटाने राग। तब बलभद्र तुरत
समझ के, दिया वहीं पर दाग हो ॥ क० १५५ ॥ उसी समय ज्ञानी मुनि आये, हुई वहां पै भेट। वाणी सुन के संयम लीना,
मोह ममता दी मट हो ॥ क० १५६ ॥ मास क्षमण की करे तपस्या, बलदाऊ अणगार। तुंगिया गिरि शिखर पधारे, शम
दम गुण के धार हो ॥ क० १५७ ॥ मास खमण का आया पारना, तुगिया पुर को जावे। गज गति की चाल से चलता,
उपनिवेश में आवे हो ॥ क० १५८ ॥ कूआ कांठे आई कुमरिया, पाच सात की जोड़। पानी निकाले प्रेम धरीने, खेची होड़ा
होड हो ॥ क० १५९ ॥ बलदाऊ का रूप देखने, तुरत नार लुभाई। घट के बदले सुत के गल में, फंदा दिया लगाई हो
॥ क० १६० ॥ ऋषि देख के कहे जोर से, यह क्या करती बाई। तब तो मात ने निज सुत को, लीना तुरत बचाई हो ॥ क०

१६१ ॥ रूप नहीं है अन्य जगत में यह बालक सुन्दर पाया । ऐसा सोच के ऋषिराज तो वन में पीछा सिधाया हो ॥ क० १६२ ॥ शशि से प्रकट होय शीतलता, रवि से होत उद्योत । नौका आग से तिरे नीर को, न हो अमृत से मौत हो ॥क०१६३॥ नर पाग म पालक अपना यह वो भाव है पास । आज अस्टा होगया देख के, प्रत्यक्ष उसकी त्रास हो ॥ क० १६४ ॥ अब बस्ती में कभी न आना सी प्रतिज्ञा धार । करें कठिन व्रत विपिन के माहीं कर्म का कर रहे क्षार हो ॥ क० १६५ ॥ करे पारना उसी विपिन म आ मिले शुद्ध आहार । शीत उष्ण बाम मसान म सुन्दर सुख एक शुमार हो ॥ क० १६६ ॥ रूप देख के फिसल पड़ नहीं उस विपिन के माहीं । इस कारण बलदाऊ एकान्त ध्यान धरे हैं भाई हो ॥ क० १६७ ॥ व्याघ्र सिंह आदि न अपना स्वभाव को पलटाया । वैर विरोध तजी परस्पर, इन्हें प्रीति भराया हो ॥ क० १६८ ॥ जाति–स्मरण होने से एक मृग कर मुनि की सेवा । जहाँ वहाँ से योग आहार का यह लाके कुन्द खेवा हो ॥ क० १६९ ॥ काटे विशाल तरु की शाखा एक बढ़ई माहीं । उसकी नार माल का लेकर तुरत वहाँ पर आई हो ॥ क० १७० ॥ भोजन काज काम बन्द कीना वहाँ मृग को पाया । पारण काज बलदाऊ मुनि को, शीघ्र वहाँ पर लाया हो ॥ क० १७१ ॥ बहरावे उपकार भाव से, बढ़ई की ऋषिराया । भाव भावना हरिण वहाँ पर समय मृत्यु का आया हा ॥ क० १७२ ॥

शुद्ध भावो भावना इच्छित सुख पावे प्रसन्न आत्मा ॥ टेक ॥

तरु की शाखा टूटी तब से तीनों मृत्यु पाया । स्वर्ग पांचवें हुआ इक भव ने, भोगे सुख सवाया हो ॥ शु० १७३ ॥ बिना भाव के व्यापारी का, पड़ा रहे यह माल । भाव ही भाव के हो आवे न यथिक भावो माल हो ॥ शु० १७४ ॥ दान शीयल और तप तीनों में, केवल भाव प्रधान । भावों से भवो दधि तिर आवे, भावों पद निर्वाण हो ॥ शु० १७५ ॥ लवण बिना से भोजन फीका, पुत्र बिना परिवार । दान बिना लक्ष्मी फीकी है साँच बिना नर नार हो ॥ शु० १७६ ॥ जैसे पति के बिना

कामनी, शील विना सिगार। दया विना धर्म है वृथा, भूप विना दरबारे हो ॥ शु० १७७ ॥ गुरु विना ज्ञान नहीं होवे, ज्ञान
विना नहीं ध्यान। भाव विना सब करनी थोथी भाव सब मे मुख्य मान हो ॥ शु० १७८ ॥ आदिनाथ प्रभु की माता, श्री मरु
देवी जान। तिरी भाव से भव सागर को, पामी शिव सुख स्थान हो ॥ शु० १७९ ॥ श्री भरतेसर केवल भाव से, पाये केवल
ज्ञान। यों आठो ही पाटो धर ने, भावे ली निर्वान हो ॥ शु० १८० ॥

जन्म सुधारा, पाण्डु भूपति, चौथा आश्रम मे ॥ टेक ॥

धर्म पुत्र अब राज करे है, पाण्डु मथुरा माई। सारी प्रजा रहे मोद मे, स्वर्गपुरी के नाई हो ॥ ज० १८१ ॥ हर्षानन्द मे बहु वर्ष
वीते, वरते मंगलाचार। सिद्धार्थ आ देव कहे यो, पाण्डु से उस वार हो ॥ ज० १८२ ॥ द्वारापुरी का दहन होयगा, भाषी नेम
जिनराय। पाण्डव सुन के दु'खित हुवे बहु, वचन असत्य नहीं थाय हो ॥ ज० १८३ ॥ पाण्डु ने जग देख लिया है, जग मे नहीं
कोई सार। नेमनाथ यदि यहा पधारे, व्रतो को ले धार हो ॥ ज० १८४ ॥ अभिप्राय पाण्डु का जाना, भगवत न उस वार।
गांव नगर पुर पाटन विचर के, मथुरा गये पधार हो ॥ ज० १८५ ॥ रचा समवशरण देवो ने वहां, पाण्डु आदि सब आया।
नेमनाथ ने करी वन्दना, धर्म सुने हुलसाया हो ॥ ज० १८६ ॥ भगवत देवे धर्म देशना—, सब जीवां हितकार। आश्रव छोड
सवर को धारो, जो होना भवपार हो ॥ ज० १८७ ॥ निज आतम का हित विचारी, मोह मे मती लोभावो। धर्म केवली से
प्रतिबूझो, नर भव सफल बनावो हो ॥ ज० १८८ ॥ यह ससार बन्दी खाना सम, कुटुम्ब है चौकीदार। गुरु चेतावे जो चेते
तो, छुटे दु'ख अपार हो ॥ ज० १८९ ॥ चचल धन आयु यौवन बल, रूप तनु परिवार। जाते देर लगे नहीं समझो, संध्या
राग विचार हो ॥ ज० १९० ॥ चार महाव्रत हैं साधु के, श्रावक के व्रत बार। सर्व व्रती है मुनि धर्म यो, देशव्रत आगार
हो ॥ ज० १९१ ॥ इस प्रकार वाणी जिनवर की, मानी अमृत समान। हाथ जोड पाण्डु नृप बोले, सुनो गुरु गुणवान हो

॥ ज० १९२ ॥ जन्म मरण का दुःख मिटाना देकर संयम भार। प्रभु कहे सुख हो जो कीजे विलम्ब न करो लगार हो ॥ ज० १९३ ॥ निज पुत्रों की आज्ञा लेकर पाण्डु नृप जिसवार। संयम लीना प्रभु समीपे वरते आज्ञानुसार हो ॥ ज०१९४ ॥ समिति गुप्ति का ध्यान राखते धरा विधि धर्म का भार। बारह भव मे करें तपस्या विकथा दूरी निवार हो ॥ ज० १९५ ॥ वहां से विहार कीन प्रभुजी विचरे देश विदेश। देकर देशना भव्य जीवों का मेट सकल क्लेश हो ॥ ज० १९६ ॥ इत मोद में पाण्डव रहत, गर्भ द्रोपदी धारा। सुपुत्र जन्मा शुभ समय में हर्षो सब परिवारा हो ॥ ज० १९७ ॥ बन्दीवान का छोड़ दिये हैं याचक का द दान। दशवें दिन दशाटन करके सज्जन का दिया मान हो ॥ ज० १९८ ॥ पाण्डुसेन शुभ नाम दियो है, बढ़ ज्यो द्वितीया चन्द्र। पारिवारिक जन के सब ठाई है बालम सुखकन्द हो ॥ ज० १९९ ॥ अष्ट वर्ष की वय में सीखे विद्या गुरु के पास। यौवन वय में परणाया है धर कर अति उल्लास हो ॥ ज० २० ॥ पाण्डुसेन को समझकर युधिष्ठिर महाराज। युवराज पद को दे दीना स्व का सुधारन काज हो ॥ ज २०१ ॥ जराकुमार भी उध जा आज्ञा सुना सुभा सब साथ। द्वारापुरी विध्वस हुआ है काल कियो जगनाथ हो ॥ ज० २०२ ॥ यह आमरण सो हरि कण्ठ का, रामा स्नेह जनाई। आज स आशा सुभा पीहर की, मत रखना मन माई हो ॥ ज० २०३ ॥

यों कहे कुन्ताजी, हरि हलधर को था शुभ आसरो ॥ टेक ॥

सुनी बात कुन्ती कल्यानी धरण पडी मुर्छाय। पसी की किलकारी सोर स, सब को दिया रुलाय हो ॥ यों० २०४ ॥ अचिन्त्य पड़ा गजब का बाक्ष आंसू बहाय। भात नाम कान सुन पाती, शीतल होती काय हो ॥ यों० २०५ ॥ हरि हलधर सी सूरत कहीं न पाय। कनक रत्नों में देव बनाई, जसी निमित्त को पाय हो ॥ यों० २०६ ॥ थी द्वारिका इन्द्रपुरी-सी महिमा सुहानी नहीं जगत् के माई। वीरों के बीच शूरवीर है, कम गति क्या लाई हो ॥ यों० २०७ ॥ परोपकार को करन माई था शिरोमणि

भ्रात। शीघ्र पधारो वल्लभ प्यारा, भावज का अग जात हो ॥ यो २०८ ॥ हे हिरदय ! तेरा सन्तोषी, छोड़ गया निरधार। लगे माधव भतीजा मिलसो कब वह, पर दुख काटन हार हो ॥ यो० २०९ ॥ आडम्बर से रवि उदय हो, आथमता नहीं वार। लगे वार जन्म धारण मे, मरते लगे न वार हो ॥ यो २१० ॥ धर्मनन्द समझावे माता, रुदन दूर निवार। उपजे तो निश्चय ही विनस, अरिहत-वचन विचार हो ॥ यो० २११ ॥ इन्द्र चन्द्र नागेन्द्र देवता, जिन चक्री गणधार। मृत्यु से वे भी नहीं छूटे, अन्य का क्या है शुमार हो ॥ यो० २१२ ॥ जो जीवित है जग के माईं, वे भी जावनहार। अस्थिर वास को स्थिर समझ लेना, बुद्धि का नहीं सार हो ॥ यो २१३ ॥ इतना सुन के कुन्ती माता, समता मन में लाय। उसी दिन से धर्म करन मे, समय रही विताय हो ॥ यो० २१४ ॥

पाण्डव दीक्षा
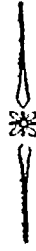
पांचो पाण्डव महागुनी, चरम शरीरी जीव। उत्तम भावे भावना, हृदय बीच अतीव ॥ १ ॥

पाण्डव पांचो ने दीक्षा ले तारी अपनी आत्मा ॥ टेर ॥

द्वारापुरी का दहन सुणी ने, और कृष्ण की बात। पाण्डव का जी अति दुःख पाया, सांचे पांचों भ्रात हो ॥ पा० १ ॥ धन्य धन्य नेमिनाथ जिनेश्वर, छोड़ा है संसार। मोह के बीच फसे मक्खी ज्यों, कैसे हो निस्तार हो ॥ २ ॥ नाना भांति के सुख भी भोगे, युद्ध मे किया संहार। अब चौथे आश्रम के माईं, करना धर्म विचार हो ॥ पा० ३ ॥ नेमनाथ प्रभु जान चुके है,

पारडव का वैराग्य । बम घोष गणधर को भजे, हैं मुनि महा भाग्य हा ॥ पा० ४ ॥ प्रतिबोधन का पाण्डव ताइ आय मथुरा
एक बार । ठहर गये हैं बाग के मांई पंच शत मुनि परिवार हा ॥ पा० ५ ॥ दी बधाई वन पालक आ हर्ष पाण्डव राय।
परिवारयुत समारोह से बन्दे मुनि को आय हो ॥ पा० ६ ॥ गणधर देवें धर्म देशना प्रतिबोध का काज । आयु टूटने पर
नहीं सधता आस्थिर हैं सब साज हो ॥ पा० ७ ॥ देव एक अरिहंत का माना गुरु महाव्रत धारी । धर्म केवली भाषित
भजो यह समकित है सारी हा ॥ पा० ८ ॥ पूजा सम्म कभी मत हारा करनी करो चित लाय । सद्गुरु की सेवा करने
पर वांछित सुख मिल जाय हो ॥ पा० ९ ॥ जाव अनादि है संसार में भ्रमा काल अपार । वीतराग का धर्म आराधा
होवेगा निस्तार हा ॥ पां० १० ॥ बार बार नर तनु है दुर्लभ आ मुक्ति का द्वार । अब क ऐसी करनी करके हा जाओ
भव पार हा ॥ पां० ११ ॥ बार बार यही कहना तुम का खाली हाथ मत जाओ । स्वार्थ रहित हो करके कहत, धर्म खूब
कमाओ हो ॥ पां० १२ ॥ सुन क उपदेश गणधर क मुख स पाण्डव अति हर्षाया । करी वन्दना पूर्व विनय स फरमाओ
गणराया हो ॥ पां० १३ ॥ पूर्व भव में थ हम कौन और कैसे वैभव पाया । किस तप के प्रभाव करीने मिला सुख सवाया हो
॥ पां० १४ ॥ गणधर कहे तुम पूर्व भव में थ पांचों ही भ्रात । सुरति शान्तनु देव, सुमति गुण-भद्र कपक थी ख्यात हा
॥ पां० १५ ॥ पापोदय से निर्धन बनकर, फिरत थ दिनरात । मुनि यशोधर की संगत स, समझी धर्म का बात हो ॥पां० १६॥
वैराग्य पाय के दीक्षा लीनी पाल पंचाचार । साधु क गुण करी सोहत चार महाव्रत धार हो ॥ पां० १७ ॥ सेवा करें
गुरु की निशिदिन लें निर्दूषित आहार । बारह भेद स करें तपस्या निरछी उग्र विहार हो ॥ पां० १८ ॥ सुरति नामा मुनि
न कीना कनकावली तप सार । गुरु ने जैसी विधि बताई की उसके अनुसार हा ॥ पां० १९ ॥ शान्तनु मुनि ने भी तप
कीना रत्नावली यह भारी । कनकावली से विशेष कठिन है किया आपन धारी हा ॥ पां० २० ॥ देव मुनि ने तप मुक्तावली

शास्त्र विधि से कीना । आठो कर्म नाश करने में, तनिक प्रमाद न कीना हो ॥ पा० २१ ॥ करी तपस्या सुमति मुनि ने, सिंह निष्क्रीड़ित नाम । त्यागन कीनी ममता तन से, चढते मन परिणाम हो ॥ पा० २२ ॥ गुणभद्र मुनिराज करा है, तप आमल वर्द्धमान । जैसी विधि बताई गुरु ने, करा उसी परमान हो ॥ पां० २३ ॥ नाना भांति की करी तपस्या, सुमति गुप्ति सावधान । निर्दूषित सयम शुद्ध पाला, हुवे लब्धि निधान हो ॥ पा० २४ ॥ चरण करण सत्तरी गुणधारी, करी खूब उपकार । अन्त मे अनशन करके पाचो, वैर भाव परिहार हो ॥ पा० २५ ॥ सर्वार्थ सिद्धि वे जाय उपजे, अहमेन्द्र नाम धराया । सागर तेतीस की स्थिति पाय के, चव के यहा पर आया हो ॥ पां० २६ ॥ हस्तिनापुर पाण्डु राजा घर, पाचो सुत हुवे आय । धर्म प्रभाव मिली यह ऋद्धि पूरव सुपुण्य पसाय हो ॥ पां० २७ ॥ धर्मघोष की वानी सुन यो,वराग हृदय मे छाया । कर वन्दन घर आके पांचो, मुहुर्त्त शुभ दिखाया हो ॥ पां० २८ ॥ स्वप्न सम ससार जान के, ममता मोह हटाया । पाण्डुसैन को राज्य सौंपने, सयम लेन चित्त चाया हो ॥ पां० २९ ॥ बन्दीवान को छोड दिये हैं, कई का दुख मिटाया । धर्म–कार्य मे धन खर्च कर, धर्म-स्थानक बनवाया हो ॥ पां० ३० ॥ दीक्षा लेन के कारण पाचों, गज पर हुवे सवार । छत्र चवर शीश पर ढुलते, मित्र प्रमुख सब लार हो ॥ पां० ३१ ॥ द्रुपद सुता और कुन्ती माता, होगई संग मे त्यार । बाजा बाजते अति जोर का, आये बाग मझार हो ॥ पा० ३२ ॥ धर्मघोष मुनि को करवन्दन, ऐसी की अरदास । स्वामीनाथ ! हमे भवतारो, दीक्षा देकर खास हो ॥ पा० ३३ ॥ तब सब ही को सयम दीनों, हुए ज्ञानी अणगार । वन्दन करी परिजन घर पहुचे, पडती आंसू धार हो ॥ पां० ३४ ॥ नवदीक्षित धर्मघोष के सग मे, कीना उग्र विहार । द्वादश अग का ज्ञान पढा है, विनय करी हर वार हो ॥ पां० ३५ ॥ द्रौपदी कुन्ती बनी साध्वी, रहे गुराणी पास । ग्यारह अग को ज्ञान भणी है, करी विनय अभ्यास हो ॥ पां० ३६ ॥ होय गीतार्थ गुरु–आदेश ले, पांचो ही अनगार । भव्य जीवो को प्रति बोधवा, कीनो अन्यत्र विहार हो ॥ पा० ३७ ॥ भीम मुनि ने कियो अभिग्रह भाला

यो नेमि जिनन्द के, दर्शन हित उमाये हो ॥ पां० ५५ ॥

श्री नेमिनाथ की मोक्ष

विचरन कर बहु जीव का, कीनो आप उधार । नेमनाथ भगवान का, कहू अन्तिम अधिकार ॥ १ ॥

यह चरित्र रसीला करुणा अवतारी नेमिनाथ का ॥ टेक ॥

मध्य देश से उत्तर दिशि में, प्रभुजी आप पधार । राजगृही आदि नगरो मे, विचरन कर तिस वारे हो ॥ य० १ ॥ यहा से ह्रीमानगिरि लांघी, म्लेच्छ देश के माई । अनेक राजा, मंत्रीगण को धर्मी दिये बनाई हो ॥ य० २ ॥ आर्य अनार्य देश मे विचरी, किरात देश मे आया । ह्रीमान के उत्तरी दक्षिण में, पधारे श्री जिनराया हो ॥ य० ३ ॥ निर्वाण समय समीप जान के, गये गिरिनार पधार । अन्तिम देशना समवशरण में, दीनी प्रभु जिस वार हो ॥ य० ४ ॥ कई भव्यों ने दीक्षा लीनी, कई ने व्रत लिये धार । कई बोध बीज को पाकर, लीना जन्म सुधार हो ॥ य० ५ ॥ पाच सौ छत्तीस साधु संग मे, अनशन लीना धार । चित्रा नक्षत्र के साथ चन्द्र का, योग मिला उस वार हो ॥ य० ६ ॥ आषाढ़ शुक्ला अष्टमी जानो, मध्याह्न समय भगवान । सब मुनियों के साथ आपने, प्राप्त किया निर्वान हो ॥ य० ७ ॥ राजमती साध्वी प्रभु के, चोपन दिन की पेली । कर्म खपा ज्ञान पा केवल, शिवपुरी को लेली हो ॥ य० ८ ॥ गच्छ अष्टादश हुआ प्रभु के, अष्टादश हजार । वरदत्त आदि हस्त दीक्षित है, अष्टादश हजार हो ॥ य० ९ ॥ हुवे चार सौ मुनि जिन्हा के, चतुर्दश पूरव धारी । वैक्रीय लब्धिवान पन्द्रह सौ, जिनकी

कई राजा को दिया बोध पूज्य, उदयचन्द्र उपकारी हो ॥ य० ६१ ॥ रमण करें नित्य ज्ञान ध्यान में, पूरे पण्डित राज। चौथे
पट पूज्य चौथमलजी, अमरनाम तस आज हो ॥ य० ६२ ॥ पञ्चमपट पूज्य श्रीलालजी, जिनका सरस व्याख्यान। जिन
मार्ग को खूब दिपाया, जाने सकल जहान हो ॥ य० ६३ ॥ शास्त्र विशारद शान्तस्वभावी, षष्ठम पट के धारी। अखण्ड यश
को प्राप्त किया है, थे गुण के भण्डारी हो ॥ य० ६४ ॥ सप्तम पाट पूज्य खूबचन्दजी, छत्ती ऋद्धि के त्यागी। ज्ञान ध्यान में
मगन सदा लौ सिद्ध गति से लागी हो ॥ य० ६५ ॥ रत्नचन्दजी महाराज हुवे हैं, इसी गच्छ दरम्यान। तस्य शिष्य गुरु जवा-
हिरलालजी, वैराग्यवन्त गुणवान हो ॥ य० ६६ ॥ हीरालालजी नन्दलालजी, शिष्य हुवे तस्य नामी। कविवर सरलस्वभावी
पण्डित, कीर्ति जग में पामी हो ॥ य० ६७ ॥ मौसी मेरी रतन कुवरजी, संयम लियो सुखदाई। रंगुजी की मतीयों माहीं, प्रव-
र्तनी का पद पाई हो ॥ य० ६८ ॥ संवत् उन्नीसे साल बावन में, गुरुवर हीरालाल। चौथमल को संयम देकर, आपने किया
निहाल हो ॥ य० ६९ ॥ माता केशर का मेरे ऊपर, है पूरा उपकार। संयम दिला के पहले पुत्र का, फिर लिया संयम धार हो
॥ य० ७० ॥ विक्रमादित्य सम्वत उन्नीसे, और बियासी साल। आना हुआ उदयपुर में जब, मेरा सेख काल हो ॥ य० ७१ ॥
हिन्दुकुल-कमल-दिवाकर, महाराणा फतेहमाल। और श्री भोपालसिंहजी, व्याख्यान सुनें तत्काल हो ॥ य० ७२ ॥ जीव
दया का पट्टा करके, ऐसा हुकम लगावे। आने जाने पर चौथ मुनि के, अगता सदा रखावे हो ॥ य० ७३ ॥ सम्वत् उन्नीसे
साल तियासी, उदयपुर के मांय। चोमासा करन को आये, अगता दिया पलाय हो ॥ य० ७४ ॥ महाराणा श्री फतेसिंहजी,
दयालू भोपाल। दोनों ने आप प्रेम धरीने, ज्ञान सुना खुशहाल हो ॥ य० ७५ ॥ वीर-जयन्ति, पार्श्व-जयन्ति, दोनों दिवस
महान्। अगता रक्खा जाय सदा ही, यों कीना फरमान हो ॥ य० ७६ ॥ प्रवर्तक मुनि मोतीलालजी, तेतीस किया उपवास।
सारे शहर में अगता रखाया, महाराणाजी खास हो ॥ य० ७७ ॥ छोटेलालजी तपसी दिन, चौपन का तप ठाया। वहराया

है पशिकारी हा ॥ म १० ॥ पन्द्रह सौ अवधि ज्ञानी हैं आठ सौ वादी महान । विपुलमति हैं सहस्र मुनियों करत ज्ञान ध्यान हा ॥ य० ११ ॥ यक्षिणी प्रमुख हुईं साध्वी चालीस सहस्र प्रमान । ज्ञान ध्यान का करी आराधन, विजय करी है महान हो ॥ य० १२ ॥ सोलह सौ साधु कर करनी, पहुँचे अनुत्तर विमान । पन्द्रह सौ मुनि सती तीन सौ पाये पद निर्वाण हो ॥य० १३॥ नन्द आदि एक लाख गुणधर सहस्र श्रावक उदार । महा सुव्रता आदि श्राविका तीन लाख छत्तीस हजार हो ॥य० १४ ॥ आठ पाटाधर गये मोक्ष में यह आगम अधिकार । शिवादेवी सुत विजय गये महेन्द्र लोक मंझार हो ॥य० १५॥ कुमारपद में वर्ष तीन सौ, छद्मस्थ चौपन दिन । बाकी केवल पर्याय पाली सहस्र वर्ष समीचिन हा ॥ य० १६ ॥ वर्ष सात सौ संयम पाला भव्य जीवों सुखदाय । सवा दो सौ क्रिया चौमासा शहर द्वारापुरी मांय हा ॥ य० १७ ॥ निर्वाण होन पर नेमि प्रभु का, सौधर्म इन्द्र वहां आया । धनदेव को हुक्म होत ही विमान तुरत बनाया हो ॥ य० १८ ॥ स्नान करा जिनवर के तनु को वस्त्राभरण पहनाया । विमान मांहे बैठा सुरनर, नैऋत्य कोण में आया हो ॥ य० १९ ॥ चन्दन काष्ट की चिता बना के, उसमें वपु रख दीना । अग्निकुमार को हुक्म होते ही, संस्कार कर दीना हो ॥ य० २० ॥ वायु कुमार ने हवा भर कर अग्नि प्रदीप्त कर दीनी । भस्म हुआ नेमिनाथ का शव तब, अवशेषी भस्म लानी हो ॥य० २१॥ क्षीर समुद्र में जाय प्रक्षेपी शक्र ने दाढा लीनी । अन्य देव अस्थि आदि का लेकर तारीफ कीनी हो ॥ य० २२ ॥ अस्थी गृही करें अति प्रेम से सुरनर फिर वस वार । निर्वाण-महोत्सव करके सब ही, पहुँचे अपने द्वार हो ॥ य० २३ ॥ पाण्डवों के भी उत्कण्ठा नम-दर्शन हो जाय । बारह योजन की रह गई छेटी, नहीं भाग्य के मांय ॥ य० २४ ॥ एक मुनि गिरनार स वस के समचार लो आया । नमन करी गणधर मुनिवर को प्रतिक्रमण का ठाया हो ॥ य० २५ ॥ नमनाथ के समवशरण का, उनने वृत्तान्त सुनाया । अन्तिम देशना प्रभु ने दीनी, प्रतिबोध कई पाया हो ॥ य० २६ ॥ गिरनार शिखर पर आप प्रभु ने

अनशन कर एक मास । पाच सौ छत्तीस मुनि के सग मे, किया मोक्ष मे वास हो ॥ य० २७ ॥ शव का जब सस्कार किया है, इन्द्रों ने वहा आकर । बात सुनी उदास हुवे हैं, वे पाचो ही मुनिवर हो ॥ य० २८ ॥ नहीं लिखा है भाग्य हमारे, प्रभु का दर्शन पाना । हुआ मनोरथ सारा निष्फल, अब नहीं भोजन लाना हो ॥ य० २६ ॥ धर्मघोष गणधर को पूछी, अनशन करना सार । एसा सोच के गुरुवर को फिर, कीना है नमस्कार हो ॥ य० ३० ॥ शत्रुजय पर आप पधारी, अनशन हमें करावे । तब तो गुरु साथ में लकर, विमलाचल पर आवें हो ॥ य० ३१ ॥ शुद्ध भूमि को देख वहां पर, आलोचना करवाई । चार महाव्रत फिर उच्चराया, आतम शुद्ध कराई हो ॥ य० ३२ ॥ लख चौरासी जीवाजोन को, मन वच कर खमावे । सब जीव आतमसम मानी, मैत्री भावना भावे हो ॥ य० ३३ ॥ कर सथारो शिलापट ऊपर, काया ने बोसरावे । पादोगमन संथारो करके, समभाव वर-तावे हो ॥ य० ३४॥ अप्रमाद अवस्था छोड के फिर वे, क्षपक श्रेणी चढ जावे । क्षीण मोह गुण स्थान पै आकर, जालिम मोह हटावे हो ॥ य० ३५ ॥ शुक्ल ध्यान ध्याते मुनि पाण्डव, पाये केवल ज्ञान । लोकालोक प्रकाश हुआ फिर, गये ऊँचे गुण स्थान हो ॥ य० ३६ ॥ अलेशी गुण स्थान रह कर, फिर मुक्ति सुख पाया । सिद्ध अवस्था प्राप्त करीने, जन्म मरण मिटाया हो ॥ य० ३७॥ धन्य-धन्य पाण्डव धन्य करणी,गुरुजी यो गुण गावे । यश गाते सुख सम्पत्ति होवे, दु ख भय दूर नसावे हो ।।य० ३८॥ पाण्डव मुनि सग किया सथारा, मुनि अठारे हजारी । कई मोक्ष कई स्वर्ग सिधाये, हुवे एका अवतारी हो ॥ य० ३६ ॥ कुन्ती माता शुद्ध ध्यान द्वारा, ले कवल शिव पाई । पाण्डु मुनि गये स्वर्ग बीच मे, मुक्ति लेंगे फिर आई हो ।।य० ४०॥ धन्य-धन्य है वो सती द्रोपदी, पाला शुद्ध आचार । शील प्रभाव शोभा उसकी, फेल रही ससार हो ॥ य० ४१ ॥ कष्ट सहे विपिन के भारी, नहीं छोड़ा पति सग । दीक्षा भी ली पति संग मे, चित्त में धरी उमग हो ।।य० ४२॥ किया संथारा ऊँचे भाव से तन की ममत्व मिटाय । स्वर्ग पांचवे जाकर उपजी, देव तणा पद पाय हो ।।य० ४३॥ नारद ऋषि भी सयम लेकर, तपसा कीधी सार । अन-

शान म कर नाश पाप का पहुंच मोक्ष मंझार हो ॥ य० ४४ ॥ सब तीर्थों में सेत्रुंजय तीर्थ है धर्म में दया उदार। क्रिया में मुनि सुमनमन्त्र है मंत्र बीच नवकार हो ॥ य० ४५ ॥ मणियों में चिंतामणि मणि है ज्योतिष में दिनकार। साधु में गुरु गौतम जानो तरु में सुरतरु सार हो ॥ य० ४६ ॥ इसी तरह से भारत के सब वंशों के दरम्यान। हरि वंश का महत्व बखाना समझो चतुर सुजान हो ॥ य० ४७ ॥ शीतलनाथ प्रभु के बार, प्रकट हुआ हरि वंश। वट समान शाखा यों विस्तरी, पुरुष रत्न अवतंस हो ॥ य० ४८ ॥ अमर नाम भी है इसी का था हुआ आदूराया। इसी नाम से यादुवंश हुआ परमसिद्धि ख्यात पाया हो ॥ य० ४९ ॥ नमि नम जिनेश्वर हुए इसी वंश के मांय। बीस इन्द्र जिनकों के आकर, प्रणाम मडर्प पांय हो ॥ य० ५ ॥ कृष्ण बलभद्र हुआ इसी वंश में, पुरुषोत्तम श्रृंगार। भूआ कुन्ता धमनन्द-सा जिनके प्राण उदार हो ॥ य० ५१ ॥ साम्ब और प्रद्युम्नकुमार-सा जन्म है इसी माई। एस अनेक राजा कुंवर हुए जिनकी थी पुण्याई हो ॥ य० ५२ ॥ गुणालकृत हरि वंश की गाथा पाया वंछित साज। गुरुदेव की कृपा करके, सुधरे सार काज हो ॥ य० ५३ ॥ शहर द्वारिका नगरी सुन्दर, अमरापुरी समान। नित्य प्रति महोत्सव होत बस म, देवन जैसे स्थान हो ॥ य० ५४ ॥ वैभव से सब घर पूर हैं घर घर मंगलाचार। नित्य नये उत्सव जहां होत बाजों का झणकार हो ॥ य० ५५ ॥ सेवा करें बीस राम बल की, गुरु की भक्ति अपार। उत्तम भावें सदा भावना सबके भाव उदार हो ॥ य० ५६ ॥ सौभाग्यवती सब सुन्दर महिला सज सोलह श्रृंगार। सद्गुरु का सुयश गावें बधावना, जिनधर्म हरष पार हो ॥ य० ५७ ॥ नित्य नया त्यौहार जहां पर नित्य ही हर्ष उछाह। पर्व पर्यूषण मांहीं बहां पर जिन गुण सब मिल गांय हो ॥ य० ५८ ॥ महावीर प्रभुजी के पाटे सोहे सुधर्मा स्वामी। तस पाटानुपाट हुक्मचन्द मुनि विरल म नामी हो ॥ य० ५९ ॥ मोह माया का छोड़ आप से संयम आतम धारी। पूज्य पाट शिवलाल मुनीश्वर हुवे जगत में उपकारी हो ॥ य० ६० ॥ चिद्घन-सुख शोभा लायक, शूरवीर आचारी।

कई राजा को दिया बोध पूज्य, उदयचन्द्र उपकारी हो ॥ य० ६१ ॥ रमण करें नित्य ज्ञान ध्यान मे, पूरे पण्डित राज । चौथे
पट पूज्य चौथमलजी, अमरनाम तस आज हो ॥ य० ६२ ॥ पञ्चमपट पूज्य श्रीलालजी, जिनका सरस व्याख्यान । जिन
मार्ग को खूब दिपाया, जाने सकल जहान हो ॥ य० ६३ ॥ शास्त्र विशारद शान्तस्वभावी षष्टन पट क धारी । अखण्ड यश
को प्राप्त किया है, थे गुण के भण्डारी हो ॥ य० ६४ ॥ सप्तम पाट पूज्य खूबचन्दजी, छत्ती ऋद्धि क त्यागी । ज्ञान ध्यान म
मगन सदा लौ सिद्ध गति स लागी हो ॥ य० ६५ ॥ रत्नचन्दजी महाराज हुवे हैं, इसी गच्छ दरम्यान । तस्य शिष्य गुरु जवा-
हिरलालजी, वैराग्यवन्त गुणवान हो ॥ य० ६६ ॥ हीरालालजी नन्दलालजी, शिष्य हुवे तस्य नामी । कविवर सरलस्वभावी
पण्डित, कीर्ति जग मे पामी हो ॥ य० ६७ ॥ मोसी मेरी रतन कुवरजी, संयम लियो सुखदाई । रंगुजी की सतीयों मांही, प्रव-
र्तनी का पद पाई हो ॥ य० ६८ ॥ संवत् उन्नीसे साल बावन में, गुरुवर हीरालाल । चौथमल को संयम देकर, आपने किया
निहाल हो ॥ य० ६९ ॥ माता केशर का मेरे ऊपर, है पूरा उपकार । संयम दिला के पहले पुत्र का, फिर लिया संयम धार हो
॥ य० ७० ॥ विक्रमादित्य सम्वत उन्नीसे, आर वियासी साल । आना हुआ उदयपुर में जब, मेरा सेखे काल हो ॥ य० ७१ ॥
हिन्दुकुल-कमल-दिवाकर, महाराणा फतेहमाल । और श्री भोपालसिंहजी, व्याख्यान सुने तत्काल हो ॥ य० ७२ ॥ जीव
दया का पट्टा करके, ऐसा हुक्म लगावे । आने जाने पर चौथ मुनि के, अगता सदा रखावे हो ॥ य० ७३ ॥ सम्वत् उन्नीसे
साल तियासी, उदयपुर के मांय । चौमासा करन को आये, अगता दिया पलाय हो ॥ य० ७४ ॥ महाराणा श्री फतेसिंहजी,
दयालू भोपाल । दोनों ने आप प्रेम धरीने, ज्ञान सुना खुशहाल हो ॥ य० ७५ ॥ वीर-जयन्ति, पार्श्व-जयन्ति, दोनों दिवस
महान् । अगता रक्खा जाय सदा ही, यों कीना फरमान हो ॥ य० ७६ ॥ प्रवर्तक मुनि मोतीलालजी, तेतीस किया उपवास ।
सारे शहर मे अगता रखाया, महाराणाजी खास हो ॥ य० ७७ ॥ छोटेलालजी तपसी दिन, चौपन का तप ठाया । वहराया

स्वम रामाजी न भगता मा रचनाया हो ॥ प० ७८ ॥ संवत् छमास साल पचाणु उदयपुर में वास । महाराणा की विनंति ऊपर, फर किया चौमास हो ॥ प० ७९ ॥ पैंतालीस दिन का तप कीना ममाचन्दजी भारी । महाराणा महाराणाजी ने हूंडी पिटाइ भमारी हा ॥ प ८० ॥ महाराणा भोपालसिंहजी सुना आप उपदेशा । आत आत का भगता ररराया जैसा रचस्ये हमरा हा ॥ प० ८१ ॥ साल पिचाणु किया चौमासा पछा शहर मंझार । महाराणा भोपालसिंहजी अब यहाँ गय पधार हा ॥ प० ८२ ॥ मुनी देशना आप यहाँ पर, धर हरय उल्लास करी विनता उदयपुर में फिरस करो चौमास हा ॥ प० ८३ ॥ इसी विध छन्नु का चौमासा किया उदयपुर आइ । मवेरा-दिवस जीवों पचली डोंडी द्वारा पलाइ हा ॥ प० ८४ ॥ श्रपन दिन का नपस्या कीनी तपसा नेमीचन्द् । धर्म ध्यान मा हुआ बहुलता परता पहुत आनन्द हो ॥ प ८५ ॥ * सपूण राज्य में महाराना न दिया हुक्म लगाइ । निमन्थ-समाइ तप क पूर पर हिंसा बन्द कराइ हा ॥ प० ८६ ॥ चौमासा का विहार अब, किया आपन उपकार । भगता पछाया सार शहरम डोंडी पिटा दस बार हा ॥ प० ८७ ॥ साल सत्तानु जोधपुर में चामासा अधिकार । पत्र शहर म दा भगते पा मति मूक नर मार हो ॥ प० ८८ ॥ इन्ध उदयपुर चारित्र पनाया, इन्ध जोध पुर भाइ । नया शहर क कुन्दन भवन मे सम्पूण किया है भाइ हा ॥ प० ८९ ॥ कइ ग्रन्थ विलोकन कीना गुरु मुख स सुन पाया । नम हारे, हलधर पाण्डव का सरस चारित्र बनाया हा ॥ प० ९० ॥ न्यूनाधिक जा इसमें होव भाजा दव सुधार । अपराध का में मिच्छा दुक्कड करता वारम्वार हा ॥ प० ९१ ॥ इस चरित्र का पढ़े पढ़ाव वस घर मंगलाचार । मन इच्छित भारा फल फिर पाव सुख अपार हो ॥ प० ९२ ॥ उन्नीस अठाणु साल का, विजय दशमी दिन भाया । गुरु प्रसाद चौथमल यह हरिवंश-चारित्र बनाया हा ॥ प० ९३ ॥ * इति नेमनाथ चारित्र समाप्तम् *

* दस हजार गांवों म ।

❀ धार्मिक पुस्तकें मंगाकर पढ़िये ❀

पुस्तक	मूल्य	पुस्तक	मूल्य	पुस्तक	मूल्य
भगवान महावीर का आदर्श जीवन	२॥)	आदर्श रामायण सजिल्द	१)	सत्योपदेश भजनमाला	
सुख साधन	।=)	आदर्श रामायण अजिल्द	१)	काव्य विलास	
निर्ग्रन्थ प्रवचन (सजिल्द)	।॥)	भगवान महावीर की अंतिम शिक्षा	≡॥)	भगवान महावीर का राज संस्करण	
निर्ग्रन्थ उर्दू	॥)	अंतगढ़ सूत्र लेजर पेपर	।॥)	भक्तामर आदि स्तोत्र	
निर्ग्रन्थ सूत्राकार	।≡)	अंतगढ़ सूत्र पतला	≡॥)	स्तवन मनोहर माला	
निर्ग्रन्थ अंग्रेजी	॥)	लावणी संग्रह	≡॥)	सद्बोध प्रदीप	
निर्ग्रन्थ गुजराती	॥=)	सती अंजना वीर हनुमान	।)	व्याख्यान मौक्तिक माला (गुजराती)	
निर्ग्रन्थ मूल	≡)	भग०महावीर का दिव्य सदेश (मराठी)	=)	स्तवन वाटिका	
निर्ग्रन्थ पद्यानुवाद	।≈)	धन्न चरित्र	=॥)	धर्मोपदेश	५॥)
निर्ग्रन्थ (कच्ची जिल्द)	॥)	उज्ज्वल तारे	।=)	स्तवन मनोरंजन गुच्छा	
निर्ग्रन्थ सूत्राकार (संस्कृत)	।)	जम्बूकुमार सचित्र	१)	स्थानकवासियों की प्राचीनता	
जैन सुबोध गुटका	।॥)	ज्ञाताधर्म कथा	॥।)	भक्तामर स्तोत्र सार्थ [अंग्रेजी]	
श्रीपाल चरित्र	=॥)	त्यागवीर वंकचूल	)॥	सीता बनवास मूल	
भजनावली	)॥	सदा स्मरण	३) सैं०	मनमोहन माला	
जैन जगत की महिलाएँ	॥≡)	मनमोहन पुष्पलता	-)	महाबल मलया चरित्र	

प्रैलोक सुन्दरी	-)	धर्म व्याख्या	=)	जैनागम थोक १ भाग	
मदन चरित्र	।)	मोहन माला	=।	जैनागम थोक २ ”	
गजलमय धन्न चरित्र	-॥)	शालीभद्र भाग २	=)	” ” ३ ”	
परिचय	≡)	शालीभद्र भाग २	≡)	” ” ४ ”	
नंदी सूत्र	≡)	सेठ सुदर्शन	-)	” ” ५ ”	
मेरी भावना	)।	मेघ कुमार	।-)	” ” ६ ”	
सामायिक सूत्र	-)	सामायिक धर्मोपकरण	-।)	वीर जयन्ती सन्देश	
सुश्रावक कामदेव	-॥)	उत्तर	॥)	त्रिमुनि	
चूलणी पिता	-)	प्रत्योतर	॥)	तत्त्वचर्चा अंग्रेजी	
साधु गुजराती	-	दीपावली	)।	नमोकार मंत्र के पाने	
[आ]दर्श क्षमा	-॥)	जैनागम थोक संग्रह	१।)		